बृहन्निघण्टुरत्नाकर.

छठवाँ भाग ६.

श्रीः ।

बृहन्निघण्टुरत्नाकरः ।

षष्ठो भागः ।

मथुरानिवासिमाथुरचतुर्वेदिकृष्णलालतनय पं० दत्तरामेण
विरचितः तत्कृतयैव भाषाटीकया विभूषितश्च ।

---:o:---

"श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणालयस्थशास्त्रिभिःखण्डितग्रन्थ-
स्थमूलटीकाविरचनविषयव्यवस्थाकरणादिना
संस्कृतः संशोधितश्च ।

स च

श्रीकृष्णदासतनयक्षेमराजेन

मुम्बय्यां

स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणयन्त्रालये

मुद्रयित्वा प्रकाशं नीतः ।

शके १८२०, संवत् १९५५.

श्रीः ।

प्रस्तावना ।

आज बडे हर्ष के साथ हम सकलभूतलनिवासी विद्वज्जनों को विदित करते हैं कि, आज कितनेही वर्षों से आयुर्वेद ग्रंथोंसे व्यवस्थापूर्वक वैद्यक विद्याका लाभ होने के लिये एक व्यवस्थित पुस्तक होने की अत्यंत आवश्यकता थी, वैसे तो अन्य २ अनंतावधि वैद्यकशास्त्र के ग्रंथ प्रसिद्ध हुए हैं परन्तु उन २ ग्रंथों में कोई एकाध विषय मुख्य होकर अन्य विषयों की अपूर्णता अथवा अभाव रहता है. इस से वैद्यक शास्त्र में प्रवीण होनेकी इच्छा करनेवालों को अनेक २ ग्रंथ संग्रह करने पडते थे और उन के संग्रहों को बाँचते २ ही बहुतसा समय व्यतीत होताथा, इष्टसिद्धी भी बडे प्रयत्न से होती है ॥

इसलिये कितनेही सुज्ञ विद्वानोंने हम को सूचना की कि, ऐसा कोई ग्रंथ वैद्यक शास्त्रका सर्वांगपरिपूर्ण बनना आवश्यक है जिसमें शारीरक, निदान, शस्त्रादिकर्म, चिकित्सा और औषधपरीक्षण, गुणदोषआदिक विषय सविस्तर लिखेंहो और देशदेशांतरस्थ भाषाओं में औषधीनामोंका सविस्तर बडा कोश आदिक उपकरणों का बड़ा संग्रह एकत्र करके वर्णन किया हो॥

तब हमने मथुरानिवासी पंडितवर दत्तराम चौबेजी को सूचना की उन पंडितवरजी ने हमारी सूचना को स्वीकारकर बडे परिश्रम से अनेकानेक आयुर्वेद ग्रंथों को मंथनकर अत्यंत उपयोगी "बृहन्निघण्टुरत्नाकर" नामक ग्रंथका निर्माण करना आज कईएक वर्षों से आरंभ किया था जिसके प्रतिवर्षमें भाग मुद्रित होकर हमारे यहांसे प्रकाशित होते रहते थे सो परमेश्वरकी कृपासे आज सम्पूर्ण ग्रन्थ परिपूर्ण हुआ ॥

इस बहुत बड़े ग्रंथ के आठ भाग हैं तिन में १।२।३।४।५।६। ये छः भाग पंडितदत्तरामजी के निर्माण किये हुये हैं

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
आर्द्रक स्वरस	१४८१	१३
अर्कादि सेचन	,,	,,
कृष्णादि प्रलेप	,,	,,
बिल्वपत्ररस ...	१४८२	१४
वर्षाभ्वादि क्षीर	,,	,,
गुडार्द्रकादि योग	,,	,,
पुनर्नवादि योग	,,	,,
भूनिम्बादि कल्क	,,	,,
दार्व्यादिकल्क	१४८३	१५
शोथारिरस....	,,	,,
श्वयथुघातारिरस	,,	,,
शोथपर मंडूर	,,	,,
पथ्य....	,,	,,
शोथरोगपर अपथ्य....	१४८४	१६
अण्डवृद्धि ।		
अण्डवृद्धि निदान	१४८५	१७
संख्या	,,	,,
वातादिवृद्धिके लक्षण	,,	,,
वातज अण्डवृद्धिका यत्न	,,	,,
एरंडतैल योग ...	१४८६	१८
चन्दनादि लेप	,,	,,
पञ्चवल्कलादि ...	,,	,,
सामान्यचिकित्सा ...	,,	,,
त्रिकट्वादि काथ	,,	,,
सामान्यचिकित्सा	१४८७	१९
रक्तजवृद्धिपर	,,	,,
त्रिवृतादि काथ	,,	,,
मेदज अंडवृद्धिपर....	,,	,,
षडूषणादि चूर्ण	,,	,,
मूत्रजन्य अंडवृद्धिनिदान	१४८८	२०

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
चिकित्सा	१४८८	२०
अन्त्रजवृद्धि	,,	,,
उपेक्षित अण्डवृद्धिका-परिणाम....	१४८९	२१
असाध्य लक्षण	,,	,,
शिरावेध	,,	,,
कर्णशिरावेध	,,	,,
गोमूत्रयोग	,,	,,
नारायणतैल	१४९०	२२
अंगुष्ठपरदाग	,,	,,
वचादि लेप	,,	,,
कज्जली	,,	,,
अजाज्यादि लेप	,,	,,
लाक्षादि लेप	,,	,,
पिप्पल्यादि लेप	१४९१	२३
देवदार्वादि लेप	,,	,,
दार्वीचूर्ण	,,	,,
रास्नादि काथ	,,	,,
एरंडतैल	,,	,,
त्रिफलादि काथ	,,	,,
रास्नादि द्वितीय काढा	१४९२	२४
मांस्यादिघृत	,,	,,
पुनर्नवादितैल	,,	,,
वृद्धिनाशनरस	१४९३	२५
अनुपान	,,	,,
सर्वाङ्ग सुन्दररस	,,	,,
कुरण्टलक्षण	,,	,,
वर्धारोगपरकल्क	१४९४	२६
इंद्रवारुणीमूलयोग	,,	,,
कुरण्डपरलेप	,,	,,

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
प्रकारांतर	१४९४	२६
कुरंटज्वरपर ...	"	"
लेप	१४९५	२७
प्रकारांतर	"	"
ब्राह्मणयष्ट्यादि	"	"
इंद्राणी मूलयोग ...	"	"
लेप	"	"
बालकके कुरंडपर	"	"
हरीतकीचूर्ण	१४९६	२८
शंबूकादिलेप	"	"
सैंधवादि अनुवासनबस्ति	"	"
वध्मरोगपरबिल्वादिचूर्ण	१४९७	२९
श्वदंष्ट्रादिचूर्ण	"	"
वध्मादिलेप	"	"
अंत्रवृद्धिपरपथ्य	"	"
अन्त्रवृद्धिपरअपथ्य	१४९८	३०
गलगण्डरोग।		
गलगण्डकाकर्मविपाक	१४९८	३०
गलगण्डनिदान	१४९९	३१
संप्राप्ति	"	"
गलगण्डकी चिकित्सा....	"	"
सर्षपादिलेप	१५००	३२
पलाशमूललेप	"	"
अमृतादितैल	"	"
कटुतुंबीतैल	"	"
तुंब्यादितैल	"	"
वातिकगलगण्ड	१५०१	३३
जलकुम्भीभस्मयोग	"	"
चिकित्साक्रम	"	"
वातगलगण्डचिकित्सा....	"	"

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
मण्डूरलोह	"	"
सूर्यावर्तादिलेप....	१५०२	३४
अलाबुजलपान	"	"
जीर्णकर्कारुयोग	"	"
निर्गुंडीमूलयोग ...	"	"
कफजगलगण्ड	"	"
चिकित्सा	१५०३	३५
देवदार्वादिलेप....	"	"
स्वेदजगलगण्ड	"	"
चिकित्सा	"	"
असाध्यलक्षण	"	"
अपचीकेलक्षण....	१५०४	३६
अलंबुषास्वरस....	"	"
पोलिका	"	"
सौभांजनादिलेप	"	"
अश्वत्थादिभस्म	१५०५	३७
रेखाकरण	"	"
सर्षपादिलेप	"	"
व्योषादितैल	"	"
चंदनादितैल	"	"
गण्डमालारोग।		
गण्डमालाकाकर्मविपाक	१५०६	३८
गण्डमालानिदान	"	"
कषाय....	"	"
लेप	"	"
स्वरस....	१५०७	३९
ब्रह्मदण्डीयोग....	"	"
आरग्वधादिनस्य और लेप	"	"
वत्सनाभलेप	"	"
मुण्डीमूललेप	"	"
गण्डमाला फोडनेकोलेप	"	"

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
भल्लातकादिलेप	१५०८	४०
गन्धाकदिलेप	,,	,,
जेपालपत्रलेप	,,	,,
अजमोदादितेल	,,	,,
निर्गुण्ड्यादितैल	१५०९	४१
छुच्छुन्दरीतैल....	,,	,,
गुञ्जादितैल	,,	,,
योषादिगुग्गुल....	,,	,,
काञ्चनारगुग्गल ...	१५१०	४२
गण्डमालाकण्डनरस	,,	,,
गन्धकादिलेप	१५११	४३
मंत्र	,,	,,
नस्यतैल	,,	,,
ग्रंथिरोग ।		
ग्रंथिनिदान	,,	,,
चिकित्साक्रम	१५१२	४४
वातजग्रन्थिनिदान	,,	,,
वातजग्रन्थिकायत्न	,,	,,
पित्तजग्रन्थिनिदान	,,	,,
पित्तजग्रन्थिकायत्न	१५१३	४५
कफजग्रन्थिनिदान ...	,,	,,
कफजग्रन्थिकायत्न	,,	,,
मेदजग्रन्थिनिदान	,,	,,
मेदजग्रन्थिकायत्न	,,	,,
सेक	१५१४	४६
सामान्यचिकित्सा ...	,,	,,
सामान्यउपचार	,,	,,
क्षारघृत...	,,	,,
शिराजग्रन्थिकानिदान....	,,	,,
ग्रन्थीकासाध्यासाध्यलक्षण	१५१५	४७

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
पुत्रजीकवलेप	,,	,,
रुधिरस्राव	,,	,,
गदादिलेप	,,	,,
राजिकादिलेप	,,	,,
विष्णुक्रान्तादिलेप	,,	,,
मूलिकादिबन्ध	,,	,,
अर्बुदरोग ।		
अर्बुरोगकानिदानऔरसंप्राप्ति	,,	,,
अर्बुदकीसंख्या....	,,	,,
चिकित्साक्रम	,,	,,
वातार्बुदचिकित्सा	,,	,,
प्रकारान्तर	१५१७	४९
पित्तार्बुदचिकित्सा	,,	,,
कफार्बुदचिकित्सा	,,	,,
रक्तार्बुद	,,	,,
चिकित्सा	१५१८	५०
शोणितार्बुदके लक्षण	,,	,,
मांसार्बुद	,,	,,
असाध्यलक्षण...	,,	,,
चिकित्सा	,,	,,
वचादिगणयोग	१५१९	५१
अध्यर्बुदकेलक्षण	,,	,,
द्विरर्बुदकेलक्षण....	,,	,,
अर्बुदनपकनेमेंकारण	,,	,,
यवक्षारादिलेप....	,,	,,
गन्धाधिलेप	,,	,,
उपोदिकापिण्डी ...	१५२०	५२
उपोदिकादिअभ्यङ्ग	,,	,,
स्नुह्यादिसेक	,,	,,
हरिद्रादिलेप	,,	,,

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
शस्त्राग्निकर्म	,,	,,
रौद्ररस	१५२१	५३
गलगण्ड, गण्डमाला, अपची व ग्रंथिअर्बुद इनपर पथ्य	,,	,,
अपथ्य	,,	,,
श्लीपदरोग।		
श्लीपदरोगकाकर्मविपाक	१५२२	५४
श्लीपदरोगेप्रतिमादानम्	,,	,,
श्लीपदनिदानम्	,,	,,
प्रकारान्तरेण निदानम्	,,	,,
चिकित्साक्रम....	,,	,,
वातजश्लीपद....	,,	,,
वातजन्यकायत्न	,,	,,
पित्तजश्लीपद	,,	,,
पित्तजश्लीपदकायत्न	,,	,,
पित्तजश्लीपदपरलेप	,,	,,
श्लैष्मिकश्लीपद	१५२४	५६
धत्तूरादिलेप	,,	,,
सिद्धार्थादिलेप	,,	,,
असाध्यलक्षण....	,,	,,
श्लीपदमेंकफकीप्रधानता	,,	,,
श्लीपदहोनेका देश	१५२५	५७
असाध्यश्लीपद	,,	,,
वृद्धदारुचूर्ण	,,	,,
पिप्पल्यादिचूर्ण	,,	,,
कृष्णादिमोदक	१५२६	५८
चित्रकादिकल्क	,,	,,
हरितकीकल्क	,,	,,
गुडूचीयोग	,,	,,
सर्षपतैल	,,	,,
स्वरस....	,,	,,
पलाशमूलस्वरस	१५२७	५९
श्लीपदपर शिरावेध	,,	,,
अन्न और दंभ	,,	,,
एरंडतैलसेवन	,,	,,
पिण्डारकादिचूर्ण	,,	,,
ऋषिकादिमूललेप	१५२८	६०
गुडूच्यादिलेप	,,	,,
धान्याम्ल	,,	,,
पाददाहपर	,,	,,
मदनादिलेप	,,	,,
सौरेश्वरघृत	,,	,,
विडङ्गादितैल	१५२९	६१
श्लीपदपर पथ्य	,,	,,
अपथ्य	१५३०	६२
अन्तर्विद्रधिरोग।		
अन्तर्विद्रधिनिदान	,,	,,
उत्पन्न होनेके स्थान....	,,	,,
स्रावनिर्गम	१५३१	६३
साध्यासाध्यविद्रधि	,,	,,
असाध्य लक्षण	,,	,,
विद्रधि निदान	१५३२	६४
वरुणादिघृत	,,	,,
त्रिफलादिगुग्गुलु	,,	,,
वरुणादिक्काथ....	१५३३	६५
शिग्र्वादिक्काथ ...	,,	,,
वर्षाभ्वादिक्काथ	,,	,,
पुनर्नवादिक्काथ	,,	,,
दशमूलादिक्काथ	,,	,,
वरुणादिकाथ	,,	,,

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
अनन्तादिपेय	१५३४	६६
हरीतक्यादिचूर्ण	”	”
कज्जलीयोग.... ...	”	”
विद्रधिपरलेप	”	”
वातविद्रधिकेक्षलण	”	”
व्याघ्रमूलादिलेप	१५३५	६७
शिग्रुमूलादिलेप	”	”
जलौकापातन	”	”
वातविद्रधिपरक्काथ	”	”
विडङ्गारिष्टविद्रधिआदिपर	”	”
पित्तजविद्रधिनिदान....	१५३६	६८
सारिवादिऔरचन्दनादिलेप	”	”
क्काथ और लेप	”	”
कफजन्यविद्रधि	१५३७	६९
प्रकारान्तर...	”	”
स्वेद	”	”
पकनेपरस्राव	”	”
संनिपातविद्रधि	”	”
अभिघातजन्य और आगंतुक विद्रधि	१५३८	७०
रक्तजविद्रधि	”	”
रक्तविद्रधिचिकित्सा	”	”
रक्तविद्रधिपर	”	”
स्तनविद्रधिनिदान	”	”
त्रिफलायोग....	१५३९	७१
सौभांजनीय योग	”	”
शिग्रुमूलयोग....	”	”
विद्रधिरोगपर पथ्य	”	”
विद्रधिरोगपर अपथ्य....	१५४०	७२

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
व्रणशोथ रोग।		
व्रणशोथनिदान	”	”
व्रणपाकलक्षण....	”	”
अपक्कव्रणके लक्षण	१५४१	७३
पच्यमानव्रणके लक्षण	”	”
पक्कव्रणके लक्षण	”	”
एकदोषसे उत्पन्न सूजनपकने के समय तीनों दोषोंका संबंध होना	१५४२	७४
राध न निकलनेका परिणाम....	”	”
आमादि लक्षण	”	”
अपक्क छेदन और पकेकी उपेक्षा करता वैद्यको दोष	”	”
व्रणका चिकित्साक्रम	१५४३	७५
विम्लापन और रक्तावसेचन	”	”
रुधिरमोक्षको सुसाध्यत्व	”	”
प्रकारान्तर	”	”
व्रणशोथको फोडना	१५४४	७६
शणमूलादि लेप	”	”
दंतीमूलादि लेप	”	”
हस्तिदन्तादि लेप	”	”
यवादि लेप	१५४५	७७
प्रक्षालन	”	”
शोधन रोपण	”	”
दुष्टव्रणपर लेप	”	”
व्रणको शोधन	१५४६	७८
निंबादि शोधन	”	”
न्यग्रोधादि शोधन	”	”
लेप और चूर्ण	”	”

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
निंबादि कल्क और रस	"	"
लशुनादि लेप और निंब पत्रादि धूप	१५४७	७९
त्रिफलादि काथ	"	"
मनःशिलादि लेप	"	"
पारदादि मलहरघृत....	"	"
प्रकारान्तर	१५४८	८०
अयोरजादि लेप	"	"
गुग्गुलवटक	"	"
विडङ्गादि गुग्गुलु	"	"
अमृतादि गुग्गुलु	१५४९	८१
जात्यादिघृत	"	"
स्वर्जिकादिघृत	"	"
लेपोपनाह	"	"
लेपनियम	१५५०	८२
पाचनकाल	"	"
अथोपनाहन	"	"
सक्तुपिण्डी	"	"
पाटन	"	"
मातुलुङ्गादि लेप	१५५१	८३
काञ्जिककल्क	"	"
पित्तशोथ चिकित्सा	"	"
अजगन्धादि लेप	"	"
कृष्णादि लेप	"	"
न्यग्रोधादि लेप	१५५२	८४
व्रणरोग।		
व्रणरोगका कर्मविपाक	"	"
व्रणनिदान	१५५३	८५
वातिकव्रण	"	"
पैत्तिकव्रण	"	"

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
कफजन्यव्रण	"	"
रक्तज व द्वन्द्वजव्रण	"	"
सुखव्रणनिदान	"	"
कृच्छ्रसाध्य और असाध्य	१५५४	८६
दुष्टव्रण	"	"
शुद्धव्रणके लक्षण	"	"
भरनेवाले व्रणके लक्षण	"	"
भरेहुए व्रणके लक्षण....	"	"
व्याधि विशेष करके व्रणको कृच्छ्रसाध्यत्व	१५५५	८७
साध्यासाध्यलक्षण	"	"
असाध्यव्रण	"	"
प्रकारान्तर	"	"
व्रणमें अपचार	१५५६	८८
व्रणरोगमें सामान्य चिकित्सा	"	"
वातव्रण चिकित्सा	"	"
रक्तस्राव	"	"
गम्भीर व्रणपर लेप	"	"
निंबादि लेप	१५५७	८९
मनःशिलादि लेप	"	"
व्रणकी कृमिपर	"	"
प्रकारांतर	"	"
जात्यादिघृत....	"	"
पटोलादिक्वाथ....	१५५८	९०
त्रिफलादिक्काथ	"	"
अथाग्निदग्धव्रणनिदान	"	"
अग्निदग्धव्रणचिकित्सा	१५५९	९१
पथ्यादिलेप....	१५६०	९२
अन्तर्धूम	"	"
सुधादिलेप....	"	"

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
शेल्वादिआश्चोतन	"	"
अग्निदग्धपरलेप	"	"
धातकीचूर्ण....	१५६१	९३
त्रिफलाचूर्ण....	"	"
सामान्यउपचार	"	"
दग्धयवचूर्ण....	"	"
चन्दनादितेल	"	"
पटोलीतैलम्....	१५६२	९४
लाङ्गलीघृत....	"	"
मधूच्छिष्टादितैल	"	"
आगन्तुव्रणीनदान	"	"
व्रणके छःप्रकार	१५६३	९५
सर्वव्रणके उपद्रव	"	"
छिन्नलक्षण....	"	"
भिन्नलक्षण....	"	"
कोष्टलक्षण....	"	"
इनके भेदोंकेलक्षण	१५६४	९६
आमाशयास्थितरक्तभेलक्षण	"	"
विद्धलक्षण	"	"
पक्काशयस्थरक्तके लक्षण	"	"
क्षतकेलक्षण....	१५६५	९७
पिच्चितलक्षण....	"	"
घृष्टलक्षण....	"	"
सशल्यलक्षण....	"	"
कोष्टकेदलक्षण	"	"
असाध्यकोष्ठभेद	१५६६	९८
मांस-शिरा-स्नायु-अस्थि और संधिइनकेमर्ममें घावहोनेसे सामान्यलक्षण	"	"
मर्मरहिताशिराविद्धकेलक्षण	"	"
स्नायुविद्ध...	"	"
संधिविद्ध....	१५६७	९९
अस्थिविद्ध....	"	"
मांसमर्मकेअनुक्तलक्षण	"	"
आगन्तुकव्रण	"	"
आगन्तुकपरचिकित्सा	"	"
सामान्य चिकित्साक्रम	१५६८	१००
घृष्ट तथा विदलितका उपचार	"	"
छिन्न छिन्न और विद्ध इनपर उपचार	"	"
उपचार	"	"
उपचार	"	"
सद्योव्रणचिकित्सा	१५६९	१०१
आशयभेद उपचार	"	"
वंशत्वगादि क्वाथ	"	"
गौरादिघृत	"	"
यवादिअन्न	१५७०	१०२
तिक्तादिघृत	"	"
जात्यादि तेल	"	"
सद्योव्रणचिकित्सा	१५७१	१०३
दूर्वादि तैल	"	"
सप्तविंशति गुग्गुलु	"	"

अथ भग्नरोग ।

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
भग्नरोग निदान	१५७२	१०४
संधिभग्न	"	"
संधिभङ्गके सामान्य लक्षण	"	"
काण्डभग्नके लक्षण	१५७३	१०५
काण्डभग्नके सामान्य लक्षण	१५७४	१०६

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
काण्डभग्नके बारहों भेदोंसे अधिक प्रकार....	१५७४	१०६
कष्टसाध्य	,,	,,
असाध्य लक्षण	,,	,,
अन्य असाध्य लक्षण	१५७५	१०७
उपद्रव करनेसे असाध्यत्व	,,	,,
पृथक् २ अस्थिका पृथक् रीतिसें भंगवर्णन	,,	,,
भग्नचिकित्सा....	,,	,,
भग्नका बंधन....	,,	,,
भग्नपर कर्म	१५७६	१०८
हड्डी बांकी होगई हो उसपर उपचार	,,	,,
लेप	,,	,,
न्यग्रोधादिकाथ	,,	,,
शृगालविन्नारसपान	,,	,,
आमादिचूर्ण	१५७७	१०९
क्षीरपान	,,	,,
प्रकारांतर	,,	,,
रसोनादिकल्क	,,	,,
लाक्षादिगुग्गुल	,,	,,
आभादिगुग्गुल	,,	,,
वल्लिजभस्म	१५७८	११०
गोधूमप्रयोग	,,	,,
अपथ्य....	,,	,,
अथ नाडीव्रणरोग।		
नाडीव्रणहर कर्मविपाक	१५७९	१११
नाडीव्रणनिदान	,,	,,
संख्यारूपसंप्राप्ति	,,	,,
सामान्यचिकित्सा	,,	,,

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
वातनाडीव्रण	१५८०	११२
सामान्यचिकित्सा	,,	,,
पित्तनाडीव्रण....	,,	,,
सामान्य चिकित्सा	,,	,,
कफनाडीव्रण....	,,	,,
सामान्य चिकित्सा	१५८१	११३
शल्यजनाडीव्रण	,,	,,
सामान्य चिकित्सा	,,	,,
सन्निपातजन्य नाडीव्रण	,,	,,
साध्यासाध्य	,,	,,
नाडीव्रण जात्यादिवर्ती	,,	,,
निर्गुण्डी तैल....	१५८२	११४
नरास्थितैल	,,	,,
विडंगाद्यगुग्गुलु	,,	,,
आरग्वधादिवर्ती	,,	,,
गुग्गुलादि लेप	,,	,,
व्रणरोगपर पथ्य	१५८३	११५
अपथ्य	,,	,,
भगंदररोग।		
भगंदररोगका कर्मविपाक	,,	,,
भगन्दर निदान	१५८४	११६
भगन्दर शब्दकी निरुक्ति	,,	,,
शतपोनकके लक्षण	,,	,,
उष्ट्रशिरोधरके लक्षण	१५८५	११७
शंबूकावर्तके लक्षण	,,	,,
परिस्रावी भगंदरके लक्षण	,,	,,
अर्शभगंदर	,,	,,
उन्मार्गी भगंदर	१५८६	११८
साध्यासाध्य लक्षण	,,	,,
सामान्य चिकित्सा	,,	,,

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
भगंदरपर दंभ	१५८६	११८
अपक्व भगंदर पिटिकापर	१५८७	११९
क्षारादियोग	,,	,,
स्यन्दन तैल	,,	,,
निशादि तैल	,,	,,
करवीर तैल	,,	,,
शुनास्थ्यादि लेप तथा नरास्थि तैल ...	१५८८	१२०
बिडालास्थि लेप	,,	,,
कुष्ठादि लेप	,,	,,
रसांजनादि कल्क	,,	,,
वटपत्रादि लेप	,,	,,
तिलादि लेप....	१५८९	१२१
खदिरादि लेप	,,	,,
तिलादि लेप	,,	,,
सप्तविंशति गुग्गुल	,,	,,
जम्बूकमांस प्रकार	१५९०	१२२
भगन्दरपर पथ्य	,,	,,
भगन्दरपर अपथ्य	,,	,,
उपदंश रोग ।		
उपदंशका कर्मविपाक	१५९१	१२३
उपदंश निदान	,,	,,
वातोपदंश	१५९२	१२४
उपदंशपर प्रक्रिया	,,	,,
पित्तोपदंश तथा रक्तोपदंश	,,	,,
गैरिकादि क्वाथ	,,	,,
निम्बादि क्वाथ ...	,,	,,
कफोपदंशके लक्षण	१५९३	१२५
लिङ्गवर्त्ति उपदंश	,,	,,
सर्वोपदंशपर सर्वव्याधि हरण रस ...	,,	,,
सांनिपातोपदंश	१५९४	१२६
असाध्य लक्षण	,,	,,
प्रकारांतर	,,	,,
नीलोत्पलादि लेप	,,	,,
दारुहरिद्रादि लेप ...	१५९५	१२७
रसांजनादि लेप	,,	,,
प्रकारांतर	,,	,,
पारदादि लेप	,,	,,
वटप्ररोहादि लेप	१५९६	१२८
त्रिफलामषी लेप	,,	,,
अश्वत्थादि प्रक्षालन	,,	,,
त्रिफलादि प्रक्षालन	,,	,,
जयादि प्रक्षालन	,,	,,
पटोलादि क्वाथ	,,	,,
गैरिकादि क्वाथ	१५९७	१२९
आम्रत्वचाका स्वरस	,,	,,
सर्जिकादि चूर्ण	,,	,,
बबूलदल चूर्ण	,,	,,
चोपचीनी चूर्ण	,,	,,
भूनिंबादिघृत	१५९८	१३०
करञ्जादि घृत	,,	,,
रसघृत	,,	,,
आगरधूम तैल	१५९९	१३१
सूतादिवटी	,,	,,
उपदंशकुठार	,,	,,
रसगन्धकज्जली	१६००	१३२
चोपचीनीपाक	,,	,,
बालहरीतक्यादि योग	,,	,,
जातिस्वरस	१६०१	१३३

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
पथ्य	१६०१	१३३
अपथ्य	”	”
शूकदोष।		
शूकदोषनिदान	”	”
शूकदोषचिकित्सा	१६०२	१३४
प्रथम उपचार	”	”
सर्षपिका लक्षण	”	”
अष्ठीलिका लक्षण	”	”
अष्ठीलिका चिकित्सा	”	”
ग्रथित	”	”
ग्रथितचिकित्सा	१६०३	१३५
कुम्भिका लक्षण	”	”
कुम्भिका चिकित्सा	”	”
अलजीके लक्षण	”	”
अलजीचिकित्सा	”	”
मृदित	”	”
समूढ पिटिका लक्षण....	”	”
अवमन्थके लक्षण	१६०४	१३६
अवमन्थ चिकित्सा	”	”
पुष्करिका लक्षण	”	”
पुष्कारिकाका यत्न	”	”
स्पर्शहानि लक्षण	”	”
उत्तमा	”	”
चिकित्सा	१६०५	१३७
शतपोनक	”	”
चिकित्सा	”	”
त्वक्पाक	”	”
त्वक्पाक, स्पर्शहानि और मृदित	”	”
शोणितार्बुद	१६०५	१३७
मांसार्बुद	१६०६	१३८
मांसपाक लक्षण	”	”
विद्रधि लक्षण	”	”
तिलकालकके लक्षण	”	”
मांसार्बुद, मांसपाक, विद्रधि, तिलकालक	”	”
तिलकाकलकको असाध्यत्व	”	”
चिकित्सा	१६०७	१३९
पथ्य	”	”
त्वग्दोष (कुष्ठ) रोग.		
कुष्ठरोगका कर्मविपाक	”	”
दुश्चर्महर	”	”
कुष्ठनिदान	१६०८	१४०
कुष्ठोंको त्रिदोषजत्वहोंनेसेंदोषाधिक्यकरिकेसातप्रकार	” १६०९	” १४१
कुष्ठके पूर्वरूप	”	”
कपालकुष्ठ	”	”
वेल्लादिलेप....	”	”
औदुंबरकुष्ठ	१६१०	१४२
मण्डलकुष्ठ....	”	”
चित्रकादिलेप	”	”
ऋक्षजिह्व....	”	”
पुण्डरीककुष्ठ	”	”
विजयेश्वररस	१६११	१४३
भृंगराजादि लेप	”	”
सिध्मकुष्ठ	”	”
लाक्षादिलेप	”	”

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
कार्पासादिलेप	१६१२	१४४
सिध्मपरलेप...	,,	,,
बान्धकादिलेप	,,	,,
तालकादिलेप	,,	,,
रसादिलेप	,,	,,
धात्र्यादिलेप	,,	,,
प्रकारान्तर	१६१३	१४५
गन्धकादिलेप	,,	,,
कासमर्दादिलेप	,,	,,
मूलकबीजादिलेप	,,	,,
कांकणकुष्ठ	,,	,,
चर्मकुष्ठ (गजकर्ण)	१६१४	१४६
चिकित्सा	,,	,,
चर्मकुष्ठ	,,	,,
किटिभकुष्ठ	१६१५	१४७
किटिभपर वज्रपाणिरस	,,	,,
किटिभपरचक्रांकादिलेप	,,	,,
किटिभपर पिप्पल्यादिलेप	,,	,,
तृतीय लेप	,,	,,
वैपादिक कुष्ठ	१६१६	१४८
धत्तूरतैल	,,	,,
मुण्डीघृत....	,,	,,
विपादिकातथा विचर्चिका	,,	,,
द्वन्द्वजऔरसन्निपातजन्यकुष्ठ	,,	,,
अलसकुष्ठ....	१६१७	१४९
दद्रुमण्डलकुष्ठ ...	,,	,,
मूलकबीजादिलेप	,,	,,
आरग्वधदलादि लेप....	,,	,,
चर्मदलकुष्ठ....	१६१८	१५०
राजिकादिलेप	,,	,,
तालकभस्म....	१६१८	१५०
कासमर्दादि लेप	,,	,,
दद्रूपरप्रपुन्नाटादिलेप....	,,	,,
दूर्वादिलेप........	१६१९	१५१
विडङ्गादिलेप	,,	,,
लघुमारीचादितेल	,,	,,
दरदादिलेप.... ...	,,	,,
सर्वकुष्ठोंपर रसादियोग	१६२०	१५२
मनःशिलादितथाकरंजादिलेप	,,	,,
करवीरादितेल	,,	,,
वरादिचूर्ण	,,	,,
रसादिलेप	,,	,,
सिन्दूरादिलेप व अर्कतैल	,,	,,
विस्फोटककुष्ठ	१६२१	१५३
कच्छुकुष्ठ	,,	,,
जीरकतैल	,,	,,
बृहत्सिन्दूरादितैल ...	,,	,,
हरिद्राकल्क	१६२२	१५४
बृहन्मरीच्यादितैल	,,	,,
शतारुकुष्ठ	१६२३	१५५
गन्धकयोग	,,	,,
सिंहास्यदललेप	,,	,,
विचर्चिकाकुष्ठ ...	,,	,,
माहेश्वरघृत....	१६२४	१५६
खुजलीपरमांस्यादिगण	,,	,,
अवल्गुजादिलेप	,,	,,
कुष्ठचिकित्साक्रम	,,	,,
पथ्यादिलेप...	,,	,,
एलादिलेप....	१६२५	१५७
करवीरादिलेप	,,	,,

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
शिरावेध.... ...	१६२५	१५७
शिंगीलगाना....	"	"
जोख-तुम्बी...	"	"
वमन,विरेचन	"	"
गुग्गुल....	"	"
महातिक्तकघृत	१६२६	१५८
पञ्चतिक्तक घृत	"	"
महाखदिरादिघृत	१६२७	१५९
तिक्तषट्पलघृत	"	"
वातजादिकुष्ठ....	१६२८	१६०
वातादिकुष्ठोंपरसामान्य चिकित्सा....	"	"
यवादिवमन....	१६२९	१६१
रसगतकुष्ठकेलक्षण	"	"
रक्तगतकुष्ठलक्षण	"	"
मेदोगतके लक्षण	"	"
मांसगतके लक्षण ...	"	"
आस्थिमज्जागत कुष्ठके लक्षण	"	"
शुक्रार्तवगत कुष्ठके लक्षण	१६३०	१६२
साध्यासाध्यत्व	"	"
पञ्चनिम्बचूर्ण	"	"
खदिरासव	१६३१	१६३
कुष्ठपर चिकित्सा करनेकेवास्ते प्रधान दोषकथन	१६३२	१६४
किलास कुष्ठ निदान	"	"
वातादिभेदसें किलासके लक्षण	१६३३	१६५
श्वित्रके साध्यासाध्य लक्षण	"	"
किलासके असाध्य लक्षण	"	"
सांसर्गिकरोग	"	"
शैलेयादिलेप	१६३४	१६६
मंजिष्ठादि ६४ क्वाथ	"	"
मंजिष्ठादिक्वाथ	१६३५	१६७
लघुमाञ्जिष्ठादिक्वाथ	"	"
त्रिफलादिक्वाथ ...	१६३६	१६८
खादिरादि...	"	"
शुण्ठ्यादिक्वाथ	"	"
भल्लातकावलेह	१६३७	१६९
शशाङ्कलेखादिलेप	१६३८	१७०
धात्र्यादिलेह...	"	"
त्रिफलादिमोदक	"	"
खदिरयोग.... ...	१६३९	१७१
निम्बादिकल्क	१६४०	१७२
त्रिफलादिगुटिका	"	"
एकविंशतिकगुग्गुलु	"	"
सर्षपादिउद्धूलन	१६४१	१७३
विडङ्गादिचूर्ण	"	"
सर्वांगसुंदररस	"	"
कनकारिष्ट.... ...	१६४२	१७४
वज्रतेल....	"	"
मञ्जिष्ठादितैल	१६४३	१७५
श्वित्रकुष्ठकीचिकित्सा....	"	"
खदिरक्वाथ...	"	"
त्रिफलादिलेप	"	"
सपेद कुष्ठको असाध्यत्व	१६४४	१७६
बल्यादिलेप	"	"
हयादिलेप	"	"
तालकादिलेप	"	"
गुंजाफलादिचूर्ण	"	"
गुंजादिलेप	"	

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
अयोरजादिलेप	१६४५	१७७
विषतैल	”	”
ज्योतिष्मतीतैल	”	”
शशिलेखावटी	”	”
कुष्ठरोगपरपथ्य	१६४६	१७८
कुष्ठरोगमें अपथ्य	१६४७	१७९
अपथ्य	”	”
शीतपित्तरोग।		
शीतपित्तनिदान	”	”
पूर्वरूप	”	”
उदर्दलक्षण	”	”
शीतपित्तऔरउदर्दकाभेद	१६४८	१८०
उदर्दके अन्य लक्षण....	”	”
कोठ लक्षण	”	”
उत्कोट और कोठ	”	”
वमन....	”	”
त्रिफलादिरेचक	१६४९	१८१
अभ्यङ्ग	”	”
गंभारीफलकल्क	”	”
यष्ट्यादिक्काथ	”	”
अमृतादिक्काथ	”	”
गुडादियोग	”	”
सामान्यचिकित्सा	१६५०	१८२
सैन्धवादिलेप	”	”
सिद्धार्थादिउद्वर्तन	”	”
सामान्यचिकित्साक्रम	”	”
निम्बपत्रयोग	”	”
कुष्ठपरउद्वर्तन	१६५१	१८३
शीतारिरस	”	”
स्पर्शवातलक्षण	”	”
तालादिगुटी	१६५१	१८३
रसादिगुटी	१६५२	१८४
पथ्य....	”	”
अपथ्य	”	”
अम्लपित्तरोग।		
अम्लपित्तकानिदान	”	”
लक्षण....	१६५३	१८५
अम्लपित्तभेदोंमें एकअधोगतदूसरा ऊर्ध्वगतउनमेंअधोगत केलक्षण....	”	”
कफपित्तजअम्लपित्त....	”	”
कफपित्तलक्षण	”	”
अम्लपित्तचिकित्सा	”	”
पटोलादिक्काथ....	१६५४	१८६
ऊर्ध्वगतअम्लपित्तकेलक्षण	”	”
अम्लपित्तमें साध्यासाध्य	”	”
अम्लपित्तको वातकफसंसर्ग	”	”
वातयुक्तअम्लपित्त	१६५५	१८७
वातकफयुक्तअम्लपित्त	”	”
कफयुक्तअम्लपित्त	”	”
गुडादिमोदक	”	”
अम्लपित्तकीसामान्यचिकित्सा	”	”
प्रकारान्तर....	”	”
प्रकारान्तर....	१६५६	१८८
अन्न....	”	”
सामान्यचिकित्सा	”	”
वमनऔर विरेचन	”	”
सामान्यचिकित्सा	”	”
अम्लपित्तकेदाहपर....	१६५७	१८९
द्राक्षादिगुटिका	”	”

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
नालिकेरखण्ड	१६५७	१८९
खण्डकूष्माण्ड	”	”
मधुपिप्पली....	१६५८	१९०
पाठादिकाथ	”	”
हिंस्रादिकाथ	”	”
यवादि....	”	”
अन्ययवादिकाढा	१६५९	१९१
भूनिंबादिकाथ....	”	”
कंटकार्यादिकाथ	”	”
चित्रकादिकाथ	”	”
अविपत्रिकरचूर्ण	”	”
एलादिचूर्ण....	१६६०	१९२
गुडमोदक....	”	”
त्रिकुट चूर्ण अधोगत अम्लपित्तपर	”	”
अभयादि अवलेह	१६६१	१९३
खंडपिप्पल्यादि अवलेह	”	”
पिप्पलीघृत	”	”
द्राक्षादिघृत	१६६२	१९४
शतावरीघृत	”	”
नारायणघृत	”	”
गुडादिघृत	”	”
लीलाविलासरस	१६६३	१९५
रसामृत	”	”
सूतशेखररस	”	”
अम्लपित्तपर पथ्य	१६६४	१९६
अम्लपित्तपर अपथ्य	”	”
विसर्प।		
विसर्पनिदान....	१६६५	१९७
द्वंद्वजों के नाम विशेष	”	”
विसर्प होनेके कारण	१६६५	१९७
वमन	”	”
शास्त्रार्थ	”	”
विरेचन	१६६६	१९८
त्रिवृदादिशोधन	”	”
वातविसर्प	”	”
रास्नादि लेप....	”	”
पित्तविसर्प	”	”
मपौंडरीकादि लेप ...	”	”
कसेरुवादि लेप ...	१६६७	१९९
पंचमूलादि क्काथ	”	”
कफविसर्प	”	”
कफविसर्पपर वमन	”	”
गायत्र्यादि लेप	”	”
त्रिफलादि लेप	”	”
घृतादिलेप	१६६८	२००
दशांगलेप	”	”
अग्निविसर्प	”	”
मांस्यादिलेप	१६६९	२०१
ग्रंथिविसर्प	”	”
न्यग्रोधादिलेप	१६७०	२०२
कर्दमविसर्प	”	”
कर्दमविसर्पपर	”	”
क्षतजविसर्प	१६७१	२०३
विसर्पके उपद्रव	”	”
साध्यासाध्यलक्षण	”	”
गौराद्यघृत	”	”
वृषादिघृत	१६७२	२०४
दूर्वादिघृत....	”	”
करंजादितैल	”	”
पटोलादिकाथ	”	”

विषयाः		सं० पृ०	पृ०
गुडूच्यादिक्वाथ	....	१६७३	२०५
पटोलादि	....	,,	,,
दुरालभादि	....	,,	,,
मुस्तादि	....	,,	,,
भूनिंबादि	....	,,	,,
कनकादिलेप	....	१६७४	२०६
एरंडादितैल	....	,,	,,
हरीतकी योग	....	,,	,,
द्वंद्वजविसर्पकीचिकित्सा		१६७५	२०७
पथ्य	....	,,	,,
अपथ्य	....	१६७६	२०८
विस्फोट ।			
विस्फोटनिदान	....	,,	,,
विस्फोटकास्वरूप	....	,,	,,
सामान्यचिकित्सा	....	१६७७	२०९
वातविस्फोट	....	,,	,,
दशमूलकाक्वाथ	....	,,	,,
पित्तविस्फोट	....	,,	,,
द्राक्षादि	....	,,	,,
कफविस्फोट	....	१६७८	२१०
भूनिंबादि	....	,,	,,
कफपित्तजविस्फोट	....	,,	,,
द्वादशाङ्गक्वाथ	....	,,	,,
वातपित्तात्मक	....	,,	,,
अमृतादिक्वाथ	....	,,	,,
कफवातात्मक विस्फोट		१६७९	२११
सन्निपातकाविस्फोट	....	,,	,,
रक्तजविस्फोट	....	,,	,,
साध्यासाध्य	....	,,	,,
विस्फोटकेउपद्रव	....	,,	,,
पटोलादि क्वाथ	....	१६८०	२१२

विषयाः		सं० पृ०	पृ०
दूर्वादिघृत	....	१६८०	२१२
निंबादिक्वाथ	....	,,	,,
भूनिंबादिक्वाथ	....	,,	,,
पद्मकादिघृत	....	,,	,,
पञ्चतिक्तघृत	....	१६८१	२१३
चन्दनादिलेप	... .	,,	,,
विस्फोटपरपथ्य	....	,,	,,
विस्फोटपरअपथ्य	....	१६८२	२१४
मसूरिका ।			
मसूरिकानिदान	....	,,	,,
मसूरिकाकेपूर्वरूप	....	,,	,,
फुंसीहोनेकाकारण	....	१६८३	२१५
मसूरिकाकास्वरूप	....	,,	,,
मसूरिकाचिकित्सा	....	,,	,,
सामान्यक्रम	....	,,	,,
वातमसूरिका	....	,,	,,
वातमसूरिकाकायत्न		१६८४	२१६
धूप	....	,,	,,
न्यग्रोधादिलेप	....	,,	,,
चन्दनादिकल्क	....	,,	,,
गुडूच्यादिचूर्ण	....	,,	,,
बृहत्पटोलादिक्वाथ	....	१६८५	२१७
दशमूलादिक्वाथ	....	,,	,,
पित्तमसूरिका	....	,,	,,
सामान्ययत्न	....	,,	,,
निंबादिक्वाथ	....	,,	,,
निंबादि	....	१६८६	२१८
द्राक्षादि	....	,,	,,
रक्तजन्यमसूरिका	....	,,	,,
कफजन्यमसूरिका	....	,,	,,
पञ्चमूलादिक्वाथ	....	,,	,,

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
अडूसेकास्वरस	१६८७	२१९
खदिरादिलेप	,,	,,
दुरालभादिक्वाथ	,,	,,
गुडूच्यादिक्वाथ	,,	,,
नागरादिक्वाथ	,,	,,
त्रिदोषजन्यमसूरिका	,,	,,
चर्मपिटिका....	१६८८	२२०
रोमांतिक	,,	,,
रसगतमसूरिका	,,	,,
रक्तगतमसूरिका	,,	,,
मांसगतमसूरिका	,,	,,
मेदोगतमसूरिका	१६८९	२२१
अस्थिगत तथा मज्जाके लक्षण	,,	,,
शुक्रगतमसूरिका	,,	,,
धातुगतमसूरिकोंके दोष संबंध से लक्षण....	,,	,,
धातुगत वा दोषगतमसूरिका ओं में साध्यासाध्य	१६९०	२२२
कष्टसाध्य....	,,	,,
असाध्यमसूरिका	,,	,,
शीतलाकीविशेषावस्था	,,	,,
मसूरिकाके उपद्रव	१६९१	२२३
शीतलाके भेद	,,	,,
बृहतीशीतलाकेलक्षण	,,	,,
बृहतीशीतलापरउपचार	,,	,,
रक्षाप्रकार....	१६९२	२२४
भेषजप्रकार	,,	,,
चिंचाबीजचूर्ण	,,	,,
सामान्यचिकित्सा	,,	,,
स्तोत्रपाठादि	,,	,,
मसूरिकादिभेद कोद्रव	१६९३	२२५
मोचरसादिपान	,,	,,
स्फोटदाह....	,,	,,
चन्दनादिहिम	,,	,,
कोद्रवनामकमसूरिकापर	,,	,,
खदिराष्टक....	१६९४	२२६
साध्यासाध्यविचार	,,	,,
निशादिक्वाथ....	,,	,,
निंबादिक्वाथ	,,	,,
काञ्चनादिक्वाथ	१६९५	२२६
पटोलादिक्वाथ....	,,	,,
धान्यादिक्वाथ....	,,	,,
नेत्रकीशीतलापर उपचार	,,	,,
अवधूलन....	१६९६	२२८
मधुकादिलेप....	,,	,,
शंबूकस्वरस	,,	,,
पंचवल्कलादिअवधूलन	,,	,,
शीतलाके व्रणपर	,,	,,
रालादिधूप	१६९७	२२९
मसूरिका रोगपर पथ्य	,,	,,
अपथ्य	१६९८	२३०

क्षुद्ररोग ।

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
अजगल्लीके लक्षण	,,	,,
अजगल्लीकी चिकित्सा	,,	,,
यवप्रख्या	,,	,,
अंधालजी	१६९९	२३१
यवप्रख्या और अंधालजीकी चिकित्सा	,,	,,
विवृता	,,	,,
कच्छपिका	१७००	२३२

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
चिकित्सा	१७००	२३२
वल्मीक (बाँबी)	,,	,,
मनःशिलादितैल	,,	,,
असाध्य लक्षण	१७०१	२३३
वल्मीककी चिकित्सा	,,	,,
लेप और पिंडी	,,	,,
पनसिका	,,	,,
पनसिकाकी चिकित्सा	,,	,,
जालगर्दभ	१७०२	२३४
इन्द्रवृद्धा	,,	,,
गर्दभिका	,,	,,
पाषाणगर्दभ	,,	,,
पाषाणगर्दभकी चिकित्सा	,,	,,
इरिवेल्लिका	१७०३	२३५
कक्षा (कखलाई)...	,,	,,
गन्धनाम्नि	,,	,,
कक्षागन्धनाम्नीकी चिकित्सा....	,,	,,
अग्निरोहिणी.... ...	,,	,,
अग्निरोहिणीकी चिकित्सा	१७०४	२३६
चिप्य....	,,	,,
चिप्यकुनखकी चिकित्सा	,,	,,
हरिद्रादिकल्क	,,	,,
अंगुलीवेष्टकपर	,,	,,
कुनखपर	१७०५	२३७
अनुशयी	,,	,,
अनुशयीकी चिकित्सा	,,	,,
विदारिका	,,	,,
विदारिकाकी चिकित्सा	,,	,,
सामान्य यत्न	,,	,,
शर्करार्बुद	१७०६	२३८
शर्करा	१७०६	२३८
शर्करार्बुदकी चिकित्सा	,,	,,
पाददारी	,,	,,
चिकित्सा	,,	,,
मधूच्छिष्टादिलेप	१७०७	२३९
मदनादिलेप	,,	,,
मध्वादिलेप	,,	,,
उपोदिकादितैल	,,	,,
मदनादिलेप	,,	,,
सैन्धवादिलेप...	१७०८	२४०
कदर	,,	,,
चिकित्सा	,,	,,
अलसनिदान (खारुए)	,,	,,
अलसचिकित्सा	,,	,,
करंजादिलेप....	१७०९	२४१
इन्द्रलुप्त	,,	,,
यत्न	,,	,,
लेप	१७१०	२४२
तिक्तादिस्वरस	,,	,,
गोक्षुरादिलेप	,,	,,
जात्यादितैल....	,,	,,
स्नुहीदुग्धादिलेप	,,	,,
दारुण....	,,	,,
चिकित्सा	१७११	२४३
कंटकार्यादिलेप ...	,,	,,
प्रियालादिलेप	,,	,,
आम्रबीजादिलेप	,,	,,
भृंगराजतैल	,,	,,
गुंजादितैल	१७१२	२४४
अरूंषिका	,,	,,

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
चिकित्सा	१७१२	२४४
त्रिफलादितैल....	”	”
पिण्याकादि लेप	”	”
सामान्ययत्न	”	”
हरिद्रादितैल	१७१३	२४५
खदिरादिलेप....	”	”
पलित (बालोंकासपेदहोना)	”	”
अयादि लेप	”	”
धात्र्यादि लेप....	”	”
निंबतैलयोग	१७१४	२४६
त्रिफलादिलेप	”	”
काश्मर्यादितैल.... ...	”	”
तारुण्यपिटिका... ...	”	”
चिकित्सा	१७१५	२४७
जातीफलादिलेप	”	”
लोध्रादिलेप	”	”
सिद्धार्थादिलेप	”	”
पद्मिनीकंटक	”	”
पद्मिनीकंटककीचिकित्सा	१७१६	२४८
निंबादिघृत	”	”
जंतुमणि	”	”
माष (मस्सा)	”	”
तिलकालक	”	”
तिलकालक, माषजंतुमणि पर चिकित्सा....	१७१७	२४९
न्यच्छ...	”	”
मंजिष्ठादितैल....	”	”
व्यंग	१७१८	२५०
चिकित्सा	”	”
वटांकुरादि लेप	”	”
अर्जुनत्वादिलेप	”	”
जातीफलादिलेप	”	”
मसुरादिलेप	१७१९	२५१

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
नीलिका	१७१९	२५१
कुंकुमादि तैल	”	”
परिवर्त्तिका	”	”
सामान्ययत्न	१७२०	२५२
मकारांतर	”	”
अवपाटिका	”	”
चिकित्सा	१७२१	२५३
निरुद्धप्रकाश....	”	”
संनिरुद्धगुद	”	”
चिकित्सा	१७२२	२५४
अहिपूतन	”	”
चिकित्सा	”	”
रास्नादि लेप....	”	”
पटोलादि क्राथ	”	”
वृषणकच्छू	१७२३	२५५
सामान्य चिकित्सा	”	”
सर्जादि लेप	”	”
कासीसादि लेप	”	”
गुदभ्रंश	”	”
चिकित्सा	१७२४	२५६
पद्मिनीपत्रयोग	”	”
मूषिकादि लेप	”	”
चांगेरीघृत	”	”
वृक्षाम्लादियोग	”	”
मूषकतैल	१७२५	२५७
सूकरदंष्ट्र	”	”
चिकित्सा	”	”
राजीवादिकल्क	”	”
रजन्यादि लेप	”	”
पथ्यापथ्य	१७२६	२५८
मुखरोग।		
मुखरोगका कर्मविपाक	”	”

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
मुखरोगसंख्या	१७२६	२५८
संप्राप्ति	,,	,,
ओष्ठरोगसंख्या	१७२७	२५९
वातजओष्ठरोग	,,	,,
साधारणचिकित्सा	,,	,,
तैलादि लेप	,,	,,
रालादि लेप	,,	,,
पैत्तिकओष्ठरोग	१७२८	२६०
साधारण चिकित्सा	,,	,,
श्लैष्मिकओष्ठरोग	,,	,,
सामान्यचिकित्सा	,,	,,
सांनिपातिकओष्ठरोग	,,	,,
सर्व ओष्ठरोगोंकी सामान्य चिकित्सा	१७२९	२६१
रक्तजओष्ठरोग	,,	,,
मांसजओष्ठरोग	,,	,,
मेदजओष्ठरोग	,,	,,
सामान्य चिकित्सा	,,	,,
अभिघातजओष्ठरोग	,,	,,
कफज रक्तज ओष्ठरोग	१७३०	२६२
दंतमूल रोगोंकी संख्या और नाम	,,	,,
शीतादकेलक्षण	,,	,,
सामान्यचिकित्सा	,,	,,
कासीसादिचूर्ण ...	१७३१	२६३
दंतपुप्पुटकेलक्षण	,,	,,
दंतवेष्टकेलक्षण	,,	,,
दंतवेष्टकीचिकित्सा	,,	,,
जीरकादिचूर्ण....	१७३२	२६४
कणादिचूर्ण....	,,	,,
भद्रमुस्तादिगुटी	,,	,,
सहचरादितैल....	१७३२	२६४
सौषिरके लक्षण	१७३३	२६५
सामान्यचिकित्सा	,,	,,
महासौषिरदंतमूलरोग	,,	,,
परिदरदंतमूलरोग ...	,,	,,
उपकुशदंतमूलरोग	१७३४	२६६
परिदर और उपकुशकी चिकित्सा	,,	,,
सामान्य यत्न	,,	,,
वैदर्भदंतमूलरोग	,,	,,
सामान्ययत्न....	,,	,,
खल्लीवर्द्धन....	१७३५	२६७
सामान्ययत्न....	,,	,,
कराल....	,,	,,
अधिकमांसकरोग	,,	,,
यत्न....	,,	,,
दंतविद्रधिनिदान	१७३६	२६८
नाडीव्रण....	,,	,,
दालन....	,,	,,
भंजनकेदंतरोग	,,	,,
दंतहर्ष....	,,	,,
सामान्यचिकित्सा	१७३७	२६९
चिकित्सांतर....	,,	,,
कृमिदंतक....	,,	,,
चिकित्सा....	,,	,,
बृहत्यादिक्काथ ...	,,	,,
दंतकृमिपरपातन	१७३८	२७०
सारिवापर्णधारण	,,	,,
कासीसादिगुटी	,,	,,
दंतशर्करा....	,,	,,
चिकित्सा....	,,	,,

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
दंतशर्करा....	१७३९	२७१
श्यावदंत....	"	"
हनुमोक्ष....	"	"
दंतनाडीचिकित्सा	"	"
जात्यादितैल....	१७४०	२७२
सामान्यचिकित्सा	"	"
लक्षादितैल....	"	"
दंतरोगकासामान्ययत्न	१७४१	२७३
कुष्ठादिचूर्ण....	"	"
गुडूचीकल्क	१७४२	२७४
जातीपत्रादिचूर्ण	"	"
पथ्य	"	"
जिह्वारोग संख्या	"	"
वातजजिह्वा	"	"
कफजजिह्वा	१७४३	२७५
अल्लासके लक्षण	"	"
उपजिह्वाके लक्षण	"	"
सामान्यचिकित्सा	"	"
व्योषादिचूर्ण	"	"
निर्गुंड्यादिचर्वण	१७४४	२७६
कांचनार काथ	"	"
जिह्वारोगकीसाधारणक्रिया	"	"
गुडूच्यादिकवल	"	"
जिह्वाकंटकपर....	"	"
प्रतिसारणविधि	"	"
कंठशुंडीतालुरोग	१७४५	२७७
तुंडिकेरीतालुरोग	"	"
अध्रुवतालुरोग	"	"
कच्छपतालुरोग	"	"
अर्बुदतालुरोग	१७४५	२७७
मांससंघात	"	"
तालुपुप्पुट	"	"
कंठशुंड्यादिचिकित्सा	१७४६	२७८
तालुशोषके लक्षण	"	"
चिकित्सा	"	"
तालुपाकके लक्षण	"	"
चिकित्सा	"	"
तालुरोग	"	"
शुंडीछेदन	"	"
छेदनप्रकार	१७४७	२७९
शुंडीछेदनकेपश्चात् उपचार	"	"
गलरोगके नाम और संख्या	"	"
कंठगत १७ रोग तिनमें पांचों रोहिणियोंकी संप्राप्ति	"	"
उक्त रोहिणियोंकी सामान्य चिकित्सा....	१७४८	२८०
वातजाकेलक्षण	"	"
चिकित्सा	"	"
पित्तजरोहिणी	"	"
चिकित्सा	"	"
रक्तजरोहिणी	१७४९	२८१
चिकित्सा	"	"
कंठशालूक	"	"
सामान्यचिकित्सा	"	"
कफजरोहिणी	"	"
चिकित्सा	"	"
त्रिदोषजरोहिणी	"	"
अधिजिह्वके लक्षण	१७५०	२८२

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
सामान्य यत्न	१७५०	२८२
वलयके लक्षण	,,	,,
बलासके लक्षण	,,	,,
एकवृन्दके लक्षण	,,	,,
सामान्य यत्न	१७५१	२८३
वृन्द	,,	,,
सामान्य चिकित्सा	,,	,,
शतघ्नीके लक्षण	,,	,,
गिलायुके लक्षण	१७५२	२८४
सामान्य चिकित्सा	,,	,,
गलविद्रधिके लक्षण	,,	,,
सामान्य यत्न	,,	,,
गलौघके लक्षण	,,	,,
स्वरघ्नके लक्षण	,,	,,
मांसतानके लक्षण	१५७३	२८५
विदारीके लक्षण	,,	,,
असाध्य मुखरोगके लक्षण	,,	,,
वातिकसर्वसर	१७५४	२८६
पैत्तिकसर्वसर	,,	,,
कफजसर्वसर	,,	,,
मतांतर	,,	,,
मुखरोगसंख्या	,,	,,
असाध्य मुखरोगके मारणकी अवधि	,,	,,
समस्त मुखरोग चिकित्सा	१७५५	२८७
गलरोगकी सामान्य चिकित्सा	,,	,,
दार्व्यादि क्वाथ	,,	,,
कटुकादि क्वाथ	,,	,,
मृद्वीकादि चूर्ण	,,	,,
यवक्षारादि गुटी	१७५६	२८८

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
मुकपाकपर सामान्य यत्न	१७५६	२८८
दार्वीस्वरस	,,	,,
सप्तच्छदादि क्वाथ	,,	,,
सामान्य चिकित्सा	,,	,,
पटोलादि क्वाथ	१७५७	२८९
जातिपत्रादि क्वाथ	,,	,,
तिलादि गंडूष	,,	,,
यष्टीमध्वादि तैल	,,	,,
हरिद्रादि तैल	१७५८	२९०
जातीपत्रचर्वण	,,	,,
कृष्णादिचर्वण	,,	,,
चूनेसे मुखजलगया हो उसपर	,,	,,
खदिरादि गुटिका	,,	,,
मुखरोगपर पथ्य	१७५९	२९१
मुखरोगपर अपथ्य	,,	,,
कर्णरोग ।		
कर्णरोगकाकर्मविपाक	,,	,,
कर्णरोगनिदान	१७६०	२९२
कर्णरोगकेनाम	,,	,,
कर्णशूलनिदान	,,	,,
शृंगवेरादितैल	,,	,,
लशुनादिस्वरस	,,	,,
अर्कांकुरादिस्वरस	१७६१	२९३
अर्कपत्रस्वरस	,,	,,
कर्णशूलचिकित्सा	,,	,,
स्योनाकतैल	,,	,,
हिंग्वादि तैल	,,	,,
नागरादि तैल	१७६२	२९४

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
सामान्ययत्न....	१७६२	२९४
कर्णपूरणविधि	”	”
मात्राका प्रमाण	”	”
पूरणकाल....	”	”
कर्णनादकेलक्षण	१७६३	२९५
अपामार्गतैल	”	”
मधुसूक्त....	”	”
हिंग्वादितैल	”	”
बाधिर्य....	१७६४	२९६
बिल्वतैल....	”	”
दीपिकातैल....	”	”
चारयोग....	”	”
निर्गुंड्यादितैल	१७६५	२९७
कर्णक्ष्वेडकेलक्षण	”	”
कर्णस्रावकोउपचार	”	”
कर्ण कंडकेलक्षण	”	”
कर्णगूथकेलक्षण ...	”	”
सामान्य यत्न	”	”
बीजपूररस....	१७६६	२९८
समुद्रफेन चूर्ण....	”	”
सर्जत्वकूचूर्ण	”	”
कर्णप्रक्षालन	”	”
राजवृक्षादिप्रक्षालन	”	”
रसाञ्जनयोग....	”	”
कुष्ठादितैल....	१७६७	२९९
कर्णस्रावचिकित्सा	”	”
कर्णकंडूचिकित्सा	”	”
कर्णमलपर.... ...	”	”
कर्णरोगकीसामान्यचिकित्सा	”	”

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
कर्णप्रतिनाह....	१७६८	३००
चिकित्सा	”	”
कृमिकर्ण के लक्षण	”	”
सामान्ययत्न....	”	”
हरितालादि धूप	”	”
कृमिकर्णयोगचतुष्टय....	”	”
गोमक्षिकाकानमें चली गई होय तो चिकित्सा	१७६९	३०१
कृमिकर्णका यत्न	”	”
कानमें पतंगादिकीट चले जाने पर यत्न	”	”
कर्णविद्रधि	”	”
चिकित्सा	१७७०	३०२
कर्णपाक	”	”
पूतिकर्ण के लक्षण	”	”
चिकित्सा	”	”
जातीपत्रादितैल	”	”
कर्णपाककी सामान्य चिकित्सा	”	”
गन्धकतैल	”	”
कर्णार्बुदादिरोग	१७७१	३०३
सामान्य यत्न....	”	”
चरकोक्त रोगचतुष्टय....	”	”
चिकित्सा	”	”
पित्तजकर्ण रोग	”	”
कफज के लक्षण	१७७२	३०४
सन्निपातजके लक्षण....	”	”
परिपोटक कर्णशोथ	”	”
परिपोटक लक्षण	”	”
यत्न	”	”

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
शतावरी तैल...	१७७२	३०४
उत्पात	१७७३	३०५
उत्पातकी चिकित्सा....	"	"
उन्मन्थकके लक्षण	"	"
जीवनीय तैल....	"	"
दुःखबर्द्धनकी चिकित्सा	"	"
परिलेहीके लक्षण	१७७४	३०६
मतांतर	"	"
परिलेहीकीचिकित्सा....	"	"
असाध्यकर्णरोगनिदान	"	"
कर्णरोगपथ्य	"	"
कर्णरोगमें अपथ्य	१७७५	३०७
नासारोग ।		
पीनसनिदान....	"	"
संप्राप्ति	"	"
नासारोगके नाम	१७७६	३०८
पीनसकी चिकित्सा	"	"
सर्वपीनसोंपर	"	"
पंचमूल्यादियूष ...	"	"
गुडादियोग	१७७७	३०९
वेल्लगोधूमयोग... ...	"	"
पूतिनस्यकेलक्षण	"	"
व्याघ्रीतैल	"	"
शिग्रुतैल....	"	"
नासापाक	"	"
चिकित्सा	१७७८	३१०
सर्जकषायघृत	"	"
व्योषादिगुटी	"	"
कटूफलादिचूर्ण	"	"
पाठादितैल....	१७७९	३११
पूयरक्तकेलक्षण ...	"	"
चिकित्सा.... ...	"	"
षड्बिन्दुघृत....	"	"
कलिंगादिअवपीडन	"	"
क्षवथू....	"	"
क्षवथूचिकित्सा ...	१७८०	३१२
शुंठीघृत....	"	"
आगंतूक्षवथु....	"	"
भ्रंशथु	"	"
पाठांतर....	"	"
दीप्तनासारोग...	१७८१	३१३
चिकित्सा....	"	"
प्रतीनाहनासारोग	"	"
चिकित्सा....	"	"
नासास्रावकेलक्षण	"	"
चिकित्सा....	"	"
नासापरिशोष....	"	"
चिकित्सा.... ...	१७८२	३१४
आमपीनसरोग.... ...	"	"
प्रतिशाय (सरकेमाजुकाम)	"	"
तथानिदान.... ...	१७८३	३१५
प्रतिश्यायकेपूर्वरूप	"	"
चिकित्सा....	"	"
वाममूलकयूष	"	"
पिप्पल्यादिविरेचन ...	"	"
वातिकप्रतिश्यायकेलक्षण	१७८४	३१६
चिकित्सा.... ...	"	"
पित्तनासारोग ...	"	"
चिकित्सा.... ...	"	"

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
कफनासारोग	१७८४	३१६
चिकित्सा	१७८५	३१७
धूमपानवर्ति	"	"
संनिपातनासारोग	"	"
दुष्टप्रतिश्याय....	"	"
चित्रकहरीतकी	"	"
हिंग्वादितैल	१७८६	३१८
पीनसका समान्ययत्न	"	"
गृहधूमादि तैल ...	"	"
करवीरादितैल	१७८७	३१९
नासाशोष	"	"
रक्तप्रतिश्यायकेलक्षण	"	"
चिकित्सा	"	"
धात्रीलेप	"	"
प्रतिश्यायकासामान्ययत्न	१७८८	३२०
सक्तुधूम	"	"
धूम तथा चूर्ण ...	"	"
चूना और नोसद्दर	"	"
सूंघनेकी पोटली	"	"
शठ्यादि चूर्ण....	१७८९	३२१
असाध्य लक्षण	"	"
प्रतिश्याय और विकारों-कोभी करताहै उनको कहते हैं	"	"
कृमिनासाचिकित्सा	१७९०	३२२
नासारोगपरपथ्य ...	"	"
नेत्ररोग।		
नेत्ररोगनिदान	१७९१	३२३
नेत्ररोगकी संप्राप्ति और नेत्रका प्रमाण	१७९२	३२४

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
नेत्रमंडलमें ७८ व्याधि	१७९२	३२४
नेत्ररोगसंख्या	"	"
दृष्टिलक्षण	१७९३	३२५
च्यारपटलोंकें स्थान	"	"
नेत्ररोगपर लंघन	"	"
दृष्टिगतरोगकीचिकि०	१७९४	३२६
शलाका (सलाई) के लक्षण	"	"
अंजनकरनेका प्रकार...	"	"
अंजनका काल	"	"
वर्तिप्रमाण	१७९५	३२७
रसक्रियाका प्रमाण	"	"
शलाका प्रमाण	"	"
तर्पण	"	"
तर्पणकरनेकी विधि	१७९६	३२८
सेकविधि	"	"
सेककी मर्यादाका काल	"	"
पिंडिकाविधितथास्वरूप	१७९७	३२९
बिडालविधि और स्वरूप	"	"
तर्पणकी विधि....	"	"
तर्पणमेंमात्राकीविधि....	"	"
तर्पितनेत्रके लक्षण	१७९८	३३०
आश्च्योतनविधि	"	"
लेखनादिकोंमें बिंदुका प्रमाण	"	"
वाङ्मात्राका स्वरूप	१७९९	३३१
नेत्ररोगोंका कारण अभिष्यंद....	"	"
वाताभिष्यंद	"	"
पिंडिका	"	"
एरंडादिसेक	"	"

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
हरिद्राद्यञ्जन	१८००	३३२
सैंधवादिपारिषेक	”	”
बिल्वादिआश्चोतन	”	”
निंबपत्रादिपूरण	”	”
पित्ताभिष्यन्द....	”	”
चन्दनादिसेक....	१८०१	३३३
आश्चोतन	”	”
द्राक्षादिआश्चोतन ...	”	”
पिंडिका	”	”
बिडालकादिलेप	”	”
चन्दनादिलेप	”	”
कफाभिष्यन्द....	१८०२	३३४
श्लैष्मिकाभिष्यन्दचिकि०	”	”
स्वेदन....	”	”
सामान्ययत्न	”	”
नेत्रशूलपर	”	”
निंबादिधूप	१८०३	३३५
आश्चोतन	”	”
पिंडिका	”	”
बिडालक	१८०४	३३६
रक्तजाभिष्यन्द	”	”
वासादिक्काथ	”	”
त्रिफलादिसेक	”	”
आश्चोतन	”	”
मकारांतर	”	”
अंजन	१८०५	३३७
अभिष्यन्दसे अधिमंथकी उत्पत्ति	”	”
सामान्यलक्षण	”	”
कालमर्यादा	”	”

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
नेत्ररोगके सामान्यलक्षण	१८०६	३३८
निरामके लक्षण	”	”
शोथयुक्तअक्षिपाकके लक्षण	”	”
शोथपाकचिकित्सा	”	”
बिभीतकादि क्काथ	”	”
हताधिमंथके लक्षण	१८०७	३३९
अधिमन्थचिकित्सा	”	”
वातपर्ययलक्षण	”	”
वातपर्ययचिकित्सा	”	”
शुष्काक्षिपाकलक्षण	१८०८	३४०
शुष्काक्षिपाकचिकित्सा	”	”
जीवनीयादि तेल	”	”
अन्यतो वातलक्षण	”	”
चिकित्सा	१८०९	३४१
दार्व्याद्यञ्जन और आश्चोतन	”	”
गुडूच्यादि क्काथ	”	”
श्वेत लोध्रादिसेक	”	”
अन्यतोवातचिकित्सा	१८१०	३४२
सैन्धवाद्यञ्जन	”	”
निंबुरसलेप	”	”
निंबादिपिण्डी	”	”
अम्लाध्युषितके लक्षण	”	”
चिकित्सा	१८११	३४३
तिल्वकादिपान ...	”	”
शिरोत्पातलक्षण	”	”
शिराहर्षलक्षण	”	”
शिरोत्पातशिराहर्षकीचिकित्सा	”	”
शिरोत्पातपर	१८१२	३४४
फणिताद्यञ्जन	”	”

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
सव्रणशुक्रलक्षण	१८१२	३४४
असाध्यमेंभी साध्यत्व....	,,	,,
करंजबीजवर्ती	१८१३	३४५
समुद्रफेनादि वर्ती	,,	,,
चन्द्रोदयवर्ती...	,,	,,
अव्रणशुक्रलक्षण	,,	,,
अव्रणशुक्रकेअसाध्यलक्षण	,,	,,
तथाअसाध्यलक्षण	१८१४	३४६
प्रकारांतर	,,	,,
शशकादिघृत.... ...	,,	,,
लामज्जकाद्यंजन	१८१५	३४७
श्यामामूलकषाय	,,	,,
चन्दनादिवर्ती	,,	,,
सव्रणशुक्रप्रतीकार	,,	,,
सैंधवादिघृत	,,	,,
यष्ट्याह्वादि आश्चोतन	१८१६	३४८
लोहादि गुग्गुल	,,	,,
पटोलादिघृत ...	,,	,,
वटक्षीरादि अंजन	,,	,,
पिप्पल्यञ्जन....	१८१७	३४९
अंजनचतुष्टय ...	,,	,,
कुक्कुटाद्यञ्जन	,,	,,
जात्यादिआश्चोतन	,,	,,
धात्रीफलादि सेचन ...	,,	,,
अक्षिपाकात्यय	१८१८	३५०
शुक्लजरोगचिकित्सा	,,	,,
कृष्णादि लेप....	,,	,,
पिप्पल्यादि गुटिका	,,	,,
कृष्णादि तैल	,,	,,
अक्षिपाकात्यय चिकित्सा	१८१९	३५१
अजकापात	१८१९	३५१
अजकाजातमें साध्यासाध्यत्व	,,	,,
अजका चिकित्साक्रम	,,	,,
वल्लूरमांसपुटपाक	१८२०	३५२
गोस्थ्यादिपूरण ...	,,	,,
शंबूकरसाश्चोतन ...	,,	,,
सैन्धवादिपूरण	,,	,,
प्रथम पटलगत दोषोंके लक्षण	,,	,,
द्वितीयपटलस्थित दोषलक्षण	१८२१	३५३
तृतीयपटलगतलक्षण	,,	,,
चतुर्थपटलगततिमिर लक्षण	१८२२	३५४
काचदोषकी दूसरी संज्ञा	,,	,,
काचोपक्रम	,,	,,
मेषशृंगादि और शिलादि अंजन	१८२३	३५५
दोषरूपदर्शन....	,,	,,
पित्तजन्यपरिम्लायिसंज्ञक दूसरा तिमिर	१८२४	३५६
सामान्य अंजन	,,	,,
अंजनप्रकार	,,	,,
स्नेहन, रोपणलेखनका स्वरूप	,,	,,
वातजन्यतिमिरचिकि०	१८२५	३५७
दशमूलादि घृत	,,	,,
रास्नादि घृत	,,	,,
दशमूलादि घृत	,,	,,

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
त्रिफलादि विरेचन	१८२५	३५७
पित्तजतिमिरचिकित्सा	१८२६	३५८
प्रकारांतर	,,	,,
बलादिघृत	,,	,,
सारिवादिवर्ती	,,	,,
कफजतिमिरचिकित्सा	,,	,,
प्रकारांतर	,,	,,
यूथ्यादिविरेचन	१८२७	३५९
कफतिमिरपर नस्य और अंजन	,,	,,
संनिपाततिमिरचिकित्सा	,,	,,
सर्वजनेत्ररोगपर	,,	,,
वर्णभेदसे लिंगनाशको षड्विधत्व	,,	,,
वातिकरोगके विशेषलक्षण	१८२८	३६०
दृष्टिमंडलगतरोगलक्षण	,,	,,
आगेपीछे कहे हुए दृष्टिरोगोंकी संख्या	,,	,,
पित्तविदग्धदृष्टिके लक्षण	१८२९	३६१
पित्तविदग्धदृष्टिकी चिकित्सा	,,	,,
काश्मर्यादिअंजन	,,	,,
श्लेष्मविदग्ददृष्टिकी चिकित्सा	,,	,,
दिवांधके लक्षण	,,	,,
रात्र्यंध (रतोंध) केलक्षण	,,	,,
दिवांधऔररात्रंधचिकित्सा०	१८३०	३६२
क्षुद्रशंखादिगुटी	,,	,,
सूर्यविदग्धदृष्टिपर	,,	,,
रसांजनादिअंजन	,,	,,
कणादिअंजन	१८३१	३६३
करंजादिअंजन	,,	,,
रसांजनादि	१८३१	३६३
धूमदर्शीके लक्षण	,,	,,
ह्रस्वदृष्टिके लक्षण	,,	,,
नकुलांध्यलक्षण	१८३२	३६४
नकुलांध्यरोगकीचिकित्सा	,,	,,
गंभीरदृष्टिके लक्षण	,,	,,
आगंतुकलिंगनाश	,,	,,
अनिमित्तकेलक्षण	,,	,,
नेत्रार्मपरमरिचादिलेप	१८३३	३६५
पुष्पाक्षतादि रसक्रिया	,,	,,
शुक्तिरोग	,,	,,
शुक्तिरोगपरसामान्ययत्न	,,	,,
अर्जुन	१८३४	३६६
अर्जुनकीसामान्यचिकि०	,,	,,
पिष्टक	,,	,,
जाल	,,	,,
शिराजपिटिका	,,	,,
बलास	,,	,,
पूयालसकी चिकित्सा	१८३५	३६७
पूयालसपर अंजन	,,	,,
उपनाह	,,	,,
उपनाह और अलजीका यत्न	,,	,,
स्राव अथवा नेत्रनाडी	,,	,,
स्राव चिकित्सा	१८३६	३६८
पथ्यादिवर्ती	,,	,,
पर्वणी और अलजी	,,	,,
शिरावेध	१८३७	३६९
कृमिग्रंथी	,,	,,
जंतुग्रंथिचिकित्सा	,,	,,

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
उत्संगपिटिका	१८३७	३६९
कुंभिका	१८३८	३७०
पोथकी	”	”
वत्सशर्करा	”	”
अर्शोवर्त्म	”	”
शुष्कार्श	”	”
अंजन (गुहेरी)	१८३९	३७१
वर्त्मपक्ष्मजरोगचिकित्सा	”	”
अंजननामिकापर यत्न	”	”
बहलवर्त्म	”	”
वर्त्मबंध	”	”
क्लिष्टवर्त्म	१८४०	३७२
वर्त्मकर्दम	”	”
श्यामवर्त्म	”	”
प्रक्लिन्नवर्त्म	”	”
उसकी चिकित्सा	”	”
रसांजनाद्यंजन	१८४१	३७३
अक्लिन्नवर्त्म	”	”
वातहतवर्त्म	”	”
वर्त्मपक्ष्मजचिकित्सा....	”	”
सामान्ययत्न....	१८४२	३७४
पिल्लरोग....	”	”
पिल्लरोगचिकित्सा	”	”
पिल्लिका यत्न	१८४३	३७५
तुत्थादिलेप	”	”
पक्ष्मरोगचिकित्सा	”	”
अर्बुद	”	”
निमेष....	”	”
वर्त्मपक्ष्मजरोगचिकित्सा	१८४४	३७६
शोणितार्श	”	”
लगण	”	”
लगणकायत्न....	”	”
बिसवर्त्म	१८४४	३७६
बिसवर्त्मचिकित्सा	१८४५	३७७
कुंचन	”	”
पक्ष्मकोप	”	”
पक्ष्मशात	”	”
त्रिफलाघृत	१८४६	३७८
भृंगराजतैल	”	”
स्नान धावन	”	”
द्वितीयत्रिफलादिघृत....	१८४७	३७९
बिभीतकादिघृत	”	”
त्रिफलाद्यंमहाघृतम्	”	”
सप्तामृत लेह....	१८४८	३८०
शताह्वादि चूर्ण	”	”
त्रिफलाचूर्ण	१८४९	३८१
महावासादिघृत	१८५०	३८२
त्रिफलादिक्काथ	”	”
चित्रकादिक्काथ	”	”
पिप्पल्याद्यंजन	१८९१	३८३
गुंजामूलाद्यंजन	”	”
तुलस्यादिअंजन	”	”
कतकफलादिअंजन	”	”
कतकाद्यंजन	”	”
पुनर्नवादि अंजन	१८५२	३८४
गुडूच्यादिअंजन	”	”
नयनशरणनामकअंजन	”	”
मुक्तादिमहांजन	१८५३	३८५
दार्व्यादिअंजन	”	”
शंखादिवटी	१८५४	३८६
शशिकलावर्ती	”	”
चंद्रोदयावर्ती....	”	”

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
नयनामृत	१८५५	३८७
कुसूमिकावर्ती	,,	,,
चंद्रोदयावटी	,,	,,
चंद्रप्रभावर्ती	१८५६	३८८
नयनाभिवातनिदान....	,,	,,
सामान्य चिकित्सा ...	,,	,,
शरावादिसेक....	,,	,,
प्रतिनिद्राचिकित्सा	,,	,,
जातीपत्रादिअंजन	१८५७	३८९
नयनाभिघातचिकित्सा	,,	,,
सूर्याचिरादिसंतर्पण	,,	,,
निशादिपूरण	,,	,,
नेत्ररोगपरपथ्य	१८५८	३९०
अपथ्य	,,	,,
दृष्टिरोगनामसंख्या	,,	,,
शिरोरोग।		
मस्तकरोगनिदान	१८५९	३९१
निदान	,,	,,
वातजशिरोरोग	,,	,,
वातजशिरोरोगचिकित्सा	,,	,,
कुष्ठादिलेप	१८६०	३९२
श्वासकुठारनस्य	,,	,,
कुष्ठादिलेप	,,	,,
वातजशिरोरोगपरबस्ति	,,	,,
पित्तजशिरोरोग	१८६१	३९३
पित्तजन्यशिरोरोगकी चिकि०	,,	,,
शर्करादिसेचन	,,	,,
कुमुदादिउपशम	,,	,,
चंदनादिलेप	१८६२	३९४
यष्टयादिघृत	,,	,,
धात्र्यादिलेप	१८६२	३९४
कफजन्यशिरोरोग	,,	,,
उसकीचिकित्सा	,,	,,
हरेणुआदिलेप	१८६३	३९५
प्रपुंनाटादिलेप	,,	,,
सन्निपातिकशिरोरोग	,,	,,
चिकित्सा	,,	,,
स्वेदन	,,	,,
घृतपान	,,	,,
स्मरफलादिप्रधमन	१८६४	३९६
रक्तजशिरोरोग	,,	,,
चिकित्सा	,,	,,
घृत तथा जलधारण	,,	,,
कृष्णादिलेप	,,	,,
नागरादिनस्य	१८६५	३९७
कमलादिलेप	,,	,,
उदुंबरफलादि	,,	,,
क्षयजशिरोरोग	,,	,,
उसकीचिकित्सा	१८६६	३९८
सामान्ययत्न....	,,	,,
स्वेद	,,	,,
निंबादिगुग्गुल	,,	,,
शिग्रुपत्रादिलेप	१८६७	३९९
पिप्पल्यादिनस्य	,,	,,
कुष्ठादिलेप	,,	,,
कुंकुमादिघृत....	,,	,,
कृमिजन्यशिरोरोग	,,	,,
कृमिजन्यशिरोरोगकी चिकित्सा	१८६८	४००
विडंगादितैल	,,	,,
सूर्यावर्त शिरोरोग	,,	,,

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
सूर्यावर्तरोगकी चिकित्सा	१८६८	४००
तथा	"	"
दशमूल्यादिनस्य	१८६९	४०१
भृंगराजादिनस्य	"	"
सूंघनेकी पोटली तथा उपनाह	"	"
सूर्यावर्तरस	"	"
अनन्तवात	१८७०	४०२
शिरोरोगचिकित्सा	"	"
अन्न	"	"
अर्धावभेदक	"	"
शुंठ्यादिनस्य	१८७१	४०३
कुंकुमघृत	"	"
शिरोरोगचिकित्सा	"	"
गांधार्यादिनस्य	"	"
तुवर्यादिनस्य	१८७२	४०४
विडंगादिनस्य	"	"
गिरिकर्ण्यादिनस्य	"	"
मरीच्यादि लेप	"	"
दुग्धादिपान	"	"
सारिवादिलेप	१८७३	४०५
दुग्धमर्दनादिनस्य	"	"
शशाका रस	"	"
गुडादिनस्य	"	"
बृहज्जीवकतैल	"	"
रास्नादिक्काथ	१८७४	४०६
शंखकशिरोरोग	"	"
दार्व्यादिलेप	"	"
सामान्य उपचार	"	"
बलादिलेप	१८७५	४०७
करंजादिशीर्षरेचन	१८७५	४०७
गुडादिनस्य	"	"
शर्करादिनस्य	"	"
कुष्टादिलेप	"	"
देवदार्व्यादिलेप	१८७६	४०८
नवसादरचूर्ण योग	"	"
त्रिकट्वादिकाढा	"	"
क्षीरादिनस्य	"	"
पथ्यादिक्काथ	"	"
मयूराद्यघृत	१८७७	४०९
महामायूरघृत	"	"
षट् बिंदुतैल	१८७८	४१०
शताह्वादितैल	"	"
नीलोत्पलादितैल ...	१८७९	४११
सारिवादितैल	"	"
शिरोबस्तिपर पथ्य	"	"
शिरोरोगपर पथ्य	"	"
शिरोरोगपर अपथ्य	१८८०	४१२
स्त्रीरोग।		
प्रदररोग	१८८०	४१२
प्रदरका सामान्यरूप	१८८१	४१३
उपद्रव	"	"
कफजन्य प्रदरलक्षण....	"	"
मलयूरस	"	"
कफप्रदरपर	"	"
पित्तजप्रदरनिदान	"	"
वासवादिस्वरस	"	"
मधुकादिकल्क	१८८२	४१४
वातजप्रदरनिदान	"	"
सौवर्चलादिकल्क	"	"
नागरादिमंथ	"	"

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
एलादिकल्क	१८८२	४१४
त्रिदोषजप्रदरलक्षण	१८८३	४१५
त्रिदोषजप्रदरचिकित्सा	"	"
काकोदुम्बरिकास्वरस	"	"
संनिपातजप्रदरपर	"	"
मलयूफलचूर्ण	"	"
दार्व्यादिकाथ	"	"
भूम्यामलक्यादिपान....	१८८४	४१६
धातक्यादिकाथ	"	"
आखुपुरीषयोग	"	"
बृहच्छतावरीघृत	"	"
कुमुदादिघृत	१८८५	४१७
श्वेतप्रदरपर स्वरस ...	"	"
सर्वप्रदरोंपर	"	"
दार्व्यादिरक्तप्रदरपर....	१८८६	४१८
काकजंघादि सपेदप्रदरपर	"	"
अशोककाथ रक्तप्रदरपर	"	"
रसांजनादि वातपित्त-प्रदरपर	"	"
कुरंटमूलादिपान	"	"
बलादिकल्क ...	१८८७	४१९
कपित्थादिकल्क	"	"
आमलकचूर्ण	"	"
सर्वप्रदरपर	"	"
व्याघ्रनखीमूलयोग	"	"
तंदुलीयमूलयोग	१८८८	४२०
आखुपुरीषादिचूर्ण	"	"
प्रदरचिकित्सा सर्व प्रकारके प्रदरपर		
पुष्पानुगचूर्ण	"	"
जीरकावलेह	१८८९	४२१
मुद्गादिघृत	"	"
शाल्मल्यादिघृत	"	"
प्रदरारिरस	"	"
सोमरोगनिदान ...	१८९०	४२२
मूत्रातिसार	"	"
सोमरोगकायत्न	१८९१	४२३
तालकादियोग	"	"
कूष्माण्डस्वरस	"	"
कदलीयोग	"	"
आमलकयोग ...	१८९२	४२४
नागकेशरयोग	"	"
कदलीकंदघृत	"	"
शुद्ध आर्त्तवके लक्षण	१८९३	४२५
योनिरोग	"	"
व्यापत्तिनिदान	"	"
वातजयोनिरोग	१८९४	४२६
पित्तजयोनिरोग	"	"
कफज और त्रिदोषज योनि	१८९५	४२७
योनिव्यापच्चिकित्सा....	१८९६	४२८
प्रकारांतरसे यत्न	"	"
प्रयोगांतर	"	"
रास्नादि योग	"	"
विप्लुताकी चिकित्सा....	१८९७	४२९
वातजयोनि	"	"
योनिशूलपर	"	"
कफात्मक योनिपर	"	"
योनिदुर्गंधपर	"	"

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
सन्निपातजयोनिरोगचि०	१८९७	४२९
पित्तलायोनिकीचिकित्सा	१८९८	४३०
दाह और पाकका यत्न	"	"
कफदुष्ट योनिपर सामान्य चिकित्सा ...	"	"
प्रस्रंसिनी योनिकी चिकित्सा	"	"
पूयस्राविणी योनिकी	"	"
चिकित्सा	१८९९	४३१
खुजलीका यत्न "	"	"
योनिसंकोचन " ...	"	"
वातला आदिकी चिकित्सा	"	"
योनिशूलपर	१९००	४३२
योनिदाहपर	"	"
नष्टार्तवचिकित्सा	"	"
प्रकारांतर ...	"	"
तिलगुड़योग ...	"	"
दूसरा प्रयोग	"	"
वर्ती	१९०१	४३३
योनिकंद ...	"	"
वातयोनिकंद	"	"
योनिकन्दचिकित्सा ...	"	"
दूसरा यत्न	"	"
कफयोनिकंद	१९०२	४३४
पित्तयोनिकंद	"	"
सन्निपातात्मकयोनिकंद	"	"
योनिकंदपर लेप	"	"
ज्वरपर दूसरा काथ	"	"
तीसरा काथ	१९०३	४३५
पित्तज्वरपर	"	"
विषमज्वरपर ...	"	"
ज्वरातिसार आदिपर	"	"
ग्रहणीपर	"	"

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
गर्भवतीके छर्दि और अतिसारपर	१९०३	४३५
कामला सूजन आदिपर....	१९०४	४३६
वांतीपर	"	"
खांसी श्वासपर	"	"
वायूपर	"	"
सूजनपर लेप	"	"
गर्भविलासरस	१९०५	४३७
मंदाग्निपर	"	"
गर्भपातोपद्रवचिकित्सा गर्भ-शूलपर	"	"
पीडापर	"	"
प्रदरपर	"	"
आनाहवायुपर	१९०६	४३८
मूत्ररोधपर ...	"	"
दूसरा यत्न	"	"
अतिसारपर	"	"
प्रथम महिनेकी चिकित्सा	"	"
उपायांतर	१९०७	४३९
दूसरे महिनेकी चिकित्सा	"	"
तीसरे महिनेकी चिकित्सा	"	"
चतुर्थ महिनेका यत्न....	"	"
पंचम महिनेकी चिकित्सा	१९०८	४४०
छठे महिनेकी चिकित्सा	"	"
सप्तम महिनेकी चिकित्सा	"	"
अष्टम महिनेकी चिकित्सा	"	"

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
नवम महिनेकी चिकित्सा	१९०८	४४०
मूढगर्भनिदान	१९०९	४४१
स्राव और पातके लक्षण	,,	,,
गर्भपातके उपद्रव	,,	,,
अष्टम महिनेपर	१९१०	४४२
नवम महिना	,,	,,
दशम महिनेपर	,,	,,
ग्यारवे महिनेकी चिकित्सा	,,	,,
बारवे महिनेकी चिकित्सा	१९११	४४३
रक्तस्रावपर	,,	,,
उत्पलादिगण	,,	,,
गर्भपातपर	,,	,,
उपायांतर	,,	,,
उपायांतर	१९१२	४४४
अन्य उपाय	,,	,,
यत्नांतर	,,	,,
ह्रीबेरादिकाथ	,,	,,
मूढगर्भका निदान	,,	,,
मूढगर्भके भेद	,,	,,
असाध्य मूढगर्भवतीके लक्षण	१९१३	४४५
मृतगर्भके लक्षण	१९१४	४४६
गर्भमरणहेतु	,,	,,
गर्भिणीके दूसरे असाध्य लक्षण	,,	,,
परिघगर्भलक्षण	,,	,,
विकृताकृति गर्भ-लक्षण	१९१४	४४६
गर्भसंकोचका यत्न ...	१९१५	४४७
शुष्कगर्भका यत्न	,,	,,
प्रसवमास	,,	,,
प्रसवविलंब होनेमें यत्न	१९१६	४४८
सुखप्रसवकारक योग	,,	,,
मातुलुंगादि प्रयोग	,,	,,
इक्षुमूलबंधन	,,	,,
सुखप्रसव	,,	,,
प्रयोगांतर	१९१७	४४९
मृतगर्भचिकित्सा	,,	,,
गर्भोद्धरण	,,	,,
मृतगर्भच्छेदनप्रकार	,,	,,
छेदनानंतरचिकित्सा	१९१८	४५०
मृतगर्भपातन....	,,	,,
गर्भपातकारकऔषध....	,,	,,
गर्भस्राव	,,	,,
गर्भपातन	१९१९	४५१
गर्भपातन	,,	,,
गर्भपातन	,,	,,
जरायुपातनप्रकार	,,	,,
उसकी चिकित्सा	,,	,,
अपरापातन	१९२०	४५२
अपरानिष्कासन	,,	,,
योनिक्षतपर	,,	,,
योनिदृढीकरण	,,	,,

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
मकल्लकनिदान ...	१९२०	४५२
मकल्लचिकित्सा	१९२१	४५३
पिप्पल्यादि क्वाथ	"	"
योगांतर	"	"
हिंगुघृतयोग	"	"
प्रसूता स्त्रीको हितावह	"	"
प्रसूताकी व्याधिको कष्ट साध्यत्व	१९२२	४५४
कन्यापुत्र और नपुंसक होनेका कारण	"	"
गर्भकारक औषध	"	"
लक्ष्मणायोग	"	"
तैलादि योग ...	१९२३	४५५
मातुलुंगयोग	"	"
अश्वगंधायोग	"	"
लक्ष्मणायोग	"	"
कुरंटमूलादियोग	"	"
पार्श्वपिप्पलयोग	"	"
सफेदकंटकारीयोग	१९२४	४५६
गर्भनाशकयोग	"	"
गर्भनिवारण	"	"
वंध्यायोग ..	"	"
सूतिकारोगनिदान	"	"
प्रसूताकी चिकित्सा....	१९२५	४५७
दशमूल	"	"
देवदार्वादि	१९२६	४५८
सहचरादिकाथ	"	"
वज्रकांजिक	"	"
सामान्य यत्न	१९२७	४५९
पंचजीरककाथ ...	"	"

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
सौभाग्यशुंठी	१९२७	४५९
सौभाग्य शुंठीका द्वितीयपाठ	१९२८	४६०
सामान्य यत्न	"	"
हीनप्रसूति	१९२९	४६१
उपचार देनेकी अवधि	"	"
स्तनरोगनिदान	"	"
स्तनरोगचिकित्सा	"	"
क्षीरवर्धन	"	"
स्तन्यरोग	१९३०	४६२
वातदूषितस्तन्यकेरोग	"	"
वातादिकसे दूषित स्तन्य-के लक्षण ...	"	"
पित्तदूषितस्तन्यकेरोग	"	"
कफदूषितस्तन्यकेरोग	१९३१	४६३
स्तन्यवातरोग चिकित्सा	"	"
शुद्ध दुग्धके लक्षण	"	"
कफदुष्टस्तन्यपर	"	"
पित्तदुष्टस्तन्यपर	"	"
द्वंद्वजदुष्टस्तन्य	१९३२	४६४
त्रिदोषजन्यदुष्टस्तन्यलक्षण	"	"
दुग्धशोधकक्वाथ	"	"
स्तन्यजननविधि	"	"
शतावरीपान	"	"
अन्य योग	"	"
स्तनशोथका यत्न	१९३३	४६५
स्तनशोथचिकित्सा	"	"
विशालादिलेप	"	"

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
श्रीपर्ण्यादिस्तनवर्द्धन	१९३३	४६५
वनकार्पासिकादिपान	,,	,,
नागबलादिमर्दन	१९३४	४६६
स्तनदृढीकरणपद्मबीजादि	,,	,,
गोधूमादियूष	,,	,,
स्त्रीरोगेपथ्यापथ्य	,,	,,
स्त्रीरोगमें अपथ्य ...	१९३५	४६७
बालरोग ।		
बालरोगनिदान ...	,,	,,
त्रिविधफालक ...	१९३६	४६८
दंतोद्भेदको मुख्यत्त्व....	,,	,,
बालककी अन्तर्गतपीडा जाननेका उपाय	,,	,,
बालकको लंघनमें विधि निषेध....	,,	,,
सामान्य चिकित्सा	१९३७	४६९
प्रमाणांतर	,,	,,
बालकोंकी मात्राका प्रमाण	,,	,,
तथा प्रमाणांतर	,,	,,
बालककी मात्रास्थिरत्त्व और ह्रासत्व	१९३८	४७०
कषायादिमात्राका प्रमाण	,,	,,
क्षीरके साथदेनेके नियम	,,	,,
कुकूणक	,,	,,
चिकित्सा	१९३९	४७१
पारिगर्भिक	,,	,,
पारिगर्भिकरोगका यत्न	,,	,,
तालुकंटक	,,	,,
हरीतक्यादिकल्क	१९४०	४७२
बालककीविसर्प और पद्मरोग	,,	,,
क्षुद्ररोग	१९४०	४७२
ग्रहजुष्टबालकके लक्षण	,,	,,
सामान्यग्रहजुष्टबालकके लक्षण	,,	,,
स्कन्दग्रहयुक्तबालकके लक्षण	१९४१	४७३
सोमवल्लीआदिकी माला	,,	,,
देवदारुआदिकाघृत	,,	,,
स्कंदग्रहको धूनी	१९४२	४७४
मृगादनीमाला	,,	,,
धूनी	,,	,,
स्कंदापस्मारलक्षण	,,	,,
स्कंदापस्मार ...	,,	,,
सुरसादिगण	१९४३	४७५
काकोल्यादिगण	,,	,,
वचादिधूप	,,	,,
अनंतादिधारण	,,	,,
शकुनिग्रहलक्षण	१९४४	४७६
चिकित्सा	,,	,,
शतावरी आदिका धारण	,,	,,
शकुनिग्रहमें स्नान	,,	,,
लेप	,,	,,
रेवतीग्रहलक्षण	१९४५	४७७
रेवतीग्रहस्नान	,,	,,
कुष्टादितैल	,,	,,
धवादिघृत	,,	,,
कुलित्थादिधूप ...	,,	,,
पूतनाग्रहलक्षण	,,	,,
पूतनाग्रहजुष्टमें स्नान	१९४६	४७८
पयस्यादितैल	,,	,,

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
कुष्टादिधूप	१९४६	४७८
अंधपूतनाग्रहलक्षण	"	"
गंधपूतनाग्रह	"	"
पंचतिक्तगण	१९४७	४७९
पुरीषादिधूप	"	"
सर्वगंध	"	"
शीतपूतनाग्रहलक्षण	"	"
रोहिण्यादिघृत	"	"
गृध्रादिधूपन	"	"
मुखमंडिकाग्रहलक्षण....	१९४८	४८०
मुखमंडिकाग्रहस्नान....	"	"
भृंगादि तैल	"	"
वचादिधूप	"	"
नैगमेयग्रहलक्षण	"	"
नैगमेयग्रहचिकित्सा....	"	"
प्रियंग्वादितैल	१९४९	४८१
वचादि उत्सादन	"	"
मर्कटादिधूप....	"	"
उत्फुल्लिकालक्षण	"	"
चिकित्सा	"	"
शेकदंभबिल्वादिकाढा	१९५०	४८२
पिप्पल्यादिपान	"	"
सर्पत्वचादिधूप	"	"
बालककेज्वरकीचिकित्सा	"	"
सहादिलेप	१९५१	४८३
बालज्वरांकुश	"	"
पद्मकादिचिकित्सा	"	"
यष्टयादिलेह	"	"
स्थिरादिचिकित्सा	१९५२	४८४
पंचमूलादिचिकित्सा....	"	"

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
सारिवादिचिकित्सा ...	१९५२	४८४
मुस्तादि हिम ...	"	"
विषमज्वरचिकित्सा...	"	"
त्र्याहिकपरगुडूच्यादि क्वाथ	१९५३	४८५
पलंकषादिधूप ...	"	"
मूर्वादि उद्वर्तन ...	"	"
भद्रमुस्तादि	"	"
सैंधवादि जिह्वालेप ...	"	"
एकाहिकज्वरपरअपामार्गमूलिकाबंध		"
द्वंद्वजवातपित्तज्वर	१९५४	४८६
उशीरादि वातपित्त चिकित्सा	"	"
त्रिफलादि श्लेष्मपित्तचिकित्सा ...	"	"
अमृतादि चूर्ण पित्तश्लेष्मज्वरपर	"	"
धान्याकादिहिम पित्तज्वरपर	"	"
आरग्वधादि वातपित्त ज्वरपर	१९५५	४८७
विषमज्वरचिकित्सा	"	"
कटुक्यादि एकाहिक ज्वरपर	"	"
द्राक्षादि एकाहिक ज्वरपर	"	"
किराततिक्तादि क्वाथ वातश्लेष्मज्वरपर	"	"
वातकफज्वरमें पथ्य	१९५६	४८८
दशमूलिका क्वाथ सन्निपातपर	"	"
मुस्तादि चिकित्सा	"	"

विषयाः	सं० पृ०	पृ
वासादि चिकित्सा	१९५६	४८८
अभयादि क्वाथ	"	"
कटूफलादि क्वाथ	"	"
मधुकादि क्वाथ	१९५७	४८९
बिल्वादि काढा	"	"
काकोली क्वाथ	"	"
वमन अतिसारपर ...	"	"
अतिसारपर.... ...	"	"
फलमुस्तादिचूर्ण	१९५८	४९०
श्यामादि चूर्ण	"	"
धातक्यादि लेह	"	"
लोध्रादियोग	"	"
विडंगादिलेह	"	"
ग्रहण्यां यवन्यादि चूर्ण	१९५९	४९१
पिप्पल्यादि चूर्ण	"	"
कृष्णादि चूर्ण	"	"
नागरादि चूर्ण	"	"
गुडादि चूर्ण	"	"
मुस्तकादि चूर्ण	"	"
रक्तातिसारपर	१९६०	४९२
नागरादि चूर्ण ...	"	"
प्रवाहिकाकी चिकित्सा	"	"
ग्रहणी अतिसारपर...	"	"
ह्रीबेरादि चूर्ण ...	"	"
अर्शचिकित्सा ...	"	"
अजाज्यादि गुटी ...	१९६१	४९३
नवनीतादियोग ...	"	"
अजीर्णविषूचिकाकी-चिकित्सा ...	"	"

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
पिप्पल्यादि चूर्ण ...	१९६१	४९३
त्वगादि तैल ...	१९६२	४९४
भस्मककी सामान्य चिकित्सा ...	"	"
औदुंबर कल्क ...	"	"
मयूरतंदुलादिक्षीर	"	"
कासरोगमें धान्यादिहिम	"	"
दुरालभादिलेह	"	"
हिंग्वादिचूर्ण....	१९६३	४९५
कृष्णादिचूर्ण	"	"
हिक्काश्वासचिकित्सा	"	"
गुडोदकयोग....	"	"
व्याघ्र्यादिलेह	"	"
शृंग्यादिलेह	१९६४	४९६
तुगालेह	"	"
विडंगादि चूर्ण	"	"
पौष्करादि चूर्ण	"	"
मुस्तादि चूर्ण	"	"
व्याघ्र्यादिलेह	"	"
हिक्काचिकित्सा	१९६५	४९७
पिप्पल्यादिक्वाथ ...	"	"
कटुकीचूर्ण	"	"
यवान्यादिलेह	"	"
हरीतक्यादिचूर्ण	"	"
अश्वत्थक्षार.... ...	"	"
एलादिचूर्ण	१९६६	४९८
आम्रादिचूर्ण....	"	"
घनादिचूर्ण	"	"
क्षीरछर्दिचिकित्सा	"	"
पिप्पल्यादिचूर्ण	"	"

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
हिंग्वादिचूर्ण	१९६७	४९९
आनायवायु	”	”
रोदनपर	”	”
मलबद्ध होनेपर ...	”	”
मृत्तिकारेचन ...	”	”
कार्श्यपर	१९६८	५००
लाक्षादितैल	”	”
अश्वगन्धाघृत ...	”	”
लेप	१९६९	५०१
नाभिशोथ	”	”
नाभिपाक	”	”
गुदपाक	”	”
पारिगर्भक	”	”
क्षतविस्फोटविसर्प ...	१९७०	५०२
सिध्मपामाविचर्चिका	”	”
तालुपाक	”	”
दंतोद्भेदजरोग ..	”	”
अन्ययत्न	”	”
मुखरोग	”	”
मुखस्राव	१९७१	५०३
मुखपाक	”	”
मुखपाकपरलेप ...	”	”
तालुकंटकपर ...	”	”
मूत्रकृच्छ्रपर... ...	”	”
यवक्षारक्काथ.... ...	१९७२	५०४
वातरोगपर	”	”
मूत्रकृच्छ्रपर...	”	”
मूत्रग्रहपर	”	”
अपचीरोगपर ...	”	”
उन्मादपर	”	”
रक्तपित्तपर	१९७३	५०५
नळसीरफूटे उसकायत्न	”	”
वातगुल्म... ...	”	”
वातरोगोंपर... ...	”	”
अपस्मारपर... ...	१९७४	५०६
उदावर्तपर... ...	”	”
हृद्रोगपर.. ...	”	”
मूर्च्छाचिकित्सा ...	”	”
दूसरायत्न	”	”
तीसरायत्न... ...	१९७५	५०७
तिमिररोगपर ...	”	”
दाहरोगपर... ...	”	”
दूसरायत्न... ...	”	”
कृमिरोगपर ...	”	”
पाण्डुरोग और परिणाम शूलपर	१९७६	५०८
स्वरभेदपर	”	”
दूसरा उपाय ...	”	”
पाण्डुरोगपर घृत ...	”	”
क्षयपर	”	”
विस्फोटक	१९७७	५०९
नेत्र रोगोंपर ...	”	”
चन्दनादि लेप ...	१९७८	५१०
अञ्जन	”	”
कर्णरोगपर... ...	”	”
कानकी पीडापर ...	”	”
मस्तकरोगपर ...	”	”
प्रथमदिवस निदान	१९७९	५११
द्वितीय दिवस निदान	”	”
तृतीय दिवस निदान	”	”

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
गजदन्तादि लेप ...	”	”
निम्बादि धूप... ...	१९८०	५१२
चतुर्थ दिवस निदान	”	”
चौथे दिवसकी चिकित्सा ...	”	”
पञ्चम दिवस निदान	”	”
यत्न	”	”
छठे दिवसका लक्षण	”	”
यत्न	१९८१	५१३
सातवें दिवसका निदान	”	”
यत्न	”	”
अष्टम दिवसका निदान	”	”
यत्न	”	”
नवम दिवस निदान	”	”
यत्न	१९८२	५१४
दशम दिवस निदान	”	”
दशम दिवसकी चिकित्सा ...	”	”
यत्नान्तर	”	”
प्रथममास निदान ...	”	”
द्वितीयमास निदान	१९८३	५१५
तृतीयमास निदान ...	”	”
चौथे मासका निदान	”	”
पाँचवे महीनेका निदान	”	”
छठवें मासका निदान	”	”
सातवें महीनेका निदान	१९८४	५१६
आठवें महीनेका निदान	”	”
नवमें महीनेका निदान	”	”
दशवें मासका निदान	”	”
वातरोगमें पथ्यापथ्य	”	”
विषरोग।		
विषनिदान	१९८५	५१७
जङ्गम विषके लक्षण...	”	”
विषपीतके लक्षण ...	”	”
स्थावर विषका सामान्य लक्षण	”	”
कन्दविषयकार्य सामान्य लक्षण	१९८६	५१८
सामान्य उपचार ...	”	”
विषके दशलक्षण ...	”	”
विषोंके दशगुणोंके कार्य	”	”
विषदेनेवाले मनुष्यके लक्षण	१९८७	५१९
मूलादि विषोंके लक्षण	”	”
विषलिप्त शस्त्रहतके लक्षण	१९८८	५२०
स्थावर विषको कहकर जङ्गममें सर्प विषये अति तीक्ष्ण हैं इसीसे प्रथम सर्पोंकी जाति कहतेहैं ...	”	”
अब सर्पोंके भेद कहतेहैं	१९८९	५२१
भोगि प्रभृति सर्पके काटनेपर वातादिकोंके लक्षण	१९९०	५२२

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
वंध्या कर्कोटकी योग	१९९०	५२२
विशिष्टदेशमेंतथाविशिष्टनक्षत्रमें काटनेकेअसाध्यलक्षण	१९९१	५२३
काटनेवालेकोकष्टसाध्य नक्षत्र	"	"
उष्णताकेयोगसेविषकावेग होताहैयहकहते हैं	"	"
सर्पकेकाटेकेअसाध्यलक्षण	"	"
दूसरेअसाध्यलक्षण	१९९२	५२४
तथाअसाध्यलक्षण	"	"
सर्पविषचिकित्सा	"	"
शिरीषाद्यंजन	१९९३	५२५
सामान्यउपचार	"	"
नक्तमालाद्यंजन ...	"	"
कर्कोटक्यादिनस्य	१९९४	५२६
लांगल्यादियोग	"	"
सर्पविषपरधूप	"	"
कालवज्राशनिरस ...	"	"
दूषीविषकेलक्षण	१९९५	५२७
दूषीविषकेलक्षण	"	"
स्थानभेदकरकेउसकेविशिष्ट लक्षण	"	"
दूषीविषकीनिरुक्तिकेलक्षण	१९९६	५२८
इनदोनोंविषोंकालक्षण	"	"
दूषीविषकेअसाध्यादि लक्षण	१९९७	५२९
शर्करादिलेह	"	"
पुत्रजीवमज्जायोग ...	"	"
कृत्रिमविषगृहधूमतैल	"	"
पारावतादिहिम	"	"
टंकणयोग	१९९८	५३०
दूर्वादिपान	१९९८	५३०
पिप्पल्यादि	"	"
लूताविषकीउत्पत्तिकेलक्षण	"	"
उनकेकाटनेकेसामान्यलक्षण	"	"
दूषीविषलूताकेकाटनेके लक्षण	१९९९	५३१
प्राणहरलूताके लक्षण	"	"
लूताविषाचिकित्सारजन्यादिलेप	"	"
गिरिकर्ण्यादिलेप	"	"
कीटजलौकाचिकित्सा	२०००	५३२
वचादिकाढा	"	"
वरटीविषाचिकित्सामरीचादिलेप	"	"
दूषीविषाखुलक्षण ...	"	"
प्राणहरमूषकाविषलक्षण	"	"
आखुविषचिकित्सा	२००१	५३३
उरगकंचुकीधूम	"	"
चित्रकमूलचूर्ण ...	"	"
चिंचादिचूर्ण ...	"	"
रसादिलेप	"	"
शिलादिपान ...	"	"
नखदंतविष	२००२	५३४
कृकलासदष्टलक्षण	"	"
वृश्चिक (विच्छू) कीउत्पत्ति	"	"
वृश्चिकविषलक्षण	"	"
वृश्चिकविषकेअसाध्यलक्षण	२००३	५३५
विच्छूविषचिकित्साकार्पा-सादिलेप ...	"	"
मनःशिलादिलेप	"	"
बिजोरामूलयोग	"	"

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
अन्ययोग	२००४	५३६
हंसपादीमूल	,,	,,
जेपालकल्क ...	,,	,,
नवसादरादिलेप	,,	,,
कणभदष्टकेलक्षण ...	,,	,,
उच्चिटिंगर (झींगर) विषके लक्षण	२००५	५३७
मंडूक (मेडक) विषके लक्षण	,,	,,
मंडूकविषचिकित्सा	,,	,,
विषैलमछली	,,	,,
मत्स्यविषचिकित्सा ...	,,	,,
विषैलजोकके लक्षण	२००६	५३८
छिपकलीकेविषकेलक्षण	,,	,,
कांतर (कानखजूरका) विष	,,	,,
कातरकानखजूरेकेविषकायत्न	,,	,,
मच्छरकेविषकेलक्षण....	,,	,,
असाध्यमशकक्षतकेलक्षण	,,	,,
सविषमक्षिका (मक्खी) देशके लक्षण	,,	,,
चतुष्पादादिकोंकेविषकेसाधारणलक्षण ...	२००७	५३९
विषउतरगयाहोउसकेलक्षण	,,	,,
शृङ्गीविषकायत्न	,,	,,
मक्खीकीपिटका ...	,,	,,
चैंटी,मक्खीऔरमच्छर	,,	,,
विषनाशकयोग ...	२००८	५४०
शीतलपरिषेक	,,	,,
प्रमाणांतर	,,	,,
यत्नान्तर	,,	,,

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
सामान्यचिकित्सा ...	२००८	५४०
गरनाशकरस ...	२००९	५४१
विषहरशिरीषादिलेप	,,	,,
स्थावरविषकायत्न	,,	,,
पथ्य	,,	,,
अपथ्य	२०१०	५४२
अलर्क(बावला कुत्ता) विषनिदानवाग्भट्टसे	,,	,,
उसके काटनेकेलक्षण	,,	,,
सविषनिर्विषदंशकेलक्षण	,,	,,
असाध्यलक्षण	२०११	५४३
जलसंत्रासनामाकेलक्षण	,,	,,
श्वानविषकीचिकित्सा	,,	,,
दूसरायत्न	,,	,,
तृतीययत्न	,,	,,
चतुर्थयत्न	२०१२	५४४
पंचमयत्न	,,	,,
छठायत्न	,,	,,
सप्तमयत्न	,,	,,
अष्टमयत्न	,,	,,
स्नायुकेनिदान	,,	,,
स्नायुकीचिकित्सा	२०१३	५४५
बातजस्नायुकपर ...	,,	,,
पित्तजस्नायुकपर ...	,,	,,
कफजस्नायुकपर ...	,,	,,
द्वंद्वजऔरसंनिपातज....	,,	,,
कफस्नायुकपर	,,	,,
स्नायुकपरलेप ...	२०१४	५४६
उपायान्तर	,,	,,
बब्बूलबीजयोग ...	,,	,,
सुधायोग	,,	,,

विषयाः	सं० पृ०	पृ०
पातालगरुडीयोग	"	"
अश्वगन्धावाविष्णु- क्रांताकालेप	"	"
कांचनीलेप	२०१५	५४७
अन्ययोग	"	"
अन्ययोगांतर	"	"
गव्यऔरनिर्गुंडीस्वरस	"	"
योगराज	"	"
सुषवीयोग	२०१५	५४७
अतिविषादिचूर्ण	२०१६	५४८
प्रयोगांतर	"	"
निंबादियोग	"	"
वृंताकयोग	"	"
गोधूमऔरसनके बीज	"	"

इति बृहन्निघण्टुरत्नाकरषष्ठभागस्थविषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

इति

बृहन्निघण्टुरत्नाकरषष्ठभागस्थ-

विषयानुक्रमणिका

समाप्ता ।

श्रीः ।

अथ शोथरोग ।

शोथरोगका कर्मविपाक ।

अद्रौमार्गेनदीतीरेछायायांपुलिनेनरः । मूत्रंपुरीषंवल्मीकेयः प्रमुंचेज्जलेपिवा । श्वयथुव्याधिमाप्नोतीत्येवमाहसदाशिवः । इन्द्रंवइति मंत्रंहिजपेदष्टोत्तरायुतम् । आपोहिष्ठेतिहोमः स्याच्चरुणासर्पिषायुतम् ॥

अर्थ–पर्वतकी उत्तम जगहको मार्ग नदीका तीर छाया नदीका पुलिन बँबई और जल इनमें जो मूत्र करता है अथवा मलको त्यागता है वो प्राणी सूजनका रोगवाला होता है, इस प्रकार शिवने कहाहै. वह प्राणी उस पापके नाशार्थ "इन्द्रंव०" इस मंत्रका १०८ जप करे तथा "आपोहिष्ठा" इस मत्रसे चरु और घृतका हवन करे ॥

शोफहर प्रतिमादान ।

शोफः पंचकरस्तीक्ष्णो दशास्यः शरचापधृक् ।
दधानं छुरिकां घंटां कुलिशं च कृशस्तथा ॥

अर्थ–शोथ रोगके पाँच हाथ दशमुख, और क्रूरहै. तथा बाण, धनुष, छुरी, घंटा, और वज्र इनको धारण करनेवाला कृश है इस प्रकार प्रतिमा बनायके दान करे ॥

संप्राप्ति ।

रक्तपित्तकफान्वायुर्दुष्टोदुष्टान्बहिः शिराः । नीत्वारूर्ध्वगतिस्तैर्हिकुर्यात्त्वङ्मांससंश्रयम् । सोत्सेधंसंहतंशोथंतमाहुर्निचयादतः॥

अर्थ–कुपित भई वायु स्वकारणसे दुष्ट भये रक्तपित्त कफको बाह्य शिरा (बाहरकी नाडियोंमें प्राप्त हो) तब उन्की गति बंद करे इसीसे वह पवन त्वचा और मांस इन्के आश्रयसे सूजन उत्पन्न करे, वह सूजन ऊंची और कठिन होय, इस्को रक्तसहित त्रिदोषोंका संबंध है, अर्थात् सन्निपातात्मक ऐसा ऐसे कहते हैं। "त्वङ्मांस संश्रयम्" इस पदसे व्रणशोथ जो शोथका भेद है सो दिखाया क्योंकि व्रणका संभव आठ व्रण वस्तुवोंमें होनेसे सो कहाभी है त्वङ्मांस-शिरास्नायु अस्थि सन्धिकोष्ठ मर्माणि इति अष्टौ व्रणवस्तूनि भवंति इति ॥

सर्वहेतुविशेषैस्तुतुल्यभेदान्नवात्मकम्।
दोषैःपृथक्द्वयैःसर्वैरभिघाताद्विषादपि॥

अर्थ–वो सूजन कारण भेदसे कार्यभेद होकर ९ नौ प्रकारकी होय है। यथा अलग अलग दोषोंसे३ द्वंद्वज ३ सन्निपात १ अभिघातज १ और विषसे १ ऐसे सब मिलकर नौ प्रकारका शोथ रोग भया॥

पूर्वरूप।

तत्पूर्वरूपंक्षवथुः शिरायामोंगगौरवम्॥

अर्थ–संताप, नसोंकी तननेके समान पीडा, देह भारी ये लक्षण सूजन होनेवाले पुरुषके होते हैं॥

कारण।

शुध्यामयाभक्तकृशाबलानांक्षाराम्लतीक्ष्णोष्णगुरूपसेवा।
दध्याममृच्छाकविरोधिदुष्टगरोपसृष्टान्ननिषेवणंच॥
अर्शांस्यचेष्टानचदेहशुद्धिर्मर्मोपघातोविषमाप्रसूतिः।
मिथ्योपचारः प्रतिकर्मणांचनिजस्यहेतुःश्वयथोः प्रदिष्टः॥

अर्थ–वमन आदि ज्वरादिक अभोजन (विगुण भोजन) इनसे जो कृश और बलहीन मनुष्योंके क्षारादिकका सेवन सूजनेका कारण होय है तहाँ नोन, खटाई, तीखी, उष्ण, भारी वस्तून्में दही, अपक्व, मट्टी, निषिद्धसाग, विरुद्ध (क्षीरमत्स्यादिक) संयोगज विषसे दूषित भया अन्नके सेवन करनेसे बवासीर, दंड कसरतके न करनेसे, शोधनके योग्य दोषोंके न शोधनेसे हृदयादि मर्मोंके दोष जन्म उपघातसे, कच्चा गर्भपात होना विषम प्रसूति, वमनादि पंचकर्मोंका मिथ्यायोग ये सर्व दोषज सूजनका कारण कहें हैं॥

सामान्य लक्षण।

सगौरवंस्यादनवस्थितत्वंसोत्सेधमूष्माथशिरातनुत्वम्।
सलोमहर्षश्चाविवर्णताचसामान्यलिंगंश्वयथोःप्रदिष्टम्॥

अर्थ–अंगभारी हो, चित्तमें स्वस्थता न होना ऊंची सूजन और दाह नस पतली हो जाय, रोमांच और देहका रंग बदल जाय ये सूजनके सामान्य लक्षण हैं॥

शोथ होनेके स्थान।

दोषाः श्वयथुमूर्ध्वंहिकुर्वंत्यामाशयस्थिताः।

पक्वाशयस्थामध्येतुवर्चस्थानगतास्त्वधः।
कृत्स्नंदेहमनुप्राप्ताः कुर्युः सर्वसरसंतथा॥

अर्थ-आमाशयस्थित दोष ऊपर (उरः स्थानादिकोंमें) सूजनको करे, पक्वाशयमें स्थित दोष मध्य कहिये (उर और पक्वाशय) इन दोनोंके बीचमें सूजन करे, मलस्थानगत दोष नीचेके स्थान (पैर आदि) में सूजन करे और सर्व देहमें दोष स्थित होनेसे सब देहमें सूजनको करते हैं॥

साध्यासाध्य।

योमध्यदेशेश्वयथुः सकष्टः सर्वगश्चयः।
अधोंगेरिष्टभूः स्याद्यश्चोर्ध्वंचपरिसर्पति॥

अर्थ-जो सूजन मध्य देशमें तथा सब देशमें होय सो कष्टसाध्य है और सूजन नीचेके अंगमें प्रगट हो ऊपरको चढे वो असाध्य है॥

असाध्य लक्षण।

श्वासः पिपासाछर्दिश्चदौर्बल्यंज्वरएवच।
यस्यचान्नेरुचिर्नास्तिशोथिनंपरिवर्जयेत्॥

अर्थ--श्वास, प्यास, वमन, दुर्बलता, ज्वर ये लक्षण होय और जिसकी अन्नमें अरुचि होय, ऐसे सूजनवाले रोगीको वैद्य त्यागदे॥

वातशोथनिदान।

चलस्तनुस्त्वक्परुषोरुणोसितःससुप्तिहर्षार्तियुतोनिमित्ततः।
प्रशाम्यतिप्रोन्नमतिप्रपीडितोदिवाबलीस्याच्छ्वयथुः समीरणात्॥

अर्थ-बादीसे सूजन चंचल, त्वचा पतली होजाय, कठोरहो, लाल, काली तथा त्वचा शून्य पड़ जाय, भिन्न भिन्न वेदना हो अथवा रोमांच और पीड़ा हो कदाचित् निमित्तके विना शांति होजाय उस सूजनके दाबनेसे तत्क्षण ऊपरको उठ आवै जिनमें जोर बहुत करे॥

वातशोथपर सामान्य यत्न।

शोथेवातोत्थितेपूर्वमासार्धंत्रिवृत्तांपिबेत्। तैलमेरंडजंवापिम
बलंधपितन्मतम्॥ शाल्यन्नंपयसायुक्तंरसैर्वापिप्रयोजयेत्।
स्वेदाभ्यंगांश्चवातघ्नान्सेकलेपांश्चकल्पितान्॥

अर्थ-वातशोथपर प्रथम पंद्रहदिन निसोथको ओंटायकै पीवे अथवा काढा करके पीवे अथवा अंडीका तेल पीवे यह मलावरोध पर उत्तमहै दूध भात

अथवा मांस रसके साथ अन्न सेवन करे पसीने अभ्यंग इत्यादिक वातनाशन उपचार तथा पोटलीसे सेकना लेप करना इत्यादिक करे ॥

शुंठ्यादि क्वाथ व बीजपूरादिलेप ।

देयाउदयमार्तंडस्त्रैलोक्याडंबरोथवा ।
वन्हीकुमारकश्चात्रदेयः शोफविनाशनः ॥
शुंठीपुनर्नवैरंडपंचमूलीशृतंजलम् ।
वातिकेश्वयथौपेयंभुक्तपाकेपितन्मतम् ॥

अर्थ-सूजनपर, उदयमार्त्तंड, त्रैलोक्यडंबर, अग्निकुमार, अथवा शोफारी इनमेंसे कोई रस देवे । सोंठ पुनर्नवा अंडकीजड़ पंचमूल इनका क्वाथ वात शोथपर देवे और यह अन्न पचनेके विषयमें भी उत्तम है । विजोरेकी जड़ जटामांसी दे-दारु सोंठ रास्ना अरनी इनका लेप वातकी सूजनको नाश करे ॥

पित्तशोथनिदान ।

मृदुः सुगंधोसितपीतरागवान्भ्रमज्वरस्वेदतृषामदान्वितः ।
यउष्यतेस्पर्शरुगक्षिरागकृत्सपित्तशोथोभृशदाहपाकवान् ॥

अर्थ-पित्तकी सूजन नरम, कुछ दुर्गंधयुक्त काली, पीली और लाल होय उसके होनेसे भ्रम, ज्वर, पसीना, प्यास और मस्तपना ये लक्षण होय दाह होय हाथ लगानेसे दूखे इसीसे नेत्र लालहो, उस्में अत्यन्त दाह तथा पाक होय ॥

त्रिवृत्तादिक्वाथ ।

क्षीराशिनः पित्तकृतेतिशोफेत्रिवृद्गुडूचीत्रिफलाकषायम् ।
पिबेद्गवांमूत्रविमिश्रितंवाफलत्रिकाचूर्णमथाक्षमात्रम् ॥

अर्थ-पित्त शोथपर निसोथ गिलोय त्रिफला इनका काढा पीवे अथवा त्रिफलाका १ एक तोले चूर्णको गोमूत्रके साथ पीवे ॥

पटोलादि क्वाथ ।

पटोलत्रिफलारिष्टदार्वीक्वाथः सगुग्गुलुः ।
हंतिपित्तभवंशोथंतृष्णाज्वरसमन्वितम् ॥

अर्थ-पटोलपत्र त्रिफला नीमकी छाल दारुहलदी इनका काढा गूगल डालके पीवे तो तृष्णाज्वर इन करके युक्त जो पित्तशोथ उसका नाश करे ॥

कफशोथ ।

गुरुःस्थिरः पाण्डुररोचकान्वितः प्रसेकनिद्रावमिवह्निमांद्यकृत् ।
सकृच्छ्रजन्मप्रशमोनिपीडितोनचोन्नमेद्रात्रिबलीकफात्मकः ॥

अर्थ–कफकी सूजन भारी, स्थिर, पीली होय है, इसके योगसे अन्नद्वेष, लारका गिरना, निद्रा, वमन, मन्दाग्नि ये लक्षण होय तथा इस सूजनकी उत्पत्ति और नाश बहुत कालमें होय इसको दबानेसे ऊपरको नहीं उठे रात्रिमें इसकी प्रबलता होय ॥

पुनर्नवादिक्काथ ।

पुनर्नवाविश्वत्रिवृद्गुडूचीश्यामाकपथ्यासुरदारुकल्कम् ।
शोथेकफोत्थेक्षसमंसमूत्रंक्काथंपिबेद्वाप्यथचैवतेषाम् ॥

अर्थ–पुनर्नवा सोंठ निसोथ गिलोय सामखिया हरड देवदारु इनका काढा अथवा एक तोले कल्क को गोमूत्रके साथ पीवे तो कफ शोथको नाशकरे

सामान्य यत्न ।

क्षारमूत्रासवारिष्टचूर्णतक्राणियोजयेत् ।

अर्थ–खार मूत्र आसव मद्य चूर्ण छाछ इत्यादि कफशोथपर देवे ॥

आरग्वधादि तैल।

कफोत्थेत्रपिबेत्तैलंसिद्धमारग्वधादिना ।
मंदेग्नौस्तिमितेकोष्ठेस्रोतोरोधेरुजावपि ॥

अर्थ–कफकी सूजनपर आरग्वधादि क्काथके साथ सिद्ध कराहुआ तेल उत्तम है और मंदाग्नि स्तब्धकोष्ठ मलमूत्रादि मार्गका रुकना और पीडा इनपर प्रशस्तहै ॥

पुनर्नवादि लेह ।

पुनर्नवामृतादारुदशमूलरसाढके । आर्द्रकस्यरसप्रस्थेगुडस्यचतुलांपचेत्॥तत्सिद्धेव्योषपत्रैलात्वक्पत्रैश्चपृथक् पृथक्। चूर्णीकृतैश्चसहितैर्मधुनः कुडवंक्षिपेत् । लेहःपुनर्नवोनामश्लेष्मशोफनिषूदनः । श्वासाकासारुचिहरोबलपुष्ट्यग्निवर्धनः ॥

अर्थ–पुनर्नवा गिलोय देवदारु दशमूल इनका काढा २५६ तोले अदरखका रस ६४ तोले गुड १०२४ तोले इस क्रमसे लेकर सबको एकत्र पक्क करे जब सिद्ध होजावे तब शीतल होनेपर त्रिकुटा पत्रज इलायची दालचीनी इन प्रत्येकका एक २ तोले चूर्ण डाले शहत १६ तोले डाले इसको पुनर्नवावलेह कहतेहैं यह कफकी सूजन और श्वास खाँसी अरुचि इनको नाश करनेवाला तथा बल पुष्टि अग्नि इनको बढावे ॥

द्वंद्वज और सन्निपातजन्य शोथ।

निदानाकृतिसंसर्गाच्छ्वयथुःस्याद्विदोषजः।
सर्वाकृतिःसन्निपाताच्छोथोव्यामिश्रलक्षणः॥

अर्थ–दो दोषोंके लक्षण और कारण एकत्र मिलनेसे द्वन्द्वज शोथ जाननी और सन्निपातसे सूजन होय उसमें वातादिक तीनों दोषोंके लक्षण होतेहैं॥

सामान्य यत्न।

मिश्रेमिश्रंक्रमंकुर्यात्सर्वजेसर्वमेवतु॥

अर्थ–मिश्र कहिये द्वंद्वज शोथपर कफवात अथवा कफपित्त जैसे दोष होवे उसीप्रकार विचार दो दोषोंके जो उपचार कहेहैं वो करे और त्रिदोषज शोथ पर सर्व दोषोंपर जो उपचार कहेहैं वोकरे॥

पिप्पलीचूर्ण।

पिप्पल्यजाजीगजपिप्पलीचनिदिग्धिकानागरचित्रकैश्च।
रजन्ययोः पिप्पलिमूलपाठामुस्तंचचूर्णंसुखतोयपीतम्।
कल्कश्चभूनिम्बमहौषधाभ्यांहन्यात्रिदोषंचिरजंचशोथम्॥

अर्थ–पीपल, जीरा, गजपीपल, कटेरी, सोंठ, चित्रक, हलदी, लोहेकी भस्म, पीपलामूल,पाढ और नागरमोथा इनके चूर्णको कुछ गरम जलके साथ पीवे, अथवा कडुआ चिरायता और सोंठ इनका कल्क गरम जलके साथ पीवे, तो बहुत दिनका त्रिदोषजन्य शोथको नाश करे॥

आर्द्रकादि चूर्णम्।

रसस्तथैवार्द्रकनागरस्यपेयोथजीर्णेपयसाथचाद्यात्।
शिलाह्वयंवात्रिफलारसेनहन्यात्रिदोषंश्वयथुंप्रसह्य॥

अर्थ–अदरखकारस अथवा सोंठके काढेको दूधमें डालकै पीवे जब यह जीर्ण होजाय तब त्रिफलेके काढेमें शिलाजीत डालकै पीवै यह बलात्कार पूर्वक त्रिदोष शोथको नाशकरे॥

अभिघातजन्यशोथ।

अभिघातेनशस्त्रादिच्छेदभेदक्षतादिभिः।
हिमानिलोदध्यनिलैर्भल्लातकपिकच्छुजैः॥
रसैःशूकैश्चसंस्पर्शाच्छ्वयथुःस्याद्विसर्पवान्।
भूर्युष्णलोहिताभासःप्रायशःपित्तलक्षणः॥

अर्थ-काष्ठादिककी चोट लगनेसे, शस्त्रादिकसे छेदन होनसे, पत्थर आदिसे फूटनेसे अथवा घावके होनेसे, आदिशब्दसे, लकड़ी आदि प्रहारसे शीतल पवन लगनेसे, समुद्रकी पवन लगनेसे, भिलावेका तेल लग जानेसे और कोंचकी फलीके स्पर्श होनेसे जो सूजन होय सो चारों तर्फ फैलजाय, अत्यन्त दाह होय उसका रंग लाल होय और विशेष करके इस्से पित्तके लक्षण होतेहैं ॥

विषजन्यशोथ ।

विषजःसविषप्राणिपरिसर्पणमूत्रणात् । दंष्ट्रादंतनखाघाता-त्सविषप्राणिनामपि ॥ विण्मूत्रशुक्रोपहतमलवद्वस्त्रसंकरात् । विषवृक्षानिलस्पर्शाद्गरयोगावचूर्णनात् ॥ मृदुश्चलोवलंबीच शीघ्रोदाहरुजाकरः ॥

अर्थ-विषवाले प्राणियोंके अंगपर चलनेसे अथवा मूतनेसे अथवा निर्विष (विषरहित मनुष्यादिक) प्राणीन्के डाढ, दाँत, नख लगनेसे अथवा सविष प्राणीन्का विष्ठा, मूत्र, शुक्र इनसे भरा अथवा मलिन वस्त्र अंगमें लगनेसे अथवा विषवृक्षकी हवाके लगनेसे अथवा संयोगज विषका अंगमें लगनेसे जो सूजन उत्पन्न होय सो विषज कहलाती हैं वो सूजन नरम, चञ्चल, भीतर प्रवेश करनेवाली जल्दी प्रगट होनेवाली दाह और पीडा करनेवाली होयहै॥

भिलाएकी सूजनपर लेप ।

शोथेचागंतुजेकुर्यात्सेकलेपादिशीतलम् ।
भल्लातकभवेशोफेसतिलाकृष्णमृत्तिका ॥

अर्थ-आगंतुज अर्थात् पत्थर, लकडी आदिके लगनेसे अथवा अन्य किसी कारण (गिरने आदि) से जो सूजन होवे उसपर शीतल जलका छिडकना लेप करना इत्यादि शीतल उपचार करे तथा भिलाएकी सूजनपर तिल पीस उसमें काली मिट्टी मिलायके लेप करे ॥

भिलाएके विषपर लेप ।

नवनीततिलैर्लेपोथवादुग्धंतिलान्वितम् । यष्टिदुग्धंतिलैर्लेपो नवनीतेनसंयुतः । शोफमारुष्करंहंतिचूर्णसालदलस्यवा ॥

अर्थ-मक्खन तिल, अथवा दूध तिल, अथवा मुलहटी दूध तिल मक्खन, अथवा कोह वृक्षके पत्ते ए चार प्रकारके लेप भिलाएकी सूजनके नाशक है ॥

भिलाएकी सूजनपर लेप ।

विभीतकानांफलमध्यलेपः सर्वेषुदाहार्तिहरःप्रशस्तः ।

यष्ट्याह्वमुस्तैःसकपित्थपत्रैः सचंदनैस्तत्पिटिकासुलेपः ॥

अर्थ-बहेडेकी मिंगीका लेप सर्व प्रकारकी भिलाएकी सूजन दाह इनपर प्रशस्त है, भिलाएसे जो पिटका (फुंसी) हो जाती हैं उनपर मुलहटी नागरमोथा कैथके पत्ते चंदन इनका लेप करे तो पिटका जाती रहे ॥

कृष्णादि चूर्ण।

कृष्णाग्निविश्वघनजीरककंटकारीपाठानिशाकरिकणामगधा जटानाम्। चूर्णंकवोष्णसलिलैरवलोड्यपीतंनातः परंश्वयथु रोगहरंनराणाम् ॥

अर्थ-पीपल चित्रक सोंठ, नागरमोथा जीरा पाढ हलदी गजपीपल पीपरामूल इनका चूर्ण मंदोष्ण जलमें मिलायकै पीवे तो इससे बढकर मनुष्योंके शाथेरागेनाशक दूसरी औषध नहीं है ॥

गुडादि चूर्ण।

गुडपिप्पलिशुंठोनांचूर्णंश्वयथुनाशनम्।
आमाजीर्णप्रशमनंशूलघ्नंबस्तिशोधनम् ॥

अर्थ-गुड, पीपल, सोंठ, इनका चूर्ण सूजन आमाजीर्ण शूल इनका नाशक और बस्तिशोधक है ॥

प्रकारांतर।

गुडात्पलत्रयंग्राह्यंशृंगवेरंपलत्रयम्। शृंगवेरसमाकृष्णालोह विट्भस्मनः पलम् ॥ चूर्णमेतत्समुद्दिष्टंसर्वंश्वयथुनाशनम्॥

अर्थ-गुड १२ तोले, सोंठ १२ तोले, पीपल १२ तोले, मंडूरभस्म ४तोले इनका चूर्ण सर्व शोथनाशक है ॥

पुनर्नवादि चूर्ण।

पुनर्नवादार्व्यमृतापाठाविश्वश्वदंष्ट्रिकाः। रजन्यौद्वेबृहत्यौचपिप्पलीचित्रकंवृषः। समभागानिसंचूर्ण्यगवांमूत्रेणवा पिबेत्। बहुप्रकारंश्वयथुंसर्वगात्रविसारिणम्। हंतिचाशुव राण्यष्टौव्रणांश्चैवोत्थितानपि ॥

अर्थ-पुनर्नवा, देवदारु, गिलोय, पाढ, सोंठ, गोखरू, हलदी, दारुहलदी, कटेरी, बडीकटेरी, पीपल, चित्रक, और अडूसा ए सब समान भागले चूर्ण करे, गोमूत्रके साथ पीवे, तो बहुत प्रकारका सर्वांगव्यापी सूजन और उद्धत व्रण (घाव) इनको तत्काल नाश करे ॥

त्रिडंगादि चूर्ण।

विडंगदंतीकटुकात्रिवृच्चित्रकदारवः । व्योषंसकृष्णंत्रिफला-
समादेयाह्ययोरजः। द्विगुणंतत्पिबेच्चूर्णंपयसाशोफशांतये ॥

अर्थ-वायविडंग, दंती, कुटकी, निसोथ, चित्रक, देवदारु, त्रिकुटा, पीपल, त्रिफला, ए सब समान भाग लेवे लोह भस्म २ भाग ले सबको एकत्र कूट पीस चूर्ण बनाय ले इसको गरम जलके साथ सेवन करे तो सूजनको दूर करे ॥

त्रिफलादि क्काथ।

त्रिफलाक्काथपानंहिमहिषीसर्पिषासह ।
हंतिशोफंप्रमेहंचनाडीव्रणभगंदरम् ॥

अर्थ-हरड़, बहेड़ा आँवला इनका काढा और भैंसका घी मिलाय कै पीवे तो सूजन, प्रमेह, नाडीव्रण, भगंदर इनको नाश करे ॥

पुनर्नवादि क्काथ।

पुनर्नवादारुनिशानिशाशुंठीहरीतकी। गुडूचीचित्रकोभार्गी
देवदारुचतैःशृतम्। पाणिपादोदरमुखप्राप्तशोफंनिवारयेत् ॥

अर्थ-पुनर्नवा, हलदी, दारुहलदी, सोंठ, छोटी हरड, गिलोय, चित्रक, भारंगी, देवदारु, इन नौ औषधोंका काढा करके पीवे तो सर्व देहकी सूजन दूर होय ॥

सिंहास्यादि क्काथ।

सिंहास्यामृतभंडाकीक्काथंकृत्वासमाक्षिकम् ।
कृच्छ्रशोथंजयेज्जंतुः कासंश्वासंज्वरंवमिम् ॥

अर्थ-अडूसा, गिलोय, बडी कटेरी, छोटी कटेरी इनके काढेमें शहत डालके पीवे तो दुर्धर सूजन, श्वास, खाँसी, ज्वर, वमन इनको नाश करे ॥

सूजनपर क्काथ।

पथ्यामृताभार्गिपुनर्नवाग्निदार्वीनिशादारुमहौषधानाम् ।
क्काथोनिपीतोदरपाणिपादवक्त्राश्रितंहंत्यचिरेणशोफम् ॥

अर्थ-छोटी हरड, गिलोय, भारंगी, पुनर्नवा, चित्रक, दारुहलदी, सोंठ, इनका काढा करकै पीवे तो उदर, हाथ, पैर, मुख, इनकी सूजन जल्दी नाश करे॥

दशमूल हरीतकी।

दशमूलकषायस्यकंसेपथ्याशतंगुडात् । तुलांपचेद्घनेतत्र

व्योषंक्षारंचतुःपलम्॥त्रिजातंतुसुवर्णांशंप्रस्थार्धंमधुनोहिमे।
दशमूलहरीतक्यःशोफान्घ्नंतिसुदुस्तरान्॥

अर्थ—दशमूलका काढा २५६ तोले हरड नग १०० गुड ४०० तोले, इन सबको एकत्र करके पचावे जब गाढी हो जावे तब इसमें त्रिकुटा, जवाखार, इनका चूर्ण १६ तोले, दालचीनी, इलायची, पत्रज, ये प्रत्येक एक २ तोले ले सबको मिलाय शीतल होनेपर शहत ३२ तोले डाले, तो इसको दशमूल हरीतकी कहते हैं यह दुस्तर शोथ रोगकी नाशक है॥

तक्रादियोग।

तक्रंपिबेद्वागुरुभिन्नवर्चाः सव्योषसौवर्चलमाक्षिकंच।
विड्वातसंगेपयसारसैर्वाप्रागुण्यमद्यादुरुबूकतैलम्॥

अर्थ—जिस शोथ रोगीका देह भारी होकर मल पतला होय उसको त्रिकुटा सेचरनिमक इनको चूर्ण और शहत मिलायकै छाछ पीवे यदि पेटमें बादीके भरनेसे शौच न होता होय तो प्रथम अंडीके तेलको गरम करकै पीवे फिर त्रिकुटेका चूर्ण शहत मिलायके दूध पिलावे अथवा शोथनाशक रसके साथ त्रिकुटाका चूर्ण और शहत देवे॥

पुनर्नवासव।

पुनर्नवेद्वेतुपलेसपाठादंतीगुडूचीसहचित्रकेण। निदिग्धिकाच त्रिफलाविपक्वाद्रोणावशेषेसलिलेततस्तम्।पूत्वारसेद्वेचशतंपुराणंगुडंमधुप्रस्थयुतंसुशीतम्।मासंनिदध्याद्घृतभाजनस्थंपलंयवानांपरतश्चमासात्। चूर्णीकृतैरर्धपलांशकैस्तैर्हेमत्वगेलामरिचांबुपत्रैः। गंधान्वितंक्षौद्रयुतंप्रदिग्धंजीर्णोपिबेद्व्याधिबलंसमीक्ष्य। हृत्पांडुरोगंश्वयथुंप्रवृद्धंप्लीहभ्रमारोचकमेहगुल्मान्। भगंदराशोंजठराणिकासश्वासग्रहण्यामयकुष्ठकंडून्।शाखानिलंबद्धपुरीषिणंचहिक्कांचकासंचहलीमकंच।क्षिप्रंजयेद्वर्णबलायुरोजस्तेजोन्वितोमांसरसांश्चभुक्त्वा॥

अर्थ—पुनर्नवा, पाढ, दंती, गिलोय, चित्रक, कटेरी, त्रिफला ये प्रत्येक आठ २ तोले लेकर २०४८ तोले जलमें काढा करे जब आधा रहे तब उतारके छान लेवे जब शीतल होजावे तब इसमें पुराना गुड २०० तोले और २५६ तोले शहत डालके एक महीने पर्यंत घीके चिकने वासनमें भरके धर देवे फिर

जो ४ तोले नागकेशर दालचीनी इलायची मिरच नेत्रवाला पत्रज गंधक प्रत्येक दोदो तोले चूर्ण इसमें डाले और शहतके साथ बलाबल विचारकै इसकी मात्रा देवे तो हृदयरोग, पांडुरोग, बहुत दिनकी बढी हुई सूजन, कामला, भ्रम, अरुचि, प्रमेह, गोला, भगंदर, बवासीर, उदर, खांसी, श्वास, संग्रहणी, कोढ, खुजली शाखागत वायु, मलबद्धता, हिचकी, हलीमक, इनको नाश करे तथा बल, वर्ण, आयुष्य, ओज, तेज इनको बढावे इसपर पथ्य मांसका रसहै ॥

वासासव।

वासकस्यपलेद्वेतुद्विद्रोणेपांविपाचयेत्। द्रोणार्धशेषंतंज्ञात्वा पूतेशीतेप्रदापयेत्।गुडस्यैकांतुलांतत्रधातक्यास्तुपलाष्टकम्। क्षिपेच्चूर्णीकृतेतस्मिन्त्वगेलापत्रकेशरम्। कंकोलंव्योषतोया निपलिकान्युपकल्पयेत्। निदध्याद्घृतभांडेतुपक्षादूर्ध्वंततः पिवेत्। वासकासवइत्येषःसर्वश्वयथुनाशनः॥

अर्थ–अडूसा ८ तोलेको २०४८ तोले जलमें डालकै काढा करे जब चतुर्थांश रहे तब उतारकै छान लेवे जब शीतल होजावे तब ४०० तोले गुडमिलायदे और धायके फूलोंका चूर्ण करकै डाल देवे तथा दालचीनी इलायची पत्रज नागकेशर कंकोल मिरच नेत्रवाला ए प्रत्येक चार २ तोले डाले फिर इसको घीके चिकने वासनमें भरकै धररखे,पंद्रह दिनके बाद निकालकै सेवन करे तो यह वासकासव सर्व प्रकारकी सूजनका नाश करे।

शोथपर योग।

पिबेदुष्णांबुनादारुपथ्याशुंठीपुनर्नवा। विडंगातिविषावासावि श्वादारूषणानिच। वर्षाभूशृंगवेराभ्यांकल्कंवासर्वशोथजित्॥

अर्थ–गरम जलके साथ देवदारु, हरड, सोंठ, पुनर्नवा। अथवा वायविडंग अतीस अडूसा, सोंठ, देवदारु, मिरच। अथवा पुनर्नवा, सोंठ इनका कल्क पीवे तो सर्व शोथोंको नाश करे॥

पुनर्नवादिघृत।

पुनर्नवापत्ररसालमूलंसंक्षुद्यतोयार्पणशेषसिद्धम्।
चतुर्थभागेनघृतेनपक्वंप्रस्थंतुतत्कल्कपलाष्टकेन॥
संसेवितंवातवलासरोगान्सर्वांश्च शोफानतिदुस्तरांश्च।
गुल्मोदरप्लीहगुदोद्भवांश्चनि॰तिवन्हिंकुरुतेचपुंसाम्॥

अर्थ-पुनर्नवाके पत्र आमकी जड इन दोनोंको जलसे पीस इनका रस १०२४ तोले लेवे और उसमें चतुर्थांश घी डाले तथा पुनर्नवा आमकी जडका कल्क ८ तोले डालके पचावे जब सब वस्तु जलकै केवल घृतमात्र शेष रहे तब उतारलेवे इसका सेवन करेतो वात कफके रोग बडी भारी सूजन, गोला उदर प्लीहा बवासीर इनको नाश करे और जठराग्निको दीप्तकरे॥

पंचमूलादितैल।

पंचमूलंसलवणंसरलंदेवदारुच। हस्तिकर्णीपलाशस्यफलानिनिचुलस्यच। पलाशंकाकनासाचगुडूचीदेवपुष्पकम्। अहिंस्राश्रेयसीहिंस्राबस्तगंधापुनर्नवा। कायस्थाचपयस्याचदारुकोजटिलाजटा। अलंबुषोरूबुकंचप्रपुन्नाटंसनागरम्। शिग्रुशोधः वर्मभार्ङ्गीतर्कारीपौष्कराजटा॥ एतैःसिद्धंयथालाभंतैलमभ्यंजनैस्त्रिभिः। निहंत्युदीर्णश्वयथुंजंतोर्वातकफात्मकम्॥

अर्थ-पंचमूल, निमक, सरल, देवदारु, कासालु, पलास अजमायन ये चार-२ तोले ले तथा कौआबोडी, गिलोय, लौंग, ऐरावती, गजपीपल, जटामांसी, वनतुलसी, पुनर्नवा, काली तुलसी हरड, तेलियादेवदारु, ईश्वरी, वच, गोरखमुंडी, अंडकी जड, पवाड़, सोंठ, सहजना, वटपत्री, पाषाणभेद, भारंगी, अरनी, और पुहकर मूल ये सब दो २ तोले लेकर काढाकरे अथवा कल्क करे इसमें तेल डालकै सिद्धकरे इस तेलको तीन दिन देहमें लगावेतो वातकफकी बढी हुई सूजनको नाशकरे।

शुष्क मूलकादि तैल।

शुष्कमूलकवर्षाभूदारुरास्नामहौषधैः।
पक्वमभ्यंजनेतैलंसमूलंशोफनाशनम्॥

अर्थ-सूखी मूली, पुनर्नवा, देवदारु, रास्ना और सोंठ, इनके साथ सिद्ध करा हुआ तेलको मालिस करनेसे जडसहित सूजनका नाश होय॥

न्यग्रोधादि तैल।

न्यग्रोधोदुंबराश्वत्थप्लक्षवेतसवल्कलैः।
स सर्पिष्कैः प्रलेपःस्याच्छोफनिवारणः परः॥

अर्थ-वड, गूलर पीपल, पापरी, वेंत, इनकी छालको औटाय उसमें घी मिलायकै लेप करे तो अत्यंत सूजनको नष्ट करे॥

पुनर्नवादिलेप।

पुनर्नवादारुशुंठीसिद्धार्थः शिग्रुमेवच।
पिष्टाचैवारनालेनप्रलेपः सर्वशोफजित्॥

अर्थ–पुनर्नवा, देवदारु, सोंठ, सपेद सरसों, संहजना, इनको पीस कांजीमें मिलायकै लेपकरे, तो सर्व शोथोंको जीते॥

पुनर्नवादि स्वेद।

पुनर्नवाग्निनिर्गुंडीपलितैरंडजैर्दलैः।
सहचरैर्जलंतप्तंतत्स्वेदःशोफहामतः॥

अर्थ–पुनर्नवा, चित्रक,निर्गुंडी, गूगल अंडकेपत्ते पीयावाँसा, इनको जलमें डालकै जलको ओंटावे; इसका बफारा सूजनको नाश करे।

कुटजादि स्वेद।

कुटजार्कशिरीषाणांविदलैरंडनिंबजैः।
पत्रैर्युक्तंजलंतप्तंतत्स्वेदोदुष्टशोफहृत्॥

अर्थ–कूडा, आक, सिरस, कालीनिसोथ, अंडके पत्ते, इनको जलमें डालकै उस जलको ओंटायकै बफारा देवे तो दुष्ट सूजनको नष्ट करे॥

आर्द्रक स्वरस।

आर्द्रकस्वरसःपीतःपुराणगुडमिश्रितः।
अजाक्षीराशिनांशीघ्रंसर्वशोथहरोभवेत्॥

अर्थ–अदरखका रस, पुराना गुड दोनोंको मिलायकै सेवन करे तथा बकरीका दूध सेवन करे तो तत्काल सर्व प्रकारकी सूजनोंको नाश करे॥

अर्कादिसेचन।

सेकस्तथार्कवर्षाभूनिम्बक्काथेनशोफजित्।
गोमूत्रेणाथकुर्वीतसुखोष्णनावसेचनम्॥

अर्थ–आक, पुनर्नवा, नीमकीछाल इनके काढेका बफारा, अथवा मंदोष्ण गोमूत्र करके तरड़ा देवे तो सूजनको दूरकरे॥

कृष्णादिप्रलेप।

कृष्णापुराणपिण्याकंशिग्रुत्त्वक्सिकतातसी।
प्रलेपोन्मर्दनेयुंज्यात्सुखोष्णमूत्रकल्किता॥

अर्थ–काली मिरच; पुरानी खल, सोंहजनेकीछाल, मिश्री, अलसी इनको गोमूत्रमें पीस कुछ गरम करके देहमें मालिसकरे अथवा लेप करेतो सूजनको नाशकरे॥

बिल्वपत्ररस।

बिल्वपत्ररसः पीतः शोषणः श्वयथौरुजः।
विट्संगेचैवदुर्नाम्निविषूच्यांकामलास्वपि॥

अर्थ–बेलपत्रका रस पीनेसे सूजन, मलबद्धता, बवासीर, विषूचिका, कामला, इनका शोषकहै॥

वर्षाभ्वादिक्षीर।

क्षीरंशोथहरंदारुवर्षाभूनागरैः शृतम्।
पेयंवाचित्रकव्योषत्रिवृद्दारुप्रसाधितम्॥

अर्थ–देवदारु, पुनर्नवा, सोंठ इनके कल्कमें सिद्ध करे हुए दूध, अथवा चित्रक त्रिकुटा निशोथ देवदारु इनके कल्कसे सिद्ध करे हुए दूधको पीवेतो सर्व शोथ नाशकरे॥

गुडार्द्रकादियोग।

गुडार्द्रकंवागुडनागरंवागुडाभयांवागुडपिप्पलींवा। कर्षाभिवृद्धचात्रिपलप्रमाणंखादेन्नरः पथ्यमथापिमांसम्॥ शोफप्रतिश्यायगलास्यरोगान्सश्वासकासारुचिपीनसादीन्। जीर्णज्वराशोंग्रहणीविकारान् हन्यात्तथान्यानपिवातरोगान्॥

अर्थ–गुड, अदरख अथवा गुड, सोंठ अथवा गुड, हरड, अथवा गुड, पीपल एक तोलेसे लेकर बारह तोले पर्यंत शक्तिकी तारतम्यता देखकै बढावे, तथा पथ्यसे रहे यह एकमहीने पर्यंत खानेसे सूजन प्रतिश्याय, कंठरोग, श्वास, खांसी, अरुचि, पीनस, जीर्णज्वर, बवासीर, संग्रहणी और वातके रोग इनसबको नाशकरे॥

पुनर्नवादियोग।

पुनर्नवामूलकदेवदारुच्छिन्नोद्भवाचित्रकमूलसिद्धा।
रसायवागूश्चपयांसियूषाः शोफेप्रदेयादशमूलगर्भाः॥

अर्थ–पुनर्नवाकी जड, देवदारु, गिलोय, चित्रककी जड, इनके काढेसे सिद्ध करे हुए रस, यवागू, दूध, मंड, ये शोथ रोगपर देवे, अथवा दशमूलका काढा डालके सिद्ध कराहुआ रस और कांजी इत्यादिक देवे॥

भूनिम्बादिकल्क।

भूनिंबविश्वकल्कंजग्ध्वापीतः पुनर्नवाक्काथः।

अपहरतिनियतिमाशुश्वयथुंसर्वांगजंनृणाम् ॥

अर्थ–चिरायता सोंठ इनका कल्क पीके, ऊपरसे पुनर्नवाका काढा पीवै तो निश्चय सर्वांग शोथको नाश करे ॥

दारुगुग्गुलशुंठीनांकल्कोमूत्रेणशोफजित् ।
गोमूत्रस्यचयोगोवाक्षिप्रंश्वयथुनाशनः ॥

अर्थ–दारुहलदी, सोंठ, गूगल, इनके कल्कको गोमूत्रके साथ पीवे, तो सूजनको नाश करे, अथवा केवल गोमूत्रकाही योग तत्काल शोथको नाश करे॥

शोथारिरस ।

हिंगुलंजयपालंचमरीचंटंकणंकणा ।
संमर्द्यवल्लः सघृतः सर्वशोफहरःपरः ॥

अर्थ–हींगलू, जमालगोटा, कालीमिरच, सुहागा, पीपल, इनको एकत्र खरलकर घीके साथ २ रत्ती भक्षण करे तो संपूर्ण शोथका नाश करे ॥

श्वयथुघातारिरस ।

रसगंधकलोहकणात्रिवृतामरिचामरदारुनिशात्रिफला ।
दलितंमृदुगोसलिलेनपिवेदनुरूपममुंश्वयथूदरहम् ॥

अर्थ–पारा, गंधक, लोहभस्म, पीपल, निसौथ, कालीमिरच, देवदारु, हलदी त्रिफला, इनके चूर्णको बलाबल विचार करै गोमूत्रके साथ खाय तो सूजन, उदर, इनको नाश करे ॥

शोथपरमंडूर ।

गोमूत्रसिद्धमंडूरंसुरभेरसभावितम् । माणकार्द्रककंदानांरसे ष्वपिचभावयेत् । त्रिफलाकटुचव्यानांचूर्णपाणितलद्वयम् । क्षिपेत्सुसिद्धपाकेतुमधुनश्चपलद्वयम् । निहंतिसर्वजंशोथंसर्वांगस्थंविशेषतः ॥

अर्थ–गोमूत्रसैं सिद्ध करा हुआ मंडूरमें गोमूत्र मानकंद, अदरख कासालू इनके रसकी भावना देवे, फिर त्रिफला, कुटकी, चव्य, ये प्रत्येक दो दो तोले ले चूर्ण करकै मिलाय देवे, फिर उस मंडूरको दुगनी गोमूत्रके साथ पक्व करे जब शीतल हो जावे तब इसमेंसे ८ तोले शहद डालकै धररक्खे, इसको रोगीका बलाबल विचार कै सेवन करना चाहिये, यह त्रिदोषज सर्वांग व्यापी सूजनको नाश करे ॥

पथ्य ।

संशोधनंलंघनमस्रमोक्षः स्वेदः प्रलेपः परिषेचनंच । पुरा-

तनाः शालियवाःकुलित्थामुद्गाश्चगोधापिचशल्लकोपि । भुजं-
गभुक्तितित्तिरिताम्रचूडलावादयोजांगलविष्किराश्च। कूर्मोऽपि
शृंगीप्रपुराणसर्पिस्तक्रंसुरामाक्षिकमासवश्च । निष्पावकाठि-
ल्लकरक्तशिग्रुरसोनककर्कोटकवालमूलम्।सौवर्चलंगृंजनकंपटो-
लंवेत्राग्रवार्तांगणमूलकानि । पुनर्नवाचित्रकपारिभद्रश्रीप-
र्णिनिंबेक्षुरपल्लवानि । एरंडतैलंकटुकाहरिद्राहरीतकीक्षार-
निषेवणंच । भल्लातकंगुग्गुलुमायसंचकटूनितिक्तानिचदीप-
नानि । मूत्राणिगोजामहिषोभवानिकस्तूरिकावापिशिलाज-
तूनि । यत्पांडुरोगेष्वपिवह्निकर्मपुराप्रदिष्टंचतदेवचापि ।
यथामलंपथ्यमिदंप्रयुक्तंशोथामयंसत्वरमुच्छिनत्ति ॥

अर्थ—संशोधन, लंघन, रुधिर निकालना, स्वेदन, लेप, परिसेचन, पुराने चावल जौ तथा कुलथी, गोह, सेही, मोर तीतर, मुरगा, लवा आदि जंगली पक्षियोंका मांस, कछुवा, सींग, मछली, पुराना घी, मट्ठा, मदिरा, शहद, आसव (द्राक्षासवादिक) सेम करेला लाल सहिंजना लहसन, ककोडा, कोमल मूली, हुलहुल. गाजर, परवल, वेंतकी कोंपल, आँवलोंके फल औ । जड, नेवा, चीता, देवदारु, अरणी, नींब, तालमखानेके पत्ते, अंडीका तेल, कुटकी, हलदी हड, खारका सेवन, भिलावा, गूगल, लोहकिट्ट, कडुए, चरपरे और दीपन पदार्थ, गौ, बकरी, तथा भैंसका मूत्र, कस्तूरी, शिलाजीत और पहिले पाण्डुरोगमें जो कहा हुआ है वह अग्निकर्म दोषके अनुसार दिया हुआ यह पथ्य शोथ रोगको शीघ्र दूर करै- इति ॥

शोथरोगपर अपथ्य ।

ग्राम्यानूपंपिशितलवणंशुष्कशाकंनवान्नंगौडंपिष्टंदधिसक्तु-
शरंनिर्झरंमद्यम्लम् । धानावल्लूरमशनमथोगुर्वसात्म्यंविदा-
हिस्वप्नंरात्रौश्वयथुगदवान्वर्जयेन्मैथुनंच ॥

अर्थ—ग्राम्य तथा अनूपदेशका मांस, नोन, सूखासाग, नया अन्न. गुडकी वस्तु, पिसा अन्न, खिचड़ीके साथ दही, बिना जलके मद्यपान, खटाई, धनियाँ, सूरव मांस, भारी अहित तथा विदाही भोजन, रातमें जागना, स्त्री संग, शोथ रोगवाला इन सबका त्याग करै ॥

इति श्रीआयुर्वेदोद्धारेबृहन्निघंटुरत्नाकरे शोथरोगस्यनिदानचिकित्सासमाप्ता ॥

अंड वृद्धि ।

अंडवृद्धिनिदान ।

क्रुद्धोनूर्ध्वगतिर्वायुःशोथशूलकरश्चरन् ।
मुष्कौवंक्षणतःप्राप्यफलकोशाभिवाहिनीम् ॥
प्रपीड्यधमनीर्वृद्धिंकरोति फलकोशयोः ।

अर्थ–कुपित भई अधोगमन शील (नीचे विचरनेवाली) तथा सूजन और शूल उत्पन्न करनेवाली वायु कूखमें संचार करती हुई अंडकोश और वंक्षण (अंडकोश और जंघाकी संधि) से अंडमें आयकर अंडकी वृद्धि और कोश इनकी बहनेवाली धमनी (नाडी) को दुष्टकर अंडकी (दोनों अंडकी अथवा एक ओरसे अंडकी) वृद्धि करै है ॥

संख्या ।

दोषास्त्रमेदोमूत्रांत्रैःसवृद्धिःसप्तधागदः ।
मूत्रांत्रजावप्यनिलाद्धेतुभेदस्तुकेवलम् ॥

अर्थ–वह वृद्धि रोग तीनों दोषोंसे ३ रुधिरसे१,मेद१,मूत्र१ और आंतोंसे १ सात प्रकारकाहै । मूत्रज और अंत्रज वृद्धि ये दोनों वायुसे होतीहैं परंतु इन दोनोंका निदान और चिकित्सामें भेद होनेसे पृथक् ग्रहण कराहै सो लिखाभीहै–"मूत्रान्त्रजावप्यनिलाद्धेतुभेदस्तु केवलं" इति ॥

वातादिवृद्धिकेलक्षण ।

वातपूर्णदृतिस्पर्शोरूक्षोवातादहेतुरुक् ।
कृष्णःस्फोटावृतःपित्तवृद्धिलिंगैश्चपित्तजः ॥
कफवन्मेदसोवृद्धिर्मृदुस्तालफलोपमः ।

अर्थ–वातसे भरी मसक जैसी हाथके लगनेसे मालूम होय ऐसा मालूम होय रूक्ष और विनाकारण दूखने लगे वो वातकी अंडवृद्धि जाननी. काले फोडान्से व्याप्त तथा जिस्में पित्त वृद्धिके लक्षण मिलते होय, उस अंडवृद्धिको पित्तकी तथा रक्तकी कहतेहैं । मेदसे जो अंड वृद्धि होयहै वो कफकी वृद्धिके समान मृदु (नरम) तथा ताल फलके समान हो अर्थात् पीले रंगकी और गोल होयहै ॥

वातजअंडवृद्धिकायत्न ।

आर्द्रकस्यरसःक्षौद्रयुक्तोवृषणवातजित् ॥

अर्थ–अदरखके रसको शहदमें मिलाकर पीवे तो वृषण वातको जीतने वाला जानना ॥

एरंडतैलयोग।

सक्षीरंवापिबेत्तैलंमासमेरंडसंभवम्।
गुग्गुलुंरुबुतैलंवागोमूत्रेणपिबेन्नरः॥
वातवृद्धिंनिहंत्याशुचिरकालानुबंधिनीम्।

अर्थ–दूध और अंडीके तेलको मिलाय १ महीने पर्यंत पीवे अथवा गूगल अंडका तेल इनको गोमूत्रके साथ पीवे तो बहुत दिनकी अंड वृद्धिको तत्काल नाशकरे।

चंदनादिलेप।

चंदनंमधुकंपद्ममुशीरंनीलमुत्पलम्॥
क्षीरपिष्टःप्रलेपःस्यात्पित्तवृद्धिरुजापहः।

अर्थ–चंदन मुहलटी कमल नीलाकमल इनको दूधमें पीसके लेप करे तो अंडवृद्धि रोगका नाश करे।

पञ्चवल्कलादि।

पंचवल्कलकल्केनसघृतेनप्रलेपनम्।
पानंवापिकषायस्यपित्तवृद्धौप्रशस्यते॥

अर्थ–वड, पीपल, गूलर, पापरी, वेंत इन पंचवल्कलके कल्कको घीमें मिलायके अंडोंपर लेप करे, अथवा पंचवल्कलोंका काढा पीवे तो पित्तजन्य अंड वृद्धिको नाशकरे॥

सामान्यचिकित्सा।

कफवृद्धौमूत्रपिष्टैरुष्णवीर्यैःप्रलेपनम्।
पातव्योमूत्रसंयुक्तःकषायः पीतदारुणः॥

अर्थ–कफ जन्य अंडवृद्धिपर गोमूत्रमें उष्णवीर्य अर्थात् गरम औषधोंको पीसके लेप करे और दारुहलदीका काढा गोमूत्र डालके पीवेतो अंडवृद्धी दूर होय॥

त्रिकट्वादिक्काथ।

त्रिकटुत्रिफलाक्काथःसक्षारलवणःपिबेत्।
कफवातप्रकोपघ्नोविरेकात्कफवृद्धिजित्॥

अर्थ-त्रिकुटा, त्रिफला इनके काढेको जवाखार, सैंधानिमक इनका चूर्ण डालके पीवे तो कफवादीको अथवा कफ वात जन्य अंडवृद्धिको नाशकरे ॥

सामान्यचिकित्सा।

अविदाहिचभैषज्यंकर्त्तव्यंरक्तपैत्तिके।
सर्वपित्तहरंकार्यंरक्तजेरक्तमोक्षणम् ॥

अर्थ-रक्तज अंडवृद्धि और पित्तज अंडवृद्धि इनपर जो विदाहन करे तथा पित्तहारक, ऐसी औषध करे, तथा रक्त जन्य वृद्धिपर, रुधिरमोक्ष करे ॥

रक्तजवृद्धिपर।

मुहुर्मुहुर्जलौकाभिः शोणितंरक्तजेहरेत्।
शीतमालेपनंसर्वपाकोरक्ष्यःप्रयत्नतः ॥

अर्थ-रक्तजन्य अंडवृद्धिपर वारंवार जोंक लगायकै रुधिरको निकाले, और शीतल लेप करे तथा वह पके नहीं ऐसा यत्न करे ॥

त्रिवृतादिक्काथ।

त्रिवृतंप्रपिबेत्क्षौद्रंशर्करासहितंमुहुः।
पित्तग्रंथिक्रमंकुर्यादामेपक्केचरक्तजे ॥

अर्थ-रक्तजन्य अंडवृद्धि पर वारंवार, मिश्रीके साथ निसोथका काढा पीवे और आम किंवा पकी हुई गांठ होय तो पित्तजग्रंथिपर जो यत्न करना लिखा है सो करे ॥

मेदजअंडवृद्धिपर।

खिन्नमेदःसमुत्थानंलेपयेत्सुरसादिना।
शिरोविरेचयेत् द्रव्यैःसुखोष्णैर्मूत्रसंयुतैः ॥

अर्थ-जिस ठिकाने मेद बढा हुआ हो उस स्थानपर बफारा देकर निर्गुंडी इत्यादिकोंका लेप करे, तथा सुख होय उतना गरम गोमूत्र सहित औषधों करके शिरोबस्ती देवे ॥

षडूषणादि चूर्ण।

षडूषणंक्षौद्रसमंगुग्गुलुंगव्यसर्पिषा। प्रयुक्तंकुड्यभुंजीतयथाग्निदिवसानने। कटुतिक्तकषायाशीमेदोवृद्धिप्रणाशनम् ॥

अर्थ-सोंठ, मिरच, पीपल, चव्य, चित्रक, पीपलामूल, जौं गूगल, गौका घी, इन पदार्थोंको एकत्र खरल कर बलाबल विचारकै प्रातःकाल खाय ऊपरसे चरपरे, कडुए, कसेले, ऐसे पदार्थ भक्षण करै तो अंडवृद्धिका नाश होय ॥

मूत्रजन्य अंडवृद्धि निदान।

मूत्रधारणशीलस्यमूत्रजःसतुगच्छतः। अंभोभिःपूर्णदृतिवत्क्षोभयातिसरुङ्मृदुः। मूत्रकृच्छ्रमधस्थाच्चचलयन्फलकोशयोः॥

अर्थ—मूत्रको रोकनेका जिस्को अभ्यास होय उस्के यह रोग होय हैं, वो पुरुष जब चले तब पानीसे भरी पखालके समान डबक डबक हले तथा बजे और उस्में पीडा भी थोडी होय हाथके छूनेसे नरम मालूम होय उस्में मूत्रकृच्छ्रकीसी पीडा होय फल और कोश दोनों इधर उधर चलायमान होय॥

चिकित्सा।

संस्वेद्यमूत्रप्रभवांवस्त्रखंडेनवेष्टयेत्। सीवन्याःपार्श्वतोधस्तात् विंधेद्व्रीहिमुखेनवै। मुष्ककोशमगच्छंत्यामंत्रवृद्धौविचक्षणः। वातवृद्धिक्रमंकुर्याद्दाहस्तत्राग्निनाहितः॥

अर्थ—मूत्रजन्य अंडवृद्धिपर प्रथम बफारा देकर वस्त्रसे लपेट देवे, अंडकोशकी सीवन एकतरफ नीचेके अंगमें शालीके कांटे से (धानके कांटेसे) वेध करे अर्थात् छिद्रकर देवे और जो अंडवृद्धि अंडके गोली पर्यंत न गई हो, उसपर वातजअंडवृद्धिके ऊपर जो उपचार कहे हैं वो करे और उसपर दाग देना हितकारी है॥

अंत्रज वृद्धि।

वातकोपिभिराहारैः शीततोयावगाहनैः। धारणेरणभाराध्वविषमांगप्रवर्तनैः। क्षोभणैः क्षुभितोन्यैश्चक्षुद्रांत्रावयवंयदा। पवनोविगुणीकृत्यस्वनिवेशादधोनयेत्। कुर्याद्वंक्षणसंधिस्थोग्रन्थ्याभंश्वयथुंतथा॥

अर्थ—वात कोप कारक आहारके सेवन करनेसे, शीतल जलमें प्रवेश करके स्नान करनेसे, उपस्थित मूत्रादि वेगोंके धारण अप्राप्तवेग (अर्थात् करनेकी इच्छा न होय) उसको बलपूर्वक प्रेरणा करनेसे, भारी बोझके उठानेसे, अति मार्गके चलनेसे अंगोंकी विषम चेष्टा (अर्थात् टेढा, तिरछा अंगकरके गमनादिक करना) बलवान्से वैर करना, कठिन धनुषका खैंचना इत्यादि ऐसेही और कारणोंसे कुपित भई जो वायु सो छोटी आंतोंके अवयवोंके एक देशको बिगाडकर अर्थात् उनका संकोचकर अपने रहनेके स्थानसे उसको नीचे लेजाय तब वंक्षणसंधिमें स्थित होकर उस स्थानमें गांठके समान सूजनको प्रगट करे॥

उपेक्षितअंडवृद्धिकापरिणाम।

उपेक्ष्यमाणस्यचमुष्कवृद्धिमाध्मानरुक्स्तंभवतींसवायुः।
प्रपीडितोंतःस्वनवान्प्रयातिप्रध्मापयन्नेतिपुनश्चमुक्तः ॥

अर्थ–जिस अंडवृद्धिसे अफरा होय, पीडा होय, जडताहोय, उसकी उपेक्षा करनेसे अर्थात् औषध न करनेसे, तथा अंडकोशोंके दाबनेसे जो वायु 'कोंकों' शब्द करै तथा हातके दाबनेसे वायू ऊपरको चढजाय और छोडनेसे फिर नीचे उतरकर अंडोंको फुलाय दे ये होय हैं ॥

असाध्यलक्षण।

क्षुद्रांत्रावयवाश्श्लेष्मामुष्कयोर्वातसंचयात्।
अंत्रवृद्धिरसाध्योयंवातवृद्धिसमाकृतिः ॥

अर्थ–छोटी आंतोंके अवयव (अंग वाला) कफ वातके संचयसे मुष्कके विषे प्राप्त होय, तथा जिस्में वातके लक्षण कहे वो सब मिलते होय, वो अंडवृद्धि असाध्य है वर्ध्म अर्थात् बदरोगका निदान ग्रन्थान्तरमें लिखा है ॥

शिरावेध।

शंखोपरिचकर्णांतेत्यक्त्वासेवनिमादरात्।
व्यत्यासाद्वाशिरांविध्येदंत्रवृद्धिनिवृत्तये ॥

अर्थ–शंख, अर्थात् कनपटीके ऊपर कानके समीप सेवनी अर्थात् संधिओंको छोडकर वैद्य शिरावेध करे, वो व्यत्यास करके अर्थात् दहने तरफ अंत्रवृद्धि होय तो बाँये तरफ, और बाँये तरफ होय तो दहने तरफकी शिरा वेध करे, तो अंत्रवृद्धिकी निवृत्ति होय ॥

कर्णशिरावेध।

कर्णकोशस्यमध्येतुरक्तांनिर्हारयेच्छिराम्।
उभाभ्यांद्वेशिरेवेध्येतेनवातसुखंभवेत् ॥

अर्थ–कानके बीचकी रक्तयुक्त शिराको वेधे दोनों तरफ वृद्धि हो तो दोनों कानोंकी शिरावेध करे, तो अंत्र वृद्धिवालेको सुख होय ॥

गोमूत्रयोग।

गुग्गुलुंरुबुतैलंवागोमूत्रेणपिबेन्नरः।
अंत्रवृद्धिंनिहंत्याशुचिरकालानुबंधिनीम् ॥

अर्थ–गूगल अथवा अंडीके तेलको गोमूत्रके साथ पीवे तो बहुत दिनकी अंत्रवृद्धिका नाश होय ॥

नारायणतैल।

सक्षीरंवापिबेत्तैलंमासमेरंडसंभवम्।
तैलंनारायणंयोज्यंपानाभ्यंजनबस्तिषु॥

अर्थ–दूधकेसाथ अंडीका तेल अथवा अंडीकी सपेद मिंगी इनको औटा कर पींवे अथवा नारायण तैल पीना लगाना बस्ती इस विषयमें अर्थात् अंडवृद्धि पर योजना करे॥

अंगुष्ठपर दाग।

अंगुष्ठमध्यत्वक्छित्वादहेदंगाविपर्ययम्।

अर्थ–पैरके अँगूठेके बीचाबीच त्वचाको छेदन करकै दाग देवे तो विपरीततासे देवे जैसे यदि दहनी तरफ होवे तो बाई तरफ और बाई तरफ होयतो दहनी तरफ दाग देवे॥

वचादिलेप।

वचासर्षपकल्केनप्रलेपःशोफनाशनः॥

अर्थ–वच सरसों इन दोनोंको पीस लेपकरे तो सूजनको नाशकरे॥

कज्जलि।

गोमूत्रैरंडतैलाभ्यांरसगंधककज्जली।
पीत्वानिहंतिसहसावृद्धिंवृषणसंभवाम्॥

अर्थ–गोमूत्र अंडीका तेल इनके बराबर पारा और गंधक इनकी कजलीको सेवन करै तो तत्काल अंडवृद्धिको नाश करे॥

अजाज्यादिलेप।

अजाजीहपुषाकुष्ठंगोमयंबदरान्वितम्।
कांजिकेनतुसंपिष्टंकुर्याद्ध्मप्रलेपनम्॥

अर्थ–जीरा हाऊबेर कूठ गौका गोवर बेर इनको कांजीमें पीस लेपकरे तो वर्ध्म (बद) और अंत्रवृद्धिको नाशकरे॥

लाक्षादिलेप।

लाक्षाकरंजबीजंचशुंठीदारुचगैरिकम्। कुंदरंचसमंकृत्वाचूर्णयेन्मतिमान्भिषक्। कांजिकेनतुसंपेष्यतथाश्वयथुनाशनः॥

अर्थ–लाख,करंजेके बीज सोंठ देवदारु और गेरु इनको बराबर कुंदरू तृणले सबका चूर्ण करकै कांजीमें मिलाय कुछ गरम २ लेप करे तो यह अंत्रवृद्धि सूजन इनको नाश करे इसमें संदेह नहीं॥

पिप्पल्यादिलेप।

पिप्पलीजीरकंकुष्ठंबदरंशुष्कगोमयम् ॥
कांजिकेनप्रलेपोयमंत्रवृद्धिविनाशनः ॥

अर्थ-पीपल, जीरा, कूठ, बेर, सुखाया गोबर, इनको कांजीमें मिलायकै लेप करे तो अंडवृद्धिको नाश करे ॥

देवदार्वादिलेप।

देवदारुमिशीवासाटांकलीमूलसैंधवम्।
क्षौद्रयुक्तैश्चतैर्लेपोवृद्धिमंत्रभवांजयेत् ॥

अर्थ-देवदारु, सोंफ, अडूसा, अरनीकी जड, सैंधानिमक, शहत, इनका लेप अंत्रवृद्धिको जीते ॥

दार्वी चूर्ण।

दार्वीचूर्णगवांमूत्रैर्निपीतंमुष्कवृद्धिजित् ॥

अर्थ-दारुहलदीका चूर्ण गोमूत्रके साथ पीवे तो अंडवृद्धि जीते है ॥

रास्नादि क्वाथ।

रास्नायष्टयमृतैरंडपटोलंरेणुकाबला।
वृषः स्यात्कथितोवृद्धिंहन्याच्चित्रकतैलवान् ॥

अर्थ-रास्ना, मुलहटी, गिलोय, अंड, पटोल पत्र, रेणुक बीज, खिरेटी और अडूसा इनके काढेमें चित्रकका चूर्ण और अंडीका तेल इनको मिलायकै पीवै तो अंत्र वृद्धिको नाश करे ॥

एरंड तैल।

तैलमैरण्डजंपीत्वाबलासिद्धंपयोन्वितम्।
आध्मानशूलोपचितामंत्रवृद्धिंजयेन्नरः ॥

अर्थ-खिरेटीके काढेमें अंडीका तेल डालकै पीवे, तो अफरा, शूल, इन करकै युक्त अंत्र वृद्धिको जीते।

त्रिफलादि क्वाथ।

फलत्रिकोद्भवंक्वाथंगोमूत्रेणैवपाचयेत्।
वातश्लेष्मकृतंहंतिशोथंवृषणसंभवम् ॥

अर्थ-हरड, बहेडा, आँवला, इनका गोमूत्रमें काढा करकै पीवे तो वात कफसे उत्पन्न हुए वृषण शोफको नाश करे।

रास्नादि द्वितीय ।

रास्नामृताबलायष्टीगोकंटैरंडजःशृतः ।
एरण्डतैलसंयुक्तोवृद्धिमंत्रभवांजयेत् ॥

अर्थ-रास्ना, गिलोय, खिरेंटी, मुलहटी, गोखरू और अंडकी जड इनके काढेमें अंडीका तेल डालकै पीवे तो अंत्र वृद्धि दूर होय ॥

मांस्यादि घृत ।

मांसीकुष्ठंपत्रकैलारास्नाशृंगीचचित्रकम् । कृमिघ्नमश्वगंधाच शैलेयंकटुरोहिणी । सैन्धवंतगरंचैवकुटजातिविषैस्समैः । एतै श्वकार्षिकैःकल्कैर्घृतप्रस्थंविपाचयेत् । वृषमुंडीनवैरंडनिंबप त्रभवंरसम् । कंटकार्याश्चापिदुग्धंप्रस्थंतस्मिन्विनिक्षिपेत् । सिद्धमेतद्घृतंपीतमंत्रवृद्धिंव्यपोहति । वातवृद्धिपित्तवृद्धिमे दोवृद्धिमथापिवा । मूत्रवृद्धिंचहंत्येतत्सर्पिराशुनसंशयः ॥

अर्थ-जटामांसी, कूठ, पत्रज, इलायची, रास्ना, कांकडासिंगी, चित्रक, बायविडंग, असगंध, शिलाजीत, कुटकी, सैंधानिमक, तगर, कूडा और अतीस ये सब एक २ तोले ले कल्क करके इसमें ६४ तोले घी डालकै औंटावे फिर अडूसा, गोरखमुंडी, अंड और नीम इनके नवीन पत्ते कटेरी इनका रस ६४ तोले दूध ६४ तोले ये डाले फिर मंदाग्निपर तो घृतसिद्ध होय इस घृतके सेवन करनेसे अंड वृद्धिको नाश करे वो अंड वृद्धि वात पित्त मेद मूत्र इनमेंसे किसी करकै उत्पन्न हुई हो उसको अवश्यनाश करे इसमें संशय नहींहै ॥

पुनर्नवादितैल ।

पुनर्नवामृतादारुसक्षारलवणत्रयम् । कुष्ठंसठीवचामुस्तारास्नाक ट्फलपुष्करम् । यवानीहपुषाहिंगुशताह्वाचाजमोदकः । विडं गातिविषायष्टी पंचकोलकसंयुतैः । एतैःकल्कसमैरक्षैस्तैलंप्र स्थंविपाचयेत् । गोमूत्रंद्विगुणंदेयंकांजिकंचतथैवच । पुनर्न वाद्यमेतत्तुवस्तौपानेतथोत्तमम् । कट्यूरुपृष्ठमेढ्रेषुकुक्षौचवृ षणाश्रितम् । कफवातोद्भवंशूलमंत्रवृद्धिविनाशनम् ॥

अर्थ-पुनर्नवा, गिलोय, देवदारु, निमक, जवाखार, सामुद्रनिमक, सुहागा, सैंधानिमक, कचियानिमक, कूठ, कचूर, वच, नागरमोथा, रास्ना, कायफल,

पुहकरमूल, अजमायन, हाऊबेर, हींग, शतावर, अजमोदा, वायविडंग अतीस मुलहटी, सोंठ, मिरच, पीपल, चव्य चित्रक इन सबको समान भाग लेवे. और सबकी बराबर बहेडा लेवे. सब ६४ तोले तेलमें डालकै औटावे. फिर इसमें दूना गोमूत्र और कांजी मिलावे. इसको पुनर्नवादि तेल कहतेहैं. इसको पीना और बस्तीविषयमें योजना करे तो कमर, पीठ, ऊरू, लिंग, कूख, वृषण (पोते) इन ठिकानेका कफ वातसे उत्पन्न शूल अंत्रवृद्धि इनका नाश होय ॥

वृद्धिनाशन रस।

रसगंधौसमौतायांद्विगुणंहेममाक्षिकम्। पथ्यारसेनत्रिदिनंरुबु तैलेनवासरम्। मर्दितंसिद्धिमायातिरसेंद्रोवृद्धिनाशनः ॥

अर्थ–पारा, गंधक, समान भागले और दोनोंके बराबर सुवर्ण माक्षिक इन तीनोंको एकत्र करकै हरडके काढेमें तीन दिन खरल करे, फिर अंडीके तेलमें १ दिन खरल करे, तो यह वृद्धिनाशन रस सिद्ध होय, यह अंडवृद्धिकी नाशकहै ॥

अनुपान।

सपथ्यारुबुतैलेनसेवितोवल्लमात्रकः।
मुष्कवृद्धिंजयत्याशुकर्णस्फोटरसेनवा॥

अर्थ–प्रथम कहा हुवा रस, हरडका चूर्ण, अंडका तेल, इनके बराबर, अथवा कर्णस्फोट रूखडीके रसमें मिलाय १ वल्ल सेवन करे तो अंडवृद्धिको नाशकरे ॥

सर्वांगसुंदर रस।

बलातैलेनवालिह्याच्चणकक्काथतोपिवा।
चेतकीयवशूकाभ्यांपथ्यारुबुकतैलयुक्।
वृद्ध्याटवीकुठारोयंरसः सर्वांगसुंदरः॥

अर्थ–अथवा वही रस खिरटीका तेल, अथवा चनेके काढे अथवा हरड जवाखार, इनका चूर्ण अथवा अंडका तेल, इनमेंसे किसी एकके साथ चाटे तो यह सर्वांगसुंदर रस वृद्धिरूपी अटवीको कुठारके समानहै ॥

कुरंटलक्षण।

अत्यभिष्यंदिगुर्वम्लसेवनान्निचयंगतः।
करोतिग्रंथिवच्छोफंदोषोवंक्षणसंधिषु॥

अर्थ-अभिष्यंदि वस्तुके खानेसे, भारी अन्नके खानेसे, कच्चे अन्नके खानेसे वृद्धिको प्राप्त भये दोष अथवा अत्यभिष्यंदि गुर्वाम इसजगे "अत्यभिष्यंदि गुर्वन्न शुष्क पूज्यामिषाशनात्" ऐसाभी पाठ है अर्थात् अभिष्यंदि भारी अन्न के खानेसे तथा सूखा और पूज्य कहिये गौ आदिके मांस खानेसे दोष (वात पित्त कफ) कुपित होकर वंक्षणकी सन्धिमें अर्थात् बस्तिस्थानके समीप जिन को नरे कहतेहैं उन्में सूजनको प्रगट करे ॥

वर्ध्मरोगपर कल्क।

भृष्टश्चैरंडतैलेनकल्कःपथ्यासमुद्भवः।
कृष्णासैंधवसंयुक्तोवर्ध्मरोगहरःपरः॥

अर्थ-अंडीके तेलमें हरड पीपल सैंधानिमक इनके चूर्णको चुपडकै सेवन करे तो अत्यंत वर्ध्मरोग हारक होताहै।

इन्द्रवारुणिमूलयोग।

इंद्रावारुणिकामूलंतैलंपुष्करजंतथा।
संमर्द्यचसगोदुग्धंपिबेज्जंतुःकुरंटके॥

अर्थ-इन्द्रायणकी जडको अंडीके तेलमें मिलायकै गौके दूधके साथ पीवे तो कुरंड रोगको नष्टकरे॥

कुरंडपरलेप।

गवांघृतेनसंयुक्तंकृत्वासैंधवचूर्णकम्।
पिबेत्सप्तदिनंयावत्तावल्लेपःकुरंडके॥

अर्थ-गौके घीमें सैंधानिमक डालकै सात दिन पीवे और इतने ही दिन कुरंड पर लेप करना चाहिये॥

प्रकारांतर।

संचूर्णितंसैंधवमाज्ययुक्तंसंमर्द्यतोयस्थितमेव सोष्णम्।
मुहुर्मुहुर्यःकुरुतेप्रलेपंविलीयतेतस्यकुरंडरोगः॥

अर्थ-सैंधानिमकका चूर्ण और घी इनको जलमें खरल करके इसका वारंवार लेप करे तो कुरंड रोग नष्ट होय।

कुरंटज्वरपर।

एरंडतैलसंमिश्रंकासीसंसैंधवंपिबेत्।
वस्त्रेणवृषणंबध्वाकुरंडज्वरनाशनम्॥

अर्थ-अंडीका तेल और सैंधानिमक इसमें कसीसको मिलायकै पीवे और वृषण (पोते) लंगोटसैं कस देवे तो कुरंड ज्वरका नाश होय ॥

लेप।

तंदुलवारिविमिश्रंघृतपूरसंज्ञमुच्यतेलोके।
तन्मूलपिष्टलेपंकुरंडगलगंडयोःकुर्यात्॥

अर्थ-चावलके धोवनमें घृत करंजकी जडको मिलाय इसका लेप कुरंड और गंडमाला इन पर करे॥

प्रकारांतर।

ईश्वरीमूलमेरंडमूलंमूषकचर्मच।
प्रलेपःस्यात्कुरंडाख्यरोगविच्छेदकारकः॥

अर्थ-वाँझककोडाकी जड अंडीकाजड मूसाकर्नीकी छाल इनका लेप कुरंड रोगको नाश करे॥

ब्राह्मणयष्ट्यादि।

सुपेषितंब्राह्मणयष्टिकायामूलंसमंतंदुलधावनेन।
निहंतिलेपाद्गलगंडमालांकुरंडमुख्यानखिलान्विकारान्॥

अर्थ-भारंगीकी जड चावलोंके धोवनमें पीसकै गंडमाला, कुरंड इनपर लेप करे तो इन दोनों रोगोंका नाश करे॥

इन्द्राणी मूलयोग।

वातारितैलमृदितंसुरवारुणीजंमूलंनरः पिबतियोमसृणंविचूर्ण्य।
गव्येनिधायपयसित्रिदिनावसानेतस्यप्रणश्यतिकुरंडकृतोविकारः॥

अर्थ-अंडीके तेलमें इन्द्रायणकी जडको पीसकै गौके दूधके साथ तीन दिन बराबर पीवे तो कुरंड रोगको नाश करे॥

लेप।

तरुमूषिकचर्मणानिबद्धःप्रविलेपादथचेश्वरीजटायाः।
उपशांतिमुपैतिमानवानामचिरेणैवकुरण्डसंज्ञरोगः॥

अर्थ-मूसा करनीकी छाल बाँधे अथवा वाँझककोडेकी जडको पीसकै लेप करे तो कुरंड रोगको तत्काल शांति करे॥

बालकके कुरंडपर।

यःपित्तदोषेणकुरंडरोगोभवेच्छिशोर्दक्षिणमुष्कभागे।

बस्तोर्द्ध्वभागश्रवणस्यविंध्येद्वामस्यवामेप्रभवेपरस्य ॥

अर्थ–यदि पित्तके दोषसे बालकके दहने तरफ अंडपर कुरंड रोग होय तो उसके बाँए कानकी फस्त खोले और बाँए तरफ होय तो दहने तरफ कानकी नसको खोले ॥

हरीतकी चूर्ण।

गोमूत्रसिद्धांरुबुतैलभृष्टांहरीतकींसैंधवचूर्णयुक्तम्।
खादेन्नरःकोष्णजलानुपानान्निहंतिकूरंटमतीववृद्धम् ॥

अर्थ–हरडको गोमूत्रमें ओटायकै अंडीके तैलमें भूने इसका चूर्ण सैंधानिमक मिलायकै गरम जलके साथ पीवे तो बहुत दिनका कुरंड रोगका नाश करे ॥

शंबूकादि लेप।

शंबूकोदरनिहितंगव्यंसप्ताहमातपेसर्पिः।
स्थितमपिहंतिकुरंडंसैंधवचूर्णान्वितंलेपात् ॥

अर्थ–गौका घी सात दिन छोटे २ शंखोंमें भरकै धूपमें रख देवे, इसमें सैंधीनमक मिलायकै कुरंडपर लेपकरे तो उसका नाश होय ॥

सैंधवादि अनुवासनबस्ति।

सैंधवंमदनंकुष्ठंसिताह्वानिचुलंवचा। ह्रीबेरंमधुकंभार्ङ्गींदेवदारुःसनागरम्। कट्फलंपौष्करंमेदाचाविकाचित्रकंसठी। विडंगातिविषाश्यामाहरेणुर्नलिनीस्थिरा। बिल्वाजमोदारास्नाचदंतीकृष्णाचतैःसमैः।साध्यमेरंडजंतैलंतैलंवाकफवातनुत्। वध्मोदावर्तगुल्मार्शः प्लीहमेहाढ्यमारुतात्। आनाहमश्मरीचैवहरेत्तदनुवासनात् ॥

अर्थ–सैंधानिमक, मैनफल, कूठ, बावची, पनस, वच, नेत्रवाला, मुलहटी भारंगी, देवदारु, सोंठ, कायफल, पुहकरमूल, मेदा, चव्य, चित्रक, कचूर, वायविडंग, अतीस, हरड, रेणुकबीज, कमलककंद, सालपर्णी, बेलफल, अजमोदा, रास्ना, जमालगोटेकी जड और पीपल, ये पदार्थ समान भागले इसमें अंडीका तेल डालकै सिद्ध करे, यह कफवात, बद उदावर्त्त, गोला, बवासीर, प्लीह, प्रमेह, आढ्यवात, अनाह, पथरी, इनको अनुवासन बस्ती करनेसे नाश करे ॥

वर्ध्मरोगपरबिल्वादि चूर्ण ।

मूलंबिल्वकपित्थयोररलुकस्याग्नेर्बृहत्योर्द्वयोः श्यामापूतिकरंजशिग्रुकतरोर्विश्वौषधारुष्करम् । कृष्णाग्रंथिकवल्लपंचलवणंक्षाराजमोदान्वितपीतंकांजिकमुष्णतोयमथितैश्चूर्णीकृतंवर्ध्मजित् ॥

अर्थ-बेलकीजड, कैथाकी जड, टेंटू, चित्रक, कटेरी, बडीकटेरी, निसोथ पूतिकरंज, सहँजना, सोंठ भिलावें, पीपल, पीपरामूल, मिरच, पांचोंनिमक जवाखार, अजमोद, कचूर, इनका चूर्ण करकै इसको कांजी, गरम जल, अथवा छाँछ इनके साथ पीवे तो बदरोगको दूर करे ॥

श्वदंष्ट्रादिचूर्ण ।

श्वदंष्ट्रासिंधुविश्वाह्वदारुकृमिहराश्मभित् ।
लोहचूर्णघृतेनाद्याद्वातवर्ध्महरंपरम् ॥

अर्थ-गोखरू, सैंधानिमक, सोंठ, नागरमोथा, देवदारु, वायविडंग पाषाणभेद, लोहेकी भस्म, इनका चूर्ण घीके साथ सेवन करे तो वादीकी बद नाश होय ॥

वर्ध्मादिलेप ।

सद्योमृतस्यकाकस्यमलेनपरिलेपनात् । वर्ध्मरोगःप्रयात्याशु रविणातिमिरंयथा । पक्वेतुदारणंकृत्वाप्रकर्तव्याव्रणाक्रिया ॥

अर्थ-बद रोगीवालेको तत्कालका मरा हुआ कौआके मलका लेप करे तो जैसे सूर्योदय होनेसे अंधकार नष्ट हो उसी प्रकार नाश होय,यदि पक गई होवे तो उसको फोडकर व्रणपर जो चिकित्सा कही है वो करनी चाहिये ॥

अंत्रवृद्धिपरपथ्य ।

संशोधनंबस्तिरसृग्विमोक्षःस्वेदःप्रलेपोरुणशालयश्च । एरंडतैलंसुरभीजलंचधन्वामिषंशिग्रुफलंपटोलम् । पुनर्नवागोक्षुरकाग्निमंथतांबूलपथ्यारसनारसोनम् । वार्डिगनंगृंजनकंमधूनिकौंभघृतंतप्तजलंचतक्रम् । अर्धेंदुवद्वंक्षणयोश्चदाहोव्यत्यासतोबाहुशिराव्यधश्च । यथामयंशस्त्रविधिश्चवर्गोदुर्वर्ध्मवृध्यामयिनांसुखाय ॥

अर्थ-संशोधन, बस्तिकर्म, फस्त खुलाना, स्वेदन, प्रलेप, लाल चावल, अंडीका तेल, गोमूत्र, मरुदेशका मांस, सहँजनेकी फली, परवल, पुनर्नवा,

गोखरू, अरणी, ताम्बूल, हरड, सरल, लहसन, वाडिंगन गाजर, शहत, पुराना भरा घी, गरम जल, मट्ठा, जो आमवातका नाशक और अग्निका बढाने वाला, अन्नपानी, पुरानी मदिरा, अर्द्धचन्द्रके समान दोनों वंक्षणों अर्थात् ऊरूकी संधीमें दागना, व्यत्याससे अर्थात् बाँई ओर होयतो दाहिनीका और दाहिनी ओर होयतो बाँई बाँहकी नसमें फस्त खोलना, यह सब शास्त्रोक्त वर्ग वर्ध्मवृद्धि रोगवालेको सुखदाई है ॥

अंत्रवृद्धिपरअपथ्य ।

अनूपमांसानिदधीनिमाषाःपिष्टान्नदुष्टान्नमुपोदिकांच ।
गुरूणिशुक्रोत्थितवेगरोधः स्युर्वर्ध्मवृध्यामयिनाममित्रम् ॥

अर्थ–अनूपदेशके जीवोंका मांस, दही, उडद, दूध, पिसा अन्न, पोईका शाक, भारी वस्तु, वीर्यके रोकना ये सब वर्ध्मवृद्धिके रोगियोंको अपथ्य है॥

वेगाहतंपृष्ठयानंव्यायामंमैथुनंतथा ।
अत्याशनमथाध्वानमुपवासंपरित्यजेत् ॥

अर्थ–वेगोंका रोकना, यानपर बैठना, व्यायाम करना, मैथुन करना, ज्यादा भोजन करना, रास्ता चलना और उपवास (अभक्षण) इन सबका परित्याग करना चाहिये ॥

इति श्रीबृहन्निघंटुरत्नाकरेअंडवृद्धि, वर्ध्म, कुरंडरोगाणांनिदानचिकित्सासमाप्ता ।

गलगंड ।

गलगंडका कर्मविपाक ।

गलगंडीगणद्रव्यहर्ताभवतिमानवः। दानेनतत्प्रतीकारंवक्ष्यामिशृणुभास्कर। माणिक्यंपद्मरागंचवज्रंमौक्तिकमेवच । वैडूर्यंपुष्परागंचवज्रंमरकतंतथा । एभिर्मालांप्रकुर्वीतसूत्रमध्यत्रराजतम् । अलाभेमौक्तिकाद्यन्यतमैर्मालांप्रकल्पयेत् । सवेत्रराजतंसूत्रमितिवेदप्रकल्पितम् । ताम्रपात्रेविनिक्षिप्यतिलानामुपरिन्यसेत् । तिलानांचपरीमाणंद्रोणपंचकमिष्यते। ततोर्ध्वंनवग्रहादिमहाशांतिंकुर्यात् । रत्नमालांपूजयित्वावेदशास्त्रविदेब्राह्मणायदद्यात् ॥

अर्थ–जो प्राणि पंचायती द्रव्यको चुराता है उसके गलगंडरोग होता है उसका प्रतीकार कहताहूं– मानिक, पद्मराग, हीरा, मोती, वैडूर्य, पुखराज, पन्ना, इनकी सुवर्णके तारमें माला करकै देवे, यदि ये संपूर्ण रत्न न मिले तो इसमेंसे किसी एककी माला बनायकै तामेके पात्रमें तिल १०२४ तोले भर उसपर रखकै फिर नवग्रहोंकी महा शांति करके तथा उस मालाका पूजन करके वेद शास्त्रज्ञाता ऐसे ब्राह्मणको दानकर देवे ॥

गलगंडनिदान।

निबद्धःश्वयथुर्यस्यमुष्कवल्लंबतेगले।
महान्वायदिवाह्रस्वोगलगण्डंतमादिशेत् ॥

अर्थ--जिसके गलेमें अनुबन्ध युक्त बडी अथवा छोटी अंड कोशके समान सूजन होकर लटके उसको गलगंड कहतेहैं ॥

संप्राप्ति।

वातःकफश्चापिगलेप्रदुष्टौमन्येसमाश्रित्यतथैवमेदः।
कुर्वंतिगंडंक्रमशास्त्रिलिङ्गैःसमन्वितंतंगलगंडमाहुः ॥

अर्थ--गलेमें दुष्ट भये वात कफ और उसी प्रकार मेद गलेकी दोनों मन्या नाडीका आश्रय लेकर क्रमसे आपअपने लक्षण संयुक्त गंड (गोला) उत्पन्न करेहैं उसको गलगंड रोग कहतेहैं। ये रोग वात कफ और भेद इन कारणोंसे तीन प्रकारका है ये रोग अपनेही स्वभावसे पैत्तिक नहीं होय है, जैसे चातुर्थिकज्वर अपने प्रभावसे जंघामें कफका और मस्तकमें वातका प्रथम आताहै इस्मेंभी पित्तका नहींहोय है, उसी प्रकार इस रोगमेंभी जानो।

गलगंडकीचिकित्सा।

जिह्वाधःपार्श्वयोर्मूलाच्छिराद्वादशकीर्तिताः । तासांस्थूलेंशि
रेद्वेचछिंद्यात्तेचशनैःशनैः।बडिशेनैवसंगृह्यकुशपत्रेणबुद्धिमान्॥
सुतेरक्तेव्रणेतस्मिन्दद्यात्सगुडमार्द्रकम्। भोजनंचानभिष्यंदि
यूषंकौलित्थमिष्यते। यवमुद्गपटोलादिकटुरूक्षंतुभोजनम्।
छर्दिंचरक्तमुक्तिंवागलगंडेप्रयोजयेत् ॥

अर्थ–जिह्वाके नीचे दोनों तरफ बारह शिरा (नस) हैं उनमेंभी बडी दो हैं उनको आँकडेसे खींचके कुशाके पत्रसे बुद्धिवान् वैद्य धीरे २ छेदन करे जब रुधिर निकल जावे तब उस व्रणपर गुड और अदरख रखदेय तथा तृप्ति न

करे ऐसे रूक्षान्न कुलथीकी दाल जौ, यव, मूंग परवल तथा चरपरा और रूक्ष ऐसा भोजन वमन रक्तस्राव ये सब यत्न गलगंडरोगपर करे ॥

सर्षपादिलेप।

सर्षपाशिग्रुबीजानिशणबीजातसीयवाः। मूलकस्यचबीजा-
नितक्रेणाम्लेनपेषयेत्। गंडानिग्रंथयश्चैवगंडमालास्तथैवच।
आलेपात्तेनशाम्यंतिविलयंयांतिवाचिरात्॥

अर्थ-सरसों संहजनेके बीज सनके बीज जौ अलसी मूलीके बीज इनको खट्टी छाँछमें पीसके लेप करे तो गलगंड ग्रंथी (गांठ) गंडमाला ये रोग शांति होय अथवा नाश होवे ॥

पलाशमूललेप।

तंदुलोदकपिष्टेनपरिलेपोविधानतः।
हितःकर्णेपलाशस्यगलगंडःप्रशाम्यति॥

अर्थ--पलाश (ढाक) की जडको चावलोंके धोवनमें पीसकै काँनोपर लेप करे, तो हितकारी होय, तथा गलगंडको नाश करे॥

अमृतादि तैल।

तैलंपिबेच्चामृतवल्लिनिंबहिंग्वाभयावृक्षकपिप्पलीभिः।
सिद्धंबलाभ्यांचसदेवदारुहितायनित्यंगलगंडरोगे॥

अर्थ-गिलोय नीमकी छाल, हींग, जंगीहरड कुडेकी छाल, पीपल, खिरेटी, नागवला, और देवदारु, इनके कल्कमें तेल, सिद्ध करे, इसके पीनेसैं गलगंड रोगको हित होय॥

कटुतुंबी तैल।

विडंगक्षारसिंधूग्रारास्नाग्निव्योषदारुभिः। कटुतुंबीफलरसे
कटुतैलंविपाचितम्। चिरोत्थमपिनस्येनगलगंडविनाशयेत्॥

अर्थ-वायविडंग, जवाखार, सैंधानिमक, वच, रास्ना, चित्रक, सोंठ, मिरच, पीपल, देवदारु इनका काढा तथा कडवी तूंबीका रस इनको तेल डालके सिद्ध करे, इसकी नस्य देवे, यह बहुत दिनके गलगंडको नाश करे॥

तुंब्यादि तैल।

तुंबीरसेनकटुकेनचतुर्गुणेनकल्कीकृतैर्मगधजादिगणौषधैश्च।
तैलंशृतंहरतिदेहिषुगंडमालामत्युल्वणामपिगलेगलगंडरोगान्॥

अर्थ-चौगुना कडुई तुंबीकारस इसमें १ गुना पिप्पल्यादि गणकी औषधों को पीसकै मिलायदे फिर इनकी बरार तेलको औंटायकै गंडमाला और गलगंड इनपर लगावे तो इसको नाशकरे तेल तिलीका लेंवे॥

वातिक गलगंड।

तोदान्वितः कृष्णशिरावनद्धःश्यावोरुणोवापवनात्मकस्तु।
पारुष्ययुक्तश्चिरवृद्धिपाकोयदृच्छयापाकमेयात्कदाचित्।
वैरस्यमास्यस्यचतस्यजंतोर्भवेत्तथातालुगलप्रशोषः॥

अर्थ-जिस मनुष्यके पीडा युक्त नीली नाडियोंसे युक्त कृष्ण पीत तथा लाल रंगयुक्त कठोरता युक्त, बढकर पकनेवाला, कभी अचानक पकनेवाला; मुखकी विरसता तालु गलका शोष इन लक्षणोंवाला गलगंड रोग होवे तो वह वातसे उत्पन्न हुआ कहना॥

जलकुम्भी भस्मयोग।

जलकुंभीकजंभस्मपक्त्वागोमूत्रगालितम्।
पिबेत्कोद्रवतक्राशीगलगंडनिवृत्तये॥

अर्थ-कांटेदार सेवंतीकी भस्मको गोमूत्रमें डालकै औंटावे फिर छानकै पीवे और कोदोंका भात और छाँछ पथ्यमें खाय तो गलगंडनिवृत्ति होय॥

चिकित्साक्रम।

स्वेदोनिलोत्थेगलगंडकादौनाड्यानिलघ्नौषधपत्रपिंडैः।

अर्थ-वातजन्य गलगंडपर कमलकी नाल अथवा इसी प्रकारके पदार्थोंसे सेक अथवा वातनाशक वृक्षके पत्रोंकी लुगदी बनायकै बाँधे॥

वातगलगंडचिकित्सा।

निचूलंशिग्रुमूलानिदशमूलमथापिच।
आलेपनंवातगंडेसुखोष्णंसंप्रशस्यते॥

अर्थ-आवकी जड, तथा सहिंजनेकी जड और दशमूल इनको एकत्र पीस कुछ २ गरम कर इसका वातजन्य गलगंडपर सुखोष्ण लेप करे॥

मंडूर लोह।

महिषीमूत्रविमिश्रंलोहमलंसंस्थितंघटंमासम्।
अंतर्धूमविदग्धंमधुनागलगंडनाशनंलीढम्॥

अर्थ-लोहेकी कीटीको एक महीने मट्टीके बरतनमें भैंसका मूत्र भरकै उसमें डालके धर देव फिर इसको गजपुटमें रखकै फूँक देव, इसको शहतमें मिला-यकै खानेको देवै, तो गलगंडका नाश होय ॥

सूर्यावर्त्तादि लेप।

सूर्यावर्तरसोनाभ्यांगलगंडोपनाहनम्।
स्फोटाःस्रावैःशमंयातिगलगंडोनसंशयः॥

अर्थ-नीला भाँगरा और लहसन इनकी लुगदी करके गलगंडपर बांधे तो फोडा होकर स्राव होय, इससे गंडमालाका उपशम होवे, इसमें संशय नहीं॥

अलाबुजलपान।

तिक्तालाबुफलेपक्केसप्ताहमुषितंजलम्।
गलगंडंनिहंत्याशुपानात्पथ्यानुशीलिनः॥

अर्थ-पकी हुई कडुई घीयामें सात दिन जल भरकै धर रक्खे,तथा इसको पीवे और पथ्यसे रहे तो गलगंडको नाश करे ॥

जीर्णकर्कारुयोग।

जीर्णकर्कारुकरसोविडसैंधवसंयुतः।
नस्येनतरुणंहंतिगलगंडंनसंशयः॥

अर्थ-पुरानी ककडीके रसमें बिडनिमक और सैंधानिमक डालके नस्य देवे तो बढी हुई गलगंडको नाश करे ॥

निर्गुंडी मूलयोग।

श्वेतापराजितामूलप्रातःपिष्ट्वापिबेन्नरः।
सर्पिषानियताहारोगलगंडप्रशांतये॥

अर्थ-सपेद निर्गुंडीकी जडको पीसकै प्रातःकाल घीके साथ सेवन करे तथा घी भातका पथ्य करे तो गलगंड शांति होय ॥

कफजगलगंड।

स्थिरः सवर्णोगुरुरुग्रकंडूः शीतोमहांश्चापिकफात्मकस्तु।
चिराभिवृद्धिंभजतेचिराद्वाप्रपच्यतेमंदरुजः कदाचित्।
माधुर्यमास्यस्यचतस्यजंतोर्भवेत्तथातालुगलप्रलेपः॥

अर्थ-कफकी गलगंड स्थिर, त्वचाकी रंगके समान वर्ण होय, भारी होय खुजली बहुत चले, शीतल और बडी होयहै, वह बहुत दिनमें बढे और बहुत

कालमें पके पीडा थोडी होय, मुखमें मिठास होय तथा गलेमें और तालुएमें कफ लिहसासा होय ॥

चिकित्सा।

स्वेदोपनाहौकफसंभवेपिकृत्वाक्रमंश्लेष्महरंविदध्यात् ॥

अर्थ–कफजन्य गलगंडपर शेक, पिंडी और कफनाशक उपचार करे ॥

देवदार्वादिलेप।

देवदारुविशालाचकफगंडेप्रलेपनम् ।
छर्दनंशीर्षरेकश्चसर्वोरेचानिकोहितः ॥

अर्थ–कफजन्य गलगंडपर देवदारु, इन्द्रायणकी जड इनको पीसकै लेप करे, तथा वांती मस्तक जुल्लाब इस प्रकार संपूर्णरेचक हितकारक है ॥

स्वेदजगलगंड।

स्निग्धोगुरुः पांडुरनिष्टगंधोमेदोभवः स्वल्परुजोतिकंडूः ।
प्रलंबतेलाबुवदल्पमूलोदेहानुरूपक्षयवृद्धियुक्तः ।
स्निग्धास्यतातस्यभवेच्चजंतोर्गलेनुशब्दंकुरुतेचनित्यम् ॥

अर्थ–मेदसे प्रगट गलगंड चिकना होय, भारी, पीलावर्ण, दुर्गन्धयुक्त मन्दपीडा करने वाला और अत्यन्त खुजली चले वो तुंबीफलके समान लंबा होय उस्की जड छोटी होय और देहानुरूप क्षय और वृद्धि इन्से युक्त होय अर्थात् देहके क्षीण होनेसे क्षीण होजाय, देहके बढनेसे बढजाय, उस्का मुख तेल लगा होय ऐसा चिकना होय और बोलते समय गलेसे दो शब्द निकले ॥

चिकित्सा।

मेदः समुत्थेत्रयथोपदिष्टांविधेच्छिरांस्निग्धतनोर्नरस्य ।
श्यामासुधालोहपुरीषदंतीरसांजनैश्चापिहितः प्रलेपः ॥

अर्थ–मेदज गलगंडपर प्रथम स्नेह पान करके कहीहुई शिरावेध (फस्त) करे, फिर पीपल चूना, लोहकी कीटी, जमालगोटा और रसोत इनका लेप हितकारी है ॥

असाध्यलक्षण।

कृच्छ्राच्छ्वसंतंमृदुसर्वगात्रंसंवत्सराजीतमरोचकार्तम् ।
क्षीणंचवैयोगलगंडजुष्टंभिन्नस्वरंचापिविवर्जयेत्तु ॥

अर्थ--बडे कष्टसे श्वास लेनेवाला, नरम शरीरवाला जिसके गलगंड होकर वर्षदिन व्यतीत हो गयाहो अरुचिसे पीडित क्षीण होगया होय और स्वरभेद युक्त ऐसे गलगंड पीडित मनुष्यको वैद्य त्यागदे ॥

अपचीके लक्षण ।

तेग्रंथयःकेचिदवाप्तपाकाःस्रवंतिनश्यंतिभवंतिचान्ये ।
कालानुबंधंचिरमादधातिसैवापचीतिप्रवदंतिकेचित् ॥

अर्थ--अब गंडमालाका भेद अपची है उसको कहतेहैं--पूर्वोक्त गंडमालाकी गांठ पके नहीं अथवा पाक होनेसे स्रवे कोई नष्ट होजाय दूसरी नवीन उठे ऐसी पीडा बहुत दिन रहै उसको कोई अपची ऐसे कहतेहैं ॥

असाध्यलक्षण ।

साध्यास्मृतापीनसपार्श्वशूलकासज्वरच्छर्दियुतानसाध्या ॥

अर्थ--पूर्वोक्त अपची रोग साध्यहै और उसमें पीनस होय पसवाडोंमें शूल खांसी, ज्वर, वमन ये होय तो वो अपची असाध्यहै ॥

अलंबुषास्वरस ।

अलंबुषायाःस्वरसःपीतोद्विपलमात्रया ।
अपचीगंडमालायाःकामलायाश्चनाशनः ॥

अर्थ--लजालूका स्वरस ८ तोले पीनेको देवे तो अपची गंडमाला और कामला इनको नाश करे ।

पोलिका ।

वनकार्पासिकामूलंतंदुलैःसहयोजितम् ।
पक्त्वाचपोलिकांखादेदपचीनाशनायच ॥

अर्थ--वनकपास (नादणवण) की जडको चावलोंकेसाथ पीसकै पिट्ठी करे. फिर इसकी अंगाकर बनायकै खाय तो अपचीका नाश करे ।

सौभांजनादिलेप ।

सौभांजनंदेवदारुंकांजिकेनतुपेषयेत् ।
कोष्णप्रलेपतोहन्यादपचीमतिदुस्तराम् ॥

अर्थ--सहिंजना देवदारु इनको कांजीसे पीसकै इसका मंदोष्ण लेप करे तो अति कठिन अपचीको नाश करे ॥

अश्वत्थादिभस्म।

अश्वत्थकाष्ठंनिचुलंगवांदंतंचदाहयेत्।
वराहमज्जासंयुक्तंभस्महंत्यपचिव्रणान्॥

अर्थ–पीपर आंब इनकी लकडी और गौका दांत इनको जलायकै राख करे इसको सूअरकी चर्बीसे लेप करै तो तत्काल अपचीको नाश करे॥

रेखाकरण।

मणिबंधोपरिष्टाद्वाकुर्याद्रेखात्रयंभिषक्।
अंगुलांतरितंसम्यगपचीविनिवृत्तये॥

अर्थ–वैद्यको पहुंचेपर अंगुलीके अंतरसे तीन रेखा अपचीके नाशार्थ करे॥

सर्षपादि लेप।

सर्षपारिष्टपत्राणिदंतिभल्लातकैः सह।
छागमूत्रेणसंपिष्टमपचिघ्नंप्रलेपनम्॥

अर्थ–सरसों, नीमके पत्ते, दंती, भिलाए, इन सबका समान भाग ले बकरेके मूत्रमें पीस लेप करे, यह अपचीका नाशक प्रयोग है॥

व्योषादि तैल।

व्योषंविडंगंमधुकंसैंधवंदेवदारुच।
तैलमेभिःश्रृतंनस्येत्कृच्छ्रामप्यपचींजयेत्॥

अर्थ–सोंठ, मिरच, पीपल, वायविडंग, मुलहटी, सैंधानिमक और देवदारु इन औषधोंको डालकै औटाए हुए तेलकी नस्य करनेसे बडी भारी कठिनभी अपची होय तो उसकोभी जीते॥

चंदनादि तेल।

चंदनंसाभयालाक्षावचाकटुकरोहिणी।
एतत्तैलंश्रृतंपीतंसमूलामपचींजयेत्॥

अर्थ–चंदन, हरड, लाख, वच, कुटकी, इनसे सिद्ध करे हुए तेलको पीवे, तो अपचीको समूल नाश करे॥

गंडमाला ।

गंडमालाका कर्मविपाक ।

अध्यापयतिशिष्यांस्तुयःप्रतार्यगुरुस्तथा । शिष्योगुरुं वंचयित्वायोधीतेशृणुतस्यच । जायतेगंडमालाख्योरोगस्त दुपशांतये । अभक्ष्यपानपायोवागंडमालीभवेन्नरः।कृच्छ्रत्रयं प्रकुर्वीतचांद्रायणमथापरम्।अष्टोत्तरसहस्रंतुजपेत्पुरुषसूक्तक म् । सौरमंत्रजपस्तद्वच्छक्त्याब्राह्मणभोजनम् । इति कृत्वा नरः सम्यग्गलगंडाद्विमुच्यते ॥

अर्थ–जो गुरु शिष्योंको प्रतारणा (वंचना) करके पढावे, अथवा जो शिष्य गुरुको वंचना करके पढता है, उसके गलगंड रोग होवे, अथवा जो अभक्ष भक्षण करे, अथवा मद्यादि प्राशन करे, वो गंडमाला रोगी होय उसको तीन कृच्छ्र अथवा चांद्रायण १००८ अष्टोत्तरसहस्र पुरुषसूक्तका जप, अथवा यथाशक्ति सौरमंत्रका जप, यथाशक्ति ब्राह्मणभोजन इत्यादिक उपचार करनेसे वह रोगी गंडमालासे मुक्त होवे ॥

गंडमालानिदान ।

कर्कंधुकोलामलकप्रमाणैःकक्षांसमन्यांगलवंक्षणेषु ।
मेदःकफाभ्यांचिरमंदपाकैःस्याद्गंडमालाबहुभिस्तुगंडैः ॥

अर्थ–मेद और कफ इनसे प्रगट भया कूख, कंधा नाडके पिछाडी मन्या नाडीमें गलेमें और वंक्षण (जानुमेढ्रसन्धि) इन ठिकाने छोटे बेरके बराबर बडे बेरके समान आमलेके समान ऐसी अनेक प्रकारकी गंड होतीहैं वे बहुत दिनमें हौलेर पके उनको गंडमाला कहतेहैं ॥

कषाय ।

कुलित्थंमरिचंहिंगुंसजलंगंडपाचनम् ॥

अर्थ–कुलथी, कालीमिरच, हींग इनकाकाढा गंडमालाको नाश करे ॥

लेप ।

मूलंसितायागिरिकाचमूलंमूलंविशालाभवमुग्रगंधा ।
गोमूत्रपिष्टत्रितयस्यलेपात्सोपद्रवागच्छतिगंडमाला ॥

अर्थ-सपेद कोयलकी जड, इन्द्रायणकी जड और वच इन तीनोंको गोमूत्रमें पीसकै लेपकरे तो उपद्रव सहित गंडमाला निकलजावे ॥

स्वरस।

अलंबुषायाःस्वरसःपीतोद्विपलमात्रया।
अपच्यागंडमालानांकामलायाश्चनाशनः॥

अर्थ-लजालूका स्वरस पीनेसे अपची गंडमाला कामला इन सबको दूर करे॥

ब्रह्मदंडीयोग।

ब्रह्मदंडीयमूलंतुपिवेत्तंदुलवारिणा।
स्फुटितांहंतिलेपेनगंडमालांनसंशयः॥

अर्थ-ब्रह्मदंडीकी जडको चावलोंके धोवनमें पीसकै पीवे और लेप करे तो फूटीहुई गंडमालाको नाश करे॥

आरग्वधादि नस्य और लेप।

आरग्वधशिफांपिष्ट्वासम्यक्तंदुलवारिणा।
तेननस्यप्रलेपाभ्यांगंडमालांसमुद्धरेत्॥

अर्थ-अमलतासकी जडको चावलोंके धोवनसे पीस इसकी नस्य देवे अथवा लेप करे तो गंडमालाको नाश करे।

वत्सनाभलेप।

वत्सनाभंनिंबुनीरलेपाद्गंडंविनश्यति॥

अर्थ-वत्सनाग विषको नींबूके रसमें पीसकै लेप करे तो गंडमाला नष्ट होय॥

मुंडीमूललेप।

निजद्रवेणसंपिष्टंमुंडीमूलंप्रलेपयेत्।
गंडमालाक्षयंयातितद्द्रवंचपिबेत्पलम्॥

अर्थ-गोरखमुंडीके रसमें उसी गोरखमुंडीकी जडको पीस लेप करे और चार तोले रस पीवे तो गंडमालाका क्षयहोय॥

गंडमाला फोडनेकोलेप।

जलेनपेषयेत्तुल्यंकांचनीचित्रकंवृषम्।
सप्ताहंलेपयेत्तेनसर्वजागंडमालिकाः।
स्फुटंतिनात्रसंदेहः स्फोटेलेपमिमंकुरु॥

अर्थ–कांचनीमूल, चित्रक, अडूसा, ये सब समान जलमें पीस इसका सात दिन लेप करे, तो सर्व दोषोंसे उत्पन्न हुई गंडमाला फूटजावे, इसमें संशय नहीं है, इस लेपको फोडेपरभी लेपकरे ॥

भल्लातकादिलेप।

भल्लातकासीसहुताशदंतिमूलैर्गुडस्नुग्रविदुग्धदिग्धैः।
लेपेकृतेगच्छतिगंडमालासमीरवेगादिवमेघमाला ॥

अर्थ–भिलाए, हीराकसीस, चित्रक, दंती, गुड, थूहरका दूध, आकका दूध, इनको एकत्र खरलकर लेप करनेसे गंडमाला दूर होय, जैसे वायुके वेग से मेघमाला दूर होय है ॥

गंधकादिलेप।

गंधकंसूतकंतुल्यंअर्कक्षीरंससैन्धवम्।
पिष्ट्वाचकांचनीमूलंलेपोयंगंडमालिके ॥

अर्थ–पारा, गंधक, बराबर ले और सबकी बराबर आकका दूध लेवे और कचनारकी जड इनको पीसकै सैंधा निमक मिलायके लेप करेतो गंडमाला दूर होय ॥

जेपालपत्रलेप।

पिष्ट्वाजेपालपत्राणिस्वरसेनकृतावटी।
छायाशुष्कातततोलेपाद्गंडमालांविनश्यति ॥

अर्थ–जमालगोटेके पत्तोंको पीसकै उसके स्वरसकी वडी बनाय छायामें सुखायले; इसको जलमें घिसकै लेप करे तो गंडमाला नष्ट होय ॥

अजमोदादितैल।

अजमोदाचसिंदूरंहरितालंनिशाद्वयम्।क्षारद्वयंफेनयुतंसाधकं सरलोद्भवम्।इंद्रवारुण्यपामार्गकदलीकंदकैः समैः। एभिःसा र्षपकंतैलमजामूत्रप्रयोजितम्। मृद्वग्नौपाचयेदेतत्स्नुह्यर्कक्षीर मिश्रितम्। अजमोदादिकंतैलंगंडमालांव्यपोहति। आमांवि दग्धांतुपचेत्पक्त्वाचैवविशोधयेत्। रोपणंमृदुभावंचतैलेन विनिवारयेत् ॥

अर्थ–अजमोदा, सिंदूर, हरताल दारुहलदी, हलदी, सज्जीखार, जवाखार समुद्रफेन दोनामरुआ सरल, इन्द्रायण, चिडचिड़ा, केलाका कंद, ये सब समान भाग ले सबको कूट पीस तेल मिलाय दे तथा बकरीका मूत्र, थूहरका,

दूध ये सब डालकै मंदाग्निपर पक्क करै इसको अजमोदादि तेल कहते हैं यह गंडमाला नाशक है तथा अपक्क होय तो उसको पुलटिस बाँधके पकावे और पकीहुई होतो उसका मल निकालके शुद्ध करे फिर भरके इस तैलसे मृदुता लानी चाहिये ॥

निर्गुंडयादि तेल।

निर्गुंडीस्वरसेनापिलांगलीमूलकल्कितम्।
तैलंनस्येनहंत्याशुगंडमालांसुदुस्तराम् ॥

अर्थ—निर्गुंडीकी जड़ कलयारी इनके कल्कमें तेल डालकै उसकी नस्य करे तो यह दुस्तर गंडमालाको नाश करे ॥

छुछुंदरी तैल।

छुछुंदरीविपक्कंतुक्षणात्तैलवरंघृतम्।
निंबास्वसारनिर्गुंडयाचाभ्यंगान्नाशयेन्नृणाम् ॥

अर्थ—चकचूद (छछूंदर) के मांसको तिलोंके तेलमें डालकै पकावै, फिर इस तेलको लगावे अथवा कडुबे नीमकी छाल, कनेर निर्गुंडी इन करकै सिद्ध करे घीको लगावे तो गंडमालादि रोग दूर हो ॥

गुंजादि तैल।

गुंजामूलफलैस्तैलंतोयंद्विगुणितंपचेत्।
तस्याभ्यंगेनशमयेद्गंडमालांसुदारुणाम् ॥

अर्थ—गुंजा (घुँघची) की जड़ और फल इनका दुगने काढेमें एक गुना तेल डालकै पचावे इसकी मालिस करनेसे दारुण गंडमालाका नाश होय ॥

व्योषादि गुग्गुल।

षट्पलंव्योषचूर्णंचत्रिफलाचपलत्रयम्।कांचनारत्वचश्चूर्णंयोजयेद्द्वादशंपलम्। गुग्गुलुः सर्वतुल्यः स्यात्सर्वमेकत्रकुट्टयेत्। क्षौद्रंपलशतंदेयंगुटिकांकर्षसंमिताम्।भक्षयेद्गंडमालार्तोगलग्रंथींश्चनाशयेत् ॥

अर्थ—सोंठ, मिरच, पीपल इनका चूर्ण २४ तोले हरड, बहेडा, आँवला इनका चूर्ण १२ तोले कचनारकी छाल ४८ तोले गूगल ८४ तोले इन सबको कूट एकत्र करे फिर ४०० तोले शहतमें एक २ तोलेकी गोली बनावे और एक २ करकै खाय तो गंडमाला और गलगंड इनको नाश करे ॥

कांचनार गुग्गुल।

कांचनारत्वचाग्राह्यंपलानांदशकंबुधैः। त्रिफलाषट्पलाकार्या त्रिकटुस्यात्पलत्रयम्। पलैकंवरणंकुर्यादेलात्वक्पत्रकंतथा॥ एकैकंकर्षमात्रंस्यात्सर्वाण्येकत्रचूर्णयेत्। यावच्चूर्णमिदंसर्वं-तावन्मात्रस्तुगुग्गुलुः॥ संकुट्यसर्वमेकत्रपिंडंकृत्वाचधारयेत्। गुटिकाःशाणिकाःकार्याःप्रातर्ग्राह्यायथोचिताः॥ गंडमालांजय त्युग्रामपचीमर्बुदानिच। ग्रन्थीन्व्रणांश्चगुल्मांश्चकुष्ठानिचभ गंदरम्॥ प्रदेयश्चानुपानार्थंक्काथोमुंडिनिकाभवः। क्काथःखदिर सारस्यपथ्याक्काथोष्णकंजलम्॥

अर्थ--कचनारकी छाल १० पल और हरड, बहेडा, आंवला ये तीन औषध दो२ पलले सोंठ मिरच पीपल प्रत्येक एक एक पल वरनाकी छाल १ पल और इलायची दालचीनी पत्रज ये तीन औषध एक एक कर्ष प्रमाण लेवे सब औषधोंको कूट करकै चूर्ण करे इस चूर्णके बराबर शोधी हुई गूगल पीसकै मिलाय देवे फिर इसमें चूर्णको मिलाय एक गोला बनावे उसमेंसे एक २ शाणकी गोली बनावे प्रातःकाल सोंठके काढेसे अथवा खैरसारके काढेसे अथवा हरडके काढेसे अथवा गरम जलके साथ एक एक गोली नित्य सेवन करे तो घोर दुर्धर ऐसा गंडमालाका और गंडमालाका जो भेद अपची है सो दूर होय तथा अर्बुद गांठ फोडा गोला भगंदर ये रोग दूर हो॥

गंडमालाकंडनरस।

कर्षसूतंशुद्धमस्यगंधकंत्वर्धमुत्तमम्। सार्धकर्षंताम्रभस्ममृतं किट्टंत्रिकर्षकम्। व्योषंषट्कर्षतुलितमक्षार्धंसैंधवंस्मृतम्। कांचनारत्वचश्चूर्णंपलत्रयमितंक्षिपेत्॥ पलत्रयंगुग्गुलोश्चशु द्धस्यसमुपाहरेत्। एतद्युक्त्यातुसंमेल्यसुरभीसर्पिषादृढम्॥ गंडमालाकंडनोयंरसोमाषत्रयात्मकः। भुक्तोनिहंतिगंडानिगं डमालांचदारुणाम्॥

अर्थ--शुद्धपारा १ तोला शुद्ध गंधक छः मासे तामेकी भस्म १॥ तोले मंडूर ३ तोले सोंठ २ मिरच २ पीपल २ तोलेले सैंधानिमक १ तोले कचना-रकी छालका चूर्ण १२ तोले गूगल १२ तोले इन सबको युक्तिसे मिलायकै

गौके घीसै मिलायकै तीन २ मासेकी गोली बनावे यह गंडमालाकंडनरस भक्षण करनेसै गलगंड तथा गंडमाला इनको नाश करे ॥

गंधकादिलेप ।

गंधकंटंकणंसिंधुकांचनीनवसारकम् । सौवर्चलंयवक्षारंकाचं रक्तंसुवर्चलम् । शीतंरक्तंचपाषाणंमूषकोत्थंनियोजयेत् । जेपालबीजमज्जाचसमंजंबीरपोडितम् । शस्त्रैश्छित्वाप्रदातव्यं वेष्टचमेरंडपत्रकैः । एवं त्र्यहात्स्फुटंत्येवदध्यन्नंदापयेत्ततः । गंडमालापचीग्रंथिर्बहिर्निर्यातिनान्यथा ॥

अर्थ--गंधक, सुहागा, सैंधानिमक, हलदी, नोसदर, संचरनिमक, जवाखार, सिंदूर, सज्जीखार, कपूर, खैर, पाषाणभेद, मूसाकरनीकी छाल, जमालगोटेका बीज ए समान भागले इन सबको जँभीरीनींबूके रससे खरल करे फिर शस्त्रसे टुकडे करकै बत्ती बनावे उसके ऊपर अंडके पत्ते बांध देवे इसप्रकार तीन दिन करे तथा इसके ऊपर दही भात भोजन करे तो गंडमाला अपची गांठ ये फूटकर बाहर निकल आवे यह असत्य प्रयोग नहीं है ॥

मंत्र ।

गूढंप्रसहितिरितिरीचित्रपटकभूकनागतेपापटगालापरंदशमू लवासुकालदेपालरेवंगुरुप्रसादात् ॥ ॥ इति मंत्रः ॥

निर्गुंडीस्वरसेनाथलांगलीमूलकल्कितम् ।
तैलंनस्येनहंत्याशुगंडमालांसुदुस्तराम् ॥

अर्थ–निर्गुंडीके स्वरसमें कलियारीकी जडको पीस उसको तेलमें डालकै औंटावे इस तेलकी नस्य लेनेसे दुस्तरगंडमालाको नाश करे ॥

ग्रंथी ।

ग्रंथिनिदान ।

वातादयोमांसमसृक्प्रदुष्टाः संदूष्यमेदश्चतथाशिराश्च ।
वृत्तोन्नतंविग्रथितंतुशोथंकुर्वंत्यतोग्रंथिरितिप्रदिष्टः ॥

अर्थ–अत्यन्त दुष्ट भये वातादि दोष, मांस, रुधिर और मेद उसी प्रकार शिरा (नस) इनको दुष्टकर (इस जगे दुष्टिका अर्थ वृद्धि करना चाहिये, क्षयरूप न करना चाहिये इसका कारण यह है कि,क्षीण विकारोंकी सामर्थ्य रोग

करनेकी नहीं होती है, गोल, ऊंची, गांठके समान अथवा कठिन सूजनको उत्पन्न करे उस्को ग्रन्थि (गांठ) ऐसा कहते हैं ॥

चिकित्साक्रम।

ग्रंथिष्वामेषुकुर्वीतभिषक्शोथप्रतिक्रियाम्।
पक्वानांपाट्यसंशोध्यरोपयेद्व्रणभेषजैः॥

अर्थ-यदि गांठ पकी न होय तो उसपर, शोथपर जो चिकित्सा कही है वो करे और पकगई होय तो उसको चीरा देकर शोधन करके व्रणोक्त औषधोंसे भर देवे ॥

वातजग्रंथिनिदान।

आयम्यतेवृश्चतितुद्यतेचप्रत्यस्यतेमथ्यतिभिद्यतेच।
कृष्णोगुरुर्बस्तिरिवाततश्चभिन्नः स्रवेच्चानिलजोस्रमच्छम्॥

अर्थ-बादीकी गांठ तनेकेसमान करडी मालूम हो, छीलनेके समान मालूम हो, सुई चुभनेकीसी पीडा होय, मानो गिरा चाहती है, मथनेकी पीडा होय, फोरनेकीसी पीडा होय, कालावर्ण हो, नरम हो, बस्तिके चौडी होय और उसके समान चौडी होय और उसके फूटनेसे स्वच्छ रुधिर निकले ॥

वातजग्रंथीकायत्न।

हिंस्रासरोहिण्यमृताधभार्ङ्गीस्योनाकबिल्वागुरुकृष्णगंधा।
गोमूत्रपिष्टासहतालपत्र्याग्रंथौविधेयोनिलजेप्रलेपः॥

अर्थ-वातजन्य ग्रंथीपर, जटामांसी, लालरोहेडा, गिलोय, भारंगी, टेंटू, बेलगिरी, अगर, सहिजना और मूसाकरनी इनको गोमूत्रमें पीसकै लेप करे॥

पित्तजग्रंथिनिदान।

दंदह्यतेधूम्यतिचूष्यतेचपापच्यतेप्रज्वलतीवचापि।
रक्तःसपीतोप्यथवापिपित्ताद्भिन्नःस्रवेदुष्टमतीवचास्रम्॥

अर्थ-पित्तकी गांठ आगसे भरेके समान अत्यन्त दाह करै, आँतोंसे धुआँ निकलतासा मालूमहो, चूष्यते कहिये मानो सिंगी लगायके कोई चूसेहै, खार लगानेके सदृश पका मालूम होय अग्निके समान जलीसी मालूम होय उस गांठका रंग लाल, अथवा किश्चित् पीला होय और फूटनेसे उस्मेंसे दुष्ट रुधिर बहुत निकलै ॥

पित्तजग्रंथिकायत्न ।

जलौकसःपित्तकृतेहितास्तुक्षीरोदकाभ्यांपरिषेचनंच ।
द्राक्षारसेनेक्षुरसेनचापिचूर्णंपिबेद्वापिहरीतकीनाम् ॥

अर्थ–पित्तजन्यग्रंथीमें प्रथम जोंकलगायके रुधिर निकाले फिर दूध और जल सेचनकरे, तथा द्राक्षारस अथवा ईखका रस इनमेंसे किसीके साथ हरडका चूर्ण पीवे ॥

कफजग्रंथिनिदान ।

शीतोविवर्णोल्परुजोतिकंडूःपाषाणवत्सन्नहनोपपन्नः ।
चिराभिवृद्धिश्चकफप्रकोपाद्भिन्नंस्रवेच्छुक्लघनंचपूयम् ॥

अर्थ–कफकी ग्रन्थि (गांठ) शीतल प्रकृति समान वर्ण (कोई किञ्चित् विवर्ण होय ऐसे कहते हैं) थोडी पीडाहो अत्यन्त खुजली चलै, पत्थरके समान कठिन बडी होय और चिरकालमें बढनेवाली होय, फूटनेसे उसमेंसे सपेद गाढी राध निकले ॥

कफजन्यग्रंथिकायत्न ।

मधूकजंब्वार्जुनवेतसानांत्वग्भिःप्रदेहानवचारयेच्च ।
हृतेषुदोषेषुयथानुपूर्वंग्रंथैर्भिषक्श्लेष्मसमुत्थितायाः ॥

अर्थ–महुआ जामुन, कोह, वेत इनकी छालका लेप करे तथा दोष हरण करकै फिर क्रमपूर्वक क्रियाकरे ॥

मेदजग्रंथिनिदान ।

शरीरवृद्धिक्षयवृद्धिहानिःस्निग्धोमहान्कंडुयुतोरुजश्च ।
मेदःकृतोगच्छतिचात्रभिन्नंपिण्याकसर्पिःप्रतिमंतुमेदः ॥

अर्थ-मेदकी ग्रन्थि शरीरके बढनेसे बढे और शरीरके क्षीण होनेसे क्षीण होजाय, चिकनी, बडी, खुजलीयुक्त, पीडारहित होय है और जब वह फूटजाय तब उसमेंसे तिल कल्कके समान अथवा घृतके समान मेदा निकले ॥

मेदजग्रंथिकायत्न

सिंचेच्चतैलंत्वपचारणीयंविडंगपाठारजनीविपक्वम् ।
मेदःसमुत्थेतिलकल्कदुग्धैःकृत्वोपरिष्टाद्द्विगुणंपटात्तम् ॥

अर्थ-मेदजग्रंथिपर वायविडंग पाढ़ और हलदी इनसे बनाहुआ घृतका सेचन करे अथवा दूधसे तिलका कल्क करकै उस गांठपर लगायकै ऊपरसे दोलड़ कपडा बांधे ॥

सेक।

हुताशतप्तेनमुहुःप्रमृज्याल्लोहेनधीमान्नचवृद्धिताच।
प्रलिह्यदर्व्यात्वथलाक्षयावाप्रतप्तयाश्चोतनमस्यकार्यम्॥

अर्थ–मेदज ग्रन्थीपर लोहेके टुकडेको अग्निपर गरम करके उससे रगडदेवे तो ग्रंथी नहीं बढे अथवा लाखको तपाय उसको लोहेकी कलछीमें लेकर उस लाखसे सेक करे॥

सामान्य चिकित्सा।

निपात्यवाशस्त्रमपोह्यमेदोदहेत्सुपक्वंत्त्वथवाविदार्यम्।
प्रक्षाल्यमूत्रेणतिलैःसुपिष्टैःसुवर्चलाढ्यैर्हरितालमिश्रैः॥

अर्थ–शस्त्रसे उस गांठको चीरकै मेदको कम करे अथवा उसको दागदेवे अथवा उसके पकनेपर चीरा देकर मल निकाल तिल, सोरा और हरताल इनको गोमूत्रमें पीसकै उससे धोवे॥

सामन्य उपचार।

शस्त्रेणचोत्पाट्यसुपक्वमाशुप्रक्षालयेत्पथ्यतमैःकषायैः।
संशोधनैस्तंचविशोधयेत्तुक्षारोत्तरैःक्षौद्रघृतप्रगाढैः॥

अर्थ--पकी हुई गांठको शस्त्रसे चीर मलवेको निकाल उसके घावको पथ्य कारक काढेसे धोवे तथा शोधन औषधोंमें क्षार शहत और घी डालकै धोना चाहिये॥

क्षार घृत।

ससैंधवैःक्षारघृतप्रगाढैःक्षारोत्तरैरेनमभिप्रशोध्यम्।
तैलंविदद्याद्धिकरंजगुंजावंशावलेपींगुदमूत्रसिद्धम्॥

अर्थ–सैंधानिमक क्षार धीमें इनसे युक्त अथवा क्षारयुक्त औषधोंसे और कंजा, घूंघची और बाँस तथा अवलेपी, इंगुदी इनका कल्क और गोमूत्र इनमें तेल सिद्ध करकै व्रणपर लगावे॥

शिराजग्रंथिका निदान।

व्यायामजातैरबलस्यतैस्तैराक्षिप्यवायुस्तुशिराप्रतानम्।
संकुच्यसंपीडयविशोष्यचापिग्रंथिंकरोत्युन्नतमाशुवृत्तम्॥

अर्थ--निर्बल पुरुष शरीरको परिश्रमकारक कर्म करे तब वायु कुपित होकर शिराके जालको संकुचितकर एकत्रकर और सुखायकर ऊँची गांठको शीघ्र प्रगट करे है॥

ग्रंथीका साध्यासाध्य लक्षण।

ग्रंथिः शिराजः सचकृच्छ्रसाध्योभवेद्यदिस्यात्सरुजश्चलश्च।
अरुक्सएवाप्यचलोमहांश्चमर्मोत्थितश्चापिविवर्जनीयः॥

अर्थ–वह शिरा (कहिये नसकी) गांठ कृच्छ्रसाध्य है, यदि वो पीडा युक्त तथा चंचल होय तो वह गांठ साध्य है और पीडारहित तथा निश्चल बडी और मर्म स्थानमें प्रगट भई होय तो वह असाध्य है, उसको वैद्य त्यागदे॥

पुत्रजीवकलेप।

पुत्रजीवस्यमज्जांतुजलेपिष्ट्वाप्रलेपयेत्। कालस्फोटंविषस्फोटं सद्योहन्यात्सवेदनम्। कक्षाग्रंथिंगलग्रंथिंकर्णग्रंथिंश्चनाशयेत्॥

अर्थ–जीयापोता वृक्षकी मज्जाको जलमें पीसके लेप करे तो कालस्फोट विषका फोड ये पीडायुक्त होय तोभी तत्काल नाश करे, तथा काँख, गला, कान, इन ठिकानेकी ग्रंथिको नाश करे॥

रुधिरस्राव।

सर्वेषामेवग्रंथीनांरक्तस्रावःप्रशस्यते।

अर्थ–संपूर्ण ग्रंथिरोगोंमें रुधिर निकालना उत्तम है॥

गदादिलेप।

गदार्कदुग्धतालेनजेपालेनविनाशयेत्॥

अर्थ–सब ग्रंथियोंको, कूठ, आकका दूध, हरताल जमालगोटा इनके लेप करके नाश करे॥

राजिकादिलेप।

राजिकालशुनंपेष्यंलेपोहृद्गलग्रंथिकः।

अर्थ–राई, लहसन, इनको एकत्र पीसके हृदय, गला, इन, ठिकानेकी ग्रंथिपर लेप करे॥

विष्णुक्रांतादिलेप।

विष्णुक्रांताचपेटारीकांजिकेनसुपेषिता।
कालस्फोटंहरेल्लेपादन्यग्रंथिषुकाकथा॥

अर्थ- कोयल और पेटारी, (खिरेटीका भेद है) इन दोनोंको कांजीमें पीसकै लेप करे, तो काल स्फोट (कालेफोडे) को नाशकरे, फिर अन्य ग्रंथियों- के नाशकरे इसमें क्याही कहना है॥

मूलिकादिबंध।

अभिमंत्र्यशनौसायंरवौप्रातः समाहरेत्। पेटारीमूलकंधूपै
र्धूपयित्वाथखंडयेत्। चतुर्दशगुणैःसूत्रैर्बध्वाग्रंथिंगलेस्थितम्॥

अर्थ–शनिवारके सायंकालको पेटारी रूखडीको निमंत्रण कर आवे, रविवारको प्रातःकालमें जाय धूनीदे उसकी जडको उखाडलावे, तथा चौदह पंद्रह सूतले उसको पिछाडी कहे हुए मंत्रसे अभिमंत्रित करके गलेमें बांधे॥

अर्बुद।

अर्बुदरोगका निदान और संप्राप्ति।

गात्रप्रदेशेक्वचिदेवदोषाः संमूर्च्छितामांसमसृक्प्रदूष्य।
वृत्तंस्थिरंमंदरुजंमहांतमनल्पमूलंचिरवृद्धिपाकम्।
कुर्वंतिमांसोच्छ्रयमत्यगाढंतदर्बुदंशास्त्रविदोवदंति॥

अर्थ–शरीरके किसी भागमें दुष्टभये जो दोष सो मांस रुधिरको दुष्ट कर गोल स्थिर, मंद, पीडा युक्त यह ग्रन्थिरोगसे बडी होय है, बडी जिसकी जड होय, बहुत कालमें बढने वाली तथा पकने वाली, ऐसी मांसकी गांठ उठे उस्को वैद्य अर्बुद ऐसा कहते हैं॥

अर्बुदकीसंख्या।

वातेनपित्तेनकफेनचापिरक्तेनमांसेनचमेदसाच।
तज्जायतेतस्यचलक्षणानिग्रंथेः समानानिसदाभवंति॥

अर्थ–वह अर्बुदरोग बादासे, कफसे, पित्तसे, रुधिरसे, मांससे और मेदसे, ऐसे छःप्रकारका है। उस्के लक्षण सर्वदा ग्रन्थिके सदृश होते हैं॥

चिकित्सा क्रम।

ग्रंथ्यर्बुदानांचयतोविशेषप्रदेशहत्वाकृतिदोषदूष्यैः।
ततश्चिकित्सेद्भिषगर्बुदानिविधानविद्ग्रंथिचिकित्सितेन॥

अर्थ–ग्रंथि और अर्बुद इनमें, प्रदेश, हेतु, आकृति, दोष और दूष्य इनसे इतर अपेक्षा विषशेषता नहीं है इसीसे इसपर (ग्रंथिपर) जो चिकित्सा कही हैं वही करे॥

वातार्बुदचिकित्सा।

वातार्बुदंक्षीरघृताम्लसिद्धैरुष्णैस्सतैलैरुपनाहयेत्तु।
कुर्याच्चमुख्यान्युपनाहनानिसिद्धैश्चमांसैरथवेसवारैः॥

अर्थ-वातार्बुदको दूध, घृत और खट्टे पदार्थ डालके तैलको औंटावे जब सिद्ध हो जावे तब मांस, वेसवार इन करके बनी पिंडी बाँधे ॥

प्रकारांतर।

स्वेदंविदध्यात्कुशलश्चवैद्यः शृंगेणरक्तंबहुशोहरेच्च ।
वातघ्ननिर्यूहपयोम्लभागैः सिद्धांशताह्वांत्रिवृतांपिवेद्वा ॥

अर्थ-वातार्बुद होनेसे कुशल वैद्य पसीने निकाले. अथवा तूँबीसे रुधिर निकाले तथा वातनाशक क्वाथ और दूध, खटाई इनमें शतावर अथवा निशोथ डालके सेवन करे ॥

पित्तार्बुदचिकित्सा।

स्वेदोपनाहोमृदुवस्तुपथ्याः पित्तार्बुदेक्काथविरेचनंच ।
विकृष्यसौदुंबरशाकगोजीपत्रैर्भृशंक्षौद्रयुतैः प्रलिंपेत् ॥

अर्थ-पित्तार्बुदपर स्वेद, उपनाह नम्र पदार्थ, हरड, विरेचन, इत्यादिकोंके काढे देवे इस प्रकार आकर्षण कर गूलरके फल, गोभीका शाक इनको शहतमें मिलाय निरंतर लेप करे ॥

कफार्बुदचिकित्सा।

शुद्धस्यजंतोःकफजेर्बुदेचरक्तेचसिक्तेस्रवतोर्बुदंयत् ।
मेदःकृतेमांसकृतेपिकार्यंव्रणोदितंसर्वचिकित्सितंच ॥

अर्थ-कफार्बुद,रक्तार्बुद और मांसार्बुद इनपर रुधिर निकालना और वमन तथा विरेचन इनसे शुद्ध करके फिर संपूर्ण व्रणोक्त क्रिया करे ॥

रक्तार्बुद।

दोषप्रदुष्टोरुधिरंशिरासुसंकुच्यसंपीडचततोस्यपाकम् । सा
स्रावमुन्नस्वतिमांसपिंडंमांसांकुरैराचितमाशुवृद्धम् । करोत्य
जस्रंरुधिरप्रवृद्धिमसाध्यमेतद्रुधिरात्मकंतु । रक्तक्षयोपद्रव
पीडितत्वात्पांडुर्भवेत्सोर्बुदपीडितस्तु ॥

अर्थ-दुष्ट भये दोष, नसोंमें रहे जो रुधिर उस्को संकोचकर तथा पीडित कर मांसके गोलाको प्रकटकरे वो यत्किंचित् पकनेवाला, तथा कुछ स्रावयुक्त हो और मांसांकुरसे व्याप्त और शीघ्र बढनेवाला ऐसा होयहै । उस्मेंसे रुधिर बहाकरै । यह रक्तार्बुद असाध्य है वो रक्तार्बुदपीडित रोगी रक्तक्षयके उपद्रवोंकरके पीडित होनेसे उस्का वर्ण पीला होजाय ये रक्तार्बुदके लक्षणहैं॥

चिकित्सा।

रक्तविद्रधिवच्चापिक्रियाशोणितजेर्बुदे ॥

अर्थ-रक्तजविद्रधिके समान रक्तार्बुदपर क्रिया करे ॥

शोणितार्बुदके लक्षण।

कृष्णैःस्फोटैःसरक्ताभिःपिटिकाभिर्निपीडितम्।
यस्यवास्तिरुजाचोग्राज्ञेयंतच्छोणितार्बुदम् ॥

अर्थ-जिस मनुष्यके स्याह फोड़ा और रुधिर वाली फुन्सी इन्हों करके अर्बुद निपीडित हो और तीव्र पीडाहो वह शोणितार्बुद जानना ॥

मांसार्बुद।

मुष्टिप्रहारादिभिरर्दितेंगेमांसंप्रदुष्टंजनयेद्धिशोथम्।
अवेदनंस्निग्धमनन्यवर्णमपाकमश्मोपममंप्रचाल्यम्।
प्रदुष्टमांसस्यनरस्यगाढमेतद्भवेन्मांसपरायणस्य।
मांसार्बुदंत्वेतदसाध्यमुक्तं-

अर्थ-मुक्का आदिके लगनेसे अंगमें पीडा होय, उस पीडासे दुष्ट भया मांस सो सूजन उत्पन्न करे, उस सूजनमें पीडा नहीं होय और वो चिकनी, देहके वर्ण होय, पकेनहीं, पत्थरके समान कठिन, हले नहीं, ऐसी होयहै। जिस मनुष्यका मांस बिगडजाय अथवा जो नित्य मांसको खायाकरे उस्के यह अर्बुदरोग होयहै। यह मांसार्बुद असाध्य कहाहै कोई मांसार्बुदका भेद रसोक्ती कहतेहैं॥

असाध्य लक्षण।

-साध्येष्वपीमानितुवर्जयेच्च। संप्रस्तुतंमर्मणियच्चजातं
स्रोतःसुवायच्चभवेदचाल्यम् ॥

अर्थ-साध्यमेंभी यह आगेका अर्बुद रोग वर्जित है। स्राव (झरे) और मर्म स्थानमें प्रगट भया हो अथवा नासा आदि स्रोत (मार्ग) में प्रगट भई हो और जो स्थिर होय, वो असाध्य है ॥

चिकित्सा।

मांसार्बुदेप्रकुर्वीतक्रियांसद्योव्रणोदिताम्।
त्रिफलांगुग्गुलुंचापिविशेषेणावचारयेत् ॥

अर्थ-मांसार्बुदपर सद्योव्रणके ऊपर जो क्रिया लिखीहै वो करे तथा विशेष करके त्रिफला गूगल सेवन करे ॥

वचादिगणयोग।

मांसपाकेवचाद्यस्यगणस्यविधिवत्कृतैः।
कषायचूर्णकल्कैश्चसेकोद्धूलनलेपनम्॥

अर्थ–मांसके पाक होनेपर वचादि गणका काढा चूर्ण और कल्क इनसे सेचन उद्धूलन और लेपन करे॥

अध्यर्बुदके लक्षण।

यज्जायतेन्यत्खलुपूर्वजातेज्ञेयंतदध्यर्बुदमर्बुदज्ञैः॥

अर्थ–पहिले जिस ठिकानेपर अर्बुद भया होय, उसी ठिकानेपर दूसरा अर्बुद प्रगट होय, उस्को अध्यर्बुद कहते हैं॥

द्विरर्बुदके लक्षण।

यद्वंद्वजातंयुगपत्क्रमाद्वाद्विरर्बुदंतच्चभवेदसाध्यम्॥

अर्थ–एक कालमें दो अर्बुद, अथवा एकके पिछाडी दूसरा अर्बुद क्रमसे प्रगट होय उस्को द्विरर्बुद कहते हैं॥

अर्बुद न पकनेमें कारण।

नपाकमायांतिकफाधिकाद्वामेदोवहुत्वाच्चविशेषतस्तु।
दोषस्थिरत्वाद्ग्रथनाच्चतेषांसर्वार्बुदान्येवनिसर्गतस्तु॥

अर्थ--कफ अधिक होनेसे अथवा विशेष करके मेद अधिक होनेसे तथा दोषों के स्थिर होनेसे अथवा दोषोंके ग्रन्थिरूप होनेसे सर्व प्रकारकी अर्बुद स्वभावसेही पके नहीं है॥

यवक्षारादि लेप।

लिप्त्वायवक्षारविडंगवीजंगंधोपलैःस्यान्मसृणीकृतैर्यत्।
रक्तेनमिश्रैःसरटस्यसद्यस्तदर्बुदंशाम्यतिनान्यथैतत्॥

अर्थ–जवाखार वायविडंग, गंधक और मक्खन ये पदार्थ एकत्र खरलकर करकैंटा (गिरगट) के रुधिरमें मिलायके लेप करे, तो अध्यर्बुद नाश होय अन्यथा नष्ट नहीं हो।

गंधादि लेप।

गंधशिलाविश्वौषधविडंगनागभस्मभिःसमैश्चूर्णम्।
कृकलासरक्तयुक्तंलेपात्सद्योर्बुदध्वंसि॥

अर्थ–गंधक, मनसिल, सोंठ, वायविडंग और शीशेकी भस्म इनका समान भाग चूर्ण करके करकेंटाके रुधिरमें मिलायके लेप करे, तो तत्काल अर्बुदका नाश करे ॥

उपोदिका पिंडी ।

उपोदिकाकांजिकतक्रपिष्टातयोपनाहोलवणेनसार्धम् ।
वृष्टोर्बुदानांप्रशमायकेचिद्दिनेदिनेरात्रिषुमर्मजानाम् ॥

अर्थ–मर्ममें अर्बुद होनेसे उपोदिकाको कांजी और छांछ इनमें पीसके उसमें निमक मिलायके रात्रिमें तथा दिनमें लेप करे ॥

उपोदिकादिअभ्यंग ।

उपोदिकारसाभ्यक्तास्तत्पत्रपरिवेष्टिताः ।
प्रणश्यंत्यचिरान्नृणांपिडिकार्बुदजातयः ।

अर्थ–उपोदिकाका रस निकालके उसके मालिस कर उसके पत्तेसे ढक देवे तो अर्बुद जातिकी पिडिका नष्ट होवे ॥

स्नुह्यादि सेक ।

स्नुहिगंडीरिकास्वेदःसीसकेनतथैवच ।
लवणेनाथवास्वेदःसीसकेनतथैवच ॥

अर्थ–थूहरके टुकडेसे किंवा निमकसे अथवा शीशेके चूरसे सेके तो अर्बुदका नाश होय ॥

हरिद्रादिलेप ।

हरिद्रालोध्रपत्तंगगुडधूमोमनःशिलाः । मधुप्रगाढोलेपोयंमेदोर्बुदहरःपरः ॥ एतामेवक्रियांकुर्यादशेषांशर्करार्बुदे ॥

अर्थ–हलदी, लोध, पतंग, गुड, धूआँ मनसिल ये पदार्थ एकत्र खरल कर शहतमें मिलायके लेप करे तो मेदोर्बुदका नाश करे यही सर्व क्रिया शर्करार्बुदपर करे ॥

शस्त्राग्निकर्म ।

इभांडसदृशंमेदोहृत्वाचाग्निंप्रयोजयेत् ।
जयेद्विद्रधिवत्पूर्वमर्बुदंदहनादिभिः ॥

अर्थ–हाथीके अंडेके प्रमाण मेदको निकाल दाग देवे और विद्रधिके समान दाग आदि उपचार करके अर्बुद रोगको जीते ॥

रौद्ररस।

शुद्धसूतंसमंगंधंमर्द्ययाभचतुष्टयम्। नागवल्लीदलयुतंमेघनादंपुनर्नवा। गोमूत्रपिप्पलीयुक्तंमर्द्यरुध्वापुटेल्लघु । लिहेत्क्षौद्रेरसोरौद्रोगुंजामात्रोर्बुदंजयेत् ॥

अर्थ-शुद्धपारा शुद्धगंधक इनकी कजली और पीपल इनको एकत्र कर उसको नागरवेल, चौंलाई, पुनर्नवा, गोमूत्र इनकी भावना देके लघु पुट देवे फिर इसमेंसे दो रत्ती यह रौद्ररस शहतसे देवे, तो अर्बुद रोगको दूर करे ॥

गलगंड गंडमाला अपची व ग्रंथि अर्बुद इनपरपथ्य।

छर्दिर्विरेचनंस्वेदोनस्यंधूमःशिराव्यधः । अग्निकर्मक्षारयोगाःप्रलेपोलंघनानिच ॥ विशेषाद्गलगंडेतुछिंद्याज्जिह्वातलेशिराः। कुर्याद्वामणिबंधोर्ध्वरेखास्तिस्रोंगुलांतराः॥ पुराणघृतपानंचजीर्णलोहितशालयः । यवामुद्गाःपटोलंचरक्तशिग्रुकटिल्लकम् ॥ शालिंचशाकंवेत्राग्रंरूक्षाणिचकटूनिच। दीपनानिचसर्वाणिगुग्गुलुश्चशिलाजतु ॥ गलगंडगंडमालापचिग्रंथ्यर्बुदांतरे। यथादोषंयथावस्थंपथ्यमेतत्प्रकीर्तितम् ॥

अर्थ-वमन, रेचन,पसीने, नस्य, धूम, फस्त खोलना, दागदेना, क्षारयोग, लेप, लंघन, ये पथ्य करै. तथा विशेष करकै गलगंडपर जिह्वाके नीचेकी शिरा छेदन करे अथवा पहुंचेपर एक अंगुलके अंतरपर तीन रेखाकरे पुराने घीका पिवाना, पुराने लाल चावल, यव, मूंग, परवर, लाल सहिंजना, करेला, शालिंच शाक, बेंतकी कोपल, रूखे और कडुए तथा दीपन सब पदार्थ, गूगल, शिलाजीत, विशेषकर गलगंड रोगमें जीभके नीचेकी दो नसोंका काटना अथवा मणिबन्ध अर्थात् पहुंचेके ऊपर एक अंगुलके अंतरसे तीन रेखाकरे। गलगंड गंडमाला, अपची, ग्रंथि, अर्बुद इन रोगोंसे पीडित मनुष्यको दोष तथा अवस्थाके अनुसार ये सब पथ्य कहेहैं ॥

अपथ्य।

दुग्धेक्षुविकृतीःसर्वामांसंचानूपसंभवम्।
पिष्टान्नमम्लंमधुरंगुर्वभिष्यंदिकानिच।
गलगंडगंडमालापचीग्रंथ्यर्बुदामयान्।
चिकित्सन्नगदंकारोयशोर्थीपरिवर्जयेत् ॥

अर्थ–दूध तथा ईखकी बनी हुई सब वस्तु, अनूपदेशके जीवोंका मांस पिसा हुआअन्न, खटाई, मिठाई, भारी तथा अभिष्यंदी वस्तु, गलगंड गंडमाला, अपची ग्रंथि, अर्बुद इन रोगोंकी चिकित्सा करनेवाला वैद्य जो यश चाहै तो ऊपर लिखी हुई बातोंका त्यागन करावै ॥

इति श्रीआयुर्वेदोद्धारे बृहन्निघंटुरत्नाकरे अर्बुदरोगस्य निदानचिकित्सा समाप्ता ।

श्लीपद ।

श्लीपदरोगका कर्मविपाक ।

स्वगोत्रस्याभिगमनाच्छ्लीपदीजायतेनरः ।
योन्यामसृक्स्रवतिवत्तत्रचांद्रायणंचरेत् ।
मासंपयोव्रतंचैवतस्माद्रोगात्प्रमुच्यते ॥

अर्थ–जो प्राणी अपने गोत्रकी स्त्रीसे गमन करता है उसके श्लीपद रोग होताहै तथा स्त्रीके योनिसे रुधिर गिरनेवाला रोग होय उसके शमनार्थ चांद्रायण व्रत करे, तथा एक महीने पर्यंत पयोव्रत करे तो इस रोगसे मुक्त होय।

श्लीपदरोगे प्रतिमादानम् ।

श्लीपदस्त्रिपदःकुंठःपतञ्छस्त्रधनुर्धरः ॥

अर्थ–श्लीपद रोग तीनपैर कुंठित गिराहुआ और शस्त्र तथा धनुष इनको धारण करनेवाला है इसीसे इसकी ऐसी प्रतिमा बनायकर दान करे ॥

श्लीपदनिदान ।

मेदोमांसाश्रयंशोफंपादयोःश्लीपदंवदेत् ।
स्वलिंगदेशदोषैश्चत्रेधास्याच्चकफोत्तरम् ॥

अर्थ–मेद और मांसके आश्रित हुए पाँवोंके सोजाको श्लीपद (पील पावा) कहतेहैं वह श्लीपद स्वलिंग, देश, दोष, इन्हों करके तीन प्रकारका है और कफप्रधान है ॥

प्रकारांतरेण निदान ।

यःस्वज्वरोवंक्षणजोभृशार्तिः शोथोनृणांपादगतःक्रमेण ।
तच्छ्लीपदंस्यात्करकर्णनेत्रशिश्नोष्ठनासास्वपिकेचिदाहुः ॥

अर्थ–सो सूजन प्रथम वंक्षण (रोगों) में उत्पन्न होकर धीरे धीरे पैरोंमें आवे और उसके साथ ज्वरभी होय तो इस रोगको श्लीपद कहते हैं, यह श्लीपद हाथ, कान, नेत्र, शिश्न, होंठ, नाक, इन्मेंभी होती है ऐसे कोई कहते हैं॥

चिकित्साक्रम।

लंघनालेपनैःस्वेदैरेचनैश्चप्रसेचनैः।
प्रायः श्लेष्महरैरूष्णैःश्लीपदंसमुपाचरेत्॥

अर्थ–लंघन, लेप, स्वेद, रेच, रक्तमोक्ष, इनसे और प्रायः कफनाशक गरम ऐसे उपचारोंसे श्लीपद रोगको दूर करे॥

वातजश्लीपद।

वातजंकृष्णरूक्षंचस्फुटितंतीव्रवेदनम्।
अनिमित्तरुजंतस्यबहुशोज्वरएवच॥

अर्थ–वातकी श्लीपद काली, रूखी फटी और जिस्में तीव्र पीडा होय, विना कारणके दूखे और उस्में ज्वर बहुत होय॥

वातजन्यका यत्न।

स्नेहस्वेदोपनाहांश्चश्लीपदेनिलजेभिषक्।
कृत्वागुल्फोपरिशिरांविधेत्तुचतुरंगुले॥

अर्थ–वातजन्य श्लीपदपर पसीने निकालना, पिंडी बांधना, ये उपचार करकै पैरके टकनानके ऊपर चार अंगुलपर शिरावेध करे॥

पित्तजश्लीपद।

पित्तजंपीतसंकाशंदाहज्वरयुतंमृदु॥

अर्थ–पित्तकी श्लीपद पीले रंगकी दाह और ज्वरयुक्त होय: तथा नरम होय है॥

पित्तजश्लीपदका यत्न।

गुल्फस्याधः शिरांविध्येच्श्लीपदेपित्तसंभवे।
पित्तघ्नीचाक्रियांकुर्यात्पित्तार्बुदविसर्पवत्॥

अर्थ–पैरके नीचे शिरावेध करे और पित्तार्बुद, विसर्प, इनपर जैसी पित्त नाशक क्रिया करते हैं उसी प्रकारकी पित्तनाशक क्रिया करे, तो श्लीपद नाश होय॥

पित्तजश्लीपदपर लेप।

मंजिष्ठामधुकंरास्नासहिंस्रासपुनर्नवा॥
पिष्टारनालैर्लेपोयंपित्तश्लीपदशांतये।

अर्थ-पित्तज श्लीपद शांतिके अर्थ मजीठ मुलहटी, रास्ना, जटामांसी पुनर्नवा, ये कांजीमें पीसकै लेप करे ॥

श्लैष्मिकश्लीपद।

श्लैष्मिकंस्निग्धवर्णंचश्वेतंपांडुगुरुस्थिरम्।

अर्थ-कफकी श्लीपदका वर्ण चिकना, सपेद, पीला, भारी और कठिन होय है। पैरके अँगूठाकी शिराको अच्छी रीतिसैं देखकै वेधकरे, तो श्लीपद नाश होय ॥

धत्तूरादिलेप।

धत्तूरैरंडनिर्गुंडीवर्षाभूशिग्रुसर्षपैः।
प्रलेपः श्लीपदंहंतिचिरोत्थमपिदारुणम् ॥

अर्थ-धत्तूरा, अंड, निर्गुंडी, पुनर्नवा, सहिंजना, सरसों, इनका लेप बहुत कालकी दारुण श्लीपदकोभी नष्टकरे ॥

सिद्धार्थादिलेप।

सिद्धार्थसौभांजनदेवदारुविश्वौषधैर्मूत्रकृतैःप्रलिंपेत्।
पुनर्नवानागरसर्षपाणांकल्केनवाकांजिकमिश्रितेन ॥

अर्थ-सपेदसरसों, सहिंजना देवदार, सोंठ,इनको गोमूत्रमें पीस लेप करे, अथवा पुनर्नवा, सोंठ और सरसों इनको कांजीमें पीस लेप करे तो श्लीपद अच्छी होय ॥

असाध्यलक्षण।

वल्मीकमिवसंजातंकंटकैरुपचीयते।
अब्दात्मकंमहत्तच्चवर्जनीयंविशेषतः ॥

अर्थ-सर्पकी बांबीके समान बढीभई और जिसके ऊपर कांटे होय, ऐसी एक वर्षकी होगई हो और बडी होय, उसको वैद्य त्यागदे ॥

श्लीपदमें कफकी प्रधानता।

त्रीण्यप्येतानिजानीयाच्छ्लीपदानिकफाच्छ्रयात्।
गुरुत्वंचमहत्त्वंचयस्मान्नास्तिविनाकफात् ॥

अर्थ-ये जो पूर्वोक्त तीनों श्लीपदोंमें कफकी आधिक्यताहै इस्का कारण यह है कि, भारी और महत्व ये दोनों कफके विना नहीं होते ॥

श्लीपद होनेका देश।

पुराणोदकभूयिष्ठाः सर्वर्तुषुचशीतलाः।
येदेशा स्तेषुजायंतेश्लीपदानिविशेषतः॥

अर्थ-वर्षाऋतुमें पानी अधिक वर्षे परंतु पृथ्वीमें नीचे होनेसे सूखेनहा इसीसे पुराने पानी का संचय (इकट्ठा) होय और सर्व ऋतुमें शरदी रहा करै ऐसे जे अनूप (पूरब) आदि देश उन्में यह श्लीपद रोग विशेष कर्के होयहै जांगल देशोंमें अग्निका अधिक अंश होय है यासे उन देशोंम जलको पुराणत्व नहीं होयहै और अनूपदेशमें गरमी मंद पडनेसे उष्ण ऋतुमेंभी शीतलता होय है, हाथ कान आदिमें श्लीपद रोगकी शंका होनेसे दोषोंके कोपद्वारा ज्वरकर्के श्लीपदको जानले॥

यच्छ्लेष्मलाहारविहारजातंपुंसःप्रकृत्याचकफात्मकस्य॥
सस्त्रावमत्युन्नतसर्वलिंगंसकंडुरंश्लेष्मयुतंविवर्ज्यम्॥

अर्थ-जो श्लीपद कफकारक आहार विहारसे प्रगटभया, तथा कफ प्रकृतीवाले पुरुषके कफसे प्रगटभया होय, तथा स्रावयुक्त तथा जिस दोषसें प्रगटभया होय, उस दोषके लक्षण उस्में बढगये होय, जिस्में खुजली बहुत होय, और कफयुक्त होय, सो श्लीपदरोगी वैद्यकर्के त्याज्यहै॥

वृद्धदारुचूर्ण।

वृद्धदारुकचूर्णवामूत्रसौवीरकादिभिः।
शीलितंश्लीपदंहंतिकृच्छ्रंसंवत्सरोषितम्॥

अर्थ-विधायरेका चूर्ण, गोमूत्र अथवा कांजी इनके साथ सेवनकरे तो घोर कष्टसाध्य वर्षदिनसे उपरांतका श्लीपदरोग नाश होय॥

पिप्पल्यादि चूर्ण।

पिप्पलीत्रिफलादार्वीनागरंसपुनर्नवम्। भागैर्द्विपलिकैस्तेषां
तत्समंवृद्धदारुकम्॥ कांजिकेनतुतच्चूर्णपिबेत्कर्षप्रमाणतः।
जीर्णेवापरिहीनःस्याद्भोजनंसर्वकामिकम्। श्लीपदंवातरोगांश्च
प्लीहंगुल्ममरोचकम्।अग्निंचकुरुतेघोरंभस्मकंचप्रयच्छति॥

अर्थ-पीपल, त्रिफला, दारुहलदी, सोंठ, पुनर्नवा, ये प्रत्येक आठ २ तोले तथा सबकी बराबर विधायरेका चूर्ण मिलावे यह चूर्ण १ तोले कांजीके साथ

देवे और औषध जीर्ण होनेपर जो इच्छा होय सो भोजनकरे तो श्लीपद, वात-रोग, प्लीहा, गुल्म, अरुचि, इनको नाशकरे अग्निको प्रदीप्त करे तथा घोर मस्तकरोगको नाशकरे ॥

कृष्णादि मोदक।

कृष्णाचित्रकदंतीनांकर्षमर्धपलंपलम्।
विंशतिश्चहरीतक्योगुडस्यचपलद्वयम्।
मधुनासहसंयुक्तंश्लीपदंहंतिदारुणम्॥

अर्थ-पीपल १ तोला, चित्रक २ तोले, हरड२० तोले, गुड८ तोले सबको एकत्र कर शहतके साथ चाटे तो दारुण श्लीपदको नाशकरे॥

चित्रकादि कल्क।

हितश्चलेपनेनित्यंचित्रकोदेवदारुच।
सिद्धार्थशिग्रुकल्कोवासुखोष्णोमूत्रपेषितः॥

अर्थ-चित्रक, देवदारु, अथवा सपेदसरसों और सहिजना इनका कल्क गोमूत्रमें पीस कुछ २ गरम करके लेपकरे तो श्लीपद रोग नष्ट होय॥

हरीतकी कल्क।

प्रपिबेद्वाभयाकल्कंमूत्रेणान्यतमेनच॥

अर्थ-हरडका चूर्ण गोमूत्रसे अथवा अन्य अनुपानके साथ मिलायके पीवे॥

गुडूचीयोग।

पिबेदेवंगुडूचींचनागरंभद्रदारुच॥

अर्थ-गिलोय अथवा सोंठ, तेलिया देवदारु, इनका चूर्ण गोमूत्रके साथ पीवे॥

सर्षप तैल।

पिबेत्सर्षपतैलेनश्लीपदानांनिवृत्तये॥

अर्थ-अथवा पूर्वोक्त चूर्णको सरसोंके तेलमें मिलायके पीवे, तो श्लीपद रोगकी निवृत्ति करे॥

स्वरस।

पूतीकरंजच्छदजंरसंवापिययथाबलम्।अनेनैवविधानेनपुत्रजीवकजंरसम्। प्रयुंजीतभिषक्प्राज्ञःकालसात्म्यविभागतः॥

अर्थ-विट्करंजके पत्तोंका रस अथवा जीया पोता वृक्षके पत्तोंके रसको बलाबल विचारके पीवे तो श्लीपदरोगको नाश करे॥

पलाशमूल स्वरस।

पलाशमूलस्वरसंपिबेद्वातैलेनतुल्यंसितसर्षपाणाम्।
मूत्रेणपक्त्वामरदारुविश्वंश्रीगुग्गुलुंश्लीपदिभिर्निषेव्यम्॥

अर्थ–पलास (ढाक) के जडका स्वरस और सपेद सरसोंका तैल दोनों समान भाग लेके पीवे तथा देवदारु, सोंठ, बेलफल, गूगल, इनको गोमूत्रमें पक्क करके श्लीपद रोगी खाय॥

श्लीपदपर शिरावेध।

गुल्फोपरिष्टाच्चतुरंगुलेचवातोत्तरेगुल्फतलेचपैत्तिके।
अंगुष्ठमूलेकफजेविशेषाच्छिराव्यधश्चापियथाविधानम्॥

अर्थ–वाताधिक श्लीपदपर पैरोंके टकने ऊपर चार अंगुलपर और पित्ताधिक श्लीपदपर टकनानके नीचे, चार अंगुलपर और कफजन्य श्लीपदपर अँगूठेकी जडमें शिरावेध अर्थात् फस्त खोले॥

अन्न और दंभ।

यवान्नंकूर्ममांसंचकटुतैलेनयोजयेत्।
श्लीपदानांप्रशांत्यर्थंमांसांतेदाहमग्निना॥

अर्थ--जौ, कछुएका मांस इनको सरसोंके तेलके साथ सेवन करे, तथा मांस जलने पर्यंत दाग देवे, तो श्लीपदकी शांति होय॥

एरंड तैल सेवन।

गंधर्वतैलभृष्टांहरीतकींगोजलेनयःपिबति।
श्लीपदबंधनमुक्तोभवत्यसौसप्तरात्रेण॥

अर्थ--सपेद अंडीके तेलसे हरडोंको तलके गोमूत्रके साथ जो पीवे, वह सात दिनमें श्लीपदसे छूट जावे॥

पिंडारकादि चूर्ण।

पिंडारकतरुसंभवबंधूकशिफाचसर्पिषापीता।
श्लीपदमुग्रंनियतंबद्धासूत्रेणजंघायाम्॥

अर्थ–पिंडारक वृक्षपर होनेवाला बाँदेकी जडके चूर्णको घीके साथ पीवे और उसीकी जडको सूतकी डोरीसे जांघमें बांधे तो उग्रश्लीपद रोगका नाश करे॥

ऋषिकादिमूललेप।

संपिष्टाचारनालेनऋषिकामूलवल्कलम्। प्रलेपाच्छ्लीपदंहंतिबद्धमूलमपिदृढम्॥

अर्थ-छोटे कांसकी जडकी छालको खटाईमें पीस लेप करे तो दारुण बहुत दिनकी श्लीपदको नाश करे॥

गुडूच्यादिलेप।

गुडूचीकटुकीशुंठीदेवदारुविडंगकम्। पिष्टागोमूत्रसंयुक्तंलेपंश्लीपदनाशनम्॥

अर्थ-गिलोय, कुटकी, सोंठ, देवदारु, वायविडंग इनको गोमूत्रमें पीसके लप करे तो श्लीपदका नाश होय।

धान्याम्ल।

धान्याम्लंतैलसंयुक्तंकफवातविनाशनम्। दीपनंचामदोषंचमेदःश्लीपदनाशनम्॥

अर्थ-धान्याम्ल (धानकी कांजी) और सरसोंका तेल इनको मिलायके पीवे तो कफवात, आमदोष, श्लीपद इनका नाशक तथा अग्निदीपक है॥

पाददाहपर।

पादकंडुहरंकुर्यान्नवनीतेनमाक्षिकम्। पाददाहहरंखादेत्तिलाद्विगुणवाकुचीम्। चूर्णितामधुसर्पिभ्यांकर्षमार्तिप्रशांतये॥

अर्थ-पैरोंकी खुजलीनाशक मक्खन और शहत एकत्र करके मले और पैरोंका दाह नाशक एकपट तिल तथा दुप्पट बावची एकत्र करके शहत घी इनके साथ एक तोले खाय।

मदनादिलेप।

मदनंचतथासिक्थंसामुद्रलवणंतथा। महिषीनवनीतेनसंतप्ते लेपनेहितम्। सप्ताहात्स्फटितौपादौजायेतकमलोपमौ॥

अर्थ--मैनफल, मोम, सामुद्र निमक, इनको भैंसकी माखनमें खरल कर पैरोंमें मालिस करे तो दाह शांति होय और फटे हुए पैर सात दिनमें कमलके समान हो जावें॥

सौरेश्वरघृत।

सुरसादेवकाष्टंचत्रिफलात्रिकटुर्गजा। लवणानिचसर्वाणिविडं

गान्यथचित्रकम्। चविकापिप्पलीमूलंगुग्गुलुर्हवुषावचा।यवाग्रजंसपाठंचसठ्येलंवृद्धदारुकम्। कल्कैश्चकार्षिकैरेभिर्घृतप्रस्थं विपाचयेत्।दशमूलकषायेणधान्ययूषद्रवेणच।दधिमंडसमायुक्तंप्रस्थंप्रस्थंपृथक्पृथक्। पक्वंस्वादुघृतंकल्कैःपिबेत्कर्षत्रयं-हविः। श्लीपदंकफवातोत्थंमांसरक्ताश्रितंजयेत्। मेदोश्रितोभिघातोत्थहन्यादेवनसंशयः।अपचीगलगंडानिअंत्रवृद्धिंतथार्बुदम्।नाशयेद्ग्रहणीदोषंश्वयथुंगुदजानपि। परमग्निकरंहृद्यंकोष्ठक्रिमिविनाशनम्। घृतंसौरेश्वरंनामश्लीपदंहंतिसेवितम्। जीवकेनघृतंह्येतद्रोगानीकविनाशनम्॥

अर्थ–निर्गुंडी देवदारु त्रिफला त्रिकुटा गजपीपल संपूर्ण निमक वायविडंग चित्रक चव्य पीपरामूल गूगल हाऊबेर, वच, जवाखार, पाढ, कचूर, इलायची विधायरो ये प्रत्येक तोले२भर ले चूर्ण कर घी ६४ तोले दश मूलका काढा ६४ तोले धानका मंड अथवा काढा ६४ तोले दहीका मंड६४तोले इस प्रकार सबको एकत्र कर पक्वकरे फिर तीनतोले इसमेंसे सेवन करे तो कफ वातसे उत्पन्न मांसाश्रित अथवा रक्ताश्रित मेदाश्रित किंवा अभिघातसे उत्पन्न कैसाही श्लीपद होय तो उनको नाशकरे उसी प्रकार अपची, गलगंड अंडवृद्धि अर्बुद, संग्रहणी, सूजन, बवासीर कोढ कृमिरोग इनको नाश करे तथा अग्निको बढावे और जीवक औषधके साथ सेवन करे तो सर्व रोगोंको नाशक और हृद्यहै इसको सौरेश्वरघृत कहतेहैं॥

विडंगादितैल।

विडंगंसारिवार्कैषुनागरेचित्रकेतथा।
भद्रदार्वेलकाख्येचसर्वेषुलवणेषुच।
तैलपक्वंपिबेद्वापिश्लीपदानांनिवृत्तये॥

अर्थ–वायविडंग सारिवा, आककी जड, सोंठ, चित्रक तेलियादेवदारु, इलायची, संपूर्णनिमक,इनके साथ सिद्धकरा हुआ तेल श्लीपदको निवृत्तकरे॥

श्लीपदपरपथ्य।

पुरातनाः षष्टिकशालयश्च यवाः कुलित्थालशुनंपटोलम्। वार्ताकसौभांजनकारवेल्लंपुनर्नवामूलमुपोदिकाच। एरंडतैलंसु

रभीजलंचकटूनितिक्तानिचदीपनानि। एतानिपथ्यानिभवंतिपुंसांरोगेसतिश्लीपदनामधेये॥

अर्थ—पुराने सांठी तथा शालीचावल, जौ, कुलथी लहसन, परवर, बैंगन, सहिंजना, करेला, पुनर्नवा मूली, पूतिका शाक, अंडीका तेल, गौका मूत्र, कडुए, चरपरे और दीपन पदार्थ, वातसे उत्पन्न श्लीपदमें टकनेसे ४ अंगुल पर और पित्तकेमें टकनेके नीचे तथा कफसे उत्पन्नमें अँगूठेकी जडमें विधि पूर्वक नसका वेधना ये सब श्लीपद नाम रोगमें मनुष्योंको पथ्य है॥

अपथ्य।

पिष्टान्नंदुग्धविकृतिंगुडमानूपमामिषम्। स्वाद्वम्लंपारियात्रंच सह्यविंध्यनदीजलम्। पिच्छलंगुर्वभिष्यंदिश्लीपदीपरिवर्जयेत्॥

अर्थ–पिसा अन्न, दूधकी बनी वस्तु, गुडा कच्छ देशका मांस, स्वादुरस, पारियात्र, सह्याचल तथा विंध्याचलसे निकली हुई नदियोंका जल, पिच्छिल भाग तथा अभिष्यंदी वस्तु, इन सबोंको श्लीपदका रोगी त्यागकरै॥

अंतर्विद्रधि।

अंतर्विद्रधि निदान।

पृथक्संभूयवादोषाःकुपितागुल्मरूपिणम्।
वल्मीकवत्समुन्नद्धमंतंकुर्वंतिविद्रधिम्॥

अर्थ—कुपित भये पृथक्पृथक् अथवा मिले भए दोष शरीरमें गोलाके और बांबीके समान बढी ऐसी विद्रधि उत्पन्न करेंहैं॥

उत्पन्न होनेके स्थान।

गुदेबस्तौमुखेनाभ्यांकुक्षौवंक्षणयोस्तथा। वृक्कयोःप्लीन्हि यकृतिह्हृदये क्लोम्निचाप्यथ।एषामुक्तानिलिंगानिबाह्यविद्रधिलक्षणैः। गुदेवातनिरोधस्तुबस्तौकृच्छ्राल्पमूत्रता। नाभ्यांहिक्कातथाटोपःकुक्षौमारुतकोपनम्। कटिपृष्ठग्रहस्तीव्रोवंक्षणोत्थेचाविद्रधौ। वृक्कयोःपार्श्वसंकोचःप्लीन्ह्युच्छ्वासावरोधनम्। सर्वांगप्रग्रहस्तीव्रोहृदिकंपश्चजायते। श्वासोयकृतिहिक्काचक्लोम्निपेपीयतेपयः॥

अर्थ–गुदा, बस्ती, मुख, नाभी, कूख, वंक्षण, वृक्क (कूखपिंडी)प्लीह यकृत् (कलेजा) हृदय, क्लोम (प्यासकास्थान) इन ठिकानेपर विद्रधि होय है इनके लक्षण बाह्यविद्रधिके समान जानने॥ १ गुदामें–विद्रधि होनेसे अधोवायुको रोध होय ॥२बस्तीमें–अर्थात् मूत्राशयमें होनेसे कठिनतासे थोडा२मूते। ३ नाभिमें–होनेसे हिचकी तथा पीडापूर्वक क्षोभ होय ॥ ४ कूखमें–होनेसे पवनका कोप होय ॥ ५ वंक्षणमें–होनेसे कमर और पीठका बलपूर्वक जिकड जाना होय ॥ ६ कूखके पिंडमें–होनेसे पसवाडोंके संकोच होय ॥ ७ प्लीहमें–होनेसे श्वास रुकजाय ॥ ८ हृदयमें–होनेसे सब अंग जिकड जाय और कंप होय ॥ ९ कलेजेमें–होनेसे श्वास और हिचकी होय॥ १०क्लोममें–अर्थात् पिपासा स्थानमें विद्रधि होनेसे वारंवार पानी पीनेकी इच्छा होय है॥

स्रावनिर्गम।

नाभेरुपरिजाःपक्कायांत्यूर्ध्वमितरेत्वधः।
अधःस्रुतेषुजीवेत्तुस्रुतेषूर्ध्वंनजीवति॥

अर्थ–नाभिके ऊपर जो विद्रधि होय उनके पकनेसे जो स्राव कहिये राध आदिका बहना होय वो मुखके रास्तेसे होय है और नाभिके नीचे होनेसे जो स्राव होय वो गुदाके मार्गसे होय है और नाभिसमीप होनेवाली विद्रधियोंका स्राव दोनों मार्गसे होय, जिनका स्राव नीचेके मार्ग हो वो रोगी जीवे और ऊपरके मार्ग जिस्का स्राव होय वो रोगी बचे नहीं॥

साध्यासाध्य विद्रधि।

हृन्नाभिबस्तिवर्ज्यायेत्तेषु भिन्नेषुबाह्यतः।जीवेत्कदाचित्पुरुषोने तरेषुकथं चन। साध्याविद्रधयःपंचविवर्ज्याःसान्निपातिकः। आमपक्कंविदग्धत्वंतेषांशोथवदादिशेत्॥

अर्थ–हृदय नाभि और बस्ति इन ठिकानेको छोड़कर प्रगट जो विद्रधि (अर्थात् प्लीह क्लोम इत्यादि ठिकाने) बाहर फूटनेसे कदाचित् पुरुष बच जाय और ठिकानेपर फूटनेसे नहीं बचे। पहिली पांच विद्रधि साध्य हैं, सन्निपातकी विद्रधि असाध्य है, इन विद्रधीन्को आम, पक्क और विदग्ध ये तीन अवस्था शोथ रोगके समान जाननी चाहिये॥

असाध्य लक्षण।

आध्मातंबद्धनिष्पंदंछर्दिहिक्कातृषान्वितम्।
रुजाश्वाससमायुक्तंविद्रधिर्नाशयेन्नरम्॥

अर्थ–अफरायुक्त, मूत्ररुक गया होय, हिचकी, वमन और प्यास इन्से पीडित, शूल, श्वास, इनकर्के युक्त ऐसे मनुष्यको विद्रधि रोग असाध्य है ॥

विद्रधिनिदान।

त्वग्रक्तमांसमेदांसिप्रदूष्यास्थिसमाश्रिताः। दोषाः शोथंशनैर्घोरंजनयंत्युच्छ्रिताभृशम्। महाशूलंरुजावंतंवृत्तंवाप्यथवायतम्। सविद्रधिरितिख्यातोविज्ञेयःषड्विधश्चसः। पृथग्दोषैः समस्तैश्चक्षतेनाप्यसृजातथा। षण्णामपिहितेषांतुलक्षणंसंप्रचक्षते ॥

अर्थ–अत्यन्त बढे तथा अस्थि (हड्डी) का आश्रय लेकरके रहनेवाले वातादि दोष, त्वचा, रुधिर, मांस और मेद इन्को दुष्टकर धीरे धीरे भयंकर शोथ उत्पन्न करे उस्की जड हड्डीपर्यंत पहुँचजाय,उत्पत्तिकालमें अत्यन्त पीडाकारक तथा गोल अथवा लंबा जो शोथ (सूजन) होय उस्को विद्रधि कहते हैं। पृथक् दोषोंसे ३, सन्निपातसे १, क्षत (घाव) से १, और रुधिरसे १, मिलकर छः प्रकारकी विद्रधि होयहै उन छहों विद्रधिके लक्षण कहतेहैं ॥

वरुणादिघृत।

सिद्धंवरुणादिगणेविधिनातत्कल्कपाचितंसर्पिः।
अंतर्विद्रधिमुग्रंमस्तकशूलंहुताशमांद्यंच।
गुल्मानपिपंचविधान्नाशयतीदंपयांसिवायुसखः।
एतत्प्रातःप्रपिबेद्भोजनसमयेनिशास्येपि ॥

अर्थ--वरुणादिगणोक्त औषधोंके कल्कके साथ सिद्ध करा हुआ घी अंतर्विद्रधि, मस्तक शूल, मंदाग्नि, तथा पाँच प्रकारके गुल्म, इनको नाश करे, जैसे अग्नि जलको नष्ट करे हैं इसको प्रातःकाल भोजनके समय तथा सायंकालमें सेवन करे ॥

त्रिफलादि गुग्गुलु।

त्रीणिपलानिफलत्रितयस्यद्वेतुपलेभवतोमगधायाः।
पंचपलानिभवंतिपुरस्याःस्यात्फलत्रिकगुग्गुलुयोगः ॥

अर्थ–हरड ४ तोले, बहेडा ४ तोले, आंवला ४ तोले, पीपल ८ तोले, गूगल २० तोले, इन सबको मिलायके खरल करे तो यह त्रिफला गुग्गुल अंतर्विद्रधिको नाश करे ॥

वरुणादि क्वाथ।

कासीससैंधवशिलाजतुहिंगुचूर्णैर्मिश्रीकृतोवरुणवल्कलजःक
षायः। अभ्यंतरेस्थितमपक्वमतिप्रमाणंनृणामयंहरतिविद्रधि
मुग्रशोफम्॥

अर्थ--हीराकसीस, सैंधानिमक, शिलाजीत, हींग, इनका चूर्ण करके मि-
श्रित वरनाके काढे पीवेतो भीतरसैं अपक्व बडा भारी सूजनयुक्त ऐसे विद्रधि
रोगको नाश करे॥

शिग्र्वादि क्वाथ।

शिग्रुदीप्यवरुणद्वियाभिनीकुंजराशनकृतः कषायकः।
चोलचूर्णसहितोंतरास्थितंविद्रधिंप्रशमयेदसंशयम्॥

अर्थ--सहिजना,अजमायन, वरना,दारुहलदी,हलदी पीपल,इनका काढा चो-
लका चूर्ण डालकै पीवे तो विद्रधिको नाशकरे॥

वर्षाभ्वादि क्वाथ।

वर्षाभूवरुणांघ्रिभ्यांक्वाथोविद्रधिनाशनः।

अर्थ--पुनर्नवा, वरना, इनकी जडका काढा विद्रधि नाशक है॥

पुनर्नवादिक्वाथ।

श्वेतवर्षाभुवोमूलंमूलंवरुणकस्यच।
जलेनक्वथितंपीतमपक्वंविद्रधिंजयेत्॥

अर्थ--सपेदपुनर्नवाकी जड, वरनाकी जड इनका काढा करके पीवे तो
अपक्वविद्रधिको नाश करे।

दशमूलादि क्वाथ।

दशमूलछिन्नरुहापथ्यादारुपुनर्नवा।
ज्वरविद्रधिशोफेषुशिग्रुविश्वयुताहिता॥

अर्थ--दशमूल,गिलोय, हरड, देवदारु,पुनर्नवा, सहिजना, सोंठ इनका काढा
ज्वरविद्रधि, सूजन इनपर उत्तमहै॥

वरुणादि क्वाथ।

वरुणादिगणक्वाथश्वापक्वेभ्यंतरोत्थितम्।
ऊषकादिप्रतीवापंपिबेत्संशमनायवै॥

अर्थ–वरुणादिगणका काढा ऊषकादि गणके चूर्णका प्रतिवाप करके पीवे तो अपक्क अभ्यंतर विद्रधिका नाशकरे ॥

अनंतादि पेय।

शमयतिमानतमूलंक्षौद्रयुतंतंदुलांभसापीतम्।
अंतरभूतंविद्रधिमसह्यतममाशुमनुजस्य ॥

अर्थ–पित्तपापडेकी जडको चावलोंके धोवनमें पीस शहद डालकै पीवे तो बहुत कठोर अंतर्विद्रधिको तत्काल नाश करे ॥

हरीतक्यादिचूर्ण।

हरीतकीसैंधवधातकीनांरजोघृतक्षौद्रयुतंतुशीघ्रम्।
निहंतिलीढंध्रुवमेवपुंसामंतर्भवंविद्रधिमुग्ररूपम् ॥

अर्थ–हरड, सैंधानिमक, धायके फूल, इनके चूर्ण शहत और घीके साथ भक्षण करे तो घोर अंतर्विद्रधिका निश्चय तत्काल नाश करे ॥

कज्जलीयोग।

वरुणादिकषायेणरसगंधककज्जली। भुक्त्वानिहंतिमाषैकाबा
ह्यमंतश्चविद्रधिम् ॥ अपक्वेत्वेतदुद्दिष्टंपक्वेतुव्रणवत्क्रिया ॥

अर्थ–वरुणादि क्काथमें पारे गंधककी कजली ५ रत्ती डालकै पीवे तो अंतर्विद्रधि, बाह्यविद्रधि इनका नाश करे यह अपक्कविद्रधिपर कहाहै, पक्कविद्रधिपर, व्रणपर जो यत्न करने लिखे हैं वो करे ॥

विद्रधिपर लेप।

यवगोधूममुद्गैश्चसिद्धपिष्टैःप्रलेपयेत्।
विलीयतेक्षणेनैवपक्कश्चैवहिविद्रधिः ॥

अर्थ–जौ, गेंहूं, मूंग इनके चूर्णको पकायकै देहमें लेप करे तो क्षणमात्रमें अपक्कविद्रधि पक्क होय अर्थात् पकजावे ॥

वातविद्रधिके लक्षण।

कृष्णोरुणोवाविषमोभृशमत्यर्थवेदनः।
चित्रोत्थानप्रपाकश्चविद्रधिर्वातसंभवः ॥

अर्थ–जो विद्रधि काली, लाल, विषम कहिये कदाचित् छोटी, कदाचित् मोटी हो, अत्यन्त वेदनायुक्त और उसका प्रगट होना तथा पाक ये नाना प्रकारका होय, उसको वातविद्रधि कहतेहैं ॥

व्याघ्रमूलादिलेप।

व्याघ्रमूलककल्कैस्तुवसातैलघृतान्वितैः।
सुखोष्णोबहुलोलेपःप्रयोज्योवातविद्रधौ ॥

अर्थ—लालअंडकी जडका कल्क, चर्बी अथवा तेल वा घृत इनसे युक्त करके गरम कर सुहाता सुहाता लेप करे तो वादीकीविद्रधि दूर होय ॥

शिग्रुमूलादि लेप।

स्वेदोपनाहःकर्तव्यःशिग्रुमूलसमन्वितः ॥

अर्थ—पसीने निकालने अथवा पिंडी बांधना होय तो सहिंजनेकी जड मिलायकर करे ॥

जलौकापातन।

रसालफलतुल्योयःशोफोबाह्योथचोत्तरः। पृथग्दाहरुजाना हकारकोविद्रधिःस्मृतः। जलौकापातनंशस्तंसर्वस्मिन्नेवविद्रधौ। मृदुर्विरेकोलघ्वन्नंस्वेदःपित्तोत्तरंविना ॥

अर्थ—आमके फलके समान भीतर अथवा बाहर जो सूजन उत्पन्न होय तथा दाह, पीडा, अफरा इनको करे, उसको विद्रधि ऐसा कहते हैं, इन सर्व प्रकारकी विद्रधियोंपर जोंक लगावे, मृदु जुल्लाब, हलका अन्न पसीने निकालना ये उपचार करे परंतु ये सब उपाय पित्तकी विद्रधिको त्यागकर अन्य विद्रधियोंपर करे ॥

वातविद्रधिपर क्वाथ।

पुनर्नवादारुविश्वदशमूलभवांभसा।
गुग्गुलुंरुबुतैलंवापिबेन्मारुतविद्रधौ ॥

अर्थ—पुनर्नवा, दारुहलदी, सोंठ और दशमूल इनके काढेमें गूगल अथवा अंडीका तेल डालके पियावे तो वातविद्रधिको नष्ट करे ॥

विडंगारिष्ट विद्रधिआदिपर।

विडंगंग्रंथिकंरास्नाकुटजत्वक्फलानिच। पाठैलवालुकंधात्री भागान्पंचपलान्पृथक्। अष्टद्रोणेंभसःपक्त्वाकुर्यात्द्रोणावशेषितम्। पूतेशीतेक्षिपेत्तत्रक्षौद्रंपलशतत्रयम्। धातकीविंशतिपलंत्रिजातंद्विपलंतथा।प्रियंगुकांचनाराणांसलोध्राणां

पलंपलम्। व्योषस्यचपलान्यष्टौचूर्णीकृत्यप्रदापयेत्। घृतभांडेविनिक्षिप्यमासमेकंविधारयेत्। ततः पिबेत् यथार्हंतुजयेद्विद्रधिमूर्जितम्। ऊरुस्तंभाश्मरीमेहान्प्रत्यष्ठीलाभगंदरान्। गलमालाहनुस्तंभंविडंगारिष्टसंज्ञितम्॥

अर्थ—वायविडंग, पीपरामूल, रास्ना, कूडाकी छाल, इन्द्रजौ, पाढ, एलवालुक, आँवला ये आठ औषध पाँच २ पल लेले, जब कूट करके इसको ८ द्रोण जलमें डालके औंटावे जब एक द्रोण जल रहे तब उतारके छान लेय, जब शीतल हो जावे तब ३०० पल शहत डाले और धायके फूल २० पल तथा दालचीनी, इलायची, पत्रज ये तीन औषध एक २ पल लेवे, तथा सोंठ, मिरच, पीपल इन तीन औषधोंको मिलायके आठ पल ले, इस प्रकार सब औषधोंका चूर्ण करके उसी काढेके जलमें मिलाय देवे, फिर घीके चिकने बासनमें इसको भरकै मुख बंद कर उसपर मुद्रा देकर १ महीने पर्यंत धररक्खे, पश्चात् मुद्राको खोलकै निकास लेवे इसको विडंगारिष्ट कहते हैं इसके पीनेसे विद्रधि रोग तथा ऊरुस्तंभ रोग, पथरी, प्रमेह, पेटमें ठोंडीके नीचे प्रत्यष्ठीला इस नाम करके वादीका रोग होताहै वो गलगंड, हनुस्तंभ वायु ये संपूर्ण रोग दूर होय॥

पित्तजविद्रधि निदान।

पक्वोदुंबरसंकाशः श्यावोवाज्वरदाहवान्।
क्षिप्रोत्थानप्रपाकश्चविद्रधिः पित्तसंभवः॥

अर्थ—पित्तकी विद्रधि पके गूलरके समान होय, अथवा काला वर्ण होय, ज्वर, दाह करनेवाली, उस्का प्रगट और पाक शीघ्र होय॥

सारिवादि और चंदनादि लेप।

पैत्तिकेसारिवालाजामधुकैः शर्करायुतैः।
प्रदिह्यात्क्षीरपिष्टैर्वापयस्योशीरचंदनैः॥

अर्थ—पित्तविद्रधि पर सारिवा खील, मुलहटी, मिश्री इनको दूधमें पीसके लेप करे अथवा खस, चंदन, इनको दूधमें पीसके लेप करे।

क्वाथ और लेप।

पिबेद्द्राक्षात्रिफलाक्वाथंत्रिवृत्कल्काक्षसंयुतम्।
पंचवल्कलकल्केनघृतमिश्रेणलेपनम्॥

अर्थ–पित्तविद्रधिपर त्रिफलाका काढा १ तोला निसोथका चूर्ण डालके पीवे अथवा वड़, गूलर, पाखर, जामुन, आंब, इनकी छालको पीस घी मिलायके लेप करे ।

कफजन्यविद्रधि ।

शरावसदृशःपांडुःशीतःस्निग्धोल्पवेदनः ।
चिरोत्थानप्रपाकश्चविद्रधिःकफसंभवः ॥

अर्थ–कफकी विद्रधि शराव (मट्टीके शराब) सदृश बडी होय, पीलावर्ण शीतल चिकनी, अल्पपीडा होय उस्की उत्पत्ति और पाक देरमें होयहै ।

प्रकारांतर ।

त्रिफलाशिग्रुवरुणदशमूलांभसापिबेत् ।
गुग्गुलुंमूत्रसंयुक्तंविद्रधौकफसंभवे ॥

अर्थ–हरड, बहेडा आंवला, सहिजना, वरना और दशमूल इनके काढेमें गूगल और गोमूत्र डालके पीवे तो कफविद्रधिको नाश करे ।

स्वेद ।

इष्टकासिकतालोहाश्वशकृत्तुषपांसुभिः ।
मूत्रैरुष्णैश्चसततंप्रस्वेदःश्लेष्मविद्रधौ ॥

अर्थ–ईंट, वालू, लोह, घोडेकी लीद, तुषाकी धूल, गोमूत्र इनको गरम करके बफारा देकर पसीने निकाले तो कफकी विद्रधि दूर होय ॥

पकनेपर स्राव ।

तनुपीतसिताश्चैषामास्रावाःक्रमशःस्मृताः ।

अर्थ–ये तीनप्रकार विद्रधि पकनेके अनंतर होतेहैं इन्से वातादिकोंके क्रमसे पीला और सपेद राध निकले ॥

सन्निपातविद्रधि ।

नानावर्णरुजास्रावोघंटालोविषमोमहान् ।
विषमंपच्यतेचापिविद्रधिःसान्निपातिकः ॥

अर्थ–सन्निपातकी विद्रधिमें अनेकप्रकारकी पीडा, जैसे तोद, दाह, खुजली, पीडा तथा अनेकप्रकारका स्राव (जैसे पतला, पीला, सपेद, स्राव होय) घंटाल कहिये नीचे स्थूल होय और ऊपर पतरीहो, अर्थात् अग्रभाग अतिऊंचा होय, छोटी बडी कदाचित् नहीं पके ऐसी होय ॥

अभिघातजन्य और आगंतुक विद्रधि।

तैस्तैर्भावैरभिहतेक्षतेवापथ्यकारिता। क्षतोष्मावायुविसृतः सरक्तंपित्तमीरयेत्। ज्वरस्तृष्णाचदाहश्चजायंतेतस्यदेहिनः। आगंतुर्विद्रधिर्ज्ञेयःपित्तविद्रधिलक्षणः॥

अर्थ--तिन तिन भाव कहिये लकडी, पत्थर, डेला आदिका अभिघात(चोट लगना पिचजाना इत्यादि) होनेसे, अथवा तलवार, तीर, बरछी इत्यादिक लगनेसे घाव होजानेसे, अपथ्य करनेवाले पुरुषके कुपित वायुकर्के विसृत (फैला) क्षतोष्मा (घावकी गरमी) और रुधिरसहित पित्तको कोप करै उस पुरुषके ज्वर, प्यास और दाह होय और उस्में पित्तकी विद्रधिके लक्षण मिलते होय इस्को आगंतुजविद्रधि जाननी॥

रक्तजविद्रधि।

कृष्णस्फोटावृतःश्यावस्तीव्रदाहरुजाकरः।
पित्तविद्रधिलिंगस्तुरक्तविद्रधिरुच्यते॥

अर्थ--कालेफोडोंसे व्याप्त, श्यामवर्ण, दाह, पीडा और ज्वर ये उस्में तीव्र होय, तथा पित्तकी विद्रधिके लक्षण कर्के युक्त होय, उस्को रक्तविद्रधि जानना॥

रक्तविद्रधि।

विद्रधौकुशलःकुर्याद्रक्तागंतुनिमित्तजे।
पित्तविद्रधिवनूनंक्रियान्निरवशेषयेत्॥

अर्थ--रक्तविद्रधि आगंतुनिमित्तज विद्रधि, इनपर नियमपूर्वक पित्तविद्रधिके समान सब उपचार करे॥

रक्तविद्रधिपर।

विद्रधौविधिवत्कार्यंरक्तविद्रधिभेषजम्।
वरुणादिकषायस्यपानंप्रक्षालनंहितम्॥

अर्थ--रक्तजन्य विद्रधिपर कहेहुए उपचार करके फिर वरुणादि गणका काढा करके पीवे, तथा इसी काढेसे उस रक्तविद्रधिको धोवे॥

स्तनविद्रधिनिदान।

पवनेनस्तनांशिराःसंवृताःप्राप्ययोषिताम्। सूतानांगर्भिणीनां तुसंभवःश्वयथुर्घनः।स्तनेस्त्रियःसदुग्धेवाबाह्याविद्रधिलक्षणः। नाडीनांसूक्ष्मवक्रत्वात्कन्यानांनसजायते॥

अर्थ–वातसे आच्छादित हुई स्तनोंकी नाडियां प्रसूतिका स्त्रियोंके तथा गर्भवती स्त्रियोंके स्तनोंमें घन सूजनको पैदा करदेतीहैं तिसको स्तनविद्रधि कहतेहैं यह स्तनविद्रधि दुग्धवाले स्तनोंमेंही होतीहै कन्याओंके स्तनोंकी नाडियां सूक्ष्म मुखवाली होनेसे तिनके यह स्तनविद्रधि रोग नहीं होताहै ॥

त्रिफला योग ।

पक्केषुविद्रधिषुपूयमतिस्रवत्सुनाडीषुचव्रणगदेषुभगंदरेषु । स्याद्गंडमालिषुफलत्रिकगुग्गुलुःस्यात्पथ्यंफलत्रिकघृतंलघुभोजनंच ॥

अर्थ–पक्क और अतिराध बहनेवाले विद्रधिपर, नाडीव्रण, भगंदर, गंडमाला इनमें त्रिफला, गूगल मिलायकै खाय और त्रिफला घृत तथा लघु भोजन ये पथ्य है ।

सौभांजनीय योग ।

सौभांजनस्यनिर्यासोहिंगुसैंधवसंयुतः ।
अचिराद्विद्रधिंहंतिप्रातःप्रातर्निषेवितः ॥

अर्थ–सहिंजनेका गोंद, हींग, सैंधानिमक, इनका चूर्ण नित्य प्रातःकाल सेवन करे तो विद्रधिका तत्काल नाश करे ॥

शिग्रुमूलयोग ।

शिग्रुमूलंजलेघृष्टंगरपिष्टंप्रलेपयेत् ।
तद्रसंमधुनापीत्वाहंत्यंतर्विद्रधिंनरः ॥

अर्थ–सहिंजनेकी जडको जलमें पीस उसमें शहत डालके पीवे, तथा उसी रसमें सिंगिया विषका चूर्ण घिसकै लेप करे तो अंतर्विद्रधिको नाश करे ॥

विद्रधि रोगपर पथ्य ।

आमास्थेरेचनंचैवलेपःस्वेदोस्रमोक्षणम् । जीर्णाश्यामाककलमाःकुलित्थालशुनानिच । रक्तशिग्रुश्चनिष्पावकारवेल्लंपुनर्नवा । श्रीपर्णीचित्रकंक्षौद्रंशोफोक्तानिचसर्वशः । पक्कावस्थेशस्त्रकर्मपुराणारक्तशालयः । घृतंतैलंमुद्गरसोविलेपीधन्वजोरसः । शालिशाकंचकदलीपटोलंहिमवालुकम् । चंदनंतप्तशीतांबुसर्वंचापिव्रणोदितम् । नराणांविद्रधौरोगेपथ्यापथ्यंयथामलम् । पथ्यान्येतानिसर्वाणिनिर्दिष्टानिमहर्षिभिः ॥

अर्थ–कच्चेपनकी दशामें रेचन, लेपन और रुधिर निकालना, पुराने समा, कलमी चावल, तथा कुलथी, लहसन, लाल सहिजना, रमास, करेला, सांठ, अरणी, चीता, शहद, शोथरोगमें कही हुई सब औषधी और पकनेकी दशामें चीरना, पुराने लाल चावल, घी, तेल, मूंगकारस, विलेपी मरुदेशी जीवोंका मांस, शालिंच शाक, केला, परवर, कपूर, चन्दन, तपाया शीतल जल, व्रण-रोगमें कही हुई वस्तु, मनुष्योंको विद्रधिरोगमें दोषके अनुसार पथ्यापथ्य जानिये महर्षियोंने ये सब पथ्य कहे हैं ॥

विद्रधिरोगपर अपथ्य ।

शोफिनांयान्यपथ्यानिव्रणिनामहितानिच ।
क्रमादामेचपक्वेचविद्रधौवर्जयेन्नरः ॥

अर्थ–विद्रधि रोगमें, कच्चेपनकी दशामें, शोथ रोगमें कहे हुए अपथ्य और पकेमें व्रणरोगके सब अपथ्य जानिये ॥

इति श्रीबृहन्निघंटुरत्नाकरे विद्रधिरोगनिदानचिकित्सा समाप्ता ।

व्रणशोथ ।

व्रणशोथनिदान ।

एकदेशोत्थितः शोथोव्रणानांपूर्वलक्षणम् । षड्विधःस्यात्पृथक्सर्वरक्तागंतुनिमित्तजः । शोथाः षडेतेविज्ञेयाः प्रागुक्तैः शोथलक्षणैः । विशेषः कथ्यतेतेषांपक्वापक्वविनिश्चये ॥

अर्थ–एक ठिकानेपर सूजन उत्पन्न होनेसे जाने कि, इस्के व्रण (फोडा) होगया, सो व्रणरोग पृथक् दोषोंसे ३, सन्निपातसे १, रुधिरसे १ और आगंतुज १, ऐसे मिलकर छः प्रकारके हैं इन छहों व्रणोंमें जो प्रथम सूजन होय उन्के लक्षण शोथरोग लक्षणके समान जानने । इस्में पक्व (पकना) अपक्व (नपकने) के विषयमें जो विशेषता है उस्को इसजगे कहतेहैं ॥

व्रणपाकलक्षण ।

विषमंपच्यतेवातात्पित्तोत्थश्चाचिरंचिरम् ।
कफजः पित्तवच्छोफोरक्तागंतुसमुद्भवः ॥

अर्थ–वादीसे विषमपाक होय अर्थात् कहीं पके, कहीं नहीं पके, पित्तसे बहुत जल्दीपके कफका फोडा देरमें पके और रुधिरका तथा आगंतुक फोडेका पकना पित्तके समान अर्थात् जल्दी पके है ॥

अपक्वव्रणके लक्षण।

मंदोष्णताल्पशोथत्वंकाठिन्यंत्वक्सवर्णता।
मंदवेदनताचैवशोथानामामलक्षणम्॥

अर्थ–सूजन हाथके छूनेसे थोडी गरम लगे, थोडी सूजन होय, फोडेका स्थान करा होय तथा देहके रंग समान उसका रगं होय और उस्में पीडा मंद होय ये कच्ची सूजनके लक्षण हैं॥

पच्यमानव्रणके लक्षण।

दह्यतेदहनेनेवक्षारेणेवाविपच्यते। पिपीलिकागणेनेवदश्यते छिद्यतेतथा। भिद्यतेचैवशस्त्रेणदंडेनैवचताडयते। पीडय तेपाणिनैवांतः सूचीभिरिवतुद्यते। शोषश्चोषोविवर्णः स्यादं गुल्येवावपाटयते। आसनेशयनेस्थानेशांतिवृश्चिकविद्धवत्। नगच्छेदाततः शोथोभवेदाध्मातबस्तिवत्। ज्वरस्तृष्णारु चिश्चैवपच्यमानस्यलक्षणम्॥

अर्थ–जिस समय व्रण पकनेको होय उस समय ये लक्षण होते हैं, अग्निसे भरासा फोडेका स्थान मालूम हो, खार लगानेकासा चिनमिनावै, चैंटी काटनेकीसी पीडा होय, वो दो टूक करनेके समान तथा शस्त्रसे फारनेके समान और दंड आदिके मारनेके समान तथा हाथसे मीडनेके समान तथा भीतरी सुईसे छेदनेके समान पीडा होय और उस्में अत्यंत दाह होय अग्निसे सेकनेके समान उस्में वेदना होय, उस फोडेका रंग बदल जाय, उंगलीके लगानेसे उखारनेकीसी पीडा होय, बैठनेमें सोनेमें खडे रहनेसे बीछू काटने कीसी घोर पीडा होय वो पीडा कभी शांति नहीं होय, वो सूजन फूली हुई बस्ती (मूत्रस्थान) के सदृश तनीसी होय, उस्में ज्वर प्यास और अरुचि ये लक्षण होते हैं॥

पक्वव्रणके लक्षण।

वेदनोपशमःशोथोलोहितोल्पोनचोन्नतः। प्रादुर्भावोवलीनां चतोदःकंडूर्मुहुर्मुहुः। उपद्रवाणांप्रशमोनिम्नतास्फुटनंत्वचः। बस्ताविवांबुसंचारः स्याच्छोत्थेंगुलिपीडिते। पूयस्यपीड यत्येकमंतमंतेचपीडिते। भक्ताकांक्षाभवेच्चैवशोथानांपक्व लक्षणम्॥

अर्थ-व्रण पकनेसे पीडा शान्ति हो जाय उस्की सूजन तामेके रंगकी होय और थोडी होय,ऊंची न होय, उस्में गुजलट पडे, सुई चुभानेकिसी पीडा होय, वारंवार खुजली चले पित्तदाहादि उपद्रवोंकी शांती हो, खुजानेसे उस जगे गढेला हो जाय, त्वचा फट जाय, सूजन हाथके दबानेसे जैसे बस्तीके नीचेका पानी इधर उधर होय, उसी प्रकार राध इधर उधर होय, अन्नमें इच्छाहो ॥

एक दोषसे उत्पन्न सूजन पकनेके समय तीनों दोषोंका संबंध होना।

नर्तेनिलाद्रुग्णविनानपित्तंपाकःकफंवापिविनानपूयः।
तस्माद्धिसर्वेपरिपाककालेपचंतिशोथास्त्रिभिरेवदोषैः ॥

अर्थ-वादीके बिना पीडा नहीं होय, पित्तके बिना दाह नहीं होय और कफके विना राध नहीं होय अर्थात् पकनेके समय तीनों दोषोंके मिलनेसे सब प्रकारकी सूजन पकती है। रक्तपाक लक्षण ग्रन्थान्तरोंमें कहे हैं यथा-"कफजेषुच शोथेषु गंभीरं पाकमेत्यसृक्। पक्वंस्निग्धंततः स्पष्टं यत्रस्यात्क्लिन्नशोफता। त्वक्सावर्ण्यंरुजोल्पत्वंघनस्पर्शित्वमश्मवत्। रक्तपानमितिब्रूयात्तंप्राज्ञोमुक्तसंशयः" ॥ इसका अर्थ सुगम है ॥

राध न निकालनेका परिणाम।

कक्षंसमासाद्ययथैववह्निर्वाय्वीरितःसंदहतिप्रसह्य ॥
तथैवपूयोप्यविनिस्सृतोहिमांसंशिरास्नायुचखादतीह ॥

अर्थ-फूंसके गंजमें लगी हुई आग, पवनकी सहायता पाकर जैसे वो फूंसको जलाकर खाक करदे उसी प्रकार व्रणमेंसे राध न निकालनेसे वो राध मांस, शिरा और स्नायु इनको खाय लेती है ॥

आमादिलक्षण।

आमंविदह्यमानंचसम्यक्पक्वंचलक्षणैः।
जानीयात्सभवेद्वैद्यःशेषास्तस्करवृत्तयः ॥

अर्थ-आम (कच्चा) पच्यमान और जो अच्छी रीतिसे पक गयाहो, ऐसे व्रणके लक्षण जो वैद्य जाने हैं, उसीको वैद्य जानना चाहिये बाकीके सब चोरहैं ॥

अपक्वछेदन और पक्केकी उपेक्षा करता वैद्यको दोष।

यश्छिनत्त्याममज्ञानाद्यश्चपक्वमुपेक्षते।
श्वपचाविवमंतव्यौतावनिश्चितकारिणौ ॥

अर्थ-जो अज्ञानसे कच्चे फोडेको पका समझकर फोड और जो पके

फोडेको कच्चा समझकर चीरे नहीं ये दोनों अविचारवान् वैद्य चांडालके समान जानने ॥

व्रणकाचिकित्साक्रम।

आदौविम्लापनंकुर्याद्द्वितीयमवसेचनम्। तृतीयमुपनाहंचचतुर्थीपाटनक्रिया ॥ पंचमंशोधनंकार्यंषष्ठंरोपणमुच्यते। एतेक्रमाव्रणस्योक्ताःसप्तमंवैकृतापहम् ॥

अर्थ–व्रणमें प्रथम विम्लापनक्रिया करे, फिर अवसेचन (रुधिर निकालना) तीसरे उपनाह (पिंडी बांधना) चौथे पाटन (चिरादेना) पांचवे शोधन छटे रोपण (घावको भरना) सातवे उसकी विकृति अर्थात् घावके स्थानमें गूथ होजाती उसकी चमडीको देहकी चमडीके वर्णमें मिलाय देना इस प्रकार सात क्रम जानने ॥

विम्लापन और रक्तावसेचन।

अभ्यज्यस्वेदयित्वातुवेणुनाड्याशनैःशनैः।
विम्लापनार्थंगृह्णीततैलेनांगुष्ठकेनच ॥

अर्थ–प्रथम तैलसे मालिसकर उसस्थानमें बाँसकी नली द्वारा सेककर पसीने प्रगट करे फिर अँगूठेसे तैल लगाकर धीरे २ रगडे इस कर्मको विम्लापन कहतेहैं यह व्रणरोगमें प्रथम करना चाहिये। यदि व्रणमें अत्यंत सूजन और पीडा ये विकार होवे तो प्रथम रुधिरनिकलवावे ॥

रुधिरमोक्षकोसुताध्यत्व।

रक्तावसेचनंकुर्यादादावेवविचक्षणः।
शोफेमहतिसंवृद्धेवेदनावतिवाव्रणे ॥

अर्थ–जो व्रण, लेप स्वेद, रुधिर मोक्ष और अपतर्पण इन क्रियाओंसे शमन न होवे वोभी रुधिर निकालनेसे शीघ्र नष्ट होतीहै।

प्रकारांतर।

एकतश्चक्रियाःसर्वारक्तमोक्षणमेकतः।
रक्तंहिविक्रियांयातितन्मोक्षेयातिविक्रिया ॥

अर्थ–रुधिरके बिगडनेसे फोडा फुंसी आदि रक्तविकार होतेहैं उस दुष्ट रुधिरके निकलवानेसे तत्संबंधी विकार शांति होतेहैं इसवास्ते संपूर्ण क्रियाओंमें रुधिर निकालनाही उत्तम है ॥

व्रणशोथको फोडना ।

चिरबिल्वाग्निकोदंतीचित्रकोहयमारकः ।
कपोतकंकगृध्राणांमललेपेनदारणम् ॥

अर्थ–कंजा, चित्रक, दंती, कनेर इनकी जड तथा कपोत (पिंडुकिया कबूतर) कंक (सपेद चील) गीध इनकी बीठको गरम करके लेप करे तो व्रणकी सूजन विनाही चिरादिये फूटजावे ॥

स्वर्जिकायावशूकाद्याःक्षारालेपेनदारणाः ।

अर्थ–सज्जीखार, जवाखार इत्यादि क्षारोंका लेप करनेसे व्रणको सूजन फूटजावे ॥

हेमकायास्तथालेपोव्रणेपरमदारणः ।

अर्थ–हेमकारीकालेप व्रणशोथको फोडनेमें उत्तमहै ।

शणमूलादि लेप ।

शणमूलंचशिग्रूणांफलानितिलसर्षपाः ।
सक्तवःकिण्वमतसीप्रदेहःपाचनःस्मृतः ॥

अर्थ–सन, मूली, सहिंजना, इनके फल, तिल, सरसों,सत्तु, किण्व (धान्यको भिगोकर मद्य काढनेको तयार करतेहैं वो) और अलसी इन सबको एकत्र पीसकर उसपर लेप करे तो व्रणकी सूजनको फोडदेवे ॥

दंतीमूलादिलेप ।

दंतीमूलकचित्रत्वक्स्नुह्यर्कपयसागुडैः ।
भल्लातकास्थिकाशीससैंधवैर्दारणःस्मृतः ॥

अर्थ–दंतीकी जड चित्रककी छाल थूहरकादूध आकका दूध, गुड, भिलावेंकी गुठली हीराकसीस और सैंधानिमक इनकालेप करे तो पके घावको फोड देवे ॥

हस्तिदंतादिलेप ।

हस्तिदंतंजलेघृष्टंबिंदुमात्रंप्रलेपनम् ।
अत्यंतकठिनेचापिशोफेपाचनभेदनम् ॥

अर्थ–हाथीके दाँतको पानीमें घिसकै सूजनके मुखपर एकबूंद धरे तो अत्यंत कठिन सूजनको पकायकै फोड देवे ॥

यवादिलेप।

यवगोधूमचूर्णंचसक्षारंदारणंपृथक्।
हरिद्राभस्मचूर्णाभ्यांप्रलेपोदारणः परः।
अजविट्क्षारमूज्यंचप्रलेपोव्रणदारणः॥ (?)

अर्थ–जौ, गेहूं, इनके चूनमें क्षार मिलायकै लेप करे (वा निमक डाली पुलटिस बांधे) अथवा हलदीकी राख, तथा चूना, अथवा बकरीकी लेंडीकी राख और साम्हर निमक, इन सबको एकत्र करकै इनका लेप करेतो फोडे को तत्काल फोडदेवे॥

प्रक्षालन।

ततः प्रक्षालनेक्काथः पटोलोनिंबपत्रजः। अविशुद्धेविशुद्धेतु न्यग्रोधादित्वगुद्भवः। पंचमूलोद्भयंवातेन्यग्रोधादिश्चपैत्तिके। आरग्वधादिकोयोज्यः कफजेसर्वकर्मसु॥

अर्थ–व्रणके धोनेके वास्ते पटोलपत्र और नीमके पत्ते, इनका काढा करके देवे, अथवा शुद्ध अथवा अशुद्ध व्रणके धोनेको वटादिक गणकी छालका काढा करके धोवे, वातव्रणके धोनेके वास्ते दशमूलका काढा और पित्तव्रण धोनेके वास्ते न्यग्रोधादिक और कफव्रणके धोनेके वास्ते आरग्वधादिक क्वाथ लेनी चाहिये॥

शोधनरोपण।

तिलसैंधवयष्ट्याह्वनिंबपत्रनिशायुतैः। त्रिवृन्मधुयुतैः पिष्टैः प्रलेपोव्रणशोधनः। तिलकल्कः सलवणोद्विहरिद्रात्रिवृद्घृतम्। मधुकंनिंबपत्राणिलेपः स्याद्व्रणशोधनः॥

अर्थ–तिल, सैंधानिमक, मुलहटी, नीमके पत्ते, हलदी और निसोथ, इनके चूर्णको शहतमें घोटके लेप करे तो व्रणको शोधन करे, तथा तिलोंका कल्क निमक, हलदी, दारुहलदी, निसोथ, घी, मुलहटी और नीमके पत्ते, इनको पीसकै लेप करे तो व्रणको शुद्ध करे॥

दुष्टव्रणपर लेप।

निंबकोलकपत्राणिलेपः स्याद्व्रणशोधनः। निंबपत्रातिलैः कल्कोमधुनाकृतशोधनः। निंबपत्रतिलादंतीत्रिवृत्सैंधवमाक्षिकम्। दुष्टव्रणप्रशमनोलेपः शोधनकेशरी॥

अर्थ–नीमके और बेरके पत्तोंको पीसके लेप करे, अथवा नीमके पत्ते, तिलोंका कल्क,इनको शहतके साथ लेप करे, अथवा नीमके पत्ते, तिल दंती-की जड निसोथ, सैंधानिमक और शहत इनका लेप करे तो दुष्ट व्रणका शमन होय॥

व्रणको शोधन।

अभयात्रिवृतादंतीलांगलीमधुसैंधवैः। सुषवीपत्रधत्तूरकर्णमोटकुठेरिकाः। पृथगेतेप्रलेपेनगंभीरव्रणशोधनाः॥

अर्थ–हरड, निसोथ, दंती,कलियारी, शहत, सैंधानिमक,करेलोंकेपत्ते, धतूरेके पत्ते, बबूरके और आजबलाके पत्ते, इनका पृथक् २ लेप करनेसे गंभीर व्रणको शोधन करेहै एक २ को पीस २ किसी एककाही लेप करे सबका न करे॥

निंबादि शोधन।

निंबपत्रमधुभ्यांतुयुक्तःसंशोधनःस्मृतः।
एकंवासारिवामूलंसर्वव्रणविशोधनम्॥

अर्थ–नीमके पत्ते और शहत इनका लेप व्रणको शोधन करे, अथवा एकही सारिवाकी जड संपूर्ण व्रणकी शुद्धि करेहै॥

न्यग्रोधादि शोधन।

न्यग्रोधोदुंबराश्वत्थकदंबप्लक्षवेतसाः।
करवीरार्ककटुकाकषायोरोपणेहितः॥

अर्थ–वड, गूलर, पीपल, कदंब, इमली, वेत, आक और कुटकी इनका काढा व्रणको भरनेमें बहुत उत्तमहै॥

लेप और चूर्ण।

सप्तदलदुग्धकल्कःशमयतिदुष्टव्रणंप्रलेपेन। मधुयुक्ताशरपुंखा सर्वव्रणरोपणीकथिता॥पंचवल्कलचूर्णैर्वाशुक्तिचूर्णसमायुतैः। धातकीलोध्रचूर्णैर्वानिःसाराहंतितेव्रणाः॥ (?)

अर्थ–सतोनाकी छालको दूधमें पीसके लेपकरे तो दुष्टव्रणको शमन करे किंवा शरपुंखके चूर्णको शहत मिलायकै लगावे तो सर्वव्रणको भरदेवे तथा पंचवल्कलका चूर्ण सींपका चूना धायके फूल और लोध इनके चूर्णको जलमें पीसकै फोडेपर लगावे तो व्रण भरजाय॥

निंबादि कल्क और रस।

निंबपत्रघृतक्षौद्रदार्वीमधुकसंयुताः। वर्तिस्तिलानांकल्कोवा

शोधयेद्रोपयेद्व्रणम्॥निंबशम्याकजात्यर्कसप्तपर्णाश्वमारकाः। कृमिघ्नामूत्रसंयुक्ताःसेकलेपनधावनैः। करंजारिष्टनिर्गुंडीरसो हन्याद्व्रणंकृमिन्॥

अर्थ–नीमके पत्ते, घी, शहत दारुहलदी और मुलहटी, इनके चूर्णकी बत्ती अथवा तिलोंका कल्क व्रणका शोधन करके भरदेताहै।नीम, अमलतास, चमेली, आक, सतोना, कनेर और वायविडंग इनके काढेका सेचन, लेपन धोना, इस विषयमें देवे और करंज, नींब और निर्गुंडी इनका रस व्रणके भीतरकी कृमि (कीडे) को नाशकरे॥

लशुनादि लेप और निंबपत्रादि धूप।

लशुनेनाथवादद्याल्लेपनंकृमिनाशनम्। निंबपत्रवचाहिंगुसर्पिर्लवणसैंधवैः। धूपनंकृमिरक्षोघ्नंव्रणकंडुरुजापहम्॥

अर्थ–लहसनका लेप करे तो कृमियोंका नाश होय। तथा नीमके पत्ते वच, हींग, घी, निमक और सैंधानिमक इनको एकत्र कूट पीस धूनी देवे तो कृमि, राक्षस व्रण और खुजली, इनको नाश करे॥

त्रिफलादि क्वाथ।

येक्लेदपाकस्रुतिगंधवंतोव्रणामहांतः सरुजाःसशोथाः। प्रयांतितेगुग्गुलुमिश्रितेनपीतेनशांतिंत्रिफलाजलेन॥

अर्थ–क्लेद, पाक, स्राव और गंध, इन करके युक्त तथा घोर और पीडा, सूजन इनसे व्याप्त जो व्रण उसके नाश करनेको त्रिफलेका काढेमें गूगल डालके पीवे॥

मनःशिलादि लेप।

मनःशिलासमंजिष्ठासलाक्षारजनीद्वयम्। प्रलेपःसघृतक्षौद्रस्त्वग्विशुद्धिकरःस्मृतः॥

अर्थ–मनसिल, मजीठ, लाख, हलदी, दारुहलदी इनको घी और शहदसे लेप करे तो चर्मकी शुद्धि करे अर्थात् घाव भरनेपर जो गूँथ पडजाती है उसको नहीं पडने दे॥

पारदादि मलहरघृत।

रसगंधकयोश्चूर्णंतत्समंमुर्दशंखकम्।सर्वतुल्यंतुकंपिल्लंकिंचित्तुत्थसमन्वितम्। सर्वसंमेलयेद्दत्वाघृतंसर्वचतुर्गुणम्। पिचुप्लु-

तंप्रदातव्यंदुष्टव्रणविशोधनम्। नाडीव्रणहरंचैवसर्वव्रणनिषूद-नम्। येव्रणानप्रशाम्यंतिभेषजानांशतेनच। अनेनतेप्रशा-म्यंतिसर्पिषास्वल्पकालतः॥

अर्थ-पारा गंधक इनकी कजली और कजलके समान मुरदासिंग तथा सबके बराबर कवीला तथा किंचित् लीलाथोथा इन सबको एकत्र खरल कर चौगुना घी मिलायके एकजीव करलेवे फिर इसको कपडे लगायकै फोडेपर चिपकावे तो यह घृत व्रणशोधक है तथा नाडीव्रण संपूर्ण व्रण इनको नाश करे जो घाव सैकडों औषधोंसे दूर नहीं होते वो इस मलहमसे थोडे कालमेंअच्छे होय॥

प्रकारांतर।

रसगंधकसिंदूररालकंपिल्लमुर्डकम्। तुत्थंखादिरकंचूर्णंसर्वं-घृष्टंचतुर्गुणम्। युक्त्यासंमेल्यापिचुनाव्रणेदेयंविजानता। सर्वव्रणप्रशमनंघृतमेतन्नसंशयः॥

अर्थ-पारा, गंधक, सिंदूर, रार, कवीला, मुर्दासिंग, लीलाथोथा, कत्था इन सबको एकत्र चूर्ण कर इसमें चौगुना घी डालकै मलहम बनाय ले इसको कपडेपर लगायकै घावपर रक्खे तो यह घृत अर्थात् मलहम सर्व प्रकारके व्रणोंको नाश करै॥

अयोरजादिलेप।

अयोरजाःसकासीसंत्रिफलाकुसुमानिच।
प्रलेपःकुरुतेदार्व्याःसद्यएवनवत्वचि॥

अर्थ-लोह, हीराकसीस, हरड, बहेडा आँवला, लौंग, दारुहलदी इनको नए चमडेपर लेप करे. तो देहके रंगसे नवीन चमडेके रंगको मिलायदे॥

गुग्गुलवटक।

त्रिफलाचूर्णसंयुक्तोगुग्गुलुर्वटकीकृतः।
निषेवितोविबंधघ्नोव्रणशोधनरोपणः॥

अर्थ--त्रिफलाका चूर्ण मिलायके गूगलकी गोली बनावे इसमेंसे एक एक देवे तो मलबद्धताको नाश करे. तथा व्रणको शुद्ध करके भरलावे॥

विडंगादि गुग्गुलु।

विडंगंत्रिफलाव्योषचूर्णंगुग्गुलुनासमम्। सर्पिषावटकान्कुर्यात् खादेद्वाहितभोजनः॥ दुष्टव्रणापचीमेहकुष्ठनाडीविशोधनः॥

अर्थ--वायविडंग, हरड, बहेडा, आंवला, सोंठ मिरच पीपल इन सबके बराबर गूगल लेवे सबको कूटपीस ॥

अमृतादिगुग्गुलु ।

अमृतापटोलमूलंत्रिकटुत्रिफलाकृमिघ्नानां । कृत्वासमभाग चूर्णतत्तुल्योगुग्गुलुर्योज्यः ॥ प्रतिवासरमेकैकांखादेदथाक्षपरिमाणाम् । जेतुंव्रणवातास्रंगुल्मोदरपांडुशोथादीन् ॥

अर्थ--गिलोय परवलकी जड, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आंवला, वायविडंग इनको सम भागले चूर्ण करे तथा सब चूर्णके बराबर गूगल मिलावे फिर एक२ तोलेकी गोली बनावे एक गोली नित्यप्रति भक्षण करे तो व्रण वातरक्त, गोला, उदर पांडुरोग और सूजन इनको नाश करे ॥

जात्यादिघृत ।

जातीपत्रपटोल निंबकटुकादार्वीनिशासारिवामंजिष्ठाभयतुत्थसिक्थमधुकैर्नक्ताह्वबीजैः समैः । सर्पिः सिद्धमनेनसूक्ष्मवदनामार्मिश्रिताः स्राविणोगंभीराः सरुजोव्रणाः सगतिकाः शुद्ध्यंतिरोहंतिच ॥

अर्थ–जावित्री, पटोलपत्र, नीमकीछाल, कुटकी, दारुहलदी, सारिवा, मजीठ लीलाथोथा, खपरिया, मोम, मुलहटी, कंजेके बीज, इनके काढेमें घी मिलायके सिद्ध करे और खाय तो छोटे मुखका, मर्मका, बहनेवाला, गंभीर दूखनेवाला, अंतर्गति करनेवाला ऐसा व्रणको शुद्ध करे, तथा भरलाताहै ॥

स्वर्जिकादिघृत ।

स्वर्जिकाचयवक्षारःकपिल्लंचहरेणुका । टंकणश्वेतखादिरंतुत्थंचर्णंचगोघृतैः । सर्वसमांशंसंचूर्ण्यमर्दयेत्प्रहरंदृढम् । स्वर्जिकाद्यमिदंसर्पिःसर्वव्रणहरंपरम् ॥

अर्थ–सज्जीखार, जवाखार, कवीला, रेणुकबीज, सुहागा, पपरियाकत्थ, लीलाथोथा, इन सबका चूर्णकर गौके घीसे १ प्रहर खरल करे, यह स्वर्जिकादि घृत सर्व प्रकारके व्रणोंको नाश करे तथा व्रणको भरलावे है और कृमि खुजली, इनको नाश करके चमडीको उत्तम करे ॥

लेपोपनाह ।

कटुतैलान्वितैर्लेपःसर्पनिर्मोकमस्मनिः ।
चयःशाम्यतिगंडस्यप्रकोपःस्फुटातिद्रुतम् ॥

अर्थ–सांपकी कांचली और राख इनको सरसोंके तेलमें लेप करे तो व्रणमें संचय, गंडका प्रकोप शांति होकर शीघ्र फूटजावे ॥

लेपनियम।

नरात्रौलेपनंदद्याद्दतंचपतितंतथा । नचपर्युषितंचैवशुष्यमाणंनधारयेत् ॥ शुष्माणंचाप्युपेक्षेतप्रदेहंपीडनंप्रति । नचापि मुखमालिंपेत्तेनदोषः प्रसिच्यते ॥

अर्थ–रात्रिमें लेपन करे और लगाया हुआ लेप गिर पडे तो उसको न लगावे तथा बासी औषधको न लगावे, सूखने वाला व्रणका लेप तथा लुगदी बांधने उपेक्षा करे, तथा व्रणके मुखपर लेप न करे यदि व्रणके मुखपर लेप करे तो दोषोंका सिंचन होय ॥

पाचन काल।

नप्रशाम्यतियःशोथःप्रलेपादिविधानतः ।
द्रव्याणिपाचनीयानिदद्यात्तत्रोपनाहने ॥

अर्थ–जो सूजन प्रलेपादिक करने से शांति न होय उसको पाचन करने वाली औषध बाँध कै शांति करे ॥

अथोपनाहन।

सतिलासातसीबीजादध्यम्लंसक्तुपिंडिका ।
सकिरावकुष्ठलवणाः शस्ताः स्युरुपनाहके ॥

अर्थ–तिल–अलसी–जोकेचूनकीपिंडी–खट्टादही–कूठ–निमक– ये एकत्र करके धान्य भिगोकै दारु निकालनेके वास्ते तयार करे हुए जलमें भिगोय कर पिंडी बाँधे ॥

सक्तुपिंडी।

तैलेनसर्पिषावापिद्वाभ्यांसक्तुकपिंडिका ।
सुखोष्णाशोफनाशार्थमुपनाहःप्रशस्यते ॥

अर्थ–सत्तूको तेलमें अथवा घीमें गरम कर उसको सुखोष्ण करके पिंडी बाँधे तो सूजन दूर होय ॥

पाटन।

अंतः पूयिष्ठवक्रेषुतथैवोत्संगवत्स्वपि । गतिमत्सुचरोगेषुभे-

दनंशस्तमुच्यते ॥ बालवृद्धासहक्षीणभीरुणांयोषितामपि ॥
मर्मोपरिचजातेषु पक्केशोथेचदारुणम् ॥

अर्थ-व्रणके मुखमें राध होनेसे तथा और पास राध होनेसे अथवा व्याधिके फैलनेसे उसको फोड़ देवे. बाल वृद्ध क्षीण डरपोक स्त्री और मर्म के ऊपर व्रण होनेसे तथा सूजनके पकनेपर व्रणको अवश्य फोड देना चाहिये ॥

मातुलुंगादि लेप।

मातुलुंगाग्निमंथौचसुरुदारुमहौषधम् ॥
अहिंस्राचैवरास्नाचप्रलेपोवातशोफहा ॥

अर्थ-बिजोरा, अरनी, देवदारु, सोंठ, अहिंस्रा, (ऐरावती) और रासना इनका लेप वात शोथको नाश करे ॥

कांजिक कल्क।

कल्कःकांजिकसंपिष्टः स्निग्धःशाखोटकत्वचः।
सुपर्णइवनागानांवातशोथविनाशनः ॥

अर्थ-अखरोटकी छाल कांजीमें घोटके उसका लेप करे तो वातज नित सूजनको नाश करे जैसा सर्पोंका गरुड नाश करते हैं ॥

पित्तशोथ चिकित्सा।

दूर्वाचनलमूलंचमधुकंचंदनंतथा।
शीतलैश्चगणैःसर्वैःप्रलेपोपित्तशोफजित् ॥

अर्थ-दूब नरसलकी जड, मुलहटी, चंदन और संपूर्ण शीतल औषधों का गण, इनका लेप करे तो पित्तजनित सूजनका नाश होय ॥

अजगंधादि लेप।

अजगंधाश्वगंधाचकालासरलयासह ॥
कंपिल्लकाचशृंगीचप्रलेपःश्लेष्म शोथहा ॥

अर्थ-वनतुलसी, असगंध, कालीनिसोथ, सपेदनिसोथ, कवीला और काकडासिंगी इनका लेप कफात्मकसूजनको नाश करे ॥

कृष्णादिलेप।

कृष्णापुराणपिण्याकशिग्रुत्वक्सीकताशिवा।
मूत्रपिष्टःसुखोष्णोयंलेपःश्श्लेष्मशोथजित् ॥

अर्थ-पीपल, पुरानीखल, सहिंजनेकी छाल, खांड, हरड, इनको गोमूत्रमें पीसके गरम करके सुहाता २ लेप करे यह कफजनितसूजनको नाश करे ॥

न्यग्रोधादिलेप।

न्यग्रोधोदुम्बरोश्वत्थप्लक्षवेतसशेलुभिः ॥ चंदनद्वयमंजिष्ठायष्टीसुरण गैरिकैः ॥ शतधौतघृतोन्मिश्रैर्लेपोरक्तप्रसादनः ॥ दाहपाकरुजास्रावशोफानिर्वापणंपरः ॥ आंगतुजेरक्तजेचएषलेपोतिपूजितः ॥

अर्थ-वड, गूलर, पीपल,इमली, वेत, लिसोरा, सपेदचन्दन, लालचन्दन, मजीठ, मुलहटी, सूरन, (जमीकन्द) गेरू इनका चूर्ण करकै सौबार धुलेहुए घीमें मिलायकै घोटे इसका लेप करे तो रुधिर को शुद्धि करे और दाह,पाक पीडा, स्राव और सूजन इनको नाश करे तथा यह लेप आगन्तुक व्रण तथा रक्तजव्रण इनपर उत्तम है ॥

व्रणरोग।

व्रणरोग का कर्मविपाक।

जात्युत्तमस्त्रीगमनाज्जायतेमस्तकव्रणी।
तत्पातकविशुध्यर्थंप्राजापत्यंव्रतंचरेत् ॥

अर्थ-उत्तम जातिकी स्त्री से हीन वर्णका पुरुष गमन करे वो मस्तक व्रणी होता है उसको इस पापके दूर करनेको प्राजापत्य व्रत करना चाहिये॥

कर्मकालेकुक्कुटंचखरादीन्वायईक्षते । सनासिकाव्रणीचस्याद्रार्द्रनेत्रश्चजायते॥उद्यन्नद्येत्यृचाचाज्यंजुहुयादयुतंचरुम् ।श्रीसूक्तंचजपेद्रक्षांदूर्वाक्षतविमिश्रिताम्॥शिखायांचनिबध्नीयात् शिवसंकल्पमंत्रितम् ॥

अर्थ-स्नान संध्यादिक पुण्य कर्म करते समय मुरगा, गधा, चांडालादिक इनको बुद्धिपूर्वक देखे जिसके नासिका व्रण होय है तथा नेत्रोंसे जल गिरा करे उस की शांति यह है कि "उद्यन्नद्येति" इस ऋचासे घृत और चरुका होम दशहजार करे तथा श्रीसूक्तका जप व्याधिके तारतम्यानुसार करे, तथा शिखा (चुटिया) में दूब और अक्षतयुक्त भस्म शिवसंकल्पमंत्रसे रक्षार्थ बाँधे ॥

व्रणनिदान।

द्विधाव्रणःपरिज्ञेयःशारीरागंतुभेदतः।
दोषैराद्यस्तयोरन्यःशस्त्रादिक्षतसंभवः॥

अर्थ--शरीर और आगंतुक इन भेदोंसे व्रण दो प्रकार का है; पहिला शरीर दोषोंके कोपसे होय है और दूसरा शस्त्रादिक करके घावके होनेसे होय है॥

वातिक व्रण।

स्तब्धःकठिनसंस्पर्शोमंदस्रावोमहारुजः।
तुद्यतेस्फुरतिश्यावोव्रणोमारुतसंभवः॥

अर्थ--वादीसे प्रगट व्रणमें जिकड़ना, तथा हाथके छूनेसे कठिन मालूम होय, उसमेंसे थोडा स्राव होय तथा पीडा बहुत होय तथा सुईके चुभाने कीसी पीडा होय और उसका रंग काला होय॥

पैत्तिकव्रण।

तृष्णामोहज्वरक्लेददाहदुष्टयवदारुणैः।
व्रणंपित्तकृतंविद्याद्गंधैःस्रावैश्चपूतिकैः॥

अर्थ--प्यास, मोह, ज्वर, क्लेद, दाह, सडना, चिरासा होय, बास आवै, स्राव होय ये पित्तव्रणके लक्षण हैं॥

कफजन्यव्रण।

बहुपिच्छोगुरुःस्निग्धःस्तिमितोमंदवेदनः॥
पांडुवर्णोल्पसंक्लेदीचिरपाकीकफोद्भवः॥

अर्थ--कफका स्राव अत्यंत गाढा, भारी, चिकना, निश्चल, मन्द, पीडा, पीलारंग, थोडा स्रवने वाला और बहुत कालमें पके॥

रक्तज व द्वंद्वजव्रण।

रक्तोरक्तस्रुतीरक्ताद्वित्रिजः स्यात्तदन्वयैः।

अर्थ--जो रक्तके कोपसे व्रण होय वो रक्तवर्ण, उसमेंसे रुधिर स्रवे, एक दोष और रुधिरके संबंधसे जो होय वो द्वन्द्व अथवा दो दोष तथा रुधिर इनके मिलनेसे सन्निपातका व्रण जानना॥

सुखव्रणनिदान।

त्वङ्मांसजःसुखेदेशेतरुणस्यानुपद्रुतः।
धीमतोभिनवःकालेसुखंसाध्यःसुखव्रणः॥

अर्थ-जो व्रण त्वचा और मांस तथा मर्मरहित स्थानमें उपद्रव रहित होय और जो तरुण तथा ज्ञानी पुरुषके हेमंत शिशिर कालमें प्रगट होय, उसको सुखव्रण कहते हैं वो सुखसाध्य है ॥

कृच्छ्रसाध्य और असाध्य।

गुणैरन्यतमैर्हीनःस्ततःकृच्छ्रोव्रणःस्मृतः।
सर्वैर्विहीनोविज्ञेयःसोसाध्योनिरुपक्रमः ॥

अर्थ-जो पूर्व श्लोकमें लक्षण कह आये उनमेंसे कुछ लक्षण थोडे होनेसे व्रण कृच्छ्रसाध्य होय है और गुण रहित होय वो असाध्य है, उसकी चिकित्सा न करनी चाहिये ॥

दुष्टव्रण।

पूतिपूयातिदुष्टासृक्स्राव्यूत्संगीचिरस्थितिः।
दुष्टव्रणोतिगंधादिःशुद्धलिंगविपर्ययः ॥

अर्थ-जिसमेंसे दुर्गन्ध युक्त राध और सडा भया रुधिर बहे जो ऊपर ऊंचा तथा भीतरसे पीला होय, बहुत दिन रहनेवाला होय, उसको दुष्टव्रण कहते हैं वो शुद्ध लिंगके विपरीत होय है ॥

शुद्ध व्रणके लक्षण।

जिह्वातलाभोतिमृदुःश्लक्ष्णःस्निग्धोल्पवेदनः।
सुव्यवस्थोनिरास्रावःशुद्धोव्रणइतिस्मृतः ॥

अर्थ-जो व्रण जीभके नीचे भागके समान अत्यंत नरम होय, स्वच्छ, चिकना, थोडी पीडा युत, भले प्रकारका कहिये ऊंचा आदि जो दुष्ट व्रणादिकमें लक्षण कहे वो न होय, दोष रक्तादि स्रावरहित होय उस्को शुद्धव्रण जानना ॥

भरनेवाले व्रणके लक्षण।

कपोतवर्णप्रतिमायस्यांताःक्लेदवर्जिताः।
स्थिराश्चपिटिकावंतोरोहतीतितमादिशेत् ॥

अर्थ-जिस्का घाव कबूतरके रंग सदृश होय और जिस्में क्लेदन बहता होय और घाव स्थिरहो, जिस्में फूंसीसी मालूम हो, उस्को वैद्य जाने कि, यह व्रण (घाव) स्थिर भरनेवाला है ॥

भरेहुए व्रणके लक्षण।

रूढवर्त्मानमग्रंथिमशूनमरुजंव्रणम्।
त्वक्सवर्णसमतलंसम्यक्रूढंतमादिशेत् ॥

अर्थ–जिसका मार्ग भरगया होय, गाँठबँधी होय,सूजन और पीडा जिस्में होय नहीं, त्वचाके समान वर्ण होगया हो, घावका गढेला भरकर बराबर होगयाहो, वो व्रण उत्तम भरा जानना ॥

व्याधिविशेष करके व्रणको कृच्छ्रसाध्यत्व।

कुष्ठिनांविषजुष्टानांशोषिणांमधुमेहिनाम्।
व्रणाःकृच्छ्रेणसिद्ध्यंतियेषांचापिव्रणेव्रणाः॥

अर्थ–कोढी पुरुष, विषवाला पुरुष, क्षयीरोग वाला, मधुमेही पुरुष,ऐसेन्का व्रण बडे कष्टसे साध्य होय है। और जिस्के पहिले व्रणमें व्रण प्रगट होय, उस्के ये व्रण कष्टसाध्य होय है॥

साध्यासाध्य लक्षण।

वसामेदोथमज्जानंमस्तुलुंगंचयःस्त्रवेत्।
आगंतुजोव्रणःसिद्ध्येन्नसिद्ध्येद्दोषसंभवः॥

अर्थ–जिस व्रणमें से चर्बी, मेद, मज्जा और बस्तिस्नेह ये बहें वो व्रण आगंतुज होय तो साध्य है और दोषकृत होय तो साध्य नहीं होये ॥

असाध्य व्रण।

मद्यागुर्वाज्यसुमनःपद्मचंदनचंपकैः।
सुगंधादिव्यगंधाश्चमुमूर्षूणांव्रणाःस्मृताः॥

अर्थ–मद्य, अगर, घृत, फूल कमल, चन्द्रन और चंपाके फूलके समान अथवा चमत्कारी, पारिजाति आदि फूलकीसीगन्ध जिस व्रणमें से आवै वो व्रण मरने वाले रोगी के जानना ॥

प्रकारांतर।

येचमर्मस्वसंभूताभवंत्यत्यर्थवेदनाः। दह्यंतेचांतरत्यर्थंबहिः शीताश्चयेव्रणाः॥ दह्यंतेबाहिरत्यर्थंभवंत्यंतश्चशीतलाः। प्राणमांसक्षयंश्वासकासारोचकपीडिताः।प्रवृद्धपूयरुधिराव्रणाये-षांचमर्मसु॥ क्रियाभिः सम्यगारब्धानसिद्ध्यंतिचयेव्रणाः। वर्जयेदेवतान्वैद्यः संरक्ष्यन्नात्मनोयशः॥

अर्थ–जे व्रण मर्मस्थानमें प्रगट भये होय और उन्में अत्यन्त पीडा होय वे तथा जिस जिस व्रणके भीतर दाह होय और बाहर शीतल होय वे अथवा बाहर दाह होय और भीतर शीतलता होय वे तथा जिन्में बल, मांस, इन्का

क्षय होय, श्वास, खांसी, अरुचि, इन्से अत्यंत पीडित होय, ऐसे अथवा जे व्रण मर्मस्थानमें प्रगट भये हों उन्में से राध, रुधिर बहुत बहे वे अथवा जिन व्रणोंकी अच्छी चिकित्सा करनेसे भी अच्छे न होय ऐसे व्रणोंका अपने यशकी रक्षा करने वाला वैद्य त्यांग दे ॥

व्रणमें अपचार ।

व्रणोश्वयथुरायासात्सचरागश्चजागरात् ।
तौचरुक्च दिवास्वापात्ताश्चमृत्युश्चमैथुनात् ॥

अर्थ–परिश्रम करनेसे व्रणमें सूजन होती है और जागनेसे ललोंही होतीहै और दिनमें सोनेसे सूजनपर लाली आयकर पीडा होती है और मैथुन करनेसे सूजन लाली पीडा होकर मृत्यु होय ॥

व्रणरोगमें सामान्यचिकित्सा ।

अम्लंदधिचशाकंचमांसमानूपवारिजम् ।
जीरंगुरुणिचान्नानिव्रणिनः परिवर्जयेत् ॥

अर्थ–खट्टादही--साग–अनूपदेशके तथा जलमें रहने वाले प्राणियोंका मांस जीरा और भारी अन्न ये पदार्थ व्रणरोग वालेको त्याग देने चाहिये ॥

वातव्रण चिकित्सा ।

मातुलुंगाग्निमंथौचसुरदारुक्महौषधम् ।
अहिंस्राचैवरास्नाचप्रलेपोवातशोफहा ॥

अर्थ--विजोरेकी जड--अरनी--देवदारु–सोंठ--नागफनी--थूहर और रास्ना-इनका लेप करे तो वातसंबंधी सूजनको नाश करे ॥

रक्त स्राव ।

हरत्यष्टांगुलंतुंबीशृंगंचद्वादशांगुलम् ।
शिरासर्वांगजंरक्तंजलौकाचतुरंगुलम् ॥

अर्थ–तुंबी आठ अंगुल पर्यंतके रुधिरको निकाले है सिंगी बारह अंगुलके रुधिरको और शिरावेध (फस्त खोलना) सर्वांगके रुधिरको और जोख चार अंगुलके रुधिरको निकाले है ॥

गंभीरव्रणपर लेप ।

अभयात्रिवृतादंतलिंगिलीमधुसैंधवैः । सुषवीपत्रधत्तूरकर्ण-
मोटकुठेरिकाः । पृथगेतेप्रलेपेनगंभीरव्रणशोषणाः ॥

अर्थ-हरड, निसोथ, दंती, मजीठ, सहत, सैंधानिमक, कलौंजी, तालीसे पत्र, धतूरा, बबूर और कठेरक इनका लेप करे तो ये पृथक् २ व्रणको शोषण करने वाले हैं ॥

निंबादि लेप।

निंबपत्रंतिलादंतीत्रिबृत्सैन्धवमाक्षिकम्।
दुष्टव्रणप्रशमनोलेपःशोधनकेसरी ॥

अर्थ-नींबके पत्ते, तिल, दंती, निसोथ, सैंधानिमक, सहत इनका लेप दुष्ट व्रणको नाशक और शोधन विषयमें सिंह है ॥

मनःशिलादि लेप।

मनःशिलासमंजिष्टासक्षाराररजनीद्वयम्।
प्रलेपःसघृतक्षौद्रस्त्वग्विशुद्धिकरःस्मृतः ॥

अर्थ-मनसिल, मजीठ, जवाखार, दारुहलदी, हलदी, घी और सहत इनका लेप त्वचाकी शुद्धि करे है ॥

व्रणकी कृमिपर।

करंजारिष्टनिर्गुंडीरसाहन्याद्व्रणकृमीन् ॥

अर्थ-करंज, अमलतास, निर्गुंडी इनका रस व्रणसंबंधी कृमिको नाशकरे॥

प्रकारांतर।

निंबशम्याकजात्यर्कसप्तपर्णाश्वमारकाः।
कृमिघ्नामूत्रसंयुक्तासेकलेपनधावनैः ॥

अर्थ-नींब, अमलतास, चमेली, आक, सतौना सपेदकनेर और गोमूत्र इनका लेप तथा इन्हींके काढेसे व्रणको धोना तथा बफारा देना ये सब कर्म कृमिनाशक हैं ॥

जात्यादि घृत।

जातीनिंबपटोलपत्रकटुकादार्वीनिशासारिवामंजिष्ठाभयसिंधुतुत्थमधुकैर्नक्ताह्वबीजैःसमैः ॥ सर्पिःसिद्धमनेनसूक्ष्मवदना मांसाश्रिताः स्राविणोगंभीराः खरुजोव्रणासुगतिकाःशुद्ध्यंतिरोहंतिच ॥

अर्थ-चमेली, नींब, पडवल, कुटकी, दारुहलदी, हलदी, सपेदसारिवा, मजीठ, खस, सैंधानिमक, लीलाथोथा, मुलहटी, इनके बराबर कंजाके बीज ले, इन

सबके कल्कको मिलायके सिद्ध करा हुआ घी, इसके लगानेसे छोटे मुखका मांसाश्रित गहन स्राव होनेवाला, पीडायुक्त ऐसा व्रण शुद्ध हो भरके अच्छा होय॥

पटोलादि क्वाथ।

पटोलीनिंबपत्राणांक्काथःसंक्षालनेहितः।
कल्कःसंरोपनेशस्तास्तिलानांमधुकान्वितः॥

अर्थ-परवल, नीमके पत्ते, इनका काढा घावके धोनेमें उत्तम है, उसी प्रकार तिलोंका कल्क ओर मुलहठीका चूर्ण व्रणके भरनेमें उत्तम है॥

त्रिफलादिक्काथ।

येक्लेदपाकेसतिगंधवंतोव्रणामहांतःसरुजःसशोथाः।
प्रयांतितेगुग्गुलमिश्रितेनपीतेनशांतित्रिफलाजलेन॥

अर्थ-जो व्रण राध होकर पके और गन्ध पीडा सूजन इन करकै युक्त तथा बडे भारी हो वो हरड, बहेडा, आँवला इनके काढेमें गूगल मिलायके पीनेसे अच्छे होवे॥

इति श्रीबृहन्निघंटुरत्नाकरे शारीरकव्रण निदानचिकित्सा समाप्ता।

अथाग्निदग्धव्रणनिदान.

तत्रस्निग्धंरूक्षंवाश्रित्यद्रव्यमाग्निर्दहाति॥ अग्निःसंतप्तोहिस्नेहः सूक्ष्ममार्गानुसारित्त्वात्त्वगादीननुप्रविश्याशुदहाति। तस्मा त्स्नेहदग्धेधिकारुजाभवंति। तत्रप्लुष्टंदुर्दग्धंसम्यक्दग्धम तिदग्धंचेतिचतुर्विधभवत्याग्निदग्धम्॥

अर्थ-तहाँ स्निग्ध द्रव्य (घृत आदि) और रूक्ष द्रव्य (काष्ठपाषाण लोष्ठादि) के आश्रय करके अग्नि, वैद्यके दोषसे दहन करे है। अग्नि करके संतप्त जा चिकनाई है सो सूक्ष्म शिरानुसारित्व होनेसे त्वचा आदिमें प्रवेश हो तत्क्षण पजारता है। इसीसे स्नेहदग्धमें अधिक पीडा होती है। तहाँ प्लुष्ट, दुर्दग्ध, सम्यग्दग्ध और अतिदग्ध ये चतुर्विध अग्नि दग्ध हैं॥

तत्रयद्विवर्णंतुष्यतेप्रतिमात्रंतत्प्लुष्टं। यत्रोत्त्तिष्ठंतिस्फोटास्ती व्राश्चोषदाहरागपाकवेदनाश्चिराच्चोपशाम्यंतितद्दुर्दग्धं। स म्यग्दग्धमवगाढंतालफलवर्णंसुस्थितंपूर्वेलक्षणयुक्तं। अतिद

ग्धंतुत्वङ्मांसावलंबनंगात्रविश्लेषः शिरास्नायुसंध्यस्थिव्यापादेनातिमात्रंवेदनाज्वरदाहपिपासामूर्च्छाश्वासोपद्रवाभवंति। व्रणश्चास्यचिरेणरोहतिरूढश्चविवर्णोभवति ॥ तदेतच्चतुर्विधमग्निदग्धलक्षणमात्मकर्मप्रसाधकंभवति ॥

अर्थ–तहां दग्धस्थानका विवर्ण हो और अत्यंत दाह हो उसको प्लुष्ट कहते हैं। जिसमें तीव्र फोडे प्रगट होवे और खींचने कीसी पीडा, दाह, राग (रक्तता) पाक और ओषादि दाह होवे तथा बहुत देरमें जो शांति होवे उसको दुर्दग्ध कहते हैं। जो अति दग्ध लक्षण करके रहित हो तथा पके हुये तालफलके समान वर्ण होवे और अत्यंत ऊंचा तथा नीचा इत्यादि दोषरहित हो ओर जो पूर्वलक्षण (त्वचा, मांस, शिरा, स्नायु, संधी, अस्थि दाह लिंग) युक्त हो उसको सम्यग्दग्ध कहते हैं। अति दग्ध होनेके ये लक्षण हैं कि, मांसका अवलंबन, देहका विघट्टन, शिरा, स्नायु, संधी और अस्थि इनका हिंसन, अत्यंत ज्वर, दाह, प्यास मूर्च्छा इत्यादि उपद्रव होवे तथा व्रण बहुत दिनमें भरे और भर जावे तब भी वह स्थान विवर्ण हो जावे। यह चतुर्विध अग्निकर्म वैद्यको आत्मकर्म (चिकित्सा) का प्रसाधक होता है ॥

प्लुष्टस्याग्निप्रतपनंकार्यमुष्णंतथौषधम्। शीतामुष्णंचदुर्दग्धे क्रियांकुर्यात्ततःपुनः। घृतालेपनसेकांस्तुशीतान्येवास्यकारयेत्। अतिदग्धेविशीर्णानिमांसान्युद्धृत्यशीतलाम्। क्रियांकुर्याच्चतांकालेशालितंडुलकंडनैः। तिंदुक्यास्त्वक्कषायैर्वाघृतमिश्रैःप्रलेपयेत्। सम्यक्दग्धेतुगाक्षीरीप्लक्षचंदनगैरिकैः। सामृतैसर्पिषायुक्तैरालेपंकारयेद्भिषक् ॥

अर्थ–प्लुष्ट दग्ध है उसको अग्निसे तपाना चाहिये और औषध भी गरम देना चाहिये अर्थात् लेप पानादिक भी उष्ण ही करने चाहिये। कदाचित् कोई शंका करे कि, अग्निदग्ध उष्ण है उसमें उष्ण ही क्रिया करना तो हमारी समझमें नहीं आता दुर्दग्धमें शीतल और उष्ण दोनों क्रिया वैद्यको करनी चाहिये और पीछे घृतका लेप और सेक आदि शीतल ही करना चाहिये, इस प्रकार रोगी सुखी होता है। कोई कहताहै कि, अतिदाहमें शीतल क्रियाकरे और उष्ण क्रिया कदाचित् न करे। अतिदग्धमें विखरेहुये मांसको निकाल कर वैद्य शीतल क्रिया करे पीछे सांठीचावलोंकी कणकी करके तेंदूकी छालके काढेमें घृत

मिलाय लेप करे। सम्यग्दग्धमें वंशलोचन (अथवा कोई तुगाक्षीरीके कहनेसे वंशलोचनके समान पार्थिवद्रव्य विशेष कहते हैं) पाखर, लालचंदन और गिलोय इनको घृतमें मिलाय लेप करे यह लेप पित्तको शांति करताहै॥

पथ्यादि लेप।

पथ्याकर्दमजीरकमधुसिक्थकसर्जमिश्रितोलेपः।
गव्यंघृतमपहरतिचपावकजनितंव्रणंसद्यः॥

अर्थ–हरड, कीच, जीरा, मुलहटी, मोम, राल, इन सबको एकत्र पीस लेप करे अथवा गौका घी अग्निसे भुलस हुए पर लगावे॥

अंतर्धूम।

अंतर्धूमकुठेरकोदहनजंलेपान्निहंतिव्रणं
चाश्वत्थस्यविशुष्कवल्कलभवंचूर्णंतुसंगुंठनात्॥

अर्थ–घरका धूआँ आजबला चित्रक इनका लेप करनेसे व्रण नाश होय अथवा पीपलकी सूखी हुई छालके चूर्ण लगानेसे व्रण नाश होय॥

सुधादि लेप।

सुधांपुरातनीदग्धोवारिणापरिपेषिताम्।
लेपनंतैलदग्धस्यविस्फोटव्याधिनाशनम्॥

अर्थ–बहुत दिनका पुराना चूना ले उसमें दहीका जल डालके पीसे फिर इसका लेप करे तो तेलसे जले हुएको और फोडेनको नाश करे॥

शेलवादि आश्चोतन।

अक्षिपक्ष्मसुकर्तव्यमिदमाश्चोतनंहितम्॥ शेलुत्वक्त्रिफलादार्वी
क्वाथोरोचनयायुतः। स्नुह्यर्कक्षीरसिक्तोष्णगव्यंसर्पिर्निषेचयेत्॥

अर्थ–शेलूकीछाल–हरड–बहेडा–आँवला दारुहलदी इनके काढेमें गोरोचन डालके इससे नेत्र सिंचन करे–फिर घीसे सिंचन करे तो जलेहुए नेत्र तथा थूहर आकका दूध इनसे बिगडे हुए नेत्र अच्छे होय॥

अग्निदग्धपर लेप।

अंभ्यंगाद्विनिहंतितैलमखिलंगंडूपदैः साधितं
पिष्टाशाल्मलितूलैकजलगतांलेपात्तथावालुकाम्॥

अर्थ–गिंडोरानका तेल निकालके मालिस करे अथवा सेमरकी रुईको पीस जलसे लेप करे अथवा जलसे वालूका लेप करे तो अग्निसे जला हुआ अच्छा होय॥

धातकीचूर्ण।

अग्निदग्धेविसर्पेचकीटलूताव्रणेषुच ॥ चिरोत्थेषुचदुष्टेषुना डीमर्माश्रितेषुच ॥ अग्निदग्धव्रणेदयंधातकीचूर्णमुत्तमम् ॥ अतसीतैलसंमिश्रंवाह्निदग्धव्रणापहम् ॥

अर्थ-धायके फूलोंका चूर्ण अलसीके तेलमें लगावे तो अग्निदग्धव्रण, विसर्प, कीटव्रण, लूताव्रण बहुत दिनका दुष्टनाडीव्रण मर्माश्रित व्रण इनको नाश करे॥

त्रिफलाचूर्ण।

अंतर्धूमविदग्धंत्रिफलाचूर्णविमिश्रितंतैलैः।
क्षौमैः शीघ्रंशमयत्यग्निव्रणमाशुलेपेन ॥

अर्थ--त्रिफलाको एक बासनमें भर ऊपरसे ढक देवे और चूल्हेपर चढा-यकै उसको जलाय लेवे. इस राखकी तेलमें मिलायकै लगावे तो अति दग्ध व्रण शीघ्र दूर होय ॥

सामान्य उपचार।

पित्तविद्रधिवीसर्पशमनंलेपनादिकम्।
अग्निदग्धेव्रणेसम्यक्प्रयुंजीतविचक्षणः ॥

अर्थ-अग्निदग्धव्रणपर पित्तविद्रधि विसर्प इनपर जो औषधी कही है वो लगावे॥

दग्धयव चूर्ण।

दग्धयवभस्मचूर्णैतैलतिलाक्तंप्रलेपनादचिरात्।
हरतिशिखिदाहदग्धंभूयोभ्यंगाद्व्रणंचाशु ॥

अर्थ--जोंनको जलायकै उस भस्मको तिलके तेलमें लेप करे तो अग्नि-दग्धव्रण शीघ्र नाश होय इसमें संदेह नहीं है ॥

चंदनादि तेल।

चंदनंवटशृंगाश्चमंजिष्ठामधुकंतथा। प्रपौंडरीकंदूर्वाचपतंगं धातकीतथा। एतैस्तैलंविपक्तव्यंगोक्षीरेणसमायुतम्।अग्निद ग्धेव्रणेश्रेष्ठंतत्क्षणाद्रोपणंपरम् ॥

अर्थ-चंदन, वडकीकली, मजीठ, मुलहटी, पुंडरीक वृक्ष, दूब, पतंग, धायके फूल; इन सबका कल्क कर उसमें दूध डालकै तैल सिद्ध करे यह अग्निदग्ध व्रणको भरलानेमें श्रेष्ठ है ॥

पटोलि तैलम्।

सिद्धंकषायकल्काभ्यांपटोल्याःकटुतैलकम्।
दग्धव्रणरुजास्रावदाहविस्फोटनाशनम्॥

अर्थ–परवलका काढा तथा कल्क इनसे सरसोंका तेल सिद्ध करके उसको दग्धव्रण, पीडा, स्राव, दाह और फोडा इनपर लगावे तो इनको नाश करे॥

लांगली घृत।

उभेहरिद्रेमंजिष्ठामधुकंलोध्रकट्फलम्।कंपिल्लकमुभेमेदेलांगलीमूलमेवच॥ पिप्पलीत्रिफलाचैवनिंबपत्रंचकार्षिकं। कपिलायाघृतप्रस्थपचेत्तद्विगुणंपयः॥ पलद्वयंचसिक्थस्यासिद्धेपूतेचदापयेत्। लांगलीकंघृतंनामव्रणानांरोपणंपरम्॥

अर्थ–हलदी–दारुहलदी–मजीठ–मुलहटी–लोध–कायफल–कवीला–मेदा–महामेदा–कलयारीकी जड–पिप्पली–हरड–बहेडा–आवला–नींबके पत्ते–ये प्रत्येक तोले २ काली गौका घी ६४ तोले गौका दूध १२८ तोले इनमें घृत सिद्ध करे इसमें ८ तोले मोम मिलायदे–तो घृत सिद्ध होय यह व्रणको भरनेमें सबसे उत्तम है॥

मधूच्छिष्टादि तैल।

मधूच्छिष्टंसमधुकंलोध्रंसर्जरसंतथा। मूर्वाचंदनमंजिष्ठापिष्ट्वा सर्पिर्विपाचयेत्॥ सर्वेषामग्निदग्धानांव्रणरोपणमुत्तमम्॥

अर्थ–माम–मुलहटी–लोध–राल–मूर्वा–चंदन–मजीठ–इनका कल्क करके उसमें घी मिलायके पचावे यह संपूर्ण प्रकारके अग्निदग्ध व्रणोंको भरलाताहै॥

इति श्रीबृहन्निघण्टुरत्नाकरे अग्निदग्धव्रणस्य निदानीचिकित्सा समाप्ता॥

आगंतुव्रण निदान।

नानाधारामुखः शस्त्रैर्नानास्थाननिपातितैः।
भवंतिनानाकृतयोव्रणास्तांस्तान्निबोधमे॥

अर्थ–अनेक प्रकारकी धारवाले तथा मुखवाले शस्त्र अनेक ठिकानेपर लगनेसे अनेक प्रकारकी आकृति (स्वरूप) के व्रण होते हैं उनके कहताहूं॥

व्रणके छः प्रकार।

छिन्नंभिन्नंतथाविद्धंक्षतंपिच्चितमेवच।
घृष्टमाहुस्तथाषष्ठंतेषांवक्ष्यामिलक्षणम् ॥

अर्थ-छिन्न, भिन्न, विद्ध, क्षत, पिच्चित और छठा घृष्ट, ऐसे आगंतु व्रण छः प्रकारके होते हैं उनके लक्षण कहताहूं ॥

सर्वव्रणके उपद्रव।

विसर्पःपक्षघातश्चशिरास्तंभोपतानकः। मोहोन्मादव्रणरुजा-ज्वरस्तृणाहनुग्रहः ॥ कासश्छर्दिरतीसारोहिक्काश्वासः सवे-पथुः। षोडशोपद्रवाः प्रोक्ताव्रणानांव्रणचिंतकैः ॥

अर्थ-विसर्प, पक्षावात शिरास्तंभ, अपतानक, मोह, उन्माद, ज्वर, व्रणकी पीडा, प्यास, हनुग्रह, खाँसी, वमन, अतिसार, हिचकी, श्वास और कंप ये व्रण रोगके सोलह उपद्रव व्रणरोगके जाननेवालोंने कहे हैं ॥

छिन्न लक्षण।

तिर्यक्छिन्नोमृदुर्वापियोव्रणस्त्वायतोभवेत्।
गात्रस्यपातनंताद्धिछिन्नमित्यभिधीयते ॥

अर्थ-जो व्रण तिरछा, सरल (सीधा) अथवा लंबा होय उस्को छिन्न-व्रण कहते हैं ॥

भिन्न लक्षण।

शक्तिकुंतेषुखड्गाग्रविषाणैराशयोहतः।
यत्किंचित्स्रवतेतद्धिभिन्नलक्षणमुच्यते ॥

अर्थ-बर्च्छी, भाला, बाल, तरवारका अग्रभाग, विषाण (दांत सींग) इन से आशय (कोष्ठ) को वेधकर थोडासा रुधिर स्रवे (निकले) उस्को भिन्न कहते हैं ॥

कोष्ठ लक्षण।

स्थानान्यामाग्निपक्वानामूत्रस्यरुधिरस्यच।
हृदुंडुकःफुप्फुसश्चकोष्ठाइत्यभिधीयते ।

अर्थ-आमाशय, अग्न्याशय, पक्वाशय, मूत्राशय, रक्ताशय, कलेजा, प्लीह हृदय, मलाशय और फुप्फुस इन स्थानोंकी कोष्ठसंज्ञा है ॥

इनके भेदोंके लक्षण ।

तस्मिन्भिन्नेरक्तपूर्णेज्वरोदाहश्चजायते। मूत्रमार्गगुदास्येभ्यो रक्तंघ्राणाचगच्छति ॥ मूर्च्छाश्वासतृषाध्मानमभक्तछन्दए-वच। विण्मूत्रवातसंगश्चस्वेदास्रावोक्षिरक्तता ॥ लोहगंधित्व मास्यस्यगात्रदौर्गंध्यमेवच। हृच्छूलंपार्श्वयोश्चापिविशेषंचा त्रमेशृणु ॥

अर्थ-वो कोष्ठ भिन्न होकर रुधिरसे भरजावे तब ज्वरदाह होयहै, मूत्रमार्ग, गुदा, मुख और नाक इन्मेंसे रुधिर बहै, मूर्च्छा, श्वास, प्यास, पेटका फूलना, अन्नमें अरुचि, मलमूत्र, अधोवायु इन्का अवरोध पसीना बहुत आवै, नेत्रमें लाली, मुखमें लोहेकीसी बास आवै, अंगोंमें दुर्गंधि, हृदय और पसवाडोंमें शूल येलक्षण होतेहैं इन्से जो विशेष लक्षण हैं उन्को मोसे सुन ॥

आमाशय स्थितरक्तके लक्षण ।

आमाशयस्थेरुधिरेरुधिरंच्छार्दयत्यापि।
आध्मानमतिमात्रंचशूलंचभृशदारुणम् ॥

अर्थ-आमाशयमें रुधिरका संचय होनेसे रुधिरकी वमन, पेट बहुत फूले और अत्यंत भयंकर शूल होय ॥

विद्धलक्षण ।

पक्वाशयगतेचापिरुजागौरवमेवच।
अधःकायविशेषेणशीतताचभवेदिह ॥

अर्थ-पक्वाशयमें रुधिरका संचय होनेसे शूल, देहमें भारीपना और कमरसे लेकर नीचेके भागमें शीतलता होय है ॥

पक्वाशयस्थ रक्तके लक्षण ।

सूक्ष्मास्यशल्याभिहतंयदंगंत्वाशयंविना।
उत्तुंडितंनिर्गतंवातद्विद्धमितिनिर्दिशेत् ॥

अर्थ-बारीक अग्रभागवाले (सुई आदि) शस्त्रसे आशय विना जे अंग हैं उन्में वेध होनेसे तुंडित (कहिये उन्मेंसे वो शस्त्र न निकला होय) निर्गत कहिये (शल्य निकल गया हो) उस्को विद्धव्रण कहते हैं ॥

क्षतके लक्षण ।

नातिच्छिन्नंनातिभिन्नमुभयोर्लक्षणान्वितम् ।
विषमंव्रणमंगेषुतत्क्षतंत्वाभिनिर्दिशेत् ॥

अर्थ-जिस्में अंग अतिच्छिन्न तथा अति भिन्न न भया हो और दोनोंके लक्षण मिलते हों, तथा व्रण तिरछा बाँका होय उसको क्षत व्रण कहते हैं ॥

पिच्चितलक्षण ।

प्रहारपीडनाभ्यांतुयदंगंपृथुतांगतम् ।
सास्थितत्पिच्चितंविद्यान्मज्जारक्तपरिप्लुतम् ॥

अर्थ-जो अंग हाड सहित प्रहार कहिये मुद्गर आदिकी चोट अथवा दबना किवाँर आदिसे इन्के योगसे पिच जाय तथा मज्जा रुधिर करके युक्त होय (घाव न होय) उस्को पिच्चितव्रण कहते हैं ॥

घृष्टलक्षण ।

घर्षणादभिघाताद्वायदंगंविगतत्वचम् ।
ऊष्मास्रावान्वितंतद्धिघृष्टमित्यभिनिर्दिशेत् ॥

अर्थ-कठिन वस्त्र आदिको घर्षण (घिसने) से, चोटके लगनेसे, जिस अंगको ऊपरकी त्वचा जाती रहै तथा आगके समान गरम रुधिर चुचाय उस्को घृष्ट ऐसे कहते हैं ॥

सशल्यलक्षण ।

शावंसशोथंपिटिकान्वितंचमुहुर्मुहुः शोणितवाहितंच ।
मृदूद्गतंबुद्बुदतुल्यमांसंव्रणंसशल्यंसरुजंवदंति ॥

अर्थ-जो व्रण नीला, सूजनयुक्त, मरोरीन्से व्याप्त होय और बारबार उन्मेंसे रुधिर बहे और नरम होकर ऊपर बबूलेके समान उठा भया जिस्का मांस होय उस व्रणको सशल्य है ऐसे जानना चाहिये ॥

कोष्ठभेदलक्षण ।

त्वचोतीत्यशिरादीनिभित्त्वावापरिहृत्यवा ।
कोष्ठेप्रतिष्ठितंशल्यंकुर्यादुक्तानुपद्रवान् ॥

अर्थ-त्वचाकी संधि कहिये शिरा, मांस, नस, हड्डी, इन्की सन्धीको वेध कर अथवा शिरा आदिको छोड जो शल्यकोष्ठमें रहे हैं उससे आगे कहे भए लक्षण होते हैं ॥

असाध्य कोष्ठ भेद ।

तत्रांतलोहितंपांडुशीतपादकराननम् ।
शीतोच्छ्वासंरक्तनेत्रमानद्धंपरिवर्जयेत् ॥

अर्थ-जिसका रुधिर आंतौमें संचित होय (अर्थात् बाहर नहीं बहे)और जो पीलावर्ण जिस्के हाथ पैर शीतल होय और जो शीतल श्वासको छोडे, जिस्के लाल नेत्र होय तथा अनाह कहिये (पेट फूलना) ऐसे रोगीको वैद्य त्यागदे ॥

मांस--शिरा--स्नायु--अस्थि--और संधी--इनके मर्ममें घाव होनेसे सामान्य लक्षण ।

भ्रमःप्रलापःपतनंप्रमोहोविचेष्टनंग्लानिरथोष्णताच । स्रस्तांगतामूर्च्छनमूर्ध्ववातस्तीव्रारुजोवातकृताश्चतास्ताः॥ मांसोदकाभंरुधिरंचगच्छेत्सर्वेंद्रियार्थोंपरमस्तथैव । दशार्धसंख्येष्वथविक्षतेषुसामान्यतोमर्मसुलिंगमुक्तम् ॥

अर्थ-भ्रम, अनर्थभाषण, गिरना, इन्द्री और मन इन्को मोह, हाथ पैरका फैलाना ग्लानि, उष्णता, अंगोंमें शिथिलता, मूर्च्छा, श्वासका चढना, वात जन्य तीव्र पीडा, मांसका धोया हुआ पानी ऐसा रुधिर बहे, सर्वइन्द्री विकल होंय (अर्थात् सब इन्द्रीन्का व्यापार बंद हो जाय) ये लक्षण मांस आदि पांच मर्मविद्ध होनेसे होते हैं ॥

मर्मरहितशिराविद्धके लक्षण ।

सुरेंद्रगोपप्रतिमंप्रभूतंरक्तंस्रवेत्तत्क्षणजश्चवायुः ।
करोतिरोगान्विविधान्यथोक्तांश्छिरासुविद्धास्वथवाक्षतासु ॥

अर्थ-शिरा कहिये (नाडी) विधजाय, अथवा शिरामें घाव होजाय उस्में से इन्द्रगोप (वीरबहूटी) कीडाके समान लाल तथा पुष्कल रुधिरस्रवे तथा रक्तक्षय होनेसे वायु कुपित होकर अनेक प्रकार के (आक्षेपकादि) रोग उत्पन्न करे हैं ॥

स्नायुविद्ध ।

कौब्ज्यंशरीरावयवावसादःक्रियास्वशक्तिस्तुमुलारुजश्च ।
चिराद्व्रणोरोहतियस्यचापितंस्नायुविद्धंपुरुषंव्यवस्येत् ॥

अर्थ-कुबडापना, शरीरमें ग्लानि काम करनेसे असामर्थ्यपना, बहुत पीडा और जिस्का व्रण बहुत दिनमें भरे उस्की स्नायु विद्धभई ऐसे जाने ॥

संधिविद्ध।

शोथाभिवृद्धिस्तुमुलारुजश्चबलक्षयःपर्वसुभेदशोथौ।
क्षतेषुसंधिष्वचलाचलेषुस्यास्सर्वकर्मोपरमश्चलिंगम्॥

अर्थ–चल अथवा अचल संधीका वेध होनेसे सूजन बढे पीडा बहुत होय शक्तिका नाश होय, संधिमें भेदके समान पीडा होय, सूजन होय कुछ कार्य करे परंतु उस्में उपराम होय॥

अस्थिविद्ध।

घोरारुजोयस्यनिशादिनेषुसर्वास्ववस्थासुचनैतिशांतिम्।
भिषग्विपश्चिद्विदितार्थसूत्रस्तमस्थिविद्धंपुरुषंव्यवस्येत्॥

अर्थ–जिस पुरुषके रात दिन घोर पीडा होय, जागृतादि तीनों अवस्थामें शांति होय नहीं उसके अस्थि (हड्डी) बिधी है ऐसे श्रेष्ठ वैद्य जाने।

मांस रहित शिरादिकोंके विद्ध कथन करके शिरादि मर्म विद्ध लक्षणका हवालादेतेहैं।

यथास्वमेतानिविभावयेत्तुर्लिंगानिमर्मस्वभिताडितेषु।

अर्थ–मर्मके ठिकाने चोटके लगनेसे ये पूर्वोक्त लक्षण जानने चाहिये तु शब्दसे लक्षण और सामान्य लक्षण होते हैं ऐसे जानना॥

मांस मर्मके लक्षण अनुक्त उनको कहते हैं।

पांडुर्विवर्णःस्पृशितंनवेत्तियोमांसमर्मस्वभिताडितःस्यात्।

अर्थ–जो पुरुष मांस मर्मके ठिकाने विद्ध होता है, उसका पीला वर्ण देहका विवर्ण होय और स्पर्शका ज्ञान न होय॥

आगंतुक व्रण।

यष्ठीमधुकयुक्तेनकिंचिदुष्णेनसर्पिषा। मत्वागंतुव्रणंवैद्यैर्घृत
क्षौद्रसमन्वितम्। शक्तिक्रियाप्रयोक्तव्यापित्तरक्तोष्मणानिशि॥

अर्थ–आगंतुक व्रण पर मुलहटीका चूर्ण और घी इनका उष्ण लेप करे और शक्तिके अनुसार किंचित् पित्तकारक रक्तशोधक और गरम पदार्थोंको घी और सहतके साथ रात्रिके समय उपचार करे॥

आगंतुकपर सामान्य चिकित्सा।

बुध्वागंतुव्रणंवैद्योघृतक्षौद्रसमन्विताम्।
शीतांक्रियांचरेदाशुरक्तपित्तोष्मनाशिनीम्॥

अर्थ–वैद्योंको आगंतुक व्रण जानके उसको सहत और घी इनसे युक्त तथा रक्त पित्त संबंधी उष्म नाशक ऐसी शीतल क्रिया करे॥

सामान्य चिकित्सा क्रम।

क्रुद्धेसद्योव्रणेकुर्यादूर्ध्वंचाधश्चशोधनम्।
लंघनंचबलंज्ञात्त्वाभोजनंवास्रमोक्षणम्॥

अर्थ–संपूर्ण व्रणका कोप होनेसे वमन, विरेचन, लंघन और तलको विचार अन्न तथा रुधिर निकालना ये उपचार करे॥

घृष्ट तथा विदलितका उपचार।

घृष्टेविदलितेचैवसुतरामिष्यतेविधिः।
तयोस्वल्पंस्रवत्यस्रंपाकस्तेनाशुजायते॥

अर्थ–घिसनेसे अथवा फटनेसे व्रण हो गया हो और उसमेंसे रुधिर बहुत जाता न हो इसवास्ते उस स्थानमें पित्तकोप होकर बहुत जल्दी पकता है इसवास्ते ऊपर लिखे सर्व उपचार करे॥

छिन्न--भिन्न--और विद्ध इनपर उपचार।

छिन्नेभिन्नेतथाविद्धेक्षतेचासृगतिस्रवेत्।
रक्तक्षयात्तत्ररुजःकरोतिपवनोभृशम्॥

अर्थ--छिन्न--भिन्न--और विद्ध इन घावोंसे रुधिर बहुत निकलता है. इसवास्ते उस ठिकाने वायुका कोप होकर पीडा होती है॥

उपचार।

स्नेहपानपरीषेकलेपस्वेदोपनापनम्।
कुर्वीतस्नेहबस्तिंचमारुतघ्नौषधैःशृतैः॥

अर्थ–स्नेहपान सिंचन--लेपपसीने काढना बाँधना और वातघ्न औषधोंसे स्नेह बस्ती इत्यादि उपचार करे॥

छिन्नेभिन्नेतथाविद्धेक्षतेसद्योभिषग्वरः॥ पट्टसूत्रेणचसंवेष्ट्य-
व्रणंव्रणविशारदः। मुहुर्मुहुर्यथादुःखंनप्राप्नोतिव्रणीनरः॥

अर्थ–छिन्न--भिन्न--और विद्ध व्रणोंको प्रथम रेशमसे बाँधे अथवा सींदे फिर रोगी वारंवार दुःख न पावे ऐसा यत्न करे॥

उपचार।

अथवादीप्यलवणपोटल्यास्वेदयेन्मुहुः॥ संतप्तयाततलोह-
पात्रसंयोगतःक्रमात्॥ दुष्टंरक्तंस्थितंचापिशृग्यलाब्वादिभिर्हरेत्॥

अर्थ-अथवा उस व्रणको अजमायन-निमक-इनकी पोटली बनायके गरम लोहेके पात्र गरम करके वारंवार शेके तथा तूंबी लगायके रुधिर निकाले ॥

सद्योव्रणचित्किसा।

सद्यःक्षतव्रणोवैद्यः सशूलेपरिषेचयेत्। यष्टीमधुकमिश्रेणनातिशीतेनसर्पिषा॥ कषायमधुराः शिताःक्रियाः सर्वास्तुयोजयेत्। सद्योव्रणानांसप्ताहात्पश्चात्पूर्वोक्तमाचरेत्॥ चिकित्सितंतुतत्सर्वंसामान्यव्रणनाशनम्॥

अर्थ-सद्यक्षत अर्थात् तत्कालके घावमें प्रथम सात दिन मुलहटी डाला हुआ शीतल घीसे सेचन करे और कषेला-मधुर-शीतल ऐसी क्रिया करे फिर सामान्य व्रणपर जो उपचार कहे हैं वो करै॥

आशयभेद उपचार।

आमाशयस्थेरुधिरेवमनंपथ्यमुच्यते।
प्रक्काशयस्थेदेयंचविरेचनमसंशयम्॥

अर्थ-आमाशय बढ़कर उसमें संचित रुधिर होगया हो तो वमन करावे और पक्काशयमें यदि रुधिर संशय होय तो निःसंशय जुल्लाब करावे॥

बंशलगादि क्काथ।

क्काथोवंशत्वगेरंडश्वदंष्ट्राश्मभिदाकृतः।
हिंगुसैंधवसंयुक्तःकोष्ठस्थंस्रावयेदसृक्॥

अर्थ-बाँसकी छाल, अंडकी जड, गोखरू, पाषाणभेद, इनका काढाकर उसमें हींग और सैंधानिमक डालकै देवे, तो कोठेसे रक्तस्राव करे॥

गौरादिघृत।

गौराहरिद्रामंजिष्ठामांसीमधुकमेवच। प्रपौंडरीकंह्रीबेरंनतंमुस्तंसचंदनम्॥ जातीनिंबपटोलंचकरंजंकटुरोहिणी। मधूच्छिष्टंमधूकंचमहामेदातथैवच॥ पंचवल्कलतोयेनघृतप्रस्थंविपाचयेत्। एतद्गौरादिकंसर्पिःसर्वव्रणविशोधनम्॥ आगंतुकाश्चसहजाःसुचिरोत्थाश्चयेव्रणाः। नाडीव्रणश्चविषमोनश्यत्येवनसंशयः॥

अर्थ–गोरोचन, हलदी, मजीठ, जटामांसी, मुलहटी, पुंडरीकवृक्ष, नेत्रवाला, तगर, नागरमोथा, चंदन, चमेली, नीमकीछाल, कंजेकेबीज, कुटकी, सहत, महामेदा और पंचवल्कल इनके काढेमें ६४ तोले घी डालके सिद्धकरे तो यह गौरादिक घृत संपूर्ण व्रणोंको शोधन करे तथा जो आगंतुक व्रण सहजव्रण बहुत दिनका व्रण नाडीव्रणको नाश करे ॥

यवादि अन्न ।

यवकोलकुलित्थानांनिस्नेहेनरसेनच ।
भुंजीतान्नंयवागूंवापिबेत्सैंधवसंयुताम् ॥

अर्थ–आगंतु सद्यो व्रणवालेको जो कालीमिरच कुलथी इनको स्नेह रहित रस किंवा सैंधानिमक डालके यवागू देवे ॥

तिक्तादि घृत ।

तिक्तासिक्थनिशायष्टीनक्ताह्वफलपल्लवैः ।
पटोलमालतीनिंबपत्रैर्वर्ण्यं घृतंशृतम् ॥

अर्थ–कुटकी, मोम, हलदी, मुलहटी और करंजके पत्ते और बीज पटोलपत्र चमेली नीमके पत्ते इनके कल्कमें घृतसिद्ध करके देवे तो घावकी गूंथके वर्णको उत्तम करे ॥

जात्यादितेल ।

जातीनिंबपटोलानांनक्तमालस्यपल्लवाः ॥ सिक्थकंमधुकं कुष्टंद्वेनिसेकटुरोहिणी ॥ मंजिष्ठापद्मकंलोध्रमभयानीलमुत्पलम् । तुत्थकंसारिवाबीजंनक्तमालस्यचाक्षिपेत् ॥ एतानिसमभागानिपिष्ट्वातैलंविपाचयेत् । विषव्रणसमुत्थेषुस्फोटेषुचसकच्छुषु॥कंडूविसर्परोगेषुकीटदष्टेषुसर्वथा । सद्यःशस्त्रप्रहारेषु दग्धविद्धक्षतेषुच ॥ नखदंतक्षतेदेहदुष्टमांसाववर्षणे । भक्षणार्थमिदंतैलंहितंशोधनरोपणम् ॥

अर्थ–चमेली, नीम, परवल और कंजा, इनके पत्ते मोम, मुलहटी, कुठ, हलदी, दारुहलदी, कुटकी, मजीठ, पद्माख, लोध, हरड, नीला कमल, लीलाथोथा, सारिवा और कंजेके बीज ये समान भागले उसके कल्कमें तेल सिद्ध करे तो विषव्रण संपूर्ण स्फोट खाज कंडू विसर्प, कृमीकादंश शस्त्र प्रहार, दग्ध, विद्ध, इनका क्षत और नख दांत इनसे उत्पन्न हुआ घाव और मांसका घिसना. इत्यादिकोंको भरलावे है ॥

सद्योव्रणचिकित्सा।

सिंदूरकुष्ठविषहिंगुरसोनाचित्रबाणांघ्रिलांगलिककल्कविपक्क तैलम् ॥ प्रासादमंत्रहुतहुंकृदतुत्थफेनः क्लिन्नव्रणप्रशमनोविप रीतमल्लः ॥ खड्गाभिघातगुरुगंडमहोपदंशनाडीव्रणव्रणवि चर्चिककुष्ठपामाः ॥ एतान्निहंतिविपरीतकमल्लनामतैलंयथेष्ट शयनाशनभोजनस्य ॥

अर्थ--सिंदूर कूठ, विष, हींग, लहसन बाणपुंख और कलयारी और हरताल और लीलाथोथा, इनका चूर्ण और अफीम इन पदार्थोंसे तेल सिद्ध करे यह तेल बहनेवाले व्रण शमन करनेको विपरीत मल्ल है और तलवारका घोर प्रहार गांठ उग्र उपदेश नाडीव्रण विचर्चिका कोढ खुजली इनको यह विपरीत मल्लनामक तेल नाश करे इसपर पथ्यका नियम नहीं है ॥

दूर्वादि तैल।

दूर्वास्वरससंसिद्धंतैलकंपिल्लकेनवा।
दार्वीत्त्वचश्चकल्केनप्रधानंव्रणरोपणम् ॥

अर्थ–दूर्वाके रसमें अथवा टेंटूके रसमें अथवा दारुहलदी की छालके कल्कमें तेल सिद्ध करे यह व्रणको भर लानेमें उत्तम है ॥

सप्तविंशति गुग्गुलु।

त्रिकटुत्रिफलामुस्ताविडंगामृतचित्रकम्। पटोलंपिप्पलीमूलं हपुषासुरदारुच ॥ तुंवरूपुष्करंचव्यंविशाखारजनीद्वयम्। विडंसौवर्चलंक्षारंसैंधवंगजपिप्पली ॥ यावंत्येतानिसर्वाणिता-वद्विगुणगुग्गुलुः। कोलप्रमाणंवटिकाभक्षयेन्मधुनासह ॥ कासश्वासतथाशोफंअर्शांसिचभगंदरम्॥हृच्छूलंपार्श्वशूलंच कुक्षिबस्तिगुदेरुजं॥अश्मरीमूत्रकृच्छ्राचअंत्रवृद्धितथाकृमीन्। चिरज्वरोपसृष्टानांक्षतोपहतचेतसां॥ आनाहंचतथोन्मादंसर्व-कुष्टोदराणिच। नाडीदुष्टव्रणान्सर्वान्प्रमेहान्श्लीपदस्तथां ॥ धन्वंतरिकृतोह्येषसर्वरोगनिषूदनः। सप्तविंशतिकोनामगुग्गु-लुःप्रथितोमहान् ॥

अर्थ-सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आँवला, नागरमोथा, वायविडंग, सिंगिया विष, चित्रककी छाल, पटोल पत्र, पीपरा मूल, हाऊबर, देवदारु, तुंबरू, पुहकर मूल, चव्य, इन्द्रायण, हलदी, दारुहलदी, बिडनिमक सैंधानिमक, गजपीपर, ये सब समान भागले तथा सब चूर्णसे दूना गुग्गुल डालके आधे२ तोलेकी गोली बनावे, इनको सहतके साथ देवे तो खाँसी, श्वास, सूजन, बवासीर, भगंदर, हृदयशूल, पार्श्वशूल, कूख, बस्ति और गुदा, इन स्थानोंकी पीडा, पथरी, मूत्रकृच्छ्र अंत्रवृद्धि, कृमि, अफरा, उन्माद, संपूर्णकुष्ठ, संपूर्ण उदर, दुष्ट नाडीव्रण, प्रमेह श्लीपद इनको नाश करे, यह सप्तविंशति गूगलगुटी संपूर्ण रोग नाश करनेको धन्वंतरिने कही है ॥

इति श्रीबृहन्निघंटुरत्नाकरे आगंतुव्रणनिदानचिकित्सासमाप्ता ।

अथ भग्नरोग ।

भग्नरोग निदान ।

भग्नरोग दो प्रकारका है एक सव्रण दूसरा अव्रण इनमें सव्रण कहकर अब अव्रण भग्नरोगको कहते हैं ॥

भग्नंसमासाद्विविधंहुताशकाण्डेचसंधौचहितत्रसंधौ ।

अर्थ-अग्निवेश कांड भंग और संधिभंग मिलकर संक्षेपसे भग्नरोग दो प्रकारका है ॥

संधिभग्न ।

उत्पिष्टविश्लिष्टविवर्तितंचतिर्यक्चविक्षिप्तमधश्चषांढा ।

अर्थ-तहां संधि स्थानका भग्नरोग छः प्रकारके हैं उन्के नाम कहते हैं-उत्पिष्ट, विश्लिष्ट, विवर्तित, तिर्यक्, विक्षिप्त और अधःक्षिप्त भग्ननाम टूटनेका है ॥

संधिभंगके सामान्य लक्षण ॥

प्रसारणाकुंचनवर्तनोग्रारुक्स्पर्शविद्वेषणमेतदुक्तम् ।
सामान्यतःसंधिगतस्यलिंगं-

अर्थ-फैलाते समय, सकोरनेके समय, नीचे करनेसे घोर पीडा होय और स्पर्श सहा न जाय, ये संधिभग्नके सामान्य लक्षण है ॥

-उत्पिष्टसंधेः श्वयथुःसमंतात् ॥
विशेषतोरात्रिभवारुजाच-

अर्थ-उत्पिष्टमें संधिके चारों ओर सूजन होय और रात्रिमें पीडा बहुत होय संधीन्के हाड दोनों आपसमें घिसे उस्को उत्पिष्ट ऐसे कहते हैं ॥

-विश्लिष्टजंतौचरुजाचनित्यम्।

अर्थ-विश्लिष्ट संधीन्में सूजन और रात्रिमें पीडा होकर सर्व कालमें अत्यंत पीडा होय और उत्पिष्टकी अपेक्षा इतने लक्षण विश्लिष्टमें विशेष होते हैं अर्थात् संधि शिथिलमात्र होय इस्में हाडके हटनेसे बीचमें गलेटा होजाय ॥

विवर्तितेपार्श्वरुजश्चतीव्रा-

अर्थ-विवर्तित संधिमें दोनों तरफके हाडसंधिसे पलट जाय तब अत्यंत पीडा इस संधिमें हाड दोनों तरफ फिरा करे ॥

-तिर्यग्गतेतीव्ररुजोभवंति ॥

अर्थ-हड्डीके तिरछे हटनेसे पीडा बहुत हो और एक हड्डी संधिस्थान छोडकर टेढी हो जाय ॥

क्षिप्तेऽतिशूलंविषमारुगस्थ्नो-

अर्थ-संधिहड्डी एक ऊपरको हटजाय तो अत्यंत पीडा होय और हाडोंमें कमजास्ती पीडा होय, इस जगे एक हड्डीकी क्रियासे; अथवा दोनों हड्डीकी क्रिया कर्के दोनों हाड परस्पर समीपसे दूर हो जाय हैं ॥

-क्षिप्तेत्वधोरुग्विघटश्चसंधेः ॥

अर्थ-संधिकी हड्डी एक नीचेको हटजाय तो पीडा होय और संधीकी विरुद्ध चेष्टा होय इस्में संधीके हाड परस्पर दूर होय परंतु किंचित् नीचेको गमन करे ॥

अब कांडभग्नको कहते हैं।

कांडेत्वतःकर्कटकाश्वकर्णविचूर्णितांपिच्चितमस्थिछल्लिका ॥ कांडेषुभग्नंत्वतिपातितंचमज्जागतंचस्फुटितंचवक्रम्। छिन्नं द्विधाद्वादशधापिकांडे-

अर्थ-कांडभग्न बारह प्रकारका है १ कर्कटक, २ अश्वकर्ण, ३ विचूर्णित, ४ पिच्चित ५ अस्थिछल्लिका, ६ कांडभग्न ७ अतिपातित ८ मज्जागत, ९स्फुटित १० वक्र और दो प्रकारके छिन्न। १ कर्कटक-अर्थात् हाड दोनों ओ-रसे दबकर बीचमें ऊंचा सा होय। २ अश्वकर्ण-घोडाके कानके समान जो हाड हो जाय। ३विचूर्णित-चुरकट होगया हो वो शब्दसे अथवा स्पर्शसे जाना जाय

४पिच्चित–पिचाभया हाड । ५ अस्थिछल्लिका–हाडका कोई भाग छिलकाके समान उखडकर रहे है सो । ६ कांडभग्न–हड्डीका कांड टूटना । ७ अतिपात सब हाड टूटे सो । ८ मज्जागत–हड्डीके अवयव मज्जामें प्रवेशकर मज्जाको बाहर निकाले । ९ स्फुटित–जिस हड्डीके बहुत टुकडा होजाय । १० वक्र-हड्डी–तिरछी होजाय वोभी भग्नमें गिनी जाती है । ११ छिन्न २ बारीक बहुतसे टुकडा हो जाय सो और दूसरा एक ओरसे टूटकर दूसरी तरफ निकले है ॥

कांडभग्नके सामान्य लक्षण ।

स्रस्तांगताशोथरुजातिवृद्धिः ॥ संपीडच्य मानेभवतीहशब्दः
स्पर्शा सहस्पंदनतोदशूलाः । सर्वास्ववस्थासुनशर्मलाभो
भग्नस्यकांडेखलुचिह्नमेतत् ॥

अर्थ--अंगोंमें शिथिलता, सूजन घोर पीडा, जिस स्थानकी हड्डी टूटी होय उस जगे पीडाके साथ शब्द होय । हाथके लगानेसे सहा न जाय । हड्डी फाडके सुई छेदने कीसी पीडा होय और शूल होय, कभी चैन न पडे कांड इस शब्दसे नलक, कपाल, वलय, तरुण और रुचक इन पांच प्रकारकी हड्डीन्का संग्रह होय है कांडभग्नके १२ बारह भेदोंसे अधिक भेद होते हैं उन्को कहते हैं ॥

कांड भग्नके बारहों भेदोंसे ये अधिक प्रकार होते हैं ।

भग्नंतुकांडंबहुधाप्रयातिसमासतोनामभिरेवतुल्यम् ॥

अर्थ–कांडोंमें अनेक प्रकारके भंग होते हैं; सो जिस जिस ठिकाने जैसी आकृतिका होय उसका उसी प्रकारका नाम कहना चाहिये ॥

कष्टसाध्य ।

अल्पाशनोनात्मवतांजंतोर्वातात्मकस्यच ।
उपद्रवैर्वाजुष्टस्यभग्नंकृच्छ्रेणसिद्ध्यति ॥

अर्थ–थोडा खानेवाला और जिसकी इन्द्री स्वाधीन न होय, वात प्रकृतिवाले की ज्वरादि उपद्रव संयुक्त ऐसे पुरुषकी हड्डी टूटनेसे बडे कष्टसे साध्य होय ॥

असाध्य लक्षण ।

भिन्नंकपालंकट्यांतुसंधिमुक्तंतथाच्युतम् ।
जघनंप्रतिपिष्टंचवर्जयेत्तुविचक्षणः ॥

अर्थ–कमरकी कपाल हड्डी टूट गई हो, अथवा संधिके पासकी हड्डी हट गई हो अथवा स्थानमें छूट गई हो और जंघाकी हड्डीका चूर हो गया हो, ऐसे रोगीको वैद्य त्याग दे ॥

अन्य असाध्य लक्षण।

अंसंश्लीष्टकपालंचललाटंचूर्णितंचयत्।
भग्नंस्तनांतरेपृष्ठेशंखेमूर्ध्निचवर्जयेत् ॥

अर्थ–ललाटकी हड्डीके टुकडा टुकडा हो परस्पर दूर हो जाय, जुडनेके कामके न रहे अथवा स्तनके बीचकी अथवा पीठकी अथवा शंख (कनपटी) की हड्डी मस्तककी हड्डी टूट गई हो उसको वैद्य त्याग दे ॥

उपद्रव करनेसे असाध्यत्व।

सम्यक्संधितमप्यस्थिदुर्निक्षेपनिबंधनात्।
संक्षोभाद्वापियद्गच्छेद्विक्रियांतच्चवर्जयेत् ॥

अर्थ–हड्डी भले प्रकार जुड भी गई हो उसको अच्छी रीतिसे न राखै अथवा अच्छी रीतिसे बांधे नहीं उसमें किसीका धक्का लगनेसे फेर जैसा का तैसा हो जाता है और यह साध्य नहीं होय इसको वैद्य त्याग दे ॥

पृथक् २ अस्थि पृथक् रीतिसे भग्न होती है।

तरुणास्थीनिनम्यंतेभिद्यंतेनलकानिच।
कपालानिविभज्यंतेस्फुटंतिरुचकाणिच ॥

अर्थ–तरुण हड्डी नव जाती है या टेढी हो जाय, नलकी हड्डी चिर जाती है, कपालास्थी फूटकर टूक टूक हो जाय, रुचकास्थी (दंतादिक) हड्डी टुकडा होकर गिर पडे ॥

भग्न चिकित्सा।

भग्नान्युपचरेद्धीमान्सेकलेपनबंधनैः।
शीतलैरेवविविधैःप्रयोगैश्चसमीरितैः ॥

अर्थ–टूटे हुए अवयवों पर सेचन लेपन बंधन ये तथा अनेक प्रकार के शीतल उपचार जो कहे हैं वो करे ॥

भग्न का बंधन।

तत्रातिशिथिलेबंधेसंधिस्थैर्यंनजायते। गाढेनापित्त्वगादीनां
शोफोरुक्पाकएवच ॥ तस्मात्साधारणंबंधंभग्नेशसंतितद्विदः ॥

---

१ सुश्रुते–जानुनितंबांसगण्डतालुशंखवंक्षणशिरःसुकपालानीति।

अर्थ-टूटे हुए स्थान को सिथिल बांधनेसे संधि ठीक २ नहीं मिले और बहुत तंग करनेसे सूजन पीडा और पाक होता है इस वास्ते साधारण (न बहुत शिथिल न बहुत करड़ा) ऐसा बांधे॥

भग्न पर कर्म।

आदौभग्नंविदित्वातुसेचयेच्छीतलांबुना।
पंकेनालेपनंकुर्याद्बंधनंचकुशान्वितम्॥

अर्थ-हड्डी टूटी होनेसे प्रथम उस पर शीतल जल गेरे, फिर कीचका लेप करे, फिर कुशादिसे बांधे॥

हड्डी बाँकी होगई हो उसपर उपचार।

अवनामितमुन्नम्येदुन्नतंचावपीडयेत्।
क्षिप्तंद्विधापिचस्थानेसंस्थाप्याविधिमाचरेत्॥

अर्थ-हड्डी नीची होगई होय तो उसको सीधी करे-और जो उठ आई होय तो उस को बैठार देवे और यदि टूटकर टुकड़े होगये होय तो दोनों तरफ ठीक २ बैठार कै फिर बंधनादिक क्रिया करे॥

लेप।

आलेपनार्थंमंजिष्ठंमधुकंचाम्लपेषितम्।
शतधौतघृतोन्मिश्रंशालिपिष्टंचलेपनम्॥

अर्थ-मजीठ और मुलहटी इनको नींबू के रसमें पीस उस सौ वारका धुला हुआ घृत और चावलोंका चून मिलायकै लेप करै॥

न्यग्रोधादि क्वाथ।

न्यग्रोधादिकषायंतुशीतलंपरिषेचने।
पंचमूलीविपक्वंतुक्षीरंदद्यात्सवेदने॥

अर्थ-टूटे हुए हड्डी वाले को न्यग्रोधादि काढे को शीतल करकै उसमेंसे सेचन करे यदि अत्यंत पीडा होती होय तो पंचमूलका काढा करकै उससे सेचन करे॥

शृगालविन्नारसपान।

मूलंशृगालविन्नायाःपीत्वामांसरसेनतु।
चूर्णीकृत्वातुसप्ताहादस्थिभंगमपोहति॥

अर्थ-पिठवनकी जड का चूर्ण कर उस को मांस रससे सातदिन पीनेको देवे तो आस्थिभंग को नाश करे॥

आभादिचूर्ण।

आभाचूर्णमधुयुतमस्थिभंगेत्र्यहंपिबेत् ॥
पीत्वाचास्थिभवेत्सम्यक्वज्रसारनिभंदृढम् ॥

अर्थ–बबूरके बीजोंका चूर्ण तीनदिन सहतमें मिलायकै खाय तो हड्डी वज्रके समान मजबूत होवे ॥

क्षीरपान।

गृष्टिक्षीरंससर्पिष्कंमधुरौषधसाधितम् ।
शीतलंलाक्षयायुक्तंप्रातर्भग्नेपिबेन्नरः ॥

अर्थ–प्रातः काल,ओसर गौके दूधमें मिष्ट,औषध डालकै औटावे उसमें घी और लाखका चूर्ण डालके शीतल होनेपर पीनेको देवे, तो अस्थिभंग नष्टहोय॥

प्रकारांतर।

समृतंचास्थिसंधानंलाक्षागोधूममर्जुनम् ।
संधिमुक्तेस्थिभंग्नेचापिबेत्क्षीरेणमानवः ॥

अर्थ–लाख, गेंहूं, कोहकीछाल, इनके चूर्णको दूध और घीमें मिलायकै पीवे तो मुक्तिसंधि (हड्डियोंका अलग २ होजाना) तथा टूटी हड्डी इन पर संधानार्थ (जुडनेको) देवे ॥

रसोनादिकल्क।

रसोनमधुलाक्षाज्यसिताकल्कंसमिश्रितम् ।
छिन्नभिन्नच्युतास्थीनांसंधानमचिराद्भवेत् ॥

अर्थ–लहसन, सहत, लाख और खांड, इनका कल्क घी डालकै देवे तो छिन्न भिन्न हड्डी को बहुत जल्दी जोडे ॥

लाक्षादि गुग्गुल।

लाक्षास्थितंहृत्ककुभाश्वगंधाचूर्णीकृतानागबलापुरश्च ।
संभग्नमुक्तास्थिरुजंनिहन्यादंगानिकुर्यात्कुलिशोपमानि ॥

अर्थ–लाख, हडसंकरी, कोहवृक्षकी छाल, असगंध, नागबला और गूगल इनके चूर्णको अस्थिभंग, तथा मुक्तास्थि इन पर देवे तो इनको दूरकरे और देहको वज्रके समान करे ॥

आभादि गुग्गुलु।

आभाफलत्रिकव्योषैःसर्वैरेतैःसमांशकैः। तुल्यगुग्गुलुनायोज्यं
भग्नसंधिप्रसाधकम् ॥ सव्रणस्यतुभग्नस्यव्रणंसर्पिर्मधूत्तरैः ॥

प्रतिसायंकषायैस्तुशेषंभग्नवदाचरेत् । वातव्याधिविनिर्दिष्टं स्नेहंतत्रापियोजयेत् ॥

अर्थ-बबूरकेबीज, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आँवला, ये सब समान भागलेवे और सबके समान गूगल डाले, इसको भग्नास्थीके जोडनेको देवे और सव्रण भग्न वालेको घी और सहत डालकै भग्नके ऊपर कहे हुए काढेनसे धोयके फिर सब भग्नके समान क्रियाकरे, तथा वात व्याधि पर कहे हुए स्नेह देवे ॥

वल्लिजभस्म ।

वल्लिजंभस्ममधुनापातव्यंहितभोजिना ।
संधिभग्नेस्थिभंगेचविशेषेणप्रशस्यते ॥

अर्थ-संधिभंग और अस्थिभंग इनपर पथ्य करके मूंगाकी भस्म सहतके साथ देवे यह विशेष करके उत्तम है ।

गोधूम प्रयोग ।

ईषद्विदग्धगोधूमचूर्णपीतंसमाक्षिकम् । कटिसंधिषुभग्नेषुभग्ने ष्वस्थिषुपूजितम् ॥ अविदाहिभिरन्नैश्वपिष्टकैः समुपाचरेत्॥ मासंमांसरसंक्षीरंसर्पिर्यूषंचमुद्गजम् । बृंहणंचान्नपानंचसंधिभग्नायदापयेत् ॥

अर्थ-कुछ २ भुनेहुए गेंहूंके चूनको सहतसे देवे, वो कमर, तथा संधीके टूटनेसे अथवा हड्डी टूटनेसे उसपर उत्तम है, तथा संधिभग्नवालेको दाह न करनेवाले अन्न, पिष्टपदार्थ और मांसरस, दूध, घी, मूंगका यूष और पौष्टिक ऐसे अन्न और पान ये पदार्थ महीनाभर देवे ॥

अपथ्य ।

लवणंकटुकंक्षारंसाम्लंमैथुनमातपम् । व्यायामंचनसेवेतभग्नोरूक्षान्नमेवच ॥ बालानांतरुणानांचभग्नान्याशुभवंतिवै । समीचीनंनवृद्धानांभग्नानांचविशेषतः ॥

अर्थ-लवण, चर्चरा, खारी, खट्टा, मैथुन, धूप, कसरत, रूक्षान्न, व्रण रोग-वाला मनुष्य इनको सेवन न करे और बालक के जवानोंमें व्रण शीघ्र अच्छे होते हैं और वृद्धोंके व्रण अच्छे नहीं अर्थात् कठिनतासे देरमें अच्छे होते हैं ॥

इति श्रीबृहन्निघंटुरत्नाकरे भग्नरोगस्यनिदानंचिकित्सा समाप्ता ।

अथ नाडीव्रण।

नाडीव्रण हर कर्मविपाक।

परेषांव्रणभेदेनमुष्टिघातेनचैवहि। असत्यवचनाच्चैवप्लीहाश्लीलयुतस्तथा॥ नाडीव्रणीचजायेततद्रोगस्यापनुत्तये। चांद्रायणंचातिकृच्छ्रप्रतिचांद्रायणंचरेत्॥ अतिरौद्रेणसूक्तेनशतमष्टोत्तराहुतीः। कूष्मांडहोमः कर्तव्यः सोमारुद्रजपस्तथा॥ यत्किंचेदमिमंसम्यग्जपेदयुतसंख्यया॥

अर्थ–दूसरेके घावको भेद अथवा मुक्का (घूसा) मारने आदिसे दुःख देय अथवा असत्य भाषणकरे इस पापसे प्लीहा और नाडीव्रण होतेहैं. उस पापको दूर करके चांद्रायण व्रत करके अति कृच्छ्रव्रत करे, इस प्रकार प्रति चांद्रायणके साथ करे, तथा " अतिरौद्रेण " इस ऋग्वेदीय सूक्तसे अष्टोत्तर १०८ शत हवन करे; तथा कूष्मांड (पेठा) हवन, तथा " सोमारुद्रा" और ' यत्किंचेद ' इन सूक्तोंका दशहजार जप करे।

नाडीव्रण निदान।

यःशोथमाममतिपक्कमुपेक्षतेज्ञोयोवाव्रणंप्रचुरपूयमसाधुवृत्तः। अभ्यंतरंप्रविशतिप्रविदार्यतस्यस्थानानिपूर्वविहितानिततःसपूयः। तस्यातिमात्रगमनाद्गतिरिष्यतेतुनाडीचयद्वहतितेनमतातुनाडी॥

अर्थ–जो मूर्ख मनुष्य पके हुए फोडेको कच्चा समझकर उपेक्षा करे, किंवा बहुत राध पडे; फोडेकी उपेक्षाकर दे, तब वो बढी हुई राध पूर्वोक्त त्वङ्मांसादिक स्थानमें जायकर उनको भेदकर वो बहुत भीतरी पहुँच जाय, तब एक मार्गकर उस्में वह राध नाडीके समान बहे, इसीसे इस्को नाडीव्रण (नासूर) कहते हैं॥

संख्यारूप संप्राप्ति।

दोषैस्त्रिभिर्भवतिसापृथगेकशश्चसंमूर्च्छितैरपिचशल्यनिमित्ततोन्या॥

अर्थ–पृथक् पृथक् दोषोंसे ३ सन्निपातसे १ और शल्यसे १ ऐसे नाडीव्रण पांच प्रकारका है॥

सामान्य चिकित्सा।

नाडीनांगतिमन्वीक्ष्यशस्त्रेणोत्पाट्यकर्मवित्। सर्वव्रणक्रमं

कुर्याच्छोधनारोपणादिकम् ॥ कृशदुर्बलभीरूणांनाडीमर्माश्रितातुया । क्षारमूत्रेणसंछिंद्यान्नशस्त्रेणकदाचन ॥

अर्थ–नाडियोंकी गति निश्चय करकै उनको कुशल वैद्य शस्त्रसे फाडे (चीरादेवे) और सर्व व्रण क्रम से उनका शोधन रोपणादिक क्रियाकरे, तथा कृश, दुर्बल और भयभीत ऐसे रोगीके मर्माश्रित नाडी व्रणको क्षार मूत्रादिकसे छेदन करे, शस्त्रसे कदाचित् नतोडे ॥

वातनाडी व्रण ।

तत्रानिलात्परुषसूक्ष्ममुखीसशूला
फेनानुविद्धमाधिकंस्रवतिक्षपासु ॥

अर्थ–वादीसे नाडी व्रणका मुख रूखा, तथा छोटा होय और शूल होय, उस्में से फेन युक्त स्राव होय, रात्रिमें अधिकस्रवे ॥

सामान्य चिकित्सा ।

नाडीवातकृतंसाधुपाटितांलिखयेद्भिषक् ।
प्रत्यक्पुष्पाफलयुतैःतिलैःपिष्टैःप्रलेपयेत् ॥

अर्थ–वातजन्य नाडी व्रणको शस्त्रसे चीरकै लेखन क्रियाकरे और सपेद ओंगाके बीज तथा तिल पीसके उसका लेप करे ॥

पित्तनाडी व्रण ।

पित्तात्तुतृट्ज्वरकरोपरिदाहयुक्तापीतंस्रवत्याधिकमुष्णमहःसुचापि॥

अर्थ–पित्तके नाडी व्रणमें प्यास, ज्वर और दाह होय, उस्मेंसे पीलेरंगका और बहुत गरम राध स्रवे और दिनमें स्राव अधिक होय ॥

सामान्य चिकित्सा ।

पैत्तिकंतिलमंजिष्ठानागदंतीनिशाह्वयैः ॥

अर्थ--पित्तजन्यनाडी व्रणको तिल मजीठ, नागदौना और हलदी इनका लेप करे ॥

कफ नाडी व्रण ।

ज्ञेयाकफाद्बहुधनार्जुनपिच्छिलास्रास्तब्धासकंडुररुजारजनीप्रवृद्धा।

अर्थ–कफजनाडी व्रणमें सपेद, गाढी, चिकनी राध निकले खुजली चले रातमें स्राव बहुत होय ॥

सामान्य चिकित्सा।

श्लैष्मिकींतिलयष्टयाह्वनिकुंभारिष्टसैंधवैः।

अर्थ–कफजन्य नाडी व्रणको तिल, मुलहटी, दंती, नीमकी छाल और सैंधानिमक इनका लेप करे॥

शल्यजनाडीव्रण।

नष्टंकथंचिदनुमार्गमुदीरितेषुस्थानेषुशल्यमचिरेणगतिंकरोति। साफेनिलंमथितमुष्णमसृग्विमिश्रंस्रावंकरोतिसहसासरुजंचनित्यम्॥

अर्थ–किसी प्रकारसे शल्य (कंटकादि) उक्तस्थानमें पहुँच कर टूट जाय तो नाडीव्रणको उत्पन्न करै उस नाडीव्रणमेंसे झाग मिला तथा रुधिर युक्त मथेके समान गरम नित्य राध बहे तथा पीडा होय॥

सामान्य चिकित्सा।

शल्यजांतिलमंजिष्ठमध्वाज्यैर्लेपयेन्मुहुः॥

अर्थ–सशल्य नाडीव्रणको तिल, मजीठ, सहत और घी इनको वारंवार लेप करे॥

सन्निपातजन्यनाडीव्रण।

दाहज्वरश्वसनमूर्च्छनवक्त्रशोषायस्यांभवंतिविहितानिचलक्षणानि। तामादिशेत्पवनपित्तकफप्रकोपाद्घोरामसुक्षयकरीमिवकालरात्रिम्॥

अर्थ–जिस नाडीव्रणमें दाह, ज्वर, श्वास, मूर्च्छा, मुखका सूखना और पूर्वोक्त लक्षण होंय उस्को त्रिदोषकोपजन्य नाडीव्रण जानना, यह भयंकर प्राणनाश करनेवाली कालरात्रिके समान जाननी॥

साध्यासाध्य।

नाडीत्रिदोषप्रभवानसिध्येच्छेषाश्चतस्रःखलुयत्नसाध्याः॥

अर्थ–त्रिदोषजन्य नाडीव्रण साध्य नहीं होय, बाकीके चार नाडीव्रण यत्न करनेसे साध्य होते हैं॥

नाडीव्रणपर जात्यादिवर्त्ती।

जात्यर्कशम्याककरंजदंतीसिंधूत्थसौवर्चलयावशूकैः।
वर्तिःकृताहंत्यचिरेणनाडींस्नुक्क्षीरपिष्टासहसैंधवेन॥

अर्थ—चमेली, आक, अमलतासका गूदा, करंज, दंती, सैंधानिमक संचरनिमक, जवाखार, इन सबको एकत्र खरलकर उसकी बत्ती बनायके व्रणमें प्रवेश करे, अथवा थूहरका दूध, सैंधानिमक इनको एकत्र खरलकर बत्ती बनायके व्रणमें प्रवेश करे तो नाडीव्रण अच्छा होय॥

निर्गुंडी तैल।

समूलपत्रांनिर्गुंडीपीडयित्वारसेनतु।
तेनसिद्धं समंतैलंनाडीदुष्टव्रणापहम्॥

अर्थ—जडपत्तेसहित निर्गुंडीके वृक्षको कूट उसका रस निकालले उस रसके बराबर तेल मिलायके औंटावे जब रस सूखजावे तब तेलको उतारके छानले यह नाडीव्रणसंबंधी दुष्ट व्रणोंको नाश करे॥

नरास्थि तैल।

नरास्थितैललेपनस्फुटितःशुष्यतिव्रणः।

अर्थ—मनुष्यकी हड्डीके तेलसे फूटाहुआ व्रण सूखता है॥

विडंगाद्य गुग्गुलु।

विडंगत्रिफलाव्योषचूर्णंगुग्गुलुनासमम्। सर्पिषावटिकाकुर्यात्खादेद्वाहितभोजनः॥दुष्टव्रणापचीमेहकुष्ठनाडीविशोधनः॥

अर्थ—वायविडंग, हरड, बहेडा, आँवला, सोंठ, मिरच, पीपल, इनके चूर्णके समान गूगल लेवे सबको घीमें खरलकर गोली बनावे. इसको सेवन करे और पथ्यसे रहे तो दुष्टव्रण, अपची, प्रमेह, कोढ, नाडीव्रण इनकी शुद्धि करे॥

आरग्वधादि वर्त्ती।

आरग्वधनिशाकोलचूर्णाज्यक्षौद्रसंयुता।
सूत्रवर्त्तिर्व्रणेयोज्याशोधनीगतिनाशिनी॥

अर्थ—अमलतास, हलदी, और बेर इनका चूर्ण करके उसमें सहत और घी डाल इसमें सूतकी बत्तीको भिगोयके उस व्रणमें रक्खे, यह व्रणको शोधन करनेवाली तथा व्रणकी गतिको नाश करनेवाली है॥

गुग्गुलादि लेप।

गुग्गुलुस्त्रिफलाव्योषैःसमांसैश्चाज्ययोजितः।
नाडीदुष्टव्रणंचाभिजयेदपिभगंदरम्॥

अर्थ—गूगल, त्रिफला, सोंठ, मिरच, पीपल, ये समान भाग लेवे-सबको पीसके लेप करे तो दुष्ट नाडीव्रणको और भगंदरको नाश करे॥

व्रणरोगपर पथ्य ।

यवषष्टिकगोधूमपुराणाःसितशालयः । मसूरतुवरीमुद्गयूपश्चणकशर्कराः ॥ विलेपीलाजमंडश्चजांगलामृगपक्षिणः । घृतंतैलंपटोलंचवेत्राग्रंचालमूलकम् । वार्ताकंकारवेल्लंचककोंटंतंदुलीयकम् ॥ एतत्पथ्यंनरैःसेव्यंयथावस्थंयथामलं ॥ व्रणशोथे व्रणेसद्योव्रणोनाडीव्रणेपिच ॥

अर्थ–जव, साठी चावल,गेंहूं,पुराने सफेद शालि,मसूर,तुवरी,मूगोंका यूष, चणा,शर्करा,यवागू विशेष,खील,मंड,जांगल देशके मृग पक्षी,घृत,तैल, परवल, जलवेतस, नेत्रवालाकी जड़ वैंगन, करेली, ककोडे, चौलाई ये पथ्य वस्तु मनुष्योंने व्रणशोथ सद्योव्रण नाडीव्रण इनमें सेवन करनी योग्य है ॥

अपथ्य ।

रूक्षाम्लशीतंलवणंव्यवायमायासमुच्चैःपरिभाषणंच । प्रियासमालोकनमह्निनिद्रांप्रजागरंचंक्रमणंनितांतम् ॥ शोकंविरुद्धाशनमंबुपानंतांबूलशाकानिचपत्रवंति । अजांगलंमांसमसात्म्यमन्नंविवर्जयेत्संततमप्रमत्तः ॥

अर्थ–रूक्ष खट्टा शीत लवण स्त्रीसंग परिश्रम ऊंचे स्वरसे भाषण करना स्त्रियोंको देखना दिनमें सोना रात्रिमें जागना हर वक्त फिरना शोक विरुद्ध भोजन अति जलपांन तांबूल पत्तोंवाला शाक जांगल वर्जित देशोंके जीवोंका मांस असात्म्य अन्न अप्रमत्त हुआ व्रणरोगवाला मनुष्य इनको निरंतर वर्ज देवे ॥

इति श्रीबृहन्निघण्टुरत्नाकरे नाडीव्रणरोगस्य निदानचिकित्सा समाप्ता ॥

भगंदर।

भगंदर रोगका कर्मविपाक ।

स्वगोत्रस्त्रीप्रसंगेनजायतेचभगंदरी । तेनापिनिष्कृतिःकार्यामेषदानेनयत्नतः । देवानांयोमुखंहव्यवाहनःसर्वपूजितः । तस्मात्त्वंवाहनंपूज्यंदेवैःसेंद्रैर्महर्षिभिः । भगंदरःपूर्वकर्मविपाकोत्थंतुयन्मम । तत्सर्वंनाशयक्षिप्रंसौख्यंचापिप्रवर्धय ॥

अर्थ-अपने गोत्रकी स्त्रीके साथ गमन करनेसे भगंदर रोगी होय है, उस प्राणीको स्वर्ण खुर, रौप्य शृंग, इत्यादि लक्षण युक्त मेष दान करे तथा जो अग्नि देवोंका मुख है, तथा सर्व जिसकी पूजा करे है, अतएव हे अग्ने ! तू इन्द्रादिक संपूर्ण देव और ऋषियोंको पूज्य है, इसवास्ते मेरे कर्मसे उत्पन्न जो भगंदर व्याधि इसको शीघ्र नाशकर और मेरेको सुखकी वृद्धि कर दे इस प्रकार अग्निकी स्तुति करे।

भगंदर निदान ।

गुदस्यद्व्यंगुलेक्षेत्रेपार्श्वतःपिटिकार्तिकृत् ।
भिन्नोभगंदरंज्ञेयःसचपंचविधोमतः ॥

अर्थ--गुदाके समीप दो अंगुल ऊंची पिछाडी एक पिटिका (फुंसी) होय उसमें बहुत पीडा होय, वह पिटिका फूट जाय उसको भगंदर रोग कहते हैं। सुश्रुतने इसकी निरुक्ति इस प्रकार करी है, यथा- 'गुदभगबस्तिदारणात् भगंदरः' इति। भग शब्द इस जगे गुदा वाचक है सो (भोजने) कहा भी है। "भगंपरिसमंताच्च गुदबस्तिस्तथैवच । भगवद्दारयेद्यस्मात्तस्माज्ज्ञेयोभगंदरः" इति । यह भगंदररोग पांचप्रकारकाहै। यह संख्या कहना केवल रक्तज,द्वंद्वज, भगंदर संभावना निवारणार्थ जानना इसके पूर्वरूप ग्रन्थान्तरोंसे लिखते हैं॥

कटीकपालनिस्तोददाहकंडूरुजादयः ।
भवंतिपूर्वरूपाणिभविष्यंतिभगंदरे ॥

अर्थ-कमरमें कपालास्थीमें सुईसी चुभे, दाह होय, खुजली चले, पीडा होय ये लक्षण जब भगंदर होन हार होय है तब होते हैं । इस जगे भी कपालास्थी पूर्वोक्त जाननी अर्थात् जो नाडीव्रणमें कहि आये हैं ॥

भगंदर शब्दकी निरुक्ति ।

भगोपरिसमंताच्चगुदबास्तितथैवच ।
भगवद्दारयेद्यस्मात्तस्माज्ज्ञेयोभगंदरः ॥

अर्थ-भग व लिंगके चारों तरफ और गुद बस्तिके चारों तरफ भगकी तरह जो विदीर्ण होजावे तिसको भगंदर कहते हैं ॥

शतपोनकके लक्षण ।

कषायरूक्षैरतिकोपितोनिलस्त्वपानदेशेपिटिकांकरोतियाम् ।
उपेक्षणात्पाकमुपैतिदारुणंरुजाचाभिन्नारुणफेनवाहिनी ॥
तत्रागमोमूत्रपुरीषरेतसांव्रणैरनेकैःशतपोनकंवदेत् ॥

अर्थ-कषेले और रूखे पदार्थ खानेसे वायु अत्यंत कुपित होकर गुदास्थानमें जो पिटिका (फुंसी) प्रगट करे, उनकी उपेक्षा करनेसे वे फुंसी पके और फूट जाय तब पीडा होय तथा लाल झागमिली राध बहे तथा उस्में अनेक छिद्र होजाय उन छिद्रोंमे मूत्र,मल और रेत (शुक्र) बहे चालनी केसे अनेक छिद्र होय इसी कारण इस रोगको शतपोनक ऐसे कहते हैं। शतपोनक नाम संस्कृतमें चालनीकाहै ॥

उष्ट्रशिरोधरके लक्षण।

प्रकोपणैःपित्तमतिप्रकोपितंकरोतिरक्तांपिटिकांगुदाश्रिताम्।
तदाशुपाकाहिमपूयवाहिनींभगंदरंतूष्ट्रशिरोधरंवदेत् ॥

अर्थ-पित्तकारक पदार्थ खानेसे कुपित भया जो पित्त सो गुदामें लाल रंगकी पिटिका उत्पन्न करे वो शीघ्र पककर उन्मेंसे गरम राधबहे ये पिटिका (फुंसी) ऊंटकी नाडके समान होय इसीसे इस्को उष्ट्रशिरोधर नाम कहतेहैं॥

शंबूकावर्तके लक्षण।

बहुवर्णरुजास्रावाःपिटिकागोस्तनोपमाः ।
शंबूकावर्तवन्नाडीशंबूकावर्तकोमतः ॥

अर्थ-जिस्में गौके थनके समान अनेक पिडिका होय उन्का रंग पीडा और स्राव अनेक प्रकारका होय और व्रण शंखके आंटेके समान गोल होय, इस्को शंबूकावर्त कहते हैं ॥

परिस्रावी भगंदरके लक्षण।

कंडूयनोघनस्रावीकठिनोमंदवेदनः ।
श्वेतावभासः कफजःपरिस्रावीभगंदरः ॥

अर्थ-कफसे प्रगट भया भगंदर उस्में खुजली चले तथा उस्मेंसे गाढी राध बहे तथा वो पिटिका कठिन होय,उस्में पीडा थोडी होय उन्का वर्ण सपेद होय उस्को परिस्रावी भगंदर कहतेहैं ॥

अर्श भगंदर।

कफपित्तेसपित्तोत्थेगुदमाश्रित्यकोपतः। अर्शोमूलेततःशोथः कंडूदाहादिमान्भवेत् ॥ सशीघ्रंपक्वाभिन्नोस्यक्लेदयन्मूलमर्शसः। स्रवत्यजस्रंगतिभिरयमर्शोभगंदरः॥

अथ-कफ और पित्त पित्ताधिक्यसे गुदामें प्राप्त हो कुपित हुए बवासीर, पेडूमें सोजा, खुजली, दाह ये रोग मनुष्योंके पैदा करतेहैं और बवासीरकी

जड़को गीली करते हुए येही कफ पित्त शीघ्र पकाते हैं और फोडते हैं और मनुष्यके चलनेसे यह वारंवार झिरताहै ऐसे भगंदरको अर्शभगंदर कहते हैं ॥

उन्मार्गी भगंदर।

क्षताद्गतिःपायुगताविवर्द्धतेह्युपेक्षणात्साक्रमिभिर्विदार्यते।
प्रकुर्वतेमार्गमनेकधामुखैर्व्रणैस्तदुन्मार्गिभगंदरंवदेत् ॥

अर्थ—गुदामें कांटे आदिके लगनेसे क्षत (घाव) होजाय, उस घावकी उपेक्षा करनेसे उस्में कृमि पडजाय, वो कृमि उस क्षतको विदारण करैं, ऐसे वो घाव गुदापर्यंत बढकर पहुँचे तथा कृमि उस्में अनेक मुख करलेवें इस्को उन्मार्गि भगंदर कहते हैं ॥

साध्यासाध्यलक्षण।

घोराःसाधयितुंदुःखाःसर्वएवभगंदराः।
तेष्वसाध्यास्त्रिदोषोत्थक्षतजश्चविशेषतः॥

अर्थ—सब भगंदर दुःसाध्य हैं तिस्में भी त्रिदोषका भगंदर असाध्य है और क्षतज विशेष करके असाध्य है ॥

वातमूत्रपुरीषाणिकृमयःशुक्रमेवच।
भगंदरात्प्रस्रवंतिनाशयंतितमातुरम् ॥

अर्थ—जिस भगंदरमेंसे अधोवायु, मूत्र, विष्ठा, कृमि और वीर्य बहे उस रोगीका नाश होय ॥

सामान्य चिकित्सा।

गुदपिटिकायामादौकुर्याद्रक्तावसेचनंमतिमान्।
जलसदनाभिरशोषंसापाकंनप्रयातियथा॥

अर्थ—गुदापर भगंदरकी फुन्सी होनेसे उसका रुधिर निकाले तथा उसमेंसे जल निकल जावे. तथा पके नहीं ऐसी क्रिया करे।

भगंदरपरदंभ।

अपानमार्गपिटिकांदहेत्स्वर्णशलाकया।
अग्निप्रतप्तयापश्चात्कुर्यादग्निव्रणक्रिया॥

अर्थ—अपानमार्गस्थ भगंदरकी फुंसीको सुवर्णकी सलाईसे दागदेवे. फिर अग्निदग्ध व्रणपर जो क्रिया कही है वो करे ॥

अपक्वभगंदरपिटिका पर।

पिटिकानामपक्वानामपतर्पणपूर्वकम्।
कर्मकुर्याद्विरेकांतंभिन्नांयावक्ष्यतेक्रिया॥

अर्थ–जिस भगंदरकी कच्ची फुंसी होवे उसको रुधिरस्रावादिक करके उसपर रेचकादि क्रिया करे. जब वो फूट जावे उसपर जो क्रिया करी जाती है उनको मैं कहता हूँ॥

क्षारादियोग।

एतासांपाटनंक्षारंवह्निदाहादिकंक्रमम्।
विधायव्रणवत्कार्यंयथादोषंयथाक्रमम्॥

अर्थ–इन भगंदरकी फुंसियोंको क्षार अग्निदाह, इत्यादिकोंसे फोडकर फिर क्रमसे प्राप्त व्रणकी क्रिया करे॥

स्यंदन तैल।

चित्रकार्कौत्रिवृत्पाठामलपुहकमारकौ। सुधांवचांलांगलिकीं हरितालंसुवर्चिकाम्॥ ज्योतिष्मतींचसंहृत्यतैलंधीरोविपाचयेत्। एताद्धिस्यंदनंनामतैलंदद्याद्भगंदरे॥ शोधनंरोपणं चैवसवर्णकरणंतथा॥

अर्थ--चित्रक, आक, निसोथ, पाढ, बावची, कनेर, थूहर, वच, कलयारी, हरताल, सज्जीखार, कांगनी इन औषधोंके साथ तेल औटावे, इसको स्यंदन तेल कहते है। इसको भगंदर पर लगावे, यह शोधन और रोपण करे॥

पूर्वोक्तंत्रिफलागुग्गुलुंभक्षयेत्॥

अर्थ–पूर्वोक्त त्रिफला गुग्गुलका सेवन करे तो भगंदर दूर होय॥

निशादि तैल।

निशार्कक्षीरसिंध्वग्निपुंखोलांगलिवत्सकैः।
एभिःप्रसाधितंतैलंभगंदरविनाशनम्॥

अर्थ–हलदी, आकका दूध, सैंधानिमक, चित्रक, सरफोका, मजीठ, कूडा, इनके कल्क वा क्वाथ करके सिद्ध करे हुए तेलसें भगंदर दूर होय॥

करवीर तैल।

करवीरनिशादंतीलांगलीलवणाग्निभिः।
मातुलिंगार्कपयसापचेत्तैलंभगंदरे॥

अर्थ–कनेरकी जड, हलदी, दंती, कलयारी, निमक, चित्रक, विजोरेका रस, और आकका दूध, इनको मिलाय तेल सिद्ध करे, इसको भगंदर पर लगावे ॥

शुनास्थ्यादि लेप तथा नरास्थि तैल।

शुनोस्थिभूलतातक्रपेषिताखररक्तयुक्।
लेपोभगंदरंहन्यान्नरास्थ्नांतैलमेवच ॥

अर्थ--कुत्तेकी हड्डी, गिडोहे, इनको छाँछमें पीस इसमें गधेका रुधिर मिलायके लेप करे तो भगंदरको नाश करे। अथवा मनुष्यकी हड्डीके तेलको लगावे तो भगंदर जाय ॥

बिडालास्थिलेप।

त्रिफलारससंयुक्तंविडालास्थिप्रलेपनम्।
दुष्टव्रणंनिहंत्याशुभगंदरहरंपरम् ॥

अर्थ–हरड, बहेडा, आँवला, इनके काढेमें बिलाईकी हड्डी औंटायकै लेप करे तो दुष्ट व्रण, भगंदर इनको नाश करे ॥

कुष्ठादिलेप।

कुष्ठंत्रिवृत्तिलादंतीमागधीसैंधवंमधु ।
रजनीत्रिफलातुत्थंहितंस्याद्व्रणलेपनम् ॥

अर्थ–कूठ, निसोथ, तिल, दंती, पीपल, सैंधानिमक, सहत, हलदी, हरड, बहेडा, आँवला, नीलाथोथा, इनका लेप भगंदरके घाव पर उत्तम है ॥

रसांजनादिकल्क।

रसांजनंहरिद्रेद्वेमंजिष्ठानिंबपल्लवाः।
त्रिवृत्तेजावतीदंतीकल्कोनाडीव्रणापहः ॥

अर्थ–रसोत, दारुहलदी, हलदी, मजीठ, नीमके पत्ते, निसोथ, कांगनी, दंती, इनके चूर्णको लेप नाडीव्रणका नाशक है ॥

वटपत्रादिलेप।

वटपत्रेष्टिकाशुंठीगुडूचीसपुनर्नवाः ।
सुपिष्टाःपिटिकाबस्तेलेपःशस्तोभगंदरे ॥

अर्थ–वडकी कली, ईटका चूर्ण (कूकुआ) सोंठ, गिलोय, पुनर्नवा, इन सबको पीसके जलसे भगंदर पर लेप करे ॥

तिलादिलेप।

तिलात्रिवृन्नागदंतीमंजिष्ठाज्यैःससैंधवैः।
सक्षौद्रैश्चप्रलेपोयंभगंदरकुलांतकृत्॥

अर्थ-तिल, निसोथ, बडीदंती, मजीठ, घी, और सैंधानिमक इनको पीस सहत मिलाय लेप करे तो भगंदर कुलको नाश करे॥

खदिरादिलेप।

खदीरत्रिफलाक्काथोमहिषीघृतसंयुतः।
विडंगचूर्णसंयुक्तोभगंदरविनाशनः॥

अर्थ-कत्था, हरड, बहेडा, आँवला, इनका काढा भैंसका घी, वायविडंगका चूर्ण इनको डालकै पीवे तो भगंदरको नष्ट करे॥

तिलादिलेप।

तिलाभयालोध्रमरिष्टपत्रंनिशावचाकुष्ठमगारधूमः।
भगंदरेनाडच्युपदंशयोश्चदुष्टव्रणेशोधनरोपणोयम्॥

अर्थ-तिल, हरड, लोध, । नीमके पत्ते, हलदी, वच, कूठ, घरका धूँआ इनको जलमें पीसकै लेप करे तो भगंदर, नाडीव्रण, उपदंश और दुष्ट व्रण इनका शोधन और रोपण करे॥

सप्तविंशतिगुग्गुल।

त्रिकटुत्रिफलामुस्ताविडंगामृतचित्रकम्। चव्यैलेपिप्पलीमू
लंहपुषासुरदारुच।तुंबरुंपुष्करंचव्यंविशालारजनीद्वयम्॥ वि
डसौव्वर्चलक्षारंसैंधवंगजपिप्पली। यावंत्येतानिद्रव्याणिताव
द्विगुणगुग्गुलुः। कालप्रमाणांगुटिकांभक्षयेन्मधुनासह। कासं
श्वासंतथाशोफमर्शांसिचभगंदरम्। हृच्छूलंपार्श्वशूलंचकुक्षि
वस्तिगुदेरुजम्। अश्मरींमूत्रकृच्छ्रंचअन्त्रवृद्धिंतथाकृमीन्॥
चिरज्वरोपसृष्टानांक्षयोपहतचेतसाम्। आनाहंचतथोन्मादस
कुष्ठान्युदराणिच। नाडीदुष्टव्रणान्सर्वान्प्रमेहंश्लीपदंतथा। स
प्तविंशतिकोह्येषःसर्वरोगनिषूदनः॥

अर्थ-सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आँवला, नागरमोथा, वायविडंग, गिलोय, चित्रककी छाल, चव्य, इलायची, पीपरामूल, हाऊबेर, देव-

दारु, तूंबरू, पुहकरमूल, चव्य, इन्द्रायण, हलदी, दारु हलदी, विडनिमक, संचरनिमक, सैंधानिमक, गजपीपल ये समान भाग ले, इन सब चूर्णसे दुगनी गूगल डाले फिर तीन मासेकी गोली बनावे, इसको सहतमें मिलायकै देवे तो खांसी, श्वास, सूजन, बवासीर, भगंदर, हृदयशूल, पार्श्वशूल, कुक्षिशूल, बस्तिशूल, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, अंत्रवृद्धि, कृमिरोग, बहुत दिनका ज्वर क्षय, आनाहवात, उन्माद, कुष्ठ, उदररोग नाडीव्रण, दुष्टव्रण, प्रमेह, श्लीपद इन सबको यह सप्तविंशति गूगल नाश करे ॥

जंबूकमांस प्रकार ।

जम्बूकस्यामिषंभुक्त्वाप्रकारैर्व्यंजनादिभिः ।
अजीर्णवर्जीमासेनमुच्यतेतुभगंदरात् ॥

अर्थ-जंबूक (स्यार) के मांसके व्यंजनादिक पदार्थ भक्षण करे तथा अजीर्ण होने देवे नहीं तो भगंदरसे छूट जावे ॥

भगंदर पर पथ्य ।

आमेसंशोधनंलेपोलंघनंरक्तमोक्षणम् । पक्केपुनःशस्त्रविधिस्त थाक्षाराग्निकर्मच ॥ सर्वत्रशालयोमुद्गाविलेपीजांगलोरसः । पटोलंशिग्रुवेत्राग्रंधत्तूरोवालमूलकम् ॥ तिलसर्षपयोस्तैलंति क्तवर्गोघृतंमधु । एतत्पथ्यंनरैः सेव्यंयथादोषंभगंदरे ॥

अर्थ-विनापके भगंदर रोगमें संशोधन, लेप, लंघन, रक्तका निकालना ये क्रिया करें और पक्कमें शस्त्रविधि, क्षारकर्म, अग्निकर्म करे और शालि, मूग, यवागूविशेष जांगलरस, परवल, सहिंजनेकी छाल,जलवेतस,धतूरा,नेत्रवालाकी जड, तिल व सरसोंका तेल, तिक्तवर्ग, घृत, शहद, भगंदर रोगमें मनुष्योंनें ये पूर्वकही पथ्य औषधियें सेवन करनी योग्य हैं ॥

भगंदर पर अपथ्य ।

व्यायामंमैथुनंयुद्धंपृष्ठयानंगुरूणिच ।
संवत्सरंपरिहरेद्यावद्दृढव्रणोनरः ॥

अर्थ-कसरत, मैथुन, युद्ध, घोडे, ऊंट आदिकी सवारी, बोझा उठाना, व्रण दृढ होनेतक मनुष्य इन पूर्वकहै हुओंको एक वर्ष पर्यन्त त्याग देवे ॥

इति श्रीदत्तरामनिर्मितआयुर्वेदोद्धारे बृहनिघण्टुरत्नाकरे भगंदररोगस्य निदानचिकित्सा समाप्ता ।

उपदंश।

उपदंशका कर्मविपाक।

मातृगामीभवेद्यस्तुतस्यालिंगंविनश्यति । चांडालीगमनेचैव हीनकुष्ठःप्रजायते ॥ तस्यप्रतिक्रियांकर्तुंकुंभमुत्तरतोन्यसेत् । तत्रोपरिकुबेरप्रतिमांसौवर्णींकृष्णवस्त्रावृतांमाल्यभूषितामा वाहनादिनाषोडशोपचारैःप्रत्यहंपूज्ययेत् ॥ अथर्ववेदपाराय णंकुर्यात् । समाप्तेपारायणेप्रतिमांब्राह्मणायदद्यात्॥दानमन्त्रः निधीनामधिपोदेवःशंकरस्यप्रियःसखा। सौम्याशाधिपातिःश्री मान्ममपापंव्यपोहतु॥इमंमंत्रंसमुच्चार्यआचार्याययथाविधि । दद्यादेवंहीनकुष्ठीलिंगनाशीचशुध्यति ॥

अर्थ--जो प्राणी मातासे गमन करे हैं उसके लिंगनाश रोग होय, और चांडालीसे गमन करनेसे सपेद कुष्ठ होय, उसकी शांतिके वास्ते अग्निके उत्तरकी तरफ़ कलश स्थापन कर उस पर कुबेरकी सुवर्णकी मूर्ति बनाय- कै स्थापना करे उसको काले वस्त्र पहनायकै फूलोंकी माला धारण कराय, नित्य प्रति आवाहनादि शोडषोपचार पूर्वक पूजन करकै उसके आगे अथर्व वेदका पारायण करे । उस के समाप्त होने पर उस प्रतिमाको ब्राह्मणके अर्थ दान करदेवे, दान करनेका यह मन्त्र है " निधीनामधिपोदेव इति " इसमें इसका उच्चारण कर यथाविधि आचार्यको देवे, इस प्रकार हीन कुष्ठी और लिंगनाशवान् ये शुद्ध होवे ॥

उपदंशनिदान ।

हस्ताभिघातान्नखदंतघातादधावनाद्त्युपसेवनाद्वा । योनिप्रदोषाच्चभवंतिशिश्नेपंचोपदंशाविविधप्रकाराः ॥

अर्थ--हाथकी चोट लगनेसे, नख दांतके लगनेसे, अच्छीरीतिसे न धोनेसे अत्यन्त स्त्री संगके करनेसे,अथवा योनिके दोषसे(अर्थात् दीर्घकरे बाल जिस्के ऊपरहोय) अथवा खारी गरम जलके धोनेसे,ब्रह्मचर्यवाली स्त्रीसे गमन करनेसे इत्यादि कारणोंसे लिंगमें उपदंश (गर्मीका रोग) होयहै वो पांच प्रकारकाहै ॥

वातोपदंश ।

सतोदभेदस्फुरणैःसकृष्णैःस्फोटैर्व्यवस्येत्पवनोपदंशम् ॥

अर्थ–लिङ्गेन्द्रियके ऊपर काले फोडा उठे, उन्में चोट लगनेकीसी पीडा होय, तोडनेकी सी पीडा होय और स्फुरण ये लक्षण वातोपदंशके जानने ॥

प्रपौंडरीकंमधुकंरास्नाकुष्ठपुनर्नवैः ।
सरलागरुभद्राख्यैर्लेपोवातोपदंशहा ॥

अर्थ–पुंडरीक वृक्ष, मुलहटी, रास्ना, कूठ, पुनर्नवा, सरल, देवदारु, अगर और भद्राख्य इनका लेप वातोपदंश नाशक है ॥

उपदंश पर प्रक्रिया ।

स्निग्धस्विन्नस्यतेष्वादौध्वजमध्येशिराव्यधः ॥ जलौकापात नंवास्याद्दूर्ध्वाधःशोधनंतथा । सद्योपहृतदोषस्यरुक्शोफावुपशाम्यतः । पाकोरक्ष्यःप्रयत्नेनशिश्नक्षयकरस्वसः ॥

अर्थ–उपदंश रोगवालेको प्रथम स्नेह पान करायकै पसीने निकाले और लिंगमें शिरा वेधे अथवा जोंक लगायकै रुधिर निकाले, तथा ऊपर नीचेसैं देहको शोधन करे, इस प्रकार दोष हरण करनेसे पीडा, और सूजन ये न्यून हो, परंतु लिंगको पकने न देवे, पकनेसे लिंगका क्षय होय ॥

पित्तोपदंश तथा रक्तोपदंश ।

पीतैर्बहुक्लेदयुतैःसदाहैःपित्तेनरक्तात्पिशितावभासैः ॥

अर्थ–पित्तके उपदंशकर्के पीले रंगके फोडे होते हैं उन्मेंसे पानी बहुत वहै, दाह होय, रुधिरके उपदंशसे मांसके समान लाल रंगके फोडा होंय ॥

गैरिकादिक्काथ ।

गैरिकांजनमंजिष्ठामधुकोशीरपद्मकैः ।
सचंदनोत्पलैःस्निग्धैःपेयःपित्तोपदंशहा ॥

अर्थ–गेरू, रसोत, मजीठ, मुलहटी, खस, पद्माख, लालचंदन, और कमल, इनका काढा करकै घीके साथ देवे, तो पित्तका उपदंश नाश होय ॥

निंबादिक्काथ ।

निंबार्जुनाश्वत्थकदंबशालजंबूवटोदुंबरवेतसाद्भिः ॥
प्रक्षालनाल्लेपघृतानिकुर्याच्चूर्णंचपितास्रममोपदंशे ॥

अर्थ–नींब, कोह वृक्षकी छाल, पीपलकी छाल, कदंब, साल जामुन, वड, गूलर, और वेत इनका काढा करके उससें धोवे, तथा इसीका लेप करे एवं इन्ही औषधोंसें सिद्ध करा हुआ घी अथवा इनका चूर्ण देवे तो पित्तोपदंशकी शांति होय ॥

कफोपदंशके लक्षण।

सकंडुरैःशोथयुतैर्महद्भिःशुक्लैर्घनस्रावयुतैःकफेन।

अर्थ–कफके उपदंशकर्के सपेद मोटे फोडा होय, उन्में खुजली चले, सूजन होय, और गाढीराध बहै ॥

लिंगवर्त्तिउपदंश।

अंकुरैरिवसंघातैरुपर्य्युपरिसंस्थितैः॥ क्रमेणजायतेवर्तिस्ताम्र चूडशिखोपमा ॥ कोशस्याभ्यंतरेसंधौसर्वसंधिगतापिवा ॥ लिंगवर्तिरितिख्यातालिंगार्शइतिचापरे ॥ कुलित्थाकृतयःके चित्केचित्पद्मदलोपमाः ॥ मेढ्रसंधौनृणांकेचित्केचित्सर्वाश्र याःस्मृताः ॥ रुजादाहार्तिबहुलास्तृष्णातोदसमन्विताः। स्त्री णांपुंसांचजायंतेह्युपदंशाःसुदारुणाः ॥

अर्थ–मुरगाकी चोटीके समान लिंगके ऊपर मांसके अंकुर एकके ऊपर एक प्रगट होय कोशकी भीतरकी मणिमें अथवा सर्व संधियोंमें, तो इस रोगको लिंगवर्ति ऐसे कहते हैं, और कोई लिंगार्श कहते हैं, यह त्रिदोषजन्य है इस्मैं मांसके अंकुर कुलथीके समान, और कोई पद्मदलके समान, किसीके अंडकोशकी संधीमें किसीके सर्व आशयमें होते हैं। पीडा, दाह, बहुत होय, प्यास नोचनेकिसी पीडा होय, स्त्री और पुरुषोंके यह उपदंश घोर पीडाकारक होते हैं इस्में (कुलित्थाकृतयः) यहांसे लेकर (स्त्रीणांपुंसांचजायन्ते) यहांतक पाठ क्षेपक है माधवका नहीं और स्त्रियोंकेभी गरमीका रोग होय है, यह मत सुश्रुतका है परंतु यह आर्ष पाठ नहीं है ॥

सर्वोपदंशपर सर्वव्याधिहरण रस।

हिंगुलोत्थरसंभागंद्वौभागौरसकर्पुरम्। हसतुल्यंबलिंदद्यात्स्व ल्पमध्येतुकज्जलीं॥ दक्षांडेमृत्पुंडपंचवालुकायंत्रगंपचेत्। दिनैकंतुक्रमादग्नौस्वांशीतंचसमुद्धरेत्॥पूजयेद्गुरुविप्राद्यैर्यथा रोगंप्रयोजयेत् । गुंजाचतुष्टयंखादेन्नागवल्लीदलैर्युतम् ॥

षंढोपिलभतेपुंस्त्वंवाजीकरणमुत्तमम् । अपुत्रःपुत्रमाप्नोति जीवेच्चशरदांशतम् ॥वलीपलितहृच्छूलंवातश्लेष्मनिबर्हणम् । अयंव्याधिहरःसूतः पूज्यपादेननिर्मितः ॥

अर्थ–हिंगुलसे निकाला हुआ पारा, १ भाग, रस कपूर २ भाग, गंधक १ भाग इस प्रकार सबको एकत्रकर खरलमें डाल कजली करे फिर इसको मुरगीके अंडेमें भर ऊपरसे पांच कपड मिट्टी करे. फिर इसको वालुकायंत्रमें रख १ दिन क्रमसे अग्निदेवे, जब स्वांग शीतल होजावे तब निकालक गुरु और ब्राह्मणकी पूजाकर जैसी व्याधि होवे उसके अनुसार अनुपानसे ४ रत्तीदेवे तथा उपदंशपर नागरवेल पानके साथ देवे तो नपुंसक होय तो उसको पुरुषत्व प्राप्त होय जिसके पुत्र न होय उसके पुत्र होय और १०० वर्ष जीवे यह व्याधिहरण सेवन करनेसे वलीपलित इनका नाश होकर कफ वात-का नाश होय और प्रमेह उपदंश इनका नाश करे, यह हमारे गुरुने कहाहै ॥

संनिपातोपदंश।

नानाविधस्रावरुजोपपन्नमसाध्यमाहुस्त्रिमलोपदंशम् ॥

अर्थ–जिस उपदंशमें अनेक प्रकारका स्राव होय,पीडा होय यह त्रिदोषज उपदंश असाध्य है ॥

असाध्य लक्षण।

विशीर्णमांसंकृमिभिःप्रजग्धंमुष्कावशेषंपरिवर्जयेत्तु ॥

अर्थ–जिस उपदंश करके लिंगका मांस गल गया होय और कृमि लिंगको खाय जावे, केवल अडंकोश मात्र रहिजाय, उस्को वैद्य त्यागदे ॥

प्रकारांतर।

संजातमात्रेणकरोतिमूढःक्रियांनरोयोविषयेप्रसक्तः। कालेनशोथःकृमिदाहपाकैर्विशीर्णशिश्नोम्रियतेसतेन ॥

अर्थ–उपदंशके होतेही जो मूर्ख मनुष्य विषयमें आसक्त होकर इस्का उप-चार नहीं करे, उस्का लिंग थोडे दिनमें सूजन और कीडेपडे और उस्में दाह और पाकभी होय, पीछे वो गलजाय ऐसा रोगी मरजाय ॥

नीलोत्पलादि लेप।

नीलोत्पलानिकुमुदंपद्मसौगन्धिकानिच। उपदंशेचूर्णयित्वाप्रलेपोयंप्रशस्यते ॥

अर्थ-नीलाकमल, कमोदनी कमल और सौगन्धिक कमल इनका सर्व उपदंश पर लेप परमोत्तम कहा है ॥

दारुहरिद्रादि लेप।

त्वजोदारुहरिद्रायाःशंखनाभिरसांजनम् । लाक्षागोमयनिर्यासंतैलंक्षौद्रंघृतंपयः ॥ एभिःसुपिष्टैर्द्रव्यांशैरुपदंशेप्रलेपयेत् । व्रणास्त्वनेनशाम्यंतिश्वयथुर्दाहएवच ॥

अर्थ-दारुहलदी, शंख, रसोत, लाख, गौके गोवरका रस, तेल, घी, दूध, इनको एकत्र खरल कर इसको उपदंशकी चट्टोंपर लेप करे तो चट सूजन और दाह ये शांति होवे ॥

रसांजनादि लेप।

रसांजनंशिरीषेणपथ्ययाचसमन्वितम् ।
सक्षौद्रंलेपनंयोज्यंसद्योरोपयातिव्रणम् ॥

अर्थ-रसोत, सिरस वृक्षकी छाल, हरड, इनका चूर्ण कर इसका सहतसे लेप करे, तो तत्काल व्रण भर आवे ॥

प्रकारांतर।

गोपीचन्दनतुत्थंचसमभागेनमर्दयेत् ।
कज्जलीजलसंयुक्ताव्रणानांलेपनेहिता ॥

अर्थ-गोपीचन्दन और नीलाथोथा ये समान भाग लेकर घोटे, तथा दोनोंकी कजली करे फिर इसको जलसे घाव पर लगावे तो हितकारी होय ॥

पारदादि लेप।

पारदंगंधकंतालदरदंचमनःशिलां । पृथक्कर्षद्विकर्षंचमुर्दारंशंखजीरकम् ॥ विधायकज्जलीश्लक्ष्णांमर्दयेत्सुरसारसैः । छायाशुष्कांततःकृत्वापुनरुन्मत्तजद्रवैः।विमर्द्याथवटीकार्याह्युपदंशेप्रयोजयेत् । गोघृतेनप्रलेपोयंव्रणानांरोपणेहितः ॥

अर्थ-पारा, गंधक,हरताल, हींगलू मनसिल प्रत्येक एक २ तोले और मुर्दारसिंग तथा शंख जीरा ये दो२तोले इन सबकी बारीक कजली कर तुलसीके रससे खरलकर छायामें सुखायले फिर धतूरेके रससे खरलकर गोली बनावे इसको गोमूत्र में घिसके उपदंश पर लेप करे तो व्रणको भर लावे ॥

वटप्ररोहादि लेप।

वटप्ररोहार्जुनजंबुपथ्यालोध्रंहरिद्रासहितःप्रलेपः ।
सर्वोपदंशेप्यवरोहणार्थंचूर्णंचतज्जंविमलाजलेन ॥

अर्थ–वडके अंकुर, कोह वृक्षकी छाल, जामुन, हरड, लोध, हल्दी, इनका चूर्ण थूहरके दूधमें खरल कर लेप करे तो उपदंशका घाव भरआवे ॥

त्रिफलामषीलेप।

दहेत्कटाहेत्रिफलांतांमषींमधुसंयुताम्।
कृत्वोपदंशेलेपोयंसद्योरोपयतिव्रणम् ॥

अर्थ–हरड, बहेडा, आँवला, इनको कढाईमें जलायकै इनकी स्याहीको सहतमें मिलायकै लेप करे. तो तत्काल उपदंशके व्रणको भरलावे ॥

अश्वत्थादिप्रक्षालन।

अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षवटवेतसजःशृतः।
व्रणशोथोपदंशानांनाशकःक्षालनेस्मृतः ॥

अर्थ–पीपल, गूलर, पाखर, वड, वेत, इनके काढेसे व्रणको धोवे, तो व्रण नाश होय तथा सूजन और उपदंश इनका भी नाशक है ॥

त्रिफलादि प्रक्षालन।

त्रिफलायाः कषायेणभृंगराजरसेनवा।
व्रणप्रक्षालनंकुर्यादुपदंशप्रशांतये ॥

अर्थ–उपदंशके घावकी शांति होनेके वास्ते त्रिफलेके काढेसे अथवा भाँगरेके रससे धोवे तो उपदंशका घाव जाता रहे ॥

जयादि प्रक्षालन।

जयाजात्यश्वमारार्कशम्याकानांदलैःपृथक्।
कृतंप्रक्षालनेक्वाथंमेढ्रंपाकेप्रयोजयेत् ॥

अर्थ–अरनी, चमेली कनेर, आक और अमलतास इनके पत्तोंका पृथक् २ काढा करके पके हुए लिंगको धोवे तो अच्छा होय ॥

पटोलादि क्वाथ।

पटोलनिंबत्रिफलाकिरातैः क्वाथंपिबेद्वाखदिरासनाभ्याम्।
सगुग्गुलुंवात्रिफलायुतंवासर्वोपदंशापहरः प्रयोगः ॥

अर्थ–पटोलपत्र, नींबके पत्ते, हरड, बहेडा, आँवला, चिरायता, इनका काढा पीवे, अथवा खैर, विजेयसार, इनका काढा त्रिफलेके साथ अथवा गूगलके साथ पीवे तो सर्व प्रकारके उपदंश दूर होय ॥

गैरिकादि क्वाथ।

गैरिकांजनमंजिष्ठामधूकोशीरपद्मकैः।
सचंदनोत्पलैःस्निग्धैः पेयःपित्तोपदंशहा ॥

अर्थ–गेरू, रसोत, मजीठ, मुलहटी, खस, पद्माख, चंदन, कमल इनका काढा घृतके साथ देवे तो पित्तोपदंशको नाश करे ॥

आम्रत्वचाकास्वरस।

आम्रत्वचंविनिष्पीडयनिगृह्यस्वरसंपलम् ॥
चतुःपलंत्वजाक्षीरंसंयुक्तंप्रापिबेत्प्रगे।
एवंमुनिदिनंकुर्यादुपदंशव्रणेहितम् ॥

अर्थ–आमकी छालका ४ तोले स्वरस लेकर उसमें १६ तोले बकरीका घी डालके प्रातःकाल पीनेको देवे, इसप्रकार सात दिन देवे तो उपदंश व्रणको हितकारी होयहै अर्थात् उपदंशके व्रणको भरलावे ॥

सर्जिकादि चूर्ण।

सर्जिकातुत्थकासीसशैलेयंसरसांजनम् ॥
मनःशिलासमश्चूर्णंव्रणवीसर्पनाशनम् ॥

अर्थ–सज्जीखार, लीलाथोथा, हीराकसीस, शिलाजीत रसोत, मनसिल, इनका चूर्ण उपदंशके व्रणको तथा विसर्पके व्रणको नष्ट करे ॥

बबूलदलचूर्ण।

बब्बूलदलचूर्णेनदाडिमत्वग्रजोथवा।
गुंडनंलिंगदेशस्थेलेपःपूगफलेनवा ॥

अर्थ–बबूरके पत्तोंका चूर्ण, अथवा अनारकी छालका चूर्ण करके उपदंशपर लगावे, अथवा सुपारीको घिसकर उसका लेप करे ॥

चोपचीनी चूर्ण।

कुडवंचोपचिन्याश्चशर्करायाःपलंतथा ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलंमरिचंदेवपुष्पकम्॥आकल्लंखुरकंशुंठीजंतुघ्नंचवरांगकम् ॥

पृथक्कोलमितंग्राह्यमेतच्चूर्णीकृतंशुभम्॥ सर्वमेकत्रसंयोज्यंक षोर्धंप्रतिवासरे ॥ भक्षयेन्मधुसर्पिर्भ्यांयुक्तंपथ्यंसमाचरेत् ॥ शाल्योदनंतथासूपंतुवरीणांघृतंमधु ॥ गोधूमंसैंधवंशिग्रुंबिंबी कोशातकीफलम् ॥ आर्द्रकंजलमंदोष्णंहितमत्रप्रकीर्तितम्॥ पंचोपदंशरोगाणांप्रमेहाणांतथैवच ॥ व्रणानांवातरोगाणांकुष्ठा नांचविनाशनम् ॥

अर्थ–चोपचीनी १६ तोले, खांड ४ तोले. तथा पीपल, पीपरामूल, कालीमिरच, लौंग, अकरकरा, वंगभस्म, सोंठ, वायविडंग, हरड, बहेडा, आँवला, ये प्रत्येक आधे २ तोले ले इन सबका चूर्ण एकत्रकर इसमेंसे छः मासे चूर्ण नित्य सहत और घीके साथ देवे,और पथ्यमें भात, अरहरकी दाल, घी,सहत,गेहूँ, सैंधानिमक, सहिंजना, कँदूरी, तोरई. अदरख, तथा गरम जल, ये सब पदार्थ हितकारी हैं, इस प्रकार सेवन करे. तो पांच प्रकारके उपदंश, वीस प्रकारके प्रमेह व्रण वादीका रोग और कुष्ठ इनको नाश करे ॥

भूनिंबादिघृत।

भूनिंबनिंबत्रिफलापटोलकरंजजातीखदिरासनानां।
सतोयकल्केघृतमाशुपक्कंसर्वोपदंशापहरंप्रदिष्टम् ॥

अर्थ--चिरायता, नीमकीछाल, हरड, बहेडा, आँवला, पटोलपत्र, कंजा, चमेली, खैरकीछाल, विजैसारकीछाल, इनका पतला कल्क कर उसमें घी मिलाय औटावे जब सिद्ध होजावे तब उतारले,यह संपूर्ण उपदंशोंका नाश करे॥

करंजादिघृत।

करंजबीजार्जुनशालजंबूवटादिभिःकल्ककषायसिद्धम्।
सर्पिर्निहन्यादुपदंशदोषंसदाहपाकंस्रुतिरागयुक्तम् ॥

अर्थ--कंजेके बीज, कोहकी छाल, साल,जामुन और वड इनका काढा तथा कल्क इनमें घृतमिलायके सिद्ध करे तो यह दाह, पाक, स्राव, और दुष्टरंग इन करके युक्त उपदंशको नाश करे ॥

रसघृत।

शुद्धंसुतंपिचुमितंद्विवलिंप्रमर्द्यसर्वंद्विभागनवनीतमपिप्रमर्द्य।
वस्त्रेमलिप्यपिचुमंदविपर्णशाखांसंवेष्टयेन्नतमुखींपरिदीप्यवर्तिं॥

तस्याघृतंस्त्रवतिकाचमयेचपात्रेधृत्वाहिवल्लिदलशाकमिदंप्रदेयम् । सर्वोपदंशकरिकेसरिणंव्रणघ्नंपथ्यादिकंरसघृतेचविवर्जनीयम् ॥

अर्थ--शुद्धपारा १ तोला गंधक २ तोले, दोनोंकी कजली कर इसमें२ तोले मक्खन मिलायके खरल करे फिर इसको कपडेमें चुपडे उस कपडेको नीमकी ओली लकडीके ऊपर लपेट उसको उलटी रखे फिर नीचेसैं आग लगाय देवे, उसमेंसे जो घी टपकै उसको कांचके बरतनमें भरकै धर रखे, इसको पानमें लगायकै खाय तो यह रसघृत संपूर्ण जातिके उपदंशोंको नाशकरे इस पर निमक खाना वर्जित है ॥

आगरधूमतैल ।

अगारधूमोरजनीसुराकिण्वंचतैस्त्रिभिः । भागोत्तरैःपचेत्तैलं कंडुशोथरुजापहं । शोधनंरोपणंचैवसुवर्णकरणंतथा ॥

अर्थ–घरका धूँआ १ भाग, हलदी २ भाग, दारू निकालनेके वास्ते धान भिगोयकर करा हुआ पदार्थ ३ भाग ये सब एकत्र कर इसमें तेल सिद्ध करे, यह खुजली, सूजन, पीडा, इनको नाश करे, तथा शोधन और रोपण है, तथा कांति उत्पन्न करे है ॥

सूतादि वटी ।

भल्लातकींशुद्धसूतंपिप्पलीमूलपिप्पली । आकल्लकंजातिपत्री खुरकंदेवपुष्पकम् ॥ मर्दयेत्समभागेनपुराणगुडमिश्रितम् ॥ उपदंशेषुसर्वेषुप्रमाणंरक्तिकावटी ॥

अर्थ–भिलाए, शुद्धपारा, पीपर, पीपरामूल, अकरकरा, जावित्री वंगभस्म लोंग, ये समान भागले, पुराने गुडमें खरलकर एक रत्तीके अनुमान खाय तो सर्व उपदंश नष्ट होय ॥

उपदंशकुठार ।

कंकुष्टंकुष्टकंचैवतोलैकंतुपृथक्पृथक् । तोलार्धंतुत्थकंग्राह्यं शृंगवेररसेनतु ॥ मर्दयित्वावटीकार्याबदरास्थिमिताभिषक् ॥ शृंगवेररसेनैवसायंप्रातश्चभक्षयेत् ॥ मधुराम्लंमत्स्यदुग्धंकूष्मांडंचविवर्जयेत् ॥ उपदंशकुठारोयंरसःसर्वत्रपूजितः ॥

अर्थ–मुर्दासिंग, १ तोला, कूठ १ तोला, लीलाथोथा आधा तोला, सबको एकत्र कर अदरखके रसमें खरल करकें बेरकी गुठलीके बराबर गोली बनावे इसमेंसे १ गोली, अदरखके रससे सायंकाल और १ गोली प्रातःकालमें देय, ऊपरसे मधुराम्ल, मछली, दूध, पेठा ए पदार्थ खाना त्याग देय, यह उपदंश कुठाररस सर्वत्र मान्य है ॥

रसगंध कजली।

कर्षमात्रंरसंशुद्धंद्विकर्षंगंधकंस्मृतम् ॥ विधिवत्कज्जलींकृत्वा तच्चगोघृतसंयुतम् ॥ माषमात्रंप्रतिदिनंदद्यादेवत्रिसप्तकम् ॥ गोधूमान्नंघृतंपथ्यंकारयेल्लवणंविना ॥ उपदंशापहःश्रेष्ठोयो गोमुनिभिरीरितः ॥

अर्थ–पारा १ तोला, गंधक २ तोले, दोनोंकी कजली करकै १ मासे गौके घीके साथ देवे, इसप्रकार २१ दिन देवे, पथ्यमें गेहूं, और घी, बिना निमकके देना चाहिये, तो यह योग उपदंशको नाशकरे, इसप्रकार मुनीश्वरोंने कहा है ॥

चोपचीनीपाक।

चोपचिन्याभवंचूर्णपलंद्वादशमेवच ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलं मरिचंनागरंत्त्वचम् ॥ आकल्लकंलवंगंचप्रत्येकंकर्षसंमतम् ॥ शर्करासमचूर्णंचपाचयेत्सर्वमेकतः ॥ मोदकंकारयेत्तत्तुएक कर्षप्रमाणतः ॥ सायंप्रातर्निषेव्यस्तुपथ्यंपूर्वोक्तचूर्णवत् ॥ उपदंशेव्रणेकुष्ठेवातरोगेभगंदरे ॥ धातुक्षयकृतेकासेप्रतिश्या येचपक्ष्माणि ॥ सर्वान्रोगान्निहंत्याशुततःपुष्टिकरोभवेत् ॥

अर्थ–चोपचीनीका चूर्ण ४ तोले, तथा पीपल, पीपरामूल, मिरच, सोंठ, दालचीनी, अकरकरा, और लोंग, ये प्रत्येक एक एक तोले लेय, और सब चूर्णके समान मिश्री मिलायकै इसका पाक करे, इसमेंसे १ तोले पाक सायंकाल और प्रातःकालमें देवे, और पथ्य चोपचीनी चूर्णके समान करे, तो उपदंश, व्रण, कोढ, बादीके रोग, भगंदर, क्षय, कास, पीनस, क्षयरोग और संपूर्ण रोग इनको नाश करे, तथा देहको पुष्ट करे ॥

बालहरीतक्यादियोग।

बालपथ्यापलैकंचतुत्थंशाणमितंतथा ॥ निंबद्रवेणसंमर्द्य दृढंसप्तदिनानिवै ॥ गुटिकांचणकप्रायांछायाशुष्कांतुकार

येत् ॥ शीतोदकानुपानेननित्यमेकांप्रदापयेत् ॥ वस्त्राणामेकविंशत्यामुच्यतेतूपदंशतः ॥ शालिगोधूममुद्गाश्चगोसर्पिः पथ्यमीरितम् ॥

अर्थ-छोटी हरड ४ तोले, लीलाथोथा आधा तोले सबको एकत्र करके नींबूके रसकी सात दिन पर्यंत भावना देवे फिर चनेके बराबर गोली बनायले और उनको छाया में सुखाय लेवे फिर इनको शीतल जलके साथ देवे, इस प्रकार २१ दिन देय तो उपदंशसे मुक्त होय इस पर भात गेहूंकी रोटी मूंग और गौका घी पथ्यमें देना ॥

जातिस्वरस ।

जातिप्रवालस्वरसंपलार्धंधनोर्घृतंतत्समरालकिञ्चित्।
पिबेत्प्रगेपंचविधोपदंशेक्षाराद्दतेगोधुममेवपथ्यम् ॥

अर्थ-चमेलीके पत्तोंका स्वरस २ तोले गौका घी २ तोले रार २ तोले सब को एकत्र करके प्रातःकाल देवे तो पांच प्रकारका उपदंश नष्ट होय,इस पर गेहूं (और घी) पथ्य में देना चाहिये । निमक वर्जित है ॥

पथ्य ।

अजाक्षीरंयथाजीर्णगोधूमंपथ्यमाचरेत् ।

अर्थ-उपदंश रोग वालेको जीर्ण होनेके प्रमाण बकरीका दुग्ध,गेहूं पथ्य के लिये देना उचित है ॥

अपथ्य ।

दिवानिद्रांमूत्रवेगंगुर्वन्नंमैथुनंगुडम् ।
आयासमम्लंतक्रंचवर्जयेदुपदंशवान् ॥

अर्थ-दिनमें सोना, मूत्रवेग, भारी अन्न, मैथुन, गुड, परिश्रम, खट्टी वस्तु, तक्र (छाछ) इनको उपदंश रोगवाला मनुष्य सर्वथा वर्ज देवे ॥

शूकदोष ।

शूकदोषनिदान ।

अक्रमाच्छेपसोवृद्धिंयोभिवांच्छतिमूढधीः।
व्याधयस्तस्यजायंतेदशचाष्टौचशूकजाः ॥

अर्थ-जो मन्दबुद्धिवाला पुरुष शास्त्रोक्त क्रमसे विना लिंगको मोटा करा चाहे वो विष कृमिका लिंगके ऊपर लेपादिक करे (अथवा जल योग वात्स्यायन ऋषिके कहे उनका साधन करे) उसके १८ प्रकारके शूकज रोग होय हैं॥

शूकदोषचिकित्सा।

हितंचसर्पिषःपानंपथ्यंचापिविरेचनम्।
हितंशोणितमोक्षश्चशूकरोगेषुदेहिनाम्॥

अर्थ-शूक रोगवालेको घृतपान,रेचन,तथा रक्तमोक्ष एकमें हितकारी है॥

प्रथम लक्षण।

उल्लिख्यसार्षपीतालपत्रेणाथप्रलेपयेत्।
तिंदुकत्रिफलालोध्रैर्गोमूत्रपरिपोषितैः॥

अर्थ-सार्षप नामक शूक दोषवालेको ताडपत्रसे लेखन कियाकर कुचला, हरड, बहेडा, आंवला, और लोध इनको गोमूत्रमें पीस लेप करे॥

सर्षपिका लक्षण।

गौरसर्षपसंस्त्यानाशूकदुर्भुग्नहेतुका।
पिटिकाश्लेष्मवाताभ्यांज्ञेयासर्षपिकाचसा॥

अर्थ-दुष्टजलजंतूका दुष्ट रीतिसे लेप करनेसे कफवात कुपित होकर सपेद सरसोंके समान जो पिटिका (फुंसी) होय उस्को सर्षपिका कहते हैं॥

अष्ठीलिका लक्षण।

कठिनाविषमैर्भुग्नैर्वायुनाष्ठीलिकाभवेत्॥

अर्थ-अप्रसक्त शूकोंके लेपसे वायु कुपित होकर करडी निहाईके समान पिडिका होय और विषम कहे कोई छोटी और कोई बडी और भुग्न कहे टेढे ऐसे शूक कहिये मासांकुरोंसे व्याप्त होय उस्को अष्ठीला कहै हैं॥

अष्ठीलिकाचिकित्सा।

अष्ठीलायांहृतेरक्तेश्लेष्मग्रंथिक्रियांचरेत्॥

अर्थ-अष्ठीलकाका प्रथम रुधिर निकाल श्लेष्मजग्रंथिरोगपर जो यत्न लिखा है वो इसपर करे॥

ग्रथित।

शूकैर्यत्पूरितंशश्वद्ग्रथितंनामतत्कफात्

अर्थ-निरंतर शूकलेप करनेसे लिङ्गेन्द्रीके ऊपर गाँठ पैदा होय, उस्को ग्रथित कहते हैं ॥

ग्रथितचिकित्सा।

स्वेदयेद्ग्रथितंयच्चनाडीस्वेदेनबुद्धिमान् ॥

अर्थ-ग्रथित नामक शूक दोषको कुशल वैद्य नलिकासे शेक देवे तथा व्रणोक्त जैसा सुहाय ऐसा गरम पींडी जो व्रणपर कही वो बाँधे ॥

कुंभिका लक्षण।

कुंभिकारक्तपित्तोत्थाजांबवास्थिनिभाशुभा ॥

अर्थ-रक्तपित्तसे जामुनकी गुठलीके समान कालेरंगकी पिटिका होय, उस्को कुंभिका ऐसा कहते हैं ॥

कुंभिकाचिकित्सा।

कुंभिकायांहरेद्रक्तंपक्कायांशोधितेव्रणे।
तिंदुकत्रिफलालोध्रैर्लेपस्तैलंचरोपयेत् ॥

अर्थ-कुंभिका फुंशीका प्रथम रुधिर निकलवावे. यदि वह पकगई होय तो व्रणशोधनी क्रिया करकै फिर कुचला हरड बहेडा आंवला और लोध इनका लेप तथा इन्ही औषधोंसे तेल सिद्ध करकै लगावै ॥

अलजीके लक्षण।

तुल्यजांत्वलजींविद्याद्यथाप्रोक्तांविचक्षणैः ॥

अर्थ-यह पिटिका प्रमेह पिटिकामें जो अलजी नाम पिटिका कह आये हैं उसके समान लाल काले फोडोंसे व्याप्त होय तथा उस्के लक्षण पूर्वोक्त पिटिकाकेसे होय है ॥

अलजी चिकित्सा।

अलज्यांहृतरक्तायांपूर्वएवक्रियाक्रमः ॥

अर्थ-अलजीका प्रथम रुधिर निकालकै पूर्वोक्त प्रमाण क्रिया करे।

मृदित।

मृदितंपीडितंयत्तुसंरब्धंवातकोपतः ॥

अर्थ-शूक पीडा होनेके अनंतर लिंगको हाथोंसे मीडनेसे अथवा दाबनेसे वायुके कोपसे लिंग सूज जाय ॥

संमूढ पिटिका लक्षण।

पाणिभ्यांभृशसंमूढेसंमूढापिटिकाभवेत् ॥

अर्थ-लेप करनेके अनंतर जब लिंगमें खुजली चलै तब उसको दोनों हाथोंसे खूब खुजावै, तब एक मूढ (विना मुखी) पिटिका होय उसको संमूढ पिटिका कहते हैं॥

अवमंथके लक्षण।

दीर्घाबह्व्यश्चपिटिकादीर्यंतेमध्यतस्तुयाः।
सोवमंथःकफासृग्भ्यांवेदनारोमहर्षकृत्।

अर्थ-कफ रक्तसे लंबी और अनेक तथा बीच बीचमें फूटी भई ऐसी जो पिटिका लिंगमें होय उसके होनेसे रोमांच और पीडा होय इस रोगको अव मंथ ऐसे कहते हैं॥

अवमंथ चिकित्सा।

क्रियेयमवमंथेपिरक्तंशोध्यंयथोभयोः॥

अर्थ-अव मंथपर रक्त शुद्धि कारक क्रिया करे॥

पुष्करिका लक्षण।

पित्तशोणितसंभूतापिटिकापिटिकाचिता।
पद्मकर्णिकसंस्थानाज्ञेयापुष्करिकाचसा॥

अर्थ-पित्त रक्तसे उत्पन्न भई पिटिका उसके चारों तरफ अनेक छोटी छोटी फुंसी होय और वो कमलके भीतरकी केसरके समान सब फुंसी होय उसको पुष्करिका ऐसे कहते हैं॥

पुष्करिकाका यत्न।

क्रमःपित्तविसर्पोक्तःपुष्करीमूढयोर्हितः॥

अर्थ-पुष्करिका और मूढ पिटिका इनपर पित्त विसर्पोक्त क्रिया करे।

स्पर्शहानिलक्षण।

स्पर्शहानिंतुजनयेच्छोणितंशूकदूषितम्॥

अर्थ-शूकका लेप करनेसे रुधिर दूषित होकर त्वचाका स्पर्श ज्ञानको नष्ट करै हैं॥

उत्तमा।

मुद्गमाषोद्गमारक्तारक्तपित्तोद्भवाश्चयाः।
व्याधिरेषोत्तमानामशूकाजीर्णनिमित्तजः॥

अर्थ-शूकका वारंवार लेप करनेसे रक्तपित्त कुपित होकर मूंग उरदके समान लाल फुंसी लिङ्गेन्द्रीमें होय उस्को उत्तमा कहतेहैं ये अजीर्णके कारणसे होती है॥

चिकित्सा।

उत्तमाख्यांतुपिटिकांसंस्वेद्यबहुशोवृतम्।
कल्कचूर्णैःकषायैश्चक्षौद्रयुक्तैरुपाचरेत्॥

अर्थ-उत्तमा नामक शूक दोषके खूब सेक करे फिर घृत, कल्क, चूर्ण और कषाय इनमें मद्य डालकै उससे उपचार करे॥

शतपोनक।

छिद्रैरणुमुखैर्लिंगंचितंयस्यसमंतथा।
वातशोणितजोव्याधिर्विज्ञेयःशतपोनकः॥

अर्थ-जिस पुरुषके लिंगमें अनेक बारीक छिद्र होजाय यह व्याधि वात शोणितसे प्रगट इस्को शतपोनक कहते हैं॥

चिकित्सा।

रसक्रियाविधातव्यालिखितेशतपोनके।
पृथक्पर्ण्यादिभिःसिद्धंतैलंदेयमनंतरम्॥

अर्थ-शतपोनक नामक शूक दोषको प्रथम लेखन क्रिया करकै पारद क्रिया (वा रसक्रिया) करे, फिर शालिपर्ण्यादिकसे सिद्ध करे तेलको देवे॥

त्वक्पाक।

वातपित्तकफोत्थस्तुत्वक्पाकोज्वरदाहवान्॥

अर्थ-वातपित्तसे लिंगकी त्वचा पक जाय और उस्में ज्वर दाह होयहै॥

त्वक्पाक. स्पर्शहानि. और मृदित।

त्वक्पाकेस्पर्शहानौचसेचयेन्मृदितंपुनः।
बलातैलेनकोष्णेनमधुरैश्चोपनाहयेत्॥

अर्थ-त्वक्पाक, स्पर्शहानि, और मृदित इन शूक दोषोंको मंदोष्ण बलातेलसै सिंचन करकै मधुर औषधोंकी पिंडी बांधे॥

शोणितार्बुद।

कृष्णैःस्फोटैःसरक्ताभिःपिटिकाभिर्निपीडितम्।
यस्यवास्तुरुजाचोग्राज्ञेयंतच्छोणितार्बुदम्॥

अर्थ-जिस पुरुषकी लिङ्गेन्द्रियके ऊपर काले लाल फोडा उत्पन्न होय तथा उनमें पीडा होय, उसको शोणितार्बुद कहते हैं॥

मांसार्बुद।

मांसदोषेणजानीयादर्बुदंमांससंभवम् ॥

अर्थ--मांस दुष्ट होनेसे मांसार्बुद प्रगट होय है ॥

मांस पाक लक्षण।

शीर्यंतेयस्यमांसानियस्यसर्वाश्चवेदनाः।
विद्यात्तंमांसपाकंतुसर्वदोषकृतंभिषक् ॥

अर्थ-जिसकी इन्द्रीका मांस गल जाय और अनेक प्रकारकी पीडा होय (यह व्याधि त्रिदोषज है) इस व्याधिको मांस पाक कहते हैं ॥

विद्रधि लक्षण।

विद्रधिंसन्निपातेनयथोक्तमभिनिर्दिशेत्।

अर्थ-विद्रधि निदानमें जो सन्निपात विद्रधिके लक्षण कहे हैं वोही यहां विद्रधि शूकके लक्षण जानने ॥

तिलकालकके लक्षण।

कृष्णानिचित्राण्यथवाशूकानिसविषाणितु। पातितानिपचं त्याशुमेढ्रंनिरवशेषतः ॥ कालानिभूत्वामांसानिशीर्यंतेयस्य देहिनः। सन्निपातसमुत्थांस्तुतान्विद्यात्तिलकालकान् ॥

अर्थ-काले अथवा चित्र विचित्र रंगकेसे विष शूकोंके लेप करनेसे तत्काल सर्व लिंग पक जाय तथा सब मांस तिलके सदृश काला होकर गल जाय इस त्रिदोषोत्पन्न व्याधिको तिलकालक ऐसे कहते हैं ॥

मांसार्बुद मांसपाक विद्रधि तिलकालक।

मांसार्बुदंमांसपाकंविद्रधिंतिलकालकम्।
प्राप्ताख्येपिनकुर्वीतभिषक्तेषांप्रतिक्रियाम् ॥

अर्थ-मांसार्बुद मांसपाक विद्रधि और तिलकालक इन पर प्राप्त कालमें ही वैद्योंको चिकित्सा नहीं करना अर्थात् कुछ काल ठहरकै करे ॥

तिलकालकको असाध्यत्व।

तत्रमांसार्बुदंयत्तुमांसपाकस्ययःस्मृतः ॥
विद्रधिश्चनसिध्यंतियेचस्युस्तिलकालकाः ॥

अर्थ-मांसार्बुद मांसपाक विद्रधि और तिलकालक शूक दोष ये सिद्ध नहीं होते ॥

चिकित्सा ।

तिलकालंसमुल्लिख्यक्षुरेणलघुपाणिना ।
भिषजाथात्रकर्तव्यःसद्योव्रणविनिर्मिताः ॥

अर्थ–तिलकालक शूक दोषको वस्त्रसे झाड (पोंछ) कै फिर सद्य व्रण पर जो चिकित्सा कही वो करे ॥

पथ्य ।

छर्दिर्विरेकोध्वजमध्यनाडीवेधोजलौकापरिपातनंच ॥ सेकः प्रलेपोयवशालयश्चधन्वामिषंमुद्गरसोघृतानि ॥ कंठिल्लकं शिग्रुफलंपटोलंशालिंचशाकंनवमूलकंच ॥ तिक्तंकषायंमधु कूपवारितैलंचहन्यादुपदंशरोगम् ॥

अर्थ–वमन, विरेचन, लिंगके बीचकी नसका वेधना, जोंक लगाना, परिपातन, सींचना, प्रलेप, जौ, चावल, मरुदेशका मांस, मूंगका रस, घी, करेला, सोंहजनेकी फली, परवर, शालि और शाक, नवीन मूली, चरपरी और कषेली वस्तु, शहद, कुएका पानी, तेल ये सब उपदंश रोगको दूर करते हैं ॥

इति श्रीबृहन्निघंटुरत्नाकरे शूकदोषस्य निदानाचिकित्सा समाप्ता ।

त्वग्दोष (कुष्ठ) रोग ।

कुष्ठ रोगका कर्मविपाक ।

परुषंभाषतेत्यर्थंसत्वक्दोषयुतोभवेत् ॥ चांद्रायणत्रयंकुर्यात् प्रदद्यादौषधानिच ॥ वैद्यकोक्तानिविप्रायशक्त्याब्राह्मणभोजनम् ॥

अर्थ–जो प्राणी किसीसे कठोर बोले है उसके कुष्ठ रोग होय है उसको इस दुष्टरोगके नाश करनेको तीन चांद्रायण करे और ब्राह्मणोंको भोजन करावे तथा यथाशक्ती वैद्यक शास्त्रमें कही हुई औषध रोगी ब्राह्मणको देवे ॥

दुश्चर्महर ।

गुरुतल्पगदोषाच्चगविमैथुनदोषतः ॥ दुश्चर्मास्यादसौकृत्वा औषधाद्युपचारकम्॥चांद्रायणत्रयंकुर्यात्ततोदोषात्प्रमुच्यते ॥

अर्थ–गुरुस्त्रीसै अथवा गोसैं गमन करे उसके कुष्ठ रोग होय है उसको इस व्याधिके नाश करनेको तीन चांद्रायण करने चाहिये, तो कुष्ठ दोषकारक पापसै मुक्त होय ॥

कुष्ठनिदान।

विरोधीन्यन्नपानानिद्रवस्निग्धगुरूणिच। भजतामागतांछर्दिंवेगांश्चान्यान्प्रतिघ्नताम् । व्यायाममतिसंतापमतिभुक्त्वानिषेविणाम्। शीतोष्णलंघनाहारान्क्रमंमुक्त्वानिषेविणाम्। घर्मश्रमभयार्तानांद्रुतंशीतांबुसेविनाम्। अजीर्णाध्यशनानांचपंचकर्मापचारिणाम्। नवान्नदधिमत्स्यातिलवणाम्लनिषेविणाम्। माषमूलकपिष्टान्नतिलक्षीरगुडाशिनाम् । व्यवायंचाप्यजीर्णेन्नेनिद्रांचभजतांदिवा। विप्रान्गुरून्धर्षयतांपापंकर्मचकुर्वताम्। वातादयस्त्रयोदुष्टास्त्वग्रक्तंमांसमंबुच। दूषयंतिसकुष्ठानांसप्तकोद्रव्यसंग्रहः। अतःकुष्ठानिजायंतेसप्तचैकादशैवच ॥

अर्थ–विरोधी कहिये क्षीर मत्स्यादि, पतले, स्नेह युक्त, भारी ऐसे अन्न पानके सेवन करनेसे, रद्दके वेगको रोकनेसे और अन्य वेग कहिये मलमूत्रादि वेगोंके रोकनेसे, भोजन करके अत्यंत व्यायाम (दंड कसरत) अथवा अति संताप (सूर्यका ताप) सहनेसे, शीत, गरमी, लंघन, और आहार इनके सेवन उक्त क्रम छोडकर सेवन करनेसे, पसीना, श्रम और भय इनसे पीडित होय और उसी समय शीतल जल पीवे इस कारणसे अजीर्ण अन्न भक्षण करनेसे तथा भोजनके ऊपर भोजन करनेसे, वमन, विरेचन, निरूहण, अनुवासन, नस्य कर्म इन पंच कर्मके करते समय अपथ्य करनेसे, नया अन्न, दही, मछली, खारी, खट्टा, पदार्थके सेवन करनेसे, उडद, मूरी, मिष्टान्न (लाडु, खजला, फेनी आदि) तिल, दूध, गुड, इनके खानेसे अन्नके पचे विना स्त्री संग करनेसे तथा दिनमें सोनेसे, ब्राह्मण, गुरू इनका तिरस्कार करनेसे पाप कर्मके आचरण करनेसे ऐसे पुरुषोंके वातादिक तीनों दोष, त्वचा, रुधिर, मांस और जल इनको दुष्ट कर कुष्ठ रोग (कोढ) उत्पन्न करै कुष्ठ होनेके वातादि तीनों दोष और त्वचादि दूष्य, ये सात पदार्थ अवश्य कारणभूत हैं इनसे ही अठारह प्रकारके कुष्ठ होते हैं तिनमें सात महा कुष्ठ और ग्यारह क्षुद्र कुष्ठ हैं ॥

कुष्ठोंको त्रिदोषजत्व होनेसे दोषाधिक्य करके वो सात प्रकारके होते हैं ।

कुष्ठानिसप्तधादोषैःपृथक्द्वंद्वैःसमागतैः ।
सर्वेष्वपित्रिदोषेषुव्यपदेशोधिकंत्वतः ॥

अर्थ-पृथक्पृथक् दोषों करके ३, द्वंद्वज ३ और सन्निपातसे १ सब मिलाकर सात कुष्ठ भये सब कुष्ठ त्रिदोष होने पर भी जो दोष अधिक होय उसीसे व्यवहार करना चाहिये अर्थात् जिस दोषके लक्षण मिलें उसको उसी दोषका कुष्ठ जानना जैसे " वातेन कुष्ठं कापालं " अर्थात् वाताधिक्य होनेसे कापाल कुष्ठ होय है ॥

कुष्ठके पूर्वरूप ।

अतिश्लक्ष्णखरस्पर्शस्वेदास्वेदविवर्णता । दाहःकण्डूत्वचिस्वापस्तोदःकोष्ठोन्नतिःक्लमः । व्रणानामधिकंशूलंशीघ्रोत्पत्तिश्चिरस्थितिः । रूढानामपिरूक्षत्वंनिमित्तेल्पेपिकोपनम् । रोमहर्षोसृजःकार्ष्ण्यंकुष्ठलक्षणमग्रजम् ॥

अर्थ--जिस ठिकाने कुष्ठ होनहार होय उस जगे हाथोंसे चिकना मालूम होय, अथवा खरदरा मालूम होय, उस ठिकाने पसीना आवै अथवा नहीं आवै तथा उस ठिकानेका वर्ण पलट जाय, दाह होय, खुजली चले, त्वचाको स्पर्शमालूम न होय, नोचनेकीसी पीडा होय, विषैल माखीके काटनेके सदृश चकत्ता उठे, परिश्रम करे विना देहमें श्रम होय,व्रणमें पीडा अधिक होय, उन फोडोंकी उत्पत्ति शीघ्र होकर बहुत दिवस पर्यंत रहै, जब फोडा भरनेको होय,तब रूखेरहे; उन्का थोडे निमित्त होनेसे कोप होय, रोमांच होय,और रुधिर काला पडजाय, ये कुष्ठ होनेके पूर्वरूप होते हैं ॥

कपाल कुष्ठ ।

कृष्णारुणकपालाभंयद्रूक्षंपरुषंतनु ।
कपालंतोदबहुलंतत्कुष्ठंविषमंस्मृतम् ॥

अर्थ-कापाल कुष्ठ जो काले तथा लाल, खीपडाके सदृश, रुखे, कठोर, पतले, ऐसे त्वचावाले तथा नोचनेकीसी पीडा युक्त होय वे दुश्चिकित्स्य हैं अर्थात् वे चिकित्सा करनेमें कठिन हैं उसको कपाल कुष्ठ कहतेहैं ॥

वेल्लादिलेप ।

वेल्लव्योषवराब्दाग्निविषोग्रागुडतुल्यकः ।
लेपात्कुष्ठादिकान्घ्नंतित्रिवारंसकपालिकान् ॥

अर्थ--वायविडंग, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा आंवला, नागरमोथा चित्रक, विष, वच, और गुड, इनको समान मागले पीसके इसका तीन वार लेप करेतो कपालिक कुष्ठ सहित संपूर्ण कुष्टादि रोगोंको नाशकरे ॥

औदुंबर कुष्ठ।

रुग्दाहरागकंडूभिःपरीतंलोमपिंजरम्।
उदुंबरफलाभासंकुष्ठमौदुंबरंवदेत् ॥

अर्थ–औदुंबर कुष्ठ यह शूल, दाह, लाल और खुजली इन्से व्याप्त होय; इस्में बाल कपिल वर्णके होय तथा ये गूलर फलके समान होय है ॥

मंडल कुष्ठ।

श्वेतंरक्तंस्थिरंस्त्यानंस्निग्धमुत्सन्नमंडलम्।
कृच्छमन्येनसंयुक्तंकुष्ठंमंडलमुच्यते ॥

अर्थ–मंडल कुष्ठ सपेद, लाल, कठिन, गीला, चिकना, जिस्का आकार मंडलके सदृश होय तथा एक दूसरेसे मिलाहोय, ऐसा यह मंडल कुष्ठ कष्टसाध्य है ॥

चित्रकादि लेप।

मंडलानिचघृष्ट्वाथचित्रकेनप्रलेपयेत्।
ततोवातारिबीजैश्चलेपोमंडलकुष्ठनुत् ॥

अर्थ–मंडल कुष्ठको घिसकर चित्रकका लेप करे फिर निर्गुंडीके बीजोंका लेप करे तो मंडल कुष्ठको नाश करे ॥

ऋक्षजिह्व।

कर्कशंरक्तपर्यंतमंतःश्यावंसवेदनम् ॥
यदृष्यजिह्वासंस्थानमृक्षजिह्वंतदुच्यते ॥

अर्थ–ऋक्षजिह्व कुष्ठ कठोर, अंतविषे लाल होय, बीचमें काला होय, पीडाकरे, तथा रीछकी जीभके समान होय है ॥

पुंडरीक कुष्ठ।

सश्वेतंरक्तपर्यंतंपुंडरीकदलोपमम् ॥
सोत्सेधंचसरागंचपुंडरीकंप्रचक्षते ॥

अर्थ-पुंडरीक कुष्ठ-जो कुष्ठ पुंडरीक (कमल) पत्रके समान सपेद होय, और उस्के अंतभाग लाल होंय, यत्किञ्चित् ऊंचा निकल आवे और मध्यमें थोडा लाल होय है ॥

विजयेश्वर रस।

शुद्धतालंमृतंसूतंतुल्यंताभ्यांचतुर्गुणम् ॥ भर्जित्वाविजया योज्यासर्वंतुल्यंगुडंक्षिपेत् ॥ श्वेतकुष्ठहरंनिष्कंरसोयंविजयेश्वरः ॥ दार्वीखदिरनिंबानांक्वाथंतमनुपाययेत् ॥

अर्थ-शुद्ध हरताल, पारेकी भस्म ये समान भाग लेवे, इन दोनोंसें चौगुनी भुनी हुई भांग लेवे और सबके बराबर गुड मिलावे सबको एकत्र खरलकरके चार चार मासेकी गोली बनावे, इसके सेवन करनेसे सपेद कुष्ठको दूर करे इसको विजयेश्वर रस कहते हैं, इसपर दारुहलदी, कत्था, नीमकी छाल इनका काढा पीवे ॥

भृंगराजादि लेप।

भृंगराजहरीतक्योर्मूलमंतःपुटंदहेत्।
आरनालेनतल्लेपाच्छ्वेतकुष्ठविनाशनम् ॥

अर्थ-भाँगरा, हरड, पोहकरमूल इनका पुटपाक कर काँजीमें खरलकर लेप करे तो यह सपेद कुष्ठको नाश करे ॥

सिध्मकुष्ठ।

श्वेतंताम्रंचतनुयद्रजोघृष्टंविमुंचति।
प्रायेणोरसितत्सिध्ममलाबुकुसुमोपमम् ॥

अर्थ-सिध्मकुष्ठ सपेद, लाल, पतला, खुजानेसे भूसीसी उडे, यह विशेष करकै छातीमें होय है और घीयाके फूलके आकारका होय है ॥

लाक्षादि लेप।

लाक्षाश्रीवेष्टकंकुष्ठंहरिद्रागौरसर्षपाः ॥ व्योषंमूलकबीजानि प्रपुन्नाटफलानिच ॥ एतान्यत्रप्रमृष्टानिकुष्ठेषूद्वर्तनंपरम् । सिध्मानांकिटिभानांचदद्रूणांचविशेषतः ॥

अर्थ-लाख, श्रीवेष्ट, कूठ, हलदी, सपेद सरसों, सोंठ, मिरच,पीपल मूलाके बीज, पमारके बीज ये सब समान भाग लेवे, चूर्ण करकै इसका कुष्ठ विभूति किटिभ कुष्ठ और खाज इन पर लेप करना उत्तम हैं ॥

कार्पासादि लेप।

कार्पासिकापत्रविमिश्रकाकजंघाकृतोमूलकबीजयुक्तः।
तक्रेणलेपःक्षितिपुत्रवारेसिध्मानिसद्योनयतिप्रणाशम् ॥

अर्थ-कपासके पत्ते काकजंघा और मूलीके बीज ये पदार्थ समान भागले छाछमें पीस मंगलवारके दिन लेप करे तो विभूत (वनरफ)को नाशकरे॥

सिध्म पर लेप।

गोमूत्रेणाथतक्रेणजीर्णसौवीरकेणच।
पिष्टंमूलकबीजानांलेपनात्सिध्मनाशनम् ॥

अर्थ-मूली के बीजों का चूर्ण गोमूत्र में छाँछ में अथवा कांजी में मिलायकै लेप करे तो विभूतका नाश होय ॥

गंधकादि लेप।

गंधकःसयवक्षारःसिध्महृत्तोयलेपतः।
अहित्वकूपयसापिष्टालेपस्त्वक्कीलकापहः।

अर्थ-गंधक, जवाखार इनको जलमें पीस लेप करे तो सिध्मका नाश करे और सांपकी कांचलीको पानीमें खरल कर लेप करे तो [चामखील को नाश करे ॥

तालकादि लेप।

तालकाद्द्विगुणंगंधंबाकूचीगोजलार्दितम्।
सिध्मंप्रलेपनादाशुहंतिमासप्रयोगतः॥

अर्थ-हरताल १ गंधक २ बावची ३ भाग ले गोमूत्रमें पीस १ महीने लेप करे तो विभूतका नाश होय ॥

रसादि लेप।

रसोषणंसैंधवंचविडंगंचामृतारसः।
कांजिकेनविमद्यार्थलेपः सिध्मविनाशनः॥

अर्थ-पारा, मिरच, सैंधानिमक, वायविडंग गिलोयका रस इन सबको काँजीमें पीस लेप करे तो विभूतको नष्ट करे ॥

धात्र्यादिलेप।

धात्रीफलंसंजरसोयावशूकास्त्वदंत्रयम्।
सौवीरपेषितंसर्वंसिध्ममूलविदारणम् ॥

अर्थ-आँवले; राल, जवाखार, इन तीनों पदार्थोंको कांजीमें पीस लेप करे तो सिध्म (विभूत) को जडमुद्धा नाश करे ॥

प्रकारांतर।

शिखरीरसेणपिष्टकमूलकबीजंप्रलेपतः सिध्मम्।
क्षारेणकदल्यावारजनीमिश्रेणनाशयति ॥

अर्थ-कूठ, मूलीके बीज, फूलप्रियंगु, सपेद सरसों, धमासो, और नागकेशर, इनका चूर्ण करकै लेप करे तो बहुत दिनकी सिध्मको नाश करे ॥

गंधकादि लेप।

गंधपाषाणमिश्रेणयवक्षारेणलेपितम्।
सिध्मंनाशमुपैत्याशुकटुतैलयुतेनच ॥

अर्थ-गंधक, जवाखार, इनका चूर्णकर सरसोंके तेलमें भिगोयकै लेप करे. तो शीघ्र विभूतका नाश होय ॥

कासमर्दादिलेप।

कासमर्दकबीजानिमूलकानांतथैवच।
गंधपाषाणमिश्राणिसिध्मानांपरमौषधम् ॥

अर्थ-कसोंदीके बीज मूलीके बीज और गंधक इनका लेप विभूतपर बडी भारी औषध है ॥

मूलकबीजादि लेप।

बीजंमूलकजंनिंबपत्राणिसितसर्षपाः। गृहधूमंचसंपिष्ट्वाजले नांगंप्रलेपयेत् ॥ उद्वर्तनवनीतेनक्षालयेदुष्णवारिणा। त्र्यहा दनेनसिध्मानिशाम्यंत्याशुशरीरिणाम् ॥

अर्थ-मूलीके बीज, नीमके पत्ते, सपेद सरसों, घरका धूँआ, ये पदार्थ जलमें पीस, देहमें लेप करे, फिर देहमें मक्खन लगाय गरम जलसे अच्छी रीतिसे धोय डाले, इस प्रकार तीन दिन करे तो मनुष्योंकी विभूति शीघ्र नाश होय ॥

कांकणकुष्ठ।

यत्काकणंतिकावर्णसपाकंतीव्रवेदनम्।
त्रिदोषलिंगंतत्कुष्ठंकाकणंनैवसिद्धयति ॥

अर्थ–काकणकुष्ठ जो चिरमिटीके समान लाल, अर्थात् बीचमें काला होय और ओरपास लाल होय, अथवा बीचमें लाल होय, और ओरपास काला होय किंचित् पका, तीव्र पीडायुक्त, जिस्में तीनों दोषोंके लक्षण मिलते हों यह कुष्ठ अच्छा नहीं होय ॥

चर्मकुष्ठ (गजकर्ण)

अस्वेदनंमहावास्तुयन्मत्स्यशकलोपमम् ।
तदेवकुष्ठंचर्माख्यंबहलंहास्तिचर्मवत् ॥

अर्थ--चर्मकुष्ठ पसीना रहित, मोठी जगे व्यापनेवाला, मछलीकी त्वचा समान अर्थात् अभ्रकके पत्र समान गोल, गोल होय और जिस्का चर्म हाथीके चर्म समान मोटा और कठोर होय, उसको चर्मकुष्ठ कहते हैं ॥

चिकित्सा ।

सूतगंधकयोः पिष्ट्वाकज्जलींसुविधायच । मृंक्षणेनविमर्द्याथ करित्वग्लेपनंहितम् ॥ कबावगैरीगदतुत्थजीरवह्नीभवंकर्ष मिदंपृथक्पृथक् । शिलावलीतोरविकर्षसंख्यौसार्धौविभागः किलपारदस्य ॥ कर्षैश्चविंशत्प्रमितैर्घृतस्य सर्वंविमर्द्यैकि लताम्रपात्रे। ततोंगलेपात्रिदिनंचतीव्रांहरेच्चरोगीगजकर्णपामाम्॥

अर्थ–पारे गंधककी कजली कर उसमें मक्खन डालकै खरल करे और लगावे तो हितकारी होय। अथवा कबाबचीनी, गेरू, कूठ, लीलाथोथा जीरा कालीमिरच ये प्रत्येक एक २ तोले और मनसिल गंधक ये बारह २ तोले और पारा १२ तोले और घी २० तोले डालकै तांबेके पात्रमें खरल करे इसका तीनदिन लेप करे तो तीव्रगजचर्म (गजकर्ण) और खुजली दूर होय॥

चर्म कुष्ठ।

गुंजाचित्रकशंखभस्मरजनीदूर्वाभयालांगलीस्नुक्सिंधूत्थकुमारिकाजलधरार्कक्षीरधूमेशजैः। वल्गूएडगजाविडंगमरिचक्षौद्रैश्चखारीयुतैःकार्यंवैगजचर्मदद्रुरकसाकण्डूयमुद्वर्तनम् ॥

अर्थ–घूंघची चित्रक शंखभस्म, हलदी दूब हरड कलयारी थूहर सैंधानिमक, घीगुवार, नागरमोथा, आकका दूध, घरका धूआँ, पारा, बावची, पवारके बीज, वायविडंग, मिरच, इनको सहतमें घोटकर देहमें लगानेको देवे तो गजचर्म, दाद, और खुजली इनको नाश करे ॥

किटिभ कुष्ठ ।

इयावंकिणखरस्पर्शंपरुषंकिटिभंस्मृतम् ॥

अर्थ-किटिभ कुष्ठ नील वर्ण, व्रणकी चटके समान कठोर स्पर्श मालूम होय और परुष कहिये रूक्ष होय ॥

किटिभ पर वज्रपाणिरस ।

शुद्धसूतंमृतंचाभ्रंमृतंताम्रंसमंसमम् । मर्दयेद्वाकुचीतैलेयामैकंकृतगोलकम् । द्विगुणेपाचयेद्गंधसतैलेलोहपात्रके । गंधतैलेविजीर्णेतुतद्गालांशंमृतायसम् । पंचांगनिंबसंयुक्तंमधुनागोलकीकृतम् । निष्कैकंकिटिभंहंतिवज्रपाणिर्महारसः ॥

अर्थ-शुद्ध पारा, अभ्रक भस्म ये समान भाग लेवे, सबको बावचीके तेलमें १ प्रहर पर्यंत खरल करकै गोला बनावे, इसको लोहेके पात्रमें दुगनी गंधक और तेल डालके पक्व करे, यह तेल गंधक जल जानेपर शेष गोलेको निकाल उसकी बराबर लोहभस्म डाल दोनोंको नीमके पंचांग और सहत इनके साथ खरल कर गोलाकर चार २ मासेकी गोली बनावै, १ गोली नित्य खाय तो कटिभ कुष्ठको नाश करे, इसको वज्रपाणि महारस कहते हैं ॥

कटिभ पर चक्रांकादि लेप ।

चक्रांकबीजंस्नुक्क्षीरभावितंमूत्रसंयुक्तम् ।
रविवेतसकंदंचलेपनंकिटिभापहम् ॥

अर्थ-सुदर्शनाके बीजोंका चूर्ण कर उसमें आकके दूधकी भावना देवे, तथा आक, वेतकंद इनका काढा ये समान भाग ले, एकत्र खरल कर गोमूत्रमें मिलायकै लेप करे, तो कटिभ कुष्ठको नाश करे ॥

कटिभपर पिप्पल्यादि लेप ।

पिप्पलीपूतिकायस्थाकुष्ठगोपित्तचित्रकैः ।
लेपंसम्यक्प्रशंसंतिकटिभघ्नंचिकित्सकाः ॥

अर्थ-पीपल, करंज, तुलसी, कूठ, गौकापित्ता, और चित्रक, इनका लेप करे इसकी उत्तमताको वैद्य लोग प्रशंसा करते हैं यह कटिभ नाश करनेमें परमोत्तम है ॥

तृतीय लेप ।

गोमूत्रवारिसंपिष्टैःशिलाकासीसतुत्थकैः ।
लेपःकिटिभवीसर्पकुष्ठनाशायपूजितः ॥

अर्थ–मनसिल, हीराकसीस और लीलाथोथा, इनको गोमूत्रमें पीसकै लेप करे तो किटिभ विसर्प और सर्व कुष्ठ इनको नाश करनेमें परमोत्तम है॥

वैपादिक कुष्ठ।

वैपादिकंपाणिपादस्फोटनंतीव्रवेदनम्।

अर्थ–वैपादिक जिसमें हाथकी हथेली और पैरके तरवा फटजाय और पीडा बहुत होय इस विपादिकको विवाई नहीं जानना क्यों कि विवाई केवल पैरमें ही होती है, और विवाईको शास्त्रमें पाददारी कहते हैं और विपादिकामें हाथ पैरोंमें फुंसी श्यामरंगकी होय हैं और वे फुंसी चुचाती तथा खुजाती है, इसीसे पाददारी भिन्न और विपादिका भिन्न हैं॥

धत्तूरतैल।

धत्तूरबीजकल्केनमाणकक्षारवारिणा।
कटुतैलंविपक्वंतद्धुतंहन्याद्विपादिकाम्॥

अर्थ–धतूरेके बीज, और सैंधानिकम, इनको जसमें कल्क करके सरसोंके तेलमें पचावे यह विपादिकाको शीघ्र नाश करे॥

मुंडीघृत।

मुंडीरसेनसंसिद्धंघृतंहंतिविपादिकाम्।

अर्थ–मुंडीके रसमें घृत सिद्ध करे यह विपादिकाका नाश करे॥

विपादिका तथाविचर्चिका।

दोषःप्रदूष्यत्त्वङ्मांसंपाणिपादंसमाश्रितः। पिडिकांजनयत्याशुदाहकंडूसमन्विताम्॥दह्यतेत्वक्शिरारूक्षापाणेर्ज्ञेयाविचर्चिका। पदेविपादिकाज्ञेयास्थानान्यत्वाद्विचर्चिका॥

अर्थ–हाथ पावोंको आश्रित हुआ दोष त्वचामांसको दूषित करके शीघ्र पिडिका उत्पन्न करता है और तिन पिडिकाओंमें दाह कंडू (खाज) पैदा करता है त्वचामें दाह होजाता है शिरा (नाडी) रूक्ष होजाती है तिन पिडिकाओंके नामोंमें इतना भेद है कि हाथोंमें होवें तो विचर्चिका कहनी और पावोंमें होवें तो विपादिका (विवाई) कहनी और अन्य स्थानोंमें होने वाली भी विचर्चिका कहनी॥

द्वंद्वज और सान्निपातजन्य कुष्ठ।

कफात्क्लेदिघनंस्निग्धंसकंडूशैत्यगौरवम्।

अर्थ-कफसे उत्पन्न हुआ कुष्ठ गीला, करडा, चिकना, कंडूवाला, ठंढा, भारी ऐसा होता है ॥

द्विलिंगंद्वंद्वजंकुष्ठंत्रिलिंगंसान्निपातिकम् ॥

अर्थ-और दो दोषोंसे उत्पन्न होनेवाला कुष्ठ तिन दो दोषोंके लक्षणोंवाला होता है और सन्निपातसे उत्पन्न होनेवाला कुष्ठ तीन दोषोंके लक्षणोंवाला होता है ॥

अलस कुष्ठ ।

कंडूमद्भिःसरागैश्चगंडैरलसकंचितम् ॥

अर्थ-अलस कुष्ठ इस कुष्ठमें पीडा बहुत होय और जिसमें पिडिका पित्तीके समान बहुत होय, और लाल होंय, इसमें बहुतसे मूर्ख वैद्य पित्तीका शंका करते हैं ॥

दद्रुमंडल कुष्ठ ।

सकंडूरागपिटिकंदद्रुमंडलमुद्गतम् ॥

अर्थ-दद्रुमंडल कुष्ठ इसमें खुजली होय, लाल होय, और फोडा होय और ये ऊंचे उठ आवे, मंडलके आकार गोल उत्पन्न होय, इसीसे इसको दद्रुमण्डल कहते हैं ॥

मूलक बीजादि लेप ।

बीजानिवामूलकसर्षपाणांलाक्षारजन्यौप्रपुनाटबीजम् । श्री
वेष्टकव्योषविडंगतुल्यंपिष्ट्वाजमूत्रेणविलेपनंस्यात् । दद्रूणि
सिध्मान्किटिभानिपामांकपालकुष्ठंविषमंचहन्यात् ॥

अर्थ-मूलीके बीज, सरसों, लाख, दारुहलदी, हलदी, पवारके बीज, श्रीवेष्टक, सोंठ, मिरच, पीपल, वायविडंग ये समान भाग लेवे, सबको बकरेके मूत्रमें पीसके लेप करे तो दाद, सिध्म, किटिभ, खुजली और कपाल कुष्ठ ये सब नष्ट होय ॥

आरग्वधदलादिलेप ।

आरग्वधदलैःपिष्टैर्लेपःकांजिकयुक्कृतः ।
करित्वक्दद्रुकुष्ठानिहंतिपामांविचर्चिकाम् ॥

अर्थ-अमलतासके पत्तोंको पीस कांजीमें मिलाय लेप करे तौ गजचर्म महाकुष्ठ, दाद, खुजली, विचर्चिका इनको नाश करे ॥

चर्मदलकुष्ठ।

रक्तंसशूलंकंडूमत्स्फोटंयद्दलयत्यपि।
तच्चर्मदलमाख्यातमस्पर्शासहमुच्यते॥

अर्थ—चर्मदल कुष्ठ यह लाल हो, शूलयुक्त, खुजलीयुक्त, फोडोंसे व्याप्त होकर फूट जाय इसमें हाथ लगानेसे सहा न जाय, इसमें त्वचा फट जाय॥

राजिकादिलेप।

राजिकागुडयुक्तेनसैंधवेनप्रलेपितम्।
विजलंचर्मणाबद्धंनाशंचर्मदलंव्रजेत्॥

अर्थ—राई, गुड और सैंधानिमक इनको विना पानीके पीस लेप करे और ऊपरसे चमडेसे बांध देवे. तो चर्मदल कुष्ठको नाश करे॥

तालकभस्म।

अपामार्गस्यभस्मंतुघटेनिक्षिप्ययत्नतः। तन्मध्येतालकंक्षि
प्त्वापचेद्द्वादशयामकम्॥ धवलंजायतेभस्मसर्वकुष्ठनिवार
णम्॥ सर्ववातप्रशमनंसर्वरोगनिवारणम्॥

अर्थ—ओंगाकी भस्मको हांडीमें भर उसमें हरतालको बीचमें रख बारह प्रहर अग्नी देवे, तो सपेद रंगकी भस्म होय, यह संपूर्ण कुष्ठ सर्व वादीके रोग, और संपूर्ण रोगोंको निवारण करे॥

कासमर्दादि लेप।

कासमर्दकमूलानिसौवीरेणतुपेषयेत्।
दद्रुकिटिभकुष्ठानिजयेत्तत्प्रलेपनात्॥

अर्थ—कसोंदीकी जडको कांजीमें पीस लेप करे तो दद्रु, किटिभ, तथा अन्य कुष्ठोंको नाश करे॥

दद्रुपरप्रपुन्नाटादि लेप।

प्रपुंनाटस्यबीजानिधात्रीसर्जरसःस्नुही।
सौवीरपिष्टंदद्रूणामेतदुद्वर्तनंपरम्॥

अर्थ—पवारके बीज, आंवले, राल, थूहरका दूध, इनको कांजीमें पीसके इसका दाद पर लेप करे तो दाद दूर होय॥

दूर्वादि लेप।

दूर्वाभयासैंधवचक्रमर्दकुठेरकाकांजिकतक्रपिष्टाः।
त्रिभिःप्रलेपैरपिबद्धमूलांदद्रुंचकंडूंचविनाशयंति॥

अर्थ—दूब, हरड, सैंधानिमक, पवारके बीज, आंवला, और कांजी, इनको एकत्र पीसकै इसके तीन लेपसे बद्धमूल दाद और खुजली इनको नाशकरे॥

विडंगादि लेप।

विडंगैडगजाकुष्टनिशासिंधूत्थसर्षपैः।
धान्याम्लपिष्टैर्लेपोयंदद्रुकुष्ठविनाशनः॥

अर्थ—वायविडंग, पवारके बीज, कूठ, सैंधानिमक, सरसों, और धनिया, इनको धानकी खटाईमें पीसके लेप करे तो दाद और कुष्ठ इनको नाशकरे॥

लघु मारीचादि तेल।

मरीचालसिलाचार्कपयोश्वारिजटात्रिवृत्। सकृद्रसविशाला रुङ्निशायुग्दारुचंदनैः। कटुतैलंपचेत्प्रस्थंद्व्यक्षेविषपलान्विते। सगोमूत्रंतदभ्यंगाद्दद्रुश्वित्रविनाशकृत्॥

अर्थ—मिरच, हरताल, मनसिल, नागरमोथा, आकका दूध कनेरकी जड, निसोथ, गोवरका रस, इन्द्रायन कूठ, हलंदी, दारुहलदी, देवदारु, चंदन ये समान भागले इनका कल्क करे, इसमें सरसोंका तेल ६४ तोले, और सिंगिया विष चार तोले, तथा गोमूत्र डालकै पचावे, इस तैलकी मालिस करेतो दाद, कोढ, इनको नाश करे, इसे लघु मारीचादि तैल कहते हैं॥

दरदादिलेप।

दरदगंधकपारदपिप्पलीविषविडंगनिशाग्निमरीचकम्॥ अभयशुंठिघनाब्धिकवाकूचीकटुनृपद्रुममेडगजान्वितम्॥ सममिदंखलुनिंबरसैर्युतंहरतिदद्रुजकंडुविसर्पकान्॥ हरतिलूतभगंदरमंडलंतनुविलिप्तमहोक्षणतोनृणाम्॥

अर्थ—हींगलू, गंधक, पारा, पीपल, सिंगियाविष, वायविडंग, हलदी, चित्रक, मिरच, हरड, सोंठ, नागरमोथा, समुद्रफेन, वावची, कुटकी, अमलतास, पमारके बीज ये पदार्थ समान भागले, इनको नीमके रसमैं खरल करे, इसका लेप करनेसे दाद, खुजली, विसर्प, लूता भगंदर, मंडल कुष्ठ इनको क्षणमात्रमें नाश करे॥

सर्वकुष्ठोंपर रसादियोग।

रसगंधकहेमंचसाभ्रकंकटुतैलतः ॥
मर्दितंमर्दनात्तस्यकुष्ठजातंविनश्यति ॥

अर्थ-पारा, गंधक, नागकेशर, अभ्रक, इनको सरसोंके तेलमें खरल करकै देहमें लगावे और मालिस करे तो संपूर्ण कुष्ठोंका नाश होय ॥

मनःशिलादि तथा करंजादिलेप।

मनःशिलालंमरिचानितैलमार्कपयःकुष्ठहरःप्रसिद्धः ॥
करंजबीजैडगजंसकुष्टंगोमूत्रपिष्टंचवरःप्रदेहः ॥

अर्थ-मनसिल, हरताल, मिरच, तेल आकका दूध इन सबका लेप कुष्ठ-नाशक है, और कंजेके बीज पमारके बीज, कूठ इनको गोमूत्रमें बारीक पीस लेप करे यह कुष्ठ पर उत्तम कहा है ॥

करवीरादितेल।

शुक्लस्यकरवीरस्यरसोवेल्लंचचित्रकम् ॥
एभिःसुपाचितंतैलमभ्यंगात्कुष्ठजातिनुम् ॥

अर्थ--सपेद कनेरका रस वायविडंग, चित्रक, इनको तेलमें डालकै औंटावे जब केवल तेल मात्र रहे तब उतार छानकै मालिस करे तो कुष्ठजातिको नष्ट करे ॥

वरादिचूर्ण।

वरावेल्लकणाचूर्णलीढंसन्माक्षिकैःसदा ॥
हंतिकुष्ठान्क्रुमीन्मेहान्नाडीव्रणभगंदरान् ॥

अर्थ-त्रिफला, वायविडंग, पीपल, इनके चूर्णको सहतके साथ चाटे तो कुष्ठ, कृमि, प्रमेह, नाडीव्रण, भगंदर, इनको नाश करे ॥

रसादिलेप।

रसगंधकयोःपिष्टंकटुतैलेनभृंगजैः।
द्रवैःसंमद्यतल्लेपात्सर्वकुष्ठंविनश्यति ॥

अर्थ-पारा, गंधक, दोनोंकी कजलीको सरसोंके तेलसे खरल करे, फिर भाँगरेके रसमें खरलकर इसका लेप करे तो सर्वकुष्ठोंका नाश करे ॥

सिंदूरादि लेप व अर्कतेल।

सिंदुरगुग्गुलुरसांजनसिक्थतुत्थैः कल्कीकृतैःकटुकतैलमिदं

सुपक्वम्। कच्छूंस्रवत्पिटिकजामथवापिशुष्कामभ्यंजनेनसकृ
दुद्धरतिप्रसह्य ॥

अर्थ-सिंदूर, गूगल, रसोत, मोम, लीलाथोथा इनका कल्क करकै सरसोंके तेल डालकै पचावे, इसका लेप करे तो कच्छू स्राव होनेवाले फुंसी तथा शुष्क फुंसी इनको हठपूर्वक नाश करे ॥ सरसोका तेल, हलदीका कल्क, और आकके पत्तोंका रस इनको एकत्र करके लगावे तो शीघ्र पामा (खुजली) कच्छु और विचर्चिका इनका नाश करे ॥

विस्फोटक कुष्ठ।

स्फोटाःश्यावारुणाभासाविस्फोटाःस्युस्तनुत्वचः।

अर्थ-विस्फोटक जो फोडा काले वा लाल रंगके होय और जिन्की त्वचा पतली होय उस्को विस्फोटक कहते हैं ॥

कच्छुकुष्ठ।

सैवस्फोटैस्तीव्रदाहैरुपेताज्ञेयापाण्योःकच्छुरुग्रास्फिजोश्च ॥

अर्थ-कच्छुकुष्ठ वोही पामा मोटे फोडों करके तथा तीव्र दाहयुक्त होय और हाथोंमें होय, उस्को कच्छू कहते हैं ॥

सिंदूरजीरद्वयरात्रियुग्ममनःशिलावाह्लिजगंधकानाम्।
रसान्वितानांघृतयोजितानांमामाव्रजेद्दूरतरंत्रिलेपात् ॥

अर्थ-सिंदूर, जीरा, कालाजीरा, हलदी, दारुहलदी, मनसिल, कालीमिरच, गंधक और पारा इनको घीमें खरल करे, इसका तीनवार लेप करनेसे खाज दूर होय ॥ सैंधानिमक, पमारकेबीज, सरसों, पीपल, इनका चूर्ण कर कांजीमें पीस लेप करे तो पामा और खुजली इनको नाश करे ॥

जीरकतैल।

जीरकस्यपलंपिष्ट्वासिंदुरार्धपलंतथा। कटुतैलंपचेदाभ्यांसद्यः
पामाहरंपरम् ॥ वृद्धवैद्योपदेशेनपाच्यंतैलंपलाष्टकम् ॥

अर्थ-जीरा ४ तोले सिंदूर२तोले दोनोंको सरसोंके तेलमें डालकै पचावे तो तत्काल खाजको नाश करे यह वृद्ध वैद्योंकी आज्ञानुसार३२तोले तेल पचावे ॥

बृहत्सिंदूरादितैल।

सिंदूरंचंदनंमांसीविडंगंरजनीद्वयम्। प्रियंगुपद्मकंकुष्टमंजिष्ठा
खदिरंवचा ॥ जात्यर्कंत्रिवृतानिंबकरंजंविषमेवच ॥ कृष्णचि

त्रकलोध्रंचप्रपुंनाटंचसंहरेत्। श्लक्ष्णपिष्टानिसर्वाणियोगयेत्तैल मात्रया॥ अभ्यंगेनप्रयोज्यंतद्वर्णकृत्कुष्ठनाशनम्। पामांवि चर्चिकांकच्छूंविसर्पंविषमेवच॥ रक्तपित्तोत्थितान्हंतिरोगाने वंविधान्बहून्। सिंदूराद्यमिदंतैलमश्विभ्यांनिर्मितंपुरा॥

अर्थ–सिंदूर, चन्दन, जटामांसी, वायविडंग, हलदी, दारुहलदी, फूलप्रियंगु, पद्माख, कूठ, मजीठ, खैरकी छाल, वच, चमेली, जुही निसोत नीमकीछाल, कंजेके बीज अतीस पीपल चित्रक लोध पमारकेबीज इनको समान भागले बारीक चूर्ण करे इसमें तेल डालकै इसका मालिस करे तो देहकी कांति उत्तम करकै कुष्ठका नाश करे तथा पामा विचर्चिका कच्छू विसर्प विष रक्त पित्तसम्बन्धी विकार इनको नाश करे यह सिंदूरादि तैल प्रथम अश्विनी कुमारोंने निर्माण करा॥

हरिद्रा कल्क।

हरिद्राकल्कसंयुक्तंगोमूत्रस्यपलद्वयम्।
पिबेन्नरःकामचारीकच्छूपामाविनाशनम्॥

अर्थ–हलदीका कल्क करकै उसमें गोमूत्र आठ तोले डालकै पीवै तो कच्छू और पामा इनको नाश करे इस पर पथ्यकी कोई जरूर नहीं है॥

बृहन्मरीच्यादि तैल।

मरीचंत्रिवृतादंतीक्षीरमार्कंशकृद्रसः। देवदारुहरिद्रेद्वेमांसीकु ष्टंसचंदनम्। विशालांकरवीरंचहरितालंमनःशिलां। चित्रको लांगलाख्याचविडंगंचक्रमर्दकम्॥ शिरीषत्वक्चकुटजोनिंब त्वक्पिप्पलीवचा। जोतिष्मतीतुपलिकाविषस्याद्विपलंभवेत्॥ आढकंकटुतैलस्यगोमूत्रंचचतुर्गुणम्॥ मृत्पात्रेलोहपात्रेवाश नैर्मृद्वग्निनापचेत्। पक्त्वातैलवरंत्वेतन्म्रक्षयेकोष्टिकव्रणान्। पामाविचर्चिकाकंडूदद्रुविस्फोटकानिच॥ वलयःपलितंछा यांनीलाव्यंगंतथैवच। अभ्यंगेनप्रणश्यंतिसौकुमार्यंचजायते॥

अर्थ–मिरच काली, निसोथ, जमाल गोटेकी जड़, आकका दूध, गोबरका रस, देवदार, हलदी, दारुहलदी, जटामांसी, कूठ, चंदन, इन्द्रायण-कागूदा, कन्हेर, हरताल, मनसिल, चित्रक, कलियारी, वायविडंग, पमारके

बीज, सिरसकी छाल, इन्द्रजौ, नीमकी छाल, सतोना, थूहर, अमलतासः कंजा, नागरमोथा, खैरकी छाल, पीपल, वच, मालकांगनी ये प्रत्येक चार २ तोले लेवे, और सिंगिया विष ८ तोले, सरसोंका तेल १०२४ तोले तथा गोमूत्र ४०९६ तोले सबको एकत्र कर मिट्टीके पात्रमें अथवा लोहेके पात्रमें मंदाग्निपर रखकै पचावे जब सिद्ध हो जावे तब उतारकै कुष्ठोंपर मालिस करे, तो खुजली (खाज) विचर्चिका, कंडू, दाद, विस्फोटक, वलीपलित, नीली, छाया, व्यंग, इत्यादि कुष्ठोंको दूर करे, इसके लगानेसे सुकुमार देह होय।

शतारु कुष्ठ।

रक्तश्यावंसदाहार्तिशतारुःस्याद्बहुव्रणम् ॥

अर्थ–शतारु जो लाल होय, श्याम होय, जलन होय, शूल होय तथा जिसमें अनेक फोडा होय उसको शतार कुष्ठ कहते हैं ॥

गंधक योग।

गंधपाषाणचूर्णंतुकटुतैलेनयोजितम्।
लेपनादथपानाद्वाकच्छूपामाविनाशनम् ॥

अर्थ–गंधकके चूर्णको सरसोंके तेलमें खरल कर लेप करे अथवा पीवे तो कच्छू और पामा इनको नाश करे ॥

सिंहास्यदल लेप।

कोमलसिंहास्यदलंसनिशंसुरभीजलेनसंपिष्टम्।
दिवसत्रयेणनियतंशमयातिकच्छूंविलेपनतः ॥

अर्थ–कोमल अडूसेके पत्ते, हलदी, दोनोंको गोमूत्रसे पीस इसका लेप करे तो कच्छूको नाश करे ॥

विचर्चिका कुष्ठ।

सकण्डूःपिटिकाश्यावाबहुस्रावाविचर्चिका ॥

अर्थ–विचर्चिका खुजली युक्त काले रंगकी जो फुंसी (माताके समान) होंय तथा उनमेंसे स्राव बहुत होय, उसको विचर्चिका कहते हैं ॥ चर्मकुष्ठसे लेकर विचर्चिका कुष्ठ पर्यंत १२ कुष्ठ होते हैं और पीछे क्षुद्र कुष्ठ ११ कहे हैं ऐसी कोई शंका करै उसके निमित्त कहते हैं। विचर्चिका पैरोंमें होकर फूट-कर अर्थात् विपादिका होय हैं ऐसे कहनेसे संख्या नहीं बढे इस विषयमें भोजका भी मत है ॥

माहेश्वर घृत।

कृत्वाकज्जलिकांरवौमनशिलाद्वेजीरकेद्वेनिशेगोदंतोषणनाग एडगजिकाबाकूचिकासर्पिषा । लौहेलोहविमर्दितंदृढतरंमाहे श्वराख्यंघृतंकण्डूकुष्ठविचर्चिकादिकहरंपामाहरंलेपनात् ॥

अर्थ-पारा, गंधककी कजलीकर मनसिल, जीरा, कालाजीरा, हलदी दारुहलदी, गोदंती हरताल, सोंठ, मिरच, पीपल, सीसेकी भस्म, पमारके बीज, बावची घी ये पदार्थ लोहके पात्रमें लोहके मूसलासे खरलकरे इसको माहेश्वर घृत कहतेहैं यह कंडू कुष्ठ, विचर्चिका और पामा इनको लेप करनेसे नाश करे ॥

खुजलीपरमांस्यादिगण।

मांसीचंदनशम्याककरंजारिष्टसर्षपम् ॥
यष्टीकुटजदार्वीभिर्हंतिकडूमयंगणः ॥

अर्थ-जटामांसी, चंदन, अमलतासका गूदा, कंजा, नीमकी छाल, सरसों मुलहटी इन्द्रजौ और दारुहलदी, यह गण कंडूनाशक है ॥

अवल्गुजादिलेप।

अवल्गुजंकासमर्दचक्रमर्दनिशायुतम् ॥माणिमंथेयतुल्यांशंमु स्तकांजिकपेषितम्॥कंडूंकुष्ठांजयत्युग्रांसिद्धएषप्रयोगराट् ॥

अर्थ--बावची, कसोंदी, पमारके बीज हलदी और सैंधानिमक इनको समान भागले कांजीमैं पीसकै लेप करे तो कंडू और पीडा इनको यह सिद्ध योग नाश करे ॥

कुष्ठचिकित्साक्रम।

विरेचनंप्रयोक्तव्यंत्रिवृद्दंतीफलत्रिकैः॥ षष्ठमासेशिरामोक्षंप्रति मासिविरेचनम् ॥ प्रतिपक्षेचवमनंकुष्ठेलेपंत्र्यहंचरेत् ॥

अर्थ-कोढ रोगीको निसोथ, दंती, हरड, बहेडा, आँवला, इनका काढा करकै पीवावे, तथा छः छः महिनेमें फस्त खोले और महिनेकी महिने जुल्लाब देवे तथा पंद्रहवे दिन वमन करावे और तीसरे दिन लेप करा करे तो कुष्ठ दूर होय॥

पथ्यादिलेप।

पथ्याकरंजसिद्धार्थनिशावल्गुजसैंधवैः ॥
विडंगसहितैः पिष्टैर्लेपमात्रेणकुष्ठजित् ॥

अर्थ-हरड कंजेके बीज, सपेद सरसों, हलदी, बावची, सैंधानिमक और वायविडंग इनको एकत्र करकै लेप करे तो कुष्ठको नाश करे ॥

एलादिलेप।

एलाकुष्टविडंगानिशताह्वाचित्रकंबला ॥
दंतीरसांजनंचेतिलेपःकुष्ठविनाशनः ॥

अर्थ-इलायची, कूठ, वायविडंग शतावर चित्रककी छाल खिरेटी, दंती और रसोत इनका लेप कुष्ठोंको नाश करे ॥

करवीरादिलेप।

श्वेतकरवीरमूलंकुटजकरंजत्वचादार्व्याः ॥
सुमनप्रवालयुक्तोलेपःकुष्ठापहःसिद्धः ॥

अर्थ-सपेद कनेरकी जड और कूडा, करंज इनकी छाल, दारुहलदी और चमेलीके पत्ते, इनका लेप कुष्ठको नाश करे ॥

शिरावेध।

ललाटहस्तपादेषुशिराश्चास्रविमोक्षयेत् ॥

अर्थ-ललाट, हाथ, पैर, इन जगेकी फस्त खोलकै रुधिर निकाले ॥

शिंगीलगाना।

प्रछन्नमम्लकेकुष्टेशृंगाद्यैश्चयथायथम् ।

अर्थ-जो रुधिर आच्छादित हो उसको अम्लक कुष्ठमें वैद्य सिंगी आदि करकै यथायोग्य निकाले ॥

जोख-तुंबी।

प्रभूतैर्वाजलौकाभिःशृंगालाबुशिराव्यधैः ।
स्निग्धस्यमोक्षयेद्रक्तंदुष्टंकुष्टेपुनःपुनः ॥

अर्थ-बहुतसी जोख लगायकै अथवा तूंबी,शिंगी, फस्त खोलना इन कर्मोंसे बलवान प्राणीका यदि रुधिर विगड गया होयतो कुष्ठ रोगमें वारंवार निकाले॥

वमन विरेचन।

वमनंचयथादोषंकर्तव्यंचविरेचनम् ॥

अर्थ-जो दोष होवे उसके अनुसार वमन अथवा विरेचन कुष्ठ रोगीको दे ॥

गुग्गुल।

गुडूचीत्रिफलादार्वीक्राथश्चोष्णैश्चवारिभिः ।
त्वग्दोषव्रणशोथघ्नःपीतोमासंचगुग्गुलुः ॥

अर्थ–गिलोय, त्रिफला, दारुहलदी, इनका काढा अथवा गरम जलके साथ १ महीने पर्यंत गूगल सेवन करे यह त्वचाके दोष व्रणशोथ इनको नाशकरे ॥

महातिक्तकघृत।

सप्तच्छदप्रतिविषाशम्याकंतिक्तरोहिणीपाठां। मुस्तामुशीरत्रिफलांपटोलपिचुमंदपर्पटकम् ॥ धन्वयवासकचंदनमुपकुल्या पद्मकरजन्योंच। षड्ग्रंथासविशालाशतावरीसारिवेचोभे॥ वत्सकबीजंवासांमूर्वाममृताकिराततिक्तंच। कल्कान्कुर्यान्मतिमान्यष्टयाह्वंत्रायमाणांच ॥ कल्कस्यचतुर्भागोजलमष्टगुणंरसोमृतपलानां। द्विगुणोघृतात्प्रदेयस्तत्सर्पिःप्राशयेत्सिद्धम् ॥ कुष्ठानिरक्तपित्तंचबलान्यर्शांसिरक्तवाहीनि। वीसर्पमम्लपित्तं वातासृक्पाण्डुरोगंच॥ विस्फोटकान्सपामामुन्मादंकामलांज्वरंकंडूम्। हृद्रोगगुल्मपिटिकांभगंदरंगंडमालांच ॥ हन्यादेतत्सद्यः पीतंकालेयथाबलंसर्पिः। योगशतैरप्यजितान्महाविकाराञ्जयेन्महातिक्तम् ॥

अर्थ–सतोना, अतीस, अमतास, कुटकी, पाढ, नागरमोथा, खस, हरड, बहेडा, आँवला, पटोलपत्र, नीमकी छाल, पित्तपापडा, धनिया, धमासों चंदन, पीपल, पद्माख, हलदी, पीपरामूल, इन्द्रायनकी जड, सतावर, छोटी बडी सारिवा, इन्द्रजौ, अडूसा, मूर्वा, गिलोय, चिरायता, मुलहटी, और त्रायमाण, इनको समान भागले, इनका कल्क वा काढा तथा कल्कका चतुर्थांश जल और आठगुना आँवलेका रस और घी दो भाग डालकै तयार करे तो कुष्ठ, रक्तपित्त, बलवान् तथा रक्त स्रवनेवाला बवासीर रोग, विसर्प अम्लपित्त, वातरक्त, पांडुरोग, फोडा, खाज, उन्माद, कामला, ज्वर, खुजली, हृदय रोग, गोला, फुसी, भगंदर, गंडमाला, इनको नाश करे, इसको प्रातःकालमें सेवन करे तो जो अन्य औषधसे न जानेवाले महाविकारोंको नाश करे॥

पंचतिक्तक घृत।

निंबपटोलंव्याघ्रींचगुडूचींवासकंतथा। कुर्याद्दशपलान्भागानेकैकस्यसुकुट्टितान् ॥ जलद्रोणेविपक्तव्यंयावत्पादावशेषितम्। घृतप्रस्थंपचेत्तेनत्रिफलागर्भसंयुतम् ॥ पंचतिक्तमि

तिख्यातंसर्पिः कुष्ठविनाशनम् । अशीतिवातजान्रोगाश्च त्वारिंशच्चपैत्तिकान् ॥ विंशतिश्लेष्मिकांश्चैवपानादेवापकर्ष ति । दुष्टव्रणकृमीनर्शः पंचकासांश्चनाशयेत् ॥

अर्थ–नीमकी छाल, पटोलपत्र, कटेरी, गिलोय और अडूसा ये प्रत्येक ४० तोले इनको कूट १२४ तोले जलमें डालके काढा करे जब चतुर्थांश शेष रहे तब उतारकै छानले फिर इसमें ६४ तोले घी, तथा त्रिफलाका काढा मिलायकै मंदाग्निपर घृत सिद्ध करे इसको पंचतिक्त घृत कहते हैं, यह कुष्ठ, अस्सी प्रकारके वातरोग, चालीस प्रकारके पित्तरोग और बीस प्रकारके कफ रोग, इनको इस घृतके खातेही आकर्षण करे तथा दुष्टव्रण कृमि, बवासीर और पांच प्रकारकी खांसी, इनको नाश करे ॥

महाखदिरादि घृत।

खदिरस्यतुलाःपंचशिंशपासनयोस्तुले ॥ तुलार्धंसर्वएवैतेकरं जारिष्टवेतसः ॥ पर्पटःकुटजश्चैववृषःकृमिहरस्तथा ॥ हरिद्राकृ तमालश्चगुडूचीत्रिफलात्रिवृत् ॥ सप्तपर्णश्चसंक्षुण्णांदशद्रोणेन वारिणा ॥ अष्टभागावशेषंतुकषायमवतारयेत् ॥ धात्रीरसंचतु ल्यांशंसर्पिषश्चाढकंपचेत् ॥ महातिक्तकतैलैश्चयथोक्तैःपलसं मितैः ॥ निहंतिसर्वकुष्ठानिपानाभ्यंगनिषेवणात् ॥ महाखादि रमित्येतत्परकुष्ठविकारनुत् ॥

अर्थ–खैरकी छाल २००० तोले, कालीसीसो ४०० तोले, और विजैसार ४०० तोले और कंजानीम वेत, पित्तपापडा, इन्द्रजौं, अडूसा, वायविडंग, हलदी, दारुहलदी, अमलतासका गूदा गिलोय, हरड, बहेडा, आँवला, तेल और सतोना, ये प्रत्येक २०० तोलेले, सबको १०२४० तोले, जलमें अष्टमांश काढा करके उतारके छानले, फिर जितना काढा होय उतनाही आंवले तथा घी २५६ तोले डालकै अग्निपर रख घृतको तयार करे, ये महातिक्तक तेलसे चार तोले पान और अभ्यंग इस विषयमें देवे तो संपूर्ण कुष्ठोंका नाश होय यह महाखदिरघृत अत्यंत कुष्ठनाशक है ॥

तिक्तषट्पलघृत।

निंबपटोलंदार्वीदुरालभांतिक्तरोहिणीत्रिफलाम् । कुर्यादर्धप लांशान्पर्पटकंत्रायमाणंच ॥ सलिलाढकसिद्धानांरसेष्टभागे

स्थितेपूते । चंदनाकिराततिक्तकमागधिकात्रायमाणंच ॥ मुस्तंवत्सकबीजंकल्कीकृत्यार्धकार्षिकान्भागान् । नवसर्पिषश्चषट्पलमेतत्सिद्धंघृतंपेयम्॥कुष्ठज्वरगुल्मार्शोग्रहणीपांड्वामयान्हंति । पामाविसर्पपिटिकाकंडूगंडव्रणान्सद्यः ॥

अर्थ–नीमकी छाल, पटोलपत्र दारुहलदी, धमासा, कुटकी, चिरायता हरड, बहेडा आंवला और पित्तपापडा, त्रायमाण, ये प्रत्येक २ तौलेले इनको २५६ तोले जलमें डालकै काढा करे जब अष्टमांश शेष रहे तब उतारकै छान लेय फिर इसमें चंदन, चिरायता, पीपल, त्रायमाण, नागरमोथा इन्द्रजौं, ये प्रत्येक आधे २ तोला लैय, इनका कल्क तथा नवीन घी २४ तोले मिलायकै अग्निपर सिद्ध करे, इस घृतके पीनेसैं कोढ, ज्वर गोला बवासीर, संग्रहणी पांडुरोग, पामा, विसर्प, पिटिका, खुजली गंड और व्रण इनको तत्काल नाश करे ॥

वातजादि कुष्ठ।

खरंश्यावारुणंरूक्षंवातात्कुष्ठंसवेदनम्।पित्तात्प्रकुपितंदाहरागस्रावान्वितंस्मृतम्॥ कफात्क्लेदिघनंस्निग्धंसकंडूशैत्यगौरवम् । द्विलिंगंद्वंद्वजंकुष्ठंत्रिलिंगंसान्निपातिकम् ॥

अर्थ--वायुके योगसे कुष्ठ खरदरा, कालेरंगका अथवा लाल वर्ण रूखा और पीडायुक्त ऐसा होय है ॥पित्तके योगसे कुपित कुष्ठमें दाह लाली और स्राव युक्त होय है । कफके योगसे क्लेदयुक्त सघन चिकना खुजली शीतल युक्त और भारी ऐसा होय है । द्वन्द्वजकुष्ठमें दो दोषोंके लक्षण होते हैं । सान्निपातिक कुष्ठमें तीनों दोषोंके लक्षण होते हैं ॥

वातादिकुष्ठोंपर सामान्य चिकित्सा।

वातोत्तरेषुसर्पिर्वमनंश्लेष्मोत्तरेषुकुष्ठेषु ।
पित्तोत्तरेषुमोक्षोरक्तस्यविरेचनंविहितं ॥

अर्थ–वाताधिकवालेको घृतपान और कफाधिकको वांति तथा पित्ताधिकको रुधिरका मोक्ष और जुल्लाब देवे ॥

स्रुतेरक्तेहृतेदोषेस्नेहैःसंशमितेनिले ।
रसायनानिप्राशाश्चप्रशस्ताःकुष्ठिनांमताः ॥

अर्थ–कुष्ठरोगवालेके रुधिर निकाल दोषोंका हरण कर तथा घृतपानादीकोंसे वादीके शमन करकै फिर रसायन और प्राश इत्यादिक देवे, तो उत्तम गुण करे॥

यवादि वमन।

यववासापटोलानांनिंबस्थफलिनीत्वचः।
कषायोमधुनापीतोवांतिकृन्मदनान्वितः॥

अर्थ–जो अडूसा, पटोलपत्र, नीमकी छाल, कठूमरकी छाल, और मेनफल, इनका काढा सहत डालकै पीनेके देवे, तो वांती करायके कुष्ठको दूरकरे॥

रसगत कुष्ठके लक्षण।

त्वक्स्थेवैवर्ण्यमंगेषुकुष्ठेरौक्ष्यंचजायते।
त्वक्पाकोरोमहर्षश्चस्वेदस्यातिप्रवर्तनम्॥

अर्थ–रसधातुगत कुष्ठ होनेसे अंगका वर्ण पलट जाय है, अंगरूखा होय, त्वचा शून्य होय रोमांच हो और पसीना बहुत आवै॥

रक्तगतलक्षण।

कडूर्विपूयकश्चैवकुष्ठेशोणितसंश्रये॥

अर्थ–कुष्ठ रक्तगत होनेसे खुजली और राध बहुत होय हैं॥

मेदोगतके लक्षण।

कौण्यंगतिक्षयोगानांसंभेदःक्षतसर्पणम्।
मेदःस्थानगतेलिंगंप्रागुक्तानितथैवच॥

अर्थ–कौण्य कहै हाथ गिरपडे, चलनेकी शक्ति मारीजाय, हाड फूटन होय घाव फैल जाय और पूर्वोक्त लक्षण (रसरक्तमांसगतकुष्ठके लक्षण) होय॥

मांसगतके लक्षण।

बाहुल्यंवक्त्रशोषश्चकार्कश्यंपिटिकोद्गमः।
तोदःस्फोटः स्थिरत्वंचकुष्ठेमांससमाश्रिते॥

अर्थ–मांसगत कुष्ठ होनेसे मुख बहुत सूखे अंगमें कर्कशपना होय, देहमें फुंसी पैदा होय सुई नोचनेकीसी पीडा होय फोडा होय और वे बहुत दिन रहै॥

अस्थि मंज्जागतकुष्ठके लक्षण।

नासाभंगोक्षिरागश्चक्षतेषुकृमिसंभवः।
स्वरोपघातश्चभवेदस्थिमज्जासमाश्रिते॥

अर्थ-अस्थि (हड्डी) और मज्जागत कुष्ठ होनेसे नाक गिर पडे, नेत्र लाल होय, घावमें कीडा पडजाय, स्वर बैठजाय ये लक्षण होय ॥

शुक्रार्त्तवगतकुष्ठकेलक्षण ।

दंपत्योःकुष्ठबाहुल्यात्कुष्ठंशोणितशुक्रयोः ।
यदपत्यंतयोर्जातंज्ञेयंतदपिकुष्ठितम् ॥

अर्थ-जिस स्त्री पुरुषोंके रुधिर शुक्र कुष्ठाधिक्यसे दुष्ट होय, उस दुष्ट भये वीर्य और रजसे प्रगट भई जो संतान सो भी कोढी होती हैं, इस जगे दुष्ट भये शुक्र और आर्तव सर्वथा बीजत्व नष्ट होनेसे संतानके करनेवाले होते हैं और जीव संक्रमण कालमें कदाचित् बीज दुष्ट होय तो विषके कीडाके न्याय करके संतान प्रगट होती है । अर्थात् जैसे विष प्राणियोंके प्राणका नाशक है परंतु उस्मेंभी विषका कीडा प्रगट होता है और वो उस्से नहीं मरता है यह वाग्भटका मत है ॥

साध्यासाध्यत्व ।

साध्यंत्वग्रक्तमांसस्थंवातश्लेष्माधिकंचयत् । मेदसिद्वंद्वजंयाप्यंवर्ज्यमज्जास्थिसंश्रितम् । कृमिहृल्लासमंदाग्निसंयुक्तंयत्रिदोषजम् ॥ प्रभिन्नंप्रसृतांगंचरक्तनेत्रंहतस्वरम् ॥ पंचकर्मगुणातीतंकुष्ठंहंतीहकुष्ठिनम् ॥

अर्थ-रक्त रुधिर मांस इन धातुओंके पर्यंत गये जे कुष्ठ वो साध्य होतेहैं तथा जिस कुष्ठमें वायु और कफ प्रधान होय वो भी साध्य है और मेदोधातुगत कुष्ठ तथा द्वंद्वज कुष्ठ याप्य जानना मज्जा अस्थि इन दोनों धातुमें कुष्ठ पहुंच गया हो तथा जो शुक्रगत हो वो कुष्ठ असाध्य है तथा जिस कुष्ठमें कृमि, वमन, मन्दाग्नि इन करके युक्त होय तथा त्रिदोषज होय वो असाध्य है । जो कुष्ठ फूटकर बहने लगे तथा जिस कुष्ठसे रोगीके नेत्र लाल होय अथवा स्वर बैठ गया होय और वमन विरेचनादि पंचकर्मके गुण जिस पुरुषके होय नहीं ऐसा रोगी मरजाय ॥

पंचनिंबचूर्ण ।

पिचुमंदफलंपुष्पंत्वक्पत्रंमूलमेवच ॥ पंचैतानिचसूक्ष्माणिसम्चूर्णानिकारयेत्॥ अष्टभागावशेषेणखदिरासनवारिणा । भावयित्वातुसंयोज्यद्रव्याण्येतानिदापयेत्॥ चित्रकोथविडंगानि

व्याधिवातकशर्कराः॥ भल्लातकहरीतक्योःशुंठ्यामलकगोक्षुराः॥चक्रमर्दकबाकूचीपिप्पलीमरिचंनिशा ॥ भावयेद्भृंगराजेनपुनःशुष्काणिकारयेत्॥ निंबार्धचूर्णमेतेषामेकीकृत्यनिधापयेत् ॥ बिडालपदमात्रंतुसर्पिषापयसापिवा ॥ प्रातःप्रातर्निषेवेतखदिरासनवारिणा॥परिहारोनचात्रास्तिपंचनिंबेवतिष्ठति॥ मासमात्रप्रयोगेणकुष्ठंहंतिरसायनम् ॥ त्वग्दोषनीलिकाव्यंगंतथैवतिलकालकान्॥अष्टादशविधंकुष्ठंसप्तचैवमहाक्षयान् ॥ सर्वव्याधिविनिर्मुक्तोजीवेद्वर्षशतंशुखी ॥

अर्थ--नीमके फल, फूल, पत्ता, छाल, और जड ये समान भाग ले, इस पंचांगका बारीक चूर्ण करे तथा खैर (कत्था) और बिजेसार इनका अष्टमांश काढा करके इस चूर्णमें भावना देवे फिर इसमें चित्रक, वायविडंग, अमलतास, मिश्री, भिलाए, हरड, सोंठ, आवले, गोखरू, पमारके बीज, बावची, पीपल, मिरच, हलदी, और लोहेकी भस्म इनका चूर्ण नीमके चूर्णसे आधा भाग मिलायकै भांगरेके रसकी भावना देकर सुखायले फिर किसी शीशी आदि पात्रमें भरके रख छोडे फिर इसमेंसे घी अथवा खांड इनके साथ खैरका अथवा विजेसारका काढा डालकै एक तोले प्रातःकाल नित्य पीवे, इस निंबपंचांगचूर्ण पर पथ्यादिकका नियम नहीं है, ये तीन महिने सेवन करनेसे कुष्ठ, त्वचाके दोष, नीलिका, व्यंग, तिलकालक, तथा अठारह प्रकारके कोढ, सात प्रकारके क्षयको नाश करे तथा रसायन है, इसके सेवनसे सब रोगोंसे मुक्त होय तथा सौ वर्ष जीवे ॥

खादिरासव ।

खदिरस्यतुलार्धंतुतत्तुल्यंदेवदार्वपि ॥ वरायाविंशतिर्दार्व्याः पलानांपंचविंशतिः ॥ बाकूच्याद्वादशपलान्यष्टद्रोणेंभसःपचेत् ॥ द्रोणशेषेकषायेतुपूतशेषेविनिक्षिपेत् ॥ धातक्याविंशतिपलंमाक्षिकस्यशतद्वयम् ॥ शर्करायास्तुलामेकांचूर्णानीमानिदापयेत् ॥ कंकोलकं लवंगंच एलाजातीफलंत्वचम् ॥ केसरंमरिचंपत्रंपलिकान्युपकल्पयेत् ॥ पिप्पलीनांतुकुडवंस्थापयेद्घृतभाजने ॥ मासादूर्ध्वंपिबेन्मात्रामवेक्ष्यचबलाव

लम् ॥ सर्वकुष्ठहरोह्येषपांडुहृद्रोगकासनुत् ॥ कृमिग्रंथ्यर्बुद ग्रंथिगुल्मप्लीहोदरांतकृत् ॥ एषवैखदिरारिष्टःकृष्णात्रेयेण पूजितः ॥

अर्थ–खैरकी छाल २०० तोले, देवदारु २०० तोले, त्रिफला ८० तोले दारुहलदी १०० तोले बावची ४८ तोले, सबको कूट एकत्र कर १६३८४ तोले जलमें डाल अष्टावशेष काढा करे जब तयार हो जाय तब छान लेय फिर इसमें धायके फूल ८० तोले सहत २०० तोले, मिश्री ४०० तोले डालकै ककोल, लौंग, इलायची, जायफल, दालचिनी, केशर, मिरच, पत्रज, इन प्रत्येकका चार २ तोले चूर्ण, तथा पीपल १६ तोले, डालकै घीके चिकने वासनमें भरकै १ महिने पर्यंत धरा रहने देवे, पश्चात् इसमेंसैं बलाबल विचारकै मात्रा देवे तो यह संपूर्ण कुष्ट, पांडुरोग, हृदयरोग, खाँसी कृमिरोग, गांठ, अर्बुदकी गांठ, गोला, प्लीहा और उदर इनको नाश करे, यह खदिरारिष्ट आत्रेयके पुत्र कृष्णको मान्य है ॥

कुष्ठपरचिकित्साकरनेके वास्ते प्रधान दोष कहते हैं।

वातेनकुष्टंकापालंपित्तेनौदुंबरंकफात् ॥ मंडलाख्यंविचर्चीच ऋष्याख्यंवातपित्तजम् ॥चर्मैककुष्टंकिटिभंसिध्मालसविपादि काः ॥ वातश्लेष्मोद्भवाःश्लेष्मपित्ताद्दद्रुशतारूषी ॥ पुंडरीकं सविस्फोटंपामाचर्मदलंतथा ॥ सर्वैःस्यात्काकणंपूर्वंत्रिकंदद्रुः सकाकणा ॥ पुंडरीकर्ष्यजिह्वेचमहाकुष्टानिसप्ततु ॥

अर्थ–वादीसे कपाल कुष्ठ, पित्तसे औदुंबर, कफसे मंडल और विचर्चिका, वातपित्तसे, ऋष्यजिह्व, वात कफसे चर्मकुष्ठ, किटिभ, सिध्म, आलस और विपादिका, कफ पित्तसे दद्रु शतारु, पुण्डरीक, विस्फोटक, पामा चर्मदल, त्रिदोषसे काकण कुष्ठ होय है। पहिले तीन (कपाल, उदुंबर और मंडल) दद्रु, काकण, पुंडरीक और ऋष्यजिह्व ये सात महाकुष्ठ जानने ॥

किलासकुष्ठनिदान।

कुष्ठैकसंभवंश्वित्रंकिलासंचारुणंभवेत् ॥
निर्दिष्टमपरिस्रावित्रिधातूद्भवसंश्रयम् ॥

अर्थ–कुष्ठ होनेके जो कारण (विरुद्ध भोजन पापकर्मादि) कहे हैं उन्हीं कारणोंसे श्वित्र (सपेद कोढ) और किलास (लाल कोढ) ये होते हैं इन्में

स्राव नही होय तथा ये तीन धातुओंका आश्रय करके रहते हैं अर्थात् (तीन दोष और रुधिर मांस तथा मेद) इन्का आश्रय करके रहै हैं ॥

वाताद्रूक्षारुणंपित्तात्ताम्रंकमलपत्रवत् । सदाहंरोमविध्वंसिक फाच्छ्वेतंघनंगुरु ॥ सकंडूरंक्रमाद्रक्तमांसमेदस्सुचादिशेत् । वर्णेनैवेदृगुभयंकृच्छ्रंतच्चोत्तरोत्तरम् ॥

वातादि भेदसे किलासके लक्षण।

अर्थ–वादीसे रूक्ष और लाल होय, पित्तसे कमलपत्रके समान लाल होय, और उस्मे दाह होय, उस्के ऊपरके बाल गिर पडे कफके योगसे वो कोढ सफेद, गाढा, और भारी उसमें खुजली चले इसी क्रमसे रुधिर मांस और मेदका भी ठिकाना जानना अर्थात् दोष रक्ताश्रित होनेसे लाल, मांसाश्रित होनेसे तामेंकेरंग और मेदाश्रित होनेसे सपेद किलास होय है ॥

श्वित्रके साध्यासाध्य लक्षण।

अशुक्लरोमाबहलमसंश्लिष्टमथोनवम् ।
अनग्निदग्धजंसाध्यंश्वित्रंवर्ज्यमथोन्यथा ॥

अर्थ–जिस श्वित्र कोढके ऊपरके बाल सफेद न भये होय तथा जे पतले होकर आपसमें मिले नहीं तथा नवीन हो तथा अग्निदग्ध न होय वो श्वित्र कोढ साध्य जानना, यासे विपरीत असाध्य जानना ॥

किलासके असाध्य लक्षण।

गुह्यपाणितलोष्ठेषुजातमप्यचिरंतनम् ।
वर्जनीयंविशेषेणकिलासंसिद्धिमिच्छता ॥

अर्थ–गुदास्थानमें, हाथोंमें, पैरोंके तलुओंमें, होठोंमें प्रगट भया किलास कुष्ठ थोडे दिनका होय, तो भी यश मिलनेकी इच्छावाला वैद्य छोडदे ॥

सांसर्गिक रोग।

प्रसंगाद्गात्रसंस्पर्शान्निःश्वासात्सहभोजनात् । सहशय्यासना च्चापिवस्त्रमाल्यानुलेपनात् ॥ कुष्ठंज्वरश्चशोषश्चनेत्राभिष्यंद एवच । औपसर्गिकरोगाश्चसंक्रामंतिनरान्नरम् ॥

अर्थ–मैथुनादि प्रसंगसे अथवा शरीरके स्पर्शसे श्वासके लगनेसे, साथ बैठ कर एक पात्रमें भोजन करनेसे, एक साथ शय्या एक (पलंग) पर सोनेसे तथा एक साथ मिलकर बैठनेसे, पास रहनेसे, धारण करे वस्त्रको धारण करनेसे

सूंघे पुष्पको सूंघनेसे कोढ, ज्वर धातुशोष (अर्थात् क्षईका रोग) नेत्ररोग (आंख दुखना) और औपसर्गिक रोग कहिये शीतलादिक और भूतोपसर्गादिक ये संक्रामिक रोग ये पुरुषसे उडकर दूसरे मनुष्यके होताते हैं इसीसे पूर्वोक्त रोगियोंका प्रसंगादिक न करे ॥

शैलेयादि लेप।

शैलेयकंपिल्लकयष्टिसाह्वसौराष्ट्रिकासर्जरसोत्पलानि।
शिलाचचूर्णोनवनीतयुक्तःकुष्टेस्रवत्यभ्यधिकःप्रदिष्टः॥

अर्थ—शिलाजीत, कवीला, मुलहटी, इलायची, राल आर मनसिल ये प्रत्येक चार २ तोले लेवे, इसको पीस मक्खनमें मिलाय स्रवनेवाले कुष्ठ पर लेप करे ॥

मंजिष्ठादि ६४ क्वाथ।

मंजिष्ठात्रिफलाप्रियंगुरमृताब्राह्मीवचापौष्करैर्भृंगाख्यात्रिकटुःकिरातकविषानिर्गुंडिकारग्वधाः ॥ त्रायंतीखदिरंकुटंनटवृकस्यामाद्वयंरोहिणीतिक्तापर्पटवाभकेंद्रफलिनोतानीविशालामिदम् । एरंडःपिचुमंदचित्रकवरीभार्गीमलेंद्रीसठोबिल्वाग्नीधवमूलपाडलवृतीतेजस्विनीबालकम् ॥ दंतीमूलपलासचंदनयुगंमुंडीविडंगान्वितमर्कैयोररणीकरंजधवयोः पर्णानिमूलानिच । क्षुद्राह्वाद्वयदेवदारुजलदाकल्हारकंवल्लकमेभिःसिद्धमिदंपटोलसहितंक्वाथश्चतुःषष्टिकः । अष्टांशंतुविपाचयेच्चमतिमानुत्क्वाथ्यमृद्भाजनेपीत्वाहंतिसपित्तरक्तसकलंकुष्ठानिचाष्टादश ॥

अर्थ—मजीठ, हरड, बहेडा आंवला, फूलप्रियगु, गिलोय, ब्राह्मी वच पुहकरमूल, भारंगी सोंठ, मिरच, पीपल, चिरायता अतीस, निर्गुंडी,अमलतास, त्रायमाण, खैरसार, टेंटू, पाढ, सालपर्णी, पृश्निपर्णी, कंभारी, कुटकी, पित्तपापडा, बबूरकी छाल, इन्द्रजो, कलियारी, तानीकी वेल, इन्द्रायन, कस्तूरी, अंडकीजड, नीमकीछाल, चित्रक, शतावर, भारंगी, आंविया हलदी, कचूर, वेलगिरी, चित्रक, धायकेफूल, पाडल, पुन्नाग मालकांगनी, नेत्रवाला, दंती, पलास पापडा, लालचंदन, पतंग, मुंडी, वायविडंग, आक, अरनी, कंजाघो, इनके पत्ते, तथा जडकटेरी,बडी कटेरी, देवदारु, नागरमोथा,लालकमल,

वल्कल, और पटोलपत्र इन चौंसट औषधोंको मिट्टीके पात्रमें अष्टावशेषकाढा करके पीनेको देवे तो रक्तपित्त और अठारह प्रकारके कोढ, इनको नाशकरे ॥

मंजिष्ठादि क्वाथ।

मंजिष्ठापिचुमंदचंदनघनछिन्नागवाक्षीवृषात्रायंतीत्रिवृतानटद्विर जनीभूनिंबपाठाविषा। गायत्रीत्रिफलापटोलकटुकाकोटद्विष त्पर्पटाउग्रावल्गुजवासवत्सकयुतैःक्वाथंविदध्याद्भिषक् ॥ कंडू मंडलपुंडरीककिटिभैःपामाविचर्चिव्रणैः सिध्माश्वित्रकिलासद द्रुरसकैर्व्याताग्रसतत्त्वचः। किंचान्यत्कृमिभिर्विशीर्णगलितघ्रा णांघ्रिपाण्युद्भवानेनंप्राप्यमहाकषायमचिरात्पंचेषुतुल्योनरः॥

अर्थ--मजीठ, नीमकीछाल, लाल चंदन, नागरमोथा, गिलोय, इन्द्रायन, अडूसा, त्रायमाण, निसोथ, विजेसार, हलदी, दारुहलदी, चिरायता, पाठ अतीस, खैर, हरड, बहेडा, आंवला, पटोलपत्र, कुटकी, वायविडंग, पित्तपापडा, वच, बावची, और कूडाकी छाल, इनका काढा करके देयतो खुजली, मंडल, पुंडरीक, किटिभ, खाज, विचर्चिका, व्रण, सीप, सपेद कोढ, किलास, दाद, लहस वहनेवाला घाव, सात त्वचामें होनेवाले कोढ, तथा कीडा पडके सड़गया हो असा कुष्ठ, तथा नाक, पैर सडनेवाला इन सब कुष्ठोंको नाशकरके शरीरको कामदेवके समान सुंदर करै ॥

लघुमंजिष्ठादि क्वाथ।

मंजिष्ठाकुटजामृताघनवचाशुंठीहरिद्राद्वयम् । क्षुद्रारिष्टपटो लकुष्ठकटुकाभार्गीविडंगान्विताः ॥ मूर्वादारुकलिंगभृंगमग धात्रायंतिपाठावरी । गायत्रीत्रिफलाकिरातकमहानिंबाशना रग्वधाः ॥ श्यामावल्गुजचंदनंचरुणकंपूतीकसाखोटकं वासापर्पटसारिवाप्रतिविषानंताविशालाजलम् ॥ मंजिष्ठादि रयंकषायविधिनानित्यंपुमान्यः पिबेत्त्वग्दोषाह्यचिरेणयांतिवि लयंकुष्ठानिचाष्टादश ॥

अर्थ–मजीठ, इन्द्रजो, गिलोय, नागरमोथा, वच, सोंठ, हलदी, दारुहलदी, कटेरी, नीमकी छाल, पटोलपत्र, कुटकी, भारंगी, वायविडंग, मूर्वा, देवदारु, कूडाकी छाल, भांगरा, पीपल, त्रायमाण, पाठ, शतावर, खैरसार,

हरड, बहेडा, आंवला, चिरायता, बकायनकी छाल, विजेसार अमलतासका गूदा, सारिवा, बावची, लालचंदन, वरना, कंजा, सहोडा, अडूसा, पित्तपापडा, सपेद सारिवा, अतीस, धमासो, इन्द्रायन, नेत्रवाला इनका काढा करके नित्य प्रति पीवे तो त्वचाके दोष, और अठारह प्रकारके कोढ ये नाश होवे ॥

त्रिफलादि क्काथ।

त्रिफलानिंबपटोलमंजिष्ठारोहिणीवचारजनी।
एषकषायाभ्यस्तोनिहंतिकफपित्तजंकुष्ठम् ॥

अर्थ-हरड, बहेडा, आँवला, नींबकी छाल, पटोलपत्र, मजीठ, कुटकी, वच, हलदी, इनका काढा नित्य प्रति पीवे तो कफपित्तात्मक कुष्ठको नाश करे॥

खादिरादि।

प्रलेपोद्वर्तनस्नानपानभोजनकर्मसु।
शीलितंखादिरंवारिसर्वत्वद्दोषनाशनम् ॥

अर्थ-लेप, मालिस करना, स्नान, पान, भोजन, इनमें खैरके काढेका उपयोग करनेसे संपूर्ण त्वचाके दोषोंको नाश करे।

शुंठचादि क्काथ।

शुंठिनिंबकिराततिक्तककणापाठाहरिद्राद्वयंत्रायंतीत्रिफलामृता ह्वकटुकावासावचाबाकुची। मंजिष्ठातिविषादुरालभमहानिं बाग्निषड्ग्रंथिका व्याधिघ्नागजचिर्भटासकुटजा भार्गीसमुस्ता यवाः॥ मूर्वाचैवपटोलपत्रसहितारक्तंतथाचंदनंश्यामापर्पटसा रिवाकृमिहरागायत्रिकासयुता। गोमूत्रेणमहाकषायमरु णोद्धृतेपिबेद्यः पुमांस्तस्याष्टादशयातिनाशमचिरात्कुष्ठानि दुष्टान्यपि ॥

अर्थ-सोंठ, नीमकी छाल, चिरायता, पीपल, पाढ, दारु हलदी, त्रायमाण, हरड, बहेडा, आवला, गिलोय, नागरमोथा, कुटकी, अडूसा, वच, बावची, मजीठ, अतीस, धमासो, बकायनकी छाल, चित्रक, पीपलामूल. अमलतास, चिर्भट, कूडाकी छाल, भारंगी, भद्रमोथा, इन्द्रजो, मूर्वा, पटोल पत्र, लाल चंदन, हरडकी छाल, पित्त पापडा, और सारिवा, वायविडंग, खैर, इनका गोमूत्रमें काढा करकै प्रातःकाल पीवे, तो दुष्ट अठारह प्रकारके कोढ, जल्दी नष्ट होंय ॥

भल्लातकाव लेह ।

निंबगोपारूणाकट्वीत्रायंतीत्रिफलाघनम् ॥ पर्पटावलगुंजांता वचाखदिरचंदनम् ॥ पाठाशुंठीशठीभार्गीवासाभूनिंबवत्सकम् ॥ श्यामेंद्रवारुणीमूर्वाविडंगातिविषानलम् ॥ हस्तिकर्णामृताह्वेकापटोलंरजनीद्वयम् ॥ कृष्णारग्वधसप्ताहांशिरीषंचोच्चटाफलम् ॥ मंजिष्ठालांगलीरास्नानक्तमालःपुनर्नवा । दंतीबीजकसारश्चभृंगराजकुरंटकम् ॥ एतान्द्विपलिकान्भागान्जलद्रोणेविपाचयेत् ॥ अष्टभागावशिष्टंचकषायमवतारयेत् ॥ भल्लातकसहस्त्राणिक्षिपेच्छित्वार्मणेंभसि ॥ चतुर्भागावशिष्टंचकषायमवतारयेत् ॥ तौकषायौसमादायवस्त्रपूतौतु कारयेत् ॥ एकीकृत्यकषायौतौपुनरग्नावधिश्रयेत् ॥ त्रिकटु त्रिफलामुस्तंविडंगंचित्रकंतथा ॥ चंदनंसैंधवंकुष्टंदीप्यकंचपलंपलम् ॥ चातुर्जातंचसंपूर्णघृतभांडेनिधापयेत् ॥ सौगंधिकस्यदातव्यंचूर्णपलचतुष्टयम् ॥ महाभल्लातकोह्येषमहादेवेन निर्मितः ॥ प्राणिनांज्ञुहितार्थायनाशयेच्छीघ्रमेवच ॥ श्वित्रमौदुंबरंदद्रुमृक्षजिह्वंसकाकणम् ॥ पुंडरीकंचचर्माख्यंविस्फोटं रक्तमंडलम् ॥ कृच्छ्रंकापालिकंकुष्टंपामांचापिविपादिकाम्॥ वातरक्तमुदावर्तपाण्डुरोगंवमिकृमीन् ॥ अर्शांसिषट्प्रकाराणिश्वासंकासंभगंदरम् ॥ अनुपानेनदातव्यंछिन्नातोयेनतंभिषक् ॥ भोजनेनसदायोज्यमुष्णंचाम्लंविशेषतः ॥ अन्यान्यपि चकुष्टानिनाशयेन्नात्रसंशयः ॥

अर्थ—नीमकी छाल, सारिवा, अतीस, कुटकी, त्रायमाणः हरड, बहेडा आवला, नागरमोथा, पित्तपापडा, बावची, धमासों, वच, खैरकी छाल, चंदन लाल, पाढ़, सोंठ, कचूर, भारंगी, अडूसा, चिरायता, इन्द्रजव, श्यामा, इन्द्रायनकी जड, मूर्वा, वायविडंग, अतीस, चित्रककी छाल, कसालू, गिलोय नागरमोथा ये सब एक २ भाग ले तथा पडवल, हलदी, दारुहलदी, मजीठ, कलयारी, रास्ना, करंज, पुनर्नवा, जमालगोटा, विजेसार, भांगरा,

पियांवासा ये प्रत्येक दो २ भाग लेवे इनको १०२४ तोले, जलमें डालकै घोटावे जब अष्टावशेष जल रहे तब उतारकै छान लेवे, फिर शुद्ध करे हुए भिलाए १००० ले उनको तोडके १०२४ तोले जलमें डालकै चतुर्थांश काढा करकै छान लेवे फिर दोनों काढोंको एकत्र कर अग्नि पर चढावै, और इसमें गुड ४०० तोले डालकै अवलेह बनावें, इसमें एक हजार भिलावके बीज डाले तथा सोंठ मिरच पीपल, हरड, बहेडा, आवला नागरमोथा वायविडंग चित्रककी छाल चन्दन सैंधानिमक कूठ और अजवायन ये प्रत्येक चार २ तोलेलेय और दालचीनी इलायची पत्रज नागकेशर ये चार तोले डालकै घीके चिकने वासनमें भरकै धर रक्खै इसके सौगंधिक पदार्थ १६ तोले डाले यह महाभल्लातक अवलेह प्राणियोंको हितके वास्ते श्रीशिव ने प्रगटकरा यह गिलोयके अनुपानसे देय तो सपेद कोढ औदुंदरकुष्ठ ऋक्षजिह्व कांकण पुंडरीक चर्मदल विस्फोटक रक्तमंडल कापालिक पामा विपादिका वातरक्त उदावर्त पांडुरोग वांति कृमि छः प्रकारकी बवाशीर श्वास खांसी और भगंदर इनको नाश करे इसका खानेवाला विशेष करके गरम और खट्टे पदार्थको न खाय तो अन्य जो कुष्ठ नहीं कहे उन सबका नाश करे ॥

शशांकलेखादि लेप।

शशांकलेखासविडंगसारासपिप्पलीकाशहुतासमूला।
सायोमलासामलकासतैलासर्वाणिकुष्ठानिनिशातिलीढा ॥

अर्थ—बावची विडंगसार पीपल चित्रक लोहेकीकीट आवला और तेल इनका अवलेह बनायकै लेवे तो संपूर्ण कुष्ठोंको नाश करे ॥

धात्र्यादि लेह।

धात्र्याक्षपथ्यासविडंगवह्निभल्लातकावल्गुजलोहभृंगाः ॥
भागाभिवृद्धैस्तिलतैलमिश्रैःसर्वाणिकुष्ठानिनिहंतिलेहः ॥

अर्थ—आंवला बहेडा, हरड, वायविडंग चित्रककी छाल भिलाए बावची लोहभस्म भांगरा ये प्रत्ये एकोत्तरकी वृद्धिसे लेवे चूर्णकर तिलके तेलसे अवलेह बनावे इसके सेवन करे तो संपूर्ण कुष्ठोको नाश करे ॥

त्रिफलादि मोदक।

त्रैफलस्यतुचूर्णस्यपलानिदशपंचच ॥ सप्तचैवविडंगानांलोह चूर्णपलद्वयं ॥ शतंभल्लातकानांचपलानिदशबाकुची ॥ शिला

जतुपलार्धंचद्वेपलेगुग्गुलोस्तथा ॥ पलंपुष्करमूलस्यपलार्धं त्रिवृतस्यच ॥ सचित्रकंसमरीरंचापिप्पलीविश्वभेषजं ॥ त्वक्पत्रंकुंकुमंमुस्ताकार्षिकानुपकल्पयेत् ॥ यांवत्येतानिचूर्णानि तावत्खंडंप्रदापयेत् ॥ पलिकान्मोदकान्कृत्वाप्रातरुत्थाय नित्यशः ॥ एकैकंभक्षयेत्प्राज्ञोयथेष्टंचात्रभोजनं ॥ कुष्टान्यष्टादशानीहप्लीहगुल्मभगंदरान् ॥ विंशतिश्लैष्मिकांश्चापिसंसृष्टान्सान्निपातिकान् ॥ शालक्यगतरोगांश्चशिरोक्षिभ्रूगतांस्तथा ॥ कंठतालुगतांश्चापिजिव्हायामपजिव्हकं ॥ उर्ध्वजत्रुगतेरोगेभुक्तस्योपरिदापयेत् ॥ शरीरेदापयेत्पूर्वमौदरेमध्यभोजने ॥ निर्दिष्टरोगाञ्छमयेत्क्रियमाणंरसायनम् ॥

अर्थ-हरड बहेडा आंवला इनका चूर्ण १५ पल वायविडंग २८ तोले लोहेकी भस्म ८ तोले, भिलाए ४०० तोले, बावची ४० तोले, शिलाजीत २ तोले, गूगल ८ तोले, पुहकर मूल ४ तोले, निशोथ २ तोले और चित्रक, काली मिरच, पीपल, सोंठ, दालचीनी, पत्रज, केशर और नागरमोथा ये प्रत्येक एक २ तोले लेवे और सब चूर्णके समान मिश्री मिलावे फिर चार २ तोलेके लड्डू बनावे इसको प्रातःकाल भक्षण करे ऊपरसें यथेष्ट भोजन करे तो अठारह प्रकारके कुष्ठ, प्लीहा, गोला भगंदर, अस्सी प्रकारके वादीके रोग चालीस प्रकारके पित्तरोग, वीस प्रकारकी कफ व्याधि और द्वंद्वज, तथा संनिपातिक, शालाक्य तंत्रमें कहे हुए रोग तथा मस्तक, नेत्र, भ्रुकुटी, कंठ, तालु, जिह्वा और उपजिह्वा इन सब रोगोंको नाश, करे, यदि यह हसलीके ऊपरके रोगोंमें देना होय तो भोजन करनेके उपरांत देना चाहिये, और उदरस्थ रोगोंमें भोजनमें मिलायके देवे, कमरके नीचेके रोगोंमें भोजन करनेके प्रथम देवे, तो ऊपर कहे हुए रोग शमन होय यह रसायन है ॥

खदिरयोग।

दह्यमानाद्युतःकुंभेसमूलखदिराद्रसः ॥
साज्यधात्रीरसक्षौद्रोहन्यात्कुष्टंरसायनम् ॥

अर्थ-खैरके वृक्षके नीचे गड्ढा करके उसमें खिपडेको रखे और उस पात्रमें खैरकी लगडी डालके नीचे अग्नि जलावे तो जल खदक कर उस खिपडेमें

खैरका रस जमजावे उसको सहतमें मिलायकै देवे तो कुष्ठको नाश करे, तथा रसायन है ॥

निंबादिकल्क।

निंबपत्रशतंपिष्ट्वानिंबामलकमेवच।
विडंगबाकुचीकल्कंपिबेद्वाकुष्ठनाशनम्॥

अर्थ–नीमके पत्ते निबोरी, आंवले, वायविडंग बावची, इनका कल्क करकै सेवन करेतो कुष्ठ रोगको नाशकरे॥

त्रिफलादि गुटिका।

त्रिफलारुष्करलोहैःसावल्गुजभृंगलिव्योषैः। सगुडैर्वराहकंदैः पलिकैरेकत्रसंमिश्रैः॥ गुटिकांप्रकल्प्यखादेदेकैकामक्षसंमितांप्रातः। कुष्ठंदद्रुकिलासंजित्वावर्षेणसर्वथापलितम्। जीवतिवर्षशतंवैदीप्तहुताशोयुवेवसोत्साहम्॥

अर्थ–हरड, बहेडा, आंवला, भिलाए, लोहेकीभस्म, बावची, भांगरा, कलियारी, सोंठ, मिरच, पीपल, गुड, और वाराहीकंद ये प्रत्येक चार २ तोले लेय, सबको एकत्र कर मिलाय देवे फिर खरल कर आधे २ तोलेकी गोली बनावे, एक गोली नित्य प्रातःकालमें भक्षण करे तो कुष्ठ खाज, किलास कुष्ठ इनको एक वर्षमें नाश करेकै वलीपलितको नाशकरे, तथा अग्निको प्रदीप्त कर तरुणके समान उत्साह पूर्वक जीवे॥

एकविंशतिको गुग्गुलू।

चित्रकस्त्रिफलाव्योषमजाजीकारवीवचाः। सैंधवातिविषाकुष्टं चव्यैलायावशूजकम्॥ विडंगान्यजमोदाचमुस्तान्यमरदारूच। यावंत्येतानिसर्वाणितावन्मात्रंतुगुग्गुलुः॥ संकुट्यचसर्पिषासार्धंगुटिकांकारयेद्भिषक्। प्रातर्भोजनकालेवाभक्षयेत्तु यथाबलम्॥ हंत्यष्टादशकुष्ठानिकृमिदुष्टव्रणानपि। ग्रहिण्यर्शोविकारांश्चसुखामयगलग्रहान्॥ गृध्रसीमथभग्नंचगुल्मंचापिनियच्छति। व्याधीन्कोष्ठगतांश्चान्याञ्जयेद्विष्णुरिवासुरान्॥

अर्थ–चित्रककी छाल, हरड, बहेडा, आवला, सोंठ, मिरच, पीपल, जीरा, सोंफ, वच, सैंधानिमक, अतीस, कूठ, चव्य, इलायची, जवाखार, वायवि-

डंग, अजमोद, नागरमोथा, देवदारु, ये समान भाग लेवे, तथा सबके बराबर गूगल,सबको एकत्र कर घी डालके ओंटाव जब गाढा हो जावे तब गोली बनायले इसको प्रातःकाल अथवा भोजनके समय बलाबल विचारके देवे, तो अठारह प्रकारके कुष्ठ, कृमि, दुष्टव्रण, संग्रहणी, बवासीर, मुखरोग, गलेका रोग गृध्रसी; भमरोग, गोला और कोष्ठगत व्याधी इनको यह गोली नाश करे॥

सर्षपादिउद्धूलन।

सर्षपकरंजरजनीदारुनिशादारुमंजिष्ठाः। त्रिफलाचशठीश्वेता मूर्वाप्रियंगुकाग्राह्याः॥ त्रिकटुत्रिगंधकेशरलाक्षाश्चैषांकृतं रजः श्लक्ष्णम्। उद्धूलनेनरक्तजपित्तजवातास्थितंवापि॥निस्तोदभेद पिटिकंसर्वस्फुटनंविनाशयति॥

अर्थ–सरसों, कंजाकेबीज, हलदी, दारुहलदी, देवदारु, मजीठ, हरड, बहेडा, आवला, कचूर, खैर, सपेद मूर्वा, फूलप्रियंगु, सोंठ, मिरच, पीपल, दालचिनी, इलायची पत्रज नागकेशर और लाख, इनका बारीक चूर्ण करके इसका कुष्ठ पर उद्धूलन करे तो रक्तजन्य पित्तजन्य, वातजन्य ऐसे कोढ, पीडा, फूटना और फुन्सी इन करके युक्त भी कुष्ठको नाश करे॥

विडंगादिचूर्ण।

विडंगत्रिफलाकृष्णाचूर्णंलीढंसमाक्षिकम्॥
हंतिकुष्ठंकृमीन्मेहान्नाडीकुष्ठभगंदरान्॥

अर्थ–वायविडंग हरड बहेडा आवला और पीपल इनके चूर्णको सहतसैं देवे तो कोढ, कृमि प्रमेह नाडीव्रण और भगंदर इनका नाश करे॥

सर्वांगसुंदररस।

भल्लातकसहस्रैकंत्रिफलावारिनिक्षिपेत्॥द्रोणमात्रेपचेत्तावद्याव त्पादावशेषितं॥ शर्करायादशपलान्येकंवाकूचिकापलम्॥ तथैवात्रैवदेयानिपलानिदशगुग्गुलुः॥ खादिरारिष्टमंजिष्ठा बीजकंचेद्रवारुणी॥ चित्रकंद्वेहरीद्रेचदशदारुहरीतकी॥ भां र्गीवचेंतिसर्वेषांप्रत्येकंचपलार्धकम्॥ प्रक्षिप्यगुटिकाकार्या नाम्नासर्वांगसुंदरी॥ प्रत्यहंभक्षयेत्कुष्ठीत्वेतांबदरमात्रया॥ सर्वाण्येवाष्टकुष्ठानिशीघ्रमेवव्यपोहति॥

अर्थ-भिलाये १००० को तोड त्रिफलेके १०२४ तोले काढेमें डालकै पचावे जब चतुर्थांश शेष रहे तब उसमें मिश्री ४० तोले, बावची, ४ तोले गूगल ४० तोले, और खैर नीम, मजीठ, विजेसार, इन्द्रायण, चित्रक, हलदी, दारुहलदी, देवदारु, हरड, भारंगी और वच, ये प्रत्येक दोदो तोले डालकै गोली बनाय लेवे, इसको सर्वांगसुंदरी वटी कहतेहैं, इसको कोढी मनुष्य नित्य प्रति बेरके बराबर सेवन करे तो संपूर्ण उग्रकोढोंको नाशकरे ॥

कनकारिष्ट।

खदिरकषायंद्रोणंसर्पिःकुंभेनिधाययेन्मध्ये । पलिकांमात्रांक्षेप्यांकृत्वातुतान्येवसूक्ष्मर्णंतु ॥ त्रिफलात्रिकटुकरंजनिकनकत्वक्वाकुचीगुडूचीच।सविडंगमत्रमधुपलशतद्वयंप्रक्षिपेत्सर्वं ॥ धातक्याश्चफलान्यष्टौक्काथेचास्मिन्प्रदेयानि॥ प्रातःप्रातस्तुपिबेन्नाशयतिचिरोत्थितंकुष्ठम्॥मासेनसर्वरोगान्विनिहंतिचशोफमेहांश्च॥निर्जितकासश्वासोगुदकीलभगंदराद्दिनिर्मुक्तः। कनकारीष्टंप्रपिबन्भवतिपुमान्कनककांतिश्च ॥

अर्थ--खैरका काढा १०२४ तोलेको घीके बासनमें भरकै उसमें हरड, वहेड आंवला सोंठ, मिरच, पीपल, हलदी, धतूरा, दालचीनी, बावची गिलोय वायबिडंग, इन प्रत्येकका चूर्ण चार २ तोलेले और सहत ८०० तोले धायके फूल ३२ तोले डालकै रखदेवे, इसमेंसे प्रातःकाल पीयाकरे तो बहुत दिनके कोढको नाशकरे एक महीनेमें संपूर्ण रोग सूजन, प्रमेह, खांसी, श्वास, बवासीर, भगंदर इनसे छूट जावे, इस कनकारिष्टके सेवन करनेसैं अंगकी कांति सुवर्णके समान होय ॥

वज्रतेल ।

सप्तपर्णकरंजार्कमालतीकरवीरजाः ॥ मूलस्नुहीशिरीषाभ्यां चित्रकास्फोटयोरपि॥करंजबीजंत्रिफलांत्रिकटूरजनीद्वयम् ॥ सिद्धार्थकंविडंगंचप्रपुन्नाटंचसंहरेत् ॥ मूत्रपिष्टैःपचेत्तैलमेभिः कुष्ठविनाशनम्॥अभ्यंगाद्वज्रकंनामनाडीदुष्टव्रणापहम् ॥

अर्थ-सतोना, कंजा, आक, मालती, कनेर, थूहर, और शिरस वृक्ष चित्रक वनमालती, कंजेके बीज, हरड, बहेडा, आँवला, सोंठ, मिरच, पीपल हलदी, दारुहलदी, सपेद सरसों, वायविडंग, पमारके बीज, इनको गोमूत्रमें कल्क

कर इसमें तेल डालके सिद्ध करे इस तेलके लगानेसे यह वज्रतैल वज्रके समान कठोर कुष्टको नाडीव्रण और दुष्ट व्रण इनको नाश करे ॥

मंजिष्ठाद्य तैल ।

मञ्जिष्ठारग्निशाचक्रमर्दारग्वधपल्लवैः ।
तृणकस्वरसेसिद्धंतैलंकुष्ठहरंकटु ॥

अर्थ–मजीठ, कूठ, हलदी पमारके बीज, और अमलतास इनके पत्ते और रोहिषतृण इनका स्वरस निकालकै इसमें सरसोंका तेल सिद्ध करे यह कुष्ठको नाश करे ॥

श्वित्रकुष्ठकीचिकित्सा ।

श्वित्रिणोहृतदोषस्यहृतरक्तस्यवासकृत् ॥ खदिरांबुयवान्ना
नांतृप्तस्यमलयूरसः ॥ सगुडःशस्यतेपानेयवागूमंडभोजिनः ॥

अर्थ–सपेद कुष्ठका वारंवार रुधिर निकालके दोष नाश करे खैरका काढा तथा यवान्नदे तृप्त कर बावचीका रस गुड डालके खानेको देवे और भोजनको यवागू देवे ॥

खदिरक्काथ ।

खदिरामलककषायंबाकुचिबीजान्वितंपिबेन्नित्यम् ।
शंखेंदुकुंदधवलंश्वित्रंहंतिहित्वाचित्रम् ॥

अर्थ–खैरकी साल, आँवले इनका काढा बावचीका चूर्ण मिलायके पिवावे तो शंख, कुंद, तथा चंद्रमाके समान सपेद कुष्ठका नाश करै ॥

त्रिफलादिलेप ।

त्रिफलानीलिकापत्रंलोहचूर्णंरसांजनम् ॥ श्वेतगुंजांदंतिदंतभ
स्मतुल्यंचमार्कवम् ॥ मेषीदुग्धेनसंपिष्यस्थापयेल्लोहभाजने ॥
दिनमेकंततोलिंपेन्मुहुःश्वित्रेष्वनुक्रमात् ॥ श्वित्राण्यनेनलेपे
ननिजवर्णंत्यजंतिवै ॥

अर्थ–हरड, बहेडा, आँवला, नीलकापत्ता, लोहभस्म, रसोत, सपेद गुंजा, हाथीदांतकी भस्म, लीलाथोथा, भांगरा इन सबको एकत्र करके बकरीके दूधसे खरल करे, इस कल्कको लोहेके बरतनमें एक दिन भरकै धर देवे इसको सपेद कुष्ठ पर वारंवार लेप करे, तो अपना वर्ण छोड देवे ॥

सपेदकुष्ठकोअसाध्यत्व।

श्वेतश्वित्रादिकुष्ठानिह्यसाध्यानिप्रयत्नतः॥
तस्मात्तेषामुपायश्चनात्रैवलिखितोमया॥

अर्थ--सपेद कुष्ठ, और श्वित्रकुष्ठ, इत्यादिक कुष्ठ असाध्य कहे हैं इसीसे विशेष करकै प्रयत्न करकै उनका उपाय भी नहीं लिखा॥

बल्यादि लेप।

वलिवेल्लाग्निभल्लातदंतिशम्याकनिंबजैः।
कांजिकेपेषितैर्लेपःश्वेतकुष्ठविनाशकृत्॥

अर्थ-गंधक, वायविडंग, चित्रक, भिलाए, दंतीकी जड, अमलतास, निबोरी, इनको कांजीमें पीसकै लैप करे तो सपेद कुष्ठका नाश करे॥

हयादि लेप।

हयवेल्लाग्निभल्लातदंतीशम्याकनिंबजैः॥
कांजिकैःपेषितैर्लेपःश्वेतकुष्ठविनाशकृत्॥

अर्थ-असगंध, वायविडंग, चित्रक, भिलाए, दंती, अमलतास. निबोरी, इनको कांजीमें पीसकै लेप करे तो सपेद कुष्ठका नाश करे॥

तालकादि लेप।

तालकःशाणमात्रःस्याच्चतुःशाणाचबाकुची।
गोमूत्रयुक्तंतच्चूर्णंलेपनाच्छ्वित्रनाशनम्॥

अर्थ-हरताल ४ मासे बावची १६ मासे इनको गोमूत्रमें बारीक पीस लेप करे तो श्वित्रकुष्ठकौ नाश करे॥

गुंजाफलादि चूर्ण।

गुंजाफलाग्निचूर्णस्यलेपनंश्वेतकुष्ठनुत्।
शिलापामार्गभस्मादिलेपाच्छ्वित्रविनाशनम्॥

अर्थ-गुंजा, चित्रक, इनका लेप और मनसिल ओंगाकी राख इनका लेप श्वित्रनाशक है। मजीठ, कुटज, इत्यादि वातरक्त प्रकरणमें मंजिष्ठादि काढा जो कहाहै वो कुष्ठ रोगपर देवे॥

गुंजादि लेप।

गुंजांकुष्टवचानिंबैर्वारिपिष्टैः प्रलेपनात्।
श्वेतापराजितामूलंहंतिश्वित्रमसंशयम्॥

अर्थ-गुंजा, कूठ, वच, नीमकी छाल, इनको जलमें पीस लेप करे अथवा सपेद सारिवा सफेद निर्गुंडी इनकी जडका लेप श्वित्रनाशक है ॥

अयोरजादि लेप।

सायोरजः कृष्णतिलांजनानिसावल्गुजान्यामलकानिजग्ध्वा पिष्ट्वाहिभृंगस्यसकृद्रसेनहन्यात्किलासंपरिघृष्टलेपात् ॥

अर्थ-लोहभस्म, कालेतिल, रसोत, बावची, और आंवले, इनके चूर्णको भांगरेके रसमें खरल करके श्वित्रकुष्ठको खुजायकै लेप करे तो किलास कुष्ठ और श्वित्रकुष्ठ नष्ट होय ॥

विष तैल।

नक्तमालंहरिद्रेद्वेअर्कंतगरमेवच। करवीरवचाकुष्टमास्फोता रक्तचंदनम् ॥ मालतीसप्तपर्णंचमंजिष्ठासिंधुवारिकाः। एषा मर्धपलान्भागान्विषस्यद्विपलंभवेत् ॥ चतुर्गुणेगवांमूत्रेतैल प्रस्थंविपाचयेत्। श्वित्रविस्फोटकिटिभकोठलूताविचार्चि काः॥ दद्रूकच्छूविकारश्चयेव्रणाविषदूषिताः। विषतैलमिदं नामसर्वव्रणविशोधनम् ॥

अर्थ-अमलतास, हलदी, दारुहलदी, आक, तगर, कनेरकी जड, वच, कूठ, सपेद सारिवा, लालचंदन, मालती, सतोना, मजीठ, निर्गुंडी, ये प्रत्येक दो तोले और सिंगियाविष ८ तोले, सबको एकत्रकर चौगुने गौकै मूत्रमें ये पदार्थ ६४ तोले तेल डालकै पचावे, तो यह श्वित्रकुष्ठ, विस्फोटक, किटिभ, कोठ, लूता, विचर्चिका, दाद, कच्छू, दुष्टव्रण इनको शोधन करके नाश करे इसको विषतैल कहते हैं ॥

ज्योतिष्मतीतैल।

मयूरकक्षारजलेसप्तकृत्वः परिश्रिते।
सिद्धंज्योतिष्मतीतैलंमभ्यंगात्श्वित्रनाशनम् ॥

अर्थ-लीलाथोथेके जलमें सातवार कांगनीका तेल पचावे इसको देहमें लगावे तो सपेद कोढको नाशकरे ॥

शशिलेखावटी।

शुद्धसूतसमंगंधंतुल्यंचमृतताम्रकम्। मर्दितंबाकुचिक्काथै

दिनैकंवटकीकृतं ॥ निष्कमात्रांसदाखादेच्छ्वित्रघ्नींशशिलेखि काम्। बाकुचीतैलकर्षैकंसक्षौद्रमनुपाययेत्॥

अर्थ–शुद्धपारा १ भाग गंधक १ भाग तांबेकीभस्म २ भाग इस प्रकार सबको एकत्र कर बावचीके काढेमें एकदिन घोटे इसकी छः २ मासेकी गोली बनावे, एक गोलीको खाय बावचीका तेल, सहत डालके ऊपरसे पीवे तो सपेद कोढको नाश करे, यह शशिलेखाके समान है।

कुष्ठरोगपर पथ्य।

पक्षात्पक्षाच्छर्दनानिमासान्मासाद्विरेचनम्। नस्यंत्र्यहात्र्यहा न्मासात्षष्ठेषष्ठेस्रमोक्षणम्॥ घृतलेपःपुराणाश्चयवगोधूमशा लयः। मुद्गाढक्यौमसूराश्चमाक्षिकंजांगलामिषम्॥ आषाढ पलवेत्राग्रपटोलंबृहतीफलम्। काकमाचीनिंबपत्रंलशुनंहि लमोचिका॥ पुनर्नवामेषशृंगीचक्रमर्ददलानिच। भल्लातकं फलंतालंखदिरश्चित्रकोवरा॥ जातीफलंनागपुष्पंकुंकुमंप्रत तंहविः। कोशातकीकरंजौचशालसर्षपनिंबजं॥ तैलंतथें गुदोत्पन्नंलघून्यन्यानियानिच। स्नेहास्सरलदेवाह्वशिंशपा गुरुसंभवाः॥ मूत्राणिगोखरोष्ट्राश्वमहिषीजनितानिच। कस्तूरीगंधसारश्चातिक्तातिक्षारकर्मच॥ यथादोषंसमस्ता निपथ्यान्येतानिकुष्ठिनाम्॥

अर्थ–पक्ष २ पीछे वमन करना, मास २ पीछे विरेचन अर्थात् जुलाब देना, तीन २ मास पीछे नस्य, छठे २ मासमें रुधिरका निकालना, घीका लेप, पुराने जौ, गेहूं, शाली चावल, मूंग, अरहर तथा मसूर, शहद, जंगली जीवोंका मांस, आषाढ फल, बेंतकी कोंपल, परवर, कटेरीका फल, कवैया, नींबके पत्ते, लहसन, हिलमोचिका शाक, पुनर्नवा, मेढासिंगी, पमारके पत्ते, भिलावा, पका ताडफल, कत्था, चीता, त्रिफला, जायफल, नागकेसर, केसर, पुराना घी, तोरई, कंजुआ, तिल, सरसों, नींब, हिंगोट इन सबका तेल, अलसी, हलके पदार्थ, सरल धूप, देवदारु, ससौं, अगर इनके तेल, गौ, गधा, ऊंट, घोडा, भैंस इनके मूत्र, कस्तूरी, चन्दन, चरपरी वस्तु, खार लगाना ये सब दोषके अनुसार कोढी मनुष्योंके लिये पथ्य कहे गये हैं॥

कुष्ठरोगमें अपथ्य ।

अन्नपानंहितंकुष्ठेनत्वम्ललवणोषणम् ।
दधिदुग्धगुडांश्चापितिलमाषांस्त्यजेन्नरः ॥

अर्थ-कुष्ठरोगमें संपूर्ण अन्नपान हितकारी हैं परन्तु खट्टा, लवण, गरम, दधि, दुग्ध, गुड, तिल, उडद इनको कुष्ठरोगवाला मनुष्य त्याग देवे ॥

अपथ्य ।

स्वेदंव्यवायंवमिमिक्षुदण्डंव्यायाममम्लानितिलांश्चमाषान् ।
अनूपमांसंदधिदुग्धमद्यंगुडंचकुष्ठामयिनस्त्यजेयुः ॥

अर्थ-पसीना स्त्रीसंग, वमन, गन्ना, कसरत, खट्टा, तिल, उडद, अनूपदेशके जीवोंका मांस, दधि, दुग्ध, मद्य, गुड इन संपूर्णोंको कुष्ठरोगवाले मनुष्य त्याग देवें ॥

इति श्रीआयुर्वेदोद्धारेबृहन्निघंटुरत्नाकरे कुष्ठरोगस्य निदानचिकित्सा समाप्ता ॥

शीतपित्त ।

शीतपित्तनिदान ।

शीतमारुतसंस्पर्शात्प्रदुष्टौकफमारुतौ ।
पित्तेनसहसंभूयबहिरंतर्विसर्पतः ॥

अर्थ-शीतल पवनके लगनेसे कफ वायु दुष्ट होकर पित्तसे मिल भीतर (रक्तादिकोंमें) और बाहर त्वचामें विचरे ॥

पूर्वरूप ।

पिपासारुचिहृल्लासदेहसादांगगौरवम् ।
रक्तलोचनतातेषांपूर्वरूपस्यलक्षणम् ॥

अर्थ-प्यास, अरुचि, मुखमेंसे पानी गिरना, अंगगलने, और भारी होना, नेत्रमें लाली ये पूर्वरूप शीतपित्तके जानने ॥

उदर्द लक्षण ।

वरटीदष्टसंस्थानशोथः संजायतेबहिः ॥ सकंडूस्तोदबहुलश्छ
र्दिज्वरविदाहवान् । उदर्दमितितंविद्याच्छीतपित्तंतथापरे ॥

अर्थ-वरटी (ततैया) के काटनेके समान त्वचाके ऊपर चकत्ता होजाय, उन्में खुजली चले, और सुई चुभानेकीसी पीडा होय, इस्के संयोगसे वमन,

संताप और दाह होय, इस रोगको उदर्द कहते हैं कोई इस्को शीतपित्त कहते हैं, इस्को लौकिकमें पित्ती कहते हैं इस्में खुजली होय हैं, सो कफसे जानना चोटनी बादीसे होय है और औकारी संताप और दाह ये पित्तसे होते हैं ऐसे जानना ॥

शीतपित्त और उदर्दका भेद।

वाताधिकंशीतपित्तमुदर्दस्तुकफाधिकः ॥

अर्थ-शीतपित्तमें वात प्रधान, तथा उदर्द कफ प्रधान जानना ॥

उदर्दके अन्य लक्षण।

सोत्संगैश्चसरागैश्चकंडूमद्भिश्चमंडलैः।
शैशिरःकफजोव्याधिरुदर्दःपरिकीर्तितः ॥

अर्थ-सरदीसे कफका कोप होकर अंगके ऊपर लाल लाल चकत्ता उठें उनमें खुजली बहुत चले और वे मंडलकेसा आकार गोल हों, बीचमें कुछ नीचे और पास ऊंचे होय, इस रोगको उदर्द कहते हैं ॥

कोठलक्षण।

असम्यग्वमनोदीर्णपित्तंश्लेष्मान्ननिग्रहैः ॥ मंडलानिसकण्डूनि रागवंतिबहूनिच ॥ उत्कोठःसानुबंधश्चकोठइत्यभिधीयते ॥

अर्थ-वमन कारक औषध सेवन करनेसे, अच्छी रीतिसे वमन न होनेसे, पित्त और कफ कुपित होनेसे अथवा स्वतः वमनके वेग आये भयेको रोकनेसे देहके ऊपर लाल और बहुत चकत्ता उठें, उनमें खुजली चले, इस रोगको उत्कोठ कहते हैं, और यह वारंवार होय, और जो क्षणभरमें उत्पन्न होकर नाश होजाय उसको कोठ कहते हैं ॥

उत्कोट और कोठ।

आरनालैश्चसूक्तैश्चआसुरीलवणेनच ॥ वर्षाकालेप्रकुप्येतत थादुष्टैश्चकारणैः ॥ उत्कोठःसानुबंधश्चकोठइत्यभिधीयते ॥

अर्थ-काञ्जी खानेसे, राई और सामुद्र निमक बहुत खानेसे और दूषित कारणोंसे वर्षाकालमें कुपित होनेवाला चौफेर फैला हुवा जो उत्कोठ अर्थात् गीला कुष्ठ उस्को कोठ चक्राकार कोढ कहतेहैं ॥

वमन।

अभ्यंगःकटुतैलेनस्वेदश्चोष्णेनवारिणा।
तथासुवमनंकार्यंपटोलारिष्टवासकैः ॥

अर्थ-सरसोंके तेलकी मालिस कर गरम जलसे शेक कर तथा पटोल पत्र नीम और अडूसा इनका काढा वमन होनेके वास्ते देवे ॥

त्रिफलादि रेचक।

त्रिफलापुरकृष्णाभिर्विरेकश्चप्रशस्यते।
सर्पिःपीत्वामहातिक्तंकार्यंशोणितमोक्षणम् ॥

अर्थ-शीत पित्त रोगीको हरड बहेडा आँवला गूगल और पीपल इनका जुलाब देवे तथा महातिक्त घृत पीनेको देवे और रुधिर निकाले ॥

अभ्यंग।

सक्षारसिंधुतैलस्यगात्राभ्यंगःप्रकल्पयेत् ॥

अर्थ-तेलमें सैंधानिमक डालके देहमें मालिस करे तो शीतपित्त दूर होय॥

गंभारीफलकल्क।

गंभारिकाफलंकल्कंशुष्कमुत्स्वेदितंपुनः।
क्षीरेणशीतपित्तघ्नंखादितंपथ्यसेविना ॥

अर्थ-कंभारीके सूखे फलोंको औटायके पीस डाले उस कल्कको दूधमें मिलाय देवे और पथ्य करे तो शीतपित्तका नाश करे ॥

यष्टयादिक्वाथ।

यष्टीमधुकपुष्पंचसरास्नंचंदनद्वयम्।
निर्गुंडीसकणाक्वाथंशीतपित्तहरंपिबेत् ॥

अर्थ-मुलहटी, महुआके फूल, रास्ना, चन्दन, रक्तचन्दन, निर्गुंडी, पीपल इनका काढा शीतपित्तनाशक है ॥

अमृतादिक्वाथ।

अमृतारजनीनिंबधनायासैः पृथक्शृतम्।
प्राणिनांप्राणिदंचैतच्छीतपित्तेसमाचरेत् ॥

अर्थ-गिलोय, हलदी, नीमकी छाल, धनिया धमासा इन प्रत्येकका काढा शीत पित्त पर देवे तो प्राणियोंके प्राणका संरक्षण करे ॥

गुडादियोग।

सगुडंदीप्यकंयस्तुखादेच्चपथ्यभुङ्नरः।
तस्यनश्यतिसात्तहादुदर्दःसर्वदेहजः ॥

अर्थ-गुड और अजमायन इनको एकत्र कर सात दिन खाय और पथ्य-से रहे तो सर्व देहका उदर्द शमन होय ॥

सामान्यचिकित्सा।

यवागूंपाययेद्वापिसव्योषांक्षीरसंयुतां।
पिप्पलींवर्धमानांवालशुनंवाप्रयोजयेत् ॥

अर्थ-सोंठ, मिरच पीपल इनका चूर्ण तथा दूध डालके यवागू पीवे अथवा वर्द्धमान पीपल अथवा लहसन देवे ॥

सैंधवादिलेप।

ससैन्धेकेनकोष्णेनसर्पिषालेपमाचरेत्।
सुरसास्वरसैर्वाथलेपयेत्परमौषधं ॥

अर्थ-सैंधानिमक डालके घीको थोडा गरम करके देहमें मालिस करे अथवा तुलसीके रसकी मालिस करे तो उदर्द दूर होय ॥

सिद्धार्थादिउद्वर्त्तन।

सिद्धार्थरजनीकुष्टैःप्रपुन्नाटतिलैःसह ॥
कटुतैलेनसंमिश्रमेतदुद्वर्तनंहितम् ॥

अर्थ-सफेद सरसों, हलदी, कूठ, पमारके बीज तिल इनका चूर्ण सरसोंके तेलमें मिलायके देहमें लगावे तो उदर्दपर उत्तम है ॥

सामान्यचिकित्साक्रम।

शीतपित्तेउदर्देचयथाकोठाभिधेगदे।
कृमिदद्रुहरःकार्यःशीतपीत्तेखिलःक्रमः ॥

अर्थ-शीतपित्त, उदर्द, और कोठ, इस व्याधिके नाशनार्थ कृमि, दाद इनकी नाशक सर्व विधि करे अरनीकी जडका चूर्ण करके घीके साथ सेवन करे तो शीतपित्त, उदर्द, और कोठ इनको सात दिनमें नाश करे ॥

निंबपत्रयोग।

निंबस्यपत्राणिसदाघृतेनधात्रीविमिश्राण्यथवाप्रयुंज्यात्।
विस्फोटकोठक्षतशीतपित्तंकण्डूस्त्रपित्तंसकलानिहन्यात् ॥

अर्थ-नींबके पत्तोंको पीस घीके साथ, अथवा आँवलेके साथ, खाय तो विस्फोट, उदर्द, कोठ, क्षत, शीतपित्त, खुजली, रक्तपित्त, ये सब नाश होय ॥

कुष्टपरउद्वर्त्तन ।

कुष्टेहरिद्रेसुरसंपटोलंनिंबाश्वगंधेसुरदारुशिग्रुम् । ससर्षपंतुंबरु धान्यकंत्वक्समानिसंगृह्यविचूर्णयेद्भिषक् ॥ तैस्तक्रपिष्टैः प्रथमंशरीरंतैलाक्तमुद्वर्तयितुंयतेत् । तथास्यकंडूपिटिकासकोठकुष्ठानिशोफश्चशमंव्रजंति ॥

अर्थ—कूठ, हलदी, दारुहलदी, तुलसी, पटोलपत्र, नीबकी छाल, असगंध, देवदारु, सहंजना, सिरस, तुंबरू, धनिया, दालचीनी इनको समान भागले चूर्ण करकै छाछमें पीस प्रथम सरसोंका तेल देहमें लगायकै फिर इसको चुपडे, तो खुजली, पिटिका, कोठ, कुष्ठ, सूजन, ये शांति होय ॥

शीतारि रस ।

रसस्यगंधंद्विगुणंप्रगृह्यपुनर्नवावह्निरसैर्विमर्द्य। पक्वार्कपत्रोत्थरसेनतस्माद्विपाचयेदष्टगुणेनपश्चात् ॥ रसार्धभागेनविषंचदद्याद्विपाचयेद्वह्निजलैःक्षणंतत् । शीतारिसंज्ञोहिरसोयमस्यवल्लंतदर्धंयदिवार्द्रकेन । मरीचचूर्णेनघृतप्लुतेनसेवेतमासंसघृतंसपथ्यम् ॥

अर्थ—पारा १ भाग, गंधक २ भाग ले पुननर्वाके और चित्रकके रसमें खरल करे फिर पके हुए आकके पत्तोंका रस आठगुना लेय, इसमें पक्व करके पारेसे आधा सिंगिया विष डालकै फिर चित्रकके रसमें एक क्षणमात्र औंटावै, तो यह शीतारिरस सिद्ध होय, इसको ३ रत्ती अथवा दो रत्ती अदरखके रसमें अथवा घी, मरिचका चूर्ण एक मासे पर्यंत खाय ऊपरसै घृतप्लुत भोजनका पथ्य करे तो शीतवात नष्ट होय ॥

स्पर्शवातलक्षण ।

अंगेषुतोदनंप्रायोदेहस्पर्शंनविंदति ।
मंडलानिचदृश्यंतेस्पर्शवातस्यलक्षणम् ॥

अर्थ—अंगोंमें पीडा होनी, प्रायः शरीरको स्पर्श नहीं सहना शरीरमें मंडलोंका दीखनाये स्पर्शवातके लक्षण हैं ॥

तालादि गुटी ।

तालंरसस्याष्टगुणंजयांचविमर्द्ययत्नाद्गुटिकांगुडेन ।
निबद्धयतांसेवयमासयुग्मंदिनोदयेस्पर्शविकारनुत्त्यै ॥

अर्थ–पारा१भाग हरताल८भाग व हरड तीनोंको पीसकै गुडमें गोली बनावे सूर्योदयके समय दो महीने पर्यंत सेवन करे तो स्पर्शवातका विकार दूर होय॥

रसादि गुटी।

अष्टभागोरसःशुद्धोविषतिंदोर्दशैवतु। गंधकस्यदशद्वौत्रिकटु त्रिफलयोस्त्रयः॥ वन्हिचित्रकमुस्तानांवचाश्वगंधयोरपि। रेणु काविषकुष्टानांपिप्पलीमूलनागयोः॥ एकैकस्तुभवेद्भागइति ग्राह्याःक्रमेणच। गुडश्चतुर्विंशतिःस्याद्वटिकाबदराकृतिः। क्रमेणवानुसेवेतस्पर्शवातापनुत्तये॥

अर्थ–शुद्ध पारा ८ कुचला १० गंधक १२ सोंठ १ मिरच १ पीपल १ त्रिफला ३ मिलाये, चित्रक, नागरमोथा, वच, असगंध, रेणुकबीज, सिंगिया विष, कूठ, पीपरामूल, नागकेशर इनको एक एक भागले गुड २४ भाग इन सबको एकत्र खरल कर बेरके बराबर गोली बनाके क्रमसे १–२–३–इस प्रकार खायतो स्पर्शवातको नाशकरे॥

पथ्य।

शालिमुद्गकुलित्थाश्चकारवेल्लमुपोदिका। वेत्राग्रंतप्तनीरंचापि त्तश्लेष्महराणिच॥शीतपित्तोदर्दकोठरोगाणांपथ्यमीरितम्॥

अर्थ–चावल, मूंग, कुलथी, ये अन्न और करेला, पोईशाक, वेत, ये शाक और गरम जल पित्त कफोंको हरनेवाले हैं, क्योंकि शीतपित्त, उदर्द, कोठ, इन रोग वालोंको ये पथ्य कहे हैं॥

अपथ्य।

स्नानमातपमम्लंचगुर्वन्नंचविवर्जयेत्॥

अर्थ–स्नान, तपना, खट्टा, भारी अन्न, पूर्व कहा रोगी इनको त्याग देवे॥

इति श्रीबृहन्निघंटुरत्नाकरे शीतपित्तउदर्दकोठउत्कोठस्य निदानचिकित्सा समाप्ता।

अम्लपित्त।

अम्लपित्तका निदान।

विरुद्धदुष्टाम्लविदाहिपित्तंप्रकोपिपानान्नभुजोविदग्धम्। पित्तंस्वहेतूपचितंपुरायत्तदम्लपित्तंप्रवदंतिसन्तः॥

अर्थ-विरुद्ध (क्षीरमत्स्यादि) और दुष्टान्न, खट्टा, दाहकारक, पित्त बढानेवाला ऐसा अन्नपानके सेवन करनेसे वर्षादि ऋतुमें जलौषधिगत विदाहादि स्वकारणसे संचित भया पित्त दुष्ट होय उसको अम्लपित्त कहते हैं ॥

लक्षण ।

अविपाकःक्लमोत्क्लेदतिक्ताम्लोद्गारगौरवैः ।
हृत्कंठदाहारुचिभिश्चाम्लपित्तंवदेद्भिषक् ॥

अर्थ--अन्नका न पचना, विनापरिश्रम करे परिश्रमसा मालूम हो, वमन, कडवी, तथा खट्टी डकार आवै, देह भारी रहै, हृदय और कंठमें दाह होय, अरुचि होय, ये लक्षण होनेसे अम्लपित्त वैद्य जाने ॥

अम्लपित्तभेदोंमें एक अधोगत दूसरा उर्ध्वगत उनमें अधोगतके लक्षण ।

तृट्दाहमूर्च्छाभ्रममोहकारीप्रयात्यधोवाविविधप्रकारम् ।
हृल्लासकोठानलसादकर्णस्वेदांगपीतत्त्वकरंकदाचित् ॥

अर्थ-अम्लपित्त अधोगत होनेसे प्यास, दाह, मोह (इन्द्रियमनोमोह) मूर्च्छा, भ्रम, मोह, मूर्खारद्द, मन्दाग्नि, कोठ कानमें पसीना देहमें पीलापन ये लक्षण होकर गुदाके द्वारा काले, लाल, दुर्गन्धियुक्त अनेक वर्णके पित्त गिरें ॥

कफपित्तजअम्लपित्त ।

करचरणदाहमौष्ण्यंमहतीमरुचिंज्वरंचकफपित्तम् ।
जनयतिकंडूमंडलपिडिकाचितगात्ररोगचयम् ॥

अर्थ-हाथ पैरोंमें दाह, अंगोंमें गरमी, अन्नमें अरुचि, ज्वर,कंडू (खुजली), रुधिरके बिगडनेसे देहमें मंडल हो, सैकडों पिटिका और अविपाकादि अनेक उपद्रव, ये लक्षण कफपित्तसे होते हैं ॥

कफपित्तलक्षण ।

भ्रमोमूर्च्छारुचिच्छर्दिरालस्यंचशिरोरुजः ।
प्रसेकोमुखमाधुर्यंश्लेष्मपित्तस्यलक्षणम् ॥

अर्थ-भ्रम, मूर्च्छा, अरुचि, वमन, आलस्य, मस्तकपीडा, मुखसे पानी बहना, मुखमें मिठास ये कफपित्तयुक्त अम्लपित्तके लक्षण हैं ॥

अम्लपित्तचिकित्सा ।

गुडूचीचित्रकारिष्टपटोलैःक्वथितंपिबेत् ॥
क्षौद्रयुक्तंनिहंत्येतच्छर्दिंपित्ताम्लसंभवाम् ॥

अर्थ-गिलोय चित्रककी छाल, नींबकी छाल, पटोलपत्र इनके काढेमें त डालके पीवे तो अम्लपित्तसंबंधी वमन होना दूर होय ॥

पटोलादिक्काथ।

पटोलत्रिफलानिंबक्काथंक्षौद्रयुतंपिबेत्।
अम्लपित्तंकफंछर्दिंदाहंशूलंकफंजयेत्॥

अर्थ-पटोलपत्र हरड बहेडा आँवला नीमकी छाल इनके काढेमें सहत डालके देवे तो अम्लपित्त, ज्वर,वमन, दाह,शूल और कफ इनको नाशकरे॥

उर्ध्वगतअम्लपित्तके लक्षण।

वातंहरित्पीतकनीलकृष्णमारक्तरक्तंभवतीवचास्रम्।
मांसोदकाभंत्वतिपिच्छिलाभंश्लेष्मानुयातंविविधंरसेन॥
भुक्तेविदग्धेत्वथवाप्यभुक्तेकरोतितिक्ताम्लवमिंकदाचित्।
उद्गारमेवंविधमेतिकंठेहृत्कुक्षिदाहंशिरसोरुजंच॥

अर्थ-ऊर्ध्वगत पित्तसे हरे, पीले, नीले, काले, तामेके रंगके, लाल, अत्यंत खट्टा,मांस धोये हुये जलके समान अत्यंत गाढा, स्वच्छ, कफ मिश्रित, खारी, कषेला आदियुक्त ऐसे पित्त गिरे कभी कभी भोजन करा अन्न विदग्धावस्था-को प्राप्त होकर अथवा भोजन करनेके पहिले कडुई, खट्टी ऐसी वमन होय तथा ऐसीही डकारैं आवै, कंठ, कूख और हृदय इन्में दाह होय माथा दूखै॥

अम्लपित्तमें साध्यासाध्य।

रोगोयमम्लपित्ताख्योयत्नात्संसाध्यतेनवः।
चिरोत्थितोभवेद्याप्यःकृच्छ्रसाध्यःसकस्यचित्॥

अर्थ-यह अम्लपित्त रोग नया होय तो यत्न करनेसे साध्य होय और बहुत दिनका होय तो याप्य जानना और जो अपथ्य सेवन करनेवाला पुरुष है उस्के यह अम्लपित्त रोग कृच्छ्रसाध्य होय है॥

अम्लपित्तको वातकफंससर्ग।

सानिलंसानिलकफंसकफंतच्चलक्षयेत्।
दोषलिंगेनमतिमान्भिषङ्मोहकरंहितत्॥

अर्थ-वातयुक्त अम्लपित्त, वातकफयुक्त, अम्लपित्त और कफयुक्त अम्ल-पित्त ऐसे तीन प्रकारके अम्लपित्त बुद्धिमान् वैद्य दोषोंके लक्षणोंसे जाने। कारण इसका यह है कि ऊर्ध्वगत, अम्लपित्तमें छर्दि (रद्द) रोगका भास होय है और अधोगत अम्लपित्तमें अतिसारकीसी चेष्टा मालूम होय है। इसीसे वैद्यको इस रोगकी सूक्ष्म रीतिसे परीक्षा करनी चाहिये॥

वातयुक्तअम्लपित्त।

कंपप्रलापमूर्च्छाचिमिचिमिगात्रावसादशूलानि।
तमसोदर्शनविभ्रमविमोहहर्षाश्चवातयुते॥

अर्थ–वातयुक्त अम्लपित्तमें कंप, प्रलाप, मूर्च्छा, चिमचिमा, (चौंटी काटनेसे प्रगट खुसलीके समान) देहग्लानि, पेटदूखना, नेत्रोंके आगे अंधकार दीखै, भ्रांति होना, इन्द्रीमनको मोह, रोमांच खडे हों, ये लक्षण होते हैं॥

वातकफयुक्त अम्लपित्त।

उभयमिदमेवचिह्नंमारुतकफसंभवेभवत्यम्ले॥

अर्थ–वातकफयुक्त अम्लपित्तमें ऊपर कहेहुये दोनोंके लक्षण होतेहैं॥

कफयुक्त अम्लपित्त।

कफनिष्ठीवनगौरवजडताऽरुचिशीतसादवमिलेपाः।
दहनबलसादकंडूर्निद्राचिह्नंकफानुगते॥

अर्थ–कफयुक्त अम्लपित्तमें कफके ढेला गिरें शरीरका अत्यंत जडपना, अरुचि, शीतलगे, अंगम्लानि, वमन, मुख कफसे लिहसारहै, मंदाग्नि, बलनाश, खुजली और निद्रा ये लक्षण होते हैं॥

गुडादि मोदक।

गुडपिप्पलिपथ्याभिस्तुल्याभिर्मोदकःकृतः।
पित्तश्लेष्मापहःप्रोक्तोमंदाग्निंचापिदीपयेत्॥

अर्थ–गुड, पीपल, हरड, ये समान भागले इनका लड्डू बनावे तो पित्त-कफ, इनका नाशक तथा मंदाग्नि दीपन करनेवाला है॥

अम्लपित्तकी सामान्य चिकित्सा।

पूर्वंतुवमनंकार्यंपश्चान्मृदुविरेचनम्।
कृतवांतिविरेकस्यसुस्निग्धस्यानुवासनम्॥

अर्थ–अम्लपित्तवालेको प्रथम वमनकारक औषध देवे, फिर हलका रेचन देवे, वांति और रेचन देकै स्नेहपान करे, फिर अनुवासन बस्ति देवे॥

प्रकारांतर।

अस्थापनंचिरोत्थेस्मिन्देयंदोषाद्यपेक्षया।
दोषसंसर्गजंकार्यमौषधाहारकल्पनम्॥

अर्थ–बहुत दिनके अम्लपित्तमें दोषादिकोंको देखकै निरूहवस्ती देवे, और दोषसंसर्गनाशक ऐसे आहार तथा औषधकी वैद्य कल्पना करे ॥

प्रकारांतर।

उर्ध्वदेहस्थितंवांत्याप्यधःस्थंरेचनैर्हरेत्।
पाचनंतिक्तविहितंपथ्यंचपरिकल्पयेत् ॥

अर्थ–उर्ध्व देहस्थित अम्लपित्तवालेको वमन देवे, अधोगतको दस्त करावे तथा कडुई औषधोंका पाचन और पथ्य देवे ॥

अन्न।

विकारान्यवगोधूमकृतान्तीक्ष्णविवर्जितान्।
भक्षयेल्लाजसक्तूंश्चसिताक्षौद्रयुतापिबेत् ॥

अर्थ–जों गेंहूके पदार्थ तीक्ष्णपदार्थके विना भक्षण करे तथा खांड और सहत डालके खीलोंको खाय ॥

सामान्य चिकित्सा।

अम्लपित्तेप्रयोक्तव्यःकफपित्तहरोविधिः।
गुडकूष्मांडकंचैवतथाखंडामलक्यपि ॥

अर्थ–अम्लपित्त पर कफपित्तनाशक उपचार करे, गुड, और पेठा, अथवा मिश्री और आंवलको मिलायको देवे ॥

वमन और विरेचन।

अम्लपित्तेतुवमनंपटोलारिष्टवारिणा। कारयेन्मदनक्षौद्रसिंधु
युक्तंततोभिषक्। विरेचनंत्रिवृच्चूर्णमधुनात्रिफलाद्रवैः ॥

अर्थ–अम्लपित्त पर पटोलपत्र, नींबकीछाल,मैनफल इनके काढेमें सैंधानिमक डालकै वमन होनेके वास्ते देवे, ओर निसोथका चूर्ण त्रिफलेके काढेमें डालकै सहत मिलाय रेचन होनेके वास्ते देवे ॥

सामान्य चिकित्सा।

कृतवमनविरेकस्यापिदोषोपशांतिर्भवतिनयदिकार्येरक्तमोक्ष
श्चयुक्त्या।कृतशिशिरविलेपस्याम्लपितघ्नभक्ष्यौदनसमुदित
तृप्तेर्वातरक्षाचकापि ॥

अर्थ–अम्लपित्तमें वमन, रेचन देनेसे दोष यदि शांति न होयतो उस रोगीका रुधिर निकाले, तथा शीतल लेपकरे, तथा अम्लपित्तनाशक भक्ष्य पदार्थ, अन्न इत्यादिक देकर तृप्ति करे, तथा वादीका संरक्षण करे ॥

अम्लपित्तके दाहपर ।

ज्वलंतमिवचात्मानमन्यतेयोम्लपित्तवान् ।
तस्यैवशोधनंपथ्यंनशांतिःशोधनंविना ॥

अर्थ–जो अम्लपित्तवाला अम्लपित्तसे अपनी देहको जलती हुईसी जाने उसको शोधन हितकारी है, तथा बिनाशोधन (वमन विरेचन) के शांति नहीं होय ॥

द्राक्षादि गुटिका ।

क्षाद्रापथ्येसमेकृत्वातयोस्तुल्यांसितांक्षिपेत् । संकुटचाक्षद्व यमितांपिटिकांकारयेद्भिषक् ॥ तांखादेदम्लपित्तार्तोहृत्कं ठदहनापहा । तृण्मूर्छाभ्रममंदाग्निनाशिनीचामवातहा ॥

अर्थ–दाख और हरड ये समान भाग लेवे तथा दोनोंके समान मिश्री मिलाय एकत्र कूट उसकी तीन २ तोलेकी गोली बनायके सेवन करे तो अम्लपित्तसे पीडित, तथा हृदय, गला इनकी जलन, प्यास, मूर्च्छा, भ्रम, मंदाग्नि और आमवात इनको नाश करे ॥

नारिकेरखंड ।

कुडवमितमिहस्यान्नारिकेलंसुपिष्टंपलपरिमितसर्पिः पाचितं तुल्यखंडम्॥निजपयसितदेतत्प्रस्थमात्रेविपक्वंगुडवदथसुशीते शाणमात्रंक्षिपेच्च॥ धान्याकपिप्पलिपयोदतुगाद्विजीरैः सांकत्रि जातमिभकेसरवद्विचूर्ण्य । हंत्यम्लपित्तमरुचिंक्षयमस्रपित्तंशू लंवमिंसकलपौरुषकारिपुंसाम् ॥

अर्थ–बारीक कतरी हुई नारियलकी गिरी १५ तोलेको चार तोले घीमें अच्छी रीतिसे भूनके उसमें बराबरकी मिश्री मिलावे और ६४ तोले नारियलका जल डालके गुडके समान पाक करे, फिर इसमें धनिया, पीपल, नागरमोथा, वंशलोचन, जीरा, काला जीरा, दालचीनी, इलायची, पत्रज, नागकेशर ये प्रत्येक चूर्ण करके छः छः मासे डाले जब शीतल होजावे तब देवे तो अम्लपित्त, अरुचि, क्षय, रक्तपित्त, शूल, वांति इनको नाश करे और धातुकी वृद्धि करे ॥

खंड कूष्मांड ।

कूष्मांडस्यरसोग्राह्यःपलानांशतमात्रकं । रसतुल्यंगवांक्षीरं

धात्रीचूर्णपलाष्टकं ॥ लघ्वग्निनापचेत्तावद्यावद्दर्वीप्रलेपिते ॥ धात्रीतुल्यासितायोज्यापलार्धंलेहयेदनु। खंडकूष्मांडकंख्यातमम्लपित्तंनियच्छति ॥

अर्थ-पेठेका रस ४ तोले, गौका दूध ४० तोले आँवलेका चूर्ण ३२ तोले ले एकत्र कर मंदाग्निसे गोला होने पर्यंत ओटावे, इसमें ३२ तोले मिश्री डालके दो तोलेके प्रमाण खाय, तो अम्लपित्तको नाश करे इसको खंडकूष्माड कहते हैं ॥

मधुपिप्पली।

पिप्पलीमधुसंयुक्तानाशयेदम्लपित्तकम्।
जंबीरस्वरसःपीतःसायंहंत्यम्लपित्तकम् ॥

अर्थ-सहत और पीपल भक्षण करनेसे अम्ल पित्तको नाश करे है तथा सायंकालमें जंभीरीका रस पीवे तो अम्लपिको नाश करे ॥

पाठादिक्काथ।

पाठानिंबपटोलत्रिफलासनयासयोजयाति।
अधिककफमम्लपित्तंसहितोगुग्गुलुनाक्रमशः ॥

अर्थ-पाढ नीबकी छाल, पटोलपत्र त्रिफला, विजेसार धमासो इनका काढा गूगलडालके पीवे तो अतिकफ अम्लपित्त इनको जीते ॥

हिंस्रादिक्काथ।

सहिंस्रामृतभंटाकीक्काथंकृत्वासमाक्षिकम्।
अम्लपित्तंहरेद्दुष्टंश्वासंकासंज्वरंवमिम् ॥

अर्थ-जटामांसी गिलोय कटेरी इनके काढेमें सहत डालके पीवे तो अम्लपित्त, श्वास, कामज्वर, वमन इनको हरण करे ॥

यवादि।

निस्तुषयववृषधात्रीत्रिसुगंधंचमधुयुतंपीत्वा।
अपहरतिचाम्लपित्तंयदिभुंक्तेमुद्गयूषेण ॥

अर्थ-तुष रहित जौं, अडूसा, आँवला दालचीमी, पत्रज, इलायची इनका काढा सहत युक्त पीवे तो अम्लपित्तको नाश करे, परंतु इसके साथ मूंगका यूष पीवे ॥

अन्ययवादि काढा।

यवकृष्णापटोलानांक्काथंक्षौद्रयुतंपिबेत्।
नाशयेदम्लपित्तंचह्यरुचिंचवमिंतथा॥

अर्थ–जौ, पीपल, परवल, इनका काढा, सहत डालके पीवे तो अम्लपित्त अरुचि, वमन, इनको नाश करे॥

भूनिंबादि क्काथ।

भूनिंबनिंबत्रिफलापटोलीवासामृतापर्पटमार्कवाणाम्।
क्काथंहरेत्क्षौद्रयुतोम्लपित्तंचित्तंयथावारवधूकटाक्षः॥

अर्थ–कडुआ चिरायता, नीबकी छाल, त्रिफला, परवल, अडूसा, गिलोय, पित्तपापडा, भाँगरा, इनका काढा सहत मिलायकै देवे तो अम्लपित्तको हरण करे जैसे वेश्या स्त्रीका कटाक्ष चित्तको हरण करे हैं॥

कंटकार्यादि क्काथ।

कंटकारिमृतावासाकषायंमधुसंयुतम्।
अम्लपित्तंजयेत्पीत्वाश्वासंकासंवमिंज्वरम्॥

अर्थ–कटेरी गिलोय अडूसा इनका काढा सहत डालके पीवे तो श्वास, खांसी वांति और ज्वर इन करके युक्त अम्लपित्तको नाश करे॥

चित्रकादिक्काथ।

चित्रकैरंडमूलानियवाश्चसयवासकाः।
जलेनक्कथितंपित्तंकोष्ठदाहाम्लपित्तजित्॥

अर्थ–चित्रककी छाल अंडकीजड जौं और धमासा इनका काढा पीनेको देवे तौ कोष्ठदाह और अम्लपित्त इनको नाश करे॥

अविपत्तिकरचूर्ण।

त्रिकटुत्रिफलामुस्तंबीजंचैवविडंगजम्॥ एलापत्रंचसर्वाणिस
मभागानिकारयेत्॥ यावंत्येतानिसर्वाणिलवंगंतत्समंभवेत्॥
सर्वचूर्णाद्विगुणितंत्रिवृच्चूर्णंतुकारयेत्॥ यावंत्येतानिसर्वाणि
तावतीशर्कराभवेत्॥ सर्वमेकीकृतंपात्रे स्निग्धेचैवनिधापये
त्॥ भोजनादौततोभक्षेन्माषाष्टकमिदंशुभम्। शीततोयानु
पानंचनारिकेरोदकंतथा॥ततोयथेष्टमाहारंकुर्यात्क्षीरौदनंचवै॥

अम्लपित्तंहरत्याशुशूलदुर्नामनाशनम्॥ प्रमेहंविंशतिंचैवमूत्र घातांस्तथाश्मरीम्॥अविपत्तिकरंचूर्णमगस्त्यमुनिभाषितम् ॥

अर्थ-सोंठ, मिरच, पीपल, त्रिफला, नागरमोथा, इलायची, पत्रज, ये सब समान भागले सबके बराबर लौंगले चूर्णकरे, जितना चूर्ण होय उतना ही निसोथका चूर्ण मिलावे, और सबकी बराबर मिश्री मिलावे सबको एकत्र करके चिकने वासनमें भरकैं धररखे, भोजनके प्रथम ८ मासे नित्य भक्षण करे, ऊपरसै शीतल जल पीवे, अथवा नारियलका जल पीवे और आहार यथेष्ट करे दूध भात भोजन करे तो अम्लपित्त, शूल, बवासीर, प्रमेह, मूत्राघात, मूत्राश्मरी, इनको नाश करे, इस चूर्णको अविपत्ति कर कहते हैं यह अगस्त्य मुनिने कहा है ॥

एलादि चूर्ण ।

एलातुगाचीचशिवाभयानांत्वग्ग्रंथिपाठीरदलाह्लकानाम् । चूर्णसितातुल्यमपाकरोतिप्रौढाम्लपित्तंदिवसस्यभुक्तम् ॥

अर्थ-इलायची, वंशलोचन, दालचीनी, आँवले, हरड, तंज, पीपरामूल, चंदन और धनिया इनको समान भाग चूर्ण करकै उसमें बराबरकी मिश्री मिलावे, यह बढे हुए अम्लपित, और आहार इनको नाश करे ॥

गुड मोदक ।

गुडपिप्पलिपथ्याभिस्तुल्याभिर्मोदकःकृतः । पित्तश्लेष्महरःप्रोक्तोमंदाग्नित्वंचनाशयेत् ॥

अर्थ-गुड, पीपल, और हरड ये समान भाग लेकै लड्डू बनावे यह पित्त कफ और मंदाग्नि इनको नाश करे ॥

त्रिकटु चूर्ण अधोगत अम्लपित्तपर ।

त्रिकटुकसकंटकारिपर्पटवारिकुटजबीजानाम्। सौराष्ट्रिकापटोलित्रायंतीदारुमूर्वाणाम् ॥ तिक्तामृणालमलयजकलिंगकैलाकिराततिक्तानाम् । सवचातिविषाकेसरदीप्यकमधुशिग्रुबीजानां ॥ चूर्णपटघृष्टमिदंपीतंशिशिरेणवारिणाप्रातः । क्षौद्रेण वातलीढंप्रायेणाधोगतंहंति ।

अर्थ-सोंठ,मिरच, पीपल, कटेरी, पित्तपापडा, नेत्रवाला,इन्द्रजों, फिटकरी पटोलपत्र, त्रायमाण, देवदारु, मूर्वा, कुटकी कमलका कंद, चंदन, इन्द्रजों,

इलायची, चिरायता, वच, अतीस, नागकेशर अजमायन, मुलहटी, सहंजनेके बीज इनको कूट पीस कपड छान चूर्ण कर लेवे, इसको प्रातःकाल शीतल जलके साथ पीवें तो प्राय अधोगत अत्यंत बढे हुए अम्लपित्तका नाशकरे ॥

अभयादि अवलेह ।

अभयापिप्पलीद्राक्षासिताधन्वयवासकम् ।
मधुरंकंठहृद्दाहमूर्छाश्लेष्माम्लपित्तजित् ॥

अर्थ--हरड, पीपल, दाख, मिश्री और धमासों इनको सहतमें मिलायके अवलेह सिद्ध करे, इसके सेवनसे गला, हृयय, इनका दाह, मूर्च्छा और श्लेष्माम्लपित्त इनको नाश करे ॥

खंड पिप्पल्यादि अवलेह ।

पिप्पल्याःकुडवंचूर्णघृतस्यकुडवद्वयम् ॥ पलंषोडशकंखंडा च्छतावर्याःपलाष्टकम् ॥ शिवायाःस्वरसस्यापिपलंषोडश कंमतम् । क्षीरप्रस्थद्वयेसाध्यंलेहीभूतेत्रनिःक्षिपेत् ॥ विजात काभयाजातीधान्यमुस्ताशिवातुगाः । एतेषांकार्षिकंचूर्णक र्षार्धंकृष्णजीरकम् ॥ नागरंनागकंजातीफलंसमरिचंहिमम् । दत्वापलत्रयंक्षौद्रंस्निग्धभांडेविनिक्षिपेत् ॥ प्रातर्यथाबलं लिह्यादम्लपित्तप्रशांतये । हृल्लासारोचकछर्दीपिपासादाह नाशनम् ॥

अर्थ–पीपलका चूर्ण १६ तोले, घी ३२ तोले, मिश्री ६४ तोले, शतावर ३२ तोले, आंवलेका रस ६४ तोले, दूध, १२८ तोले, इनका पाक करे जब थोडासा पतला रहे तब इसमें दालचीनी, इलायची, पत्रज, हरड, जीरा, धनिया, नागरमोथा, आंवला, वंशलोचन इन प्रत्येकका एक २ तोले चूर्ण लेवे और कालाजीरा, सोंठ, नागकेशर, जायफल और मिरच, कपूर ये आधे२तोले डालके इसमें १२ तोले सहत डाल घीको चिकने वासनमें भरके धर देवे, इसमेंसे प्रातःकाल बलाबल विचारके देवे तो अम्लपित्त, हलास, अरुचि, वांति, प्यास और दाह इनको नाश करे ॥

पिप्पली घृत ।

पिप्पलीक्वाथकल्केनघृतंसिद्धंमधुप्लुतम् ।
पिबेत्प्रातः समुत्थायअम्लपित्तनिवृत्तये ॥

अर्थ–पीपलका काढा और कल्क इनमें घृतको सिद्ध करे, इसको अम्लपित्तके दूर करनेको प्रातःकाल सहत डालके देय ॥

द्राक्षादि घृत।

द्राक्षाभयाशक्रपटोलपत्रैः सोशीरधात्रीयवचंदनैश्च । त्रायंति कापद्मकिरातधान्यैःकल्कैःपचेत्सर्पिरुपेतमेभिः ॥ भुंजीतमात्रासहभोजनेनसर्वंतुपानेह्यमृतोपमंच ॥

अर्थ–दाख हरड, इन्द्रजौ, पटोलपत्र, खस, आँवले, जंव, चंदन, त्रायमाण, पद्माख, चिरायता, धनिया इनका कल्क करके उसमें घी डालके पचावे इसको भोजनमें अथवा भोजनके साथ खाय तो अमृतके समान गुण करे ॥

शतावरी घृत।

शतावरीमूलकल्केघृतप्रस्थंपयःसमम् । पचेन्मृद्वग्निनासम्यक्क्षीरंदत्वाच्चतुर्गुणम् ॥ नाशयेदम्लपित्तंचवातपित्तोद्भवान् गदान् । रक्तपित्तंतृषांमूर्च्छांश्वासंसंतापमेवच ॥

अर्थ–शतावरकी जडका कल्क ६४ तोले, घी६४ तोले तथा इनसे चौगुना दूध डालके पचावे, जब घृत तयार हो जावे तब देवे तो अम्लपित्त,वातपित्तसंबंधी विकार, रक्तपित्त, प्यास, मूर्च्छा, श्वास और संताप इनको नाश करे ॥

नारायण घृत।

जलेदशगुणेक्काथ्यंपिप्पलीचपलाष्टकम् । पादशेषेहरेत्क्काथं क्काथतुल्यंघृतंक्षिपेत् ॥ अम्लपित्तहरेश्रेष्ठंघृतंनारायणंमहत् ॥ गुडजीरकणासिद्धंसर्पिश्चत्रापियोजयेत् ॥

अर्थ–३२ तोले पीपरोंको ३२० तोले जलमें ओटावे जब चतुर्थांश काढा रहे तब काढेके समान घी डालके पचावै जब सिद्ध हो जावे तब महानारायणघृत अम्लपित्तरोगमें देवे अथवा गुड, दूध और पीपल इनके कल्कमें सिद्ध करे हुए घृतके साथ देवे ॥

गुडादि घृत।

गुडजीरकणासिद्धंसर्पिरत्रप्रयोजयेत् ।
सवातेसविबंधेस्मिन्हिताकंसहरीतकी ॥

अर्थ–अम्लपित्तपर, गुड, दूध, और पीपल इनसे सिद्ध करा हुआ घी देवे, यदि वह वातानुबंधी होनेसे उसपर कंसहरीतकी देवे तो हितकारीहोय॥

लीलाविलास रस।

शुद्धसूतसमंगंधंमृतताम्राभ्ररोचनम् ॥ तुल्यांशंमर्दयेद्यामंरु ध्वालघुपुटेपचेत् ॥ अक्षंधात्रीहरीतक्याःक्रमवृध्याविपाचये त्॥जलेनाष्टगुणेनैवग्राह्यमष्टावशेषितम्। अनेनभावयेत्पूर्वपक्क शूलंपुनःपुनः ॥ पंचविंशतिवारंचतावताभृंगजद्रवैः॥ शुष्कंच चूर्णितंखादेत्पंचगुंजामधुप्लुतम् ॥ रसोलीलाविलासोयमम्लपि त्तंनियच्छति ॥

अर्थ–शुद्ध पारा, गंधक, तामेकी भस्म, अभ्रक भस्म, गोरोचन ये समान भाग ले,एक प्रहर आँवले और हरड इनके अष्टावशेष काढेकी भावना देकै पुट देवे, इस प्रकार पच्चीस भावनादे और पच्चीस पुट देवें,अंतमें भांगरेके रसकी भावना देवे, यह लीलाविलास रस पांच रत्तीको सहतमें मिलायकै देवे तो अम्लपित्तका नाश करे ॥

रसामृत ।

त्रिकटुत्रिफलामुस्ताविडंगंचित्रकंतथा॥ एषांसंचूर्णितानांतुप्र त्येकंचपलंभवेत्॥ कर्षद्वयंगंधकस्यतदर्धंपारदस्यच विडाल पदमात्रंतुलिह्यात्तन्मधुसर्पिषा ॥ शीतोदकंचानुपिबेत्क्रमाद्ग व्यंपयस्तथा ॥ अम्लपित्तंचाग्निमांद्यंपरिणामरुजातथा॥ का मलांपांडुरोगंचहन्यादेतद्रसामृतम् ॥

अर्थ–सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आँवला, नागरमोथा, वायवि- डंग, चित्रककी छाल,इन प्रत्येकका (४) चार २ तोले चूर्ण ले, तथा गंधक २ तोले,पारा१ तोले सहत और घी इनसे देवे इसके ऊपर शीतल जल पीवे, अथवा गौका दूध पीवे, तो अम्लपित्त, मंदाग्नि, परिणामशूल, कामला, पांडु- रोग इनको नाश करे ॥

सूतशेखर रस।

शुद्धसूतंमृतंस्वर्णंटंकणंवत्सनागकम्। व्योषमुन्मत्तबीजंचगं धकंताम्रभस्मकम् ॥ चातुर्जातंशंखभस्मबिल्वमज्जाकचोरं

कम् । सर्वसमंक्षिपेत्खल्वेमर्द्यंभृंगरसैर्दिनम् ॥ गुंजामात्रांवटीं कृत्वाद्विगुंजंतुमधौघृते । भक्षयेदम्लपित्तघ्नोवांतिशूलामयापहः ॥ पंचगुल्मान्पचकासान्ग्रहण्यामयनाशनः । उग्रहिक्कामुदावर्तंदेहेयाप्यगदापहः ॥ मंडलान्नात्रसंदेहोसर्वरोगहरः परः । राजयक्ष्महरः साक्षाद्रसोयंसूतशेखरः ॥

अर्थ–शुद्धपारा, सुवर्णभस्म, सुहागा, सिंगिया विष, सोंठ, मिरच, पीपल, धतूरेके बीज, गंधक, तामेकी भस्म, चातुर्जात, शंखभस्म, वेलगिरी, कचूर, ये समान भाग ले इनको अदरखके रसमें १ दिन खरलकर एक २ रत्तीकी गोली बनावे, इसको सहत और घीके साथ देवे, तो अम्लपित्त, वांति, शूलरोग, पांच प्रकारके गोला, पांच प्रकारकी खांसी, संग्रहणी, त्रिदोषजन्य अतिसार, मंदाग्नि, हिचकी, उदावर्त्त, और याप्य व्याधि इनको ४० दिनमें नाश करे, यह सूतशेखर रस संपूर्ण रोग और क्षय इनको नाश करे ॥

अम्लपित्तपर पथ्य ।

यवगोधूममुद्गाश्वपुराणारक्तशालयः । जलानितप्तशीतानिशर्करामधुसक्तवः ॥ कर्कोटकंकारवेल्लंरंभापुष्पंचवास्तुकं । वेत्राग्रंवृद्धकूष्मांडंपटोलंदाडिमंतथा ॥ पानान्नानिसमस्तानिकफपित्तहराणिच । अम्लपित्तामयेनित्यंसेवितव्यानिमानवैः॥

अर्थ– जौ, गेहूं, मूंग, पुराने लाल चावल तपा हुआ शीतल जल, शक्कर, शहद, सत्तू, ककोरा, करेला, केलेका फूल, वथुआ, बेंतका कोंपल, पुराना कुम्हडा, परवर, अनार, तथा कफपित्त नाशक अन्नपान ये सब अम्लपित्तके रोगमें मनुष्योंके सेवन करने योग्य है ॥

अम्लपित्तपर अपथ्य ।

वमिवेगंतिलाम्लानिकुलित्थंतैलभक्षणम् । अविदुग्धंचधान्याम्लंलवणाम्लकटूनिच । गुर्वन्नंदधिमद्यंचवर्जयेदम्लपित्तवान् ॥

अर्थ–वमनका वेग, तिल, खटाई, कुलथी, तेलका खाना, बकरीका दूध, जौकी कांजी, नोन, खटाई कडुई वस्तु, भारी अन्न, दही और मद्य इन सबोंको अम्लपित्तका रोगी त्याग देवे ॥

इति श्रीबृहन्निघण्टुरत्नाकरे अम्लपित्तस्य निदानचिकित्सा समाप्ता ॥

विसर्प।

विसर्पनिदान।

लवणाम्लकटूष्णादिवातादिदोषकोपतः।
विसर्पःसप्तधाज्ञेयः सर्वतः परिसर्पणात्॥

अर्थ–खारी, खट्टा, कडुआ, गरम आदि पदार्थ सेवन करनेसे वातादि दोषोंका कोप होकर सात प्रकारका विसर्प रोग होय है वो सर्वत्र फैल जाय, इससे इस्को विसर्प कहते हैं सो (चरकमें) लिखाभी है॥

द्वंद्वजोंके नाम विशेष।

आग्नेयोवातपित्ताभ्यांग्रंथ्याख्यःकफमारुतात्।
यस्तुकर्दमकोघोरःसपित्तकफसंभवः॥

अर्थ–अग्निकासा जल उठता है वात पित्तसे और कफ वातसे ग्रंथिक रूप बन जाता है उस्को कर्दमक विसर्प कहते हैं, यह द्वंद्वज है॥

विसर्प होनेके कारण।

रक्तंलसीकात्वङ्मांसंदूष्यंदोषास्त्रयोमलाः।
विसर्पाणांसमुत्पत्तौविज्ञेयाःसप्तधातवः॥

अर्थ–रुधिर, मांसका जल, त्वचा, मांस ये दूष्य हैं और वातादि तीन दोष ये सात धातु विसर्पके उत्पन्न होनेके कारण हैं॥

वमन।

पटोलपिचुमंदाभ्यांपिप्पल्यामदनेनवा।
विसर्पेवमनंशस्तंतथाचेंद्रयवैःसह॥

अर्थ–पटोलपत्र और नीमकी छाल अथवा पीपल और मैनफल इनके काढेमें इन्द्रजो डालके वमन होनेके वास्ते देवे तो विसर्प दूर होय॥

शास्त्रार्थ।

पूर्वमेवविसर्पेषुकुर्याल्लंघनरूक्षणे। विरेकवमनालेपसेचना सृग्विमोक्षणैः। उपाचरेद्यथादोषंविसर्पानविदाहिभिः॥

अर्थ–विसर्प रोगपर प्रथम लंघन और रूक्षण करे फिर रेचन, वमन, लेप, सेचन और रुधिरमोक्ष करे, तथा दाह कर्त्ता औषधके विना दोषोंको देख कर क्रिया करे॥

विरेचन।

त्रिफलारससंयुक्तंसर्पिस्त्रिवृतयासह।
प्रयोक्तव्यंविरेकार्थेविसर्पज्वरशांतये॥

अर्थ-घीमें त्रिफलेका रस और निसोथ डालके विसर्प ज्वरकी शांतिके वास्ते और दस्त होनेके वास्ते देवे॥

त्रिवृतादिशोधन।

त्रिवृद्धरीतकीभिर्वाविसर्पेशोधनंहितम्॥

अर्थ-निशोथ, हरड, इन करकें विसर्प रोगपर शोधन देवे तो हितकारी होय॥

वातविसर्प।

तत्रवातात्परीसर्पोवातज्वरसमाकृतिः।
शोफस्फुरणनिस्तोदभेदपामार्तिहर्षवान्॥

अर्थ-बादीसे विसर्प जो होय उस्के लक्षण वात ज्वरके समान होते हैं तथा उस्में सूजन, फरकना, नोंचनेकीसी पीडा, तोडनेकीसी पीडा दर्द और रोमांच खडे हों ये लक्षण होते हैं तथा वो विसर्प लंबा होय है॥

रास्नादिलेप।

रास्नानीलोत्पलंदारुचंदनंमधुकंबला।
पिष्ट्वाज्यक्षीरवाँल्लेपोवातवीसर्पनाशनः॥

अर्थ-रास्ना, नीलाकमल, देवदारु, चंदन, मुलहटी और खिरेटी, इनको दूधमें पीसकै उसमें घी मिलाय लेप करे तो वातविसर्पका नाश होय॥

पित्तविसर्प।

पित्ताद्रुतगतिःपित्तज्वरलिंगोतिलोहितः॥

अर्थ-पित्तके विसर्पकी गति शीघ्र होय अर्थात् वो जलदी फैल जाय तथा पित्तज्वरके लक्षण इस्में मिलते हों तथा अत्यंत लाल होय॥

प्रपौंडरीकादिलेप।

प्रपौण्डरीकंमंजिष्ठापद्मकेशरचंदनैः।
सयष्टीकमलोपेतैःक्षीरपिष्टैःप्रलेपनम्॥

अर्थ-पुंडरीक वृक्षकी छाल, मजीठ, कमलकी केशर, चंदन, मुलहटी और नीलाकमल इनको दूधमें पीसके लेप करे॥

कसेरुवादिलेप।

कशेरुशृंगाटकपद्मगुंजासशैवलाःसोत्पलपद्मकश्च।
वस्त्रांतराःपित्तकृतेविसर्पेलेपोविधेयःसघृतःसुशीतः॥

अर्थ–कसेरू, सिंघाडे, पद्म (कमल) घूंघची, काई (सिवाल) नीलाकमल पद्माख, इनको घृतके साथ पित्तविसर्पपर लेप करे, और वस्त्रसे लपेट देवे यह शीतकारक है॥

पंचमूलादिक्वाथ।

कनीयःपंचमूलस्यपत्रवल्कलकस्यच।
कषायःपित्तवीसर्पेपानेसेकेपिशस्यते॥

अर्थ–लघु पंचमूल, अथवा इनके पत्ते अथवा छाल लेके काढा करे इसको पित्त विसर्पपर पीनेको देवे, तथा सेचन करनेके विषयमें उत्तम है॥

कफविसर्प।

कफात्कंडूयुतःस्निग्धःकफज्वरसमानरुक्॥

अर्थ–कफकी विसर्पमें खुजली बहुत होय तथा चिकनी होय और उस्में कफ ज्वरकीसी पीडा करे॥

कफ विसर्प पर वमन।

श्लेष्मिकेत्रवमिःकुर्यात्पूर्वंरेचनकंततः। मदनंमधुकंनिंबवत्सक
स्यफलानिच। एतैर्वमिर्विधातव्याविसर्पेकफसंभवे॥

अर्थ–कफजनित विसर्पपर प्रथम वांति देवे, फिर रेचन देवे, तथा मैनफल मुलहटी, नीबकी छाल, इन्द्रजव इनसे कफात्मक विसर्पपर वमन देवे॥

गायत्र्यादि लेप।

गायत्रीसप्तपर्णाह्ववासारग्वधदारुभिः।
कुटंनटैर्भवेल्लेपोविसर्पेश्लेष्मसंभवे॥

अर्थ–खैरकी छाल, सतोनाकी छाल, नागरमोथा, अडूसा, अमलतासका गूदा, देवदारु, और टैंटूकी छाल, इनका कफ विसर्पपर लेप करे॥

त्रिफलादि लेप।

त्रिफलापद्मकोशीरसमंगाकरवीरकम्।
नलमूलमनंताचलेपःश्लेष्मविसर्पहा॥

अर्थ–हरड, बहेडा, आंवला, पद्माख; खस, लजालू, कनेरकी जड, नरसल-की जड और धमासा इनका लेप कफ विसर्पनाशक है ॥

घृतादि लेप।

सर्पिषाशतधौतेनेकृतलेपोमुहुर्मुहुः।
निहंतिसर्ववीसर्पपन्नगंपक्षिराडिव ॥

अर्थ–सौवार धुले हुए घीको वारंवार लेप करे तो सन्निपातज विसर्पका नाशकरे, जैसे सर्पोंका गरुड नाशकरे ॥

दशांग लेप।

शिरीषयष्टीनतचंदनैलामांसीहरिद्राद्वयकुष्टवालैः।
लेपोदशांगःसघृतःप्रयोज्योविसर्पकुष्ठव्रणशोथहारी ॥

अर्थ–शिरस, मुलहटी, तगर, चंदन, इलायची, जटामांसी, हलदी, दारु हलदी, कूठ, और नेत्रवाला, इन दश औषधोंका कल्क करकै इसमें घी डालकै लेप करे, तो विसर्प, कुष्ठ, व्रण, और सूजन इनको नाश करे ॥

अग्निविसर्प।

वातपित्ताज्ज्वरछर्दिर्मूर्च्छातीसारतृट्भ्रमैः। अस्थिभेदाग्निसदन तमकारोचकैर्युतः ॥ करोतिसर्वमंगंचदीप्तांगारावकीर्णवत्। यं यंदेशंविसर्पश्चाविसर्पतिभवेच्चसः ॥ शांतांगारासितोनीलोरक्तो वाशूपचीयते। अग्निदग्धनिभैःस्फोटैःशीघ्रंगत्वाद्रुतंसचः ॥ मर्मानुसारीवीसर्पःस्याद्वातोतिबलस्ततः। व्यथेतांगंहरेत्संज्ञां निद्रांचश्वासमीरयेत्॥ हिक्कांचसततोवस्थामीदृशींलभतेनरः॥ क्वचिच्छर्मारतिग्रस्तोभूमिशय्यासनादिषु ॥ चेष्टमानस्ततः क्लिष्टोमनोदेहसमुद्भवा। दुर्बोधामनुतेनिद्रांसोग्निवीसर्पउच्यते॥

अर्थ–वातपित्तसे प्रगट विसर्प, ज्वर, वमन, मूर्च्छा, अतिसार, प्यास, भौंर, हडफूटन, मन्दाग्नि, अंधकारदर्शन, अन्नद्वेष इन लक्षण करके संयुक्त होय, इस्के संयोगसे सर्व शरीर अंगारोंसे भरासा मालूम होय, जिस जिस ठिकाने वो विसर्प फैले उसी उसी ठिकानेपर अग्नि रहित अंगारके समान काला, नीला, लाल होकर शीघ्र सूजे, आगसे फूंकेके समान ऊपर फलोला होय,और उस विसर्पकी शीघ्रगति होनेसे जल्दी हृदयमें जायकर,मर्मानु सारी

विसर्प होय अथवा वो अत्यन्त बलवान् होय अर्थात् अंगोंको व्यथा करै, संज्ञा और निद्रा इन्का नाश होय, श्वास बढावै तथा हिचकी उत्पन्न करै, ऐसी मनुष्यकी अवस्था होय अवस्था होनेके कारण धरती, सेज, आसन, इत्यादिकोंमें सुख होय नहीं, हलने चलनेसे क्लेश होय, मन तथा देहको क्लेश होनेसे उत्पन्न भई एसी दुर्बोध निद्रा (मरणरूपी निद्रा) को प्राप्त होय, इस रोगको (अग्निविसर्प) ऐसे कहते हैं ॥

मांस्यादि लेप।

मांसीसर्जरसोलोध्रंमधुकंसहरेणुकम् । मूर्वानीलोत्पलंपद्मंशिरीषकुसुमानिच ॥ एतैःप्रदेहःकथितोवह्निवीसर्पनाशनः ॥

अर्थ--जटामांसी, राल, लोध, मुलहटी, रेणुकबीज, मूर्वा, नीलाकमल, शिरसवृक्षके फूल, इनका लेप करे, तो अग्निविसर्पको नाश करे ॥

शतधौतघृतविमिश्रःकल्कस्त्वक्पंचकस्यलेपेन ।
बहुदाहकलितपूर्वमग्निविसर्पविनाशयति ॥

अर्थ–वड, गूलर, पीपल,पाखर,और आम इन पांच छालोंका कल्क करकै उसमें सौवार धुले हुए घीको डाल लेप करे, तो दाहयुक्त विसर्पको नाश करे॥

ग्रंथिविसर्प।

कफेनरुद्धः पवनोभित्त्वातंबहुधाकफम् । रक्तंवावृद्धरक्तस्यत्वक्शिरास्नायुमांसगम् ॥ दूषयित्वाचदीर्घानुवृत्तस्थूलखरात्मनाम् । ग्रंथीनांकुरुतेमालांरक्तानांतीव्ररूक्ज्वरम् ॥ श्वासकासातिसारास्यशोषहिक्कावमिभ्रमैः । मोहवैवर्ण्यमूर्च्छांगभंगाग्निसदनैर्युतम् । इत्ययंग्रंथिवीसर्पः कफमारुतकोपजः ॥

अर्थ–स्वहेतुसे कुपित भया जो कफ सो पवनकी गतिको रोक कफको भेदकर अथवा बढे भये रुधिरको भेदकर त्वचा, नस, नाडी और मांस इन्में प्राप्त हो और इन्को दुष्टकर लंबी, छोटी, गोल, मोटी, खरदरी, लाल, गांठोंकी माला प्रगट करे उन गांठोंमें, पीडा अधिक होय, ज्वर होय, श्वास, खांसी, अतिसार, मुखमें पपडी परे, हिचकी, वमन, भ्रमता, मोह, वर्णका पलटना, मूर्च्छा, अंगोंका टूटना, मंदाग्नि ये लक्षण होते हैं इस रोगको (ग्रन्थिविसर्प) ऐसा कहते हैं यह कफ वायुके कोपसे उत्पन्न होय है इस्को सुश्रुतमें अपची कहते हैं ॥

न्यग्रोधादि लेप।

न्यग्रोधपादोगुंजाचकदलीगर्भएवच ।
एतैर्ग्रंथिविसर्पघ्नोलेपोधौताज्यसंयुतः ॥

अर्थ-वडकें सुंग, घूंघची, केलाको गाभो, इनमें सौ वारके धुले हुए घीको मिलायके लेप करे तो ग्रंथि विसर्पको नाश करे ॥

कर्दम विसर्प ।

कफपित्ताज्ज्वरस्तंभोनिद्रातंद्राशिरोरुजः ॥अंगावसादविक्षेप प्रलापारोचकभ्रमाः॥ मूर्च्छाग्निहानिर्भेदोस्थ्नांपिपासेन्द्रियगौरवम् ॥ आमोपवेशनंलेपःस्रोतसांसविसर्पति ॥ प्रायेणामाशयंगृह्णन्नेकदेशंनचातिरुक् ॥ पिंडकैरवकीर्णोतिपीतलोहितपांडुरैः ॥ गंभीरपाकःप्राज्योष्मास्पष्टःक्लिन्नोविदीर्यते ॥ पंकवच्छीर्णमांसश्चस्फुटस्नायुशिरागणः ॥ शवगंधिचवीसर्पंकर्दमाख्यमुशंतितम् ॥

अर्थ-कफ पित्तसे ज्वर, अंगोंका जिकडना, निद्रा, तंद्रा, मस्तकशूल, अंगग्लानि, हाथ पैरोंका पटकना, बकवाद, अरुचि, श्रम, मूर्च्छा, मन्दाग्नि, हडफूटन, प्यास, इन्द्रियोंका जिकडना, आमका गिरना, मुखादि स्रोतोंमें (छिद्रों) में कफका लेप, इत्यादि लक्षण होते हैं तथा वो विसर्प आमाशयमें उत्पन्न हो पीछे सर्वत्र फैले, उसमें पीडा थोडी होय, उसमें सर्वत्र पीली तामेके रंगकी, सपेद रंगकी पिडिका होय तथा वो विसर्प चिकनी स्याहीके समान काली, मलिन, सूजनयुक्त, भारी, गंभीर पाक कहिये भीतरसे पकी हो उनमें घोर दाह हो और दबानेसे तत्क्षण गीली हो जाय तथा वो फट जाय तथा कीचके समान होकर उसका मांस गलजाय, उसमें शिरा नाडी (नस) ये दीखने लगे, उसमें मुर्दा कीसी बांस आवै, इस विसर्पको कर्दम विसर्प कहते हैं ॥

कर्दम विसर्प पर लेप ।

शतधौतघृतोन्मिश्रःशीरीषत्वग्रजःकृतः ।
लेपःशमयतिक्षिप्रंविसर्पंकर्दमाभिधम् ॥

अर्थ-शिरस वृक्षकी छालका चूर्णको सौवार धुले हुए घृतमें मिलायकै लेप करे तो कर्दम विसर्पको नाश करे ॥

क्षतज विसर्प।

वाह्यहेतोःक्षतात्क्रुद्धःसरक्तंपित्तमीरयन् ॥ विसर्पंमारुतःकुर्यात्कुलित्थसदृशैश्चितम् ॥ स्फोटैःशोथज्वररुजादाहाढ्यंश्यावशोणितम् ॥

अर्थ–बाह्य कारण करके क्षत (घाव) होकर उसमें वायु कुपित होकर वो रुधिर सहित पित्तको व्रणमें प्राप्तकर विसर्प रोग उत्पन्न करे, उसमें कुल्थीके समान श्याम वर्णके फोडे होते हैं, सूजन हो, ज्वर होय और दाह होय, उसका रुधिर काला निकले, इस विसर्पको पित्त विसर्पके अन्तर्गत जाननेसे संख्यामें विरुद्ध नहीं पडे अन्यथा संख्या बढ जाती है यह भोजका मत है ॥

विसर्पके उपद्रव।

ज्वरातिसारवमथुस्तृण्मांसदरणंक्लमः।
अरोचकाविपाकौचविसर्पाणामुपद्रवाः ॥

अर्थ–ज्वर, अतिसार, वमन, प्यास, मांसका गलना, अनायासश्रम, अरुचि, अन्न न पचना, ये विसर्परोगके उपद्रव हैं ॥

साध्यासाध्य लक्षण।

सिध्यंतिवातकफपित्तकृताविसर्पाः सर्वात्मकःकफकृतश्चनसिद्धिमेति। पित्तात्मकोजनवपुश्चभवेदसाध्यः कृच्छ्राश्चमर्मसुभवंतिहिसर्वएव ॥

अर्थ–वात पित्त कफ इन्से प्रगट जो विसर्प सो साध्य होय है, सन्निपातज और क्षतज, विसर्प साध्य नहीं होय । पित्तसे प्रगट भई विसर्प जिसका काजलके समान अंग होय वो असाध्य और जो विसर्प मर्मठिकानेपर होय वो सब कष्टसाध्य होय है ॥

गौराद्य घृत।

द्वेहरिद्रेस्थिरामूर्वासारिवाचंदनद्वयं। मधुकंमधुपर्णीचपद्मकंपद्मकेसरं ॥ उशीरमुत्पलंमेदात्रीफलापंचवल्कलम्। कल्केरक्षसमैरेभिर्घृतप्रस्थंविपाचयेत् ॥ विषवीसर्पविस्फोटकीटलूतात्रणापहम्। गौराद्यमितिविख्यातंसर्पिः श्लेष्मगदप्रणुत् ॥

अर्थ–हलदी, दारुहलदी, सालपर्णी, मूर्वा, सारिवा, चंदन, लालचंदन, मुलहटी, कँभारी पद्माख, कमलकी केशर, खस, नीले कमल, मेदा, हरड,

बहेडा, आँवला और बड, गूलर, पीपल, पाखर, बेत इनकी छाल ये प्रत्येक एक २ तोला लेवे इनका कल्क और इसमें घी २५६ तोले डालके पचावे जब तयार हो जावे तब उतारके छान लेवे, यह गौरादि घृत विष, विसर्प, विस्फोट, कीडा और लूता, इनके व्रणको नाश करे, तथा कफव्याधिकोभी नाश करे ॥

वृषादि घृत।

वृषखदिरपटोलनिंबपत्रत्वगमृतामलकीकषायकल्कैः।
घृतमभिनवमेतदाशुपक्कंजयतितदास्रविसर्पकुष्ठगुल्मान् ॥

अर्थ-अडूसा, खैर, पटोलपत्र और नींब इनके पत्ते और छाल, गिलोय, आँवले, इन सबके काढेमें तथा कल्कमें घृतको पचावे यह रक्त विसर्प, कुष्ठ और गुल्म इनको नाश करे ॥

दूर्वादि घृत।

दूर्वावटोदुंबरजंबुशालसप्तच्छदाश्वत्थकषायकल्कैः।
सिद्धंविसर्पज्वरदाहपाकविस्फोटशोफान्विनिहंतिसर्पिः ॥

अर्थ-दूब, बड, गूलर, जामुन, कोहकी छाल, सतोना, और पीपल, इनके काढे, तथा कल्कमें घृत तयार करे यह विसर्प, ज्वर, दाह, पाक, विस्फोट, और सूजन, इनको नाश करे ॥

करंजादि तैल।

करंजसप्तच्छदलांगलीकास्नुह्यर्कदुग्धावलभृंगराजैः।
तैलंनिशामूत्रविषैर्विपक्वंविसर्पविस्फोटविचर्चिकाघ्नम् ॥

अर्थ-कंजेकीछाल, सतोनाकी छाल, कलयारी, थूहर इनका दूध, चित्रक, भांगरा, हलदी, इनका कल्क और गोमूत्र, सिंगियाविष, इनको मिलायकै तेल सिद्ध करे यह विस्फोटक और विचर्चिका इनका नाशकरे ॥

पटोलादि क्काथ।

कुलकवृषकिराताारिष्टातिक्ताक्षपथ्यामलकमलयजानांकोशि
काढ्यःकषायः। सकलगदसमुत्थंहंतिवीसर्पमुग्रंवमिमिवच
विदाहभ्रांतितृष्णारुजश्च ॥

अर्थ-पटोलपत्र, अडूसा, चिरायता, नींबकीछाल, कुटकी, बहेडा, आँवला, चंदन इनमें गूगल मिलायकै काढा करे, यह संपूर्ण दोषोंसे उत्पन्न हुए उग्र विसर्प, वांति, दाह, भ्रांति और प्यास इनको नाशकरे ॥

गुडूच्यादि क्काथ ।

अमृतवृषपटोलंनिंबवल्कैरुपेतत्रिफलखदिरसारंव्याधिघातंच तुल्यं । क्वथितमिदमशेषंगुग्गुलोःपादयुक्तंहरतिविषविसर्पान् कुष्ठसंघातमाशु ॥

अर्थ-गिलोय, अडूसा, पटोलपत्र, नींबकी छाल, हरड, बहेडा, आंवला, कत्था, अमलतासका गूदा, ये समान भाग लेवे सबका काढा करकै उसमें चतुर्थांश गूगल डालकै देवेतो विषविसर्प और कुष्ठ इनको नाशकरे ॥

पटोलादि ।

पटोलंपिचुमंदंचदार्वीकटुकरोहिणी ।
षट्याह्वंत्रायमाणांचदद्याद्वीसर्पशांतये ॥

अर्थ-पटोलपत्र, नीबकीछाल, दारुहलदी, कुटकी, मुलहटी, त्रायमाण, इनका काढा विसर्पकी शांतिकरे ॥

दुरालभादि ।

दुरालभांपर्पटकंगुडूचीविश्वभेषजम् ।
निशापर्यूषितंदद्यात्तृष्णावीसर्पशांतये ॥

अर्थ-धमासा पित्तपापडा, गिलोय और सोंठ इनको रात्रिके समय कोरे मटककेमें भिगोय देवे,दूसरे दिन कल्क करकै देवे तो तृष्णा और विसर्प इनकी शांति करे ॥

मुस्तादि ।

मुस्तारिष्टपटोलानांक्काथःसर्वविसर्पनुत् ।
धात्रीपटोलमुद्गनामथवाघृतसंयुतः ॥

अर्थ-नागरमोथा, नीमकी छाल, पटोलपत्र इनका काढा कर उसमें घृत डालकै देवेतो सब प्रकारकी विसर्पोंका नाश करे ॥

भूनिंबादि ।

भूनिंबवासाकटुकापटोलंफलत्रिकंचंदननिंबसिद्धः ॥
विसर्पदाहज्वरशोफकंडूविस्फोटतृष्णावमिनुत्कषायः ॥

अर्थ-चिरायता, अडूसा, कुटकी, पटोलपत्र, त्रिफला, चंदन, नींबकीछाल, इन सबको बराबर ले काढा करे, यह विसर्प, दाह, ज्वर, सूजन, खुजली, विस्फोट, तृषा और वमन इनको नाश करे ॥

कनकादिलेप ।

कनकभुजगवल्लीमालतीपत्रमूर्वारसगदकुनटीभिर्मर्दितस्तैल योगात्॥ अपहरतिरसेंद्रःकुष्ठकंडूविसर्पस्फुटितचरणरंध्रंश्यामलत्वंत्वचायाः ॥

अर्थ-धतूरा, नागरवेल, चमेली, मूर्वा, कवीला, कूठ, मनसिल इनकी बराबर तेल युक्त पारेको खरल करके लेप करनेसें कोढ खुजली, विसर्प पैरोंका फटना और त्वचाका कालापना इनको नाश करे ॥

एरंडादितैल ।

एरंडतुंबीकटुनिंबचक्रमर्दोत्थबीजानिचसोमराजी ॥ अंकोल्लबीजानिसमानकृत्वापातालयंत्रेणसुतैलमेषाम् ॥ प्रगृह्यतेनाथ विमर्दयेच्चविसर्पकादीन्विनिहंतिसद्यः ॥

अर्थ-अंडी, कडुईतोरईके बीज, नीब, पमारके बीज, बावची, अंकोलके बीज ये समान भागले पातालयंत्रमें इनका तेल निकाल लेवे इसकी मालिस करे तो विसर्पादिक रोगोंको दूर करे ॥

हरीतकीयोग ।

मंजिष्ठाकुटजोमुस्तागुडूचीरजनीद्वयम् ॥ कंटकारीवचाशुंठी कुष्ठारिष्टपटोलकम् ॥ नागाविडंकाकमाचीमोरटाप्लक्षदारुकम् ॥ कलिंगभृंगत्रायंतीपाठाकाश्मीरिकावलिः ॥ गायत्रीत्रिफलातिक्तासारिवानक्तमालकः॥ नाशोशीरमहावृक्षसोमराजीप्रियंगुकाः ॥ चंदनंपर्पटानंताविशालात्रिवृताजलम् ॥ कटुत्रिकंखुरासानंपलमेकंपृथक्पृथक्॥ द्वाविंशतिपलांपथ्यांजलद्रोणेविपाचयेत् ॥ अष्टावशेषःकर्तव्यःक्काथःसद्भिषजाततः ॥ वस्त्रपूताशिवाकार्यातीक्ष्णलोहेनवेधयेत् ॥ मधुमध्येविनिक्षिप्यदिनांत्रिःसप्तसंख्यया ॥ विनष्टंमधुसंत्यज्यमधुश्रेष्ठंपुनःक्षिपेत् ॥ ततःसुस्वादसंपन्नांप्रभातेभक्षयेच्छिवाम् ॥ विसर्पान्नाशयेत्सर्वान्कुष्ठान्यष्टादशानिच ॥ खुडंपामांचकंडूंचदद्रुविस्फोटविद्रधीन् ॥ अन्यांस्त्वग्दोषजान्रोगांस्तथारक्तसमुद्भवान् ॥

अर्थ-मजीठ, कूडाकी छाल, नागरमोथा, गिलोय, हलदी, दारुहलदी कंटेरी, वच, सोंठ, कूठ, नींबकीछाल, पटोलपत्र, चमेली, वायविडंग, मकोय, मूर्वा, पाखर इमली, देवदारु, इन्द्रजो, भाँगरा, त्रायमाण, पाढ, कंभारी गंधक, कत्था, हरड, बहेड आवला, कुटकी, सारिवा, कंजा, अडूसा, खस, अमलतास, बावची, फूलप्रियगु, चंदन, पित्तपापडा, धमासो, इन्द्रायणकी जड, निसोथ, नेत्रवाला, सोंठ, मिरच, पीपल, खुरासानी अजमायन ये प्रत्येक चार २ तोले और हरड ८८ तोले डालकै १०२४ तोले जलमें अष्टमांश काढा करकै छान लेवे इसमेंसे हरडोंको निकाल वस्त्रसे पोछकै साफ करे फिर चाकूसे चीर गुठली निकालके सहतमें डाल देवे जब २१ दिन होजावे तब बिगडे हुए सहतको निकालके दूसरा सहत डाले, फिर इस सुस्वाद संपन्न हरडोंमेंसे एक २ हरड नित्य भक्षण करे, तो विसर्प, अठारह प्रकारके कुष्ठ खुडवात, पामा, कंडु, दाद, विस्फोटक विद्रधि, त्वचाके रोग और रक्तज रोग, इनको नाश करे ॥

द्वंद्वज विसर्पकी चिकित्सा ।

त्रिदोषघ्नींक्रियांकुर्याद्विसर्पद्वंद्वसंभवे ॥ रसायनानिकुष्ठेषुसर्पिर्वाक्काथनानिच । चूर्णादीन्यपिसर्वाणिविसर्पेष्वपितान्यलम् ॥

अर्थ-द्वंद्वज विसर्पपर त्रिदोष नाशक क्रिया करे, तथा कुष्ठ रोगपरकी रसायन, घृत, चूर्ण इत्यादि देवे, ॥

पथ्य ।

पुराणायवगोधूमकंगुषष्टिकशालयः। मुद्गामसूराश्चणकास्तुवर्योजांगलोरसः ॥ नवनीतंघृतंद्राक्षादाडिमंकारवेल्लकम् । वेत्राग्रंकुलकंधात्रीखादिरोनागकेशरम् ॥ लाक्षाःशिरीषकर्पूरंचन्दनंतिललेपनम् । ह्रीबेरकंमुस्तकंचतिक्तानिसकलान्यपि ॥ यथादोषंपथ्यमिदंसेवितव्यंविसर्पिभिः ॥

अर्थ-पुराने जौ, गेहूं, कंगुनी, सांठी तथा शाली चावल, मूंग, मसूर, चना, अरहर, जंगलीजीवोंकेमांसका रस, मक्खन, घी, दाख, अनार, करेला, वेतकी कोंपल, परवर, आमला, कत्था, नागकेशर, लाख, शिरस, कपूर, चन्दन, तिलका तेल, हाऊबेर, मोथा, सब चरपरी वस्तु दोषके अनुसार यह पथ्य विसर्प रोग वालोंको सेवन कराना चाहिये ॥

अपथ्य।

व्यायाममह्निशयनंसुरतंप्रवातंक्रोधंशुचंवमनवेगमसूयनंच ॥ शाकंविरुद्धमशनंदधिकूर्चिकांचसौवीरकादिकमथोविविधंकिलाटम् ॥ गुर्वन्नपानमखिलंलशुनंकुलित्थान्माषांस्तिलान्सकलमांसमजांगलंच ॥ स्वेदंविदाहिलवणाम्लकटूनिमद्यमर्कप्रभामपिविसर्पगदस्त्यजेत् ॥

अर्थ–कसरत, दिनमें सोना, स्त्री संग, अधिक पवन, क्रोध, शोक, वमनवेगका रोकना, इर्षा, शाक, विरुद्ध भोजन, दधि कूर्चिका अर्थात् जो दही दूधसे औटके बनते हैं कांजी, आदि किलाट अर्थात् फटे दूधका, मांस, खोवा-सब भारी अन्न, पान, लहसन, कुलथी, उडद, तिल, जंगली मांस छोडके सब प्रकारका मांस, स्वेदन, विदाही वस्तु, नोन खटाई कडुवा रस, मद्य और सूर्यका तेज, इन सबोंको विसर्पका रोगी त्याग करै ॥

इति श्रीबृहन्निघंटुरत्नाकरे विसर्परोगस्य निदानचिकित्सा समाप्ता ॥

विस्फोट।

विस्फोटनिदान।

कटम्लतीक्ष्णोष्णविदाहिरूक्षक्षारैरजीर्णाध्यशनातपैश्च ॥ तथर्तुदोषेणविपर्ययेणकुप्यंतिदोषाःपवनादयस्तु ॥ त्वचमाश्रित्यतेरक्तमांसास्थीनिप्रदूष्यच । घोरान्कुर्वंतिविस्फोटान्सर्वान्ज्वरपुरःसरान् ॥

अर्थ–कडुआ, खट्टा, तीखा, (मरिचादि) गरम दाहकारक, रूखा, खारा, अजीर्ण, भोजनके ऊपर भोजन और गरमी, ऋतुदोष कहिये शीतोष्णका अतियोग अथवा ऋतुविपर्यय (ऋतुका पलटना) इन कारणोंसे, वातादिदोष कुपितहो त्वचाका आश्रयकर रुधिर मांस और हड्डी इन्को दूषितकर भयंकर विस्फोटक (फोडा) उत्पन्न करे उन्के प्रगट होनेके पूर्व घोर ज्वर होयहै ॥

विस्फोटकका स्वरूप।

अग्निदग्धनिभाः स्फोटाः सज्वरारक्तपित्तजाः ।
क्वचित्सर्वत्रवादेहेविस्फोटाइतितेस्मृताः ॥

अर्थ-रक्तपित्तसे प्रगट भये ऐसी अग्नि करके जरेके समान फोडा अंगमें किसी एक ठिकाने अथवा सब देहमें होय हैं उन्के होनेसे ज्वर होय, उन्को विस्फोटक ऐसे कहतेहैं इस रोगमेंभी वातका अनुबंध होयहै सो भोजने कहाहै॥

सामान्यचिकित्सा ।

तत्रादौलंघनंकार्यंवमनंपथ्यभोजनम् ।
यथादोषंबलंवीक्ष्यप्रोक्तंयुक्तंचरेचनम् ॥

अर्थ-विस्फोट रोगपर प्रथम लंघन करे, फिर वमन करावे, तथा पथ्य भोजन करे तथा दोष और बलके अनुसार जुल्लाब करावे ॥

वातविस्फोटक ।

शिरोरुक्शूलभूयिष्ठंज्वरतृट्पर्वभेदनम् ।
सकृष्णवर्णताचेतिवातविस्फोटलक्षणम् ॥

अर्थ-मस्तकमें पीडा, शूल, देहमें पीडा, ज्वर, प्यास, सन्धीन्में पीडा, फोडोंका वर्ण काला होवे ये वातविस्फोटका लक्षण है ॥

दशमूलका क्वाथ ।

द्विपंचमूलंरास्नाचदार्व्युशीरंदुरालभम् ।सामृतंधान्यकंमुस्तां
क्वाथयित्वाशृतंपिबेत् ॥ विस्फोटंवातसंभूतंहंत्येतन्नात्रसंशयः ॥

अर्थ-दशमूल, रास्ना, दारुहलदी, खस, धमासो, गिलोय, धनिया और नागरमोथा इनका काढा देवे, तो वातोत्पन्न विस्फोटका नाश करे ॥

पित्तविस्फोट ।

ज्वरदाहरुजास्रावपाकतृष्णाभिरन्वितम् ।
पीतलोहितवर्णंचपित्तविस्फोटलक्षणम् ॥

अर्थ-ज्वरदाह, पीडा, स्राव, फोडोंका पकना, प्यास, देह पीला होय, अथवा लाल होय, ये पित्त विस्फोटके लक्षण हैं ॥

द्राक्षादि ।

द्राक्षाकाश्मर्यखर्जूरपटोलारिष्टवासकैः। लाजाकुलकदुःस्पर्शौ
क्वाथःशर्करयायुतः ॥ विस्फोटंपित्तजंहंतिसोपद्रवमसंशयम्॥

अर्थ-दाख, कंभारी, खजूर, पटोलपत्र, नीबकी छाल, अडूसा, खील, धमासा उनके काढेमें मिश्री डालके देवे तौ उपद्रवयुक्त पित्तविस्फोटका नाशकरे ॥

कफविस्फोट ।

छर्द्यरोचकजाड्यानिकंडूकाठिन्यपांडुताः ।
अवेदनाश्चिरात्पाकीसविस्फोटःकफात्मकः ॥

अर्थ—वमन, अरुचि,जडता तथा फोडा खुजली युक्त हो, कठिन,पीले और उन्में पीडा होयं नहीं और वे बहुत कालमें पके, यह विस्फोट कफका जानना॥

भूनिंबादि ।

भूनिंबनिंबवासाश्चात्रिफलेंद्रयवासकाः । पिचुमंदःपटोलश्चिक्का थमेषांसशर्करम् । पीत्वाविमुच्यतेनूनंकफविस्फोटकान्नरः ॥

अर्थ—चिरायता, नीबकी छाल, अडूसा, हरड, बहेडा, आँवला, इन्द्रजो, धमासो, नीबकी छाल, पटोल पत्र इनका काढा मिश्री डालके देवे तो कफ-विस्फोटसे मुक्त होय ॥

कफपित्तज विस्फोट ।

कंडूर्दाहोज्वरश्छर्दिरेतैस्तुकफपित्तकः ॥

अर्थ—खुजली, दाह, ज्वर और वमन इन लक्षणोंसे कफपित्तजन्य वि-स्फोट जानना ॥

द्वादशांग क्वाथ ।

किराततिक्तकारिष्टयष्ट्याव्हांबुदपर्पटैः । पटोलवासकोशीर त्रिफलाकुटजैःशृतम् ॥ द्वादशांगंनरःपीत्वाविस्फोटेभ्योविमु च्यते । द्वंद्वजेभ्यस्त्रिदोषोत्थरक्तजेभ्योहिताशनः ॥

अर्थ—चिरायता, नीमकी छाल, मुलहटी, नागरमोथा, पित्तपापडा, पटोल पत्र, अडूसा, खस, हरड, बहेडा, आँवला और इन्द्रजौ इन बारह औषधोंका काढा देवे तथा पथ्यसे रहे तो द्वंद्वज, त्रिदोषज, तथा रक्तज, ऐसे विस्फोटोंका नाश करे ॥

वातपित्तात्मक ।

वातपित्तकृतोयस्तुकुरुतेतीव्रवेदनाम् ।

अर्थ—वातपित्तके विस्फोटमें तीव्र पीडा होती है ॥

अमृतादि क्वाथ ।

अमृतवृषपटोलंमुस्तकंसप्तपर्णखदिरमसितवेत्रंनिंबपत्रंहरिद्रे । शृतमितिसविसर्पान्कुष्ठविस्फोटकंडूरपनयतिमसूरिंशीतपि त्तज्वरौच ॥

अर्थ-गिलोय, अडूसा, पटोलपत्र, नागरमोथा, सतौना, लाल खैरकी छाल, वेंतकी कोंपल, नींबके पत्ते, हलदी, दारुहलदी इनका काढा विसर्प, कुष्ठ, विस्फोट, कंडू, मसूरिका और पित्तज्वर इनका नाश करे ॥

कफवातात्मक विस्फोट।

कंडूस्तैमित्यगुरुभिर्जानीयात्कफवातिकम् ॥

अर्थ-खुजली, गीलापना, भारीपना इन लक्षणोंसे ककवातका विस्फोट जानना ॥

सान्निपातका विस्फोट।

मध्येनिम्नोन्नतोंतेचकठिनोल्पःप्रपाकवान् । दाहरागतृषा मो हर्छर्दिमूर्च्छारूजोज्वरः ॥ प्रलापोवेपथुस्तंद्रासोसाध्यश्चत्रिदोषजः ॥

अर्थ--जो फोडा बीचमें नीचा होंय और ओरपाससे ऊंचा होय, कठिन, कुछ पका होय है तथा जिसके योगसे दाह, अंगमें लाली, प्यास, मोह वमन मूर्च्छा पीडा, ज्वर, प्रलाप, कंप, तन्द्रा ये लक्षण होते हैं वो सन्निपातका विस्फोट असाध्य है ॥

रक्तज विस्फोट।

रक्तारक्तसमुत्थानागुंजाफलनिभास्तथा । वेदितव्यास्तुरक्तेनपैत्तिकेनचहेतुना ॥ नतेसिद्धिंसमायांतिसिद्धैर्योगशतैरपि ॥

अर्थ-रुधिरसे प्रगट भया विस्फोट तामेकेरंगका गुंजा (चिरमिटि)के समान लाल, वो रुधिरके दुष्ट होनेसे अथवा पित्तके दुष्ट हानेसे होय है। इस्में सैकडों अनुभवकारी औषधके करनेसेभी साध्य नहीं होय ॥

साध्यासाध्य।

एकदोषोत्थितःसाध्यः कृच्छ्रसाध्योद्विदोषतः ।
सर्वरूपान्वितोघोरस्त्वसाध्योभूर्युपद्रवः ॥

अर्थ-एक दोषसे प्रगट भया जो विस्फोट वो साध्य है, द्विदोषका कष्टसाध्य है और सर्व लक्षणयुक्त होय सो भयंकर तथा जिस्में उपद्रव बहुत होय वो विस्फोट असाध्य है ॥

विस्फोटके उपद्रव।

हिक्काश्वासोरुचिस्तृष्णाअंगसादोहृदिव्यथा ।
विसर्पज्वरहृल्लासाविस्फोटानामुपद्रवाः ॥

अर्थ-हिचकी, श्वास, अरुचि, प्यास, अंगग्लानि, हृदयमें पीडा, विसर्प रोग ज्वर वमन ये विस्फोटके उपद्रव जानना ॥

पटोलादि क्वाथ।

पटोलामृतभूनिंबवासारिष्टकपर्पटैः।
खदिराष्टयुतैःक्वाथोविस्फोटज्वरशांतये ॥

अर्थ-पटोलपत्र, गिलोय, चिरायता, अडूसा, नीबकी छाल, पित्तपापडा, खदिराष्टक इनका काढा विस्फोट ज्वरके नाशनार्थ देवे ॥

दूर्वादि घृत।

दूर्वावचोदुंबरजंबुशालसप्तछदाश्वत्थकषायकल्कैः।
सिद्धंहिसर्वज्वरदादपाकविस्फोटशोफान्विनिहंतिसर्पिः ॥

अर्थ-दूव, वच, गूलर, जामुन, कोहकी छाल, सतोना, पीपल इनका काढा करके अथवा कल्क मिलायकै सिद्ध करा हुआ घी सर्वज्वर, दाह, पाक, विस्फोट और सूजन इनको नाश करे ॥

निंबादि क्वाथ।

निंबत्वक्खादिरः सारोगुडूचीशक्रजोथवा।
क्वाथोमाक्षिकसंयुक्तोविस्फोटादिज्वरापहः ॥

अर्थ-नीबकी छाल, खैरसार, गिलोय और इन्द्रजों इनका काढा सहत डालकै देवे तो विस्फोटादि ज्वरोंका नाश करे ॥

भूनिंबादि क्वाथ।

भूनिंबवासाकटुकापटोलंफलत्रिकंचंदननिंबसिद्धः।
विसर्पदाहज्वरशोफकंडूविस्फोटतृष्णावमिनुत्कषायः ॥

अर्थ-चिरायता, अडूसा, कुटकी, पटोलपत्र, हरड, बहेडा, आवला, चंदन और नीबकी छाल इनका काढा विसर्प, दाह, ज्वर, सूजन, कंडु, विस्फोट, प्यास, और वांति इनका नाश करे ॥

पद्मकादि घृत।

पद्मकंमधुकंलोध्रंनागपुष्पस्यकेसरम् ॥ हरिद्रेद्वेविडंगानिसू
क्ष्मैलातगरंतथा। कुष्ठलाक्षापत्रकंचसिक्थकंतुत्थमेवच ॥
बहुवारः शिरीषंचदधित्थफलमेवच। तोयेनालोडयतत्सर्वं
घृतप्रस्थंविपाचयत्॥यांश्वरोगान्निहन्याद्धितान्निबोधमहामुने।

सर्पकीटाखुदष्टेषुनाडीदुष्टविसर्पिषु ॥ विविधेपिचविस्फोटेलू तामूत्रक्षतेषुच । नाडीषुगंडमालासुप्रभिन्नासुविशेषतः ॥

अर्थ–पद्माख, मुलहटी, लोध, नागकेशर, हलदी, दारुहलदी, वायविडंग, छोटी इलायची, तगर, कूठ, लाख, तमालपत्र, मोम नीलाथोथा, बहुवार, सिरसवृक्षकी छाल, कैथके फल ये संपूर्ण जलमें पीस कल्क करे इसमें ६४ तोले घीको डालके पचावे, यह सर्प, कीट, मूसा इनका काटना, नाडीव्रण, विसर्प, अनेक प्रकारके विस्फोट, लूता, मूत्रसे उत्पन्न हुए घाव, नाडी, गंडमाला, वहनेवाली गंडमाला इनको नाश करे, यह पद्मकादि महाघृत, आस्तिक वैद्यने निर्माण कराहै ॥

पंचतिक्त घृत।

पटोलसप्तछदनिंबवासाफलत्रिकच्छिन्नरुहाविपक्वम् । तत्पंचतिक्तंघृतमाशुहन्यात्रिदोषविस्फोटविसर्पकंडूः ॥

अर्थ–पटोलपत्र, सतोना, नीमकी छाल, अडूसा, हरड, बहेडा, आँवला, इनके कल्क करके सिद्ध करा घी, त्रिदोषजनित विस्फोट, विसर्प, और कंडु इनको नाश करे इसको पंचतिक्त घृत कहते हैं ॥

चंदनादि लेप।

चंदनंनागपुष्पंचतंदुलीयकवारिणा । शिरीषवल्कलंजातीलेपः स्याद्दाहनाशनः ॥

अर्थ–चंदन, नागकेशर, सिरसकी छाल, चमेलीके पत्ते इनके चूर्णको चौलाईकी जडके रसमें घोटकर लेप करे तो दाहको नाश करे ॥

विस्फोटपर पथ्य।

क्षुधितेलंघितेवांतेजीर्णेशालियवादिभिः । मुद्गाढकिमसूराणां रसैर्वाविश्वसंयुतैः ॥ सुनिषण्णकवेत्राग्रतंदुलीयकाठिल्लकैः । कुलकाभीरुकैरेभिः सपर्पटकतीनसैः ॥ टंकारवेल्लैःकुसुमैर्निंबपल्लवबिल्वजैः । तिक्तयूषसमायुक्तैर्मार्जनंसंप्रयोजयेत् ॥

अर्थ–विस्फोटवाले मनुष्यको क्षुधित लंघित वांत (कअहुआ) अजीर्ण रहित होनेपर चावल जब आदि मूग तुवर मसूर इनका रस सूंठ मिलाकर देवे और वेत चौलाई करेला ये शाक देवें परवलकी वेल शतावर पित्तपापडा तिरच्छ वृक्षकी छाल करेलाके फूल नींबके पत्ते बेलके पत्ते कसैला यूष इनसे विस्फोटका मार्जन (सेकना) करे तो शांत होय ॥

विस्फोटकपर अपथ्य।

तिलान्माषान्कुलित्थांश्चलवणाम्लकटूनिच ॥
विदाहिरूक्षमुष्णंचविस्फोटेपरिवर्जयेत् ॥

अर्थ--तिल उड़द कुलथी लवण मिरच विदाहि रूक्ष गरम इनको विस्फोटवाला वर्जदेवे ॥

इति श्रीबृहन्निघंटुरत्नाकरे विस्फोटरोगस्य निदानचिकित्सा समाप्ता।

मसूरिका।

मसूरिकानिदान।

कट्वम्ललवणक्षारविरुद्धाध्यशनाशनैः। दुष्टनिष्पावशाकादिप्रदुष्टपवनोदकैः ॥ क्रुद्धग्रहेक्षणाद्वापिदेहदोषाःसमुद्धताः। जनयंतिशरीरेस्मिन्दुष्टरक्तेनसंगताः। मसूराकृतिसंस्थानाःपिटिकाःस्युर्मसूरिकाः ॥

अर्थ–कडुआ, खट्टा, नोन, खारी, विरुद्ध भोजन, अध्यशन (भोजनके ऊपर भोजन) दुष्ट अन्न, निष्पाव (शिबीबीज उरद मूंग) आदिशाक, विषैल फूल आदिसे मिलापवन तथा जल, शनैश्चरादि खोटे ग्रहोंका देखना इन सब कारणों करके शरीरमें वातादि दोष कुपित होकर दुष्ट रुधिरमें मिलकर मसूरके समान देहमें अनेक मरोरी उत्पन्न करे, उन्को मसूरिका (माता) ऐसे कहते हैं " दुष्टरक्तेन संगताः" इस पदके धरनेसे रुधिरका कटु अम्लादिहेतुकरके विशेष कोप दिखाया इसीसे ग्रन्थांतरोंमें लिखाहै ॥

मसूरिकाके पूर्वरूप।

तासांपूर्वज्वरःकंडूर्गात्रभंगोरुचिर्भ्रमः।
त्वचिशोफश्चवैवर्ण्यनेत्ररोगस्तथैवच ॥

अर्थ–तिस माता (शीतला) के पूर्वज्वर होयहै, खुजली, देहमें फूटनी होय,अन्नमें अरुचि, भ्रम होय, अंगके ऊपरकी त्वचामें सूजन होय तथा वर्ण पलटजाय, नेत्र लाल होय ये शीतलाके पूर्वरूप होते हैं ॥

फुंसीहोनेका कारण।

पित्तंशोणितगंभूत्वायदादूषयतित्वचम्।
तदाकरोतिपिटिकाःसर्वगात्रेषुदेहिनाम्॥

अर्थ–पित्त रुधिरको प्राप्त होकर जब त्वचाको दूषित करताहै तब शरीरधारियोंके संपूर्ण अंगोंमें पिटिका (फुन्सी) उत्पन्न होजातीहै ॥

मसूरिकाका स्वरूप।

मसूरमाषमुद्गादितुल्याःकालोपमाअपि।
मसूरिकास्तुताज्ञेयारक्तपित्ताधिकाबुधैः॥

अर्थ–मसूर उड़द मूँगआदिके तुल्य जो श्याम फुन्सी होवे ये पंडितोंने अधिक रक्तपित्तवाली मसूरिका जाननी ॥

मसूरिकाचिकित्सा।

मसूरिकायांकुष्ठोक्तालेपनादिक्रियाहिता।
पित्तश्लेष्मविसर्पोक्ताक्रियावात्रप्रशस्यते॥

अर्थ–मसूरिकापर कुष्ठके ऊपरकी अथवा पित्तश्लेष्मजनित विसर्पपर जो चिकित्सा कही है वो करे तो हितकारी और प्रशस्त है ॥

सामान्यक्रम।

सर्वासांवमनंपूर्वंपटोलारिष्टवासकैः॥ कषायश्चविधातव्योय
ष्ट्याह्वफलकल्कितैः॥ सक्षौद्रंपाययेद्ब्राह्मीरसंवाहिलमोचिकम्॥

अर्थ–सर्व प्रकारकी शीतलाओंमें पटोलपत्र, नींबकी छाल और अडूसा इनका काढा वमन करनेको देवे, अथवा वच, इन्द्रजों, मुलहटी इनमें सहत डालके कल्क देवे, अथवा ब्राह्मीका रस,वा वथुआका रस सहतके साथ देवे॥

वातमसूरिका।

स्फोटाःकृष्णारुणारूक्षास्तीव्रवेदनयान्विताः। कठिनाश्चिरपा
काश्चभवंत्यनिलसंभवाः॥ संध्यस्थिपर्वणांभेदःकासःकंपोर
तिक्लमः॥ शोषस्ताल्वोष्ठजिह्वानांतृष्णाचारुचिसंयुता॥

अर्थ–वातमसूरिकाके फोडा काले, लाल, और रूक्ष होते हैं उनमें तीव्र पीडा होय, कठिन होय, शीघ्र पके नहीं, इसके योगसे संधि हाड और पर्वोंमें फोडने कीसी पीडा होय, खांसी, कंप, चित्त स्थिर नहो विना परिश्रमके श्रम होय, तालुआ और जीभ ये सूखने लगैं प्यास, अरुचि, ये लक्षण होते हैं ॥

वातमसूरिकाका यत्न।

वातस्यरेचनंदेयंशमनंत्वबलेनरे।
उभाभ्यांहृतदोषस्यविशुष्यंतिमसूरिकाः॥

अर्थ--वात मसूरीका पर जुलाव फरे, यदि रोगीको असक्त जाने तो शमन देवे, इसप्रकार दोनों उपचारोंसे दोष न्यून होनेसै मसूरिका सूख जाती है॥

धूप।

वेणुत्वक्सुरसालाक्षाकार्पासास्थिमसूरिकाम्। यवपिष्टंविषंसर्पिर्वचाब्राह्मीसुवर्चला॥ धूपनार्थेयथालाभंधूपमेनंप्रयोजयेत्॥ आदावंते प्रयोक्तव्योनश्यंत्यस्मान्मसूरिकाः॥ नगृह्णंतिविषंकेचीद्यथालाभश्रुतेरिह॥

अर्थ–वाँसकी छाल, तुलसी, लाख, रुईके विनोले, मसूर, जौंकाचून अतीस, घी, वच, ब्राह्मी और हुलहुल, इनमेंसे जो मिले उनकी धूनी देवे, शीतलाओंके आदिमें और अंतमें तो मसूरिका नष्ट होवे, कोई "यथालाभ" इस पदके कहनेसे अतीस नहीं लेना ऐसा कहते हैं॥

न्यग्रोधादिलेप।

न्यग्रोधप्लक्षमंजिष्ठाशिरीषोदुंबरत्वचाम्।
ससर्पिष्कंमसूर्य्यांतुवातजायांप्रलेपनम्॥

अर्थ--वात मसूरिका पर वड, पाखर, मजीठ, सिरस और गूलर इनकी छाल लेकर, बारीक पीस घीसे लेप करे॥

चंदनादिकल्क।

श्वेतचंदनकल्केनहिलमोचोद्भवंद्रवम्।
पिबेन्मसूरिकारंभेनैवंवाकेवलंरसम्॥

अर्थ–मसूरिकाके प्रारंभमें ब्राह्मीके रसमें सपेद चंदनका कल्क डालकै अथवा केवल ब्राह्मीका रस देवे.॥

गुडूच्यादिचूर्ण।

गुडूचीमधुकंद्राक्षामोरटंदाडिमैःसह। पाककालेप्रदातव्यंभेषजंगुडसंयुतम्॥ तेनकुप्यतिनोवायुःपाकंयांतिमसूरिकाः॥

अर्थ-शीतला पकनेके समय, गिलोय, मुलहटी,दाख और अनार ये सात दिनकी व्याई हुइ गौके दूधमें गुड मिलायकै देवे तो वायुका कोप नहीं होय, तथा शीतला उत्तम रीतिसैं पके॥

बृहत्पटोलादिक्काथ ।

पटोलसारिवामुस्तापाठाकटुकरोहिणी । खदिरःपिचुमंदश्चब लाधात्रीविकंकतः॥एषांकषायपानंतुहंतिवातमसूरिकाम् ॥

अर्थ–पटोलपत्र, सारिवा, नागरमोथा, पाठ, कुटकी, खैरकीछाल, नीबकी छाल, खिरेटी, आँवला, विकंकत इनका काढा करके देवे तो वादीकी मसू-रिकाओंका नाश करे ॥

दशमूलादिक्काथ ।

द्वेपंचमूल्योरास्नाचधात्र्युशीरंदुरालभा ।
सामृतंधान्यकंमुस्तंजयेद्वातमसूरिकाम् ॥

अर्थ–दशमूल, रास्ना, आँवला, खस, धमासो गिलोय,धनिया और नागर-मोथा इनका काढा वातमसूरिकाका नाश करे ।

पित्तमसूरिका ।

रक्ताःपीताःसिताःस्फोटाःसदाहास्तीव्रवेदनाः । भवंत्यचिरपाकाश्चपित्तकोपसमुद्भवाः ॥ विड्भेदश्चांगमर्दश्चदाहस्तृष्णारुचिस्तथा । मुखपाकोक्षिपाकश्चज्वरस्तीव्रःसुदारुणः ॥

अर्थ–पित्तकी मसूरिकाका मुख लाल, पीला, सपेद होय है उस्में दाह तथा पीडा बहुत होय और ये शीतला शीघ्रपके, इस्के योगसे मल पतला होय अंग टूटे, दाह, प्यास, अरुचि, मुखपाक और नेत्रपाक होय ज्वर तीव्र हो ये लक्षण होय ॥

सामान्ययत्न ।

शोधनंपित्तजायांनकार्यंवैद्येनजानता ।
तत्रादौतर्पणंकार्यंलाजचूर्णैःसशर्करैः ॥

अर्थ–पित्तकी मसूरिकापर जाननेवाला वैद्य रेचन कदाचित् न देवे, उसपर प्रथम खीलोंका चूर्ण मिश्री मिलाय उसका पना करकै देवे ॥

निंबादिक्काथ ।

निंबःपर्पटकंपाठापटोलंचंदनद्वयं । वासादुरालभाधात्रीसेव्यंकटुकरोहिणी ॥ एषांतुक्वथितंशीतंसितयामधुरीकृतं । मसूरिकांपित्तकृतांहंतिरक्तोत्तरामपि ॥

अर्थ-नींबकी छाल, पित्तपापडा, पाढ, पटोलपत्र लालचंदन, चंदन, अडूसा, धमासो आँवले, नेत्रवाला, कुटकी इनका काढा शीतल होनेपर मीठा करनेको इसमें मिश्री मिलायके देवे, तो पित्तादिक तथा रक्तादिक मसूरिकोंका नाश करे॥

निंबादि।

आदावेवमसूर्यांतुपित्तजायांप्रयोजयेत्।
निंबादिक्कथितंतेनप्रशाम्यंतिमसूरिकाः॥

अर्थ-प्रथम पित्तजन्य मसूरिकापर निंबादि काढा देवे, कि जिस्से वो शांति होय निंबादिका काढा ऊपर कह आये हैं॥

द्राक्षादि।

द्राक्षाकाश्मर्यखर्जूरपटोलारिष्टवासकैः॥ लाजामलकदुःस्प
र्शक्कथितंशर्करान्वितं। मसूरिकांपित्तकृतांरक्तजांचविनाशयेत्॥

अर्थ-दाख, कंभारीके फल, खजूर, पटोलपत्र, नींबकी छाल, अडूसा, खील, आँवले, धमासा इनका काढा मिश्री मिलायके देवे, तो पित्तादिक तथा रक्तजन्य मसूरिकाओंका नाश करे।

रक्तजन्य मसूरिका।

रक्तजायांभवंत्येतेविकाराःपित्तलक्षणाः॥

अर्थ-रक्तज मसूरिकामें पित्तज मसूरिकाके लक्षण होते हैं॥

कफजन्य मसूरिका।

कफप्रसेकःस्तैमित्यंशिरोरुग्गात्रगौरवम्। हृल्लासश्चारुचिस्तं
द्रानिद्रालस्यसमन्विता॥ श्वेताःस्निग्धाभृशंस्थूलाःकंडूरा
मंदवेदनाः॥ मसूरिकाःकफोत्थाश्चचिरपाकाःप्रकीर्तिताः॥

अर्थ-कफकी मसूरिकामें मुखके द्वारा कफका स्राव होय, अंगमें आर्द्रता, तथा भारीपना, मस्तकमें शूल, वमन आनेकीसी इच्छा होय, अरुचि, निद्रा, तन्द्रा आलस्य ये होय और फोडा, सपेद चिकने अत्यंत मोटे होय इन्में खुजली बहुत चले, पीडाप्रद होय और वे बहुत दिनमें पके॥

पंचमूलादि क्वाथ।

बृहतःपंचमूलस्यवृषपत्रयुतस्यच।
कषायःशमयेत्पीतःकफोत्थांतुमसूरिकाम्॥

अर्थ-बृहत्पंचमूल, और अडूसेके पत्ते इनका काढा करके पीवे तो कफजन्य मसूरिकाका नाश करे ॥

अडूसेका स्वरस।

वृषपत्ररसंदद्यात्पानार्थंमधुसंयुतं।
कफजायांमसूर्यांतुकठिनायांविशेषतः ॥

अर्थ--कफसे उत्पन्न हुई शीतलापर अडूसेके रसमें सहत डालके पिलावे, और यदि वो शीतला कठोर होवे तो विशेष करके देवे ॥

खदिरादि लेप।

खदिरारिष्टपत्रैश्चशिरीषोदुंबरत्वचां।
कुर्याल्लेपःकफोत्थायांमसूर्यांभिषगुत्तमः॥

अर्थ-खैरकी छाल, नींबके पत्ते, सिरस वृक्षकी छाल, गूलरकी छाल, इनका कफजन्य शीतलापर लेप करे ॥

दुरालभादि क्वाथ।

दुरालभापर्पटकंपटोलंकटुरोहिणी।
पिबेन्मसूर्यामेतेषांक्काथंपित्तकफात्मके ॥

अर्थ-धमासो पित्तपापडा, पटोलपत्र, कुटकी इनका काढा पित्तकफात्मक शीतलापर देवे ॥

गुडूच्यादि क्वाथ।

गुडूचीपर्पटानंताकटुकीक्कथितंपिबेत्।
वातपित्तमसूर्यांतुघोरोपद्रवभाजिच ॥

अर्थ-गिलोय, पित्तपापडा, धमासो और कुटकी इनका काढा घोर उपद्रव करनेवाली वातपित्तात्मक शीतलापर देवे ॥

नागरादि क्वाथ।

नागरमुस्तागुडुचीधान्यकभार्गीवृषेकृतेःक्काथः।
वातश्लेष्ममसूरींदूरींकुरुतेतुपानतःसत्यं ॥

अर्थ--सोंठ, नागरमोथा, गिलोय, धनिया, भारंगी और अडूसेके पत्ते इनका काढा प्राशन करनेसे वातकफात्मक शीतलाओंको दूर करे, यह सत्य है ॥

त्रिदोषजन्यमसूरिका।

नीलाश्चिपिटविस्तीर्णामध्येनिम्नामहारुजः।
चिरपाकाः पूतिस्त्रावाःप्रभूताःसर्वदोषजाः ॥

अर्थ–त्रिदोषज मसुरिकाके फोडा नीले, चिपटे, लंबे, बीचमें नीचे ऐसे होय उन्में पीडा अत्यंत होय तथा वे बहुत दिनमें पके और उन्मेंसे दुर्गन्ध युक्त स्राव होय, वे फोडा सर्व दोषके बहुत होय हैं ॥

चर्मपिटिका।

कंठरोधोरुचिस्तंद्राप्रलापारतिसंयुताः।
दुश्चिकित्स्याःसमुद्दिष्टाःपिटिकाश्चर्मसंज्ञिताः ॥

अर्थ--जिस फोडाके होनेसे कंठ रुकजाय, अरुचि, तन्द्रा, प्रलाप, चैन न पडना ये लक्षण होते हैं जिन्की औषधी नहीं होसकै ऐसी चर्मसंज्ञक पिडिका जाननी ॥

रोमांतिक।

रोमकूपोन्नतिसमारागिण्यःकफपित्तजाः।
कासारोचकसंयुक्तारोमांत्योज्वरपूर्विकाः ॥

अर्थ–कफपित्तसे केशोंके (बालोंके) छिद्रके समान बारीक और लाल ऐसी मसूरिका होय इनके होनेसे खांसी, अरुचि होय तथा इनके होनेसे पहिले ज्वर होय इसको रोमांच (कसूमी माता) ऐसे कहते हैं ॥

रसगत मसूरिका।

तोयबुद्बुदसंकाशास्त्वग्गताश्चमसूरिकाः।
स्वल्पदोषाःप्रजायंतेभिन्नास्तोयंस्रवंतिच ॥

अर्थ–रसगत मसूरिका पानीके बबूलके सदृशहो, इनके फूटनेसे पानी वहैं यह त्वग्गत मसूरिका है कारण इसका यह है कि, दोष स्वल्प है ॥

रक्तगत मसूरिका।

रक्तस्थालोहिताकाराःशीघ्रपाकास्तनुत्वचः।
साध्यानात्यर्थदुष्टाश्चभिन्नारक्तंस्रवंतिच ॥

अर्थ–रुधिरगत मसूरिका तामेके रंगकी, जल्दी पकनेवाली होती है उन्के ऊपरकी त्वचा पतली होय है । यह अत्यन्त दुष्ट होनेसे साध्य नहीं होय और इसके फूटनेसे इसमैंसे रुधिर निकले ॥

मांसमत मसूरिका।

मांसस्थाःकठिनाःस्निग्धाश्चिरपाकाघनत्वचः।
गात्रशूलोरतिःकंडूमूर्च्छादाहतृषान्विताः ॥

अर्थ-मांसस्थ मसूरिका कठिन, चिकनी होय है ये बहुत दिनमें पके तथा इसकी त्वचा पतली होय, अंगोंमें शूल होय, चैन पडे नहीं; खुजली चले, मूर्च्छा दाह और प्यास ये लक्षण होते हैं ॥

मेदोगत मसूरिका।

मेदोजामंडलाकारामृदवःकिंचिदुन्नताः । घोरज्वरपरीताश्च स्थूलाःकृष्णाःसवेदनाः ॥ संमोहारतिसंतापाःकश्चिदाभ्यो विनिस्तरेत् ॥

अर्थ-मेदोगत मसूरिका मंडलके आकार अर्थात् गोल होय, नरम कुछ ऊंची मोटी तथा काली होय हैं। इसके होनेसे भयंकर ज्वर, पीडा, इन्द्री, मनका मोह, चित्तका अस्थिर होना, संताप ये लक्षण होते हैं । इस मसूरिकासे कोई एक आदि मनुष्य बचता होगा इसमें यह दिखाई कि, यह अत्यन्त कृच्छ्रसाध्य है ॥

अस्थिगत तथा मज्जागतके लक्षण।

अस्थिगात्रसमारूढाश्चिपिटाःकिंचिदुन्नताः। मज्जोत्थाभृशसंमोहवेदनारतिसंयुताः॥ छिंदंतिमर्मधामानिप्राणानाशुहरंति ताः। भ्रमरेणवविद्धानिभवंत्यस्थीनिसर्वतः ॥

अर्थ-अस्थिमज्जागत मसूरिका बहुत छोटी, देहके समान रूक्ष, चिपटी कुछ ऊंची होय है अत्यंत चित्तविभ्रम, पीडा, अस्वस्थता ये होते हैं । तिन मर्मस्थानोंके भेद करके शीघ्र प्राण हरण करे इसके होनेसे सर्व हड्डियोंमें भौंरोंके काटनेके समान पीडा होय है ॥

शुक्रगत मसूरिका।

पक्काभाःपिटिकाःस्निग्धाःश्लक्ष्णाश्चात्यर्थवेदनाः। स्तैमित्यारतिसंमोहदाहोन्मादसमन्विताः॥ शुक्रजायांमसूर्यातुलक्षणानि भवंतिच। निर्दिष्टंकेवलंचिह्नंदृश्यतेनतुजीवितम् ॥

अर्थ-शुक्रधातुगत मसूरिका पकेके समान चिकनी, अलग अलग होय है इन्में अत्यंत पीडा होय है, इन्के होनेसे गीलापना अस्वस्थता, मोह, दाह, उन्माद ये लक्षण होतेहैं रोगी बचे ऐसे इस्में कोई लक्षण नहीं दीखे इसीसे इस्को असाध्य जानना ॥

धातुगत मसुरिकोंके दोषसंबंधसे लक्षण।

दोषमिश्रास्तुसप्तैताद्रष्टव्यादोषलक्षणैः ॥

अर्थ–ये सप्तधातुगत मसूरिका वातादिकोंके लक्षणों करके तीन दोषोंकर्के मिश्रित प्रगट भई जाननी ॥

धातुगत वा दोषगत मसूरिकाओंमें साध्यासाध्य।

त्वग्गतारक्तजाश्चैवपित्तजाःश्लेष्मजास्तथा। पित्तश्लेष्मकृता श्चैवसुखसाध्यामसूरिकाः। एताविनापिक्रिययाप्रशाम्यंतिश रीरिणाम् ॥

अर्थ–रसगत, रक्तगत, पित्तज, कफज, पित्तकफज ये मसुरिका सुखसाध्यहैं ये औषध सिवायभी शांत होयहैं ॥

कष्टसाध्य।

वातजावातपित्तोत्थावातश्लेष्मकृताश्चयाः।
कृच्छ्रसाध्यामतास्तास्तुयत्नादेताउपाचरेत् ॥

अर्थ–वातज, वातपित्तज, वातकफज, मसूरिका कष्ट साध्य हैं इन्की यत्नपूर्वक चिकित्सा करे ॥

असाध्य मसूरिका।

असाध्याःसन्निपातोत्थास्तासांवक्ष्यामिलक्षणम्। प्रवालसदृ शाःकाश्चित्काश्चिज्जंबूफलोपमाः ॥ लोहजालसमाःकाश्चिदत सीफलसन्निभाः। आसांबहुविधावर्णाजायंतेदोषभेदतः ॥

अर्थ–सन्निपातज मसूरिका असाध्य हैं उनके लक्षण कहताहूं, कोई मूंगाके समान लाल होय, कोई जामुनके समान, और कोई लोहजालके समान, तथा अलसीके बीजके समान होय हैं दोषोंके भेद करके इनके अनेक प्रकारके रंग होते हैं ॥

शीतलाकी विशेषावस्था।

कासोहिक्काप्रमोहश्चज्वरस्तीव्रःसुदारुणः। प्रलापारतिमूर्च्छा श्चतृष्णादाहोऽतिघूर्णता॥मुखेनप्रस्रवेद्रक्तंतथाघ्राणेनचक्षुषा। कंठेघुर्घुरकंकृत्वाश्वसित्यत्यर्थदारुणम् ॥ मसूरिकाभिभूतो योभृशंघ्राणेनानिःश्वसेत्। सभृशंत्यजतिप्राणांस्तृष्णार्तोवा तदूषितः ॥

अर्थ–खांसी, हिचकी, मोह; तीव्रज्वर, प्रलाप, असंतोष मूर्च्छा, प्यास, दाह, नेत्रटेढे, तिरछे, बांके फटेसे ये लक्षण होते हैं मुख, नाक और नेत्र इनके

मार्ग हौकर रुधिर गिरे, कंठमें घर घर शब्द होय, और भयंकर श्वासले, जो मसूरिकापीडित रोगी केवल नाकके द्वारा श्वास लेय, वो पुरुष वायु और तृषा इनसे पीडित होतसंते तत्काल प्राणत्याग करे ॥

मसूरिकाके उपद्रव !

मसूरिकांतेशोथः स्यात्कूर्परेमणिबंधके ।
तथांसफलकंवापिदुश्चिकित्स्यःसुदारुणः ॥

अर्थ–मसूरिका (शीतला) के अंतमें कूर्पर, पहुँचा तथा कंधा, इनमें सूजन होय(इसको व्यवहारमें गुरु ऐसे कहते हैं) यह चिकित्सा करनेमें कठिन है॥

शीतलाके भेद ।

देव्याशीतलयाक्रांतामसूर्येवहिशीतला। ज्वरएवयथाभूताधिष्ठितोविषमज्वरः। साचसप्तविधाख्यातातस्याभेदान्प्रचक्ष्महे॥

अर्थ–शीतला देवीके दोषयुक्त मसूरिकाकोई शीतला कहते हैं इसमें भूतलगा ज्वरकी तरह ज्वर होता है और विषमज्वर होता है और यही सप्तविधा नामसे विख्यात है इसके भेद कहते हैं ॥

बृहतीशीतलाके लक्षण ।

ज्वरपूर्वैर्बृहत्स्फोटैःशीतलाबृहतीभवेत् । सप्ताहांनिःसरत्येषा सप्ताहात्पूर्णतांव्रजेत् ॥ ततस्तृतीयसप्ताहेशुष्यतिस्खलतित्वचम् । तासांमध्येयदाकाश्चित्पाकंगत्वास्रवंतिच ॥

अर्थ–आदिमें ज्वर होकर जो बड़ी बड़ी फुन्सियोंवाली शीतला होवे तो इसको बृहती कहते हैं यह सात दिनमें निकलती हैं और सात दिनमें भरती हैं और सात दिनमें ही सूखकर त्वचाको छोड देती हैं और तिनोंमेंसे कितनीक फुन्सियां पककर झिरनेभी लग जाती हैं ॥

बृहतीशीतलापर उपचार ।

तत्रावधूलनंकुर्याद्वनगोमयभस्मना । निंबसत्पत्रशाखाभिर्मक्षिकामपसारयेत् ॥ जलंचशीतलंदद्याज्ज्वरेपानंतुतत्पिबेत् ॥

अर्थ–बडी शीतला पककर वहने लगे तो आरने उपलेकी राख लगावे, तथा नीबकी डालीसे मक्खियोंको निवारण करे, तथा ज्वरमेंभी शीतल जल देवे, इसमें गरमजल कदाचित् न देवे ॥

रक्षाप्रकार।

स्थापयेत्तंस्थलेपूतेरम्येरहसिशीतले।
नाशुचिःसंस्पृशेत्तंतुनचतस्यांतिकंव्रजेत्॥

अर्थ-जिसके शीतला निकले उसको पवित्र और एकांत तथा शीतल ऐसे स्थानमें रखना चाहिये, तथा अपवित्र मनुष्य उसका स्पर्श नकरे और न उसके समीप अपवित्रको जाना चाहिये॥

भेषजप्रकार।

बहवोभिषजोनात्रभेषजंयोजयंतिहि।
केचित्प्रयोजयंत्येवमतंतेषामपिब्रुवे॥

अर्थ-बहुतसें वैद्य शीतला पर उपचार नहीं करतेहैं परंतु जो करते हैं उनके मतको कहताहूं॥

चिंचाबीजचूर्ण।

ये शीतलेनसलिलेनविशिष्यसम्यक्चिंचोत्थबीजसहितांरज
नींपिबंति॥ तेषांभवंतिनकदाचिदपीहदेहेपीडाकराजगतिशी
तलिकाविकाराः॥

अर्थ-जो प्राणी इमलीके बीजोंका चूर्ण और हलदीके चूर्ण शीतल जलमें मिलायके पीवे उनको पीडा कारक शीतलाका विकार कदाचित नहीं होय॥

सामान्य चिकित्सा।

जपहोमोपहारैश्चदानस्वस्त्यनार्चनैः।
विप्रगोशंभुगौरीणांपूजनैस्तांशमंनयेत्॥

अर्थ-सन्निपातात्मक शीतलाके शमनार्थ जप, होम, नैवेद्य, दान पुण्याहवाचन, पूजन, ब्राह्मण, गौ, शिव, गौरी इनकी पूजा इत्यादिक पुण्य कर्म करे॥

स्तोत्रपाठादि।

स्तोत्रंचशीतलादेव्याःपठेच्छीतलिनोंतिके।
ब्राह्मणःश्रद्धयायुक्तस्तेनशाम्यंतिशीतलाः॥

अर्थ-शीतला रोगीके समीप पवित्र ब्राह्मण बैठके भक्तिपूर्वक शीतला देवीका स्तोत्रपाठ करे तो शीतला देवी शांति होय॥

मसूरिकाभेद--कोद्रव।

कफमारुतसंभूतःकोद्रवोनामतोगदः।
अपाकःकोद्रवाकारःशुचिर्निस्तोदकारकः॥

अर्थ-कफ वातसे उत्पन्न हुआ, नही पकनेवाला, कोदूके आकारवाला, स्वच्छ, पीडारहित, ऐसे मसूरिकाके भेदको कोद्रव नाम रोग कहते हैं॥

जलमुक्कोद्रवोगेंषुविध्यतीवविशेषतः।
सप्ताहाद्वादशाहाद्वाशांतियातिविनौषधैः॥

अर्थ-जल निकलनेवाला कोद्रव रोग अंगोंको अत्यंत ही पीडा करता है फिर विनाही औषध सातदिनमें अथवा बारह दिनमें शांतिको प्राप्त होजाताहै॥

मोचरसादि पान।

मोचारसेनसहितंशितचंदनेनवासारसेनमधुकंमधुकेनचाथ।आदौ
पिबंतिसुमनास्वरसेनमिश्रंतेनाप्नुवंतिभुविशीतलिकाविकारम्॥

अर्थ--मोचरस, तथा सफेद चंदन अथवा अडूसेकारस और मुलहटी, अथवा चमेलीका रस और मुलहटी इनमेंसे कोई एकको प्रारंभके समय पीवे तो उसके कदाचित् शीतला नहीं निकले॥

स्फोटदाह।

स्फोटेष्वधिकदाहेषुरक्षारेणुकरोहितः।
तेनतेशोषमायांतिप्रपाकंनभजंतिच॥

अर्थ-शीतलामें फोडा पककर दाह होताहै उनमें आरने उपलकी राख पित्त पापडा और रोहिष इनके चूर्णको लगावे तो वो फोडा सूख जावे अधिक नहीं पके॥

चंदनादिहिम।

चंदनंवासकोमुस्तंगुडूचीद्राक्षयासह।
गव्यशीतकषायस्तुशीतलाज्वरनाशनः॥

अर्थ-चंदन, अडूसा, नागरमोथा, गिलोय, और दाख इनका दूधमें काढा करकै देवे तो शीतलाके संबंधसे जो ज्वर आता है वो नाश होय॥

कोद्रवनामकमसूरिकापर।

यदिवाभेषजंदद्यात्खदिराष्टकनिर्मितम्।
कषायंहितदादद्यात्कोद्रवायाःप्रशांतये॥

अर्थ–कोद्रवनामक शीतलमें औषध देनी होवे तो खदिराष्टकका काढा देवे, तो कोद्रव नामक शीतलाकी शांति होय ॥

खदिराष्टक।

खदिरत्रिफलानिंबपटोलामृतवासकः। अष्टकोयंजयेत्कुष्ठकंडु विस्फोटकानिच ॥ विसर्पपामाकिटिभःशीतपित्तमसूरिकाः।

अर्थ–खैरकी छाल,हरड बहेडा, आवला,नीमकी छाल, पटोलपत्र, गिलोय, और अडूसा इन आठ औषधोंका काढा करकै देवे तो कोढ, खुजली, विस्फोटक, विसर्प, खाज, किटिभकुष्ठ, शीतपित्त मसूरिका इनको नाशकरे ॥

साध्यासाध्यविचार।

काश्चिद्विनापियत्नेनसुखंसिध्यंतिशीतलाः ॥ दुष्टाःकष्टतराःकाश्चित्काश्चित्सिध्यंतिवानवा । काश्चिन्नैवतुसिध्यंतियत्नतोपि चिकित्सिताः ॥

अर्थ–कितनीएक शीतला बिना यत्न करनेके भी सुखसे अच्छी हो जाती है, तथा कितनीएक दुष्ट होनेसे वो कष्टसाध्य, इनमेंसे कोई २ अच्छी होती है और कोइ अच्छी नहीं होय, और बहुतसी यत्नपूर्वक चिकित्सा करने परभी अच्छी नहीं हो ॥

निशादि क्वाथ।

निशाद्वयोशीरशिरीषमुस्तकैः सलोध्रभद्रश्रियनागकेसरैः ॥ पटोलमूलारुणतंदुलीयकैः पिबेद्धरिद्रामलकल्कसंयुतम् । मसूरिविस्फोटविसर्पशांतयेतथासरोमांत्यवमिज्वरापहः ॥

अर्थ–दारुहलदी, हलदी, खस, सिरस, नागरमोथा, लोध, चंदन, नागकेशर, पटोलपत्र, पुहकरमूल, लाल चौलाई, इनका काढा हलदी और आँवलके साथ पीवे, तो मसूरिका, विस्फोट, विसर्प, रोमांतिक, वमन, ज्वर इनका नाश करे ॥

निंबादि क्वाथ।

निंबः पर्पटकंपाठापटोलंकटुरोहिणी । वासादुरालभाधात्रीससेव्यंचंदनद्वयम् ॥ एषनिंबादिकःक्वाथःपीतःशर्करयान्वितः । मसूरींसर्वजांहंतिज्वरवीसर्पसंयुताम् ॥

अर्थ–नीबकी छाल, पित्तपापडा, पाढ, पटोलपत्र, कुटकी, अडूसा, धमासो आँवले, खस, चंदन, लालचंदन इनके काढेमें मिश्री मिलायके देवे तो सन्निपातात्मक मसूरिका ज्वर, और विसर्प इनका नाश करे, इनको निंबादि क्काथ कहते हैं ॥

कांचनादिक्काथ ।

कांचनारत्वचःक्काथस्ताप्यचूर्णविचूर्णितः ।
निर्गत्यांतःप्रविष्टांतुमसूरींबाह्यतोनयेत् ॥

अर्थ–कचनारकी छालका काढा करकै उसमें सौनामक्खीकी भस्म डालकै देवे, तो भीतर घुसी हुई शीतला बाहर निकल आवे ॥

पटोलादिक्काथ ।

पटोलकुंडलीमुस्तावृषधन्वयवासकैः । भूनिंबनिंबकटुकापर्पटैश्वशृतंजलम् ॥ मसूरींशमयेदामांपक्कांचैवविशोधयेत् । नातःपरतरंकिंचिच्छीतलाज्वरशांतये ॥ दाहज्वरेविसर्पेचव्रणे पित्ताधिकेपिच ॥

अर्थ–पटोलपत्र, गिलोय, नागरमोथा, अडूसा, धमासौ, चिरायता, नीबकी छाल, कुटकी और पित्तपापडा, इनका काढा देवे तो आम (कच्ची) मसूरिकाको शमन करे । तथा पक्क होवे तो उनका शोधन करे, तथा यह काढा दाह, ज्वर, विसर्प, व्रण, पित्तव्रण इनपर देवे, शीतलाके ज्वर, दूर करनेके विषयमें इससैं परे दूसरी औषध नहीं है ।

धात्र्यादिक्काथ ।

धात्रीफलंसमधुकंक्कथितंमधुसंयुतम् ।
मुखेकंठव्रणेजातेगंडूषार्थंप्रयोजयेत् ॥

अर्थ–शीतलामें मुख, गला, इनमें घाव होगए होय तो आवले, मुलहटी, इनके काढेमें सहत डालकै कुल्ले करे ॥

नेत्रकीशीतलापर उपचार ।

अक्ष्णोःसेके प्रशंसंतिगवेधुमधुकांबुना ।

अर्थ–आँखोंमें शीतला होय तो गरेहूआके बीज और मुलहटी इनके काढेसैं सेचन करे ॥

अवधूलन।

पंचवल्कलचूर्णेनक्लेदिनीमवधूलयेत्।
भस्मनाकेचिदिच्छंतितिलचूर्णैस्तथापरे॥

अर्थ--लस, राध, वहनेवाली शीतलामें पंचवल्कलके चूर्णसे अथवा भस्मसे अथवा तिलके चूर्णसे मले॥

मधुकादिलेप।

मधुकंत्रिफलामूर्वादार्वीत्वङ्नीलमुत्पलम्॥ उशीरलोध्रमंजिष्ठाप्रलेपाश्चोतनेहिताः॥ नश्यंत्यनेनचगदामसूर्योनभवंतिच॥

अर्थ-मुलहटी, हरड, बहेडा, आवला, मूर्वा, दारुहलदी, दालचीनी, नीला कमल, खस, लोध और मजीठ इनका लेप करे, अथवा इनके काढेको नेत्रोंमें छिडकै तो हितकारी होय इससे वादीकी मसूरिका नष्ट होय॥

शंबूकस्वरस।

शंबूकमांसस्वरसेननेत्रेसमंजयेत्तेनमसूरिकाभ्यः। नजायतेतत्र भयंभवंतिनैताःप्रजातास्तुशमंप्रयांति॥

अर्थ-जलकी शीपके भीतरके मांसके स्वरसका नेत्रोंमें अंजन करे तो शीतलासे नेत्रोंको भय नहीं होय, तथा शीतला नेत्रोंको नहीं होय यदि होवे तो शांति हो जावे॥

पंच वल्कलादि अवधूलन।

पंचवल्कलचूर्णेनक्लेदिनीमवधूलयेत्।
भस्मनाकेचिदिच्छंतिकेचिद्गोमयरेणुना॥

अर्थ-बड, गूलर, पीपल, पाखर और आम इनका चूर्ण बहनेवाली शीतलाको अवधूलन अथवा आरने उपलेकी राख अथवा गोबरके चूर्णसे अवधूलन करे॥

शीतलाके व्रणपर।

निंबमुक्तकआस्फोताबिंबीवेतसवल्कलम्।
शृतशीतंप्रयोक्तव्यंमसूरीव्रणधावेन॥

अर्थ-नीबके पत्ते, मुक्तक, कोयल, कंदूरी, वेतकी छाल, इनका काढा शितलाके व्रण धोनेके वास्ते देवे॥

रालादि धूप ।

रालहिंगुरसोनैश्वधूपयेत्तामसूरीकाः ।
कृमयोनपतंत्यत्रजाताःशाम्यंतितेलघुः ॥

अर्थ–राल, हींग, और लहसन, इनकी धूनी देवै तो शीतलाके घावमें कृमि नहीं पडती, और यदि पड गई होय तो शीघ्र शांति होय ॥

अथ मसूरिकारोगपरपथ्य ।

पूर्वंलंघनवांतिरेचनशिरावेधश्शशांकोज्ज्वलाजीर्णाष्षष्टिक शालयोपिचणका मुद्गामसूरायवाः ॥ सर्वेऽपिप्रतुदाः कपोत चटकाः कोयष्टिदात्यूहकाजीवंजीवशुकादयोऽपि कुलकंका ठिल्लमाषाढकम् ॥ १ ॥ कर्कोटीकदलंच शिग्रुरुचकंद्राक्षाफ लं दाडिमं मेध्यंबृंहणमन्नपानमखिलं कोलानिभाषारसाः ॥ अक्ष्णोस्सेकविधौगवेधुमधुकोद्भूतं सुशीतोदकं शम्बूकोदर कोषनीरमपिवाकर्पूरंचूर्णानिवा ॥ २ ॥ पक्केमुद्गरसोऽपिजाङ्ग लरसश्शालिंचशाकंघृतं धूपोगोमयभस्मगुंठनमथोशोषेव्र णोक्तक्रिया ॥ इत्थंसर्वदशाविभागविहितं पथ्यं यथादोषत स्संयुक्तंसुखमातनोतिनितरांनृणांमसूरेगदे ॥ ३ ॥

अर्थ–मसूरी रोगमें पहिले लंघन फिर वमन, विरेचन, फस्त, सुंदर सफेद पुराने साँठी चावल, चना, मूंग, मसूर, जौ, चोंचसें दानेको फोडकर खानेवाले सब पक्षी, कबूतर, घरेलू चिडिया, टटिहरी, पपैया, चकोर, तोता आदि परवल, करेला, आषाढ महीनेमें होनेवाले फल, ककडी, केला, सहिंजना, सांचर निमक, दाख, अनार, पवित्र तथा धातुओंको बढानेवाला अन्न, पान, वेर, उडदका रस, नागबला, तथा मुलेठीके शीतल जलसे आंखोंमें छींटा देना, घोंघेके भीतरका पानी अथवा कपूरका चूर्ण, और पकी मसूरीमें मूंगका तथा जंगली जीवोंके मांसका रस, शालिंच शाक, घी, धूप, अर्थात् धूनी देना, अरने कंडोंकी भस्मका लगाना, सूखनेपर नींबकी पत्ती और हल्दीको पीसकर लेप करना और पीछे बाकी रहि जाय तो व्रण अर्थात् फोडेकी क्रिया करै, इस भांति सब दशाओंके विभागसे दोषके अनुसार किया गया पथ्य मसूरीरोगमें मनुष्योंको सुख देता है ॥

अपथ्य।

रतंस्वेदंश्रमंतैलंगुर्वन्नंक्रोधमातपम्।
कट्वम्लंवेगरोधंचमसूरीवान्नरस्त्यजेत्॥

अर्थ–स्त्रीसंग, स्वेदन, श्रम, तेल, भारी अन्न, क्रोध, घाम, कडुवा, खट्टा, वेगोंका रोकना इन सबोंका मसूरिका रोगी त्याग करै॥

इति श्रीबृहन्निघंटुरत्नाकरे मसूरिकारोगस्य निदानचिकित्सा समाप्ता।

क्षुद्ररोग।

अजगल्लीके लक्षण।

स्निग्धाःसवर्णाग्रथितानीरुजामुद्गसन्निभाः।
कफवातोत्थिताज्ञेयाबालानामजगल्लिकाः॥

अर्थ–बालकके कफ वातसे चिकनी, त्वचाके वर्णके समान वर्ण होय, गांठसी बंधी, रुजा (पीडा) रहित, तथा मूंगके सदृश जो पिडिका होय उसको अजगल्लिका कहते हैं॥

अजगल्लीकी चिकित्सा।

तत्राजगल्लिकामामांजलौकाभिरुपाचरेत्।
शुक्तिसौराष्ट्रिकाक्षारकल्कैश्चालेपयेन्मुहुः॥

अर्थ–प्रथम अजगल्लिका पकी न होवे तो उसके जोख लगावे और सींपका चूना, फिटकरी, क्षार इनके कल्कका वारंवार लेप करे॥

कठिनांक्षारयोगैश्चद्रावयेदजगल्लिकाम्।
श्यामालांगलिकामूर्वाकल्कैरपिविलेपयेत्॥

अर्थ–अजगल्लिका यदि कठोर होय तो उसमें खार लगायके उसमेंसे स्राव करे और श्यामा, कलियारी, मूर्वा इनके कल्कका लेप करे॥

पक्वाव्रणविधानेनयथोक्तेनप्रसाधयेत्॥

अर्थ–पकी हुई अजगल्लिका पर जो चिकित्सा व्रण रोगपर कही है वही चिकित्सा करे॥

यवप्रख्या।

यवाकारासुकठिनाग्रथितामांससंश्रिता।
पिडिकाश्लेष्मवाताभ्यांयवप्रख्येतिचोच्यते॥

अर्थ–कफ वातसे प्रगट जौके समान कठिन, गाँठके सदृश मांसमिश्रित, जो पिंडिका होय उसको यवप्रख्या कहते हैं भोजके मतसे इसको (अंधालजी कहते हैं) ॥

अंधालजी।

घनामवक्त्रांपिटिकामुन्नतांपरिमंडलाम्।
अंधालजीमल्पपूयांतांविद्यात्कफवातजाम् ॥

अर्थ–कफवातसे प्रगट कठिन जिसमें मुख न हो, तथा ऊंची ऐसी पिडिका होय, तथा जिसके चारों और मंडलाकार हो, और जिसमें राध थोडी होय, उसको अंधालजी ऐसे कहते हैं ॥

यवप्रख्या और अंधालजीकी चिकित्सा।

अन्धालजींयवप्रख्यांपूर्वंस्वेदैरुपाचरेत् ॥ मनःशिलादेवदारु
कुष्ठैरेनांप्रलेपयेत् । पक्कांव्रणविधानेनयथोक्तेनप्रसाधयेत् ॥

अर्थ–अंधालजी और यवप्रख्या इनको प्रथम स्वेदन करे तथा मनसिल, देवदारु, कूठ, इनका लेप करे, यदि वो पकगई होवे तो व्रणकी चिकित्सासे अच्छी करे ॥

विवृता।

विवृतास्यांमहादाहांपक्कोदुंबरसन्निभाम्।
परिमंडलांपित्तकृतांविवृतांनामतांविदुः ॥

अर्थ–पित्तके योगसे फटे मुखकी, अत्यन्त दाहयुक्त, पके गूलरके समान चारों ओर बलपडी हुई जो पिडिका होय उसको विवृता ऐसे कहते हैं ॥

विवृता इन्द्रवृद्धा, गर्दभ ज्वालगर्दभकी चिकित्सा।

विवृतामिंद्रवृद्धांचगर्दभांजालगर्दभाम् ॥
पैत्तिकस्यविसर्पस्यक्रिययासाधयेद्भिषक् ॥

अर्थ–विवृता, इन्द्रवृद्धा, गर्दभा और जालगर्दभा इनको पित्तविसर्पकी क्रिया करकै दूरकरे ॥

पाकेतुरोपयेदाज्यैःपक्कैर्मधुरभेषजैः। नीलीपटोलमूलाभ्यांसा
ज्याभ्यांलेपनंहितम्। जालगर्दभरूपेतुसद्योहंतिसवेदनम् ॥

अर्थ–ऊपर कही हुई व्याधियोंका पाक होनेसे उनको घी, तथा मधुर ऐसी औषधोंका लेप करे, तथा नीली, परवलकी जड, इनमें घी मिलायके लेप करे, तो हितकारी होय और दर्दयुक्त जालगर्दभका नाश करे ॥

कच्छपिका।

ग्रथिताः पंचवाषड्वादारुणाःकच्छपोन्नताः।
कफानिलाभ्यांपिटिकाज्ञेयाःकच्छपिकाबुधैः॥

अर्थ--कफवायुसे प्रगट गाँठ बँधी, पांच अथवा छः कछुआके पीठके समान ऊंची जो पिडिका होय उस्को कच्छपिका ऐसे कहते हैं॥

चिकित्सा।

कच्छपींस्वेदयेत्पूर्वंततएभिःप्रलेपयेत्॥ कल्कीकृतैर्निशाकुष्ठशिलातालकदारुभिः। तांपक्वांसाधयेच्छीघ्रंभिषग्व्रणचिकित्सया॥

अर्थ—कच्छपिकाको प्रथम स्वेदन करे, फिर हलदी, कूठ, मनसिल, देवदारु, इनके कल्कका लेप करे, यदि कच्छपिका पकगई होय तो उसपर व्रणचिकित्सा करे॥

वल्मीक (वांवी)

ग्रीवांसकक्षाकरपाददेशेसंधौगलेवात्रिभिरेवदोषैः। ग्रंथिःसवल्मीकवदक्रियाणांजातःक्रमेणैवगतः प्रवृद्धिम्॥ मुखैरनेकैःस्रुतितोदवद्भिर्विसर्पवत्सर्पतिचोन्नताग्रैः। वल्मीकमाहुर्भिषजोविकारंनिष्प्रत्यनीकंचिरजंविशेषात्॥

अर्थ—कंठ, कंधा, कूख, हाथ, पैर, संधि, गला इन ठिकाने तीनों दोषोंसे सर्पकी बांबीके समान गांठ होय, उस्का, उपाय न करै तब वो धीरे धीरे बढै उस्में अनेक मुख हो जाय, उन्मेंसे स्राव होय, जोंचनेकीसी पीडा होय तथा वह मुखके ऊपर कुछ ऊंची होकर विसर्पके समान फैल जाय इस रोगको वैद्य वल्मीक ऐसे कहते हैं॥ इस्के ऊपर औषधी उपचार नहीं चले और पुराने होनेसे विशेष असाध्य जाननी॥

मनःशिलादितैल।

मनःशिलाक्तभल्लातसूक्ष्मैलागरुचंदनैः॥ जातीपल्लवकल्कैश्च निंबतैलंविपाचयेत्। वल्मीकंनाशयेत्ताद्धिबहुछिद्रंबहुव्रणम्॥

अर्थ—मनसिल, भिलाये, छोटी इलायची, अगर चंदन, चमेलीके पत्ते, इनका कल्क कर उसमें निंबोरीका तेल डालकै पचावे, यह बहुत छिद्रके अनेक व्रणयुक्त वल्मीकको नाशकरे है॥

असाध्य लक्षण ।

पाणिपादोपरिष्टात्तुच्छिद्रैर्बहुभिरावृतम् ।
वल्मीकंयत्सशोफंस्याद्वर्ज्यंतद्विधिजानता ॥

अर्थ—बहुत छिद्रोंवाला और सोजावाला वल्मीक रोग हाथ पैरोंपर होवेतो विधिके जाननेवाला वैद्यने वह वल्मीक रोग वर्जदेना अर्थात् असाध्य होनेसे उसका इलाज नही करे ॥

वल्मीककी चिकित्सा ।

शस्त्रेणोत्कृत्यवल्मीकंक्षाराग्निभ्यांप्रसाधयेत् ।
विधानेनार्बुदोक्तेनशोधयित्वाचरोपयेत् ॥

अर्थ—वल्मीक नामक व्याधीको शस्त्रसे चीरकै क्षार और चित्रक इनका लेप करे, और अर्बुदपर कहे अनुसार शोधन करकै रोपण विधि करे ॥

वल्मीकंतुभवेद्यस्यनातिवृद्धममर्मिणाम् ।
तत्रवैशोधनंकृत्वाशोणितंमोक्षयेद्भिषक् ॥

अर्थ—विनामर्मपर होकर जो वढी नहीं ऐसी वल्मीकका शोधन करकै वैद्य रुधिर निकाले ॥

लेप और पिंडी ।

कुलित्थकानांमूलैश्चगुडूच्यालवणेनच । आरग्वधस्यमूलैश्चदं
तीमूलैस्तथैवच ॥ श्यामामूलैःसपल्लैःसक्तुमिश्रैःप्रलेपयेत् ।
सुस्निग्धैश्चसुखोष्णैश्चभिषक्तमुपनाहयेत् ॥

अर्थ—वल्मीकव्याधिको कुलथीकी जड, गिलोय,निमक, अमलतास दंती श्यामा इनकी जड, तथा मांस, सत्तु, इनके कल्कसे लेप करे और स्निग्ध तथा मंदोष्ण ऐसी पिंडी बनायकै बाँधे ॥

पनसिका ।

कर्णस्याभ्यंतरेजातांपिटिकामुग्रवेदनाम् ।
स्थिरांपनासिकांतांतुविद्याद्वातकफोत्थिताम् ॥

अर्थ—कानके भीतर वात पित्त कफसे जो फुंसी उग्रवेदना सहित प्रगट होय और वह स्थिर होय उस्को पनसिका कहते हैं ॥

पनसिकाकी चिकित्सा ।

भिषक्पनासिकांपूर्वंस्वेदनैरपतर्पणैः ।
जयेद्विदारिवल्लेपैःशिग्रुदेवद्रुमोद्भवैः ॥

अर्थ-वैद्य पनसिकाको प्रथम स्वेदन करे और अपतर्पण करे, फिर सहंजना देवदार, इनका लेप करे, तथा विदारीके ऊपर जो लेप कहा है वो करे ॥

जालगर्दभ।

विसर्पवत्सर्पतियःशोथस्तनुरपाकवान्।
दाहज्वरकरःपित्तात्सज्ञेयोजालगर्दभः ॥

अर्थ-पित्तके विसर्पके समान इधर उधरको फैलनेवाली पतली तथा कुछ कनेवाली ऐसी सूजन होय उस्में दाह होय और ज्वर होय इस्को जाल-गर्दभ कहते हैं कोई आचारी कहते हैं कि, इस्में पक्कता नहीं होय ॥

इन्द्रवृद्धा।

पद्मकर्णिकवन्मध्येपिडिकाभिःसमाचिताम्।
इंद्रवृद्धांतुतांविद्याद्वातपित्तोत्थितांभिषक् ॥

अर्थ-कमलकर्णिकाके समान वीचमें एक पिडिका होय, उस्के चारों ओर छोटी छोटी फुंसी होय उस्को इन्द्रवृद्धा ऐसे कहते हैं। यह वातपित्तसे उत्पन्न होय है ॥

गर्दभिका।

मंडलंवृत्तमुत्सन्नंसरक्तंपिटिकाचितम्।
रुजाकरींगर्दभिकांतांविद्याद्वातपित्तजाम् ॥

अर्थ-वातपित्तसे प्रगट एक गोल ऊंची तथा लाल और फोडोंसे व्याप्त ऐसा मंडल होय, वो बहुत दूखे, उस्को गर्दभिका ऐसे कहते हैं ॥

पाषाणगर्दभ।

वातश्लेष्मसमुद्भूतःश्वयथुर्हनुसंधिजः।
स्थिरोमंदरुजःस्निग्धोज्ञेयःपाषाणगर्दभः ॥

अर्थ-वात कफसे ठोडीकी संधिमें कठिन, मन्द पीडा करनेवाली, चिकनी ऐसी सूजन होय उस्को पनसिका कहते हैं ॥

पाषाणगर्दभकीचिकित्सा।

सुरदारुशिलाकुष्ठैःस्वेदयित्वाप्रलेपयेत्।
कफमारुतशोफघ्नोलेपःपाषाणगर्दभे ॥

अर्थ-पाषाण गर्दभको देवदारु, मनसिल कूठ, इनसे स्वेदन करकै लेपकरे और कफवातजनित जो सूजनपर लेप लिखा है वो इस पाषाणगर्दभ पर करे॥

इरिवेल्लिका।

पिडिकामुत्तमांगस्थांवृत्तामुग्रज्वरान्विताम्।
सर्वात्मिकांसर्वलिंगांजानीयादिरिवेल्लिकाम्॥

अर्थ–त्रिदोषसे प्रगट मस्तकमें गोल, अत्यंत पीडा और ज्वर करनेवाली, त्रिदोषके लक्षणसंयुक्त ऐसी पिडिका होय उस्को इरिवेल्लिका कहते हैं॥

कक्षा (कखलाई)।

पैत्तिकस्यविसर्पस्ययाचिकित्साप्रकीर्तिता।
तामेवभिषगेतांचचिकित्सेदिरिवेल्लिकाम्॥

अर्थ–पित्तकी विसर्पपर जो वैद्योंने चिकित्सा कही है वही चिकित्सा इरिवेल्लिकापर करे॥

गंधनाम्नी।

एकामेतादृशींदृष्ट्वापिडिकांस्फोटसन्निभाम्।
त्वग्गतांपित्तकोपेनगंधनाम्नींप्रचक्षते॥

अर्थ–पित्तके कोपसे जो एक पिडिका फोडाके समान बडी त्वचाके भीतर होय, उस्को गन्धनाम्नी ऐसे कहते हैं॥

कक्षागंधनाम्नीकी चिकित्सा।

कक्षांचगंधनाम्नीचचिकित्सेच्चचिकित्सकः।
पैत्तिकस्यविसर्पस्यक्रिययापूर्वमुक्तया॥

अर्थ–कक्षा (कखलाई) और गंधनामक व्याधी इनपर पित्त विसर्पकी कही हुई चिकित्सा करे॥

अग्निरोहिणी।

कक्षाभागेषुयेस्फोटाजायंतेमांसदारुणाः॥ अंतर्दाहज्वरक
रादीप्तपावकसन्निभाः॥ सप्ताहाद्वादशाहाद्वापक्षाद्वाहंतिमा
नवम्। तामग्निरोहिणींविद्यादसाध्यांसन्निपाततः॥

अर्थ–कांखके आसपास मांसके विदारण करनेवाले जो फोडा होते हैं तिसकरके अंतर्दाह होय तथा ज्वर होय फोडा प्रदीप्त अग्निके समान लाल होय; इन फोडोंमें वायु अधिक होनेसे सात दिन, पित्ताधिकसे बारह दिन और कफाधिक्यसे ५ दिनमें, रोगी मरे यह अग्निरोहिणी नामक त्रिदोषज पिडिका असाध्य है यह कठिन है॥

अग्निरोहिणीकी चिकित्सा।

पित्तवीसर्पविधिनासाधयेदग्निरोहिणीं। रोहिण्यांलंघनंकुर्याद्र क्तमोक्षश्चरूक्षणं। शरीरस्यचसंशुद्धिंतांतुवृद्धांपरित्यजेत् ॥

अर्थ--अग्निरोहिणीपर पित्तविसर्पकी चिकित्सा करे तथा प्रथम लंघन, रक्तमोक्ष और रूक्षणविधि करे, तथा शरीरकी शुद्धि करके फिर चिकित्सा करे और यदि अग्निरोहिणी बढगई होय तो उसको असाध्य जानके त्याग देय ॥

चिप्य।

नखमांसमधिष्ठायवातपित्तेचदेहिनाम्।
कुर्वातेदाहपाकौचतंव्याधिंचिप्यमादिशेत् ॥
तदेवाल्पतरैर्दोषैःकुनखंपरुषंवदेत् ॥

अर्थ-वायु और पित्त नखोंके मांसमें स्थित होकर दाह और पाकको करे, इस रोगको चिप्य ऐसा कहतेहैं यह अल्पदोषोंसे होयतो इसको कुनखकहतेहैं॥

चिप्यकुनखकी चिकित्सा।

चिप्यंरुधिरमोक्षणशोधनेनाप्युपाचरेत्। गतोष्माणमथैनंतुसेचयेदुष्णवारिणा॥शस्त्रेणापियथायोग्यमुच्छिद्यस्रावयेत्ततः॥
व्रणोक्तेनविधानेनरोपयेत्तुविचक्षणः॥

अर्थ-चिप्यका रुधिर निकालकै शोधन करे रुधिर निकालकै उसमेंसे जब गरमी निकल जाय तब गरम जलसें सेचन करे, तथा शस्त्रसै यथायोग्य काटकर रक्तस्राव करके व्रणके ऊपर जो औषधी कहीहैं वो करे तथा रोपणविधि करे ॥

हरिद्रादि कल्क।

स्वरसेनहरिद्रायाःपात्रेकृत्वायसेभयाम्।
घृष्ट्वातज्जेनकल्केनलिंप्येच्चिप्यंपुनःपुनः॥

अर्थ-हलदीके स्वरसमें हरडका चूर्ण डालकै उसको लोहके पात्रमें खरल करे उस कल्कसे चिप्यको वारंवार लेप करे ॥

अंगुलीवेष्टकपर।

काश्मर्याःसप्तभिःपत्रैःकोमलैःपरिवेष्टितः।
अंगुलीवेष्टकःपुंसांध्रुवमाशुप्रशाम्याति ॥

अर्थ–कंभारीके कोमल सात पत्ते ले उंगलीको लपेटके बाँध देवे तो उंगली वेष्टक रोग शीघ्र शांतिहोय ॥

कुनखपर।

श्लेष्मविद्रधिवच्चैवकुनखंसमुपाचरेत् ॥ नखकोटिप्रविष्टेनटंकणे ननशाम्यति। कुनखश्चेत्तदाशैलःसलिलेप्लुवतेपिच ॥

अर्थ–कुनखपर कफविद्रधिकी क्रिया करे और नखकी बगलमें सुहागरे-का चूर्ण भरे तो कुनखका नाश होय यदि असा न होयतो पर्वत पानीपर तरे॥

अनुशयी।

गंभीरामल्पसंरंभांसवर्णामुपरिस्थिताम्।
पादस्यानुशयींतांतुविद्यादंतःप्रपाकिनीम् ॥

अर्थ–पैरोंमें त्वचाके समान वर्ण यत्किंचित् सूजन युक्त, भीतरसे पकीजो पिडिका होय, उस्को अनुशयी ऐसे कहते हैं ॥

अनुशयीकी चिकित्सा।

हरेदनुशयींवैद्यःक्रिययाश्लेष्मविद्रधेः॥

अर्थ–वैद्यको अनुशई व्याधिका कफ विद्रधिके ऊपरका उपचारसे शमनकरे।

विदारिका।

विदारिकंदवद्वृत्ताकक्षावंक्षणसंधिषु।
विदारीकाभवेद्रक्तासर्वजासर्वलक्षणा ॥

अर्थ–विदारी कंदके समान गोल, कांखमें अथवा वंक्षण स्थानमें जो गांठ तामेके रंग कीसी होय, उसको विदारिका ऐसे कहते हैं यह सन्निपातसे होय है अर्थात् इसमें तीनों दोषोंके लक्षण होत हैं ॥

विदारिकाकी चिकित्सा।

विदारिकायांप्रथमंजलौकायोजनंहितम्।
पाटनंचविपक्कायांततोव्रणविधिःस्मृतः ॥

अर्थ–विदारिका पर प्रथम जोख लगायके रुधिर निकालै तो हितकारी होय तथा उसके पकनेसे उसमें चीरा देकर व्रणोक्त क्रिया करे ॥

सामान्य यत्न।

जयेद्विदारिकांलेपैःशिग्रुदेवद्रुमोद्भवैः ॥

अर्थ–विदारिका पर सहंजना, देवदार, इनका लेप करकै जीते ॥

शर्करार्बुद।

दुर्गंधिक्लिन्नमत्यर्थंनानावर्णंततःशिराः।
सृजंतिरक्तंसहसातद्विद्याच्छर्करार्बुदम्॥

अर्थ–शर्करा होनेके अनंतर नाडियोंसे दुर्गन्ध क्लेदयुक्त अनेक प्रकारके वर्णका (घृत, मेद, और वसा इनके वर्णका) रुधिर स्रवै, उसको शर्करार्बुद कहते हैं, परंतु भोजने[1] शर्करार्बुदको शर्करा रोगके अन्तर्गत कहा है॥

शर्करा।

प्राप्यमांसंशिराःस्नायुःश्लेष्मामेदस्तथानिलः। ग्रंथिंकरोत्यसौ भिन्नोमधुसर्पिर्वसानिभम्॥ स्रवत्यास्रावमनिलस्तत्रवृद्धिंगतः पुनः। मांसंविशोष्यग्रथितांशर्करांजनयेत्ततः॥

अर्थ–कफ मेद और वायु ये मांस शिरा और स्नायु इनमें प्राप्त हो गांठ बांधते हैं, जब वो फूटे तब उसमेंसे सहत, घृत, चर्बी, इनके समान स्राव हो तिस करके वायु पुनः बढकर मांसको सुखाय उसकी बारीक खिचीसी गांठ करे उसको शर्करा कहते हैं॥

शर्करार्बुदकी चिकित्सा।

मेदार्बुदविधानेनसाधयेच्छर्करार्बुदम्॥

अर्थ–शर्करार्बुद पर मेदार्बुदकी चिकित्सा करे॥

पाददारी।

परिक्रमणशीलस्यवायुरत्यर्थरूक्षयोः।
पादयोःकुरुतेदारींसरुजांतलसंश्रिताम्॥

अर्थ–जिस पुरुषको बहुत चलना पडे है उसके पैर वायुके योगसे अत्यंत रूक्ष होकर पैरोंके तलओंको विदीर्ण कर दे (फाड दे) उसको पाददारी कहते हैं अर्थात् विवाई कहते हैं विपादिका कुष्ठ फटे नहीं है, फूटे निकले है यह इसमें भेद जानना॥

चिकित्सा।

पाददार्यांशिरांप्राज्ञोमोक्षयेत्तलशोधिनीं।
स्नेहस्वेदोपपन्नौतुपादौवालेपयेन्मुहुः॥

अर्थ–पाददारी रोग होनेसे पैरोंके तरवाकी शिरावेधकै रुधिर निकाल और पैरोंकै स्नेह (चिकनाई) लगायकै सेके अर्थात् पसीने निकाले और औषधोंका लेप करे॥

---

१ तमेव भिन्नदुर्गन्धं घृतमेदोनिभं शिराः। स्रवंति स्रावमनिशं तदास्याच्छर्करार्बुदम्॥

मधूच्छिष्टादिलेप।

मधूच्छिष्टवसामज्जाघृतक्षारविमिश्रितैः ॥ सर्जाह्वसिंधूद्भवयो श्चूर्णमधुघृतप्लुतम् ॥ निर्मथ्यकटुतैलाक्तंहितंपादप्रमार्जनम् ॥

अर्थ-मोम, चर्बी, मज्जा, घी, क्षार इनमें राल तथा सैंधानिमकका चूर्ण और सहत सरसोंका तेल इन सबको एकत्र करके खरल करे फिर पैरोंके लगावे तो पाददारी दूर होय ॥

मदनादिलेप।

मदनसैंधवगुग्गुलुगैरिकाज्यमधुवालकपंकविलेपनात्।
स्फुटितमप्यखिलंचरणद्वयंविकचतामरसप्रतिमंभवेत् ॥

अर्थ-मैनफल, सैंधानिमक, गूगल, गेरू, नेत्रबाला इनका चूर्ण, सहत और घी इनमें मिलायके लेप करे तो दोनों पैरोंका फटना दूर होय और पैर कमलके समान कोमल होवे।

मध्वादिलेप।

मधुसिक्थकसैंधवघृतगुडमहिषाख्यरालनिर्यासैः।
गैरिकसहितैर्लेपःपादस्फुटनापहः सिद्धः ॥

अर्थ-सहत, मोम, सैंधानिमक, घी, गुड, गूगल, राल और गेरू इनको एकत्र करके लेप करे, तो पैरोंके फटनेको नाश करे।

उपोदिकादि तैल।

उपोदिकासर्षपनिंबमोचककर्कारु(?)भस्मतोयैः।
तैलंविपक्वंलवणेनयुक्तंतत्पाददारींविनिहंतिसद्यः ॥

अर्थ-पोईका शोक, शिरस, नींबकी छाल, मोचरस, ककोडा, खीरा, राखका पानी, तेल और निमक इनको एकत्र मिलायके तेलको पचावे, जब तेल सिद्ध हो जावे तब उतारके पाददारीपर लगावे तो तत्काल पाददारीका नाश करे ॥

मदनादि लेप।

मदनंचतथासिक्थंसामुद्रलवणंतथा। माहिषीनवनीतेनसंतप्तं लेपनेहितम्। सप्ताहात्स्फुटितौपादौजायतेकमलोपमौ ॥

अर्थ-मैनफल, मोम, निमक इन सबको भैंसके मक्खनमें मिलाय अग्निपर गरम करके लेप करे, हितकारी होय, तथा पैर सात दिनमें कमलके समान होवे ॥

सैंधवादि लेप।

सैंधवंचंदनंरालंमधुसर्पिः पुरोगुडं।
गैरिकंस्फुटितौपादौलिप्तौस्यात्पंकजोपमौ ॥

अर्थ–सैंधानिमक, चंदन, राल, सहत, घी, गूगल, गुड, और गेरू इनका लेप करे तो फटनेवाले पैर कमलके समान नरम होवे ॥

कदर।

शर्करोन्मथितेपादेक्षतेवाकंटकादिभिः।
ग्रंथिःकीलवदुत्पन्नोजायतेकदरंतुतत् ॥

अर्थ–पैरोंमें कंकर छिदनेसे अथवा कांटे लगनेसे बेरके समान ऊंची गांठ प्रगट होय, उस्को कदर अर्थात् टेक कहते हैं अथवा " ग्रन्थिः कीलवदुत्पन्नो " इस जगै ' ग्रन्थिः कीलवदुत्सन्नो ' ऐसाभी पाठ है अर्थात् कीलके समान जो गांठ होय उस्को कदर कहते हैं यह कदर रोग हाथोंमेंभी होय है सो भोजने[1] लिखाभी है ॥

चिकित्सा।

दहेत्कदरमुद्धृत्यतैलेनदहनेनवा ॥

अर्थ–कदरको काटकै तेलसे अथवा अग्निसे दाह करे ॥

अलसनिदान (खारुए)

क्लिन्नांगुल्यंतरौपादौकंडूदाहरुजान्वितौ।
दुष्टकर्दमसंस्पर्शादलसंतंविभावयेत् ॥

अर्थ–दुष्ट कीचमें डोलनेसे (वर्षा आदिका पानी और सडीकीचमें डोलनेसे) पैरोंकी उंगली गीली रहनेसे, उंगलियोंके बीचमें (सपेद सपेद चकत्ता हो जाय) उन्में खुजली, दाह और गीलापन होय तथा पीडा होय, उस्को अलस अर्थात् खारुआ कहते हैं ये कफरक्तके दोषसे होता है ॥

अलसचिकित्सा।

पादौसिक्त्वारनालेनलेपनंत्वलसेहितम्। पटोलकुनटीनिंबरोचनामरिचैस्तिलैः॥ क्षुद्रास्वरससिद्धेनकटुतैलेनलेपयेत्।
ततःकासीसकुनटीतिलचूर्णैर्विचूर्णयेत् ॥

---

१ हस्तयोः पादयोश्चापि गंभीराणुगतं स्थिरम्। मांसकीलं जनयतः कुपितौ कफमारुतौ॥सशल्यमिव तं देशं मन्यंते तेन पीडितम्। शर्कराकदरं केचिन्मन्यंते वातकंटकम्।

अर्थ-अलस व्याधिपर पैरोंमें कांजी लगाय फिर पटोलपत्र, मनसिल, नीमकी छाल, गोरोचन, मिरच, तिल, और कटेरीका स्वरस इसमें सरसोंक, तेल मिलायके सिद्ध करे, इसको पैरोंके लगावे पश्चात् हीराकसीस, मनसिल और तिलोंका ये ऊपरसैं मसल देवे ॥

करंजादिलेप।

करंजबीजंरजनीकासीसंपद्मकंमधु।
रोचनाहरितालंचलेपोयमलसेहितः॥

अर्थ-अलस व्याधिपर कंजेके बीज, हलदी, हीराकसीस, पद्माख, सहत गोरोचन और हरताल इनका लेप करे तो हितकारी होय ॥

इन्द्रलुप्त।

रोमकूपानुगंपित्तंवातेनसहमूर्च्छितम्। प्रच्यावयतिरोमाणि ततःश्लेष्मासशोणितः॥ रुणद्धिरोमकूपांस्तुततोन्येषामसंभवः। तदिंद्रलुप्तंखालित्यंप्राहुश्चाचेतिचापरे॥

अर्थ-पित्तवादीके साथ कुपित होकर रोमकूपोंमें अर्थात् बालोंके छिद्रोंमें प्राप्त हो, तब मस्तक अथवा अन्य स्थानके बाल झडने लगे, पीछे कफ और रुधिर रोमकूप कहिये बालोंके प्रगट होनेके स्थानको रोकदे, उस्से फिर बाल नहीं ऊगे, इस रोगको इन्द्रलुप्त खालित्य चाचा (चाई) कहते हैं। यह रोग स्त्रियोंके नहीं होय, इसका कारण यह है कि, उन्का रुधिर महीनेके महीने शुद्ध होतारहै है और निकलरहै है,इसीसे रोमकुपोंको नहीं रोकै है सो विदेहाचार्यने लिखाभीहै और इसी रोगको खालित्य और रुह्या कहतेहैं, सो भोजने लिखाहै परंतु कार्तिकाचार्य कहते हैं कि, इन्द्रलुप्त रोग मूछ डाढीमें होयहै और खालित्य रोग शिरमें होय है और रुह्यारोग पीडासहित होयहै ॥

यत्न।

इद्रलुप्तापहोलेपोमधुनाबृहतीरसः। गुंजामूलंफलंवापिभल्लातकरसोपिवा। लेपःसनवनीतोवाश्वेताश्वखुरजामषी॥

अर्थ-इन्द्रलुप्तपर कटेरीका रस अथवा गुंजाकी जड अथवा फल, अथवा भिलायेका रस इनको सहतसे अथवा सपेद घोडेका खुर जलायके उसकी राख मक्खनमें खरलकर लेप करे ॥

१ अत्यंतसुकुमाराणां रजो दुष्टं स्रवंतिच। अव्यायामवतां यस्मात्तस्मान्न खलति स्त्रियाः।

लेप।

हस्तिदंतमषींकृत्वाछागदुग्धंरसांजनम्।
रोमाण्येतेनजायंतेलेपात्पाणितलेष्वपि॥

अर्थ-हाथीदांतको भून उसकी स्याही, बकरीका दूध, और रसोत इनको एकत्र कर लेप करे, इससे पैरके तलवाओंमेंभी बाल आवे॥

तिक्तादिस्वरस।

तिक्तपटोलीपत्रस्वरसैर्घृष्टाशमंयाति।
चिरकालजापिनिरुजंनियतंदिवसत्रयेणैव॥

अर्थ-इन्द्रलुप्तपर परवलके पत्तोंका स्वरस चुपडे, तो तीन दिनमें बहुत दिनकीभी इन्द्रलुप्त दूर होय॥

गोक्षुरादिलेप।

गोक्षुरस्तिलपुष्पाणितुल्येचमधुसर्पिषी।
शिरःप्रलेपितंतेनकेशैःसमपचीयते॥

अर्थ-गोखरू, तिलके फूल, सहत और घी ये पदार्थ समान भागले मस्तकपर लेपकरे तो बाल उत्पन्न होवे॥

जात्यादि तैल।

जातीकरंजवरुणकरवीराग्निपाचितम्।
तैलमभ्यंजनाद्धंतिइंद्रलुप्तंनसंशयः॥

अर्थ-चमेली, करंज, वरना, और कनेर इनके रसमें तैल डालकै पचावे, इसको लगावे तो इन्द्रलुप्त नाश होय इसमें संदेह नहीं है॥

स्नुहीदुग्धादि लेप।

स्नुहीपयःपयोर्कस्यान्मार्कवोलांगलीविषम्। अजामूत्रंसगोमूत्रंरक्तिकासेंद्रवारुणी॥ सिद्धार्थकस्तीक्ष्णगंधासम्यगेभिर्विपाचितम्। तैलंभवतिनियमात्खालित्यव्याधिनाशनम्॥

अर्थ-थूहरका दूध, आकका दूध, और भांगरा, कलयारी, सिंगिया विष गोमूत्र बकरीका मूत्र, घूंघची, इन्द्रायन, सपेदसरसो, सपेदवच, इनमें तैल डालकै पचावे, तो यह नियमसैं खल्वाटपनेको नाश करे॥

दारुण।

दारुणाकंडुरारूक्षाकेशभूमिर्विपच्यते।
कफमारुतकोपेनविद्याद्दारुणकंतुतत्॥

अर्थ--कफवायुके कोपसे केशोंकी जमीन अति कठिन होकर खुजावे, खरदरी होय, तथा बारीक फुंसी होकर पके, उसको दारुणक ऐसे कहते हैं, कफ वातके कोपसे यह राग होय है इसका कारण यह है कि विना पित्तके पाक नहीं होय, सो विदेहने[1] कहाभी है ॥

चिकित्सा।

दुग्धेनखाखसंबीजंप्रलेपाद्दारुणंहरेत् ॥

अर्थ--खसखसको दूधमें पीसकै लेप करे तो दारुणका नाश करे ॥

कंटकार्यादि लेप।

कंटकारिफलरसैस्तुल्यंतैलंविपाचयेत् ।
जपापुष्पद्रवैर्वाथतल्लेपोदारुणप्रणुत् ॥

अर्थ–कटेरीके रसमें अथवा गुडहरके फूलोंके रसमें समान तेल डालकै पचावे इसका लेप करनेसे दारुण रोगका नाश होय ॥

प्रियालादिलेप।

कार्योदारुणकेमूर्ध्निप्रलेपोमधुसंयुतः । प्रियालबीजमधुककुष्टमाषैःससैंधवैः । कांजिकैस्तुत्रिसप्ताहंलेपोदारुणकापहः ॥

अर्थ–चिरोजी, मुलहटी, कूठ, उदड, सैंधानिमक, और कांजी इन सबको एकत्र पीस इसमें सहत डालकैं २१ दिन लेप करे तो दारुण रोगका नाश होय।

आम्रबीजादि लेप।

आम्रबीजस्यचूर्णंतुशिवाचूर्णंसमंद्वयम् ।
दुग्धपिष्टप्रलेपोयंदारुणंहंतिदारुणम् ॥

अर्थ–आम्रकी गुठली तथा हरडका समान भाग चूर्ण दूधमें पीसकै लेप करे तो उग्र दारुणका नाश करे ॥

भृंगराज तैल।

भृंगराजरसेनैवलोहकिट्टफलत्रिकम् । सारिवाचपचेत्कल्कैस्तैलंदारुणनाशनम् । अकालपलितंकंडूमिंद्रलुप्तंचनाशयेत् ॥

अर्थ–भांगरेका रस, लोहेकी कीट, हरड, बहेडा, आवला और सारिवा, इनके कल्कमें तेल डालकै पचावे जब सिद्ध हो जावे, तब इसका लेप करे तो दारुण, अकालमें बालोंका सपेद होना, कंडू और इन्द्रलुप्त, इनको नाश करे ॥

---

१ यदत्रपटलाभासंसरजस्कंशिरस्त्वचि । परुषजायतेजंतोस्तस्यरूपंविशेषतः ॥ तोदैःसमन्वितंवातंसकण्डूगौरवंकफात् । सपिपासंसदाहार्तिरोगपित्तास्रजंतथा ॥

गुजादि तैल।

गुंजाफलैःशृतंतैलंभृंगराजरसेनच।
कंडूदारुणहृत्कुष्ठकपालव्याधिनाशनम्॥

अर्थ-भांगरेका रस, घूंघचीका कल्क, इनमें तेल मिलायकै सिद्ध करें, यह कंडू, दारुण, कोढ, और मस्तककी व्याधि इनको नाश करे॥

अरूंषिका।

अरूंषिबहुवक्राणिबहुक्लेदानिमूर्धनि।
कफासृक्कृमिकोपेननृणांविद्यादरूंषिकाम्॥

अर्थ--रुधिर कफ और कृमि इनके कोपसे माथेमें बहुत फुंसी हो जायँ, उनमेंसे चेप विशेष निकरे और क्लेद युक्त होंय इन फुंसीयोंको अथवा व्रणोंको अरूंषिका कहते हैं॥

चिकित्सा।

नीलोत्पलस्यकिंजल्कोधात्रीफलसमन्वितः।
यष्टीमधुकयुक्तश्चलेपाद्धन्यादरूंषिकाम्॥

अर्थ-नीले कमलकी केशर, आवले और मुलहटी, इनका लेप करे तो अरूंषिकाका नाश होय॥

त्रिफलादि तैल।

त्रिफलायारजोयष्टिमार्कवोतालसारिका।
सैंधवंपक्कमेतैस्तुलेपाद्धन्यादरूंषिका॥

अर्थ-हरड, बहेडा, आँवला, मुलहटी, भाँगरो, नीले कमल, सारिवा और सैंधानिमक इनके कल्कमें तेल सिद्ध करके लेप करे, तो अरूंषिकाको नाश करे॥

पिण्याकादि लेप।

पुराणमपिपिण्याकंपुरीषंकुक्कुटस्यच।
मूत्रपिष्टःप्रलेपोयंशीघ्रंहन्यादरूंषिकाम्॥

अर्थ--पुरानी खल और मुरगेकी विष्ठा इनको मूत्रमें खरल करके लेप करे तो तत्काल अरूंषिका नाश करे॥

सामान्य यत्न।

अरूंषिकायांरुधिरेवसिक्तेशिराव्यधेनाथजलौकयावा।
निबांबुसिक्तंशिरसिप्रलेपादयोश्ववर्चोरससैंधवाभ्याम्॥

अर्थ-अरूंषिका होनेसे फस्त खोले, अथवा जोख लगायके रुधिर निकाल-डाले, तथा नींबके रससे छिडके और घोडेके लीदमेंके रसमें सैंधानिमक डालके लेप करे ॥

हरिद्रादि तैल।

हरीद्राद्वयभूनिंबत्रिफलारिष्टचंदनैः।
एतत्तैलमरूंषीणांसिद्धमभ्यंजनेहितम् ॥

अर्थ-हलदी, दारुहलदी, चिरायता, हरड, बहेडा, आँवला, नींबकी छाल और चंदन इनके काढेमें अथवा कल्कमें तेल डालके पचावे, इसका लेप करे तो अरूंषिका नष्ट होय ॥

खदिरादि लेप।

खदिरारिष्टजंबूनांत्वग्भिर्वामूत्रसंयुतैः।
कुटजत्वक्सैंधवंवालेपाद्धन्यादरूंषिकाम् ॥

अर्थ-खैर, नींबकी छाल, जामुन, इनकी छाल, गोमूत्र, कूडाकी छाल और सैंधानिमक इनका लेप अरूंषिकाको नाश करे ॥

पलित (बालोंका सपेद होना)।

क्रोधशोकश्रमकृतःशरीरोष्माशिरोगतः।
पित्तंचकेशान्पचतिपलितंतेनजायते ॥

अर्थ-क्रोध शोक और श्रमके करनेसे, उत्पन्न भई जो शरीरउष्मा (गरमी) और पित्तसो मस्तकमें जायकर बालोंको पकायदे, अर्थात् सपेद करदे उस करके यह पलित रोग होयेहै पलित रोगपर मधुकोशटीकाकारने तथा भाव-प्रकाशने शास्त्रार्थ लिखा है ॥

अयादि लेप।

अयोरजोभृंगराजस्त्रिफलाकृष्णमृत्तिकाः ॥
स्थितमिक्षुरसेमासंलेपनात्पलितंजयेत् ॥

अर्थ-लोहेका चूर्ण, भाँगरा, हरड, बहेडा आँवला, और काली मिट्टी इन सबको ईखके रसमें पीसके एक महिने लेप करे तो पलितताको नाश करे ॥

धात्र्यादिलेप।

धात्रीफलद्वयंपथ्येद्वेतथैकंविभीतकम् । पंचाम्रमज्जालोहस्य
कर्षैकंचप्रदापयेत् ॥ पिष्ट्वालोहमयेभांडेस्थापयेदुषितंनिशि।
लेपोयंहंतिनचिरादकालपलितंमहत् ॥

अर्थ–आँवले ८ तोले, हरड ८ तोले, बहेडा ४ तोले, आमकी गुठली २० तोले, लोहचूरा १ तोले, इन सबको एकत्र पीस कल्क करकै लोहेके बासनमें धर रखे, जब एकरात्रि वीत जावे तब इसका लेप करे, तो अकालमें केशोंका पकना नाश होय ॥

निंबतैलयोग।

निंबस्यतैलंप्रकृतिस्थमेवनस्यंविधेयंविधिनायथावत्।
मासेनगोक्षीरभुजोनरस्यचिरात्प्रभूतंपलितंनिहंति ॥

अर्थ–केवल नींबका तेल विधिपूर्वक निकालकै केशोंपर लेप करे, नस्य देवे, और दूधभात भोजन करे तो एक महिनेमें सब बाल पक गए होय तो वोभी काले होय ॥

त्रिफलादि लेप।

त्रिफलानीलिकापत्रंभृंगराजोह्ययोरजः।
अविमूत्रेणसंपिष्टंलेपात्कृष्णीकरंपरम् ॥

अर्थ–त्रिफला, नीलके पत्ते, भाँगरा, लोहका चूर्ण, इनको बकरीके मूतमें पीसकै लेप करे, तो बालोंको अत्यंत काले करे ॥

काश्मर्यादि तैल।

काश्मर्यमूलमादौसहचरकुसुमंकेतकस्यापिमूलंलौहंचूर्णंसभृं गंत्रिफलजलयुतंतैलमेभिः पचेद्यः। कृत्वालोहस्यभांडेक्षिति तलनिहितंस्थापयेन्मासमेकंकेशाःकाशप्रकाशाअपिमधुपनि भाअस्ययोगाद्भवंति ॥

अर्थ–कंभारीकी जड,पीयावाँसेके फूल केतकीकी जड लोहेका चूर्ण,भाँगरा और त्रिफलेका काढा इनमें तेल डालकै पचावे, फिर इसको मुख बंद पात्रमें भर १ महिने पृथ्वीमें गडा रहने दे, फिर बालोंको लगावे तो काँसके समान पककै सपेद हुए बाल भौंराके समान काले हो जावे ॥

तारुण्यपिटिका।

शाल्मलीकंटकप्रख्याःकफमारुतकोपजाः।
जायंतेपिडिकायूनांविज्ञेयामुखदूषिकाः ॥

अर्थ–कफ वायुके कोपसे सेमरके कांटेके समान तरुण (जवान) पुरुषके मुखके ऊपर जो फुंसी होय उनको मुखदूषिका अर्थात् मुहांसे कहते हैं इनके होनेसे मुख बुरा होजाता है ॥

चिकित्सा।

युवानपिटिकान्यच्छनीलीव्यंगाःसशर्कराः।
शिरावेधैःप्रलेपैश्चजयेदभ्यंजनैस्तथा॥

अर्थ–तारुण्यपिटिका, न्यच्छ, नीलीव्यंग और शर्करा ये व्याधि, फस्तखोल, लेप और अभ्यंजन इनसे जीते॥

जातीफलादिलेप।

जातीफलंचंदनंचमरिचंसहपेषितम्।
मुखेलेपेनहंत्याशुपिटिकांयौवनोद्भवाम्॥

अर्थ–जायफल, चंदन, मिरच इनको एकत्र पीस मुखपर लेपकरे तो शीघ्र तारुण्यपिटिका नष्ट होवे॥

लोध्रादिलेप।

लोध्रधान्यवचालेपस्तारुण्यपिटिकापहः।
तद्वद्गोरोचनायुक्तंमरिचंमुखलेपनात्॥

अर्थ–लोध, धनिया, वच, इनका अथवा गोरोचन और मिरच, इनका लेप तरुणावस्थाकी पिटिकाओंको नाश करे॥

सिद्धार्थादिलेप।

सिद्धार्थकवचालोध्रसैंधवैश्चप्रलेपनम्। गव्येनचार्जुनत्वग्वा
मंजिष्ठावासमाक्षिका॥कंटकैःशाम्ललैर्यश्चक्षीरपिष्टैःप्रलेपयेत्।
मुखेतस्यापिपिटिकाःसंक्षयंयांत्यसंशयम्॥

अर्थ–सपेद सरसों, वच, लोध, सैंधानिमक इनको गौके दूधमें पीसके इसको अथवा कोह वृक्षकी छालको दूधमें पीस उसको अथवा सहत और मजीठ, इनका लेप करे अथवा सेमरके काँटे दूधमें पीस लेप करे तो तरुणताके मुहाँसे नष्ट होवे॥

पद्मिनीकंटक।

कंटकैराचितंवृत्तंमंडलंपांडुकंडुरम्।
पद्मिनीकंटकप्रख्यैस्तदाख्यंकफवातजम्॥

अर्थ–कमलके कांटेके समान कांटे चारों ओर युक्त हों, गोल पीले रंगका, खुजली जिसमें चलती होय, ऐसा एकमंडल होय, उसको पद्मिनीकंटक ऐसे कहते हैं यह कफ वायुसे होय हैं॥

पद्मिनीकंटककी चिकित्सा।

पद्मिनीकंटकेरोगेछर्दयेन्निंबवारिणा । तेनैवसिद्धंसक्षौद्रंसर्पिः पातुंप्रदापयेत् । निंबारग्वधकल्कैर्वामुहुरुद्वर्तनंहितं ॥

अर्थ—पद्मनीकंटक रोगमें नीबका काढा देकर वमन करावे, तथा निबके काढेमें सिद्ध कराहुआ घृत पीनेको देवे और कटुनिब, अमलतासका गूदा इनका कल्क अंगमें लगावे, तो हितकारी होय ॥

निंबादि घृत।

चतुर्गुणेननिंबोत्थपत्रक्काथेनगोघृतं।पंचेत्ततस्तुनिंबस्यकृतमाल स्यपत्रजैः ॥ कल्कैर्भूयःपचेत्सिद्धंतत्पिबेत्पलसंमितं।पद्मिनी कंटकाद्रोगान्मुक्तोभवतिनान्यथा ॥

अर्थ—गौके घीसें चौगुना नीबका काढा डालके उसमें नीबकी छाल, और अमलतास इनका कल्क डालके घृत सिद्ध करे, इसमेंसे चार तोले पीवेतो ॰द्मनीकंटक रोग दूर होय ॥

जंतुमणि ॥

समसुत्सन्नमरुजंमंडलंकफरक्तजम् ।
सहजंलक्ष्मचैकेषांलक्ष्योजंतुमणिःस्मृतः ॥

अर्थ—कफ रक्तसे जन्मसेहि प्रगट भई समान तथा कुछ ऊंचा, जिस्में पीडा होय नही ऐसा गोल मंडलके समान देहमें चिह्न होय उस्को लक्ष्म तथा कोई जंतुमणि ऐसे कहते हैं यह स्त्री पुरुषोंके अंगभेद करके शुभाशुभ फल-दायक है ॥

माष (मस्सा)।

अवेदनंस्थिरंचैवयस्मिन्गात्रेप्रदृश्यते ।
माषवत्कृष्णमुत्सन्नमनिलान्माषमादिशेत् ॥

अर्थ—वादीसे शरीरके ऊपर उडदके समान काला, पीडा रहित, स्थिर, काठिन, कुछ ऊँची गांठसी प्रगट होय, उस्को माष (मस्सा) ऐसे कहते हैं इस श्लोकमें जो चकार है उस्से कफमेदसेभी मस्से होतेहैं यह दिखाया सो भोजने[1] कहाभी है ॥

तिलकालक।

कृष्णानितिलमात्राणिनीरुजानिसमानिच ।
वातपित्तकफोत्सेकात्तान्विद्यात्तिलकालकान् ॥

---

१ वातेरिते त्वचि यदा दूष्येते कफमेदसी। श्लक्ष्णं मृदु सवर्णंच कुरुते माषकं वदेत् ॥

अर्थ-वात पित्त कफके कोपसे काले तिलके समान पीडारहित त्वचासे मिल ऐसे अंगमें दाग होय उन्को तिलकालक (तिल) कहते हैं "वातपित्त कफोत्सेकात्" इस पाठमें वात पित्त हेतु करके कफका शोष होय है उसीसे तिल होते हैं परंतु चरकके मतसे पित्त रुधिरके शोष होनेसे तिल होते हैं "यस्य पित्तं प्रकुपितं शोणितं प्राप्य शुष्यति।तिलकः पिल्यका व्यंगा नीलिका चास्य जायते" ॥ इस वचनसे वातभी रुधिरको शोषण करै है अन्य ग्रन्थमें वात पित्त कफ ये तीनों रुधिरको शोषण करै हैं ॥

तिलकालक, माष, जंतुमणिपर चिकित्सा।

चर्मकीलंजंतुमणिंमाषकान्तिलकालकान् ।
उत्कृत्यशस्त्रेणदहेत्क्षाराग्निभ्यामशेषतः ॥

अर्थ- चर्मकील, जंतुमणि, मस्सा, तिल, इनको शस्त्रसै उखाडकै क्षार अथवा अग्नि इनसे दाग दये ॥

न्यच्छ।

महद्वायदिवाप्यल्पंशावंवायदिवासितम् ।
नीरुजंमंडलंगात्रेन्यच्छमित्यभिधीयते ॥

अर्थ-मुखके बिना अन्यस्थानमें शरीरके ऊपर बडा अथवा छोटा, काला, अथवा सपेद और पीडारहित दाग होय उस्को न्यच्छ कहते हैं ये भी व्यंगका भेद है ॥

मंजिष्ठादि तैल।

मंजिष्टंमधुकंलाक्षामातुलिंगंसयष्टिकं। कर्षप्रमाणैरेतैस्तुतैल स्यकुडवंतथा ॥ आजंपयस्तुद्विगुणंशनैर्मृद्वग्निनापचेत् । नीलिकापिटिकाव्यंगानभ्यंगादेवनाशयेत् ॥ मुखंप्रसादोपचितंवलीपलितवर्जितम्। सप्तरात्रप्रयोगेणभवेत्कनकसन्निभम्॥

अर्थ-मजीठ, महुआ, लाख, बिजोरा, मुलहटी ये प्रत्येक तोले २ और तेल १६ तोले, तथा तेलसे दूना बकरीका दूध डालके मंदाग्निपर पचावे, इसका सातदिन मालिस करे तो नीलिका, तारुण्यपिटिका (मुहासे) और व्यंग इनको नाश करे और मुख स्वच्छ होकर बाल काले होवे, तथा मुख सुवर्णके समान होय ॥

व्यंग ।

क्रोधायासप्रकुपितोवायुःपित्तेनसंयुतः । मुखमागत्यसहसामं
डलंविसृजत्यतः । नीरुजंतनुकंश्यावंमुखेव्यंगंतमादिशेत् ॥

अर्थ–क्रोध और श्रम इन्से कुपितभया वायु सो पित्त संयुक्त होकर मुखमें प्राप्त होकर एक मंडल उत्पन्न करे वो दूखे नहीं वो पतला तथा श्यामवर्ण होय उस्को व्यंग ऐसे कहते हैं ॥

चिकित्सा ।

त्रिभुवनविषयापत्रंमूलंस्थविरस्यशिंशपाचैभिः ।
उद्वर्तनंविरचितंन्यच्छव्यंगापहंसिद्धम् ॥

अर्थ–त्रिभुवनविजया (भांग) के पत्ते, देवदारुकी जड और सीसो, इनको पीस मुखपर मालिस करे अर्थात् उवटना करे तो न्यच्छ, व्यंग, इनको नाश करे ॥

वटांकुरादि लेप ।

वटांकुरामसूराश्चप्रलेपाद्व्यंगनाशनाः ॥
व्यंगेमंजिष्ठयालेपः प्रशस्तोमधुयुक्तया ॥

अर्थ–वडके अंकुर, मसूर, इनको अथवा सहतसे मजीठका लेप करे तो व्यंग (झाई)का नाश होय ॥

अर्जुनत्वगादि लेप ।

व्यंगेषुचार्जुनत्वक्वामंजिष्ठावृषमाक्षिकैः।लेपः सनवनीतोवाश्वे
ताश्वखुरजामषी ॥ व्यंगानांलेपनंशस्तंशशस्यरुधिरेणवा ।
वरुणास्यकषायेणमुखंप्रक्षाल्यलेपयेत् ॥

अर्थ–मुखपर झाँई होनेसें मजीठ, अडूसा और सहत इनका अथवा घोडेके सपेद खुरकी स्याहीको मक्खनमें खरल करके लेप करे, अथवा ससेका रुधिर लगावे, अथवा वरनाके काढेसे मुखको धोवे तो व्यंगका नाश होय ॥

जातीफलादि लेप ।

वटस्यपांडुपत्राणिमालतीरक्तचंदनम् । कुष्ठंकालीयकंलोध्रमे
भिर्लेपःप्रयोजयेत् । युवानपिटिकानांतुव्यंगानांचविनाशकः॥

अर्थ–जायफलका लेपकरे तो व्यंगका नाश होय। तथा नीली और हलदी इनके चूर्णको आकके दुधमें खरल करके लेपकरे तो बहुत दिनकी मुखकी कालौ विनाश होय ।

मसूरादिलेप।

मातुलिंगजटाःसर्पिःशिलागोशकृतोरसः।
मुखकांतिकरोलेपःपिटिकाव्यंगकालजित्॥

अर्थ–मसूरको दूधमें पीस उसमें घी डाल सात दिन लेप करे तो मुख कमलके पत्रके समान होय॥

नीलिका।

कृष्णामेवंगुणांगात्रेमुखेवानीलिकांविदुः

अर्थ--ऊपर लिखे अनुसार जो काले मंडल (काले चकत्ते) अंगमें अथावा मुख पर होय उसको नीलिका कहते हैं॥

कुंकुमादितैल।

कुंकुमंचंदनंलोध्रंपतंगंरक्तचंदनं। कासीसकमुशीरंचमंजिष्ठा मधुयष्टिका॥ पत्रकंपद्मकंपद्मंकुष्टंगोरोचनंनिशा। लाक्षादारु हरिद्राचगैरिकंनागकेशरं॥ पलाशकुसुमंचापिप्रियंगुश्चवटां कुराः। मालतीचमधूच्छिष्टंसर्षपाःसुरभिर्वचा॥ चतुर्गुणपयः पिष्टैरेतैरक्षमितैः पृथक्। पचेन्मंदाग्निनावैद्यस्तैलंप्रस्थद्वयो न्मितं॥ वदनाभ्यंजनादेतद्व्यंगंनीलिकयासह। तिलकं माषकंन्यच्छंनाशयेन्मुखदूषिकां॥ पद्मिनोकंटकंवापिहरेज्जं तुमणिंतथा। विदध्याद्वदनंपूर्णचंद्रमंडलसुंदरम्॥

अर्थ–केशर, चंदन, लोध, पतंग, लालचंदन, दारुहलदी, खस, मजीठ, मुलहटी, पत्रज, पद्माख, कमल, कूठ, गोरोचन, हलदी, दारु हालदी, गेरू, नागकेशर, पलासके फूल, फूलप्रियंगु, बड़के कोंपल, मालती, सहत, सरसो, तुलसी, वच, ये प्रत्येक तोले २ लेय, चौगुना जल डालके काढाकरे, इसमें १२८ तोले तेलडालकै मंदाग्निसे पचावे इसको मुखपर लगावेतो व्यंग, नीलि, तिल, मस्सा, न्यच्छ, तरुणताके मुहासे, पद्मनीकंटक, और जंतुमणि इनका नाश करे। तथा मुखको चंद्रमाके समान स्वच्छ करे।

परिवर्तिका।

मर्दनात्पोडनाद्वापितथैवाप्यभिघाततः। मेढ्रचर्मयदावायु र्भजतेसर्वतश्चरन्॥ तदावातोपसृष्टत्वात्तच्चर्मपरिवर्तते। मणेर

धस्तात्कोशस्तुग्रंथिरूपेणलंबते ॥ सवेदनंसदाहंचपाकंचव्रज तिकचित्॥परिवर्तिकेतितांविद्यात्सरुजंवातसंभवाम्। सकंडूः कठिनावापिसैवश्लेष्मसमुत्थिता ॥

अर्थ–लिंगको मर्दन करनेसे अथवा रगडनेसे अथवा लिंगमें किसी प्रकारकी चोट लगनेसे,व्यान वायु कुपित होकर उस्के चर्ममें प्रवेश कर सर्वत्र विचरे उस समय वातसंस्पर्श हेतु करकें लिंगकी चर्म पृथक् होजाय और शिश्नका कोश सूजकर मणिके नीचे गाँठके समान होकर लटके, उस्में पीडा होय दाह होय और कभी कभी वो पक जाय इस पीडाको परिवर्तिका कहतेहैं यह वातसे होय है और जो कफसे होय तौ उस्में खुजली तथा कठिनता होय ॥

सामान्य यत्न।

स्वेदोपनाहौपरिवर्तिकायांकृत्वासमभ्यज्यघृतेनपश्चात्। प्रवेशयेच्चर्मशनैःप्रविष्टमाषैःसुपिष्टैरुपनाहयेत्तु ॥

अर्थ–परिवर्त्तिका व्याधिको सेक, तथा पिंडी, बांधके फिर घृतसे अभ्यंग करे फिर चर्मको धीरे २ प्रवेश करे फिर उडदकी पिठ्ठीकी पुलटिस बांधे ॥

प्रकारांतर।

परिवर्तेघृताभ्यक्तांसुस्विन्नामुपनाहयेत्। त्रिरात्रंपंचरात्रंवावा तघ्नैःशाल्वणादिभिः ॥ ततोभ्यज्यशनैश्चर्मवेशयेत्पीडयेन्म णिम्। प्रविष्टेचर्मणिमणौस्वेदयेदुपनाहयेत् ॥ दद्याद्वातहरांब स्तिंस्निग्धान्यन्नानिभोजयेत् ॥

अर्थ–परिवर्त्तिका रोगको घृतसे अभ्यंग करकै फिर पसीने निकाले, तथा वातनाशक शाल्वणादि योगोंसे तीन अथवा पांच दिन पुलटिस बांधे फिर अभ्यंग करकै धीरे २ चर्मको चढावे तथा मणि (सुपारी) को दाबे, इस प्रकार मणि पर चर्म चढ जावें, तब फिर स्वेदन कर और पिंडी बांधे, तथा वातनाशक बस्ती करे तथा स्निग्धान्न भोजन करे ॥

अवपाटिका।

अल्पीयस्यांयदाहर्षाद्बलाद्गच्छेत्स्त्रियंनरः। हस्ताभिघातादथ वाचर्मण्युद्वर्तितेबलात् ॥ मर्दनात्पीडनाद्वापिशुक्रवेगविघात तः। यस्यावपाट्यतेचर्मतांविद्यादवपाटिकाम् ॥

अर्थ–जिसकी योनिका छिद्र बारीक होय, ऐसी स्त्रीसे बलपूर्वक मैथुन करनेसे अथवा हाथके अभिघातके (चोटके) बलसे लिंगके चामको उलटनेसे अथवा भीडनेसे अथवा जोर पूर्वक दाबनेसे अथवा शुक्रके वेगको धारण करनेसे उस पुरुषके लिंगकी चाम फट जाय इस पीडाको अवपाटिका कहते हैं यह अवपाटिका रोगमें तीनों दोषोंके लक्षण पृथक्पृथक् होते हैं यह मत[1] भोजका है॥

चिकित्सा।

स्नेहस्वेदैरिमांवैद्यश्चिकित्सेदवपाटिकाम् ॥

अर्थ–अवपाटिकाको स्नेहन और स्वेदन इन उपचारों करके चिकित्साकरे॥

निरुद्ध प्रकाश।

वातोपसृष्टेमेढ्रेतुचर्मसंश्रयतेमणिम्।मणिश्चर्मोपनद्धस्तुमूत्रस्रोतोरुणद्धिच॥ निरुद्धप्रकृतेस्तस्मिन्मंदधारमवेदनम्। मूत्रंप्रवर्ततेजंतोर्मणिर्विव्रीयतेनच ॥ निरुद्धप्रकाशंविद्यात्सरुजंवातसंभवम् ॥

अर्थ–वायुके योगसे लिंग पीडित होनेसे चामडी सूजकर मणि भागमें प्राप्त होय, वो मणि चर्मके संकोच होनेसे मूत्रके मार्गको रोके तब मूत्रका रोध होय; तब उस पुरुषका मूत्र ठहर ठहर कर निकले, परन्तु पीडा नहीं होय, और मणि बाहर नहीं निकले, इस रोगयुक्त वातजन्य पीडाको निरुद्धप्रकाश कहते हैं चर्मके संकोच होनेको निरुद्ध कहते हैं, और मूत्रकी धार मंद निकालनेको प्रकाश कहते हैं, अवेदनम् यह जो मूलमें पाठ है इस जगे कोई (सवेदनम्) ऐसा कहते हैं । भोज आचार्यके मतसे कहते हैं सो भोज संहितामें लिखा भी है॥

संनिरुद्धगुद।

वेगसंधारणाद्वायुर्विहतोगुदसंस्थितः । निरुणद्धिमहास्रोतःसूक्ष्मद्वारंकरोतिच॥ मार्गस्यसौक्ष्म्यात्कृच्छ्रेणपुरीषंतस्यगच्छति । सन्निरुद्धगुदंव्याधिमेनंविद्यात्सुदारुणम् ॥

---

१ मर्दना दभिघाताद्वाकन्यायोनिप्रपीडनात् । लक्ष्यते यदि मेढ्रस्य वर्णभेदोर्विवक्षितम् ॥ अवपाटिकेतितां विद्यात्पृथग्दोषैःसमन्वितात् । वाताम्लाय (?) रुरजक्षाशूलानस्रोदकारिणी ॥ पित्तात्सदाहारक्ताद्वा (दाह पद्मकी कठिना स्निग्धा) कंडूनत्यन्तवेदनी (?) । २ मेढ्रान्तेचर्मणियदा मारुतःकुपितो भृशम् । द्वारं निरुणद्धि शनैः प्रकाशं च मुहुर्भवेत् ॥ शूलं मूत्रं यत्र कृच्छ्रात्प्रकाशन्तुयदाभवेत् । वातोपसृष्टमेढ्रं च मणिर्न च विदीर्यते ॥ निरुद्धं च प्रकाशं च व्याधिं विद्यात्सुदारुणम् ।

अर्थ–मलमूत्रादिकोंके वेग रोकनेसे गुदाश्रित अपान: वायु कुपित होकर, महास्रोत्र (गुदा) का अवरोध करे, और वो द्वारको छोटा करे, पीछे मार्ग छोटा होनेसे उस पुरुषका मल बडे कष्टसे बाहर निकले, इस भयंकर रोगको संनिरुद्ध गुद कहते हैं इस रोगमेंभी निरुद्ध प्रकाशके समान चर्मका संकोच होनेसे सन्निरुद्ध गुद होय है, अर्थात् अपान वायुके रुकनेसे पुरीष (मल) का अनिर्गम होय है ॥

चिकित्सा।

सन्निरुद्धगुदेतैलैःसेकोवातहरैर्हितः।
तथानिरुद्धप्रकाशक्रियापिकाथिताहिता ॥

अर्थ–संनिरुद्धगुद व्याधि होनेसे वातनाशक तैल सिचन करे, और निरुद्धप्रकाशपर जो क्रिया कही है वो सब करे ॥

अहिपूतन।

शकृन्मूत्रसमायुक्तेऽधौतेऽपानेशिशोर्भवेत्। स्विन्नेवाह्याप्यमानेवाकंडूरक्तकफोद्भवा ॥ ततःकंडूयनात्क्षिप्रंस्फोटाःस्रावश्च जायते। एकीभूतंव्रणैर्घोरंतंविद्यादहिपूतनम् ॥

अर्थ--बालकके मलमूत्र करनेके अनंतर गुदाके न धोनेसे, अथवा पसीना आनेसे तथा धोनेके अनन्तर रुधिर कफसे खुजली उत्पन्न होय तदनन्तर खुजानेसे शीघ्र फोडा उत्पन्न होय, और उनसे स्राव होय, पीछे ये सब मिलकर इस भयंकर व्याधिको प्रगट करें। इसे अहिपूतना कहते हैं, यह रोग बहुधा बाल लोम (छोटे २ रोम) में होय हैं भोज कहता है कि यह रोग दुष्ट स्तन्य-पान अर्थात् माताके दुष्ट दूधके पीनेसे बालकके होय हैं ॥

चिकित्सा।

तत्रसंशोधनैः पूर्वंधात्रीस्तन्यंविशोधयेत्।
त्रिफलाखदिरक्काथैर्व्रणानांक्षालनंहितम् ॥

अर्थ--अहिपूतना व्याधि होनेसे शोधन करके माताके दूधको शोधन करे और त्रिफला, खैर, इनका काढा करके घावोंका धोवे तो हितकारी होय ॥

शंखादि लेप।

शंखसौवीरयष्ट्याह्वैर्लेपःकार्योऽहिपूतने ॥

अर्थ--शंख, सुरमा और मुलहटी, इनका अहिपूतन व्याधिपर लेप करे ॥

पटोलादि क्काथ।

पटोलपत्रत्रिफलारसांजनविपाचितम्।
पीतंघृतंनाशयतिकृच्छ्रमप्यहिपूतनम् ॥

अर्थ--पटोलपत्र, त्रिफला, और रसोत इनके कल्कमें घी डालके सिद्ध करे, तो यह कष्टसाध्य अहिपूतनापर पीवे, तो उसको नाश करे ॥

वृषणकच्छू।

स्नानोत्सादनहीनस्यमलोवृषणसंस्थितः। यदाप्रक्लिद्यतेस्वेदात्कंडूःसंजायतेतदा ॥ कंडूयनात्ततःक्षिप्रंस्फोटःस्रावश्चजायते ॥ प्राहुर्वृषणकच्छूंतांश्लेष्मरक्तप्रकोपजाम् ॥

अर्थ--जो मनुष्य स्नान करते समय लगे हुए मलको नहीं धोवे, उस पुरुषका मल अंडकोशोंमें संचित होय, पीछें वो पसीना आनेसे गीला होय, तब अंडकोशोंमें घोर पीडा होय, और खुजानेसे तत्काल फोडा होय, पीछे वो फोडा स्रवकर आपसमें मिल जाते हैं, कफ रक्तसे होनेवाली इस व्याधिको वृषणकच्छू कहते हैं ॥

सामान्य चिकित्सा।

भिषग्वृषणकच्छूंतुचिकित्सेत्पामरोगवत्।
अहिपूतननिर्दिष्टक्रिययापिचतांहरेत् ॥

अर्थ--वैद्य वृषणकच्छू रोगपर पामा रोगपर जो चिकित्सा कही हैं वो करे और अहि पूतनापर कही हुई क्रिया करे ॥

सर्जादि लेप।

सर्जांबुकुष्टसैंधवसितसिद्धार्थैःप्रकल्पितोयोगः।
उद्वर्तनेननियतंशमयतिवृषणकंडूतिः ॥

अर्थ--राल, नेत्रवाला, कूठ, सैंधानिमक, सपेद सरसों, इनका यह योग लगानेसे नियमसे वृषणकच्छू अर्थात् पोतोकी खुजलीको नाश करे ॥

कासीसादि लेप।

कासीसरोचनातुत्थहरितालरसांजनैः।
अम्लपिष्टैःप्रलेपोयंमुष्ककंड्वाहिपूतनैः ॥

अर्थ--हीराकसीस, गोरोचन, लीलाथोथा, हरताल और रसोत ये पदार्थ नीबके रसमें पीसकै, अंडकोषोंकी खुजली, और अहिपूतना व्याधिपर लेपकरे॥

गुदभ्रंश।

प्रवाहणातिसाराभ्यांनिर्गच्छतिगुदंबहिः।
रूक्षदुर्बलदेहस्यगुदभ्रंशंतमादिशेत् ॥

अर्थ--जिस पुरुषकी देह रूक्ष और अशक्त होय, उस पुरुषके प्रवाहन (कुन्थन) तथा अतीसार हेतुकर्के गुदा बाहर निकल आवै, अर्थात् कांच बाहर निकल आवै उस रोगको गुदभ्रंश रोग कहते हैं, इस रोगमें धातुक्षय होनेसे वात कुपित होय है ॥

चिकित्सा।

गुदभ्रंशेगुदंस्विन्नंस्नेहेनाक्तंप्रवेशयेत्।
प्रविष्टंरोधयेद्यत्नाद्व्यसच्छिद्रचर्मणा ॥

अर्थ-जिस गुदा (कांछ) बाहर निकल आई हो उसको तैलादिक लगायकै भीतर कर देवे जब भीतर चली जावे तब सछिद्र चमडेसैं बांध देय॥

पद्मिनीपत्रयोग।

पद्मिन्याःकोमलंपत्रंयःखादेच्छर्करान्वितम्।
एतान्निश्चित्यनिर्दिष्टंनतस्यगुदनिर्गमः ॥

अर्थ-कमलनीके कोमल पत्रको जो खांडमें मिलायके भक्षण करे उसकै निश्चय पूर्वक गुदभ्रंश (काछका निकलना) कदाचित् नहीं होय ॥

मूषिकादिलेप।

मूषिकानांवसाभिर्वागुदभ्रंशेप्रलेपयेत्।
स्विन्नमूषकमांसेनअथवास्वेदयेद्गुदम् ॥

अर्थ-कांछ निकल आई होयतो उसकी भीतर करके मूसेकी चर्बीलगावे, अथवा मूसेके मांससैं गुदाको स्वेदन करे ॥

चांगेरी घृत।

चांगेरीकोलदध्याम्लनागरक्षारसंयुतम्।
घृतमुत्क्वाथितंपेयंगुदभ्रंशरूजापहम् ॥

अर्थ-चूका, बेर,दही,आंवी,सोंठ और क्षार इनसे घृतको सिद्ध करके गुदभ्रंश-पर मले, तो गुदाका निकलना दूर हो ॥

वृक्षाम्लादियोग।

वृक्षाम्लनलचांगेरीबिल्वपाठायवाग्रजम्।
तक्रेणशीलयेत्पायुभ्रंशार्तोनलदीपनं॥

अर्थ-तंतडीक, चित्रक, चूका, बेलगिरि, पाढ, और जवाखार इनको छाछमें पीसकै पीवे, तो गुदभ्रंशको नाश कर कै अग्निको दीपन करे ॥

मूषकतैल।

मूषकान्दशमूलानिगृण्हीयादुभयंसमं ॥ तयोःक्काथेनकल्के नपचेत्तैलंयथोदितं॥ अभ्यंगात्तस्यतैलस्यगुदभ्रंशोविनयति। विनश्यतितथातेनगुदशूलोभगंदरः॥ गुदंचगव्यपयसावेशये दविशंकितः। दुःप्रवेशोगुदभ्रंशोविशत्याशुनसंशयः॥रसांजनं विशेषेणपानालेपनयोर्हितं ॥

अर्थ—मूसेका मांस और दशमूल ये समान भागले इनके काढेमें अथवा कल्कमें तेल सिद्ध करे इस तेलके मालिस करनेसे गुदभ्रंश, गुदशूल-भगंदर इनको नाश होय, अथवा गुदाको गौके दूधसे छिड़कके निडरतासे भीतरको प्रवेश कर देवे, गुदभ्रंश दुःप्रवेश होय तोभी भीतर चला जावे इसमें संशय नहीं, तथा गुदभ्रंशपर रसोतको भक्षण करे तथा रसोत-का लेप करे ॥

मूकरदंष्ट्र।

सदाहोरक्तपर्यंतस्त्वक्पाकीतीव्रवेदनः ।
कंडूमान्ज्वरकारीचसस्यात्सूकरदंष्ट्रकः ॥

अर्थ—दाहयुक्त चारों ओर लाल होय, जिस्की त्वचा पकनेवाली होय, तीव्र पीडायुक्त, खुजलीसंयुक्त तथा ज्वर करनेवाली ऐसी सूजन अथवा व्रण होय उसको सूकरदंष्ट्र अर्थात् वराहहाढ कहतेहैं ॥

चिकित्सा।

भृंगराजकमूलस्यरजन्या सहितस्यच ।
चूर्णंतु सहसा लेपाद्वाराहद्विजनाशनम् ॥

अर्थ—भाँगरेकी जड, हलदी, इनके कल्कका लेप करै तो मूकरदंष्ट्रका नाश करे ॥

राजीवादि कल्क।

राजीवमूलकल्कःपीतोगव्येनसर्पिषाप्रातः ।
शमयतिसूकरदंष्ट्रंदंष्ट्रोद्भूतंज्वरंघोरम् ॥

अर्थ—लाल कमलकी जडके कल्कको गौके घीसे भक्षण करे तो नियमसे सूकरदंष्टसे जो घोर ज्वर होता है उसको नष्ट करे ॥

रजन्यादि लेप।

रजनीमार्कवंमूलंपिष्टंशीतेनवारिणा ।

तद्लेपाद्धंतिवीसर्पंवाराहदशनाह्वयम् ॥

अर्थ–हलदी, भाँगरेकी जड, इनको शीतलजलसे पीसकै लेप करे तो विसर्प, और वराहदंष्ट्र इनको नाश करे ॥

पथ्यापथ्य।

क्षुद्ररोगेषुसर्वेषुनानारोगानुकारिषु। दोषान्दूष्यानवस्थांचनिरीक्ष्यमतिमान्भिषक् ॥ तस्यतस्यचरोगस्यपथ्यापथ्यानिसर्वशः। यथादोषंयथादूष्यंयथावस्थंचकल्पयेत् ॥

अर्थ--अनेक रोगोंके अनुकारी क्षुद्ररोगोंमें बिगडे हुये दोषोंको और अवस्थाओंको देखकर बुद्धिमान् वैद्य उन्हीं रोगोंके अनुसार पथ्यापथ्य करावे ॥

मुखरोग।

मुखरोगका कर्मविपाक।

कूटसाक्षीभवेद्वक्ररोगीशोणितपित्तवान्। कृछ्रातिकृछ्रौकुर्वीतचांद्रायणमथापरम् ॥ कुर्यात्कूष्मांडहोमंचगायत्रींत्र्युतंजपेत्। दद्याद्धिरण्यंव्रीहींश्चमुखरोगस्यशांतये ॥

अर्थ–जो कूटसाक्षी (झूंठीगवाही) देता है वो मुखरोगी होय है, तथा रक्तपित्ती होय है, उसको कृछ्र, अतिकृच्छ्र व्रत करके चांद्रायण व्रत करे, तथा कूष्मांड होम और ३० हजार गायत्रीका जप करकै सुवर्ण, धान इनका दान करे तो मुखरोग दूर होय।

मुखरोगसंख्या।

दंतेष्वष्टावोष्ठयोश्चमूलेषुदशपंचच। नवतालुनिजिव्हायांपंचसप्तदशामयाः। कंठेत्रयःसर्वसराएकषष्टिचतुःपरे ॥

अर्थ–दंतरोग ८, होठके रोग ८, दंतमूलके रोग १५, तालुएके रोग ९, जिव्हाके ५, कंठके रोग १७, और सर्वसर ३, ऐसे सब मिलकर पैंसठ ६५ मुखरोगहैं, ये श्लोक माधवके नहीं है भोजसंहिताके है ॥

संप्राप्ति।

अनूपपिशितक्षीरदधिमाषादिसेवनात्।
मुखमध्येगदान्कुर्युःक्रुद्धादोषाःकफोत्तराः ॥

अर्थ-जलसंचारी प्राणियोंके मांस, दूध, दही, उरद आदि पदार्थके सेवन करनेसे कुपित भये कफादिक दोषोंसे मुखमें रोग उत्पन्न करते हैं, ॥

ओष्ठरोगसंख्या।

पृथक्दोषैःसमस्तैश्चरक्तजोमांसजस्तथा।
मेदोजश्चाभिघातोत्थएवमष्टौष्ठजागदाः ॥

अर्थ-वात पित्त कफ अलग २ दोषों करके और इन तीनों मिले हुए दोषों करके होनेवाला और रक्तसे होनेवाला मांससे होनेवाला मेदसे होनेवाला अभिघातसे होनवाला इस प्रकार होंठमें होनेवाले रोग आठ प्रकारके हैं ॥

वातजओष्ठरोग।

कर्कशौपरुषौस्तब्धौकृष्णौतीव्ररुजान्वितौ ॥
दाल्येतेपरिपाट्येतेओष्ठौमारुतकोपतः ॥

अर्थ-वादीके कोपसे होठ कर्कश, खरदरे, कठोर, काले, होते हैं, उनमें तीव्र पीडा होय, दो टुकडाके समान हो जाय तथा होठकी त्वचा किंचित् फट जाय ॥

साधारणचिकित्सा।

स्नेहांस्तथोष्णान्परिषेकलेपान्घृतस्यपानंरसभोजनंच।
अभ्यंजनस्वेदनलेपनंतदोष्ठेविदध्यात्पवनाभिभूते ॥

अर्थ-होठोंमें वाताधिक व्याधि होनेसे गरम २ स्नेह, तथा उष्ण परिशेक और लेप, घृतपान, रसयुक्त भोजन, अभ्यंजन, स्वेदन, और लेपन इत्यादिक उपचार करे ॥

तैलादि लेप।

तैलंघृतंसर्जरसंससिक्थंरास्नागुडंसैंधवगैरिकंच।
पक्त्वासमांशंदशनच्छदानांत्वग्भेदहंतृव्रणरोपणंच ॥

अर्थ-तेल, घी, राल, मोम, रास्ना, गुड, सैंधानिमक और गेरू ये समान भाग लेकर, औंटावे जब सिद्ध हो जावे तब इसकी होठोंके लेप करे तो होठोंका फटना, तथा होठोंके घावोंको भरलावे ॥

रालादि लेप।

रालंमधूच्छिष्टगुडेनपक्वंतैलंघृतंवाविनिहंतिलेपात्।
त्वक्कृतोदपारुष्यरुजोधरस्यपूयास्रसंस्रावमपिप्रसह्य ॥

अर्थ–राल, मोम, गुड, इन पदार्थोंसे तेल अथवा घी मिलायकै पक्क करे इसको होठोंपर लेप करे, तो चर्मका दुःख, खरदरापना, पीडा, और राधका वहना तथा रुधिरका स्राव इनको नाश करे ॥

पैत्तिकओष्ठरोग।

चीयतेपिडिकाभिस्तुसरुजाभिःसमंततः।
सदाहपाकपिडिकौपीताभासौचपित्ततः॥

अर्थ--पित्तसे होठमें चारों ओर फुंसीनसे प्राप्त हो, उनमें पीडा होय, तथा पक जावे, और पीलेसे दीखैं, इसमें जो दाह और पाक कहै हैं सो विशेषताके सूचक हैं ॥

साधारण चिकित्सा।

वेधंशिराणांवमनंविरेकंतिक्तस्यपानंरसभोजनंच।
शीताःप्रदेहाःपरिषेचनंचपित्तोपसृष्टेष्वधरेषुकुर्यात्॥

अर्थ–होठोंमें पित्तसे विकार होनेपर शिरावेध, वमन, रेचन, तथा कडुये रसोंका पीना रसयुक्त भोजन, शीतल लेप और पित्तनाशक औषधोंके काढेका परिषेक इत्यादिक उपचार करे ॥

श्लैष्मिक ओष्ठरोग।

सवर्णाभिस्तुचीयेतेपिटिकाभिः सवेदनौ।
भवतस्तुकफादोष्ठौपिच्छिलौशीतलौगुरू॥

अर्थ–कफसे होठ त्वचाके समान वर्णवाले फुन्सियोंसे व्याप्त होय, कुछ दूखे तथा मलाईके समान चिकने और शीतल तथा भारी होय ॥

सामान्य चिकित्सा।

शिरोविरेचनंधूमः स्वेदः कवलएवच।
हृतेरक्तेप्रयोक्तव्यओष्ठकोपेकफात्मके॥

अर्थ–कफजन्य ओष्ठ रोगपर प्रथम रुधिर निकालके फिर मस्तक जुल्लाब, धूमपान, पसीने निकालना, कवलग्रह, इत्यादिक उपचार करे ॥

सान्निपातिक ओष्ठरोग।

सकृत्कृष्णौसकृत्पीतौसकृच्छ्वेतौतथैवच।
सन्निपातेनविज्ञेयावनेकपिटिकान्वितौ॥

अर्थ–सन्निपातसे होठ कभी काले, कभी पीले, उसीप्रकार कभी सपेद, तथा अनेक प्रकारकी फुन्सियोंसे व्याप्त होय ॥

सर्व ओष्ठरोगोंकी सामान्यचिकित्सा।

ओष्ठरोगेष्वशेषेषुदृष्ट्वादोषमुपाचरेत्।
तेषुव्रणत्वंयातिषुव्रणवत्समुपाचरेत् ॥

अर्थ--सन्निपातजन्य ओष्ठ रोग होनेसे दोषानुसार चिकित्सा करे और यदि इन होठोंमें घाव होगये होय तो व्रण चिकित्सा करे ॥

रक्तज ओष्ठरोग।

खर्जूरीफलवर्णाभिःपिटिकाभिर्निपीडितौ।
रक्तोपसृष्टौरुधिरंस्रवतःशोणितप्रभौ ॥

अर्थ–रुधिरसे होठोंमें खजूर फलके वर्णकी फुन्सी होय, उन्मेंसे रुधिर गिरे तथा वो होठ रुधिरके समान लाल होय ॥

मांसज ओष्ठरोग।

मांसदुष्टौगुरुस्थूलौमांसपिंडवदुद्गतौ।
जंतवश्चात्रमूर्च्छंतिनरस्योभयतोमुखात् ॥

अर्थ--मांस दुष्ट होनेसे होठ जड (भारी) मोटे होते हैं मांस पिंडके सदृश ऊँचे होय इस रोगवाले मनुष्यके दोनों होठोंमें अथवा होठोंके प्रांत भागमें कीडे पड जावें ॥

मेदज ओष्ठरोग।

सर्पिर्मंडप्रतीकाशौमेदसाकंडुरौगुरू ॥ स्वच्छंस्फटिकसंकाशमास्रावंस्रवतोभृशम् ।तयोर्व्रणोनसंरोहेन्मृदुत्वंचनगच्छति॥

अर्थ–मेदसे होठ घृतके झाग समान खुजली संयुक्त यथा भारी होय तथा उन्मेंसे स्फटिकके समान निर्मल स्राव बहुत होय इस्में भया व्रण भरे नहीं है तथा उस्में मृदुता नहीं रहै ॥

सामान्य चिकित्सा।

मेदोजस्वेदितेभिन्नेशोधितेकवलोहितः।
प्रियंगुत्रिफलालोध्रसक्षौद्रंप्रतिमारणम् ॥

अर्थ–मेदके कोपसे होठोंसे स्राव होने लगे तो उनको शोधन करके स्वेदन करे, तथा कवल धारण करे, और प्रियंगु, हरड, बहेडा, आवँला तथा लोध, इनके चूर्णको सहत मिलायके धीरे २ मले ॥

अभिघातज ओष्ठरोग।

ओष्ठौपर्यवदीर्येतेपीड्येतेचाभिघाततः।

ग्रथितौचतदास्यातांकंडूत्क्लेदसमन्वितौ ॥

अर्थ–अभिघातसे (चोट लगनेसे) होठ सर्वत्र चिर जाय पीडा होय उस्में गांठ हो जाय तथा उन्में खुजली चलते समय पीव बहै, कोई कहते हैं कि, अभिघातके ओष्ठरोगमें केवल ऊपरका होठ फटता है, इस रोगमेंभी कफ पित्त सहायक जानने सो भोजने कहाभी है ॥

कफज रक्तज. ओष्टरोग।

क्षीर्णावर्तीकितौवापिरक्तावोष्ठौसवेदनौ।
भवेतांसपरिस्रावौकफरक्तप्रदूषितौ ॥

अर्थ–होठोंका फटना रक्त लाल होना पीडायुक्त होना रुधिर झिरना ऐसे लक्षण होवें तो कफ रक्तसे उत्पन्न हुआ रोग कहना ॥

दंतमूल रोगोंकी संख्या और नाम।

शीतादोगदितःपूर्वंदंतपुप्पुटकस्तथा।दंतवेष्टःसौषिरश्चमहासौषिरएवच ॥ ततःपरिदरःप्रोक्तस्ततस्तूपकुशःस्मृतः । वैदर्भश्चततःप्रोक्तःखल्लिवर्धनएवच ॥ अधिमांसकनामाचदंतनाड्यश्चपंचच । दंतविद्रधिरप्यत्रदंतवेष्टेषुषोडश ॥

अर्थ–शीताद दन्तपुप्पुट, दन्तवेष्ट, सौषिर, महासौषिर, परिदर, उपकुश, वैदर्भ, खल्लिवर्धन, अधिमांस, दन्तनाडी, दंतविद्रधि ये सोलह रोग दंतवेष्टों (मसूढों) में उत्पन्न होते हैं ॥

शीतादके लक्षण।

शोणितंदंतवेष्टेभ्योयस्याकस्मात्प्रवर्तते । दुर्गंधीनिसकृष्णानिप्रक्लेदीनिमृदूनिच ॥ दंतमांसानिशीर्यंतेपचंतिचपरस्परम्। शीतादोनामसव्याधिःकफशोणितसंभवः ॥

अर्थ–जिस्के मसूढोंमेंसे अकस्मात् रुधिर वहे और दांतोंका मांस दुर्गन्धयुक्त काला पीव सहित तथा नरम होकर गिरे और एक दांतका मसूढा पकनेसे वो दूसरे मसूढेको पकावे यह कफ रुधिरसे प्रगट व्याधिको शीतादनाम कहते हैं ॥

सामान्याचिकित्सा।

शीतादेहृतरक्तेतुतोयंनागरसर्षपात्।

---

१ क्षतादभिहतौ चापि रक्तावोष्टो सवेदनौ । भवतः सपरिस्रावौ कफरक्तप्रदूषिताविति ॥ वातजः केवलः स्वकारणकुपितः अत्रतु वायुः अभिघाताल्लभ्यते ।

निःक्काथ्यत्रिफलांचापिकुर्याद्गंडूषधारणम् ॥

अर्थ–शीतादनामक दंतमूल रोगमें प्रथम रुधिर निकाल फिर सोंठ, सरसों इनका काढा करके इससे अथवा त्रिफलेके काढेके कुल्ले करे ॥

कासीसादिचूर्ण ।

कासीसलोध्रकृष्णामनःशिलासप्रियंगुतेजोह्वा । एषांचूर्णमधु युक्शीतादेपूतिमांसहरम् । तैलंघृतंवावातघ्नंशीतादेसंप्रशस्यते ॥

अर्थ–हीराकसीस, लौध, पीपल, मनसिल, फूलप्रियंगु और मालकांगनी, इनका चूर्ण करके उसको सहतसे लेपकरे, तो शीतादसे सडे हुए मांसको नाश करे और उसपर वातनाशक तैल अथवा घी देने चाहिये ॥

दंतपुप्पुटके लक्षण।

दंतयोस्त्रिषुवायस्यश्वयथुर्जायतेमहान् ।
दंतपुप्पुटकोनामसव्याधिःकफरक्तजः ॥

अर्थ--जिसको दो अथवा तीन दांतकी जडमें महान् सूजन होय, उसको दतपुप्पुट नाम कहते हैं यह व्याधि कफ रक्तसे होती है, परंतु आगे जो सौषिर रोग कहैंगे उस्से यह भिन्न है ॥

दंतवेष्टके लक्षण ।

स्रवंतिपूयंरुधिरंचलादंताभवंतिच ।
दंतवेष्टःसविज्ञेयोदुष्टशोणितसंभवः ॥

अर्थ–रुधिर दुष्ट होनेसे दांतोंमेंसे रुधिर तथा राध वहे, तथा दांत हलने लगे उस्को दंतवेष्टरोग कहते हैं ॥

दंतवेष्टकी चिकित्सा ।

दंतवेष्टेविधिःकार्योरक्तपित्तनिबर्हणः ॥ शिरोविरेकश्चहितोन स्यंस्निग्धंचभोजनम् । विस्राविते दंतवेष्टेव्रणंतुप्रतिसारयेत् ॥

अर्थ--दन्तवेष्ट रोगमें रक्तपित्तको नष्ट करनेवाली विधि करनी और इसमें शिरका फस्त, नस्य, स्निग्ध भोजन हितकारी है और यह दन्तवेष्ट जव झिरने लगे तब औषधियोंके जलसे इसका सेक करना योग्य है ॥

दंतवेष्टकी चिकित्सा ।

लोध्रंपतंगमधुकंलाक्षाचूर्णैर्मधुप्लुतैः ।
गंडूषेक्षीरिणायोज्याःसक्षौद्रघृतशर्कराः ॥

अर्थ–लोध, पतंग, मुलहटी, लाख, इनका चूर्णकर उसमें सहत मिलायके कुल्ले करे अथवा क्षीरी वृक्षके काढेमें सहत मिश्री और घी डालके कुल्ले करनेको देवे ॥

जीरकादिचूर्ण।

जरणलवणपथ्याशाल्मलीकंटकानामनुदिनमनुघृष्टंदंतमूलेषुचूर्णं॥व्रणदरणरुगस्रस्रावचांचल्यशोथानपनयतिविवस्वानंधकारानिवाशु ॥

अर्थ–जीरा, सोंठ, हरड और सेमरके काँटे इनका समान भाग चूर्णकर इससे नित्य प्रति दाँतन करे अर्थात् दाँतोंको मला करे, तो दंतमूलके घाव, फटना, पीडा, रक्तस्राव चंचलता, सूजन इनको जैसे सूर्य अंधकारका नाश करे इसप्रकार यह दाँतके रोगोंको नाश करे ॥

कणादिचूर्ण।

कणासिंधूत्थजरणंचूर्णंतूर्णंव्यपोहति।
घर्षणाद्दंतचांचल्यव्यथाशोथास्रस्रावकान् ॥

अर्थ–पीपल सैंधानिमक, जीरा, इनके चूर्णको दांतोंकी जडमें अर्थात् मसूढोंमें घिसे तो दाँतोंकी चंचलता, पीडा, सूजन और रक्तस्राव इनको नाशकरे ॥

भद्रमुस्तादि गुटी।

भद्रमुस्ताभयाव्योषंविडंगारिष्टपल्लवैः। गोमूत्रपिष्टैर्गुटिकांछायाशुष्कांप्रकल्पयेत् ॥ तान्निधायमुखेरात्र्यांचलदंतातुरोनरः। नातः परतरंकिंचिच्चलदंतस्यभेषजम् ॥

अर्थ–भद्रमोथा, हरड, सोंठ, मिरच, पीपल, वायविडंग, नींबके पत्ते इनको गोमूत्रमें पीसके गोली बनावे इनको छायामें सुखायले, इसको रात्रिके समय मुखमें रखे तो दाँत जमकर दृढ (मजबूत) हो जावे, इससे परे दांतोंपर दूसरी उत्तम औषध नहीं है ॥

सहचरादि तैल।

तुलांधृतांनीलकुरंटकस्यद्रोणेंभसः संश्रपयेद्यथावत्। ततश्चतुर्भागरसेतुतैलंपचेच्छनैरर्धपलप्रमाणैः ॥ कल्कैरनंताखदिरारिमेदजंव्याघ्रयष्टीमधुकोत्पलानाम्। तत्तैलमाश्वेवघृतंमुखेनस्थैर्यंद्विजानांविदधातिसद्यः ॥

अर्थ–नीले पियावांसा ४०० तोलेको कूटके १०२४ तोले जलमें डालके काढा करे जब चतुर्थांश रहै तब उतारके छान लेय, फिर इसमें तेल मिलायके इसमें धमासो लालकत्था, सपेद कत्था, जामुन, आँब, मुलहटी, कमल, इन प्रत्येकका दोदो तोले कल्क डालके तेलमात्र शेष करे, जब सिद्ध होजावे तब इस तेलको मुखमें रखे, तो हलनेवाले दाँत जम जावे॥

सौषिरके लक्षक।

श्वयथुर्दंतमूलेषुरुजावान्कफरक्तजः।
लालास्रावीसविज्ञेयःसौषिरोनामनामतः॥

अर्थ--कफ रुधिरसे दांतोंकी जडमें सूजन होय, उसमें पीडा होय और स्राव होय उसको सौषिर रोग कहते हैं पूर्वोक्त दंत पुप्पुटमें पीडा और स्राव नहीं होय है इसीसे यह पृथक् है॥

सामान्य चिकित्सा।

सौषिरेहृतरक्तेतुलोध्रमुस्तरसांजनैः।
सक्षौद्रैःशस्यतेलेपोगंडूषेक्षीरिरोहिणी॥

अर्थ–सौषिर व्याधिका रुधिर निकलवायके फिर लोध नागरमोथा, रसांजन, इनका चूर्ण करके सहतमें मिलाय लेप करे और गंडूष धारण करनेको क्षीरी वृक्ष हितकारी कहे हैं॥

महासौषिर दंतमूलरोग।

दंताश्चलंतिवेष्टेभ्यस्तालुचाप्यवदीर्यते।
यस्मिन्ससर्वतोव्याधिर्महासौषिरसंज्ञकः॥

अर्थ–इस त्रिदोष व्याधि करके मसूढेके समीपमें दांत हालैं और तालुयेमें छिद्र पडजाय चकारसे दांत और होठभी फटजाय उस्को महासौषिर रोग कहते हैं। यह रोग मनुष्यको सातदिनमें मार डाले है सो भोजने कहाभी है परन्तु गदाधर कहताहै कि, सौषिरमें जो भोजने लक्षण कहे हैं सो होय तो उसीको महासौषिर कहते हैं॥

परिदर दंतमूलरोग।

दंतमांसानिशीर्यंतेयस्मिन्ष्ठीव्यतिचाप्यसृक्।
पित्तासृक्कफजोव्याधिर्ज्ञेयःपरिदरोहिसः॥

अर्थ–इस रोग करके दांतोंका मांस विखर जाय और थूकनेसे रुधिर गिरे इस व्याधिको परिदर कहते हैं यह रोग पित्त रुधिर कफसे होय है ॥

उपकुशदंतमूलरोग।

वेष्टेषुदाहःपाकश्चताभ्यांदंताश्चलंतिच । अवाक्कृताःप्रस्रवंतिशोणितंमंदवेदनाः ॥ आध्मायंतेस्रुतेरक्तेमुखेपूतिश्चजायते। यस्मिन्नुपकुशोनामपित्तरक्तकृतोगदः ॥

अर्थ–जिसके मसूढोंमें दाह होकर पाक और दांत हलने लगें, मसूढोंके घिसनेसे रुधिर मंद पीडाके साथ निकले, रुधिर निकलनेके पिछाडी फेर मसूढे फूल आवे, और मुखमें बास आवे, इस पित्तरक्तकृत विकारको उपकुश कहते हैं ॥

परिदर और उपकुशकी चिकित्सा।

क्रियांपरिदरेकुर्याच्छीतादोक्तांविचक्षणः।
संशोध्योमयतः कार्यंशिरश्चोपकुशेतथा ॥

अर्थ–परिदर व्याधिपर शीतादपर जो क्रिया कही है वो करे और वमन, विरेचन देवे, तथा मस्तकरेचन देना चाहिये तथा उपकुश व्याधिपरभी यही उपचार करे ॥

सामान्य यत्न।

काकोदुंबरिकापत्त्रैर्व्रणंविस्रावयेद्भिषक्।
लवणैःक्षौद्रयुक्तैश्चसव्योषैःप्रतिसारयेत् ॥

अर्थ–कठूमरके पत्तेसे दांतोंके घावको घिसके रक्तस्राव करे और निमक तथा सहत और सोंठ,मिरच,पीपल इनके चूर्णको एकत्र करकै धीरे २ घिसे ॥

वैदर्भदंतमूल रोग।

घृष्टेषुदंतमूलेषुसंरंभोजायतेमहान्।
भवंतिचपलादंताःसवैदर्भोऽभिघातजः ॥

अर्थ--मसूडे रगडनेसे सूजन बहुत होय, और दांत हलने लगें, उसको वैदर्भ रोग कहते हैं यह रोग चोटके लगनेसे होय है ॥

सामान्य यत्न।

शस्त्रेणोत्कृत्यवैदर्भेदंतमूलानिशोधयेत्।
ततःक्षारंप्रयुंजीतक्रियाःसर्वाश्चशीतलाः ॥

अर्थ-वैदभ्र नामक दंतमूल रोगको शस्त्रसे चीरा देकर रुधिर निकालदे, फिर क्षार धर देवे और शीतल क्रियाकरे ॥

खल्लीवर्द्धन।

मारुतेनाधिकोदंतोजायतेतीव्रवेदनः।
खल्लीवर्द्धनसंज्ञोवैजातेरुक्चप्रशाम्यति ॥

अर्थ-वादीके योगसे दाँतके ऊपर दूसरा दाँत ऊगे, उस समय पीडा होय जब वो दाँत ऊग आवे तब पीडा शांत होय उस्को खल्लीवर्धन कहते हैं ॥

सामान्य यत्न।

उद्धृत्याधिकदंतंतुततोग्निमवचारयेत्।
कृमिदंतकवच्चात्रविधिःकार्योविजानता ॥

अर्थ-अधिक दाँतको उखाडके निकाल डाले और दागदेवे, तथा कृमिदंतके समान इतर सब विधि करनी चाहिये ॥

कराल।

शनैःशनैःप्रकुरुतेवायुर्दंतसमाश्रितः।
करालान्विकटान्दंतान्करालोनचसिद्ध्यति ॥

अर्थ-वादी धीरे धीरे मसूढेका आश्रय लेकर दातोंको टेढे तिरछे करै, उस्को कराल रोग कहतेहैं यह रोग साध्य नहीं होय ॥

अधिमांसक रोग।

हानव्येपश्चिमेदंतेमहाञ्छोथोमहारुजः।
लालास्रावीकफकृतोविज्ञेयोह्यधिमांसकः ॥

अर्थ-जिस्के पछिेकी डाढके नीचे अर्थात् मसूढेमें बहुत सूजन होय और घोर पीडा होय तथा लार बहुत गिरे उस्को अधिमांसक कहते हैं यह कफके कोपसे होय है ॥

यत्न।

छित्वाधिमांसंसक्षौद्रैरेतैश्चूर्णैरुपाचरेत्। वचातेजोवतीपाठा
स्वर्जिकायावशूकजैः॥ क्षौद्रद्वितीयपिप्पल्योकवलेचात्रकीर्ति
तः॥ पटोलनिंबत्रिफलाकषायश्चात्रधावनः॥

अर्थ-अधिमांस नामक दंतरोगीको छेदन करके उसपर वच, मालकांगनी, पाढ, सजीखार, जवाखार, और पीपल, इनके चूर्णका कल्क मुखमें धारणकरे और पटोलपत्र, नींबकी छाल, हरड, बहेडा, आवला इनका काढा करके धोवै

दंतविद्रधिनिदान।

विद्रध्युक्तंचविधिवद्विदध्याद्दंतविद्रधौ।
शस्त्रकर्मनरस्तत्रकुशलोनैवकारयेत् ॥

अर्थ--दंतविद्रधि पर सामान्य विद्रधिके ऊपर जो क्रिया कहीं है वो सब करे परंतु कुशल वैद्य शस्त्रकम अर्थात् चीरना, फाडना न करे ॥

नाडीव्रण।

दंतमूलगतानाडयःपंचज्ञेयायथेरिताः।

अर्थ-नडीव्रण निदानमें वात, पित्त,कफ,सान्निपात और आंगतुज ऐसे पांच प्रकारके जो नाडीव्रण कहे हैं वे दंतमूल (मसूढोंमें) होते हैं पहिले १९ और ५ नाडीव्रण ऐसे मिलाकर १६ दंतमूल (मसूढेके) रोग होते हैं। परंतु कराल रोग सुश्रुतके मतसे अधिक हैं तथापि संग्रहकारने आपने ग्रन्थमें लिखा है, इसीसें हमनेभी यहाँ लिख दिना है। ये पाँच नाडीव्रण शालाक्यसिद्धान्तके मतसे संख्यापूरणार्थ माधवाचार्यने लिखा है ॥

दालन।

दीर्यमाणेष्विवरुजायस्यदंतेषुस्यजायते।
दालनोनामसव्याधिःसदागतिनिमित्तजः ॥

अर्थ-जिस्के दाँतोंमें फोडनैं कीसी पीडा होय उस्को दालन रोग कहतेहैं यह रोग बादीसे होय है ॥

भंजनके दंतरोग।

वक्रंवक्रंभवेद्यस्यदंतभंगश्चजायते।
कफवातकृतोव्याधिःसभंजनकसंज्ञितः ॥

अर्थ-जिस व्याधि करके मुख टेढा होकर दाँत फूटने लगे व्याधि कफ वात करके होय है दाँत भंगकारी दोषके प्रभावसे मुखभी टेढा होय है ॥

दंतहर्ष।

शीतरूक्षप्रवाताम्लस्पर्शानामसहाद्विजाः।
पित्तमारुतकोपेनदंतहर्षःसनामतः ॥

अर्थ-दाँत शीतल, रूक्ष, खटाई इत्यादि पदार्थ और पवन इन्के लगनेको जो नहीं सहिसके उस्को दंतहर्ष कहते ह यह रोग पित्त वायुके कोपसे होय है, इस रोगको वातज होने परभी उष्ण (गरमी) को नहीं सहिसके यह व्याधिका स्वभाव है इस जगे[1] दूसरा जो पाठान्तर है, वो नीचे लिखे हैं ॥

---

१ शीतमुष्णं च दशनाः सहंते स्पर्शनं न च। यस्य दंतंच हर्षेतु विन्द्यात् पित्तसमीरणात् ॥

सामान्य चिकित्सा।

स्नेहिकोत्रहितोधूमोनस्यंस्नेहिकमेवच ॥
रसारसयवागवश्वक्षोरंसंतानिकंघृतम् ॥
शिरोबस्तिर्हितश्वापिक्रमोयश्वानिलापहः ॥

अर्थ–दंतहर्षपर स्नेहका नस्य मांसका रस, यवागू, दूध, मलाईकाघी और शिरोबस्ति इत्यादि वातनाशक औषध क्रमसे करे ॥

चिकित्सांतर।

स्नेहानांकवलःकोष्णोसर्पिषस्त्रिवृतस्यच ॥
निर्व्यूहाश्वानिलघ्नानांदंतहर्षः प्रमर्दनः ॥

अर्थ–मंदोष्ण ऐसे लेहके अथवा त्रिवृता घृतका केवल अथवा वातनाशक औषधोंका काढा ये सब दंतहर्षनाशक है ॥

कृमिदंतक।

कृष्णच्छिद्रश्वलस्रावीससरंभोमहारुजः।
अनिमित्तरुजोवातात्सज्ञेयःकृमिदंतकः ॥

अर्थ–वादीके योगसे दांतोंमें काले छिद्र पडजाय तथा हिलने लगे,उन्मेंसे स्राव होय,शोथयुक्त पीडा होनेवाला और कारण विना दूखनेवाला ऐसा होय उस्को कृमिदंत रोग कहते हैं। यहां दांतोंमें काले छिद्र पडनेका यह कारण है कि, दुष्ट रुधिरसे कृमि (कीडा) पैदा होकर दांतोंमें छिद्र करतेहैं ॥

चिकित्सा।

जयेद्विस्रवणैः स्विन्नमचलंकृमिदंतकम्। तथावपीडैर्वातघ्नैः स्नेहगंडूषधारणैः ॥ भद्रदार्वादिवर्षाभूलेपैः स्निग्धैश्वभोजनैः ॥ कृमिदंतापहंकोषष्णंहिंगुदंतांवरेस्थितं ॥

अर्थ–अचल कृमिदंतको स्राव करनेवाली औषधोंसे स्राव करायके स्वेदन करे तथा वातनाशक अवपीड, स्नेह, और गंडूषधारण तथा भद्रदार्वादिगण अथवा पुनर्नवा इनका लेप स्निग्ध भोजन भुनि हींगको गरम डाढके नीचे दाबना, इत्यादि कृमिदंत नाशक उपचार करे ॥

बृहत्यादि क्काथ।

बृहतीभूमिकादंबीगुचांपंलकंटकारिकाक्काथः।
गंडूषस्तैलयुतः क्रमिदंतकवेदनाशमकः ॥

अर्थ–कटेरी, गोरखमुंडी, सपेद अंडकीजड और बडीकटेरी, इनका काढा करके इसमें तेल डालके इसके कुल्ले करे, तो कृमिदंतकी पीडाका उपशम होयहै

दंतकृमिपर पातन।

नीलीवायसजंघाकटुतुंबीमूलमेकैकम्।
संचूर्णदशनविधृतंदशनकृमिपातनंप्राहुः॥

अर्थ–नील, मकोय और कडवीघीया, इन प्रत्येककी जडका चूर्ण करकै दांतोंमें दाबे तो कृमिको दांतोंसे गेरदेवे॥

सारिवापर्ण धारण।

पिष्टाचसारिवापर्णंदृढंदंतेषुधारयेत्॥
पतंतिदंतकीटाश्चचांचल्यंहरातेक्षिणात्॥

अर्थ– सपेद सरिवाके पत्तेकी लुगदी करकै दांतोंमें खूब जोरके साथ दाबलेवे, तो दांतोंकी कृमि गिरजावे, और दांत घट्ट होवे॥

कासीसादि गुटी।

कासीसंहिंगुसौराष्ट्रीदेवदारुसमंजलैः।
गुटिकांधारयेद्दंतकृमिशूलहरांपराम्॥

अर्थ–हीराकसीस, हींग, फिटकरी, देवदारु ये समान भागले जलसे पीस गोली बनायकै दांतोंके नीचे धरे, तो कृमि रोगसे उत्पन्न दंतशूलको नाशकरे॥

दंतशर्करा।

मलोदंतगतोयस्तुपित्तमारुतशोणितः।
शर्करेवखरस्पर्शासाज्ञेयादंतशर्करा॥

अर्थ--दाँतोंका मल पित्तवायुके प्रभावसे सूखकर रेतके समान खरदरा स्पर्श मालूम होय, उस रोगको दंतशर्करा ऐसा कहते हैं इस श्लोकमें "सादन्तानां गुणहरा" ऐसाभी पाठ है इस्का यह अर्थ हुआ कि, दाँतोंके गुण शुक्ल और दृढादि उन्को दूर करै॥

चिकित्सा।

अच्छिदंदन्तमूलानिशर्करामुद्धरेद्भिषक्।
लाक्षाचूर्णैर्मधुयुतैस्ततस्तांप्रतिसारयेत्॥

अर्थ–दांतोंकी जडको अर्थात् मसूढेन्को बचायकै दांतोंके ऊपरके मैलको खुरचकै निकाल लेवे, और सहतमें लाखके चूर्णको मिलायकै मसूढेन्पर धीरे धीरे मले॥

दंतशर्करा ।

कपालेष्विवदीर्णेषुदंतानांसैवशर्करा ।
कपालिकेतिसाज्ञेयासदादंतविनाशिनी ॥

अर्थ--उसी शर्कराकी पपडीके प्रमाण चपडी उखढने लगे तो उसीको कपालिका, कहते हैं, या रोगसै सर्व दांत नष्ट हो जावे ॥

श्यावदंत ।

याऽसृङ्मिश्रेणपित्तेनदग्धोदंतस्त्वशेषतः ।
श्यावतांनीलतांवापिगतःसश्यावदंतकः ॥

अर्थ--जो दांत रुधिरसे मिले पित्तसे जलेके समान सब काले हो जाय उस्को श्यावदन्त कहते हैं ॥

हनुमोक्ष ।

वातेनतैस्तैर्भावैस्तुहनुसंधिर्विसंहतः ।
हनुमोक्षइतिज्ञेयोव्याधिरर्दितलक्षणः ॥

अर्थ--वादीके योग करके उसी उसी अभिघातों करके हनु (ठोडी) की संधीको चोट लगनेसे दांत चलायमान होजांय, उस्को हनुमोक्ष कहते हैं, इस्के लक्षण अर्दितरोग जो वातव्याधिमें कहिआये हैं उस प्रकारके होय ॥

दंतनाडीचिकित्सा ।

नाडीव्रणहरंकर्मदंतनाडीषुकारयेत् ।
यद्दंतमध्येजायेतनाडीतंदंतमुद्धरेत् ॥

अर्थ--दंतनाडी रोगपर संपूर्ण नाडीव्रण पर जो चिकित्सा कही है वो करे तथा वह नाडी जिस दांतमें होय उसी दाँतको उखाड डाले ॥

छित्वामांसानिशस्त्रेणयदिनोपरताभवेत् ।
उद्धृत्यचदहेच्चापिक्षारेणज्वलनेनवा ॥

अर्थ--यदि वह नाडी बहुत भीतरी होवे तो उस जगेके मांसको शस्त्रसे छेदन करके निकाल डाले और क्षारसे अथवा अग्निसे दाग देवे ॥

भिनत्युपेक्षितेदंतेहनुंसास्थिगतिंध्रुवम् ।
उद्धृतेतूत्तरेदंतेशोणितंप्रस्रवेदति ॥

अर्थ--दाँत उखाडनेकी उपेक्षा करनेसै उस नाडीकी हड्डीमें गति होजाती है और ऊपरका दाँत उखाडनेसे रुधिर अधिक वहता है ॥

रक्तादिसेकात्पूर्वोक्ताघोररोगाभवंतिहि।
काणःसंजायतेजंतुरर्दितंतस्यजायते॥

अर्थ–रक्तस्राव अत्यंत होनेसे पूर्व कहुए घोर रोग उत्पन्न होते हैं अथवा वो रोगी काणा होवे, अथवा आर्दित (लकवा) वातसे पीडित होय॥

चलमप्युत्तरंदंतमतोनैवोद्धरेद्भिषक्।
समूलंदशनंतस्मादुद्धरेद्भग्नमस्थिच॥

अर्थ–इसी कारण ऊपरका दांत हलता होवे तो भी नही उखाडना, तथा नीचेका दाँत जड सुद्धां उखाडकै निकाल डाले तथा नीचेकी टुटी हुई हड्डी-को भी निकाल लेवे॥

जात्यादितैल।

काषायैर्जातिमदनकंटकीस्वादुकंटकैः॥ मंजिष्ठालोध्रखदिर यष्ट्याह्वैश्चापियत्कृतम्। तैलंयत्साधितंतत्रहन्यार्दंतगतांगतिम्॥

अर्थ–चमेलीके पत्ते, मैनफल, गोखरू, मजीठ, लोध्र, खैरकी छाल, मुलहटी, इनका काढा करके उसमें तेल डालके पचावे, यह तेल नाडीके दंत गत गतीको नाश करे॥

सामान्यचिकित्सा।

दंतरोगेषुसर्वेषुशस्तोवातहरोविधिः।
पक्वंतैलंकवोष्णंचशस्तंकवलधारणे॥

अर्थ–संपूर्ण दंतरोगोंपर वातनाशक विधि करे और तेलको औंटायके उसको मंदोष्ण मुखमें रखे॥

लक्षादितैल।

तैलंलाक्षारसंक्षीरंपृथक्प्रस्थमितंपचेत्॥ द्रव्यैःपलमितैरेतैः क्वाथैश्चापिचतुर्गुणैः॥ लोध्रकट्फलमंजिष्ठापद्मकेसरपद्मकैः। चंदनोत्पलयष्ट्याह्वैस्तत्तैलंवदनेधृतम्॥ दालनंदंतवालंचदंतमोक्षंकपालिकाम्। शीतादपूतिवक्त्रंचविरुचिंविरसास्यताम्॥हन्यादाशुगदानेतानकुर्यादंतानपिस्थिरान्। लाक्षादिकमिदंतैलंदंतरोगेषुपूजितम्॥

अर्थ-तेल ६४ तोले, लाखका सीरा ६४ तोले दूध ६४ तोले, और लोध, काय फल, मजीठ, कमलकी केशर, चंदन नीलाकमल, मुलहटी, ये प्रत्येक चार २ तोले लेके काढा करके तेलसे चौगुना जललै,और इन्ही प्रत्येक औषधका चार २ तोले कल्क डालके पचन करे, जब तयार हो जावे तब उतारके, इसको मुखमें रखे, यह दाँतोंका दालन रोग, दाँतोंका हिलना तथा विनासमयके दाँतोंका गिरजाना, तथा कपालिका, शीताद, पूतिवक्र, अरुचि और मुखकी विरसता इतको नाश करे तथा दाँतोंको दृढकरे, यह लक्षादि तैल दंतरोगपर उत्तमहै॥

दंतरोगका सामान्य यत्न।

अरिमेदत्वचंक्षुण्णांपचेच्छतपलोन्मितां । जलद्रोणेनतत्क्राथंगृण्हीयात्पादशेषितं ॥ तैलस्यार्धाढकंदत्वाकल्कैःकर्षमितैः पचेत्।अरिमेदलवंगाभ्यांगैरिकागरुपद्मकैः॥मंजिष्ठालोध्रमधुकैर्लाक्षान्यग्रोधमुस्तकैः॥त्वग्जाजीफलकर्पूरकंकोलखदिरैस्तथा ॥ पतंगधातकीपुष्पसूक्ष्मैलानागकेसरैः । कट्फलेनचसंसिद्धंतैलंमुखरुजंजयेत् ॥ प्रदुष्टमांसंचलितंशीर्णदंतंचसौषिरं। शीतादंदंतहर्षंचविद्रधिंक्रुमिदंतकम्॥ दंतस्फुटनदौर्गंध्यंजिह्वाताल्वोष्ठजांरुजं ॥

अर्थ-खैरकी छाल४००तोलेको१०२४तोले जलमें डालके ओंटावे जब चतुर्थांश काढा शेषरहे तो उतारके छान लेय,इसमें तिलीका तेल१२८तोले,और खैरकी छाल, लौग, गेरू, काती अगर, पद्माख, मजीठ, लोध, मुलहटी, लाख, वडकी कोंपलकली नागरमोथा, दालचीनी, जायफल, कपूर, कंकोल, कत्था, पतंग, धायके फूल, छोटीइलायची, नागकेशर और कायफल इन प्रत्येकका एक एक तोले कल्क डालके अग्नि पर पचावे, यह खदिरतैल दाँतोंका दुष्ट मांस, दाँतोंका हिलना, शीर्णदंत, सौषिर, शीताद, दंतहर्ष, विद्रधि, कृमिदंत दंतस्फुटन और जिव्हा, तालू और होंठ, इनके रोग इनको नाशकरे॥

कुष्ठादि चूर्ण।

कुष्टंदार्वीलोध्रमभ्रेसमंगापाठातिक्तातेजनोपोतिकाच।
चूर्णंशस्तंघर्षणेतद्दिजानांरक्तस्रावंहंतिकंडूरुजंच ॥

अर्थ-कूठ, दारुहलदी, लोध, नागरमोथा, मजीठ, पाठ, कुटकी, मूर्वा,

और पीलीचमेली, इनका चूर्ण करके इससे दांतोंको घिसे, तो रक्तस्राव, खु, जली और पीडा इन सबको नाशकरे ॥

गुडूची कल्क।

छिन्नयाविष्यावारादंतशूलेविनश्यति।
स्वेदिताऽवितोयेनचलतांनाशयेद्ध्रुवम्॥

अर्थ--गिलोयको जलमें पीसकै इस कल्कमें आकका दूध डालकै औटावें इससे दांतोंको मलेतो दांतोंके हिलनेको नाश करे ॥

जातीपत्रादि चूर्ण।

जातीपत्रपुनर्नवागजकणाकोरंटकोष्टंवचाशुठीदीप्यहरीतकी
तिलसमंश्लक्ष्णंभृशंचूर्णयेत्। तच्चूर्णवदनेधृतंविजयतेदौर्गं
ध्यदंतव्यथांचांचल्यत्त्वमतिव्रणश्वयथुरुक्कंडूकृमिव्यापदः॥

अर्थ–चमेलीके पत्ते, पुनर्नवा, पीपल, पीयावाँसा, वच, सोंठ, अजमायन, हरड, तिल ये सब पदार्थ समान लेवे, सबका बारीक चूर्ण करकै मुखमें रखे तो दुर्गंध, दांतोंकी पीडा, दांतोंका हिलना, घाव, सूजन, खुजली और दंतकृमि इनको नाश करे ॥

पथ्य।

फलान्यम्लानिशीतांबुरूक्षान्नंदंतधावनम्।
तथापिकठिनंभक्ष्यंदंतरोगीविवर्जयेत्॥

अर्थ–खट्टेफल, शीतलजल, रूक्षान्न, दांतोंको घिसना, तथा कठोर पदार्थका खाना, ये दांतरोगवालेको त्याग देने चाहिये ॥

जिव्हारोगसंख्या।

वातजःपित्तजश्चापिकफजोल्लाससंज्ञकः।
उपजिह्विकाचहिगदाजिह्वायांपंचकीर्तिताः॥

अर्थ–वातज, पित्तज, कफज, उल्लास, उपजिह्विका, इस प्रकार जिह्वाके पांच रोग कहे हैं ॥

वातज।

जिव्हानिलेनस्फुटिताप्रसुप्ताभवेच्चशाकच्छदनप्रकाशा।

अर्थ–वादीसे जीभ फटीसी, प्रसुप्त (रसका ज्ञान जाता रहै) और पर्वती वृक्षके पत्र समान कांटेयुक्त खर्दरी होय ॥

पित्ताजिह्वा।

पित्तेनपीतापरिदह्यतेचदीर्घैःसरक्तैरपिकंटकैश्च ॥

अर्थ–पित्तसे जीभ पीली हो, उस्में दाह होय उस्में लंबे लंबे तामेके समान कांटे होय, इस रोगको लौकिकमें जाली कहतेहैं अथवा जोडी कहतेहैं॥

कफज जिह्वा।

कफेनगुर्वीबहलाचिताचमांसोच्छ्रयैःशाल्मलिकंटकाभैः ॥

अर्थ–कफसे जीभ मोटी भारी होय है और उस्में सेमरकेसे कांटेके समान मांसके अंकुर होय ॥

अलासके लक्षण।

जिह्वातलेयःश्वयथुःप्रगाढःसोल्लाससंज्ञःकफरक्तमूर्तिः ।
जिह्वांसतुस्तंभयतिप्रवृद्धोमूलेवजिह्वाभृशमेतिपाकम् ॥

अर्थ–जीभके नीचे कफ रुधिरसे प्रगट ऐसी भयंकर सूजन होय उस्को अल्लास कहते हैं। उस्के बढनेसे स्तंभ होय तथा जीभके मूलमें सूजन होय यह रोग असाध्य है ॥

उपजिव्हाके लक्षण।

जिव्हाग्ररूपःश्वयथुःसजिव्हामुन्नम्यजातःकफरक्तमूर्तिः ।
लालाकरःकंडुयुतःसचोषःसातूपजिव्हाकथिताभिषग्भिः ॥

अर्थ–कफ रुधिरसे जिह्वाग्रके समान (जैसा जीभका आगेका भाग होय है) ऐसी सूजन जीभको नीची दबायकर उत्पन्न होय, उस्के योगसे लार बहुत बहे और उस्में खुजली चले तथा दाह होय, दाह इस्में रक्तपित्तका कारण पित्त है उस्से यह होय है, इस रोगको वैद्य उपजिह्वा ऐसे करते हैं ॥

सामान्य चिकित्सा।

उपजिह्वांतुसंलिख्यक्षारेणप्रतिसारयेत् ।
शिरोविरेकगंडूषधूमैश्चैनामुपाचरेत् ॥

अर्थ–उपजिव्हकको क्षारसे लेखन करकै फिर प्रतिसारण, शिरोरेचन, गंडूष, और धूमपान ये उपचार करे ॥

व्योषादि चूर्ण।

व्योषक्षाराभयावन्हिचूर्णमेत्प्रघर्षणम् ॥ उपजिव्हकशांत्यर्थ
मेभिस्तैलंचपाचयेत् ॥ गृहधूमारनालेनक्काथंसमधुसैंधवम् ॥

अर्थ-उपजिव्हक रोगकी शांतिके अर्थ, सोंठ, मिरच, पीपल, जवाखार, हरड, और चित्रक, इनका चूर्ण घिसे, तथा इन्ही औषधोंसे सिद्ध करे तेलके कुरले करे और घरके धूआंको कांजीमें डालके औटावे, फिर इसमें सहत, और सैंधानिमक डालकै हाथसे उपजिव्हको मर्दन करे ॥

निर्गुंडयादि चवर्ण।

निर्गुंडीमुसलीकंदंचर्वयेदुपजिव्हजित् ॥

अर्थ-निर्गुंडी और मूसली इनके कंदकी चवावे,तो उपजिव्हकाकोनाशकरे।

कांचनार क्वाथ।

कांचनारत्वचः क्वाथः प्रातरास्येधृतः सुखः ॥
कुर्यात्सखदिरोजिव्हादरणोन्मूलनंमुहुः ॥

अर्थ-कचनारकी छाल, और खैरकी छाल, इनका काढा करके प्रातःकाल मुखमें रखेतो सुख होय, और इससैं फटी हुई जिव्हा उत्तम होय ॥

जिव्हारोगकी साधारणक्रिया।

जिह्वागतविकाराणांशस्तंशोणितमोक्षणम् ॥

अर्थ-जिव्हामें विकार होनेसे रुधिर निकालना उत्तम कहाहै ॥

गुडूच्यादि कवल।

गुडूचीपिप्पलीनिंबकवलःकटुभिःसुखः।
ओष्ठप्रकोपेनिलयेयदुक्तंप्राक्चिकित्सितम् ॥

अर्थ-गिलोय, पीपल, नीबकी छाल, और तीक्ष्ण औषध इनका कल्क करैक मुखमें रखे तथा वातजनित ओष्ठरोगपर कही हुई चिकित्सा करे ॥

जिह्वाकंटकपर।

कंटकेष्वनलोत्थेषुतत्कार्यंभिषजाखलु। पित्तजेषुविधृष्टेषुनिः
सृतेदुष्टशोणिते। प्रतिसारणगंडूषनस्यंचमधुरंहितम् ॥

अर्थ-जिव्हापर वादी करके कांटे होनेसे वातके ऊपर जो उपचार कहे हैं वो करे, और पित्तसे कांटे उत्पन्न होवे तो उनको घिसकै दुष्ट रक्तका स्राव करे, फिर मधुर औषधोंसे प्रतिसारण, गंडूष, और नस्य इत्यादिक करे, ये हितकारक होय ॥

प्रतिसारणविधि।

दंतजिव्हामुखानांयच्चूर्णकल्कावलेहकैः।

शनैर्घर्षणमंगुल्यातदुक्तंप्रतिसारणम् ॥

अर्थ–दांत, जीभ, और मुख इनको चूर्ण, कल्क, अथवा अवलेह इत्यादिक मसूढोंसे धीरे २ घिसे, इसको प्रतिसारण कहते हैं ॥

कंठशुंडी तालुरोग।

श्लेष्मासृग्भ्यांतालुमूलात्प्रवृद्धोदीर्घःशोथोध्मातबस्तिप्रकाशः।
तृष्णाकासश्वासकृत्तंवदंतिव्याधिंवैद्याःकंठशुंडीतिनाम्ना ॥

अर्थ–कफ रुधिरसे तालुके मूलमें फूली बस्तीके समान भारी सूजन होय, इसके प्रभावसे प्यास, खांसी, श्वास ये होतेहैं। इस रोगको वैद्य कंठशुंडी कहते हैं॥

तुंडिकेरी तालुरोग।

शोथःशूलस्तोददाहप्रपाकोप्रागुक्ताभ्यांतुंडिकेरीमतातु ॥

अर्थ–कफ रक्तसे तालुएमें बन कपासके फलके समान सूजन होय और उसमें पीडा, सुईके छेदनेकासा दुःख और दाह होकर पके उसको तुंडिकेरी कहतेहैं

अध्रुव तालुरोग।

शोथस्तब्धोलोहितस्तालुदेशेरक्ताज्ज्ञेयःसोध्रुवोरुक्ज्वरश्च ॥

अर्थ–रुधिरसे तालुएमें लाल स्तब्ध (लठर) ऐसी सूजन होय, उसमें पीडा और ज्वर होय उसको अध्रुव ऐसा कहते हैं ॥

कच्छपतालुरोग।

कूर्मोत्सन्नोवेदनोशीघ्रजन्मारोगोज्ञेयःकच्छपःश्लेष्मणावा ॥

अर्थ–कफसे तालुएमें कछुआकी पीठके समान ऊंची सूजन होय, उसमें पीडा थोडी होय, वह शीघ्र बढे नहीं, उसको कच्छप रोग कहते हैं ॥

अर्बुद तालुरोग।

पद्माकारंतालुमध्येतुशोथंविद्याद्रक्तादर्बुदंप्रोक्तलिंगम् ॥

अर्थ–रुधिरसे तालुएमें कमलकी कर्णिकाके समान सूजन होय, इसके लक्षण अर्बुदनिदानमें जो रक्तार्बुदके कहे हैं उसके प्रमाण जानने ॥

मांससंघात।

दुष्टंमांसंनीरुजंतालुमध्येकफाच्छूनंमांससंघातमाहुः ॥

अर्थ–कफ करके तालुएमें दुष्ट मांस हो करके जो सूजन होय, और वा दूखै नहीं, उसको मांससंघात कहते हैं ॥

ताल पुप्पुट।

नीरुक्स्थायीकोलमात्रःकफात्स्यान्मेदोयुक्तःपुप्पुटस्तालुदेशे ॥

अर्थ-मेदयुक्त कफ करके तालुएमें पीडारहित और स्थिर तथा बेरके समान सूजन होय, उसको तालुपुप्पुट ऐसे कहते हैं ॥

कंठशुंडयादि चिकित्सा।

तुंडिकार्यैध्रुवेकूर्मैसंघातेतालुपुप्पुटे।
एषएवविधिःकार्योविशेषःशस्त्रकर्मणि ॥

अर्थ-तुंडिकारी, अध्रुव, कच्छप और तालुपुप्पट, इनपर यही विधिकरे कि शस्त्रकर्मके सिवाय विशेष किकित्सा कहीं नहीं कही ॥

तालुशोषके लक्षण।

शोषोऽत्यर्थंदीर्यतेचापितालुः श्वासश्चोग्रस्तालुशोषोनिलाच्च ॥

अर्थ-वादीसे तालु अत्यंत सूखकर फट, जाय, तथा भयंकर श्वास होय, उसको तालुशोष कहते हैं ॥

चिकित्सा।

स्नेहस्वेदौतालुशोषेविधिश्चानिलनाशनः ॥

अर्थ-तालुशोषपर, वातनाशक, औषध तथा वातनाशक स्नेह और स्वेद इत्यादि विधि करनी चाहिये ॥

तालुपाकके लक्षण।

पित्तंकुर्यात्पाकमत्यर्थघोरंतालुन्यैवंतालुपाकंवदंति ॥

अर्थ-पित्त कुपित होकर तालुएमें अत्यंत भयंकर पाक (पकी फुंसी) उत्पन्न करे उसको तालुपाक कहते हैं ॥

चिकित्सा।

तालुपाकेतुकर्तव्यंविधानंपित्तनाशनम् ॥

अर्थ-तालुपाक होनेसे संपूर्ण पित्तनाशक चिकित्सा करे ॥

तालुरोग।

युंज्यात्कफहरंशुंडयांरसंगंडूषधारणे। कुष्टोषणवचासिंधुक
णापाठाचवैःसह। सक्षौद्रैर्भिषजाकार्यंगलशुंडीप्रघर्षणम् ॥

अर्थ-शुंडीरोगमें गंडूषधारण करनेको कफनाशक रस देवे योजना करे और कूठ, मिरच, बच, सैंधानिमक, पीपल, पाढ और चव्य इनका चूर्ण करके सहतमें मिलायके परजिव्हापर मालिस करे ॥

शुंडीछेदन।

अंगुष्ठांगुलिसंदंशेनाकृष्यगलशुंडिकाम्।

छेदयेन्मंडलाग्रेणजिह्वोपरितुसंस्थिताम् ॥

अर्थ-शुंडी (दूसरी जीभ) को चीमटीसे पकडके और आगेकी तरफ खींचके उसका अग्र छेदन करे ॥

छेदनप्रकार ।

अतिछेदात्स्रवेद्रक्तंततोहेतोर्म्रियेतच । हीनच्छेदाद्भवेच्छोथो लालास्रावोभ्रमस्तथा । तस्माद्वैद्यःप्रयत्नेनदृष्टकर्माविशारदः॥ गलशुंडींतुसंछिद्यकुर्यात्प्राप्तमिमंक्रमम् ॥

अर्थ--दूसरी जीभ अधिक कट जावेतो रुधिरस्राव होय है तथा रोगी मरजावे और न्यूनकटे तो सूजन, लारका बहना और भ्रम ये होते है इसवास्ते कुशल वैद्य उसका छेदन करकै क्रमप्राप्त चिकित्सा करे ॥

शुंडीछेदनेके पश्चात् उपचार ।

विप्पल्यतिविषाकुष्टवचामरिचनागरैः ।
क्षौद्रयुक्तैःसलवणैस्ततस्तांप्रतिसारयेत् ॥

अर्थ-उपजीभ काटनेके पश्चात् पीपल, अतीस, कूठ, वच, मिरच, और सोंठ, इनके चूर्णमें सहत और निमक डालकै धीरे २ पोरुओंसें मले ॥

गलरोगकेनाम और संख्या ।

रोहिणीपंचधाप्रोक्ताकंठशालूकएवच । अधिजिव्हश्चवलयोल्ला सनामैकवृंदकः ॥ ततोवृंदःशतघ्नीचगिलायुःकंठविद्रधिः । ग लौधश्चस्वरघ्नश्चमांसतालुस्तथैवच। विदारीकंठदेशेतुरोगाश्चा ष्टादशस्मृताः ॥

अर्थ-पांच प्रकारकी रोहिणी ५ कंठशालूक ६ अधिजिव्हा ७ वलय८ उल्ला सन ९ एकवृंदक १० वृंद ११ शतघ्नी १२ गिलायु १३ कंठविद्रधि १४ ग-लौध १५ स्वरघ्न १६ मांसतालु १७ विदारी १८ ये अठारह रोग कंठदे-शके कहहैं ॥

कंठगत १७ रोग ।

तिनमें पांचोरोहिणियोंकी सामान्य संप्राप्ति ।

गलेनिलःपित्तकफौचमूर्छितौप्रदूष्यमांसंचतथैवशोणितम् ।
गलोपसंरोधकरैस्तथांकुरैर्निहन्त्यसून्व्याधिरयंतुरोहिणी ॥

अर्थ–गलेमें वायु पित्त और कफ ये दुष्ट होकर मांसको तथा रुधिरको, दूषित कर गलेमें अंकुर (कांटे) उत्पन्न करेहैं, उनसे गला रुकजाय, यह रोहिणी नाम व्याधि प्राणनाशक है सब रोहिणी सन्निपातसे प्रगट होती है उत्कर्षके वास्ते वात आदिका व्यपदेश है इन सबका असाध्यत्व भोजने पृथक् २ लिखा है॥

उक्तरोहिणियोंकी सामान्य चिकित्सा।

रोहिणीनांतुसाध्यानांहितंशोणितमोक्षणम्।
वमनंधूमपानंचगंडूषोनस्यकर्मच॥

अर्थ–पांच रोहिणीनमें जो साध्य कहीहै उसका रुधिर निकाले और वमन धूमपान, गंडूषधारण और नस्य ये उपचार करे॥

वातजाके लक्षण।

चिव्हासमंताद्भृशवेदनास्तुमांसांकुराःकंठनिरोधनाय।
सारोहिणीवातकृताप्रदिष्टावातात्मकोपद्रवगाढयुक्ता॥

अर्थ–जीभके चारों ओर अत्यंत वेदनायुक्त जो मांसांकुर उत्पन्न होय-उनसे कंठका अवरोध होय, तथा कंप, विनाम, स्तंभादि वातके उपद्रव होय॥

चिकित्सा।

वातजातांहृतेरक्तेलवणैःप्रतिसारयेत्।
सुखोष्णान्स्नेहगंडूषान्धारयेच्चाप्यभीक्ष्णशः॥

अर्थ–वातजन्य रोहिणीका रुधिर निकालकै निमकसे घिसे और सुखोष्ण ऐसे गंडूष वारंवार धारण करे॥

पित्तजरोहिणी।

क्षिप्रोद्गमाक्षिप्रविदाहपाकातीव्रज्वरापित्तनिमित्तजाता॥

अर्थ–पित्तसे प्रगट भई रोहिणी शीघ्र बढे तथा शीघ्रही पके उस्के योगसे तीव्रज्वर होय॥

चिकित्सा।

विस्राव्यपित्तसंभूतांसिताक्षौद्रप्रियंगुभिः।
घर्षयेत्कवलोद्राक्षाटरूषैः क्वथितैर्हितः॥

अर्थ–पित्तसै उत्पन्न हुई रोहिणीको खांड, सहत, फूलप्रियगु, इनका चूर्ण घिसे और दाख, तथा फालसेका काढा करकै मुखमें रखे तो हित होय॥

१सद्यस्त्रिदोषजो हंति त्र्यहात् श्लेष्मसमुद्भवा। पंचाहात्पित्तसंभूता सप्ताहात्पवनोत्थितेति॥

रक्तजरोहिणी।

स्फोटैश्चितापित्तसमानलिंगासाध्याप्रदिष्टारुधिरात्मकातु ॥

अर्थ-रुधिरकी रोहिणी पित्तरोहिणीके समान जाननी तथा फोडोंसे व्याप्त होय यह साध्य है ॥

चिकित्सा।

पित्तवत्साधयेद्वैद्योरोहिणींरक्तसंभवां॥

अर्थ-रक्तजनित रोहिणीपर पित्तरोहिणीकी चिकित्सा करे ॥

कंठशालूक।

कोलास्थिमात्राकफसंभवोयोग्रंथिर्गलेकंटकशूकभूतः।
खरःस्थिरःशस्त्रनिपातसाध्यस्तंकंठशालूकमितिब्रुवंति॥

अर्थ-कफसे गलेमें बेरकी गुठली समान गांट होय, उस्में बारीक कांटे होय तथा खरदरी और कठिन होय यह रोग शस्त्रोंसे साध्य होय इस रोगको कंठशालूक रोग कहतेहैं ॥

सामान्य यत्न।

विस्राव्यकंठशालूकंसाधयेत्तुंडिकेरिवत्।
एककालेयवान्नंचभुंजीतस्निग्धमल्पसः॥

अर्थ-कंठशालूक रोगका स्राव करकै फिर तुडकेरी रोगकी जो चिकित्सा कहीहै वो करे तथा एकबार यवान्न भक्षण करे ॥

कफज रोहिणी।

स्रोतोनिरोधिन्यपिमंदपाकास्थिरांकुरायाकफसंभवासा॥

अर्थ-जो रोहिणी कंठके मार्गको रोध करे (रोंकदे) तथा होले होले पके तथा जिस्के अंकुर कठिन होय, वो कफजन्य जाननी ॥

चिकित्सा।

आगारधूमकटुकैःकफजांप्रतिसारयेत्॥ श्वेताविडंगदंतीषुतैलं सिद्धंससैंधवम्। नस्यकर्मणिदातव्यंकवलंचकफोछ्रये॥

अर्थ-कफजन्य रोहिणीको घरका धूआं, तथा तीक्ष्ण औषध इनसैं रगडे और सपेद तुलसी, वायविडंग, दंती, इनसै तेलको सिद्धकर उसमें सैंधानिमक डालकै इसकी नस्य करे, तथा इसको मुखमेंभी रखे ॥

त्रिदोषजरोहिणी।

गंभीरपाकिन्यनिवार्यवीर्यात्रिदोषलिंगात्रितयोत्थितासा॥

अर्थ–त्रिदोषसे उत्पन्न भई रोहिणी गंभीरपाकिनी (जिस्में बहुत राधहो) तिस्में औषधीका प्रभाव नहीं चले और तीन दोषोंके लक्षणोंसे युक्त होय यह तत्काल प्राणोंका हरण करै ॥

अधिजिह्वकेलक्षण।

जिह्वाग्ररूपःश्वयथुःकफात्तुजिह्वोपरिष्टादपिरक्तमिश्रात्।
ज्ञेयोधिजिह्वःखलुरोगएषविवर्जयेदागतपाकमेनम् ॥

अर्थ–रक्तमिश्रित कफसे जीभके अग्रभाग सदृश जीभमें सूजन होय इस्को अधिजिह्व कहते हैं यह पकनेसे असाध्य जानना ॥

सामान्य यत्न।

उपजिह्वकवच्चापिसाधयेदाधिजिह्वकम्।

अर्थ–अधिजिह्वक रोगपर उपजिह्वक रोगकी चिकित्सा करे तो दूर होय ॥

वलयकेलक्षण।

बलासएवायतमुन्नतंचग्रंथिंकरोत्यन्नगतिंनिवार्य।
तंसर्वथैवाप्रतिवार्यवीर्यंविवर्जनीयंवलयंवदंति ॥

अर्थ–कफसे ऊँची और लंबी ऐसी गांठ कंठमें उत्पन्न होय उस्के योगसे कंठमें ग्रास गस्सा उतरे नहीं तथा उस्में कोई उपाय नहीं चले। इस रोगको वलय कहते हैं। इस्को वैद्य त्याग दे॥

बलासके लक्षण।

गलेतुशोथंकुरुतःप्रवृद्धौश्लेष्मानिलौश्वासरुजोपपन्नम्।
मर्मच्छिदंदुस्तरमेनमाहुर्बलाससंज्ञंनिपुणाविकारम् ॥

अर्थ–कुपित भये जो कफ वायु सो गलेमें सूजन उत्पन्न करे उससे श्वास होय तथा कंठ दूखे, इस मर्मभेद करनेवाली दुस्तर व्याधिको वैद्य बलास ऐसे कहते हैं॥

एकवृंदकेलक्षण।

वृत्तोन्नतोन्तःश्वयथुःसदाहःसकंडुरोपाक्यमृदुर्गुरुश्च।
नाम्नैकवृंदःपरिकीर्तितोसौव्याधिर्बलासक्षतजप्रसूतः ॥

अर्थ–गलेमें गोल, ऊंची किंचित् दाह युक्त खुजानेवाली ऐसी सूजन होय वह किंचित पके और कुछ नरम होय तथा भारी होय इस्का नाम एकवृन्द है यह व्याधि कफ रक्तसे होय है॥

सामान्य यत्न।

एकवृंदंतुविश्राव्यविधिंशोधनमाचरेत् ॥

अर्थ–एकवृंद व्याधिका स्राव करके फिर शोधन करे ॥

वृंद।

समुन्नतंवृत्तममंददाहंतीव्रज्वरंवृंदमुदाहरंति।
तंचापिपित्तक्षतजप्रकोपाद्विद्यात्सतोदंपवनात्मकंतु ॥

अर्थ–गलेमें ऊंची गोल तीव्र दाह तथा ज्वर युक्त जो सूजन होय उसको वृन्द कहते हैं येभी रक्त पित्तके कोपसे होय है। इसमें वायुके संबंध होनेसे सुईके चोटनेकी पीडा होय ॥ ❀ शंका–क्यो जी! कंठके १७ रोग कहे हैं और वृन्दको मिलायकर अठारह रोग हुये तो कहिये कि, सत्रहकी संख्यामें भेद हुआ ॥ ❀ उत्तर–तुमने कहा सो ठीक है, परंतु तुल्य स्थान आकृती होनेसे एकवृन्दकाही भेद वृन्द रोग जानना, ऐसे माननेसे संख्यामें विरोध नहीं पडे, यद्यपि एकवृन्द कफ रक्तज है और वृन्द रोग पित्त रक्तज है, तथापि जैसे वृन्दका चोटनी होने करके वातात्मकत्व कहा है तो भी एकवृन्दकी अवस्था विशेष होनेसे वृन्दको एकवृन्दके साथ ग्रहण करा है, जैसे कामलाके लक्षणसे भिन्न भी है तथापि हलीमक कामलाकाही भेद जानना और भोजने[1] भी इसको एक वृन्दकाही भेद कहा है, गदाधर कहता है कि, छंदानुरोधके निमित्त एकवृन्द शब्दके एक शब्दका लोपकर वृन्द शब्दही मूलमें धरा है याते वृंद और एकवृंद ये दोनों एकही है ॥

सामान्य चिकित्सा।

एकवृंदमिवप्रायोवृंदंचसमुपाचरेत् ॥

अर्थ--वृंद रोगपर एकवृंदकी चिकित्सा करे ॥

शतघ्नीके लक्षण।

वर्त्तिर्घनाकंठनिरोधिनीयाचिताऽतिमात्रंपिशितप्ररोहैः।
अनेकरुक्प्राणहरीत्रिदोषाज्ज्ञेयाशतघ्नीतुशतघ्नीरूपा ॥

अर्थ–कंठमें लंबी और कठिन सूजन होय, उस करके कंठ रुकजाय, और उस सूजनके ऊपर मांसके अंकुर बहुत होय, तथा उसमें तोद (चोटनी) दाह, खुजली, आदि अनेक वेदना होय, यह प्राण हरनेवाली सूजनको शतघ्नी (लंबे तथा कांटे लंबे जिस्में होय ऐसे शस्त्र) के समान होय इसीसे इस रोगको यह संज्ञा दीनी है ॥

१ श्लेष्मरक्तसमुत्थानमेकवृन्दं विभावयेत्। तुल्यस्थानाकृतिर्वृन्दो वृंदजोरक्तपित्तजः ॥

गिलायुके लक्षण ।

ग्रंथिर्गलेत्वामलकास्थिमात्रःस्थिरोल्परुक्स्यात्कफरक्तमूर्तिः ।
संलक्ष्यतेसक्तमिवाशनंचसशस्त्रसाध्यस्तुगिलायुसंज्ञः ॥

अर्थ--कफ रक्तके कोपसे गलेमें आंवलेकी गुटलीके बराबर गांठ उत्पन्न होवे, वह गांठ कठिन मंद पीडावाली हो, इसके होनेसे अन्न गलेमें अटकतासा मालूम देवे, यह रोग शस्त्रके द्वारा अर्थात् शस्त्रसे काटनेंसे साध्य होवे इसको गिलायु कहते हैं ॥

सामान्य चिकित्सा ।

गिलायुश्चापियोव्याधिस्तंचशस्त्रेणसाधयेत् ॥

अर्थ–गिलायु नामककी व्याधिको शस्त्रसे उपचार करे ॥

गलविद्रधिके लक्षण ।

सर्वंगलंव्याप्यसमुत्थितोयःशोथोरुजःसंतिचयत्रसर्वाः ।
ससर्वदोषोगलविद्रधिस्तुतस्यैवतुल्यःखलुसर्वजस्य ॥

अर्थ–जो सूजन सब गलेमें व्याप्त हौवै तथा जिसमें सर्व प्रकारकी पीडा होय वह विद्रधिनिदानमैं जो त्रिदोषकी विद्रधि कही है उसके समान गलविद्रधिके लक्षण जानने ॥

सामान्य यत्न ।

अमर्मस्थंतुसंपक्वंछेदयेद्गलविद्रधिम् ॥

अर्थ–मर्म स्थानके विना अन्यत्र हुई गलविद्रधि पकगई होय तो उसमें चीरा देवे ॥

गलौघके लक्षण ।

शोथोमहानन्नजलावरोधीतीव्रज्वरोवायुगतेर्निहंता ।
कफेनजातोरुधिरान्वितेनगलेगलौघःपरिकीर्त्यतेसौ ॥

अर्थ–रक्तयुक्त कफसे गलेमें भारी सूजन होय, उसके योगसे कंठमें अन्न जलका अवरोध (रोकावट) होय, तथा वायुका संचार होय नहीं, इसको वैद्य गलौघ कहते हैं ॥

स्वरघ्नके लक्षण ।

यस्ताम्यमानःश्वसितीप्रसक्तंभिन्नस्वरःशुष्कविमुक्तकंठः ।
कफोपदिग्धेष्वनिलायतेषुज्ञेयःसरोगःश्वसनात्स्वरघ्नः ॥

अर्थ–वायुका मार्ग कफसे लिप्त होनेसे बारबार नेत्रोंके आगे अंधकार आकर जो पुरुष श्वासको छोडे, अथवा मूर्च्छा आकर जिसकी श्वास निकले, जिसको भिन्न स्वर होय, कंठ सूखे और विमुक्त कहिये कंठ स्वाधीन न हो, अर्थात् थोडाभी अन्न खाया हो तथापि कंठसे नीचे न उत्तरे, इस वातज रोगको स्वरघ्न कहते हैं ॥

मांसतानके लक्षण।

प्रतानवान्यःश्वयथुःसुकष्टोगलोपरोधंकुरुतेक्रमेण।
समांसतानेतिबिभर्तिसंज्ञांप्राणप्रणुत्सर्वकृतोविकारः॥

अर्थ–जो सूजन गलेमें उत्पन्न होकर क्रमसे फैलकर गलेको रोकले तब बहुत कष्ट हो, इस त्रिदोष विकारको मांसतान कहते हैं यह विकराल रोग प्राणोंका नाश करनेवाला है ॥

विदारीके लक्षण।

सदाहतोदंश्वयथुंसताम्रमंतर्गलेपूतिविशीर्णमांसम्।
पित्तेनविद्याद्वदनेविदारींपार्श्वेविशेषात्सतुयेनशेते॥

अर्थ–पित्तसे गलेमें सूजन होवै तिस करके दाह होय, चवक होय, तथा दुर्गंधि युक्त सडा मांस गिरे और रोगी जिस करवट सोवै उसी तर्फ वह रोग होता है, मांसके विदारण करनेसे विदारी कहलाता है ॥

असाध्य मुखरोगके लक्षण।

ओष्ठप्रकोपेवर्ज्याः स्युर्मांसरक्तप्रकोपजाः। दंतमूलेषुवर्ज्यौतु त्रिलिंगगतिसौषिरौ॥ दंतेषुनचसिध्यंतिश्यावदालनभंजनाः। जिह्वातलेष्वलासश्चतालव्येष्वर्बुदंतथा॥स्वरघ्नोवलयोवृंदोबलासश्चविदारिका। गलौघोमांसतानश्चशतघ्नीरोहिणीगले॥ असाध्याःकीर्तिताह्येतेरोगानवदशैवतु॥ तेषुचापिक्रियांवैद्यः प्रत्याख्यायसमाचरेत्॥

अर्थ–ओष्ठरोग (होठके रोगोंमें) मांसज, रक्तज और त्रिदोषज, असाध्यहै। मसूढोंके रोगोंमें सन्निपात, नाडी और सौषिर और दांतोंके रोगोंमें श्याव, दालन, और भंजन, जिह्वाके रोगोंमें अलास और तालुयेके रोगोंमें अर्बुद, तथा गलेके रोगोंमें स्वरघ्न, वलय, वृंद, बलास, बिदारिका, गलौघ, मांसतान, शतघ्नी और रोहिणी ये उन्नीस रोग असाध्य हैं, इनपर

चिकित्सा करनेवाले वैद्यको प्रत्याख्यान (औषधि) न देनी ये तौ मृत्यु निश्चय होय और देवे तौ कदाचित् बचभी जाय है ऐसे विचारकर औषधी देनी चाहिये ॥

वातिकसर्वसर।

स्फोटैःसतोदैर्वदनंसमंताद्यस्याचितंसर्वसरःसवातात्।

अर्थ-वादीके योगसे मुखमें सर्वत्र छाले हो जाय और वह चिनमिनावै, मुख जिह्वा गला होंठ मसूडे दांत और तालु इन सबमें व्याप्ति होनेसे इस रोगको सर्वसर कहते हैं ॥

पैत्तिकसर्वसर।

रक्तैः सदाहैःपिटिकैःसपीतैर्यस्याचितंचापिसपित्तकोपात्।

अर्थ-पित्तसे मुखमें लाल तथा पीले छाले होय और दाह होवै ॥

कफजसर्वसर।

आवेदनैःकंडुयुतैःसवर्णैर्यस्याचितंचापिसवैकफेन ॥

अर्थ-कफसे मुखमें मंदपीडा और त्वचाके समान वर्ण जिनका ऐसे छाले सर्वत्र होय ॥

मतांतर।

रक्तेनपित्तोदितएकएवकैश्चित्प्रदिष्टोमुखपाकरोगः।

अर्थ-कितनेक बुद्धिमानोंने रक्तपित्तसे उत्पन्न हुआ मुखपाक रोग एकही प्रकारका कहा है ॥

मुखरोगसंख्या।

पृथक्दोषैस्त्रयोरोगाःसमस्तमुखजाःस्मृताः ॥

अर्थ-वात, पित्त, कफ इन दोषोंसे तीन रोग और तीनों दोषोंसे होनेवाला रोग ऐसे मुखज रोग कहे हैं ॥

असाध्यमुखरोगके मारणकी अवधि।

सद्यस्त्रिदोषजोहंतित्र्यहात्कफसमुद्भवः।
पंचाहात्पित्तसंभूतःसप्ताहात्पवनःस्थितः ॥

अर्थ-त्रिदोषसे उत्पन्न होनेवाला असाध्य मुखरोग तात्काल प्राणीको नष्ट करता है और कफज रोग तीन दिनमें, पित्तज रोग पांच दिनमें, वातज रोग सात दिनमें प्राणीको नष्ट करता है ॥

समस्तमुखरोगचिकित्सा।

वातात्सर्वसरंचूर्णैर्लवणैःप्रतिसारयेत् । तैलंवातहरैःसिद्धंहितं कवलनस्ययोः । पित्तात्मकेसर्वसरेशुद्धकायस्यदेहिनः ॥ सर्वःपित्तहरः कार्योविधिर्मधुरशीतलः । प्रतिसारणगंडूषधूम संशोधनानिच । कफात्मकेसर्वसरेक्रमंकुर्यात्कफापहम् ॥

अर्थ-वातजन्य सर्वसर अर्थात् मुखपाक (छाले) होनेसे उनको निमकसे घिसे, तथा वातनाशक औषधोंसे सिद्ध करे हुए तेलकी नस्य, और कुल्ले करे तो हितावह होय । तथा पित्तजनित छालेनमें प्रथम दस्त करावे,फिर सम्पूर्ण मधुर और शीतल ऐसे पित्तनाशक विधि करे, कफात्मक सर्वसर (छालेन) में प्रतिसारण, गंडूष, धूमपान, शोधन और संपूर्ण कफनाशक चिकित्सा करे॥

गलरोगकीसामान्यचिकित्सा।

कंठरोगेष्वसृङ्मोक्षस्तीक्ष्णैर्नस्यादिकर्मभिः ।
चिकित्सकश्चिकित्सांतुकुशलोत्रसमाचरेत् ॥

अर्थ-गल रोगका रुधिर निकालना, तथा तीक्ष्ण औषध देवे, तथा कुशल वैद्य नस्यादि कर्म करे, ॥

दार्व्यादिक्काथ।

क्काथंदद्याच्चदार्वीत्वग्निंबताक्ष्यंकलिंगजम् ।
हरीतकीकषायोवाहितोमाक्षिकसंयुतः ॥

अर्थ-दारुहलदी, दालचीनी, नींबकीछाल, रसोत और इन्द्रजौ इनका काढा करके देव अथवा सहत डालके देवे तो हितकारक होय ॥

कटुकादिक्काथ।

कटुकातिविषादारुपाठामुस्तकलिंगकाः ।
गोमूत्रक्कथिताःपीताःकंठरोगविनाशनाः ॥

अर्थ-कुटकी, अतीस, देवदारु, पाढ, नागरमोथा और इन्द्रजौ इनका गोमूत्रमें काढा करके पीवे तो गलेके रोगोंका नाश करे ॥

मृद्वीकादि चूर्ण।

मृद्वीकाकटुकाव्योषदार्वीत्वक्त्रिफलाघनम् ॥ पाठारसांजनं दूर्वातेजोह्वतिसुचूर्णितम् । क्षौद्रयुक्तंविधातव्यंगलरोगेमहौषधम्॥

अर्थ-दाख, कुटकी, सोंठ, मिरच, पीपल, दारुहलदी, हरड, बहेडा आँवला नागरमोथा, पाढ, रसोत, दूव और तेजबल, इनका चूर्ण करके उसमें सहत डालकै गलेके रोगोंपर देवे, तो महान् औषध है॥

यवक्षारादिगुटी।

यवाग्रजंतेजवतींसपाठांरसांजनंदारुनिशांसकृष्णाम्।
क्षौद्रेनकुर्याद्गुटिकांमुखेनतांधारयेत्सर्वगलामयेषु॥

अर्थ--जवाखार, तेजबल, पाढ, रसोत, दारुहलदी और पीपल इनका चूर्ण करकै उसकी सहतसैं गोली बनायकै मुखमें रखे, तो सर्व गलेके रोग दूर होय ये ऊपर लिखे तीन योग क्रमसे वात पित्त और कफ इनको नाश करे॥

मुखपाकपरसामान्ययत्न।

मुखपाकेशिरावेधःशिरसश्चविरेचनम्।
मधुमूत्रघृतक्षीरैःशीतैश्चकवलग्रहः॥

अर्थ--संपूर्ण मुखपाकोंमे फस्त खोले मस्तकरेचन और सहत गोमूत्र, घी, दूध और शीतल पदार्थ इनका कवल करके मुखमें रखे॥

दार्वीस्वरस।

स्वरसःक्वथितोदार्व्याघनीभूतोरसक्रिया।
सक्षौद्रोमुखरोगासृग्दोषनाडीव्रणापहः॥

अर्थ-दारुहलदीका स्वरस काढकै ओटावे जब गाढा होजावे तब इसमें सहत डालकै देवे तो मुखदोष, रक्तदोष और नाडीव्रण इनका नाश करे॥

सप्तच्छदादिक्काथ।

सप्तछदोशीरपटोलमुस्ताहरीतकीतिक्तकरोहिणीभिः।
यष्ट्याह्वराजद्रुमचंदनैश्चक्काथंपचेत्पाकहरंमुखस्य॥

अर्थ-सतवनकी छाल, खस, पटोलपत्र, नागरमोथा, हरड, कुटकी, मुलहटी, अमलतासका गूदा और चंदन इनका काढा पीनेको देवे तो मुखपाक (छालेन) को नाश करे॥

सामान्यचिकित्सा।

पंचवल्कलजःक्काथस्त्रिफलासंभवोथवा।
मुखपाकेप्रयोक्तव्यः सक्षौद्रोमुखधावने॥

अर्थ-पंचवल्कलका काढा अथवा त्रिफलाका काढा करके उसमें सहत मिलायके मुख धोनेको अर्थात् कुल्ला करनेको देवे॥

पटोलादि क्काथ।

पटोलनिंबजंब्वाम्रमालतीनवपल्लवैः।
पंचपल्लवजःश्रेष्ठःकषायोमुखधावने॥

अर्थ–पटोलपत्र, नीमकी छाल, जामुन, आंव और चमेली इनके नवीन पत्तोंका काढा करकै मुखप्रक्षालन करनेको श्रेष्ठ है॥

जातीपत्रादि क्काथ।

जातीपत्रामृताद्राक्षायासदार्वीफलत्रिकैः।
क्काथःक्षौद्रयुतःशीतोगंडूषोमुखपाकनुत्॥

अर्थ–चमेलीके पत्ते, गिलोय, दाख, धमासो, दारुहलदी, हरड, बहेडा, आँवला इनका काढा सहत डालकै कुरला करनेके वास्ते देवे, तो मुखपाकका नाशकरे॥

पटोलादि क्काथ।

पटोलशुंठीत्रिफलाविशालात्रायंतितिक्ताद्विनिशामृतानां।
पीतःकषायोमधुनानिहंतिमुखेस्थितश्चास्यगदानशेषान्॥

अर्थ–पटोलपत्र, सोंठ, हरड, बहेडा, आँवला, इद्रायनकी जड, त्रायंती कुटकी, हलदी, दारुहलदी, और गिलोय, इनका काढा सहतमें मिलायकै मुखमें धारण करे तो मुखरोगका नाश होय॥

तिलादि गंडूष।

तिलानीलोत्पलंसर्पिःशर्कराक्षीरमेवच।
सलोध्रोदग्धवक्रस्यगंडूषोदाहनाशनः॥

अर्थ–तिल, नीलेमल, घी, खांड, दूध और लोधका चूर्ण, इनको एकत्र करकै कुल्ले करे तो भुरसे (जले हुए) मुखके दाहको नाश करे॥

यष्टीमध्वादि तैल।

यष्टीमधुपलमेकंत्रिंशन्नीलोत्पलस्यतैलस्य। प्रस्थंतद्द्विगुणप
योविधिनापक्कंतुनस्येन॥ निशिवदनस्यस्रावंक्षपयतिगात्रस्य
दोषसंघातम्। वपुःस्वर्णत्वमवश्यंक्रमशोभ्यंगेनजंतूनाम्॥

अर्थ--मुलहटी ४ तोले नीले कमल १२० तोले, तेल ६४ तोले और दूध, १२८ तोले इन सबको एकत्र कर मंदाग्निपर पचावे, जब सिद्ध हो जावे तब इसको रात्रिके समय नस्य करे तो मुखका स्राव (बहना) और अंगमें लगानेसे शरीरके दोष इनका नाश करे और कांतिको स्वर्णके समान करे॥

हरिद्रादि तैल।

हरिद्रानिंबपत्राणिमधुकंनीलमुत्पलम्।
तैलमेभिर्विपक्वंस्यंमुखपाकहरंपरम्॥

अर्थ—हलदी, नीबके पत्ते, मुलहटी, नीलाकमल इनके कल्कमें तेलको पचावे यह मुखपाकका नाश करनेमें उत्तम है॥

जातीपत्रचर्वण।

कार्यंचबहुधानित्यंजातीपत्रस्यचर्वणम्।

अर्थ—मुखमें छाले होगये होय तो नित्य चमेलीके पत्तोंको चवाय करे॥

कृष्णादि चर्वण।

कृष्णाजीरककुष्ठेंद्रयवचर्वणतस्यहात्।
मुखपाकव्रणक्लेदंदौर्गंध्यमुपशाम्यति॥

अर्थ—पीपल, मिरच, कूठ, इन्द्रजो इनको तीन दिन चवावे तो मुखपाक, लस, और दुर्गंध इनकी शांति होय॥

चूनेसे मुख जलगया हो उसपर।

तांबूलमध्यस्थितचूर्णकेनदग्धंमुखंयस्यभवेत्कथंचित्।
तैलेनगंडूषमसौविदध्यादम्लारनालेनपुनःपुनर्वा॥

अर्थ—जिस मनुष्यका मुखपान (वीडी) के चूनेसे जलगया हो उसको तेलके कुल्ले करने चाहिये। अथवा खट्टी कांजीके वारंवार कुल्ले करे॥

खादिरादि गुटिका।

खादिरस्यतुलांतोयद्रोणेपक्त्वाष्टशेषितम्। जातीकोशेंदुपूगश्च चातुर्जातमृगांडजैः॥ पृथक्कर्षमितैः पिष्टैर्मेलयित्वाचणोपमाम्॥ गुटींकृत्वामुखेधार्यासानिहंत्यखिलान्गदान्। जिह्वोष्ठदंतवदनगलतालुसमुद्भवान्॥

अर्थ—खैरकी छाल ४०० तोलेको १०२४ तोले जलमें डालकै अष्टावशेष काढा करे, फिर छानकै इसमें जावित्री, कपूर, चिकनी सुपारी, दालचीनी, इलायची, पत्रज, नागकेशर, कस्तूरी ये प्रत्येक तोले २ लेवे सबका चूर्ण कर उस काढेमें मिलाय और घोटकै चनेके बराबर गोली करे इसको मुखमें रखे तो संपूर्ण मुखके रोग, जिव्हारोग, ओष्ठ (होठों) के रोग, दांतके रोग गलेके रोग और तालुके रोग इनको नाश करे॥

मुखरोगपर पथ्य ।

स्वेदोविरेकीवमनंगंडूषःप्रतिसारणम् । कवलोसृक्स्रुतिर्नस्यं धूमःशस्त्राग्निकर्मणो॥तृणधान्यंयवामुद्गाःकुलित्थाजांगलोरसः। बृहत्प्रोष्ठोकारवेल्लंपटोलंबालमूलकम् ॥ कर्पूरनीरंताबूलंतप्तां बुखदिरोघृतम् । कटुतिक्तौचवर्गोयंमित्रंस्यान्मुखरोगिणाम् ॥

अर्थ–स्वेद, विरेचन, वमन, कुल्ला, प्रतिसारण अर्थात् मंजन, कवल औषधियोंका मुखमें रखना, रुधिर निकालना, नास, धुआं देना, नस्तर देना, व आगसे दागना, तृण धान्य, जो, मूंग, कुलथी, जंगलके जीवोंका मांसरस, बडा मछली, करेला, परवर, कोमल मूली, कपूरका जलपान, गरम जल, कत्था, घी, कडुआ तथा चरपरा रस ये सब मुख रोगमें पथ्य है ॥

मुखरोगपर अपथ्य ।

दंतकाष्ठंस्नानमम्लंमत्स्यमानूपमामिषम् । दधिक्षीरंगुडंमाषं रूक्षान्नंकठिनाशनम्॥अधोमुखेनशयनंगुर्वभिष्यंदिकानिच ॥ मुखरोगेषुसर्वेषुदिवानिद्रांचवर्जयेत् ॥

अर्थ–दतून, न्हाना, खटाई, मछली, अनूप देशका मांस, दही, दूध, गुड, उडद, रूखा अन्न, करडा भोजन, औंधे मुख सोना, भारी तथा अभिष्यंदी वस्तु और सब मुख रोगोंमें दिनका सोना वर्जित है ॥

इति श्रीबृहन्निघंटुरत्नाकरे मुखरोगस्य निदानचिकित्सा समाप्ता ।

कर्णरोग ।

कर्णरोगका कर्मविपाक ।

मातापितृगुरूणांचदेवब्राह्मणयोस्तथा । शृणोतिर्निंदाबुध्या यःकर्णाभ्यांतस्यशोणितम् ॥ पूयंचैवस्रवत्यस्यशांतिःकृच्छ्रच तुष्टयात् । हिरण्यरक्तवस्त्राणांदानाद्ब्राह्मणभोजनात् । जपाद्धो माच्चभवतिसौरमंत्रेणशक्तितः ॥

अर्थ–माता, पिता, गुरु, देव, और ब्राह्मण इत्यादिकोंकी निंदाको बुद्धिपूर्वक अर्थात् जान बूझकै सुनता है उसके कानसे रुधिर तथा राधका स्राव होय है उसकी शांति चार कृच्छ्र व्रत करके सुवर्ण, लाल कपडा, इनका दान करे, ब्राह्मणभोजन करावे, तथा सौर मंत्रोंसे यथाशक्ति हवन करे ॥

कर्णरोगनिदान।

अवश्यायजलक्रीडाकर्णकंडूषणैरुजम्। मिथ्यायोगेनशस्त्रस्य कुपितोन्यैश्चकोपनैः ॥ प्राप्यश्रोत्रशिराःकुर्याच्छूलंस्त्रोतसिवेगवान्। तेवैकर्णगतारोगाअष्टाविंशतिरीरिताः ॥

अर्थ-पाला, जलक्रीडा, कर्णकंडूषण, शस्त्रका मिथ्या योग, अन्यकोपन इन करके कर्णमें उत्पन्न हुआ रोग कुपित होकर नाडियोंके मध्यगत हुआ शूल पैदा करता है और स्रोतोंमें फैल जाता है वे कर्णरोग २८ प्रकारके ऐसे कहते हैं ॥

कर्णरोगके नाम।

कर्णशूलःप्रणादश्चबाधिर्यंक्ष्वेडएवच। कर्णस्रावःकर्णकंडूःकर्णगूर्थस्तथैवच ॥ प्रतिनाहोजंतुकर्णोविद्रधिर्द्विविधस्तथा। कर्णपाकःपूतिकर्णस्तथैवार्शश्चतुर्विधः ॥तथार्बुदंःसप्तविधःशोषश्चापिचतुर्विधः। एतेकर्णगतारोगाअष्टाविंशतिरीरिताः ॥

अर्थ-कर्णशूल,प्रणाद,बाधिर्य, क्ष्वेड, कर्णस्राव, कर्णकंडू, कर्णगूर्थ, प्रतिनाह, जन्तुकर्ण, विद्रधि२ प्रकारका, कर्णपाक, पूतिकर्ण,अर्शरोग४प्रकारका, अर्बुद७ प्रकरका,शोष ४ प्रकारका, इन भेदोंसे कर्णमें होनेवाले रोग २८ अट्ठाईस कहेहैं ॥

कर्णशूल निदान।

समीरणःश्रोत्रगतोन्यथाचरन्समंततःशूलमतीवकर्णयोः। करोतिदोषैश्चयथास्वमावृतः सकर्णशूलःकथितोदुरासदः ॥

अर्थ-कानमें वायु दोषों करके (कफ पित्त रुधिरसे) आवृत होकर कानोंमें उलटी फिरे तब अत्यन्त शूल (दरद) होय, इस रोगको कर्णशूल कहते हैं, यह रोग कष्टसाध्य है। कर्णशूलके उपद्रव[१] विदहने इस प्रकार लिखे हैं ॥

शृंगवेरादि तैल।

शृंगवेररसःक्षौद्रंसैंधवंतैलमेवच।
कटूष्णंकर्णयोर्धार्यमेतत्स्याद्वेदनापहम् ॥

अर्थ--अदरखका रस, सहत, सैंधानिमक और सरसोंका तेल इनको औंटावे जब तेलमात्र शेष रहे तब गरम गरम कानमें डाले तो कर्णशूलको नाश करे ॥

लशुनादि स्वरस।

लशुनार्द्रकशिग्रूणांवारूणांमूलकस्यच।

१ मूर्च्छा दाहो ज्वरः कासः क्रमोथ वमथुस्तथा। उपद्रवाः कर्णशूले भवंत्येते भाविष्यतः ॥

कदल्याःस्वरसः श्रेष्ठःकटूष्णःकर्णपूरणे ॥

अर्थ—लहसन, अदरख, सहंजना, बरना, मूली और केला इनके रस तीक्ष्ण, गरम ऐसा कानमें डालनेमें उत्तम है ॥

अर्कांकुरादि स्वरस।

अर्कांकुरानम्लपिष्टान्सतैलान्लवणान्वितान् । सन्निदध्यात्सुधाकांडेकोरितेमृत्स्नयावृते ॥ पुटपाकक्रियास्विन्नंपीडयेदारसागमात् । सुखोष्णंतद्रसंकर्णेप्रक्षिपेच्छूलशांतये ॥

अर्थ—आकके अंकुरोंको ले नींबूके रसमें पीसके उसमें तेल और निमक डालके इस कल्कको थूहरके लकडीके भीतर भरके उसपर मिट्टीका लेपकर पुटपाककी विधिसे पचावे, फिर निकालके निचोड लेवे, इस रसको सुखोष्ण कानमें डाले तो शूलको शांति करे ॥

अर्कपत्रस्वरस।

अर्कस्यपत्रंपरिणामपीतमाज्येनलिप्तंशिखियोगतप्तम् ।
आपीड्यतस्यांबुसुखोष्णमेवकर्णेनिषिक्तंहरतेतिशूलम् ॥

अर्थ—आकके पके पत्तेपर घी लगायके अग्निपर तपाय लेवें, फिर इसको निचोडकर इसका सुखोष्ण रस कानमें डाले तो शूलको नाश करे ॥

कर्णशूलचिकित्सा।

तीव्रशूलातुरेकर्णेसरागेक्लेदवाहिनि ।
छागमूत्रंप्रशंसंतिकोष्णंसैंधवसंयुतम् ॥

अर्थ—कानमें तीव्रशूल, रक्तता, लस बहना इत्यादिकोंपर बकराका मूत सैंधानिमक और कूठ, डालकै मंदाष्ण करकै कानमें डाले ॥

स्योनाकतेल।

तैलंस्योनाकमूलेनमंदेग्नौविधिनाशृतम् ।
हरेदाशुत्रिदोषोत्थंकर्णशूलंप्रपूरणात् ॥

अर्थ—श्योनाक (टेंटू) की जडके कल्कको तेलमें मिलाय मंदाग्निपर पचावे, इसको कानमें डाले तो त्रिदोषजनित कर्णशूलको नाशकरे ॥

हिंग्वादि तैल।

हिंगुसैंधवशुंठीभिस्तैलंसर्षपसंभवम् ।
विपक्कंहरतेवश्यंकर्णशूलंप्रपूरणात् ॥

अर्थ-हींग सैंधानिमक, सोंठ, इनके कल्कमें सरसोंका तेल डालकै पचावे इसको कानमें डालितो अवश्य कर्णशूलको नाशकरे ॥

नागरादि तैल।

नागरसैंधवमागधिमुस्ताहिंगुवचालशुनंतिलतैलम्।
अर्कसुपक्कपलाशरसेनकर्णरुजंबधिरंविनिहंति ॥

अर्थ-सोंठ,सैंधानिमक, पीपल, नागरमोथा, हींग, वच और लहलन इनके कल्कमें तिलका तेल डालकै तथा आकका और पलासका रस डालकै सिद्ध करे तो कर्णरोग, वहेरेपना इनको नाश करे ॥

सामान्य यत्न।

कर्णशूलेकर्णनादेबाधिर्येक्ष्वेडएवच।
चतुर्ष्वपिचरोगेषुसामान्यंभेषजंस्मृतम् ॥

अर्थ-कर्णशूल कर्णनाद, बधिरता और क्ष्वेड इन चार व्याधियोंपर सामान्य औषध देवे ॥

कर्णपूरणविधि।

स्वेदयेत्कर्णदेशंतुकिंचिन्नापार्श्वशायिनः। मूत्रैःस्नेहैरसैःकोष्णै स्तच्चश्रोत्रंप्रपूरयेत् ॥ कर्णंचपूरितंरक्षेच्छतंपंचशतानिच। स हस्रंवापिमात्राणांश्रोत्रकंठशिरोगदे ॥

अर्थ-किंचित्पार्श्वकी तरफ सोयकर कानको सेके अर्थात् पसीने निकाले और मूत्र, स्नेह अथवा नस्य ये मंदोष्ण करके कानमें भरे और निकाल देवे, उसी प्रकार भरके सौ पांचसौं,अथवा हजार मात्रा पर्यंत राखे और कंठ तथा शिरो-रोग इनपर यही विधि करे ॥

मात्राका प्रमाण।

स्वजानुतःकरावर्तंकुर्याच्छोटिकयायुतम्।
एषामात्राभवेदेकासर्वत्रैवविनिश्चयः ॥

अर्थ-अपने घोटूपर चारोंतरफ हाथको फेरकै चुटकी वजाना वो एकमात्रा होय है इस प्रकार और जानना ॥

पूरणकाल।

रसाद्यैःपूरणंकर्णेभोजनात्प्राक्प्रशस्यते।
तैलाद्यैःपूरणंकर्णेभास्करेस्तमुपागते ॥

अर्थ–कानमें रसादिक डालने होवे तो भोजनके पूर्व डाले और तैलादिक डालने होय तो सूर्यास्त होनेपर डाले ॥

कर्णनादके लक्षण।

कर्णस्रोतःस्थितेवातेशृणोतिविविधान्स्वरान्।
भेरीमृदंगशंखानांकर्णनादःसउच्यते ॥

अर्थ--वायु कानके छिद्रमें स्थित होनेसे अनेक प्रकारके स्वर तथा भेरी, मृदंग और शंख इनके शब्द सुनाई देवे, इस रोगको कर्णनाद कहते हैं ॥

अपामार्गतैल।

अपामार्गक्षारजलेतत्कृतकल्केनसाधितंतिलजम् ॥
अपहरतिकर्णनादंबाधिर्यंचापिपूरणतः ॥

अर्थ–ओंगाके खारका जल, तथा ओंगाका कल्क, इनमें तिलका तेल डालकै सिद्ध करे इसको कानमें डालनेसे कर्णनाद तथा बहरापना इनको नाश करे ॥

मधुसूक्त।

जंबीराणांफलरसःप्रस्थैकःकुडवोन्मितम्।माक्षिकंतत्रदातव्यं पिप्पलीचपलोन्मिता ॥ घृतभांडेनिधायैतद्धान्यराशौविधार येत्। मासेनतज्जातरसंमधुसूक्तंप्रजायते ॥

अर्थ–नींबूका रस ६४ तोले और सहत ६४ तोले तथा पीपल ४ तोले डालकै घीके भांडेमें भरकै बंदकर देवे फिर धानकी राशिमें गाड देवे, एक महिनेके बाद इसको निकाल लेवे, इसको मधुसूक्त कहते हैं ॥

हिंग्वादितैल।

हिंग्वाब्ददारुनिशिमूलकभस्मभूर्जत्वक्क्षारसिंधुरुचकोद्भिद शिग्रुविश्वैः। सस्वर्जिकाविड्वचांजनमातुलुंगैरंभारसैःसमधु सूक्तमिदंविपक्वम् ॥ तैलंप्रसिद्धमितितच्छ्रवणामयघ्नंकर्णप्र णादबधिरत्वहरंनराणाम्।भ्रूमस्तकश्रवणशष्कुलिकांतरालशू लापहंचरकसुश्रुतपूजितंचम् ॥

अर्थ–हींग, नागरमोथा, देवदारु, सौंफ, मूलीकी भस्म, भोजपत्र, जवाखार, सैंधानिमक, संचरनिमक, सोरा, सहंजना, सोंठ, सज्जीखार, विडनोन, सुरमा, विजोरा, केला इनका रस और मधुसूक्त ये वस्तु डालकै उसमें तिलोंका तेल

डालकै सिद्ध करे, यह कर्णरोग, कर्णनाद, बहरापना और मोह,मस्तक, कान, कानकी पाली, कानका शूल, इनको नाश करे यह चरक और सुश्रुत इनको मान्य है ॥

बाधिर्य ।

यदाशब्दवहंवायुःस्रोतआवृत्यतिष्ठति ।
शुद्धःश्लेष्मान्वितोवापिबाधिर्यंतेनजायते ॥

अर्थ–जिस समय केवल वायु, अथवा कफयुक्त वायु,शब्द वहानेवाली नाडियोंमें स्थित होय,तब उस पुरुषको शब्द सुनाई नहीं देय,अर्थात् बहरा होजाया॥

बिल्वतैल ।

गवांमूत्रेणबिल्वानिपिष्ट्वातैलंविपाचयेत् ।
सजलंचसदुग्धंचतद्बाधिर्यहरंपरम् ॥

अर्थ–गौके मूत्रमें बेलगिरीको पीस उसका जल बकरीका दूध तथा तेल डालकै पचावे, सिद्ध करकै कानमें डाले तो बधिर (बेहरापना) दूर हौय ॥

दीपिकातैल ।

बृहतःपंचमूलस्यकांडान्यष्टांगुलानिच ।क्षौमेणावेष्टचसंसिच्य
तैलेनादीपयेत्ततः ॥ यत्तैलंच्यवतेतेभ्यःसुखोष्णंतेनपूरयेत् ।
ज्ञेयंतद्दीपिकातैलंकुष्टदेवतरोस्तथा ॥

अर्थ–बृहत्पंचमूलोकी डालीको लायकै उसको आठ अंगुल मात्र लेवै, उसमें कपडा लपेट तेलमें डबोयकै जलावै, उससे जो तेल टपकै उसको सुखोष्ण कानमें डाले, इसको दीपिका तेल कहते हैं। इसी प्रकार कूठ, देवदारुसेभी तेल निकाल लेवे ॥

चार योग ।

तैलंकांजिकबीजपूरकरसैःक्षौद्रैःसमूत्रैःशृतंस्यात्क्षौद्रार्द्रकशि
ग्रुमूलकदलीकंदद्रवैर्वासमम्। शुंठीतुंबरुहिंगुभिःशृतमपिस्या
त्कर्णशूलापहंसिद्धंबिल्वगरेणसाजपयसामूत्रेणबाधिर्यजित् ॥

अर्थ–कांजी विजोरेका रस, सहत, गोमूत्र इनसे अथवा सहत, अदरखका रस, सहंजनेके कंदका रस, तथा केलाके कंदका रस इनसे अथवा सोंठ धनिया, हींग इनके कल्कमें अथवा बेलगिरि बकरीका दूध और मूत्र इनमें तल सिद्ध करके कानमें डाले तो बहेरेपनेको नाश करे ॥

निर्गुंड्यादि तैल।

निर्गुंडिजातिरविभृंगरसोनरंभाकार्पासशिग्रुसुरसार्द्रककारवेल्यः।
एषांरसेतिलभवंसविषंसुकर्णबाधिर्यनादकृमिवदेनपूययुक्ते॥

अर्थ–निर्गुंडी चमेलीके पत्ते, आक, भांगरा, लहसन, केला, कपास, सहंजना, तुलसी, अदरख, करेला इनके रसमें तिलोंका तेल डालके उसमें सिंगिया विष डाले फिर अग्निपर पचावे जब सिद्ध हो जावे तब कानमें डाले तो बहरापना कर्णनाद कानकी कृमि, दर्द और राधका वहना इनको नाश करे॥

कर्णक्ष्वेडके लक्षण।

वायुःपित्तादिभिर्युक्तोवेणुघोषसमंस्वनम्।
करोतिकर्णयोःक्ष्वेडंकर्णक्ष्वेडःसउच्यते॥

अर्थ–पित्तादि दोषोंकरके युक्त वायु कानोंमें वेणु (वंसी) का शब्द सुनाई देता है उसको कर्णक्ष्वेड कहते हैं॥

कर्णस्रावको उपचार।

शंबूकस्यतुमांसेनकटुतैलंविपाचयेत्।
तस्यपूरणमात्रेणकर्णक्ष्वेडःप्रशाम्यति॥

अर्थ–कडुवा तैलमें जलशुक्तिका मांस पकायके कर्णमें पूरण करनेसे कर्णस्राव बंद हो जाता है॥

कर्णकंडके लक्षण।

मारुतःकफसंयुक्तःकर्णकंडूंकरोतिच॥

अर्थ–कफसे मिलाहुआ वायु कानोंमें खुजली उत्पन्न करता है॥

कर्णगूथके लक्षण।

पित्तोष्मशोषितः श्लेष्माजायतेकर्णगूथकः॥

अर्थ–पित्तकी गरमीसे कफ सूखकर कानमें मैल जमे, उसको कर्णगूथ कहते हैं॥

सामान्ययत्न।

कर्णस्रावेपूतिकर्णेतथैवकृमिकर्णकम्।
सामान्यंकुर्मकर्वीतयोगान्वैशेषिकानपि॥

अर्थ–कर्णस्राव, पूतिकर्ण, उसी प्रकार कृमिकर्ण, इनपर सामान्य उपचार करे, तथा विशेषभी करने चाहिये॥

बीजपूररस।

स्वर्जिकाचूर्णसंयुक्तंबीजपूररसंक्षिपेत् ॥
कर्णस्रावरुजादौतुप्रशस्तंनात्रसंशयः ॥

अर्थ-विजोरेके रसमें सज्जीखार डालके कानमें डाले, तो कर्णस्राव, और पीडा इनपर उत्तम है ॥

समुद्रफेनचूर्ण।

समुद्रफेनचूर्णंतुन्यस्तंश्रवणसश्रवे ॥
पूयस्रावंव्रणंसांद्रंहंतिध्वांतमिवांशुमान् ॥

अर्थ-समुद्रफेनके चूर्णको कानमें डाले तो राधका वहना, व्रण, चीकट इनको नाश करे ॥

सर्जत्वक्चूर्ण।

सर्जत्वक्चूर्णसंयुक्तःकार्पासीफलजोरसः।
मधुसंमिश्रितःसाधुःकर्णस्रावेप्रशस्यते ॥

अर्थ-कपासके फलके रसमें रालके वृक्षकी छालका चूर्ण, तथा सहत डालके कानमें गेरे तो कर्णस्रावपर परमोत्तम है ॥

कर्णप्रक्षालन।

कर्णप्रक्षालनेशस्तंकवोष्णंसुरभीजलम्।
पथ्यामलकमंजिष्ठालोध्रतिंदुकवास्तुवा ॥

अर्थ--गोमूत्रको ओटाय मंदोष्ण करके इससे कान धोवे, तथा हरड, आँवले, मजीठ, लोध, कुचला, किंवा पुनर्नवा, इनका रस, तथा काढे, कर्ण प्रक्षालन विषयमें उत्तम है ॥

राजवृक्षादि प्रक्षालन।

राजवृक्षादितोयेनसुरसादिजलेनवा।
कर्णप्रक्षालनंकुर्य्याच्चूर्णैरेतैस्तुपूरणम् ॥

अर्थ-अमलतासका काढा अथवा तुलसीका रस, इनसे कान धोवे, अथवा इनके चूर्णको कानमें डाले ॥

रसांजनयोग।

घृष्टंरसांजनंनार्याः क्षीरेणक्षौद्रसंयुतम्।
प्रशस्यतेचिरोत्थेतत्सस्रावेपूतिकर्णके ॥

अर्थ--रसोतको स्त्रीके दूधमें घिसके उसमें सहत मिलायके इसको बहुत दिनके कर्णस्रावपर कानमें डालना उत्तम है ॥

कुष्ठादि तैल ।

कुष्ठंहिंगुवचादारुशताह्वाविश्वसैंधवैः ।
पूतिकर्णहरंतैलंबस्तमूत्रेणसाधितम् ॥

अर्थ--कूठ, हींग, वच, देवदारु, शतावर, सोंठ सैंधानिमक, इनका कल्क बकरीके मूत्रमें पचायके तेल सिद्ध करे तो पूतिकर्णका नाश करे ॥

कर्णस्रावचिकित्सा ।

जंब्वाम्रपत्रंतरुणंसमांशंकपित्थकार्पासफलंचसार्द्रं । हृत्वार संतन्मधुनाविमिश्रंस्रावापहंसंप्रवदंतितज्ज्ञाः ॥ एतैःशृतंनिंब करंजतैलंससार्षपंस्रावहरंप्रदिष्टम् ॥

अर्थ--जामुन, आँव इनके पके पत्ते समान भाग ले, गीला कपासका फल ले उसका रस निकाल ले, फिर सहत डालके उसको कानमें डाले, तो कर्णस्रावको नाश करे और ऊपर कही हुई औषध, तथा नींबकी छाल और कंजा इनके कल्कको तेलमें डालके सिद्ध करे, यह कर्णस्रावको नाश करे ॥

कर्णकंडूचिकित्सा ।

स्नेहःस्वेदोथवमनंधूमंमूर्ध्निविरेचनम् ।
विधिश्चकफहासर्वःकर्णैःकंडुमतीष्यते ॥

अर्थ--कंडुयुक्त कर्णपर स्नेह, स्वेद, वांति, धूम, मस्तकरेचन और संपूर्ण कफनाशक विधि करनी चाहिये ॥

कर्णमलपर ।

प्रक्लेद्यधीमान्तैलेनप्रविलाप्यचशोधनम् ।
कर्णगूथंतुमतिमान्भिषक्जह्याच्छलाकया ॥

अर्थ--कानमें मैल होनेसे प्रथम उसमें तेल डाल फिर शोधनकी वस्तुडाले और हलकी सलाई डालकै उस मैलको निकाल देवे ॥

कर्णरोगकी सामान्य चिकित्सा ।

रास्नामृतैरंडसुराह्वविश्वंतुल्यंपुरेणोपविमृश्यखादेत् ।
वातामयीकर्णशिरोगदीचनाडीव्रणीचापिभगंदरीच ॥

अर्थ--रास्ना, गिलोय, अंडकीजड, देवदार, सोंठ ये समान भाग एकत्र करकै वातरोगी, कर्णरागी, शिरोरोगी, नाडीव्रणी और भगंदरी ये भक्षणकरे ॥

कर्णप्रतिनाह।

सकर्णगूथोद्रवतांयदागतोविलायितोघ्राणमुखंप्रपद्यते।
तदासकर्णप्रतिनाहसंज्ञितोभवेद्विकारःशिरसोऽर्द्धभेदकृत् ॥

अर्थ–वही कानका मैल पतला होनेसे,अथवा स्नेह खेदादिकोंकरके पतला होकर मुख और नाकमें प्राप्त होय, तब उसको कर्णप्रतिनाह कहतेहैं, इस रोगसे अर्द्धशिर (आधासीसी) का विकार होताहै ॥

चिकित्सा।

अथकर्णप्रतीनाहेस्नेहस्वेदौप्रयोजयेत्।
ततोविरक्तशिरसःक्रियांप्रोक्तांसमाचरेत् ॥

अर्थ–कर्णप्रतिनाह होनेसे स्नेहन, स्वेदन और मस्तकरेचन देकर फिर उक्त क्रिया करनी चाहिये ॥

कृमिकर्णके लक्षण।

यदातुमूर्च्छंत्यथवापिजंतवःसृजंत्यपत्यान्यथवापिमक्षिकाः।
तदंजनत्वाच्छ्रवणोनिरुच्यतेभिषग्भिराद्यैःकृमिकर्णकोगदः ॥

अर्थ–जिस समय कानमें कीडे पडजाय अथवा मक्खी अंडाधरे, तब कृमि लक्षण करके इस रोगको कृमिकर्ण कहते हैं ॥

सामान्य यत्न।

कृमिकर्णविनाशायकृमिघ्नींकारयेत्क्रियाम्।
वार्ताकधूमश्चहितःसार्षपःस्नेहएवच ॥

अर्थ–कानकी कृमिका नाश करनेको कृमिनाशक क्रिया करे और कटेरीके फलोंकी धूनी तथा सरसोंका तेल ये हितकारक है ॥

हरितालादि धूप।

पूरितंहरितालेनगव्यमूत्रयुतेनच।
धूपयेत्कर्णदौर्गंध्येगुग्गुलुःश्रेष्ठउच्यते ॥

अर्थ–गोमूत्रमें हरतालको घिसके कानमें डाले तथा गूगलकी धूनी देवे तो कानकी दुर्गंधको नाशकरनेमें उत्तम है ॥

कृमिकर्णयोगचतुष्टय।

सूर्यावर्तकस्वरसंरसंवासिंधुवारजम्। लांगलीमूलतोयंवात्र्यू
षणंवापिचूर्णितम् ॥ एतेयोगास्तुचत्वारोपूरणात्कृमिकर्णके।
कृमीन्निर्मूलयंत्याशुशतपद्यसृपादिकान् ॥

अर्थ-नीला भांगरेका रस, अथवा सहंजनेका रस, अथवा कलियारीके कंद-का रस, अथवा सोंठ, मिरच, पीपल, इनके चूर्णको ये चार योग कृमिकर्णपर कानमें डाले तो कृमि, कानसलाई, काँतर आदिको नाश करे॥

गोमक्षिकाकानमें चलीगई होयतो चिकित्सा।

दंतेनचर्वयेन्मूलंनंद्यावर्तपलाशयोः।
तल्लालापूरितेकर्णेध्रुवंगोमक्षिकांजयेत्॥

अर्थ-तगर और पलास इनकी जड दाँतोंसे चवायके उसकी लारको कानमें थूके तो तत्काल गोमक्षिकाको नाश करे॥

कृमिकर्णकायत्न।

हलिरविभक्तिव्योषानेकीकृत्यप्रकल्पयेदेतान्। वसनांतररसेन श्रवणेपरिपूरयेद्युक्त्या॥ कर्णजलौकानियतंकृमिकोटपिपीलिकस्तथान्येपि। निपतंतिनिर्विशेषाःकारंडाश्चापिमुंडस्थाः॥

अर्थ-कलियारी, नीला भाँगरा, सोंठ, मिरच, पीपल, इनको एकत्र करके कपडेमें बाँध उस पोटलीको युक्तिसे कानमें निचोडदेवे, तो कर्ण जलौका कृमि, कीडा, चैटी और मस्तकके कारंड ये गिरजावे॥

कानमेंपतंगादिकीटचलेजानेपरयत्न।

पतंगाःशतपद्यश्चकर्णस्रोतःप्रविश्यहि॥अरतिंवाकुलत्वंचभृशं कुर्वंतिवेदनाम्॥ कर्णोनिस्तुद्यतेयस्यतथाफुरफुरायते। कीटेचरतिरुक्तीव्रानिष्यंदेमंदवेदना॥

अर्थ-पतंग, गिजाई, अथवा कनखजूरा ये कानमें चली जावे तो चैन नही पडे, जीव व्याकुल होय तथा कानमें पीडा तथा नोचनेकीसी पीडा तथा फरफराहट और कीडेके कानमें फिरनेसे अत्यंत पीडा होय और जब वह बंद होजावे तब पीडा बंद होवे।

कर्णविद्रधि।

क्षताभिघातप्रभवस्तुविद्रधिर्भवेत्तथादोषकृतोपरःपुनः।
सरक्तपीतारुणरक्तमास्रवेत्प्रतोदधूमायनदाहचोषवान्॥

अर्थ-कानमें खुजानेसे व्रण होजाय, अथवा चोट लगनेसे कानमें व्रण होकर विद्रधि होय, उसीप्रकार वातादि दोषों करके दूसरे प्रकारकी विद्रधि होय है, जब वह फूटे तब उसमेंसे लाल पीला रुधिर बहे, नोचने कीसी पीडा होवे, धुआंसा निकलता मालूम होवे, दाह, होवे, चूसने कीसी पीडा होवे॥

चिकित्सा।

विद्रधौवापिकुर्वीतविद्रध्युक्तंचिकित्सितम्।

अर्थ-कर्ण विद्रधिपर सामान्य विद्रधिकी चिकित्सा करे॥

कर्णपाक।

कर्णपाकस्तुपित्तेनकोथविक्लेदकृद्भवेत्।
कर्णविद्रधिपाकाद्वाजायतेचांबुपूरणात्॥

अर्थ-पित्तसे अथवा कान पकनेसे अथवा कानमें पानी जानेसे कर्णपाक रोग होवे उस करके कान सड जावे और गीला रहे॥

पूतिकर्णके लक्षण।

पूयंस्रवतिवापूतिसज्ञेयःपूतिकर्णकः॥

अर्थ-जिसके कानमें राध निकले, वा वास आवे, उसको पूतिकर्ण कहते हैं॥

चिकित्सा।

आम्रजंबूप्रवालानिमधूकस्यवटस्यच।
एभिस्तुसाधितंतैलंपूतिकर्णगदंहरेत्॥

अर्थ-आंब, जामुन, महुआ और बड इनके नरम २ पत्तोंके कल्कमें तैल सिद्ध करे, यह पूतिकर्णको नाश करे॥

जाती पत्रादि तैल।

जातीपत्ररसेतैलंविपक्कंपूतिकर्णजित्॥

अर्थ-चमेलीके पत्तोंके रसमें तेलको पचायके सिद्ध करे, यह पूतिकर्णके नाश करे॥

कर्णपाककी सामान्य चिकित्सा।

कर्णपाकस्यभैषज्यंकुर्यादितिविसर्पवत्॥

अर्थ-कर्णपाकपर विसर्पके ऊपरकी औषधक्रिया करे॥

गंधक तैल।

चूर्णेनगंधकशिलारजनीभवेनमुष्टचंशकेनकटुतैलपलाष्टकंतु।
धत्तूरपत्ररसतुल्यमिदंविपक्कंनाडींजयेच्चिरभवामपिकर्णजाताम्॥

अर्थ-गंधक, मनसिल, दलही इनका चार २ तोले चूर्ण ले उसमें सरसोंका तेल ३२ तोले डाले और बत्तीस तोलेही धतूरेका रस डाले और पचावे तो बहुत दिनकी कर्णनाडीको नष्ट करे इसे गंधकतेल कहते हैं॥

कर्णार्बुदादि रोग।

कर्णशोथार्बुदार्शांसिजानीयादुक्तलक्षणैः ॥

अर्थ–कानकी सूजन, कानका अर्बुद और कानकी अर्श (बवासीर) ये रोग होय तो इनके लक्षण उसी उसी निदानके द्वारा जानने, कुछ थोडेसे यहां लिख भी देते हैं। कर्णशोथ चार प्रकारकी है वात पित्त कफ रक्तजेके भेदसे इसी प्रकार कर्णार्श कानकी बवासीर भी चार ही प्रकारकी है, चारसे विशेष शोथ अर्शका होना असंभव है यासे चार ही है। कर्णार्बुदरोग–सात प्रकारका है, वात, पित्त, कफ रुधिर, मांस, मेदा और शिरा इनके भेदसे अब कहते हैं कि, कर्णरोग सुश्रुतके मतसे २८ प्रकारके हैं, परंतु चरकके मतसे चार ही हैं उनको कहते हैं ॥

सामान्य यत्न।

चिकित्साकर्णशोथानांतथाकर्णार्शसामपि।
कर्णार्बुदानांकुर्वीतशोथार्शोर्बुदवद्भिषक् ॥

अर्थ–कर्ण शोथ, कर्णार्श, कर्णार्बुद इनकी सूजन कानकी बवासीर और अर्बुदके सदृश चिकित्सा करनी चाहिये ॥

चरकोक्त रोग चतुष्टय।

नादोतिरुक्कर्णमलस्यशोषःस्रावस्तनुश्चाश्रवणंचवातात् ॥

अर्थ–वादीसे कानमें शब्द होय, पीडा होय, कानका मैल सूख जाय, पतला स्राव होय, सुनाई नहीं देवे, अर्थात् बहरा होजाय ॥

चिकित्सा।

कर्णशूलेकर्णनादेबाधिर्येक्ष्वेडएवच।
पूरणंकटुतैलेनहितंवातघ्नमौषधम् ॥

अर्थ–कर्णशूल, कर्णनाद, बहरेपना, क्ष्वेड इनपर कानमें सरसोंका तेल डाले तथा वातनाशक उपचार करे तो हितकारी होय ॥

पित्तज कर्णरोग।

शोथःसरागोदरणंविदाहःसपीतपूतिस्रवणंचपित्तात् ॥

अर्थ–पित्तसे कानमें सूजन होय, कान लालहो, दाह हो, चिरासा होजाय तथा किंचित पीला दुर्गंधियुक्त स्राव होय ॥

कफजके लक्षण।

वैश्रुत्यकंडूस्थिरशोथशुक्लास्निग्धास्रुतिःश्लेष्मभवेतिरुक्च ॥

अर्थ–कफके प्रभावसे विरुद्ध सुनना खुजली चले कठिन सूजन होय, सपेद और चिकना ऐसा स्राव होय ॥

संनिपातजके लक्षण।

सर्वाणिरूपाणिचसन्निपातात्स्रावश्चतत्राधिकदोषवर्णः ॥

अर्थ–सन्निपातसे सब लक्षण होय, स्राव होय, वा जौनसा दोष अधिक होय वैसाही दोषानुसार वर्णका स्राव होय ॥

परिपोटक कर्णशोथ।

सौकुमार्याच्चिरोत्सृष्टेसहसापिप्रवर्धिते।
कर्णशोथोभवेत्पाल्यांसरुजःपरिपोटवान् ॥

अर्थ–सुकुमार स्त्री अथवा बालकके कानकी लौरको एक साथ बहुत बढावै तौ कानकी पालीमें (लौरमें) सूजन होकर फूल जावै और दूखे ॥

परिपोटकलक्षण।

कृष्णारुणनिभःस्तब्धःसवातात्परिपोटकः ॥

अर्थ–वादीसे काला लाल और कठिन ऐसा फूल जाय, उसको परिपोटक कहते हैं ॥

यत्न।

जीवनीयस्यकल्केनतैलदुग्धेनपाचयेत्।
चिकित्सितेनतैलेनहृतास्रपरिपोटकम् ॥

अर्थ–परिपोटकका प्रथम रुधिर निकालके फिर जीवनीय गणका कल्क दूध और तेल इनको एकत्र करकै पचावै, इस तेलको कानमें डाले, तो परिपोटक शांति होय ॥

शतावरी तैल।

शतावरीवाजिगंधापयस्यैरंडबीजकैः।
तैलंविपक्वंसक्षीरंपालींसंवर्धयेत्सुखम् ॥

अर्थ–शतावर, असगंध, दहीका जल, अंडी इनके कल्कमें दूध और तेल डालके पचावे, यह कर्णपालीको सुखपूर्वक बढावे ॥

उत्पात।

गुर्वाभरणसंयोगात्ताण्डवाद्धर्षणादपि। शोथःपाल्यांभवेच्छ्या वोदाहपाकरुजान्वितः। रक्तोवारक्तपित्ताभ्यामुत्पातःसगदोमतः॥

अर्थ-कानमें भारी आभरण (गहना) पहननेसे, अथवा चोटके लगनेसे अथवा कानको खींचनेसे,रक्तपित्त कुपित होकर कानकी पालीमें हरा, नीला, अथवा लाल सूजन होय उसमें दाह होवै, पीडा होवे और रक्तबहे, इस रोगको उत्पात कहते हैं॥

उत्पातकी चिकित्सा।

शीतैर्जलैर्जलौकाभिरुत्पातंसमुपाचरेत्॥

अर्थ-शीतल जल और जोखका लगाना,इनसे उत्पात रोगपर चिकित्सा करे।

उन्मंथकके लक्षण।

कर्णबलाद्वर्धयतःपाल्यांवायुःप्रकुप्यति॥ सकफंगृह्यकुरुतेस शोफंस्तब्धवेदनम्। उन्मंथकःसकंडूकोविकारःकफवातजः॥

अर्थ--कानको बलपूर्वक बढानेसे पालीमें(लौरमें)वायु कुपित होकर कफको संग लेकर कठिन तथा मंद पीडायुक्त सूजनको प्रगट करे, उसमें खुजली चले, इस कफवातजन्य विकारको उन्मंथक कहते हैं॥

जीवनीय तैल।

जीवंत्याचाश्वगंधार्कबाकुचीबीजसैंधवैः॥ हलिनीसुरसाभ्यांच गोधाकंकवसान्वितम्। तैलंविपक्वमभ्यंगादुन्मंथंनाशयेद्ध्रुवम्॥

अर्थ-जीवंती, असगंध, आक, बावचीके बीज सैंधानिमक कलियारी तुलसी और गोह, तथा कंक पक्षीकी चर्बी और तेल इनको एकत्र करे इसकी मालिस करनेसे उन्मंथक रोग नष्ट होय॥

दुःखवर्द्धन।

संवर्ध्यमानेदुर्विद्धेकंडूदाहरुजान्वितः।
शोफोभवतिपाकश्चत्रिदोषोदुःखवर्धनः॥

अर्थ-दुष्टरीति करके कानको छेदनेसे, तथा बढानेसे, खुजली दाह पीडा युक्त ऐसी सूजन होय, वह पकजाय उसको दुःखवर्द्धन कहते हैं॥

दुःखवर्धनकी चिकित्सा।

दुःखवर्धनकंसिक्त्वाजंम्बाम्राश्वत्थपत्रजैः।

क्काथैस्तैलेनसुस्निग्धंतच्चूर्णैश्चावधूलयेत् ॥

अर्थ-जामुन आंब और पीपल इनके काढेसे सिंचन करकै फिर तैल और स्निग्ध चूर्ण ऊपर डाले ॥

परिलेहीके लक्षण।

कफासृक्कृमिसंभूतःसविसर्पन्नितस्ततः।
लिहेच्चशष्कुलींपालींपरिलेहीत्यसौस्मृतः॥

अर्थ-कफ रक्त कृमिसे उत्पन्न भई तथा सर्वत्र विचरनेवाली ऐसी जो सूजन कानकी पालीमें होय, वो कानकीपालीको खाय जाय, अर्थात् उसका मांस झरने लगे, उसको परिलेहि कहते हैं ॥

मतांतर।

कफासृक्कृमयःक्रुद्धाःसर्षपाभाविसर्पिणः ॥ कुर्वंतिपिटिकाः पाल्यांकंडूदाहरुजान्विताः। लिह्यात्सशष्कुलींपालींपरिलेही सचस्मृतः ॥

अर्थ-कफ, रुधिर, कृमि, कुपित होनेसे कर्णलतामें सरसोंके सदृश फैलनेवाली पिटिका उत्पन्न होजाती है और इनमें कंडू दाह पीडा होजाती है ऐसे होनेसे शष्कुली सहित कर्णपालीको ये पिटिका खाजाती है इसको परिलेही कहते हैं ॥

परिलेहीकी चिकित्सा।

बहुशोगोमयैस्तप्तंस्वेदितंपरिलेहितम्।
घनसारैःसमालिंपेदजामूत्रेणकल्कितैः ॥

अर्थ-परिलेहीको बारबार सेक करके पसीने निकाले धोयडाले, फिर बकरीके मूत्रमें चंदन घिसकै लेप करे ॥

असाध्यकर्णरोग निदान।

मूर्च्छादाहोज्वरःकासःक्लमोथवमथुस्तथा।
उपद्रवाःकर्णशूलेभवंत्येतेमरिष्यतः ॥

अर्थ-मूर्च्छा, दाह, ज्वर, कास, ग्लानि, वमन ये उपद्रव जिस कर्णशूलमें होवें वह असाध्य कहना ॥

कर्णरोग पथ्य।

स्वेदोविरेकोवमनंनस्यंधूमः शिराव्यधः । गोधूमाः शालयो

मुद्गायवाश्वप्रतनंहविः । लावौमयूरोहरिणस्तित्तिरिर्वनकुक्कुटः ॥ पटोलंशिग्रुवार्ताकंसुनिषण्णंकठिल्लकम् । रसायनानि सर्वाणिब्रह्मचर्यमभाषणम् ॥ उपयुक्तंयथादोषमिदंकर्णामये हितम् ॥

अर्थ-स्वेदन, विरेचन, वमन, नास, धुआँ, नसका वेधना, गेहूँ, चावल, मूंग, जौ, पुराना घी, लवा, मोर, हरिण, तीतर, वनमुर्गा, परवर, सहिंजना, बैंगन, विषखपरेका साग, करेला और सब रसायन वस्तु, ब्रह्मचर्य्य और न बोलना, दोषके अनुसार ये सब कर्णरोगमें पथ्य है ॥

कर्णरोगमें अपथ्य।

दंतकाष्ठंशिरःस्नानंव्यायामंश्लेष्मलंगुरु ।
कंडूयनंतुषारंचकर्णरोगीपरित्यजेत् ॥

अर्थ-दँतून करना, शिरधोना, कसरत, कफ करनेवाला भोजन, भारी भोजन, खाजकराना, ठंढ, इनको कर्णरोगवाला त्याग देवे ॥

इति श्रीबृहन्निघंटुरत्नाकरे कर्णरोगस्य निदानचिकित्सा समाप्ता ।

नासारोग।

पीनसनिदान ।

आनह्यतेयस्यविशुष्यतेचप्रक्लिद्यतेधूप्यतिचैवनासा । नवेत्ति योगंधरसांश्चजंतुर्जुष्टंव्ययस्येत्सतुपीनसेन । तंचानिलश्लेष्मभवंविकारंब्रूयात्प्रतिश्यायसमानलिंगम् ॥

अर्थ-जिसकी नाक रुकजाय, वातशोषित कफसे नाक भीतरसे सूखीसी रहे, गीली रहे, धुआंसा निकले, जिसकी नाकमें सुगंधि दुर्गंध मिष्टरसादिककी गंधि मालूम न हो, उसके पीनस प्रगट भई जाननी, इस वातजन्य विकारको प्रतिश्याय (पीनस) कहते हैं ॥

संप्राप्ति ।

अवश्यायानिलरुजोभाषातिस्वप्नजागरैः । निर्वात्युच्चोपधाने नपीतेनान्येनवारिणा ॥ अत्यंबुपानाद्रमणच्छर्दिर्बाष्पग्रहादिभिः । क्रुद्धावातोल्बणादोषानासायांस्रुतरांगताः ॥

अर्थ-ठंढ, वायु रोग, अति बोलना, अतिसोवना, अतिजागना, हवाबंद स्थानमें रहना, ऊंचा तकिया लगाकर सोना, दूसरेके हाथसे जल पीना, अति जल पीना, बहुत चलना, छर्दि, वाफ, ग्रह इन करके क्रुद्ध हुए वातादि दोष नासिकामें प्राप्त हुए रोग उत्पन्न कर देते हैं ॥

नासारोगके नाम।

आदौचपीनसःप्रोक्तःपूतिनासस्ततः परम्। नासापाकोत्रगणितःपूयशोणितमेवच ॥ क्षवथुर्भ्रंशथुर्दीप्तःप्रतिनाहःपरिस्रवः। नासाशोषःप्रतिश्यायाःपंचसप्तार्बुदानिच ॥ चत्वार्यर्शांसिचत्वारः शोथाश्चत्वारितानिच। रक्तपित्तानिनासायांचतुस्त्रिंशद्गदाःस्मृताः ॥

अर्थ-पीनस, पूतिनास, नासापाक, पूयशोणित, क्षवथु, भ्रंशथु, दीप्त, प्रतिनाह, परिस्राव, नासाशोष, प्रतिश्याय ५, अर्बुदा ७, अर्श ४, शोथ ४, रक्तपित्त ४ इस प्रकार ३४ नासारोग कहे हैं ॥

पीनसकी चिकित्सा।

सर्वेषुपीनसेष्वादौनिवातागारगोभवेत्। सिरसोभ्यंजनैःस्वेदैर्नस्यैर्मंदोष्णभोजनैः। वमनैर्घृतपानैश्चतान्यथास्वमुपाचरेत् ॥

अर्थ-संपूर्ण पीनस रोगियोंको प्रथम निर्वात स्थानमें रहना, तथा मस्तक पर अभ्यंग करे, नस्य देवे तथा मंदोष्ण भोजन, वांति, घृतपान इनको यथा दोष उपचार करे ॥

सर्वपीनसों पर।

सर्वेषुसर्वकालंपीनसरोगेषुजातमात्रेषु।
मरिचंगुडेनदध्नाभुंजीतनरःसुखंलभते ॥

अर्थ-सर्व कालमें कोई सा पीनस होनेसे दहीमें मिरच और गुड डालके भक्षण करे तो सुख होय ॥

पंचमूल्यादियूष।

पंचमूलीयुतंक्षीरंकिंवास्याच्चित्रकाभया।
सर्पिर्गुडोविडंगश्चयूषःपीनसशांतये ॥

अर्थ-पंचमूल, दूध, अथवा चित्रक, हरड, घी, गुड और वायविडंग इनका यूष सिद्ध करके देवे तो पीनसकी शांति करे ॥

गुडादियोग।

गुडमरिचविमिश्रंपीतमासुप्रकामंहरतिदधिनराणांपीनसंदुर्निवारम्। यदितुसघृतमन्नंश्लक्ष्णगोधूमचूर्णैःकृतमुपहरतेसौतत्कुतोस्यावकासः ॥

अर्थ–गुड मिरचका चूर्ण दहीमें मिलायके खाय तो दुर्निवार पीनसका नाश होय इसपर घीमें ह्रुत गेहूँकी रोटी भक्षण करना पथ्य है ॥

वेल्लगोधूमयोग।

वेल्लगोधूमभोजोचनिद्राकालेचशीतलम्।
जलंपिबतियोरोगीपीनसान्मुच्यतेनरः ॥

अर्थ--मिरचका चूरा गेहूँके पदार्थ भक्षण करके शयनके समय शीतल जल पीवे तो पीनससे मुक्त हो जाय ॥

पूतिनस्यके लक्षण।

दोषैर्विदग्धैर्गलतालुमूलेसंमूर्च्छितोयस्यसमीरणस्तु।
निरेतिपूतिर्मुखनासिकाभ्यांतंपूतिनस्यंप्रवदंतिरोगम् ॥

अर्थ–गले और तालुवेमें दुष्ट भया पित्त रक्तादि दोष करके वायु मिश्रित होकर नाक और मुखके मार्गोंसे दुर्गंधि निकले इस रोगको पूतिनस्य कहते हैं ॥

व्याघ्रीतैल।

व्याघ्रीदंतीवचाशिग्रुसुरसाव्योषसैंधवैः।
सिद्धंतैलंनसिक्षिप्तंपूतिनासागदापहम् ॥

अर्थ–कटेरी, दंती, वच, सहिंजना, रास्ना, सोंठ, मिरच, पीपल और सैंधानिमक इनके कल्कमें अथवा काढेमें तेलको सिद्ध करके उसको नाकमें डाले तो पूतिनस्य रोगका नाश होय ॥

शिग्रुतैल।

शिग्रुसिंहीनिकुंभानांबीजैःसव्योषसैंधवैः।
बिल्वपत्ररसेसिद्धंतैलंस्यात्पूतिनस्यनुत् ॥

अर्थ--सहिंजना, कटेरी, निकुंभ इनके फल, सोंठ, मिरच, पीपल और बेलपत्रका रस इस तेलको सिद्ध करके नाकमें डाले तो पूतिनासाका नाशकरे ॥

नासापाक।

घ्राणाश्रितंपित्तमरूंषिकुर्याद्यस्मिन्विकोरबलवांश्चपाकः।

तन्नासिकापाकमितिव्यवस्येद्विक्लेदकोथावथवापियत्र ॥

अर्थ—जिसकी नाकमें पित्त दूषित होकर फुंसी प्रगटकरे और नाकभीतरसे पकजाय, उसको नासिकापाक कहते हैं इसमें नाकसे राधबहै ॥

चिकित्सा।

नासापाकेपित्तनाशंविधानंकार्यंसर्वंबाह्यमभ्यंतरंच।
हरेद्रक्तंक्षीरवृक्षत्त्वचश्चयोज्याःसेकेसघृताश्चप्रलेपाः ॥

अर्थ—नासापाक होनेसे सर्व पित्तनाशक चिकित्सा करनी और बाहरसे तथा भीतरसे रुधिर निकालना तथा सेकके विषयमें क्षीर वृक्षोंकी छालोंके काढे और घृतयुक्त लेप देवे ॥

सर्जकषाय घृत।

सर्जार्जुनोदुंबरवत्सकानांत्वचाकषायैःपरिधावनेन।
कषायकल्कैरपिचेभिरेवसिद्धंघृतंघ्राणविपाकनाशि ॥

अर्थ--राल, कोहवृक्ष, गूलर, कूडा, इनकी छालका काढा करके उससे नासापाकको धोवे तथा इन्हीं पदार्थोंका काढा अथवा कल्कमें घृत सिद्ध करे तो नासापाकको नाशकरे ॥

व्योषादि गुटी।

व्योषाचित्रकतालीसतिन्तिडीचाम्लवेतसम्। सचव्याजाजितुल्यांशमेलात्त्वक्पत्रपादिकम् ॥ व्योषादिकमिदंचूर्णंपुराणगुडमिश्रितम्। पीनसश्वासकासघ्नरुचिस्वरकरंपरम् ॥

अर्थ—सोंठ, मिरच, पीपल, चित्रककी छाल, तालीसपत्र, इमली, अमलवेत, चव्य, जीरा ये समान भाग लेवे, तथा इलायची, दालचीनी, पत्रज ये चतुर्थांश, इनके चूर्णको पुराने गुडमें मिलायके गोली बनायले तो पीनस, श्वास, खाँसी इनको नाशकरे तथा रुचि उत्पन्न करे ॥

कट्फलादिचूर्ण।

कट्फलंपौष्करंशृंगीव्योषंयासश्चकारवी ॥ एषांचूर्णंकषायंतु दद्यादार्द्रकजैरसैः। पीनसेस्वरभेदेचतमकेसहलीमके ॥

अर्थ—कायफल, पुहकरमूल, कांकडासिंगी, सोंठ, मिरच, पीपल और सौंफ इनका काढा अथवा चूर्ण करके अदरखके रससे पीनस, स्वरभंग, तमक श्वास हलीमक, संनिपात, कफ, वात, खाँसी और श्वास इनपर देना उत्तम है ॥

पाठादितैल।

पाठाद्विरजनीमूर्वापिप्पलीजातिपल्लवैः॥
एभिश्चतैलंसंसिद्धंनस्यतःपीनसापहम्॥

अर्थ-पाठ, हलदी, दारुहलदी, मूर्वा, पीपल इनका काढा चमेलीके पत्तोंका रस, इनमें तेल सिद्ध करके उसकी नस्य देवे, यह पीनसको नष्ट करे॥

पूयरक्तके लक्षण।

दोषैर्विदग्धैरथवापिजंतोर्ललाटदेशेभिहतस्यतैस्तैः।
नासास्रवेत्पूयमसृग्विमिश्रंतंपूयरक्तंप्रवदंतिरोगम्॥

अर्थ-दोष दुष्ट होनेसे अथवा कपालमें चोट लगनेसे नाकमेंसे राध बहे और रुधिरबहे इस रोगको पूयरक्त कहते हैं॥

चिकित्सा।

पूयास्रेरक्तपित्तघ्नाःकषायानावनानिच।
पाकदाहादिरोगेषुशीतलेपादिकाःक्रियाः॥

अर्थ-पूयास्रयुक्त नासारोगपर रक्तपित्तनाशक ऐसे क्वाथ, नस्य, इत्यादिक उपचार करे तथा पाक दाह ये उत्पन्न होनेसे शीतल लेप, सेक इत्यादिक क्रिया करे॥

षड्बिंदुघृत।

भृंगंलवंगंमधुकंचकोष्ठंसनागरंगोघृतमिश्रितंच।
षड्बिंदुनास्यास्थिगतंचपीनसंशिरोगतंरोगशतंनिहंति॥

अर्थ-भाँगरा, लांग, मुलहटी, कूठ और सोंठ इनके काढेमें तेल सिद्ध करकै उसकी नस्य देवे तो अस्थिगत, तथा शिरोगत पित्त रोगोंको नाश करकै और भी सैकडों रोगोंको नाश करे॥

कलिंगादि अवपीडन।

कलिंगहिंगुमरिचंलाक्षास्वरसकट्फलैः।
कुष्ठोग्राशिग्रुजंतुघ्नैरवपीडःप्रशस्यते॥

अर्थ-कूडाकीछाल, हींग, मिरच, लाखकाशीरा, कायफल, कूठ, वच और बायविडंग, इनका कल्क नाकमें निचोडे तो पूयरक्त नासिकाका रोग दूर होय॥

क्षवथू।

घ्राणाश्रितेमर्मणिसंप्रदुष्टोयस्यानिलोनासिकयानिरेति।

कफानुयातोबहुशोऽतिशब्दंतंरोगमाहुःक्षवथुंविधिज्ञाः ॥

अर्थ–नासिकाश्रित मर्मके (शृंगाटक मर्म) के विषे वायु दुष्ट होकर कफसहित भारी शब्दको नासिकाके बाहर निकाले, उसको क्षवथु(छींक)कहते हैं॥

क्षवथुचिकित्सा ।

घृतगुग्गुलुमिश्रस्यसिक्थकस्यप्रयत्नतः ।
धूमःक्षवथुरोगघ्नोभ्रंशथुघ्नश्चनिर्दिशेत् ॥

अर्थ–घी, गूगल और मोम, इनकी धूनी देवे, तो क्षवथू कहिये छींक और भ्रंशथु इन रोगोंका नाश करे ॥

शुंठीघृत ।

शुंठीकुष्टकणाबिल्वद्राक्षाकल्ककषायवत् ।
तैलंपक्वमथाज्यंवानस्यात्क्षवथुनाशनम् ॥

अर्थ--सोंठ, कूठ, पीपल, बेलगिरी, दाख इनका कल्क अथवा काढेमें तेल अथवा घी मिलायके सिद्ध करे इसकी नस्य देनेसे क्षवथु रोगको नाश करे ॥

आगंतुक क्षवथु ।

तीक्ष्णोपयोगादतिजिघ्रतोवाभावान्कटूनर्कनिरीक्षणाद्वा ।
सूत्रादिभिर्वातरुणास्थिमर्मण्युद्घाटितेऽन्यःक्षवथुर्निरेति ॥

अर्थ–तीखे राई, आदि पदार्थ खानेसे, अथवा कडुवा खानेसे मिरच आदि तीखे वस्तुओंके सूंघनेसे, सूर्यके देखनेसे, अथवा कपडेकी बत्ती बनाकर नाकमें तरुणास्थि मर्म (फणा) में लगानेसे, आंगतुज क्षवथु (छींक) आती है आगंतुज और दोषज छींक एकही है ॥

भ्रंशथु ।

प्रभ्रश्यतेनासिकयाहियस्यसांद्रोविदग्धोलवणःकफश्च ।
प्राक्संचितोमूर्द्धनिसूर्यतप्तेतंभ्रंशथुंव्याधिमुदाहरंति ॥

अर्थ–सूर्यकी गरमी करके मस्तक तप्त होनेसे पूर्व संचित भया विदग्ध गाढा खारी ऐसा कफ नाकसे गिरे उस व्याधिको भ्रंशथु रोग कहते हैं ॥

पाठांतरम् ।

प्रभ्रस्यतेनासिकयातुयस्यसांद्रोविदग्धोलवणःकफस्तु ।
प्राक्संचितोमूर्धनिसंप्रतप्तस्तंभ्रंशथुंव्याधिमुदाहरंति ॥

अर्थ--जिस मनुष्यकी मस्तकमें गाढा विदग्ध खारी कफ पहले संचित होकर नासिका द्वारा गरम २ निकले उसको भ्रंशथु व्याधि कहते हैं ॥

दीप्तनासारोग।

घ्राणेभृशंदाहसमन्वितेतुविनिश्चरेद्धूमइवेहवायुः।
नानाप्रदीप्तेवचयस्यजंतोर्व्याधिंतुतंदीप्तमुदाहरंति॥

अर्थ–नाक अत्यन्त दाहयुक्त होनेसे उसमें वायु धुआंके सदृश विचरे और नाक प्रदीप्त होवे अर्थात् गरम हे।वे इस रोगको दीप्त कहते हैं॥

चिकित्सा।

नस्यंहितंनिंबरसांजनाभ्यांदीप्तंशिरःस्वेदनमल्पुषस्तु।
नस्येकृतेक्षीरजलावसेकाच्छंसंतिभुञ्जीतचमुद्गयूषैः॥

अर्थ–दीप्तनामक नासा रोगपर नींबूका रस, रसोत इनकी नस्य करे, तथा मस्तकको थोडा सेक देवे, नस्य देनेके पश्चात् दूध और जल इनको एकत्र करकै सिंचन करे, तथा मूंगके यूषकी पथ्य देय, इस प्रकार कहा है॥

प्रतीनाहनासारोग।

उच्छ्वासमार्गेतुकफःसवातोरुंध्यात्प्रतीनाहमुदाहरेत्तम्॥

अर्थ–वायुसहित कफ श्वासके मार्गको बंद करे, तब नाकका स्वर अच्छी रीतिसे चले नहीं, इसको प्रतिनाह कहते हैं॥

चिकित्सा।

नासावनाहेकर्तव्यंपानंगव्यस्यसर्पिषः॥

अर्थ–प्रतिनाह व्याधिपर गौका घी पीवे॥

नासास्रावके लक्षण।

घ्राणाद्घनःपीतसितस्तनुर्वादोषःस्रवेत्स्रावमुदाहरेत्तम्॥

अर्थ–नाकसे गाढ पीला अथवा सपेद पतला दोष (कफ) स्रवे, उसको स्राव कहते हैं॥

चिकित्सा।

नासास्रावेघ्राणयोश्चूर्णमुक्तंनाड्यादेयंयेवपीडाश्चपथ्याः।
तीक्ष्णान्धूमान्देवदार्वग्निकाभ्यांमांसंचाजंपथ्यमत्रादिशंतिः॥

अर्थ–जो नासा रोगपर चूर्ण तथा अवपीडन, पथ्य, तीक्ष्ण धूम इत्यादिक उपचार कहेहैं वो सब नासास्राव पर करे॥

नासापरिशोष।

घ्राणाश्रितेस्रोतसिमारुतेनगाढंप्रतप्तेपरिशोषितेच।

कृच्छ्राच्छ्वसेदूर्ध्वमधश्चजंतुर्यस्मिन्सनासापरिशोषउक्तः ॥

अर्थ–वायुसे नासिकाका द्वार अत्यन्त तप्त होकर सूख जाय, तब मनुष्य बडे कष्टसे ऊपर नीचेको श्वास लेय उस रोगको नासापरिशोष कहते हैं ॥

चिकित्सा।

नासाशोषेक्षीरपानंससितंचप्रशस्यते।

अर्थ–नासाशोषपर मिश्री डालके दूध पीवे तो हितकारक होय ॥

आमपीनसलक्षण।

शिरोगुरुत्वमरुचिर्नासास्रावस्तनुःस्वरः। क्षामःष्ठीवेत्तथाभीक्ष्णंआमपीनसलक्षणम् ॥ आमलिंगान्वितःश्लेष्माघनश्चाप्सुनिमज्जति। स्वरवर्णविशुद्धिश्चपक्वपीनसलक्षणम् ॥

अर्थ–शिरमें भारीपना, अन्नमें अरुचि, नासिकासे गरम २ जलका झरना आवाज कुछ मंदीहो और शरीरका कृश होना, बार २ थूकना यह आम (कच्च) पीनसके लक्षण हैं और जिस्में इसी पूर्वोक्त आम पीनसके भी लक्षण हो और कफ गाढा होगयाहो और जलमें गेरनेसे डूबजाय और मुखसे साफ आवाज निकले और मुखका रंग (रूहानी) अच्छा होय तो जानना कि, यह पीनस पक गया है ॥

प्रतिशाय (सरकेमा जुकाम)

संधारणाजीर्णरजोतिभाष्यक्रोधर्तुवैषम्याशिरोभितापैः॥ प्रजागरातिस्वपनांबुशीतावश्यायतोमैथुनबाष्पशोषैः। संस्त्यानदोषेशिरसिप्रवृद्धोवायुःप्रतिश्यायमुदीरयेच्च ॥

अर्थ–वेगोंके रोकनेसे, अजीर्णकारक पदार्थोंके खानेसे, रज (धूल) के नासिकाके भीतर जानेसे अत्यन्त भाषण (अत्यन्त पढने) से और अत्यन्त गुस्सा करनेसे, तथा ऋतुविपर्यय अर्थात् एक ऋतुमें दूसरे ऋतुके लक्षण होनेसे, शिरोभिताप अर्थात् ग्रीष्मऋतुमें शिरसे अत्यन्त धूप सेवन करनेसे, रात्रिमें जागनेसे, दिनमें विशेष सोनेसे और शीत पदार्थोंके अधिक सेवन करनेसे, इसी तरह कोहरके खानेसे अत्यन्त मैथुन करनेसे, पसीना अथवा आंशुओंके रुकनेसे, शिरमें दोष इकट्ठे हों फिर वायु वृद्धिंगत होकर प्रतिश्यायरोग पीनस उत्पन्न करे ये कारण सद्योजनक अर्थात् तत्काल पीनस करनेवाले हैं ॥

तथा निदान।

चयंगतामूर्द्धनिमारुतादयःपृथक्समस्ताश्चतथैवशोणितम्।
प्रकुप्यमानाविविधैःप्रकोपनैस्ततःप्रतिश्यायकराभवंति॥

अर्थ–मस्तकमें पृथक् वातादि दोष तथा सर्व दोष उसी प्रकार रुधिर संचय होकर अनेक प्रकारके कारणोंसे (बलवानसे वैर करना दिवास्वापादि) कुपित होकर प्रतिश्याय उत्पन्न करें॥

प्रतिश्यायके पूर्वरूप।

क्षवप्रवृत्तिःशिरसोऽतिपूर्णतास्तंभोगमर्दःपरिहृष्टरोमता॥
उपद्रवाश्चाप्यपरेपृथग्विधानृणांप्रतिश्यायपुरःसराःस्मृताः॥

अर्थ–छींकका आना, मस्तकका भारी होना अंगोंका जिकड जाना, तथा अंगोंका टूटना, रोमांच अवमंथसे आदिले और धूमादिक (१) तत्काल होनेवाले उपद्रव होय जब पीनस होनहार होतीहै तब ये लक्षण होतेहैं॥

चिकित्सा।

प्रतिश्यायेषुसर्वेषुगृहंवातविवर्जितम्।
वस्त्रेणगुरुणोष्णेनशिरसोवेष्टनंहितम्॥

अर्थ–संपूर्ण प्रतिश्याय रोगपर निर्वात स्थानमें रहे तथा भारी गरम ऐसे वस्त्रको मस्तकपर बांधे तो हितकारी होय॥

वालमूलकयूष।

वालमूलकयोर्यूषःकुलित्थोत्थश्चपूजितः।
स्वेदोष्णंचहिमंभोज्यंपाचनायप्रशस्यते॥

अर्थ–प्रतिश्याय व्याधिपर कोमल मूलीका और कुलथीका यूष पसीने निकालना उष्ण ऐसे भोजन शीतल जलका पीना ये उत्तम है॥

पिप्पल्यादि विरेचन।

ततःपक्वंकफंज्ञात्वाहरेच्छीर्षविरेचनैः॥पिप्पल्यःशिग्रुबीजानि
विडंगंमरिचानिच।अवपीडःप्रशस्तोयंप्रतिश्यायनिवारणः॥

अर्थ–कफ पकगया होयतो मस्तकरेचन देकर उसकफको निकाल डाले और पीपल, सहिंजनेके बीज, वायविडंग, मिरच, इनका अवपीडन देवे यह प्रतिश्याय नाशकरनेके विषयमें उत्तम है॥

वातिक प्रतिश्यायके लक्षण ।

आनद्धापिहितानासातनुस्रावप्रसेकिनी ॥ गलताल्वोष्ठशोषश्चनिस्तोदःशंखयोरपि । भवेत्स्वरोपघातश्चप्रतिश्यायेऽनिलात्मजे ।

अर्थ–जिसकी नाकका मार्ग रुकजाय, आच्छादित होजाय और उसमेंसे पतला पानी निकले, गला तालु होठ ये सूख जाय और कनपटी दूखे, गला बैठजाय, ये वातके पीनसके लक्षण हैं ॥

चिकित्सा ।

वातिकेतुप्रतिश्यायेपिबेत्सर्पियथाक्रमम् ।
पंचभिर्लवणैःसिद्धंप्रथमेनगणेनच ॥

अर्थ–वातजनित प्रतिश्याय पर पंचलवर्णसे अथवा पंचमूलसे सिद्ध करा ऐसा घी देवे ॥

पित्तनासारोग ।

उष्णःसपीतकःस्रावोघ्राणात्स्रवतिपैत्तिके । कृशोतिपांडुःसंतप्तोभवेदुष्णाभिपीडितः । सधूममग्निसहसावमतीवचनासया ॥

अर्थ–जिसकी नाकसे दाह और पीला स्राव होवे, वह मनुष्य कृश और पीला होजाय उसका देह गरम रहे, नाकसे अग्निके समान धुआं निकले, यह पित्तकी पीनसके लक्षण हैं ॥

चिकित्सा ।

हितंपित्तप्रतिश्यायेपाचनार्थंघृतंपयः ।
शृंगवेरेणपयसाशृंगवेरमथापिवा ॥

अर्थ--पित्तसे उत्पन्न प्रतिश्यायको पाचन करनेको अदरखका रस, दूध,घी पीवे अथवा दूधमें अदरखका रस डालके पीवे ॥

कफनासारोग ।

घ्राणात्कफःकफकृतेश्वेतशीतःस्रवेद्बहुः।शुक्लावभासःशूनाक्षो भवेद्गुरुशिरानरः । कंठताल्वोष्ठशिरसांकंडूभिरभिपीडितः ॥

अर्थ–नाकसे सफेद पीला बहुत कफ गिरे, उसकी देह सफेद होजाय,नेत्रोंके ऊपर सूजन होय और मस्तक भारी रहे और गला तालु होठ और शिर इनमें खुजली विशेष चले ये कफकी पीनसके लक्षण हैं ॥

१ पूर्व रूपाणि दृश्यंते प्रतिश्याये भविष्यति । घ्राणधूमायनं मंथक्षवथुस्तालु दालनम् ॥ कण्ठध्वंसो मुखस्रावः शिरस्या पूरणं तथा ॥

चिकित्सा।

कफजेसर्पिषास्निग्धंतिलमाषविपक्कया।
यवाग्वापाययित्वातुश्लेष्मघ्नंक्रममाचरेत्॥

अर्थ-कफजनित नासा रोगपर प्रथम घृतसे स्निग्ध करके फिर तिल उडद इनसे सिद्ध करी यवागू पिवायकै कफनाशक औषध करे॥

धूमपानवर्ती।

दार्वींगुंद्रनिकुंभैश्चकिणिह्यासरलेनच।
वर्तयोत्रकृतायोज्याधूमपानंयथाविधि॥

अर्थ-दारुहलदी, गोंद, दंती, ओंगा और राल, इनकी बत्ती बनायकै यथाविधि धूमपान करे॥

संनिपातनासारोग।

भूत्वाभूत्वाप्रतिश्यायोयस्याकस्मान्निवर्तते।
संपक्कोवाप्यपक्कोवासतुसर्वभवःस्मृतः॥

अर्थ-जिसकी नाकमें पूर्वोक्त कहे सो सर्व लक्षण मिलें, तथा वह पीनस वारंवार होकर पककर अथवा बिना पके नष्ट हो जाय, उसको सन्निपातकी पीनस कहते हैं यह विदेह[1] आचार्यक मतसे असाध्य हे॥

दुष्टप्रतीश्याय।

प्रक्लिद्यतेपुनर्नासापुनश्चपरिशुष्यति। पुनरानह्यतेचापिपुनर्विव्रीयतेतथा॥ निश्वासोवातिदुर्गंधोनरोगंधंनवेत्तिच। एवंदुष्टप्रतिश्यायंजानीयात्कृच्छ्रसाधनम्॥

अर्थ-वारंवार जिसकी नाक झडा करे और सूख जाय और नाकसे अच्छी तरह श्वास नहीं आवै, नाक रुकजाय, और फिर खुल जाय, श्वास लेनेमें बास आवै, तथा उस रोगीको सुगंध दुर्गंधका ज्ञान जाता रहे, ऐसे लक्षण होनेसे इसको दुष्ट प्रतिश्याय कहते हैं यह कष्टसे साध्य होती है यह पीनस पांच पीनसोंके[2] अंतर्गत जाननी इनकाही भेद है यह छठी नहीं है॥

चित्रकहरीतकी।

चत्वार्यत्रशतानिचित्रकजटायुक्पंचमूलामृताधात्रीणामुदक

१ नृणां दुष्टप्रतिश्यायः सर्वजश्च न सिध्यति इति विदेहः॥ २ उरः क्षतं गुरुस्तब्धः पूतिकर्णकफोरसः।सकासः स्वरो ज्ञेय उरोघातः सपीनसः॥ अत्र पित्तप्रतिश्यायालिंगान्यपि बोद्धव्यानि तुल्यात् पित्तरक्तयोः॥

र्मणेत्रिभिरपांद्रोणेनचक्काथयेत् । पादस्थेक्कथनेगुडस्यचशतं पथ्याढकेनान्वितंपक्कव्यंशृतशीतलेचमधुनःप्रस्थार्धमात्रंक्षिपेत् ॥ व्योषस्यत्रिसुगंधिकस्यचपलान्यत्रैवषट्प्रक्षिपेत्क्षारस्यार्धपलंरसायनमिदंसंसेव्यतेसर्वदा । शोषश्वासमलावकाशवमथुश्लेष्मप्रतिश्यायिभिःक्षीणोरःक्षतहिक्किभिःकफशिरोरुग्भिः प्रनष्टाग्निभिः ॥

अर्थ–चित्रककी छाल, पंचमूल, खिरेंटीकी जड़ और गिलोय, इनको १६०० तोले लेकर १०२४ जलमें डालकै काढा करे जब चतुर्थांश शेष रहे तब उतारकै उसमें ४०० तोले गुड और हरड, १०२४ तोले डालकै पचावे जब शीतल होजावे तब ३२ तोले सहत और त्रिकुटा, त्रिसुगंध ये २४ तोले और जवाखार दो तोले डाले यह हरीतक रसायन, शोष, श्वास, मलबद्धता, वांति, कफ, पीनस, क्षीणता, उरःक्षत, हिचकी, कफजनित मस्तक रोग, और मंदाग्नि इनमें देवे ॥

हिंग्वादितैल।

हिंगुव्योषविडंगकट्फलवचारुक्तीक्ष्णगंधैर्युतैर्लाक्षाश्वेतपुनर्नवाब्दकुटजैःपुष्पोद्भवैःसौरसैः॥ इत्येभिःकटुतैलमेतदनलेमंदेसमूत्रंशृतंपीतंनासिकयायथाविधिभवेन्नासामयिभ्योहितम् ॥

अर्थ–हींग, सोंठ, मिरच, पीपल, वायविडंग, कायफल, वच, कूठ, काला सहिंजना, लाख, सपेद पुनर्नवा, नागरमोथा, इन्द्रजो और लौंग इनके काढेमें अथवा कल्कमें सरसोंका तेल और गोमूत्र डालके मंदाग्नि पर पचावे जब सिद्ध हो जावे तब यथाविधि नाकमें टपकावे तो नासारोगपर हितकारक होय।

पीनसका सामान्य यत्न।

रक्तपित्तानिशोथश्चतथार्शांस्यर्बुदानिच ।
नासिकायांस्युरेतेषांस्वंस्वंकुर्य्याच्चिकित्सितम् ॥

अर्थ–रक्तपित्त, सूजन, बवासीर और अर्बुद ये नासिकामें होते हैं इनपर रोगोक्त चिकित्सा करनी चाहिये ॥

गृहधूमादितैल।

गृहधूमकणादारुक्षारनक्ताह्वसैंधवैः ।
सिद्धंशिखरिबीजैश्चतैलंनासार्शसांहितम् ॥

अर्थ-घरका धूआं, पीपल, देवदारु, जवाखार, नख सुगंध द्रव्य, सैंधानिमक और ओंगाके बीज, इनसे तेल सिद्ध करे तो नासार्शपर हितकारकहै ॥

करवीरादि तेल।

रक्तकरवीरपुष्पंजात्यंवातथाचमल्लिकायाः।
एतैःसमंतिलंतैलंनासार्शोनाशनंपरम् ॥

अर्थ--लाल कनेरके फूल, चमेलीके फूल, तथा मालतीके फूल, इनसे सिद्ध करा तिलोंका तेल नासार्श अर्थात् नाककी बवासीरको दूर करे ॥

नासाशोष ।

नाशाशोषेक्षीरसर्पिःप्रधानंतैलंसिद्धंचाणुतैलेननस्ये।
सर्पिःपानंभोजनंजांगलैश्चस्नेहस्वेदैःस्नैहिकश्चात्रधूमः ॥

अर्थ-नासाशोष होनेसे दूध, घी, तेल ये प्रधान उपचार हैं, तथा अणु तैलकी नस्य, घृतपान, जंगली जीवोंके मांसयुक्त भोजन तथा स्नेहयुक्त स्वेदन और स्नेयुक्त धूम ये उपचार हितकारी हैं ॥

रक्तप्रतिश्यायके लक्षण।

रक्तजेतुप्रतिश्यायेरक्तस्रावःप्रवर्तते । ताम्राक्षश्चभवेज्जंतुरुरो घातप्रपीडितः ॥ दुर्गंधोच्छ्वासवदनोगंधानपिनवेत्तिसः ॥

अर्थ-रुधिरकी पीनसमें नाकसे रुधिर गिरे, नेत्र लाल होय, उरःक्षतकी पीडाके सदृश पीडा होय, श्वास अथवा मुखमें बास आवै, दुर्गंधिका ज्ञान नहीं होय, उरःक्षतके लक्षण ग्रंथान्तरमें लिखे हैं सो जानने, किसी पुस्तकमें 'पित्तप्रतिश्यायकृतैर्लिंगैश्चापिसमन्वितः' ऐसा पाठ है इसका अर्थ यह है कि जिसमें पित्तकी पीनसके लक्षण मिलते हों ॥

चिकित्सा।

रक्तपित्तोत्थयोःपेयंसर्पिर्मधुकरैःशृतम्।
परिषेकान्प्रदेहांश्चकुर्यादपिचशीतलान् ॥

अर्थ-रक्त और पित्त, इनसे उत्पन्न पीनस पर भाँगरेके काढेमें सिद्ध करे हुए घीको पीवे, तथा शातल परिषेक और प्रदेह करे ॥

धात्रीलेप।

सर्पिषाभ्रष्टयाधात्र्याशिरसोलेपतःक्षणात्।
नासायांसवृतंतच्चरुधिरंचाविनश्यति ॥

अर्थ-घीमें आँवलोंको भूनकै फिर पीसकै मस्तक पर लेप करे तो नाकसे रुधिरका गिरना नष्ट होय ॥

प्रतिश्यायकासामान्ययत्न।

विडंगसैंधवंहिंगुगुग्गुलुःसमनःशिलः। प्रतिश्यायेवचायुक्तं सक्तुधूमंपिबेन्नरः॥ एतच्चचूर्णमाघ्रातंप्रतिश्यायंविनाशयेत्॥

अर्थ-वच और जों, धूम पीकै फिर वायविडंग, सैंधानिमक हींग, गूगल और मनसिल, इनका चूर्ण सूँघे तो प्रतिश्यायका नाश करे॥

सक्तुधूम।

घृततैलसमायुक्तंसक्तुधूमंपिबेन्नरः।
सधूमःस्यात्प्रतिश्यायकासहिक्काहरःपरः॥

अर्थ-घी, तेल इनसे युक्त सत्तूका धूआँ पीवे तो पीनस, खाँसी और हिचकी इनको नाश करे॥

धूम तथा चूर्ण।

प्रतिश्यायेपिवेद्धूमंसर्वगव्यसमायुतम्।
चातुर्जातकचूर्णवाघ्रेयंवाकृष्णजीरकम्॥

अर्थ-संपूर्ण पीनसोंपर गौके घृतसे युक्त द्रव्यका धूम पीवे, चातुर्जात अथवा कालाजीरा इनके चूर्णको सूंघे॥

चूना और नोसद्दर।

प्रतिश्यायेषुसशिरःपीडेषुनवसागरम्। समानंकलिकाचूर्णसू क्ष्मंसंचूर्णितंद्वयम्॥ गुंजामात्रंतुतच्चूर्णनस्यप्रधमनंचरेत्॥ नश्यंत्यनेनयत्नेनप्रतिश्यायाशिरोरुजः॥

अर्थ-मस्तकशूलयुक्त प्रतिश्याय होनेसे नोसदर, तथा चूनेको समान भागले एकत्र कर इनको खरल करे, इसमेंसे एक रत्ती चूर्ण नाकमें डाले, तो पीनस और मस्तकशूल नष्ट होवे॥

सूंघनेकी पोटली।

सवचाचूर्णमाघ्रायवाससापोटलीकृतम्।
कारवींवस्त्रबद्धांवाप्रतिश्यायमपोहरेत्॥

अर्थ-वचका अथवा अजमायनका चूर्ण करकै उसको कपडेमें बाँधके सूंघनेको देवे, तो पीनसका नाश करे॥

शठ्यादि चूर्ण।

शठीतामलकोव्योषचूर्णंसर्पिर्गुडान्वितम्।
हरेद्धोरंप्रतिश्यायंपार्श्वहृद्वस्तिशूलनुत्॥

अर्थ-कचूर, हरड, सोंठ, मिरच, पीपल इनके चूर्णको घी और गुडमें मिलायके भक्षण करे तो महाघोरपीनस, पार्श्वशूल, हृदयशूल और बस्तिशूल इनको नाश करे॥

पुटपक्वंजयापत्रंतैलसैंधवसंयुतम्!
प्रतिश्यायेषुसर्वेषुशीलितंपरमौषधम्॥

अर्थ-जयानाम (अरनी) के पत्तोंको पुटपाकमें भूनके उनमें तेल और सैंधानिमक डालके संपूर्ण प्रतिश्याय पर भक्षणार्थ देवे यह परम उत्कृष्ट औषध है॥

असाध्यलक्षण।

सर्वएवप्रतिश्यायानरस्याप्रतिकारिणः॥ दुष्टतांयांतिकालेन तदाऽसाध्याभवंतिच। मूर्च्छंतिकृमयश्चात्रश्वेताःस्निग्धास्त थाऽणवः। कृमिजोयःशिरोरोगस्तुल्यंतेनास्यलक्षणम्॥

अर्थ-सर्व पीनस औषधी न करनेसे असाध्य होतेहैं, इसमें नाकमें कीडा पडजाय वो कृमि सपेद चिकने और बारीक होतेहैं, कृमिज शिरोरोगोंके सदृश लक्षण होंय, कृमिज शिरोरोगके लक्षण शिरोरोगमें कह आये हैं॥

प्रतिश्याय और विकारोंकोभी करता है उनको कहते हैं।

बाधिर्यमांध्यमघ्रत्वंघोरांश्चनयनामयान्।
शोथाग्निसादकासादीन्वृद्धाःकुर्वंतिपीनसाः॥

अर्थ-पीनस बढनेसे बहरा होजाय, मंद दीखे, नास आवे नहीं, भयंकर नेत्र रोग होय, सूजन मंदाग्नि खांसी इत्यादि विकार होतेहैं सुश्रुतमें नासिकाके ३१ रोग कहेहैं और इस जगह पीनससे लेकर प्रतिश्याय पर्यंत १५ रोग कहेहैं बाकी १६ रोगोंकी संख्या पूर्णके वास्ते लिखते हैं॥

अर्बुदंसप्तधाशोथाश्चत्वारोऽर्शश्चतुर्विधम्। चतुर्विधंरक्तपित्त मुक्तंघ्राणेऽपितद्विदुः॥ शिरोललाटतालूनांगौरवंदोषनिद्रता। सार्शसांसार्बुदानांचदोषकोपाकृतिःसमा। अर्शांसिगोस्तना कारण्यर्बुदंकोलसन्निभम्॥

अर्थ-सात प्रकारके अर्बुद रोग,चार प्रकारके शोथ (सूजन), चार प्रकारके अर्श और चार प्रकारके रक्तपित्त ये पूर्वोक्त कहे रोग सोलह होतेहैं ॥

वातपित्त कफ रुधिर मांस मेदकरके छः हुये और सातवां शालाक्य सिद्धांतके मतसे सन्निपातका ऐसे सात प्रकारके अर्बुद रोग हुये ॥

वातपित्त कफ सन्निपातके भेदसे चार प्रकारकी सूजन भई तथा वातपित्त कफ सन्निपातके भेदसे चारही प्रकारकी अर्श (बवासीर) और चारही प्रकारका रक्त, रक्तपित्तकी समानतासे एकही जानना, पूर्वोक्त पीनससे लेकर प्रतिश्यायपर्यंत १५ भये और अर्बुदादि १६ हुये ऐसे सब मिलकर नासिका रोग ३१ हुये ॥

कृमिनासाचिकित्सा।

कृमिघ्नायेक्रमाःप्रोक्तास्तान्वैकृमिषुयोजयेत्।
धावनानिकृमिघ्नानिभेषजानिचबुद्धिमान् ॥

अर्थ-नासाकृमिपर कृमिरोगोक्त औषध तथा कृमिनाशक औषधोंसे धोना और कृमिनाशक औषध इत्यादिक देवे ॥

रक्ताम्रस्वरसःशुद्धस्तक्रेणसहनस्यतः। तस्यपर्णानिपिष्टाचबध्नीयान्नासिकामुखे ॥ पतंतिकीटकाः सद्योयोगोयंत्रिदिनेहितः। पीनसान्मुच्यतेरोगीशतशोनुमितंत्विदम् ॥

अर्थ-लाल आंबका स्वरस छाँछमें डालके नस्य करे तथा उसके पत्तोंको पीसके नाकपर बांधे ऐसे तीन दिन प्रयोग करनेसे कीडे गिरजावे, तथा रोगी पीनससे मुक्त होय यह सैकडोंबार अनुभव कराहुआ है ॥

नासारोगपर पथ्य।

स्थितिर्निवातेनिलयेप्रगाढोष्णीषधारणम्। गंडूषोलंघनंनस्यं धूमंछर्दिश्शिराव्यधः ॥ कटुचूर्णघ्राणरन्ध्रेनिक्षिप्यत्रिःप्रवेशनम्। स्वेदःस्नेहश्शिरोऽभ्यङ्गः प्रतनायवशालयः ॥ कुलत्थमुद्गयोर्यूषाग्राम्याजाङ्गलजारसाः। वार्ताकंकुलकंशिग्रुःकर्कोटंवालमूलकम् ॥ लशुनंदधितप्ताम्बुवारुणीचकटुत्रयम्। कट्वम्ललवणंस्निग्धमुष्णंलघुचभोजनम् ॥ नासारोगे पीनसादौसेव्यमेतत्सुखावहम् ॥

अर्थ-पवनरहित स्थानमें रहना, कडी पगडी बांधना, कुल्ला, लंघन, नास, धूआं, वमन, नसका वेधना, कडुआ चूर्ण नाकके छेदमें रखके तीनबार खींचना, स्वेद, स्नेह, शिरसे न्हाना, पुराने जौ तथा चावल, कुलथी और मूंगका यूष, गांवके तथा जंगली पक्षियोंके मांसका रस, बैंगन, परवर, सहिंजना, ककोडा, कोमल मूली, लहसन, दही, गरम जल, मदिरा, त्रिकटु, कडुआ, खट्टा, नमकीन, चिकना, गरम और हलका भोजन, पीनस आदि नाकके रोगोंमें सुख देनेवाला यह गण सेवन करने योग्य है ॥

विरुद्धान्नंदिवास्वापमभिष्यन्दि गुरूणिच । स्नानंक्रोधंशकृन्मूत्रवातवेगाञ्छुचंद्रवम् ॥ भूशय्यांचप्रयत्नेननासारोगीपरित्यजेत् ॥

अर्थ-विरुद्धअन्न, दिनमें सोना, अभिष्यंदी तथा भारी वस्तुका सेवन, न्हाना, क्रोध, मल, मूत्र तथा वातके वेगको रोकना, शोक करना, पतली वस्तुका सेवन और भूमिमें सोना ये नासिकाके रोगवाला मनुष्य यत्नसे बचावे॥

इति श्रीआयुर्वेदोद्धारेबृहन्निघण्टुरत्नाकरे नासारोगे पथ्यापथ्याधिकारः समाप्तः ॥

नेत्ररोग।

नेत्ररोगनिदान।

उष्णाभितप्तस्यजलेप्रवेशाद्दूरेक्षणात्स्वप्नविपर्ययाच्च । स्वेदाद्रजोधूमनिषेवणाच्चच्छर्देर्विघाताद्वमनातियोगात् । द्रवान्नपानातिनिषेवणाच्चविण्मूत्रवातक्रमनिग्रहाच्च ॥ प्रसक्तसंरोदनशोककोपाच्छिरोभिघातादतिमद्यपानात् । तथाऋतूनांचविपर्ययेणक्लेशाभिघातादतिमैथुनाच्च । बाष्पग्रहात्सूक्ष्मनिरीक्षणाच्चनेत्रेविकाराञ्जनयंतिदोषाः ॥

अर्थ-गरमीसे तप्त होकर जलमें प्रवेश (स्नानादि करना ऐसा करनेसे शीतलतामें शरीर व्याप्त होकर शरीरको गरमी ऊपर चढकर नेत्रके तेजको पराभव करनेसे नेत्ररोग उत्पन्न होता है) दूरकी वस्तुको देखनेसे, दिनमें सोना और रात्रिमें जागनेसे नेत्रमें पसीना जानेसे अथवा भाफ लगनेसे, अथवा नेत्रोंमें धूल जानेसे अथवा धूआं जानेसे, वमनके वेगको रोकनेसे, अथवा बहुत वमन (रद्द) होनेसे पतले अन्नपानके अत्यंत सेवन करनेसे,

विष्ठा मूत्र और अधोवायु इनके वेगको धीरे२ निग्रह कहिये वेग धारण करनेसे निरंतर रुदन करनेसे, शोकसे, कोपसे, मस्तकमें चोट लगनेसे, अति मद्यपान करनेसे, उसी प्रकार ऋतुके विपर्यय (अर्थात् शीतकालमें गरमी और गरमीमें शीतकाल) होनेसे, क्लेश कहिये कामादिक दुःख उससे अभिघात कहिये दुःख होनेसे अति मैथुन करनेसे अश्रुपातका वेग धारण करनेसे और सूक्ष्म पदार्थके अवलोकन करनेसे वातादि दोष नेत्रोंमें रोग पैदा करते हैं, सुश्रुतमें रोगकी संप्राप्ति इस प्रकार लिखी है॥

नेत्ररोगकी संप्राप्ति और नेत्रका प्रमाण।

शिरानुसारिभिर्दोषैर्विगुणैरूर्ध्वमाश्रितैः।
जायंतेनेत्रभागेषुरोगाःपरमदारुणाः॥

अर्थ-कुपित हुये वातादि दोष नेत्रोंकी नसोंमें प्राप्त हो नेत्रोंका भाग व्याप्त करनेसे उनमें भयंकर रोग उत्पन्न होता है, ये वात पित्त कफ रुधिर सन्निपात और आगंतुक इनसे होनेवाले ऐसे नेत्ररोग ७६ हैं॥

नेत्रमंडलमें ७८ व्याधि।

द्वादशव्याधयोदृष्टातथैवान्यौगदावुभौ। कृष्णभागेतुचत्वारो दशैकाःशुक्लभागजाः॥ वर्त्मन्येकविंशतिस्तुपक्ष्मजौद्वौप्रकीर्तितौ। नवसंधिषुसर्वस्मिन्नेत्रेसप्तदशोदिताः॥ एवंनेत्रेसमस्तास्युरष्टसप्ततिरामयाः॥

अर्थ-दृष्टिमें होनेवाले रोग १२ हैं, तथा नेत्रके बाहर होनेवाले २ हैं, दृष्टिके कृष्ण भागमें होनेवाले रोग ४ और सफेद भागमें ११ हैं, कोएमें होनेवाले २१ और पक्ष्ममें होनेवाले २ हैं, संधिमें ९ और सर्व नेत्रमें होनेवाले रोग १७ हैं इस प्रकार सर्व नेत्र रोग ७८ हैं॥

नेत्ररोगसंख्या।

वाताद्दशतथापित्तात्कफाच्चैवत्रयोदश। रक्तात्षोडशविज्ञेयाःसर्वजाःपंचविंशतिः॥ बाह्यौपुनर्द्वौनयनेरोगाःषट्सप्ततिः स्मृताः॥

अर्थ-नेत्रमें वात दोषसे होनेवाले रोग १० हैं, तथा पित्तसे १० और कफसे १३, रक्त दोषसे १६, त्रिदोषसे होनेवाले २५ और दृष्टि बाहर होनेवाले रोग २ इस प्रकार सब मिलकर नेत्ररोग ७६ होते हैं॥

दृष्टिलक्षण ।

मसूरदलमात्रांतुपंचभूतप्रसादजाम् ॥

अर्थ–आधे मसूरदलके समान पंचभूत (पृथ्वी जल तेज वायु आकाशसे) प्रगट हैं, ❀ शंका–इस श्लोकमें तो मसूरदलके समान लिखा है । फिर आधे मसूरके समान ऐसा अर्थ आपने कैसे किया ❀ उत्तर–तुमने कहा सो ठीक है परंतु यह अर्थ हमने निमि आचार्यके मतसे लिखा है–यथा"पंचाभूतात्मिकादृष्टिर्मसूरार्द्धदलोन्मिता " इति ॥

चारपटलोंके स्थान ।

तेजोजलाश्रितंबाह्यंतेष्वन्यत्पिशिताश्रितम् ।
मेदस्तृतीयंपटलमाश्रितंत्वस्थिचापरम् ॥

अर्थ–प्रथम पटल रुधिर और जलाश्रित है दूसरा पटल पिशित (मांस) के आश्रित है, तीसरा पटल (मेद) के आश्रित है, चौथापटल अस्थि (हड्डी) के आश्रित है इति । सुश्रुतमें नेत्र रोगके भेद बहुत लिखे हैं ॥

नेत्ररोगपर लंघन ।

अक्षिकुक्षिभवारोगाःप्रतिश्यायव्रणज्वराः ।
पंचैतेपंचरात्रेणशेगानश्यंतिलंघनात् ॥

अर्थ–नेत्र, कूख इनमें होनेवाले रोग, पीनस,व्रण,ज्वर, ये पांच रोग लंघन करनेसैं पांच रात्रिमें नाश होते हैं ॥

षट्सप्ततिर्लोचनजाविकारास्तेषामभिष्यंदसमुद्भवानाम् ।
श्लेष्माश्रयत्वादिहलंघनंप्राक्प्रशस्यतेमुद्गरसौदनंच ॥

अर्थ–नेत्ररोग ७६ हैं उनमें अभिष्यंदसे होनेवाले कफाश्रित हैं इस वास्ते उनको लंघन करावे और मूंगकी दालका रस और भात भोजनमें देवे ॥

अंजनंपूरणंक्राथःपानमामेनशस्यते । आचतुर्थाद्दिनादासम
भिष्यंदेपिलोचने॥गंडूषांजननस्यादिहीनानांकफकोपतः॥ष
ट्सप्ततिनेत्ररोगादुःसहास्युरुपेक्षिताः । सेकआश्चोतनंपिंडी
बिडालस्तर्पणंतथा । पुटपाकांजनंचैभिःकल्पैर्नेत्रमुपाचरेत् ॥

अर्थ–आमसे नेत्रवहते होतो चार दिन पर्यंत अंजन, पूरण, क्वाथपान ये उपाय नकरे,परंतु तीन दिनके बाद अर्थात् चौथे दिन यही आंवे और अभिष्यंदीनेत्र होवे तथापि गंडूष, अंजनादि करे न करेतो कफ कुपित होकर ७६

नेत्र रोग होते हैं उनकी उपेक्षा करनेसे बहुत दुःख होय है इस वास्ते इसपर सेक आश्चोतन, पिंडी, बिडाल, तर्पण, पुटपाक, अंजन इन उपचारोंसे नेत्रोंका उपचार करे तात्पर्य यह है कि: कच्चे नेत्रमें यत्न न करे परंतु चौथे दिनसे पक्व संज्ञा होजातीहै इस वास्ते अवश्य चिकित्सा करे ॥

दृष्टिगतरोगकी चिकित्सा।

वर्जयेदुपसर्गोत्थान्गंभीरान्ह्रस्वसंज्ञितान्। काचांस्तुव्याप येत्सर्वानकुलांध्यंतथैवच ॥ तिमिरंनेत्ररोगेषुकष्टंतद्यत्नतो हरेत्। मूलंदृष्टिविनाशस्यतिमिरंसमुदाहृतम्। ऋषिभिस्तू दितंतस्मात्तस्यकुर्याच्चिकित्सितम् ॥

अर्थ-उपसर्गसे उत्पन्न हुए और गंभीर तथा ह्रस्व संज्ञक नेत्ररोग त्याज्य है तथा काच और नकुलांध्य, इनसे व्यापन करे और सर्व नेत्र रोगोंमें तिमिरको यत्नपूर्वक हरणकरे यह तिमिर दृष्टिनाशका मूलहै इस वास्ते उसकी प्रथमहीसे चिकित्सा करे ॥

शलाका (सलाई) के लक्षण।

त्रिफलंभृंगशुंठीनांरसैस्तद्वच्चसर्पिषा।गोमूत्रमध्वजाक्षीरैःसिक्तो नागःप्रतापितः। तच्छलाकाहरत्येवसकलान्नयनाभयान् ॥

अर्थ-शीशेको गलायके त्रिफला, भाँगरा, सोंठ, इनके काढेमें तथा घी, गोमूत्र, सहत और बकरीका दूध इनमें बुझाय २ के शुद्ध करे, फिर इसकी शलाई करे, तो सर्व नेत्र रोगोंका नाश करे ॥

अंजन करनेका प्रकार।

कृष्णभागादधःकुर्य्यादपांगंयावदंजनम् ॥ प्रथमंसव्यमंजीया त्पश्चाद्दक्षिणमंजयेत्। शलाकयासांजनयानचतन्नयनंस्पृशेत्॥

अर्थ-काले भागके नीचे तथा नेत्रोंके कोने पर्यंत अंजन करे, उनमें भी प्रथम बाँये नेत्रमें अंजन करे, फिर दहने नेत्रमें लगावे, वो अंजनयुक्त शलाकाले नेत्रोंमें किसीप्रकार दुःख नहो इस प्रकार फेरे ॥

अंजनका काल।

हेमंतेशिशिरेवापिमध्याह्नेऽञ्जनमिष्यते। पूर्वाह्णेवापराह्णेवाग्री ष्मेशरदिचेष्यते॥वर्षास्वनभ्रेनात्युष्णेवंसेतचसदैवहि। प्रातः सायंचतत्कुर्य्यान्नचकुर्यात्सदैवाहि॥श्रांतेत्ररुदितेभीतेपीतमद्ये

नवज्वरे। अजीर्णवेगघातेचनांजनंसंप्रशस्यते॥सौवीरमंजनंनि
त्यंहितमक्ष्णोःप्रयोजयेत्। पंचरात्रेवाष्टरात्रेस्त्रावणार्थंरसांजनम्॥

अर्थ–हेमंत और शिशिर ऋतुमें दो प्रहरके समय अंजन करे, तथा ग्रीष्म और शरद् ऋतुमें पूर्वाह्ण अथवा अपराह्णमें अंजन करे और वर्षाऋतुमें जब बादल न होवे, उस दिन तथा जिस दिन गरमी न होय उस दिन करे और वसंतऋतुमें सर्वकाल अंजन करे, तथा परिश्रमी, रुदनकर चुका हो, भयभीत, मद्यपान करनेवाला, नवीन ज्वरवाला, अजीर्णवाला और मलमूत्रादिकोंके रोकनेसे ऐसे रोगियोंके नेत्रमें अंजन न लगावे, तथा सुर्मा लगाना नेत्रोंको हितकारी है, इस वास्ते निश्चय लगाना चाहिये और पाँच अथवा आठ दिन व्यतीत होनेपर नेत्रोंमें स्राव करनेके वास्ते रसोत लगावे॥

वर्त्तिप्रमाण।

हरेणुमात्रांकुर्वीतवर्तिंस्तीक्ष्णांजनेभिषक्।
प्रमाणंमध्यमेसार्धंद्विगुणंतुमृदौभवेत्॥

अर्थ–तीक्ष्ण अंजनके वास्ते मटरके बराबर मोटी बत्ती बनावे, तथा मध्यम अंजनके वास्ते इससें डेढगुनी मोटी करे और मृदु अंजनमें दुगुनी मोटी सलाई बनानी चाहिये॥

रसक्रियाका प्रमाण।

रसक्रियातूत्तमास्यात्रिविडंगमिताहिता।
मध्यमाद्विविडंगासाहीनात्वेकविडंगिका॥

अर्थ–नेत्रोंमें रसकी उत्तम मात्रा डालनी होय तो तीन वायविडंग इतनी डाले और मध्यम डालनी होय तो दो वायविडंग इतनी तथा हीन मात्रामें १ वाय विडंगके बराबर डाले॥

शलाकाप्रमाण।

शलाकास्नेहनेचूर्णेचतस्रःप्राहुरंजने।
रोपणेतास्तुतिस्रस्युस्तेउभेलेखनेस्मृतेः॥

अर्थ–स्नेहन, चूर्ण, तथा अंजन इनकी सलाई नेत्रमें चार बार फेरे तथा रोपण कार्य विषयमें तीन बार और लेखन विषयमें दो बार फेरे॥

तर्पण।

दुर्दिनात्युष्णशीतेषुचिंतायांसंभ्रमेषुच।
आशांतोपद्रवेचाक्ष्णितर्पणंनप्रशस्यते॥

अर्थ-बादल होवे उस दिन अत्यंत गरमी तथा अत्यंत शरदी तथा चिंता ग्रस्त, भ्रमवाला इनको और औषधसे नेत्रोपद्रव की शांति न हुई होय तो नेत्रोंमें तर्पणविधि कदाचित् न करे ॥

तर्पण करनेकी विधि।

वातातपरजोहीनेदेशेचोत्तानशायिनः। आधारोमाषचूर्णेनक्लिन्नेनपरिमंडलौ ॥ समौदृढावसंबाधौकर्तव्यौनेत्रकोशयोः। पूरयेद्घृतमंडेनविलीनेनसुखोदकैः ॥ अथवाशतधौतेनसर्पिषा क्षीरजेनवा। निमज्जंत्यक्षिपक्ष्माणियावत्स्युस्तावदेवहि ॥ पूरयेन्मीलितेनेत्रेततउन्मीलयेच्छनैः ॥

अर्थ-रोगीको हवा और धूप न लगने पावे, तथा धूर न उडती हो ऐसे स्थानमें उताना स्वस्थ चित्त सोय जावे नेत्रोंकी चारों ओर उडदके चूनको सानकै समान गाढी न फूटने पावे ऐसी मेंडसी बांधकै उसको घीके मंडमें मंदोष्ण जल डालकै पतली करे इससे अथवा सौबार धुले हुए घीसे अथवा दूधसे नेत्रोंको मीचकर फिर नेत्रोंके बाल बूड जावे तबतक भरकै काढ डाले फिर मूँदेहुए नेत्रोंको धीरे २ उघाडे ॥

सेकविधि।

सेकस्तुसूक्ष्मधाराभिःसर्वस्मिन्नयनेहितः। मीलिताक्षस्यमर्त्यस्यप्रदेयश्चतुरंगुलः ॥ सर्वोपिस्नेहनोवातेरक्तेपित्तेचरोपणः। लेखनश्चकफेकार्यस्तत्रमात्राधुनोच्यते ॥

अर्थ-नेत्रोंको मूँद सर्व नेत्रोंपर चार अंगुल ऊंचेसे बारीक धार डाले उसको सेक कहते हैं वो वातरोग पर स्नेहन पित्त रोगपर रोपण और कफ रोगपर लेखन करे, उसका प्रमाण कहता हूं ॥

सेककी मर्यादाका काल।

षड्वाक्शतैःस्नेहनेषुचतुर्भिश्चैवरोपणे। वाक्शतैश्चद्विभिःकार्योसेकोलेखनकर्मणि। कार्यस्तुदिवसेसेकोरात्रौवात्ययिकेगदे ॥

अर्थ-नेत्रमें स्नेहनार्थ सेक करना होय तो ६०० वाक् मात्रा काल पर्यंत धारण करे, तथा रोपण विषयमें ४०० मात्रा और लेखन वियमें २०० वाक् मात्रा पर्यंत धारण करे, यह सेकविधि दिनमें करे, तथा नाशकारी व्याधि होय तो रात्रिमेंभी करे ॥

पिंडिकाविधि तथा स्वरूप।

पिंडीकवलिकाप्रोक्ताबध्यतेवस्त्रपट्टकैः।
नेत्राभिष्यंदयोग्यासाव्रणेष्वपिनिगद्यते॥

अर्थ–जो औषध नेत्रोंपर रख वस्त्रसे बाँधी जावे, उसको पिंडी अथवा कवलिका कहते हैं वो नेत्राभिष्यंद और नेत्र व्रण इनपर करे॥

बिडालविधि और स्वरूप।

बिडालकोबहिर्लेपोनेत्रेपक्ष्मविवर्जिते।
तस्यमात्रापरिज्ञेयामुखलेपविधानवत्॥

अर्थ--जो नेत्रकी पलककी वन्नीन्को त्यागके बारह औषधोंका लेप करा जावे उसको बिडालक कहते हैं, उसका मान मुखलेपके सदृश जानना॥

तर्पणकी विधि।

अथतर्पणकंवच्मिनेत्रतृप्तिकरंपरम्। यच्चक्षुपरिशुष्कंचनेत्रंकु
टिलमाविलम्॥ शीर्णपक्ष्मशिरोत्पातकृच्छ्रोन्मीलनसंयुतम्।
तिमिरार्जुनशुक्राद्यैरभिष्यंदाधिमंथकैः॥ शुष्काक्षिपाकशो
थाभ्यांयुतंवातविपर्ययैः॥ तन्नेत्रतर्पणेयोज्यंनेत्ररोगविशारदैः॥

अर्थ–अब नेत्रोंको तृप्ति करनेवाला ऐसा तर्पण कहताहूं वो शुष्क नेत्र, कुटिल, गदले जिनके कोयेन्के बाल गिरगए, शिरोत्पात, कष्टसे नेत्र खुले मूँदे इनपर तथा तिमिर, अर्जुन, शुक्र, अभिष्यंद, अधिमंथ, शुक्रादिपाक, सूजन और वातविपर्यय, इनपर देवे॥

तर्पणमें मात्राकी अवधि।

धारयेद्वर्त्मरोगेषुवाङ्मात्राणांशतंबुधः। स्वच्छेकफेसंधिरोगे
मात्रापंचशतंहितम्॥ कफेचषट्शतंकृष्णरोगेसप्तशतंमतम्।
दृष्टिरोगेष्वष्टशतमधिमंथेसहस्रकम्॥ सहस्रंवातरोगेषुधार्य
मेवहितर्पणम्। एकाहंवात्र्यहंवापिपंचाहंचेष्यतेपरम्॥

अर्थ–केवल कफात्मक वर्त्म रोगोंमें तर्पण करना होय तो १००वाङ् मात्रा पर्यंत औषधको नेत्रमें धारणकरे, नेत्रसंधिरोगोंपर ५०० मात्रा, कफात्मकपर ६००मात्रा, काली जगहके ऊपर रोगमें ७००, दृष्टि रोगपर ८००, अधिमंथपर १०००वातरोगपर १००० मात्रा पर्यंत धारण करे, यह तर्पण एक, तीन अथवा पाँच दिवस पर्यंत करे॥

तर्पित नेत्रके लक्षण।

तर्पणात्तृप्तिलिंगानिनेत्रस्यैतानिलक्षयेत्। सुखंस्वप्नावबोधत्वंवै शद्यंवर्णतर्पितम् ॥ निर्वृत्तिर्व्याधिशांतिश्चक्रियालाघवमेवच॥ अथसासृग्गुरुस्निग्धंनेत्रंस्यादतितर्पितम्। रूक्षामस्राविलंरूक्षं नेत्रंस्याद्धीनतर्पणम् । रूक्षस्निग्धोपचाराभ्यामेतयोःस्या त्प्रातिक्रिया ॥

अर्थ-नेत्रोंका उत्तम तर्पण होनेसे सुख, भले प्रकार निद्राका आना, नेत्रोंमें स्वच्छता, रोगकी शांति और नेत्रक्रियाका लाघव ये लक्षण होतेहैं तथा नेत्रोंका तर्पण अधिक होगया होवेतो लाल, भारी और चिकनाहटयुक्त होते हैं और न्यून तर्पण होनेसे रूक्ष और रुधिरके समान लाल होते हैं इसवास्ते अधिक और हीन ऐसा तर्पण होगया होय तो क्रमपूर्वक रूक्ष और स्निग्ध क्रिया करे, अर्थात् अधिक तर्पण रूक्ष क्रिया और हीनमें स्निग्ध क्रियाकरे ॥

आश्चोतनविधि।

अथआश्चोतनंकार्यंनिशायांनकथंचन।
उन्मीलितेक्ष्णिदृङ्मध्येबिंदुभिर्व्यंगुलाद्धितम् ॥

अर्थ-आश्चोतन नेत्रमें बूंद डालनेको कहते हैं इस क्रियाको रात्रिकेसमय कदाचित् नकरे तथा नेत्रोंको अच्छे प्रकार उघाडके दृष्टिपर दो अंगुलके प्रमाण बिंदु डाले तो हितकारी होय ॥

लेखनादिकोंमें बिंदुका प्रमाण।

बिंदवोष्टौलेखनेषुस्नेहनेदशबिंदवः। रोपणेद्वादशप्रोक्तास्तेशी तेकोष्णरूपिणः॥ उष्णेचशीतरूपाःस्युःसर्वत्रैवैषनिश्चयः। वा तेतिक्तंतथास्निग्धंपित्तेमधुरशीतलम् । तिक्तोष्णरूपंचकफे क्रमादाश्चोतनंहितम्॥

अर्थ-लेखन विषयमें ८ बिंदु, तथा स्नेहनमें १०, रोपणमें १२ बिंदू (बूंद) डालनी चाहिये वो शीतकाल होय तो मंदोष्ण तथा गरमियोंमें शीतल ऐसी डाले और वादीपर कडुई और स्निग्ध, पित्तपर मधुर और शीतल, तथा कफ पर कडुई और गरम ऐसी होनी चाहिये। इस प्रकार आश्चोतन कर्म हित कारी होयहै ॥

वाङ्मात्राका स्वरूप।

निमेषोन्मेषणंपुंसामंगुल्यांत्रोटिकाथवा।
गुर्वक्षरोच्चारणंवावाङ्मात्रेयंस्मृताबुधैः॥

अर्थ-जो नेत्रोंका उघाडने और मूंदनेको काल लगे, अथवा ऊंगली की चुटकी बजानेमें अथवा गुरु अक्षर उच्चारणमें जितना काल लगे उसको वाङ्मात्रा कहते हैं॥

नेत्ररोगोंका कारण अभिष्यंद।

वातात्पित्तात्कफाद्रक्तादभिष्यंदश्चतुर्विधः।
प्रायेणजायतेघोरःसर्वनेत्राभयाकरः॥

अर्थ-वात, पित्त, कफ, और रुधिर इनसे चार प्रकारका अभिष्यंद रोग होताहै उसकी पीडा सही नहीं जावे, तथा यह अभिष्यंद सर्व नेत्र रोगोंके अर्थात् अधिमंथादिक रोगोंके उत्पत्ति स्थान है अभिष्यंद कहिये नेत्रोंका दूखना, पकना, लालहोना और खुजाना॥

वाताभिष्यंद।

निस्तोदनस्तंभनरोमहर्षसंघर्षपारुष्यशिरोभितापाः।
विशुष्कभावःशिशिराश्रुताचवाताभिपन्नेनयनेभवंति॥

अर्थ-वादीसे नेत्र दूखने आये होय उनमें सुई चुभाने कीसी पीडा हो, नेत्रोंका स्तंभन (ठहरजाना) रोमांच, नेत्रोंमें रेत गिरनेके समान खटके, तथा रूक्ष होय मस्तकमें पीडा हो, नेत्रोंसे पानीगिरे, परंतु नेत्र सूखेसे रहैं और नेत्रोंसे जो पानी गिरे वो शीतल हो॥

पिंडिका।

वाताभिष्यंदशांत्यर्थस्निग्धोष्णापिंडिकाभवेत्।
एरंडपत्रमूलत्वङ्निर्मितावातनाशिनी॥

अर्थ--वाताभिष्यंदके नाशनार्थ अंडके पत्ते, जड और छालकी स्निग्धोष्ण पिंडीको नेत्रोंपर बाँधे तो वादीको नाश करे॥

एरंडादिसेक।

एरंडत्वक्पत्रमूलैःशृतमाजंपयोहितम्।
सुखोष्णंसेचनंनेत्रेवाताभिष्यंदनाशनम्॥

अर्थ-अंडकीछाल, पत्ते और जडको डालकै बकरीका दूध औंटावे यह सुखोष्ण लेकर नेत्रोंको सिंचन करे तो वाताभिष्यंदका नाश करे॥

हरिद्राद्यंजन ।

हरिद्रामधुकंपथ्यादेवदारूचपेषयेत् ।
आजेनपयसाश्रेष्ठमभिष्यंदेतदंजनम् ॥

अर्थ-हलदी, मुलहटी, हरड, देवदारु इनका चूर्ण करकै बकरीके दूधसे खूब बारीक घोंटे इसका वाताभिष्यंद नाश करनेको अंजन करे ॥

सैंधवादिपरिषेक ।

परिषेकेहितंनेत्रेपयःकोष्णंससैंधवम् ॥ रजनादारुसिद्धंवासैंधवे नसमन्वितम् । वाताभिष्यंदशमनंहितंमारुतपर्यये ॥

अर्थ-नेत्रोंके परिषेक विषयमें गुनगुने दूधमें सैंधानिमक डालकै देवे तो हितकारी होय और हलदी, देवदारु डालके दूधको औंटावे उसमें सैंधानिमक डालकै इससे सिंचन करे, तो वाताभिष्यंदका नाश करे, तथा वातव्याधि पर हितकारक है ॥

बिल्वादिआश्चोतन ।

बिल्वादिपंचमूलेनबृहत्यैरंडशिग्रुभिः ।
क्वाथस्याश्चोतनंकोष्णंवाताभिष्यंदनाशनम् ॥

अर्थ-बिल्वादि पंचमूल, कटेरी ,अंडकीजड, सहिंजनेकी छाल इनका काढा कर सुहाते २ नेत्रमें बूँद डाले, तो वाताभिष्यंदको नाश करे ॥

निंबपत्रादिपूरण ।

अंबुपिष्टैर्निंबपत्रैस्त्वचंलोध्रस्यपेषयेत् ॥ प्रतप्यवह्निनापिष्ट्वा तद्रसोनेत्रपूरणात् । वातोत्थंरक्तपित्तोत्थमभिष्यंदंविनाशयेत् ॥

अर्थ-नींबके पत्तोंको और लोधको जलमें पीसकै कल्ककरे, फिर इसको अग्निपर गरम करके इसका रस निकाल नेत्रोंमें डाले, तो वातज और रक्त पित्तज अभिष्यंदको नाश करे ॥

पित्ताभिष्यंद ।

दाहप्रपाकौशिशिराभिनंदाधूमायनंबाष्पसमुच्छ्रयश्च ।
उष्णाश्रुतापीतकनेत्रताचपित्ताभिपन्नेनयनेभवंति ॥

अर्थ-पित्तसे नेत्र दूखने आनेसे उनमें बहुत दाह हो, नेत्र पकजाय उनमें शीतल पदार्थ लगानेकी इच्छा हो, नेत्रोंसे धुआं निकले अथवा नेत्रोंमें धुआं जाने कीसी पीडा हो, तथा नेत्रोंसे अश्रु (आंसू) बहुत पडें और गरम पानी निकले, आंख पीलीसी मालुम पडे ॥

चंदनादिसेक।

चंदनारिष्टपत्राणियष्टीदार्व्यासैंधवैः।
पिष्टांभसाभवेत्सेकःपित्तेक्षौद्रसमन्वितः॥

अर्थ–चंदन, नीमके पत्ते, मुलहटी, दारुहलदी, सैंधानिमक इनको जलमें पीस और इसमें सहत मिलाय नेत्रोंको सिंचन करे तो पित्ताभिष्यंद नष्ट होवे।

आश्चोतन।

निंबस्यपत्रैःपरिलिप्यलोध्रंस्वेदोग्निनाचूर्णमथापिकल्कम्।
अश्चोतनंमानुषदुग्धमिश्रंपित्तास्रवातापहमग्र्यमुक्तम्॥

अर्थ–नींबके पत्तोंके लोधको लगायकै सेक करे, अथवा उसके चूर्णसे सेके अथवा उसके कल्कमें उसमें मनुष्यका दूध डालकै कपडेमें सानकै नेत्रमें बूंद डाले तो रक्तपित्त वातरक्त इनको नाश करे॥

द्राक्षादिआश्चोतन।

द्राक्षामधुकमंजिष्ठाजीवनीयैःशृतंपयः।
प्रातराश्चोतनंपथ्यंदाहशूलाक्षरोगजित्॥

अर्थ–दाख, मुलहटी, मजीठ और जीवनीयगण इनके कल्कमें दूध डालकै ओंटावे, फिर इसकी बूंद नेत्रोंमें प्रातःकाल डाले तो दाह, शूल और नेत्रके संपूर्ण रोग इनको नाश करे॥

पिंडिका।

पित्ताभिष्यंदनाशायधात्रीपिंडिसुखावहा।
महानिंबदलोद्भूतापिंडिकापित्तनाशिनी॥

अर्थ–आँवलेकी अथवा नीमके पत्तेकी पिंडी नेत्रोंपर धारण करे तो पित्ता-भिष्यंदका नाश होय॥

बिडालकादिलेप।

पैत्तिकेचंदनानंतामंजिष्ठाभिर्बिडालकः।
कार्यःसपद्मयष्ट्याह्वमांसीकालीयकैस्तथा॥

अर्थ–पित्ताभिष्यंदपर चंदन, धमासो और मजीठ इनका अथवा पद्माख मुलहटी, जटामांसी और दारुहलदी इनका लेप करे॥

चंदनादिलेप।

चंदनंमधुकंलोध्रजातीपुष्पाणिगैरिकम्।

प्रलेपोदाहरोगघ्नस्तोदनिष्पंदनाशनः ॥

अर्थ–चंदन, मुलहटी, लोध, चमेलीके फूल और गेरू, इनका लेप करे तो दाह दर्द और कंप इनको नाश करे ॥

कफाभिष्यंद।

ऊष्णाभिनंदागुरुताक्षिशोथःकंडूपदेहावतिशीतताच।
स्रावोबहुःपिच्छिलएवचापिकफाभिपन्नेनयनेभवंति ॥

अर्थ–कफसे नेत्र दूखने आये हों उसको गरम वस्तु नेत्रोंमें लगानेसे आम मालूम हो (अर्थात् नेत्रमें सेकसा मालूम हो) तथा नेत्र भारी होंय सूजन हो, खुजली चले, कीचडसे दूषित हों और शीतल हों, उन्मेंसे स्राव होय, सो गाढा और बहुत होय ॥

श्लैष्मिकाभिष्यंदचिकित्सा।

कफजेलंघनंस्वेदोनस्यंतिक्तादिभोजनम् । तीक्ष्णैःप्रधमनं कुर्यात्तीक्ष्णैरेवोपनाहनम् ॥ रूक्षतीक्ष्णविरेकैश्चमलंसम्यक् विनिर्हरेत् ॥

अर्थ–कफजन्य अभिष्यंदपर लंघन, स्वेदन नस्य कटुरसादि भोजन, तीक्ष्ण औषधका प्रधमन, तथा तीक्ष्ण औषधों करके रेचन देकर मलको निकालना, इत्यादि उपचार करे ॥

स्वेदन।

फणीज्जकास्फोतकदित्थबिल्वधत्तूरभृंगार्जुनपत्रयोगैः।
स्वेदंविदध्यादथवात्रलेपंसलोध्रशुंठीसुरदारुकुष्टैः ॥

अर्थ–फणिज्जक,सारिवा,कैथ,बेलगिरी, धतूरा,भांगरा और कोहवृक्ष इनके पत्तोंकी लुगदीसे सेके अथवा लोध, सोंठ, देवदारु और कूठ इनकालेप करे ॥

सामान्ययत्न।

वल्कलंपारिजातस्यतैलसैंधवकांजिकम्।
कफजाक्षिजशूलघ्नंतरुघ्नंकुलिशंयथा ॥

अर्थ–पारिजात (हारसिंगार) की छाल, तेल, सैंधानिमक और कांजी इनको एकत्र पीस, नेत्रोंमें लेप करे तो नेत्रशूलको नाश करे ॥

नेत्रशूलपर।

सौवीरसैंधवंतैलंमूर्वामूलंतथैवच।

कांस्यपात्रेविघृष्टंस्यादक्ष्णोःशूलनिवारणम् ॥

अर्थ-कांजी, सैंधानिमक, तेल और मूर्वाकी जड इनको एकत्र कर कांसेके पात्रमें घोटके नेत्रोंको लेप करे तो नेत्रशूलको नाश करे ॥

सलवणकटुतैलंकांजिकंकांस्यपात्रेघनितमुपलघृष्टंधूपितंगोमयाग्नौ । सपवनकफकोपंच्छागदुग्धावसिक्तंजयतिनयनशूलंस्त्रावशोथंसरागम् । स्पंदाभिमंथेक्रममाचरेच्चसर्वेषुचैतेषुसदा प्रशस्तम् ॥

अर्थ-निमक, सरसोंका तेल और कांजी इनको कांसेके पात्रमें डालकै पत्थरसे घोटे और उपलोंकी अग्निपर गरम करके उसमें बकरीका दूध डाले, फिर लेप करे तो नेत्रशूल, स्राव, सूजन और नेत्रोंकी लाली, इनको नाश-करे, यह स्पंद अथवा अधिमंथ इनपरही करे, अतीव उत्तम है ॥

निंबादि धूप ।

निंबार्कपत्रसंपर्कंलोध्रंभागचतुष्टयम् ।
धूपःसर्पिःपयोभागैःकफेसेकःसुखांबुनाम् ॥

अर्थ-नींब, आकके पत्ते, १ भाग और लोध ४ भाग, सबको एकत्र करकै धूनी देवे तथा घी,दूध और जल इनको एकत्र गरम करे फिर सुहाता २ नेत्रोंपर सेक करे तो कफाभिष्यंदको नाश करे ॥

आश्चोतन ।

ससैंधवंलोध्रमथाज्यभृष्टंसौवीरपिष्टंसितवस्त्रबद्धम् ।
आश्चोतनंतन्नयनस्यकुर्यात्कंडूंचदाहंचरुजंचहन्यात् ॥

अर्थ-सैंधानिमक, लोध, इनको एकत्र करकै घीमें भून लेवे फिर कांजीमें पीसकै सपेद कपडेमें बांधकै नेत्रोंमें बूंद निचोडे तो खुजली दाह और दर्द इनको नाश करे ॥

पिंडिका ।

शिग्रुपत्रकृतापिंडीश्लेष्माभिष्यंदहारिणी । शुंठीनिंबफलैःपिंडीसुखोष्णास्वल्पसैंधवा।धार्याचक्षुषिसंयोगाशोथकंडूव्यथाहरा ॥

अर्थ-सहिंजनके पत्तोंको पीस उसकी पिंडी बनायकै नेत्रोंमें बांधै तो कफाभिष्यंदका नाश करे और सोंठ, तथा निंबोरियोंको एकत्र पीसकै कुछ गरम करकै उसमें सैंधानिमक डाले, फिर इसकी पिंडी बनायकै नेत्रोंपर धारण करे तो सूजन और कंडू (खुजली) इनको नाश करे ॥

बिडालक।

रसांजनेनवालेपःपथ्याविश्वदलैरपि ।
वचाहरिद्राविश्वैर्वातथानागरगैरिकैः ॥

अर्थ–रसोतका अथवा हरडका अथवा अदरखके पत्तोंका वा वच हलदी और सोंठ, इनका अथवा सोंठ और गेरू इनका लेप करे ॥

रक्तजाभिष्यंद ।

ताम्राश्रुतालोहितनेत्रताचराज्यःसमंतादतिलोहिताश्च ।
पित्तस्यलिंगानिचयानितानिरक्ताभिपन्नेनयनेभवंति ॥

अर्थ–रक्ताभिष्यंदसे नेत्रोंसे लाल पानी गिरे, नेत्र लाल होंय और नेत्रोंमें ओरपास रेखासी लाल लाल दीखें और जो पित्ताभिष्यंदके लक्षण कहे हैं वो सब लक्षण इसमें होवैं ॥

वासादि क्वाथ ।

आटरूषभयानिंबधात्रीमुस्तकमूलकैः ।
रक्तस्रावंकफंहंतिचक्षुष्यंवासकादिकम् ॥

अर्थ–अडूसा, हरड, नीमकी छाल, आँवले, नागरमोथा और मूली, इनका काढा करके देवे तो रक्तस्राव और कफ इनका नाश करे, यह वासादि नेत्रोंको परम हितकारी है ॥

त्रिफलादि सेक ।

त्रिफलालोध्रयष्टीभिः शर्कराभद्रमुस्तकैः ।
पिष्टैःसितांबुनासेकोरक्ताभिष्यंदनाशनः ॥

अर्थ--हरड, बहेडा, आँवला, लोध, मुलहटी; मिश्री और भद्रमोथा ये सब औषध शीतल जलमें पीसकै नेत्रोंमें सेककरे तो रक्ताभिष्यंदको नाशकरे ॥

आश्चोतन ।

स्त्रीस्तन्यश्चोतनंनेत्रेरक्तापित्तानिलार्तिजित् ।
क्षीरसर्पिर्घृतंवापिरक्तपित्तरुजंजयेत् ॥

अर्थ–स्त्रीके दूधकी बूँद नेत्रमें डाले अथवा घी और दूध एकत्र करकै उसकी अथवा घीकी बूँद डाले तो रक्तपित्त विकारका नाशहोय ॥

प्रकारांतर ।

लोध्रचूर्णघृतेघृष्टंरुजमाश्चोतनैर्हरेत् ।

शर्करात्रिफलाचूर्णमिदमाश्चोतनंपरम् ॥

अर्थ–लोधको घीमें घिसके इसकी बूंद नेत्रमें डाले, अथवा त्रिफलाका चूर्ण मिश्रीके साथ मिलायके इसकी बूंद नेत्रमें डाले तो हितकारी होवे ॥

अंजन।

श्रीपर्णीपाटलाधात्रोधातकीबिल्वकार्जुनान् । पुष्पाणितुबृहत्याश्चबिंबीलोध्रंचतुल्यसः ॥ मंजिष्ठंचापिमधुनापिष्टापीक्षुरसेनवा। रुधिरस्यंदशांत्यर्थमेतदंजनमिष्यते ॥

अर्थ–शाकपर्णी, पाढ, आँवले, धायके फूल, लोध, कोहवृक्षकी छाल, कटेरीके फूल, कंदूरी, लोध और मजीठ, इनको सहतसे अथवा ईखके रसमें पीसके इसका नेत्रोंमें अंजन करे तो रक्ताभिष्यंदका नाश होय ॥

अभिष्यंदसे अधिमंथकी उत्पत्ति।

वृद्धैरेतैरभिष्यंदैर्नराणामक्रियावताम् ।
तावंतस्त्वधिमंथाःस्युर्नयनेतीव्रवेदनाः ॥

अर्थ–इस अभिष्यंदमें औषधोपचार न करनेसे यह बढकर उतनेही (चार) अभिष्यंद रोग नेत्रोंमें प्रगट होंय, इससे नेत्रोंमें तीव्र पीडा होंय, यह अधिमंथके सामान्य लक्षण हैं। वेदना शब्द इस जगह व्यथामात्रका वाचक है इससे यह प्रगट हुआ कि, वातके अभिष्यंदसे वातिकअधिमंथ प्रगट होय उसमें तीव्र वातज सर्व निस्तोदादि पीडा होंय, इसी प्रकार पित्तकेसे, कफकेसे, रुधिरकेसे, पित्त कफ रुधिरके अधिमंथ स्वलक्षण करके जानने ॥

सामन्य लक्षण।

उत्पाट्यतइवात्यर्थंनेत्रंनिर्मथ्यतेतथा ।
शिरसोर्धंचतंविद्यादधिमंथंस्वलक्षणैः ॥

अर्थ–आधे शिरमें उपाडनेकीसी पीडा होय, अथवा तोडनेकीसी, तथा मथनेकीसी पीडा हो, व्याधिके प्रभावसे आधेशिरमें पीडा हो, इससे अधिमंथ कहते हैं इनके लक्षण वातज अभिष्यंदके समान जानने ॥

कालमर्यादा।

हन्याद्दृष्टिंश्लैष्मिकःसप्तरात्राद्योऽधीमंथोरक्तजः पंचरात्रात् ।
षड्रात्रादावातिकोवैनिहन्यान्मिथ्याचारात्पैत्तिकःसद्यएव ॥

अर्थ–कफका अधिमंथ सात दिनमें दृष्टिका नाश करे, रक्तज अधिमंथ पांच दिनमें, वातिक अधिमंथ छः दिनमें और पैत्तिक अधिमंथ मिथ्योप-

चारसे तत्काल (तीन दिनमें) दृष्टिका नाश करे, (अर्थात् आंख जाती रहे) इस जगह जो कालकी अवधि कही है सो व्याधिके स्वभावसे तथा लंघन प्रलेपादि क्रिया करके तथा अंजन निषेधके निमित्त कहाहै ॥

नेत्ररोगके सामान्यलक्षण।

उदीर्णवेदनंनेत्रंरागोद्रेकसमन्वितम्।
घर्षनिस्तोदशूलाश्रुयुक्तमामान्वितंविदुः ॥

अर्थ–जिस नेत्ररोगमें पीडा विशेष होय, लाली बहुत होकर चमका चले, तथा उसमें घर्ष (रेत गिरनेसे जैसी पीडा होती है वैसी) पीडा होय, सुई चुभाने कीसी पीडा होय, शूलसा चले और स्रावयुक्त होवे, उन नेत्रोंको आमयुक्त जानना। अंजन लगानेसे तथा हलका अन्न खानेसे ये लक्षण कहेहैं॥

निरामके लक्षण।

मंदवेदनताकंडूःसंरंभाश्रुप्रशांतता।
प्रसन्नवर्णताचाक्ष्णोःसंपक्वंदोषमादिशेत् ॥

अर्थ–नेत्रोंमें पीडा कम होवै, खुजली चलै, सूजन मंद होय, आंसुओंका गिरना बंद होय, नेत्रोंका वर्ण स्वच्छ होय ये दोष पक्व होनेके लक्षण हैं ॥

शोथयुक्त अक्षिपाकके लक्षण।

कंडूपदेहाश्रुतःपक्वोदुंबरसन्निभः ॥ संरंभीपच्यतेयस्तुनेत्र पाकःसशोफजः । शोथहीनानिलिंगानिनेत्रपाकेत्वशोथजे ॥

अर्थ–नेत्रोंमें सूजन आकर पकजाय, उनमें आंसू बहे और पके गूलरके समान लाल होंय, ये लक्षण शोथसहित नेत्ररोगके हैं और शोथ (सूजन) के विना जो नेत्रपाक होय उसमें शोथको छोडकर सब लक्षण होय यह व्याधि त्रिदोषजन्य जाननी ॥

शोथपाकचिकित्सा।

जलौकालापनंश्रेष्ठंनेत्रपाकेविरेचनम्।
शिराव्यधंवाकुर्वीतसेकोलेपश्चशुक्रवत् ॥

अर्थ–नेत्रोंमें सूजन और पाक ये होवे तो जोंख लगावे, रेचकदवाई दे, अथवा फस्त खोलें और नेत्रशुक्रपर कहे हुए सेक और लेप ये करे ॥

बिभीतकादि क्वाथ।

बिभीतकशिवाधात्रीपटोलारिष्टवासकैः।
क्वाथोगुग्गुलसंयुक्तःशोथशूलाक्षिरोगनुत् ॥

अर्थ-बहेडा, हरड, आंवला, पटोलपत्र, नीमकी छाल और अडूसा इनके काढेमें गूगल डालके पीवे तो नेत्रोंकी सूजन और नेत्रपाकको नाश करे ॥

हताधिमंथके लक्षण।

उपेक्षणादक्षियदाऽधिमंथोवातात्मकःसादयतिप्रसह्य।
रुजाभिरुग्राभिरसाध्यएषहताधिमंथःखलुनेत्ररोगः॥

अर्थ-वातज अधिमंथकी उपेक्षा करनेसे वह नेत्रोंको सुखाय देवे, इस मनुष्यके नेत्रोंमें तोद (सुईके चुभानेकीसी पीडा) दाहादि भारी पीडा होय, यह हताधिमंथनामक नेत्र रोग असाध्य है इसी रोगको विदेह दृष्टेचु त्क्षेपण कहता है अथवा दृष्टिनिर्गम तथा सकलाक्षिशोषभी जानना यही सुश्रुतकाभी मत है इस रोगसे नेत्र सूखे कमलके समान हो जाते हैं ॥

अधिमंथचिकित्सा।

अधिमंथेषुसर्वेषुललाटेव्यधयेच्छिराम्।अशांतेसर्वथामंथेभ्रुवो रुपरिदाहयेत्॥ अभिष्यंदेषुयाःप्रोक्ताश्चतुर्षुचप्रतिक्रियाम्। ताःसर्वाश्चाधिमंथेषुप्रयोज्याश्चभिषग्वरैः॥ सर्वएवविधिःसर्वमं थादिष्वपिचेष्यते॥

अर्थ-संपूर्ण अधिमंथ व्याधियोंमें ललाट स्थानकी शिराका वेध करे, इस प्रकार करनेसे यदि शांति न होवे तो भौंहोंके ऊपर दाग देवे और जो चारों प्रकारके अभिष्यंदों पर क्रिया कही है वो सब इसपर योजना करे और सर्वजअधिमंथपर कही हुई विधि वैद्य करे ॥

वातपर्यय लक्षण।

वारंवारंचपर्येतिभ्रुवौनेत्रेचमारुतः।
रुजश्चविविधास्तीव्राःसज्ञेयोवातपर्ययः॥

अर्थ-वायु क्रमसे कभी कभी भ्रुकुटिमें प्राप्त हो और कभी २ नेत्रोंमें प्राप्त होकर और अनेक प्रकारकी तीव्र पीडा करे उसको वातपर्यय कहते हैं ॥

वातपर्यय चिकित्सा।

वाताभिष्यंदवच्चात्रवातेमारुतपर्यये। अनेनैवविधानेनभिषक्के

---

१ अंतर्गतः शिराणां तु यदा तिष्ठति मारुतः। सतदानयनंप्राप्यशीघ्रंदृष्टिं निरस्यति ॥ तस्यां निरस्यमानाय निर्मंथन्निवमारुतः। नयनंनिर्वपत्याशु शूलतो दधिमंथनैः ॥ २ अन्तःशिराणांश्वसनः स्थितो दृष्टिं च प्राक्षिपन्। हताधिमंथंजनयेत्तमसाध्यं विदुर्बुधाः ॥ इति विदेहः ॥ अथवा शोषयेदक्ष्णोः क्षीणात्तेजोबलादयम् ॥ तत्पद्ममिव संशुष्कंसवदेदितिलोचनम् ॥

वाभिसाधयेत् ॥ पूर्वंतत्रहितंसर्पिःक्षीरंवाप्यथभोजनम् । परिषेकोहितंनेत्रेपयःकोष्णंससैंधवम् ॥ रजनीदारुसिद्धंवासैंधवेन समन्वितम् । वाताभिष्यंदशमनंहितंमारुतपर्यये ॥

अर्थ–वातपर्यय पर वाताभिष्यंदनाशक विधि करे और प्रथम घी, दूध, भोजन, परिषेक और सैंधानिमक डालके मंदोष्ण दूध और हलदी, दारुहलदी इनके काढेमें दूध डालके ओंटावे, फिर इसमें सैंधानिमक डालके देवे इस प्रकार वाताभिष्यंदनाशक उपचार करे ॥

शुष्काक्षिपाकलक्षण।

यत्कूणितंदारुणरूक्षवर्त्मसंदह्यतेचाविलदर्शनंच ।
सुदारुणंयत्प्रतिबाधनेचशुष्काक्षिपाकोपहतंतदक्षि ॥

अर्थ–जो नेत्र खुले नहीं अर्थात् संकुचित हो जाय, जिनकी वाफणी कठिन और रूक्ष होय, जिसके नेत्रोंमें दाह विशेष होय, यथार्थ दीखें नहीं, जो खोलनेमें बहुत दुःख होय, उन नेत्रोंको शुष्काक्षिपाक नामक रोगसे पीडित जानना यह रोग रक्तसहित बादीसे होताहै सो करालाचार्य्यने लिखाहै ॥

शुष्काक्षिपाकचिकित्सा।

शुष्काक्षिपाकेचसदाइदंसेचनकंहितम् । सैंधवंदारुशुंठीचमातुलिंगरसोघृतम् । स्तन्योदकार्धंकुर्वीतशुष्कपाकेतदंजनम् ॥

अर्थ--नेत्रोंका शुष्कपाक होनेसे सैंधानिमक दारुहलदी, सोंठ, विजौरेका रस घी स्त्रीका दूध तथा आधा जल इनको एकत्र कर इसका सिंचन करे और अंजन करे ॥

जीवनीयादि तैल।

शुष्काक्षिपाकेहविषःपानमक्ष्णोश्चतर्पणम् ।
घृतेनजीवनीयेननस्यंतैलेनयोजयेत् ॥

अर्थ--शुष्काक्षिपाक होनेसे घी पिवावे और जीवनीयगण करकै घी सिद्ध करके वो नेत्रोंमें डाले और तेलकी नस्य करे ॥

अन्यतो वातलक्षण।

यस्यावटूकर्णशिरोहनुस्थोमन्यागतोवाप्यनिलोन्यतोका ।
कुर्याद्रुजंवैभ्रुविलोचनेचतमन्यतोवातमुदाहरंति ॥

---

१ कुपितः खरवर्त्मासिक्तच्छ्रोन्मीलाविलक्षणम् । सदाहमासृजोवाताच्छुष्कपाकान्वितंवदेत् ।

अर्थ-घाटी (घार),कान, मस्तक, ठोडी, मन्यानाडी इनमें अथवा इतर ठिकाने स्थित जो वायु भ्रुकुटी (भौंह) नेत्रोंमें तोद भेदादि पीडा करे इस रोगको अन्यतो वातरोग कहते हैं अर्थात् अन्यस्थानोंमें स्थित होकर अन्य स्थानोंमें पीडा करे इसीसे इसको अन्यतो वातरोग कहते हैं सो विदेह-का मत भी है ॥

चिकित्सा।

तथाचाप्यन्यतोवातेसामान्योवक्ष्यतेविधिः ॥

अर्थ-अन्यतो वातपर सामान्य विधिको कहताहूं ॥

दार्व्याद्यंजन और आश्चोतन।

यष्टीगुडूचीत्रिफलासदार्वीअक्ष्यामयेसर्वगतेपिबेद्वा ।
आश्चोतनंसर्वरसेनदार्व्याशस्तंसदाक्षौद्रयुतंनराणाम् ॥

अर्थ--सर्वज नेत्ररोगोंपर मुलहटी, गिलोय, त्रिफला, दारुहलदी इनका काढा पीवे और रार, दारुहलदी इनको सहतमें पीसके इसकी बूंद नेत्रोंमें डाले, यह उत्तम है ॥

गुडूच्यादि क्वाथ।

गुडूचीत्रिफलाक्काथोमधुनासहयोजितः ।
पीतःसर्वाक्षिरोगघ्नःकृष्णाचूर्णावचूर्णितः ॥

अर्थ-गिलोय और त्रिफला इनका काढा सहत और पीपलका चूर्ण डालकै पीनेको देवे तो संपूर्ण नेत्ररोगोंको नाश करे ॥

पौंडरीक सेक।

प्रपौंडरीकयष्ट्याह्वदार्वीलोध्रैःसचंदनैः ।
एरंडांबुयुतैःसेकःसर्वनेत्ररुजापहः ॥

अर्थ--पुंडरीक वृक्ष, मुलहटी, दारुहलदी, लोध, चंदन और अंडकी जड, इनका काढा नेत्रोंमें डाले तो संपूर्ण नेत्ररोगोंको नाश करे ॥

श्वेतलोध्रादि सेक।

श्वेतंलोध्रंघृतेभ्रष्टंचूर्णितंताप्यतुत्थकम् ।
कृष्णांबुनाविमृदितंसेकःशूलहरःपरः ॥

अर्थ-सपेद लोधको घीमें भून उसके चूर्णको और सोनामक्खी लीलाथोथा ये सब पीपलीके जलसे घोटकर सेवन करे तो संपूर्ण शूलोंका नाश करे ॥

---

१ मन्यानामन्तरेवायुरुत्थितःपृष्ठतोपिवा । करोति भेदं निस्तोदं शंखं चाक्ष्णोस्तथा । तमाहुरन्यतोवातं रोगं दृष्टिविदोजनाः । इति ॥

अन्यतावोतचिकित्सा ।

यष्टीगैरिकसिंधूत्थदार्वीताक्ष्यैःसमांशकैः ।
जलपिष्टैर्बहिर्लेपोसर्वनेत्रामयापहः ॥

अर्थ-मुलहटी, गेरू, सैंधानिमक, दारुहलदी और रसोत ये समान भाग ले जलमें पीस नेत्रोंको बाहर लेप करे तो संपूर्ण नेत्ररोगोंका नाशकरे ॥

सैंधवाद्यंजन ।

दग्ध्वाससैंधवंलोध्रंमधूच्छिष्टयुतेघृते ।
पिष्टमंजनलेपाभ्यांसद्योनेत्ररुजापहम् ॥

अर्थ-सहत और घी इनमें सैंधानिमक और लोधको भूनके पीसलेवे इसका लेप और अंजन करे तो तत्काल नेत्ररोगको शमन करे ॥

निंबुरसलेप ।

लोहस्यपात्रेसंघृष्टोरसोनिंबसमुद्भवः ।
किंचिद्घनोबहिर्लेपोनेत्रव्याधिंव्यपोहति ॥

अर्थ-लोहेके पात्रमें नींबूका रस डालकै औंटावे जब गाढा होजावे तब इसका नेत्रोंपर लेप करे तो नेत्ररोगकी शांतिकरे ॥

निंबादिपिंडी ।

निंबस्यचोदुंबरवल्कलस्यएरंडयष्टीमधुचंदनस्य ।
पिंडोविधेयोनयनप्रकोपेकफेनपित्तेनसमीरणेन ॥

अर्थ-वात, पित्त, कफ इनसे नेत्रकोप होनेसे नीमकी छाल और गूलरकी छाल, अंडकी जड, मुलहटी और लालचंदन इनको पीसकै पिंडी बनाय नेत्रोंपर बांधे ॥

अम्लाध्युषितके लक्षण ।

श्यावंलोहितपर्यंतंसर्वंचाक्षिप्रच्यते ॥
सदाहशोथंसस्रावमम्लाध्युषितमम्लतः ॥

अर्थ-मध्यमें कुछ नीलवर्ण और आस पास लाल भराहो ऐसे सर्व नेत्र पकजाय और उनमें पीले रंगकी फुंसी होय, उनमें दाह होकर सूजन होय, तथा नेत्रोंसे पानी झरे यह रोग अम्ल (खटाई आदि खानेसे होताहै, सुश्रुतके मतसे यह रोग पित्तसे होताहै) इसको अम्लाध्युषित कहते हैं ॥

चिकित्सा।

तिक्तस्यसर्पिषःपानंबहुशश्चविरेचनम्।
अम्लाध्युषितशांत्यर्थंकुर्याल्लेपान्सुशीतलान् ॥

अर्थ-खटाई खानेसे यदि नेत्र विकारहो गया होवे तो कडुये रस और घी इनका पान करे वारंवार दस्त करावे और शीतल लेपकरे ॥

तिल्वकादि पान।

तिल्वकंत्रिफलांसर्पिजीर्णंवाकेवलंपिबेत्।
शिराव्यधंविनाकार्यःपित्तस्यंदहरोविधिः ॥

अर्थ-लोध, त्रिफला इनके काढेमें पुराना घी डालकै देवे फस्त खोलनेके विना सब पित्ताभिष्यंद नाशक विधिकरे ॥

शिरोत्पातलक्षण।

अवेदनावापिसवेदनावायस्याक्षिराज्योहिभवंतिताम्राः।
मुहुर्विरज्यंतिचयाःसदाहग्व्याधिःशिरोत्पातइतिप्रदिष्टः ॥

अर्थ-जिसके नेत्रकी नस पीडासहित अथवा पीडारहित तांबेके समान लालरंगकी होजाय और वह बराबर अधिकाधिक (जियादासे जियादा) लाल होजाय, इस रोगकी शिरोत्पात (सबलवायु) कहते हैं। यह रोग रक्तजन्य है ॥

शिराहर्ष लक्षण।

मोहाच्छिरोत्पातउपेक्षितस्तुजायेतरोगस्तुशिराप्रहर्षः।
ताम्राक्षमस्रंस्रवतिप्रगाढंतथानशक्नोत्यभिवीक्षितुंच ॥

अर्थ-अज्ञान करके शिरोत्पात (सबल) वायुकी उपेक्षा करनेसे अर्थात् इलाज न करनेसे शिराप्रहर्ष रोग होताहै उसमें नेत्रोंसे लाल स्वच्छ ऐसे आंशू गिरे और उस रोगीको नेत्रोंसे कुछ दिखलाई न देवे ॥

शिरोत्पात शिराहर्षकी चिकित्सा।

शिरोत्पातंशिराहर्षमन्यांश्चास्रभवान्गदान्।
स्निग्धस्यकोष्णेनाज्येनशिरावेधैःशमंनयेत् ॥

अर्थ-शिरोत्पात और शिराहर्ष तथा जो रुधिरसे प्रगट रोग है वो मंदोष्ण घीसे स्निग्ध करकै फिर शिरावेध करे इस प्रकार उपचार करकै शमन करे ॥

शिरोत्पात पर।

सर्पिःक्षौद्रंचांजनंस्याच्छिरोत्पातस्यभेषजम्।
तद्वत्सैंधवकासीसंस्तन्यपिष्टंचपूजितम् ॥

अर्थ-शिरोत्पातपर घी, सहत और रसोत अथवा सैंधानिमक और हीराकसीस ये स्त्रीके दूधमें घोटकर देवे यह औषध उत्तम है ॥

फणिताद्यंजन।

शिराहर्षेंऽजनंकार्यंफाणितंमधुसंयुतम्। मधुनाताक्ष्यंशैलंचकासीसंवासमाक्षिकम् ॥ वेतसाम्लस्तस्ययुतंफाणितंतुससैंधवम्।
पित्ताभिष्यंदशमनोविधिश्चात्रापियोजयेत् ॥

अर्थ-शिरोत्पात और शिराहर्ष इनपर राब और सहत डालकै इसका अथवा रसोत और शिलाजीत सहतमें पीस इसका अथवा हीराकसीसको सहतसे अथवा अमलवेत, राब और सैंधानिमक इनका अंजन लगावे तथा पित्ताभिष्यंद नाशक सर्व विधिकरे ॥

सव्रणशुक्रलक्षण।

निमग्नरूपंतुभवेद्धिकृष्णेसूच्येवविद्धंप्रतिभातियद्वै।
स्रावंस्रवेदुष्णमतीवयच्चतत्सव्रणंशुक्रमुदाहरंति ॥

अर्थ--नेत्रके काले भागमें शुक्र कहिये फूलसा होजाय और वह भीतरसे गडासा होजाय उसमें सुई चुभानेकीसी पीडा होवे, तथा नेत्रोंसे अति गरम और बहुत स्राव होवे, इस रोगको सव्रण शुक्र कहते हैं इसमें पीडा बहुत होती है क्षतमें पीडा होना ठीक है और नेत्र सरीखे सुकुमार ठिकानेपर तो विशेष पीडा होती है ऐसे भोजविदेहादिकोंका मत है ॥

असाध्यमेंभी साध्यत्व।

दृष्टेःसमीपेनभवेत्तुयत्तुनचावगाढंनचसंस्रवेद्धि।
अवेदनंवानचयुग्मशुक्रंतत्सिद्धिमायातिकदाचिदेव ॥

अर्थ-जो शुक्र (फूल) दृष्टिके समीप होय नहीं और एक त्वचामें होय बहुत स्रवे (झरे) नहीं, जिसमें पीडा न होय और एकही स्थानमें दो बूंद (फूल) न होय, ऐसा शुक्र कदाचित् अच्छाभी होजाय परन्तु इनसे विपरीत लक्षण दृष्टिके समीप होना, दूसरी त्वचामें होय बहुत स्रवे पीडा होय एक स्थानमें दो बूंद होय यह शुक्र अच्छा नहीं होय ॥

करंजबीजवर्त्ती।

पालाशपुष्पस्वरसैर्बहुशः परिभाविता।
करंजबीजवर्तिस्तुदृष्टेःपुष्पंव्यपोहति॥

अर्थ–कंजेके बीजोंको पीसके वत्ती बनावे, उसको पलासके फूलोंके रसकी बहुत भावना देवे, फिर इसको नेत्रोंमें फेरा करे तो नेत्रके फूलेका नाश करे॥

समुद्रफेनादि वर्त्ती।

समुद्रफेनसिंधूत्थशंखदक्षांडवल्कलैः।
शिग्रुबीजयुतैर्वर्तिःशुक्रादीञ्छस्त्रवल्लिखेत्॥

अर्थ--समुद्रफेन, सैंधानिमक, शंख, मुरगेके अंडकी जरदी और सहिंजनेके बीज इनकी बत्ती बनायके शुक्रादिकोंपर फेरे तो यह शस्त्रके समान शुक्रादिकोंका लेखन करे॥

चंद्रोदयवर्त्ती।

रसांजनंसशैलेयंकुंकुमंसमनःशिला। शंखःसश्वेतमरिचंशर्करा चैवसप्तमम्॥ एषाचंद्रोदयानामवर्तिर्वैदेहनिर्मिता। हन्यात्पिल्लंचकंडूंचशुक्रंसतिमिरार्बुदम्॥

अर्थ–रसोत, शिलाजीत, केशर, मनसिल, शंख, सपेद मिरच और मिश्री इन सबको एकत्र घोटकै बत्ती बनावे यह 'चंद्रोदयवर्त्ती' विदेहराजाने निर्माण करी है। यह पिल्ल, कंडू, शुक्र, तिमिर और अर्बुद इनको नाश करे॥

अव्रणशुक्र लक्षण।

स्यंदात्मकंकृष्णगतंसचोषंशंखेन्दुकुंदप्रतिमावभासम्।
वैहायसाभ्रप्रतनुप्रकाशमथाव्रणंसाध्यतमंवदंति॥

अर्थ–अभिष्यंदसे उत्पन्न होकर नेत्रोंके काले भागमें चोष (कहिये सींग तुमडीकी पीडा) युक्त, शंख चन्द्र कुन्दपुष्प इनके समान सफेद आकाशके समान पतला ऐसा जो व्रणरहित शुक्र होय, उसको सुखसाध्य कहते हैं॥

अव्रणशुक्रके असाध्यलक्षण।

गंभीरजातंबहलंचशुक्रंचिरोत्थितंवापिवदंतिकृच्छ्रम्।

अर्थ–जो शुक्र गंभीर हो अर्थात् दो तीन त्वचाके भीतर हुआ हो तथा मोटा हो उसको कृच्छ्रसाध्य कहते हैं॥

तथा असाध्यलक्षण।

विच्छिन्नमध्यंपिशितावृतंवाचलंशिरासूक्ष्ममदृष्टिकृच्च। द्वित्वग्गतंलोहितमंततश्चशिरोत्थितंचापिविवर्जनीयम्॥

अर्थ--जो शुक्रके बीचका मांस गिर जाय, इसीसे शुक्रके स्थानमें गढेला हो जाय, अथवा इसके विपरीत कहिये पिशितावृत (अर्थात् उसके चारों ओर मांस होय) चंचल कहिये एक ठिकाने न रहे, शिरान्करके व्याप्त हो, बारीक होगया हो दृष्टिनाश करनेवाला (यह दृढेः समीपे न भवेत्) इसका उलटा है, दो पटल कहिये परदोंके भीतर भया हो चारों ओरसे लाल हो और बीचमें सफेद बहुत दिनका शुक्र हो ऐसेको वैद्य त्यागदे॥

प्रकारांतर।

उष्णाश्रुपातःपिडिकाचनेत्रेयस्मिन्भवेन्मुद्गनिभंचशुक्रम्। तदाप्यसाध्यंप्रवदंतिकेचिदन्यच्चयत्तित्तिरिपक्षतुल्यम्॥

अर्थ–जिसके नेत्रोंसे गरम अश्रुपात (आंसू) गिरकर पिडिका उत्पन्न होवे (दो पटलमें शुक्र जानेसे ये लक्षण होतेहैं) तथा जिसमें मूंगकें बराबर शुक्र होवे ऐसा नेत्रका शुक्र असाध्य है और जो तीतरके पंखके समान (कहिये काले रंगका) होवे, उसकोभी असाध्य कोई २ कहते हैं॥

शशकादि घृत।

शशकस्यकषायेतुघृतप्रस्थंविपाचयेत्। कल्कंदद्यात्तुसक्षीरं यथोक्तान्कर्षसंमितान्॥ सारिवामधुकंलाक्षाचंदनंनीलमुत्पलम्। बलाचातिबलाचैवमृणालंपत्रकंतथा॥ कार्षिकंसविषालोध्रंजीवनीयगणान्वितम्। घृतमेतत्प्रयोक्तव्यंपानेनस्येचपूरणे। अजकामर्जुनंकाचंपटलंशुक्रमेवच॥ तथाक्षिरोगान्सकलान्वातपित्तोत्तराञ्जयेत्॥

अर्थ–शशेके मांसके काढेमें ६४ तोले घी डालके उसमें दूध और सारिवा, मुलहटी, लाख, चंदन, नीलाकमल, चिरेटी, अतिबला, कमलकंद, पत्रज, अतीस, लोध्र और जीवनीयगणकी औषधी इनका एक २ तोले कल्क डालके पचावे, जब सिद्ध हो जावे तब खानेको देय अथवा नस्यार्थ, अथवा नेत्र पूरणार्थ देवे तो अजका, अर्जुन, काच, पटल, शक्र और पित्ताधिक संपूर्ण नेत्र रोगोंको नाश करे॥

लामज्जकाद्यंजन।

लामज्जकोत्पलसितासारिवाचंदनद्वयैः । कार्षिकैःसारिवाप्र
स्थंक्राथयेत्सलिलाढके ॥ पादशेषंपरिस्राव्यपचेदादर्विलेप
नात्। भाजनेलोहशैलेवाप्रातस्तत्सायमंजनम् ॥ प्रधानमेत
च्छुक्रघ्नंव्रणशुक्रंशमंनयेत् ॥

अर्थ-नेत्रवाला, कमल, मिश्री, सारिवा, चंदन, रक्तचंदन ये प्रत्येक तोले २ ले तथा सपेदसारिवा (गौरीसर) ६४ तोले ले १०२४ तोलेजलमें डालके औंटावे जब चतुर्थांश काढा रहे तब उतारके छान लेवे, फिर इसको औंटावे जब कलछीसे चिपटने लगे तब उतारके लोहेके पात्रमें अथवा पत्थरके वासनमें भरके धर रखे, इसका सायंकालमें अंजन करे तो शुक्र और व्रणशुक्र इनको नाश करनेमें परमोत्तम है ॥

श्यामामूलकषाय।

श्यामामूलकषायंवामधुनाव्रणशुक्रिणाम् ॥

अर्थ-सारिवाकी जडका काढा सहत डालके व्रणशुक्रपर देवे ॥

चंदनादिवर्त्ती।

चंदनंगैरिकंलाक्षामालतीकलिकान्विता।
व्रणशुक्रहरीवर्तिःशोणितस्यप्रसादनी ॥

अर्थ--चंदन, गेरू, लाख, चमेलीकी कली इनको पीसके वत्तीबनावे तो व्रणशुक्रका नाश करे तथा रुधिरको स्वच्छ करे ॥

सव्रणशुक्रप्रतीकार।

व्रणाशुक्रप्रशांत्यर्थंषडंगंगुग्गुलुंपचेत्।
शिरसोवाहरेद्रक्तंजलौकाभिश्चलोचनात् ॥

अर्थ-व्रणशुक्र नाश विषयमें षडंगगूगल देवै, तथा मस्तकका और नेत्रोंका जोंख लगायकै रुधिर निकालना चाहिये ॥

सैंधवादि घृत।

ससैंधवंत्रिवृत्क्राथेत्रिवारंपाचयेद्घृतम्।
पित्वासर्वेषुशुक्रेषुशीघ्रंकुर्याच्छिराव्यधम् ॥

अर्थ-संपूर्ण शुक्र रोगपर निशोथके काढेमें सैंधानिमक डालकै तीनबार घी पचावे, इस घीको पीतेही फस्त खोले ॥

यष्ट्याह्वादि आश्चोतन।

यष्ट्याह्वदार्व्युत्पलपद्मलाक्षाप्रपौंडरीकंनलदांबुनाच।
आश्चोतनंस्त्रीपयसाविपक्वंनिहंतितत्सव्रणदाहशुक्रम्॥

अर्थ-मुलहटी, दारुहलदी, नीलाकमल, कमल, लाख, पुंडरीकवृक्ष और जटामांसी, नेत्रवाला इनका काढा करकै स्त्रीका दूध डालकै ओंटावे और इसकी बूंद नेत्रमें डाले तो व्रणशुक्र और दाह इनको नाश करे॥

लोहादि गुग्गुल।

अयःसयष्टीत्रिफलाकणानांचूर्णानितुल्यानिपुरेणनित्यम्।
सर्पिर्मधुभ्यांसहभक्षितानिसर्वाणिशुक्राणिनिहंतिशीघ्रम्॥

अर्थ-लोहभस्म, मुलहटी, हरड, बहेडा, आँवला और पीपल इनका समान भाग चूर्ण करकै एकत्र करे, तथा सब चूर्णके समान गूगल डालकै एकत्र करे, इसको सहत और घीडालके भक्षण करे तो नेत्ररोग संबंधी सर्व शुक्रोंको नाश करे॥

पटोलादि घृत।

पटोलंकटुकादार्वीनिंबवासाफलत्रिकम्। दुरालभापर्पटकंत्रायंतींचपलोन्मिताम्॥प्रस्थमामलकानांचक्काथयेन्नुल्वणेंभसि॥ तेनपादावशेषेणघृतप्रस्थंविपाचयेत्॥ कल्कैर्भूनिंबकुटजमुस्तयष्ट्याह्वचंदनैः। सपिप्पलीकैस्तत्सिद्धंचक्षुष्यंशुक्रयोजितम्॥ नाशाकर्णाक्षिवर्त्मत्वङ्मुखरोगव्रणापहम्। कामलाज्वरवीसर्पगंडमालापहंपरम्॥

अर्थ-पटोलपत्र, कुटकी, दारुहलदी, नीम, अडूसा, त्रिफला, धमासा, पित्तपापडा और त्रायमाण ये प्रत्येक ४ तोले लेवे, आंवलोंका रस ६४ तोले और जल १०२४ तोले, घी ६४ तोले, चिरायता, कूडाकी छाल, नागरमोथा मुलहटी, चंदन और पीपल, इनका एक २ तोले कल्क डालके घृत सिद्ध करे, इसको शुक्ररोगपर देवे तो नेत्रोंको हित होय है,तथा नाक, कान, नेत्रकेपलक नेत्रकी त्वचा, मुखरोग, व्रण, कामला ज्वर, विसर्प, गंडमाला इन सबको नाशकरे॥

वटक्षीरादिअंजन।

वटक्षीरेणसंयुक्तंमुख्यंकर्पूरजंरजः।

क्षिप्रमंजनतोहंतिकुसुमंतद्विमासिकम् ॥

अर्थ–वडके दूधमें कपूरको डालके खरल करे और इसका अंजन करे तो नेत्रोंसे दो महीनेका फूला कटकर गिरजावे ॥

पिप्पल्यंजन।

संघृष्यपिप्पलीचूर्णसफेनंकांस्यभाजने।
सक्षौद्रंसैंधवोपेतमंजनंशुक्रनाशनम् ॥

अर्थ–पीपल, समुद्रफेन और सैंधानिमक इनका चूर्ण और सहत इनको काँसेके पात्रमें डालके खरल करे, फिर इसका नेत्रोंमें अंजन करे तो शुक्र रोगका नाश करे ॥

अंजनचतुष्टय।

ताप्यंमधुकसारोवाबीजंचाक्षस्यसैंधवम्।
मधुनांजनयोगास्युश्चत्वारःशुक्रनाशनः ॥

अर्थ–सुवर्णमाक्षिक, महुआकासार, बहेडा, किंवा सैंधानिमक इनको सहतमें घिसकै अंजन करे ये चार योग नेत्रशुक्रको नाश करे ॥

कुक्कुटाद्यंजन।

कुक्कुटांडकपालानिशंखकाचोत्थचंदनम्।
सैंधवार्धांशसंयुक्तमंजनंशुक्रलेखनम् ॥

अर्थ–मुरगेके अंडेका छिलका, शंख, कचिया निमक, चंदन ये समान भाग तथा सैंधानिमक आधा भाग, एकत्र खरल करकै अंजन करे तो शुक्र रोगका लेखन करे ॥

जात्यादि आश्चोतन।

जात्याःप्रवालंमधुकंचसर्पिर्मुष्णंसुखोष्णांबुसुशीलितंच।
आश्चोतनंशुक्रहरंप्रदिष्टंशुक्रापहंस्त्रीपयसामहार्हम् ॥

अर्थ–चमेलीके पत्ते, मुलहटी इनको घीमें भून गरम जलमें अथवा स्त्रीके दूधसे पीसके नेत्रोंमें बूंद छोडे तो शुक्रनाश करे ॥

धात्रीफलादिसेचन।

धात्रीफलंनिंबकपित्थपत्रंयष्ट्याह्वलोध्रंखदिरंतिलांश्च।
क्काथःसुशीतोनयनेभिषिक्तःसर्वप्रकारंविनिहंतिशुक्रम् ॥

अर्थ–आँवला, नींब और कैथ इनके पत्ते, मुलहटी, लोध, खैरकी छाल और तिल इनके काढेको शीतल करके नेत्रोंमें डाले तो अनेक प्रकारके नेत्र शुक्रको नाश करे, इसमें संदेह नहीं है ॥

अक्षिपाकात्यय।

श्वेतःसमाक्रामतिसर्वतोहिदोषेणयस्यासितमंडलंतु।
तमक्षिपाकात्ययमक्षिपाकंसर्वात्मकंवर्जयितव्यमाहुः ॥

अर्थ–नेत्रके कृष्णभागमें दोषोंके योगसे चारों ओर सफेद (शुक्र) फैल जावै यह सन्निपातजन्य अक्षिपाकात्यय नामक रोग त्याज्य है ऐसे कहा है ॥

शुक्रजरोगचिकित्सा।

प्रस्तार्यर्माणंस्नाय्वर्मतथैवार्माधिमांसकम्। लोहितार्मसशु क्रार्मकृष्णप्राप्तानिवेदयेत् ॥ अर्मवाच्यंदधिनिभंनीलरक्तम थापिवा। धूसरंतनुयच्चाशुशुक्रवत्समुपाचरेत् ॥

अर्थ–काली पुतलीपर फैलनेवाले, स्नाय्वर्म, मांसार्म, लोहितार्म, शुक्रार्म, दध्यर्म, नीलार्म, रक्तार्म, धूसरार्म, इन सबपर शुक्रके समान उपचार करे ॥

कृष्णादि लेप।

कृष्णालोहरजस्ताम्रशंखविद्रुमसिंधुजैः। समुद्रफेनकासीसस्रो तोजदधिमस्तुभिः। लेखनेवाकृतेतस्यपरंधारणमिष्यते ॥

अर्थ–पीपल, लोहभस्म, ताम्रभस्म, शंख, मूंगा, सैंधानिमक, समुद्र-फेन, हीराकसीस, सुरमा इनको दहीके जलमें खरलकर लेखन करे बिना धारण करे यह उत्तम है ॥

पिप्पल्यादि गुटिका।

पिप्पलीत्रिफलालाक्षालोहचूर्णससैंधवम्। भृंगराजरसेपिष्टंगु टिकांजनमिष्यते ॥ अर्मसतिमिरंकाचंकंडूंशुक्रमथार्जुनम्। आजकांनेत्ररोगांश्चहन्यान्निरवशेषतः ॥

अर्थ–पीपल, हरड, बहेडा आँवला, लाख, लोहभस्म और सैंधानिमक इनको भाँगरेके रसमें खरल करके गोली बनावे, इसका अंजन करनेसे, अर्म, तिमिर, काच, खुजली, शुक्र, अर्जुन, अजकाजात और नेत्ररोग इनको निःशेष नाश करे ॥

कृष्णादि तैल।

कृष्णाविडंगमधुयष्टिकसिंधुजन्मविश्वौषधैःपयसिसिद्धमिदंछ

गल्याः । तैलंनृणांतिमिरशुक्रशिरोक्षिवर्त्मपाकात्ययाञ्जय तिनस्यविधौप्रयुक्तम् ॥

अर्थ-पीपल, वायविंगड, मुलहटी, सैंधानिमक और सोंठ इनके काढेमें बकरीका दूध और तेल डालके पचावे, इसकी नस्य करनेसे तिमिर, शुक्र और मस्तकरोग, नेत्रकर्मरोग, अक्षिपाक और दृष्टिनाश इनको नाश करे ॥

अक्षिपाकात्यय चिकित्सा।

एर्वारुपुंडरीकंचगवांक्षीरावशेषितम्।
राबाश्रुवेदनांहन्यादक्षिपाकात्ययंतथा ॥

अर्थ-खीराककडी, ईख इनके रसको और दूधको एकत्रकर औटावे जब केवल दूध मात्र शेष रहे तब शीतलकर नेत्रमें डाले, तो नेत्रोंकी लाली, दर्द, नेत्रपीडा और दृष्टिनाश इनको नाश करे ॥

अजकाजात।

अजापुरीषप्रतिमोरुजावान्सलोहितोलोहितपिच्छिलाश्रुः।
विगृह्यकृष्णंप्रपयोऽभ्युपैतितच्चाजकाजातमितिव्यवस्येत् ॥

अर्थ-काले भागमें बकरीके शुष्क विष्ठाके समान दूखनेवाला लाल हो, और गाढ़ा कुछ कालेसे आँसू बहें, उसको अजकाजात[1] ऐसे जानना चाहिये ॥

अजकाजातमें साध्यासाध्य।

मूर्धाक्षिकर्णभ्रूगंडशंखचर्माश्रिताजका ॥ जायतेव्यथतेनेत्रंम थ्यमानमिवांतरा । उष्णमश्रुस्रवत्यक्षिदूयतेक्लेद्यतेभृशम् ॥ असाध्यरोगसंभूतांदृष्टिजांचविवर्जयेत् । स्वयंप्रवृद्धांकठिनां चिरकालोत्थितामपि ॥

अर्थ-मस्तक, नेत्र, कर्ण, भ्रू, गाल, ललाट और चर्म इनके आश्रयसे अजका रोग उत्पन्न होता है उससे नेत्रमें बहुत पीडा होती है नेत्रसे गरम पाणी गिरताहै। इसमें असाध्य रोगोंसे उत्पन्न होनेवाली, दृष्टिमें स्वयं उत्पन्न होनेवाली और बहुत दिनवाली अजका असाध्य जानना ॥

अजकाचिकित्साक्रम।

साध्यरोगसमुत्पन्नांकृष्णाजांत्वजकांजयेत् । अजकायांशिरां

---

१ अजकाजातका भेद (विदेह) दूसरा कहता है । यथा-कृष्णैरक्ष्णोर्भवेच्छुक्रं छगलीविट्समप्रभम् । सांद्रं पिच्छिलरक्ताश्रात्रत्रगात्वजकेति सा ॥

मुत्काात्रवृच्चूर्णैर्विरेचयेत् ॥ घृतंवातहरैःसिद्धमजकायांप्रयोज येत् ॥ सेकपानेतथाभ्यंगेभोज्येदृष्टिविदांवरः ॥

अर्थ-साध्यरोगमें उत्पन्न हुआ अथवा कृष्णगतमें प्रगट ऐसा अजकाको औषध देवे अजका व्याधिपर प्रथम शिरावेध करके फिर निशोथके चूर्णसे दस्त करावे और वातनाशक औषधोंसे सिद्धकरा हुआ ये घृतका सेचन,प्राशन और अभ्यंग इत्यादि करे ॥

वल्लूरमांसपुटपाक।

पक्ववटपत्रपुटकेविधायमांसंचवल्लकर्कटकात्।
पुटवद्विदह्यबद्धातद्रससेकोजयेदजकाम् ॥

अर्थ-केकडेके मांसको वडके पके हुए पत्तोंमें बांधकै पुटपाककी रीतिसे पक्कर उसका रस निकालके नेत्रोंमें डाले तो अजकाजातको नाशकरे ॥

गोस्थ्यादि पूरण।

गवामस्थित्वचंकांस्येविनिर्घृष्यसुखांबुना।
पूरयेदक्षितेनाशुप्रशाम्येदजकामयः ॥

अर्थ-गौकी हड्डी और चर्म कांसेके पात्रमें शीतल जलमें घिसके उस जलसे नेत्रोंको भरकै निकालडाले तो अजक व्याधिका नाश होय ॥

शंबूकरसाश्चोतन।

अंगारपक्वशंबूकरसेनाश्चोतनांजनम्।
कर्पूरचूर्णयुक्तेनशाम्यतेत्वजकामयः ॥

अर्थ-छोटे शंखोंको अंगारपर भूनके उसका रस नेत्रोंमें निचोडे अथवा कपूरके चूर्णको पीस इसका अंजन करे तो अजक रोग शांति होवे ॥

सैंधवादि पूरण।

सैंधवंवाजिपादंचगोरोचनसमायुतम्।
शेलुत्वग्रससंयुक्तंपूरणंचाजकापहम् ॥

अर्थ-सैंधानिमक, घोडेका खुर, गोरोचन इन की छालके रसमें औटा-यके इसको नेत्रोंमें डाले तो अजकाका नाश करे ॥

प्रथमपटलगत दोषोंके लक्षण।

प्रथमेपटलेयस्यदोषोदृष्टिंव्यवस्थितः।
अव्यक्तानिचरूपाणिकदाचिदथपश्यति ॥

अर्थ--प्रथम पटलमें दोष स्थित होनेसे वह पुरुष अव्यक्तरूप (घटपटादि पदार्थ) देखे। दृष्टिका प्रमाण सुश्रुतमें कहा है ॥

द्वितीयपटलस्थित दोषलक्षण।

दृष्टिर्भृशंविह्वलतिद्वितीयंपटलंगते। मक्षिकामशकान्केशान् जालकानिचपश्यति ॥ मंडलानिपताकाश्चमरीचीन्कुंडलानि च। परिप्लुवांश्चविविधान्वर्षमभ्रंतमांसिच ॥ दूरस्थानिचरूपा णिमन्यतेचसमीपतः। समीपस्थानिदूरेचदृष्टेर्गोचरविभ्रमात्। यत्नवानपिचात्यर्थंसूचीपाशंनपश्यति ॥

अर्थ--दूसरे पटलमें दोषके जानेसे दृष्टि विह्वल होजाय, (अर्थात् पदार्थोंके देखनेमें असमर्थ होय) उसी प्रकार नेत्रोंके आगे मक्खी मच्छर बाल जाली मंडल पताका किरण कुण्डल आदि अनेक प्रकारके जलके समूह वर्षा मेघ (बादल) अंधकार ये नहीं दीखे ये दृष्टि विह्वल होनेसे होते हैं और विषय- भ्रांतिसे दूरकी वस्तु समीप दीखै और समीपकी दूर दीखै और अनेक यत्न करनेसेभी सुईकी छिद्र न दीखैं ॥

तृतीयपटल गतलक्षण।

ऊर्ध्वंपश्यतिनाधस्तात्तृतीयंपटलंगते। महांत्यपिचरूपाणिछा दितानीवचांबरैः॥कर्णनासाक्षिहीनानिविकृतानिचपश्यति। यथादोषंचरज्येतदृष्टिर्दोषेबलीयसि ॥ अधस्थेतुसमीपस्थं दूरस्थंचोपरिस्थिते।पार्श्वस्थितेपुनर्दोषेपार्श्वस्थंनैवपश्यति ॥ समंततःस्थितेदोषेसंकुलानीवपश्यति। दृष्टिमध्यस्थितेदोषे महद्ध्रस्वंचपश्यति॥द्विधास्थितेद्विधापश्येद्बहुधावानवस्थिते। दोषेदृष्टिस्थितेतिर्यगेकंवैमन्यतेद्विधा ॥

अर्थ--तीसरे पटलमें दोष जानेसे ऊपरकी वस्तु दीखे नीचेकी वस्तु नहीं दीखे, जो वस्तु बडी और भव्य होवे वह वस्त्रसे ढकीसी दीखे, कान नाक और नेत्र इनकरके रहित पुरुषोंको देखे, टेढे बाँके दीखे और जिस वातादि दोषका रुधिर मांस मेदादिकोंके सहाय होनेसे उनमें जो दोष बलवान् होयं उसका जैसा रूप (रंग) होवे उसीप्रकारका दीखे अर्थात् जिस जिस दोषका जैसा वर्ण वैसा दीखे दोष नीचे स्थित होय तो समीपस्थ वस्तु नहीं दीखे और ऊपर दोष स्थित होय तो दूरकी वस्तु न दीखे और दोष पार्श्व पसवाडे

में स्थित होनेसे पसवाडेकी वस्तु नहीं दीखे और दोष दृष्टिमें सर्वत्र स्थित होवै तो उस पुरुषको सब चीज मिलीसी दीखे दृष्टिके मध्यमें दोष जानेसे बड़ी वस्तु छोटी दीखे, दो ठिकाने दोष रहनेसे एक वस्तुकी दो दीखे और दोष अव्यवस्थित (अर्थात एकही स्थानमें स्थित न होनेसे एक वस्तुके दो टुकडेसे दिखलाई देवैं, दृष्टिपात दोष तिरछे स्थित होनेसे एक वस्तुके दो टुकडे दिख लाई देवैं, यह स्वरूपोंका दीखना तीसरे (पटल) से प्रारंभ होता है, सो विदेहने लिखा भी है ॥

चतुर्थपटलगततिमिरलक्षण।

तिमिराख्यःसवैरोगश्चतुर्थपटलंगतः। रुणद्धिसर्वतोदृष्टिंलिंग नाशमतःपरम् ॥ अस्मिन्नपितमोभूतेनातिरूढेमहागदे। चंद्रा दित्यौसनक्षत्रावंतरिक्षेचविद्युतः॥ निर्मलानिचतेजांसिभ्राजि ष्णूनिचपश्यति ॥

अर्थ-वह तिमिर रोग चौथे पटल (परदे) में पहुँचनेसे दृष्टिको चारों ओरसे रोक दे, इसको कोई आचारी लिंग नाश कहते हैं और कोई तिमिर कहते हैं यह अंधकारमय रोग अति बढजाय तब उस मनुष्यको आकाशमें चंद्र, सूर्य, नक्षत्र, विजली और निर्मल तेज भी यथार्थ नहीं दीखे, तेजके पुंजसे दीखे लौकिकमें इस रोगको नजला कहते हैं लिंगनाशकी निरुक्ति 'लिंग्यते ज्ञायते इत्यनेनेति, 'लिंगमिन्द्रियशक्तिस्तस्य नाशो यस्मिन्निति लिंगनाशः' अर्थात् जिस करके जाने सो कहिये लिंग (इंद्री) उसका नाश जिसमें होय उसको लिंगनाश कहते हैं, और इसी रोगको लौकिकमें मोतिया बिंदु भी कहते हैं॥

काचदोषकी दूसरी संज्ञा।

सएवलिंगनाशस्तुनीलिकाकाचसंज्ञितः ॥

अर्थ-तीसरे पटलगत कांच (मोतियाबिन्दु) की उपेक्षा करनेसे वही फिर चौथे पटलमें पहुँचता है, तब उसे लिंगनाश और नीलिका कहते हैं यह रोग असाध्य है सो निमिआचारी लिखते हैं परंतु गदाधर आचारी कहते हैं विशेष काचको नीलकाकाच कहते हैं॥

काचोपक्रम।

काचेरक्तंजलौकाभिर्हृत्वापूर्वोक्तमाचरेत् । शाणार्वमारिचंद्रौ

---

१ यथास्वं रज्यते दृष्टिर्दोषैस्त्रिपटलस्थितैः। चतुर्थ पटलं प्राप्य मण्डलं त्यजतेतुतैः ॥ इति।

२ काचइत्येषविजयो याप्यस्त्रिपटलस्थितैः। चतुर्थपटलं प्राप्तोलिंगनाशः स उच्यते ॥

चपिप्पल्यार्णवफेनयोः ॥ शाणार्धसैंधवाच्छाणंनवसौवीरकांजनात् । पिष्टंसूक्ष्मंशिलायांचचूर्णांजनमिमंशुभम् ॥ कंडूकाचकफार्तानांमलानांचविशोधनम् ॥

अर्थ-काचबिंदु होनेसे जोंख लगायके रुधिर निकाले, तथा प्रथम कही हुई सब चिकित्सा करे और मिरच पाव तोला, पीपल आधा तोला, समुद्र फेन आधा तोला, सैंधानिमक पाव तोला, तथा २। तोले मसूर इन सबको एकत्र कर बारीक खरल करे इसको चूर्णांजन कहते हैं यह खुजली, कांच, कफ और मल इनका नाश करे ॥

मेषशृंगादि और शिलादि अंजन।

समेषशृंगांजनभागसंमितः शंखांजनंकाचमलंव्यपोहति । शिलासैंधवकासीसशंखव्योषरसांजनैः ॥ सक्षौद्रैःकाचशुक्रार्मतिमिरघ्नोरसक्रिया ॥

अर्थ--मेढासिंगी, सुरमा और शंख इनके अंजन काचमलका नाश करे और मनसिल, सैंधानिमक, हीराकसीस, शंख, सोंठ, मिरच, पीपल और रसोत, इनका सहतसे अंजन करे, यह काँच, शुक्र, अर्म और तिमिर इनको नाश करे ॥

दोषरूपदर्शन।

तत्रवातेनरूपाणिभ्रमंतीवहिपश्यति । आविलान्यरुणाभानिव्याविद्धानीवमानवः ॥ पित्तेनादित्यखद्योतशक्रचापतडिद्गणान् । नृत्यंतश्चैवशिखिनःसर्वनीलंचपश्यति । कफेनपश्येद्रूपाणिस्निग्धानिचसितानिच ॥ सलिलप्लावितानीवपरिजाड्यानिमानवः । पश्येद्रक्तेनरक्तानितमांसिविविधानिच॥सासितान्यथकृष्णानिपीतान्यपिचमानवः । सन्निपातेनचित्राणिविप्लुतानिचपश्यति ॥ बहुधाचाद्विधावापिसर्वाण्येवसमंततः । हीनांगान्यधिकांगानिज्योतींष्यपिचपश्यति ॥

अर्थ-बादीसे रोगीको मलिन, कुछ, छाल तिरछी और भ्रमती ऐसी वस्तु दीखे, पित्तसे सूर्य, खद्योत, (पटबीजना) इन्द्रधनुष, बिजली इनको और नाचने वाले मोर तथा सर्व वस्तु नीली दीखें कफसे चिनकी औ

सफेद तथा पानीमें डुबोई हुई निकालनेके समान और भारी ऐसा रूप दीखे, रुधिरसे लाल और अनेक प्रकारका अंधकार, तथा किंचित् सफेद, काली और पीली ऐसी वस्तु दीखे सन्निपातसे अनेक प्रकारके विपरीत (अर्थात् एककी अनेक दो अथवा अनेक प्रकारके रूप दीखें) हीन अंगके अथवा अधिक अंगके रूप रोगी देखे और ज्योतिस्वरूपसे सब पदार्थ दीखें ॥

पित्तजन्य परिम्लायिसंज्ञक दूसरा तिमिर ।

पित्तंकुर्यात्परिम्लायिमूर्च्छितंरक्ततेजसा । पीतादिशस्तथोद्यतान्नवीनपिसपश्यति । विकीर्यमाणान्खद्योतैर्वृक्षांस्तेजोभिरेवच ॥

अर्थ-रक्तके तेजसे मिश्रित हुये पित्तसे परिम्लाय रोग होय, इसके योगसे रोगीको दिशा, आकाश और सूर्य ये पीले दीखें और सर्वत्र सूर्य ऊगेसे दीखें तथा वृक्ष भी तेजस्वरूपसे दीखें, परिम्लायि पित्तको नील कहते हैं[१] सो सात्यकिने लिखा है इस रोगको कोई आचारी रक्तपित्तसे होता है ऐसे कहते[२] हैं सो भी लिखा है ॥

सामान्य अंजन ।

अथसंपक्वदोषस्यप्राप्तमंजनमाचरेत् ।
अंजनंक्रियतेयेनतद्द्रव्यंचांजनंमतम् ॥

अर्थ-दोष पक्व होनेसे प्राप्त कालमें अंजन करे, यह जिस औषधसे करा जाय है उस औषधको अंजन कहते हैं ॥

अंजनप्रकार ।

गुटिकारसचूर्णानित्रिविधान्यंजनानितु । स्नेहनंरोपणंचापिलेखनंतत्रिधामतम् । कुर्याच्छलाकयांगुल्याहीनानिचययोत्तरम् ॥

अर्थ--वो अंजन, गुटिका, रस और चूर्ण ऐसे तीन प्रकारका है, फिर वह प्रत्येक स्नेहन रोपण और लेखन ऐसे तीन प्रकारके हैं उसको शलाकासे अथवा अंगुलीसे करे इनमें अंगुलीसे अंजन करना हीन गुण है ॥

स्नेहन, रोपण लेखनका स्वरूप ।

मधुरंस्नेहसंपन्नंमंजनंस्नेहनंमतम् । कषायतिक्तरसयुक्तसस्नेहंरोपणंस्मृतम् । अंजनंक्षारतीक्ष्णाम्लरसेर्लेखनमुच्यते ॥

१ एवमेवतु विज्ञेया नीलाः पित्तसमुद्भवा इति ॥ २ विदग्धापि परिम्लायि पित्तरक्तेन संगतम् ॥ तेनपीता दिशं पश्येदुद्यन्तमिव भास्करम् इति ॥

अर्थ–तिनमें जो मधुर और स्नेहयुक्त है उसको स्नेहन कहते हैं तथा कषेला, कडुआ इन रसों करके युक्त तथा सस्नेहको रोपण और क्षार, तीक्ष्ण मरीचादि और अम्लरस इन करके युक्त है उसको लेखन कहतेहैं ॥

वातजन्यतिमिर चिकित्सा।

स्निग्धानिनस्यांजनशोधनानिपाकाःपुटानामथतर्पणंच।
घृतस्यपानान्यथबस्तिकर्मकुर्यादभीक्ष्णंतिमिरेनिलोत्थे ॥

अर्थ–वादीसे उत्पन्न तिमिर रोगमें स्निग्ध ऐसी नस्य, अंजन और रेचन, पुटपाक, अपतर्पण, घृतपान और बस्तिकर्म ये क्रिया करे ॥

दशमूलादि घृत।

दशमूलादिनापक्कंघृतंदुग्धंचतुर्गुणम्।
त्रिफलाकल्कसंयुक्तंतिमिरेवातजेपिबेत् ॥

अर्थ–दशमूलादिकोंसे सिद्ध करे हुये घृतमें चौगुना दूध और त्रिफलेक कल्क डालके देवे तो बादीकी तिमिरका नाश करे ॥

रास्नादि घृत।

रास्नाफलत्रयक्काथेदशमूलरसेशृतम्।
कल्केनजीवनोयानांघृतंतिमिरनाशनम् ॥

अर्थ–रास्ना, हरड, आँवला, इनका काढा, दशमूलोंका रस, जीवनीय गणोंका कल्क इनमें सिद्ध करा हुआ घृत तिमिरका नाश करे ॥

दशमूलादि घृत।

वातिकेतिमिरेपंचदशमूलरसेघृतम्।
त्रिवृच्चूर्णसमायुक्तंविरेकार्थंप्रयोजयेत् ॥

अर्थ–वातिक तिमिरपर दशमूलके रसमें घृत तयार करके उसमें निसोथका चूर्ण डालके रेचनार्थ देवे ॥

त्रिफलादि विरेचन।

त्रिफलादशमूलानांनिर्यूहंदुग्धमिश्रितम्।
गंधर्वतैलसंयुक्तंप्रयुंजीतविरेचनम् ॥

अर्थ–त्रिफला और दशमूल इनके काढेमें दूध और अंडीका तेल डालके रेचनार्थ देवे ॥

पित्तजतिमिरचिकित्सा।

शीतांजनाश्चोतनतर्पणैश्चनस्यैर्विरेकैर्मधुभिर्घृतैश्च।
तिक्तप्रधानैस्तिमिरंनिहन्यात्पित्तात्मकंशोणितमोक्षणैश्च ॥

अर्थ-पित्तात्मक तिमिर रोग होनेसे शीत अंजन, आश्चोतन, अपतर्पण, नस्य, सहत और घृत, विरेचन ये कटुरस प्रधान ऐसा देवे और रुधिर निकाले॥

प्रकारांतर।

तिमिरेपित्तजंसर्पिर्जीवनीयवराशृतम्। पाययित्वाशिरांविध्या
त्सितैलाकुंभसैंधवैः। चूर्णैर्माक्षिकसंयुक्तैरेचनंकारयेन्नरः॥

अर्थ--पित्तात्मक तिमिर रोग होनेसे जीवनीयगण और त्रिफला, इनका काढा देकर फिर शिरावेध करे और मिश्री, इलायची, निसोथ और सैंधानिमक, इनका चूर्ण सहतसे देकर रेचन करे॥

बलादि घृत।

बलाशतावरीवीरासिताशैलेयकैःपचेत्।
त्रिफलासहितंसर्पिस्तिमिरघ्नमनुत्तमम्॥

अथ-खिरेटी, शतावर, सपेद, अतीस, शिलाजीत और त्रिफला, इनके काढेमें घृत सिद्ध कर देवे तो यह उत्तम तिमिरनाशक है॥

सारिवादि वर्त्ती।

सारिवात्रिफलोशीरमुक्ताचंदनपद्मकैः।
पिष्टंवर्तीकृतंहंतिपितोत्थंतिमिरंनृणाम्॥

अर्थ--सारिवा, हरड, बहेडा, आँवला, खस, मोती, चंदन और पद्माख, इनकी बत्तीबनायके नेत्रोंमें फेरे तो पित्तजनित तिमिरका नाश करे॥

कफजतिमिरचिकित्सा।

तीक्ष्णानिनस्यांजनशोधनानिपाको निपाकःपुटपाकतर्पणम्।
घृतानिवासत्रिफलापटोलसंज्ञानिकुर्यात्तिमिरेकफोत्थे॥

अर्थ-कफसे तिमिर रोग होनेसे तीक्ष्णनस्य, अंजन, शोधन, पुटपाक, अपतर्पण और बासाघृत, त्रिफलादिघृत और पटोलादिघृत ये औषध देवे॥

प्रकारांतर।

कफोद्भवेवराव्याशृतेक्काथेशृतंहविः।
पाययित्वाशिरांविध्येद्रेचनंतिमिरेभिषक्॥

अर्थ—कफात्मक तिमिर रोगपर त्रिफला, चव्य, इनके काढेमें घृत सिद्ध करके पीवे, तथा शिरावेध करे और रेचन देवे ॥

यूथ्यादि विरेचन।

यूथीपथ्याकणाशुंठीकुसुंभस्यांबुनिर्झरः।
गोमूत्रक्वथितांशुंठीत्रिवृत्सिद्धांविरेचनम् ॥

अर्थ—जुही, हरड, पीपल, सोंठ, कसूम, इनको लेकर झरनेके जलमें डालके काढा करे, जब सिद्ध हो जावे तब सोंठ और निसोथ इनका चूर्ण डालके रेचनार्थ देवे ॥

कफतिमिरपर नस्य और अंजन।

नस्यंमरिचयष्ट्याह्वविडंगामरदारुभिः। नैपालरुत्रिफलाशंख कांताव्योषंचपेषिताः। वार्तिकृत्वाबलासोत्थमजनंतिमिरापहम्॥

अर्थ—मिरच, मुलहटी, वायविडंग, देवदारु, इनके कल्कसे नस्य देवे और ताम्र, त्रिफला, सीप फूलप्रियंगू और सोंठ, मिरच, पीपल, इन सबको एकत्रकर पीस डाले, फिर इसकी बत्ती बनावे, इसको नेत्रोंमें फेरे तो तिमिरनाश होय ॥

संनिपाततिमिरचिकित्सा।

संसर्गेसन्निपातेचयथादोषोदयक्रिया।
धात्रीरसांजनक्षौद्रसर्पिर्भिस्तुरसक्रिया॥

अर्थ—द्वंद्वज और सन्निपात इनसे नेत्ररोग होनेसे जैसा दोष दीखे, उसीके अनुसार औषध करे और आँवला, रसोत, इनसे रस क्रियाकरे तो वातपित्त, नेत्ररोग तिमिर और पटल इनको नाशकरे ॥

सर्वजनेत्र रोगपर।

वातपित्तकफसान्निपातजांनेत्रयोर्बहुविधामपिव्यथाम्।
शीघ्रमेवजयतिप्रयोजितःशिग्रुपल्लवरसःसमाक्षिकः॥

अर्थ—सहिंजनेके पत्तोंके रसमें सहत डालकै नेत्रोंमें गेरे तो,वात,पित्त कफ इनसे उत्पन्न नेत्रकी पीडा दूर होय ॥

वर्णभेदसे लिंगनाशको षड्विधत्व।

वक्ष्यामिषड्विधंरागैर्लिंगनाशमतःपरम्। रागोरुणोमारुतजःप्र दिष्टोम्लायीचनीलश्चतथैवपित्तात्॥ कफाच्छ्वेतःशोणितजः सरक्तोसमस्तदोषप्रभवोविचित्रः॥

अर्थ–इसके अनंतर राग भेदसे छः प्रकारका लिंगनाश होताहै सो इस प्रकार वातजन्य रंग लाल होय है पित्तसे म्लायी, पीला, नीला, अथवा नीलाही रंग होय कफसे सफेद और रुधिरसे लाल, तथा सब दोषोंसे अनेक प्रकारका रंग होता है ॥

वातीक रोगके विशेषलक्षण।

अरुणंमंडलंदृष्ट्यांस्थूलकाचारुणप्रभम्। परिम्लायिनिरोगे स्यान्म्लायिनीलंचमंडम् ॥ दोषक्षयात्कदाचित्स्यात्स्वयंतत्र प्रदर्शनम् ॥

अर्थ–परिम्लायि रोगमें दृष्टिके ऊपर मोटा, कांचके समान लाल मण्डल होता है, वह म्लान (लाल पीला) अथवा नीला होता है, उसमें दोष घटनेसे कदाचित् देखनेकी शक्ति होय इस जगह दोष शब्द करके कोई कर्मका ग्रहण करते हैं ॥

दृष्टिमंडलगतरोगलक्षण।

अरुणंमंडलंवाताच्चंचलंपरुषंतथा। पित्तान्मंडलमानीलंकांस्याभंपीतमेवच ॥ श्लेष्मणाबहलंस्निग्धंशंखकुंदेंदुपांडुरम्। चलत्पद्मपलाशस्थःशुक्लोबिंदुरिवांभसः ॥ मृद्यमानेचनयनेमंडलंतद्विसर्पति। प्रवालपद्मपत्राभंमंडलंशोणितात्मकम् ॥ दृष्टिरागोभवेच्चित्रोलिंगनाशेत्रिदोषजे। यथास्वंदोषलिंगानिसर्वेष्वेव भवंतिहि ॥

अर्थ–वादीसे दृष्टिमंडल लाल, चंचल और खरदरा होताहै पित्तसे दृष्टिमंडल किंचित् नीला, तथा कांचके समान पीला होवे कफसे भारी, चिकना, शंख, कुंदफूलके समान और चंद्र इनके समान सफेद होय और उसके नेत्रमें हलनेवाला कमल पत्रके ऊपर पानीकी बूंदके समान टेढीतिरछा सफेद बूंद फैलीसी दिखलाईदे रुधिरसे दृष्टिमंडल मूंगाके समान अथवा लाल कमलके समान लाल होवे और त्रिदोषज लिंगनाशमें तरह २ के मंडल होय तथा सर्व दोषोंके लिंग मंडलमें वातादि दोषोंके न्यारे २ लक्षण होय ॥

आगे पीछेकहेहुए दृष्टिरोगोंकी संख्या।

षट्लिंगनाशाःषडिमेचरोगादृष्ट्याश्रयाःषट्चषडेवचस्युः।

अर्थ–पूर्वकहे लिंगनाश रोग छः और आगे विदग्ध दृष्ट्यादि कहेगये वह छः ऐसे सब मिलकर बारह दृष्टिरोग होतेहैं ॥

पित्तविदग्ध दृष्टीके लक्षण।

पित्तेनदुष्टेनगतेनवृद्धिंपीताभवेद्यस्यनरस्यदृष्टिः।
पीतानिरूपाणिचतेनपश्येत्सवैनरःपित्तविदग्धदृष्टिः॥

अर्थ-पित्त दुष्ट होकर बढनेसे जिस मनुष्यकी दृष्टि पीली होय, तथा उसके योगसे उस मनुष्यको सर्व पदार्थ पीले रंगके दीखे, उस दृष्टिको पित्तविदग्ध कहते हैं॥

पित्तविदग्ध दृष्टिकी चिकित्सा।

रसांजनघृतक्षौद्रतालीसस्वर्णगैरिकैः।
गोशकृद्रससंयुक्तंपित्तोपहतदृष्टये॥

अर्थ-रसोत, घी, सहत, तालीसपत्र और सुवर्णगेरू, इनको गौके गोबरके रसमें खरलकर इसका पित्त विदग्ध दृष्टीपर अंजन करे॥

काश्मर्यादि अंजन।

काश्मरीपुष्पमधुकदार्वीलोध्ररसांजनैः।
सक्षौद्रमंजनंकुर्यात्पित्तव्याधिप्रशांतये॥

अर्थ-कंभारीके फूल, मुलहटी, लोध और रसोत, इनको पीस सहतसे अंजन करे तो पित्तव्याधिका नाशकरे॥

श्लेष्मविदग्धदृष्टिकी चिकित्सा।

हरेणुमगधाबीजमजायाःशकृतान्वितम्।
सकृद्रसेनांजनंवाश्लेष्मोपहतदृष्टये॥

अर्थ-मटर और पीपलीके बीज इनको, बकरीकी लेंडीके रसमें अथवा गौके गोबरके रसमें खरलकर अंजन करे तो कफसे नष्ट दृष्टीको नाशकरे॥

दिवांधके लक्षण।

प्राप्तेतृतीयंपटलंचदोषेदिवानपश्येन्निशिवीक्षतेसः।
रात्रौसशीतानुगृहीतदृष्टिःपित्तालपभावादपितानिपश्येत्॥

अर्थ-तीसरे पटलमें दोषीपित्त जानेसे, दिनमें रोगीको नहीं दीखे, रात्रिमें शीतलताके कारण पित्त कम होनेसे दीखे॥

रात्र्यंध (रतौंध) के लक्षण।

मालतीपत्रक्षौद्रंचनिशाद्वयरसांजनैः।
नक्तांध्यमंजनंहन्यात्कृष्णावागोमयान्विता॥

अर्थ–चमेलीके पत्तोंका रस, हलदी, दारुहलदी और रसौत, इनको सहतमें घिसके अंजन करे अथवा गौके गोबरमें पीपल घिसकै अंजन करे तो रतोंधका नाशकरे यह सर्वसंग्रहमें लिखा है ॥

दध्नाघृष्टमरीचंवारात्र्यंधांजनमुत्तमम् ॥

अर्थ--मिरचको दहीमें पीसकै अंजन करे, यह रात्र्यंधका नाश करे ॥

दिवांध और रात्र्यंधचिकित्सा ।

नलिनोत्पलकिंजल्कगैरिकंसशकृद्रसम् ।
गुटिकांजनमेतत्स्याद्दिनरात्र्यंधयोर्हितम् ॥

अर्थ–नीले कमलकी केशर और गेरू, इनकी गौके गोबरके रसमें गोली बनावे इसका अंजन करनेसे दिवांध्य और रात्र्यंध इनपर हितकारी होय है ॥

क्षुद्रशंखादिगुटी ।

नदीजशंखत्रिकटुत्र्रसांजनंमनःशिलाद्वेचनिशेगवांशकृत् ।
सचंदनेयंगुटिकाशुकृत्वाप्रशस्यतेरात्रिदिनेनपश्यताम् ॥

अर्थ–नदीके छोटे २ शंख, सोंठ, मिरच, पीपल, रसोत, मनसिल, हलदी, दारुहलदी और चंदन इनको गोबरके रसमें पीसको गोली बनाय लेवे, इसका अंजन रात्र्यंध, दिवांध्य इनपर उत्तम है ॥

सूर्यविदग्ध दृष्टीपर ।

सूर्यदर्शनदग्धेत्रक्रियांशीतांप्रथोजयेत् ।
हेमघृष्टंघृतोपेतमंजनंचोपशस्यते ॥

अर्थ-सूर्यके सन्मुख देखनेसे जिसकी दृष्टि दग्ध होगई अर्थात् दृष्टी मारी गई हो उसकी शीतल क्रिया करे, तथा शहतमें सोनेको घिसकै अंजन करना परमोत्तम है ॥

रसांजनादि अंजन ।

रसांजनंहरिद्रेद्वेमालतीनिंबपल्लवाः । गोशकृद्रससंयुक्तावटीनक्तांध्यनाशिनी । एतस्याश्चांजनेमात्राप्रोक्तासार्धहरेणुका ॥

अर्थ–रसोत, हलदी, दारुहलदी, चमेलीके फूल और नीमके पत्ते इनको गोबरके रसमें घोटकर गोली बनावे, इसको डेढ मटरके बराबर घिसकै अंजन करे तो रतोंधका नाश करे ॥

कणादि अंजन।

कणाच्छागशकृन्मध्येपक्त्वातद्रसपेषिता।
अजिराद्वंतिनक्तांध्यंतद्वत्सक्षौद्रमूषणम् ॥

अर्थ-पीपलोंको बकरेकी लेंडियोंमें औटावे और उनको बकरेकी लेंडियोंके रसमें खरल करकै गोली बनावे और अंजन करे, अथवा सोंठ, मिरच, पीपल, इनको सहतमें पीसके अंजन करे तो शीघ्र रतोंधको नाश करे॥

करंजादि अंजन।

करंजपद्मकिंजल्कचंदनोत्पलगैरिकैः।
गोशकृद्रससंपिष्टैर्नक्तांध्येहितमंजनम् ॥

अर्थ-करंजी, कमलका पराग, चंदन, कमल और गेरू, इनको गौके गोवरके रसमें खरल करकै अंजन करे तो रतोंधवालेको हितकारी होय॥

रसांजनादि।

रसांजनंशिलादारुजातीपत्ररसोमधु।
नक्तांध्यतांजयेदेतदंजनंसाधुयोजितम् ॥

अर्थ-रसोत, मनसिल, देवदारु इनको चमेलीके पत्तेके रसमें खरलकर उसमें सहत डालके अंजन करे, इसको नेत्रोंमें लगानेसे रतोंधका नाश करे॥

धूमदर्शीके लक्षण।

शोकज्वरायासशिरोभितापैरभ्याहतायस्यनरस्यदृष्टिः।
धूम्रांस्तथापश्यतिसर्वभावान्सधूमदर्शीतिनरःप्रदिष्टः॥

अर्थ-शोक, ज्वर, परिश्रम और मस्तकताप इन कारणोंसे पित्त कुपित होकर जिसकी दृष्टिमें विकार होवे, उससे उस मनुष्यको सर्व पदार्थ धूआंके रंगके दीखे, इस रोगको धूमदर्शी वा शोकविदग्धदृष्टि कहते हैं इसमें दिनको धूआंके रंगके पदार्थ दीखे इसका कारण यहहै कि, रात्रिमें पित्तका तेज घटनेसे निर्मल दीखे॥

ह्रस्वदृष्टिके लक्षण।

योह्रस्वजात्योदिवसेषुकृच्छ्राद्ध्रस्वानिरूपाणिचतेनपश्येत्॥

अर्थ--जो ह्रस्वजात्य पुरुष होता है उसको दिनमें बडे पदार्थ छोटे दीखे इसका कारण यह है कि, उस समय दृष्टिके मध्यगत दोष होता है, यह रोगभी पित्तजन्य है॥

नकुलांध्यलक्षण।

विद्योततेयस्यनरस्यदृष्टिर्दोषाभिपन्नानकुलस्ययद्वत् ।
चित्राणिरूपाणिदिवासपश्येत्सवैविकारोनकुलांध्यसंज्ञः ॥

अर्थ-जिस पुरुषकी दृष्टि दोषोंसे व्याप्त होकर नौलेकी दृष्टिके समान चमके वह पुरुष दिनमें अनेक प्रकारके रूप देखे इस विकारको नकुलांध्य कहतेहैं ॥

नकुलांध्यरोगकी चिकित्सा।

वचात्रिवृच्चंदनकुंडलीचभूनिंबनिंबरजनीसवासा ।
प्रस्थंजलस्यक्कथिताष्टभागंपिबेत्सुजीर्णेनकुलांध्यरोगे ॥

अर्थ-वच, निसोथ, चंदन, गिलोय, चिरायता, नीमकी छाल, हलदी और अडूसा इनको ६४ तोले जलमें अष्टमांश काढा करके बहुत दिनके नकुलांध्यको पिलावे ॥

गंभीरदृष्टीके लक्षण।

दृष्टिर्विरूपाश्वसनोपसृष्टासंकोचमभ्यंतरतश्चयाति ।
रुजावगाढंचतमक्षिरोगंगंभीरकेतिप्रवदंतितज्ज्ञाः ॥

अर्थ-जो दृष्टि वायुसे विकृत होकर भीतरको संकुचित होवे तथा उसमें पीडा होवे, उसको गंभीरदृष्टि कहते हैं ॥

आगंतुक लिंगनाश।

बाह्यौपुनर्द्वाविहसंप्रतिष्टौनिमित्ततश्चाप्यनिमित्ततश्च ।
निमित्ततस्तत्रशिरोभितापाज्ज्ञेयस्त्वभिष्यंदनिदर्शनःसः ॥

अर्थ-अभिघातज, लिंगनाश दो प्रकारका है, एक निमित्तजन्य, दूसरा अनिमित्तजन्य, तिनमें शिरोभिताप करके (विषवृक्षके फलसे मिला पवनका मस्तकमें स्पर्श होनेसे) होय उसको निमित्तजन्य कहते हैं। इसमें रक्ताभिष्यंदके लक्षण होते हैं ॥

अनिमित्तके लक्षण।

सुरर्षिगंधर्वमहोरगाणांसंदर्शनेनापिचभास्करस्य। हन्येतदृष्टि र्मनुजस्ययस्यसलिंगनाशस्त्वनिमित्तसंज्ञः ॥ तत्राक्षिविस्पष्ट मिवावभातिवैडूर्यवर्णाविमलाचदृष्टिः ॥

अर्थ-देव, ऋषि, गंधर्व, महासर्प और सूर्य इनके सन्मुख दृष्टिको लगाकर (टक टकी लगाकर) देखनेसे जिस मनष्यकी दृष्टि नष्ट होय, उसको अनि-

मित्त लिंगनाश कहते हैं, इस रोगमें नेत्र स्वच्छ दीखते हैं और दृष्टि वैदूर्य-मणिके समान स्वच्छ कहिये श्यामवर्ण होय। अब कहते हैं कि देवादिक भौतिक इंद्रियोंको नहीं बिगाडे परन्तु उनकी शक्तिका नाश करते हैं सो चरकमें लिखा है ॥

नेत्रार्मपर मरिचादि लेप।

संचूर्ण्यमरिचाक्षेचरजन्यारसमर्दिते।
लेपनादर्मणांनाशंकरोत्येषप्रयोगराट् ॥

अर्थ–काली मिरच और बहेडेको हलदीके रसमें खरल करे, इसका अर्मरोगपर लेप करे तो अर्मरोगका नाश होय ॥

पुष्पाक्षतादि रसक्रिया।

पुष्पाक्षतार्क्ष्यंजसितोदधिफेनशंखसिंधूत्थगैरिकशिलामरिचैः समांशैः। पिष्टैस्तुमाक्षिकरसेनरसक्रियेयंहंत्यर्मकाचतिमिरार्जुनवर्त्मरोगान् ॥

अर्थ–सोंफ, सुरमा, रसांजन, मिश्री, समुद्रफेन, शंख, सैंधानिमक, गेरू, मनसिल और मिरच ये समान भाग ले फिर सहतसे घोटे और इसकी बूँद नेत्रोंमें डाले तो काच, तिमिर, अर्जुन और वर्त्मरोग इनको नाश करे ॥

शुक्ति रोग।

श्यावाःस्युःपिशितनिभास्तुबिन्दवोये
शुक्त्याभाःसितिनियताःसशुक्तिसंज्ञः ॥

अर्थ–नेत्रके सफेद भागमें श्यामवर्ण मांसतुल्य सीपीके समान जो बिंदु होय उसको शुक्ति कहते हैं ॥

शुक्तिरोगपर सामान्य यत्न।

क्रियांशुक्त्यामयेकुर्य्यात्पित्ताभिष्यंदजिच्छुभाम् । बलासाह्वयपिष्टेतुकार्यंशोणितमोक्षणम् ॥ कफाभिष्यंदजित्सर्वंक्रमंकुर्याद्विचक्षणः। अंजनंकट्फलव्योषबीजपूररसांजनैः ॥

अर्थ–शुक्तिरोगपर पित्ताभिष्यंदनाशक क्रिया करे, यदि शुक्तिरोग कफाधिक होवे तो रक्तस्राव करे और कफाभिष्यंद नाशक सर्व औषध देवे, तथा कायफल, सोंठ और रसोत इनको विजोरेके रसमें घोटकर अंजन करे ॥

---

१ देवाद्ययोऽथौहिमहाप्रभावानदूषयंतःपुरुषस्य देहम् । विशंत्यदृश्यास्तरसा यथैव छाया तयोर्दर्पणसूर्यकांतौ ॥

अर्जुन।

एकोयःशशरुधिरोपमश्चबिंदुःशुक्लस्थोभवतितदर्जुनंवदंति ॥

अर्थ--शुक्ल भागमें शशेके रुधिरके समान जो बिंदु (बूँद) नेत्रमें उत्पन्न होय उसको अर्जुन कहते हैं ॥

अर्जुनकी सामान्य चिकित्सा।

अर्जुनेशर्करामस्तुक्षौद्रैराश्चोतनंहितम् । शंखःक्षौद्रेणसंयुक्तः कतकःसैंधवेनवा । शितयार्णवफेनोवापृथगंजनमर्जुने ॥

अर्थ--नेत्रार्जुनपर खाँड, दहाकी जल और सहत इनको एकत्र करके इसकी बूँद नेत्रमें निचोड़े अथवा सहतमें शंखको घिसके लगावे अथवा निर्मलीके बीजको और सैंधेनिमकको अथवा समुद्रफेन और मिश्रीको घिसकर अंजन करे॥

पिष्टक।

श्लेष्ममारुतकोपेनशुक्लेमांससमुन्नतम् ।
पिष्टवत्पिष्टकंविद्धिमलाक्तादर्शसन्निभम् ॥

अर्थ--कफ वायुके कोपसे शुक्ल भागमें पिष्ट (पिसा) सा जो मांस बढे उसको पिष्टक कहते हैं, वो मलसे मिले अर्श (बवासीर) के समान होता है॥

जाल।

जालाभःकठिनशिरोमहान्सरक्तःसंतानःस्मृतइहजालसंज्ञितस्तु॥

अर्थ--नेत्रके सफेद भागमें शिरा (नस) का समूह जालीके समान होय और वह कठिन तथा रुधिरके समान लाल होवे, उसको जाल कहते हैं ॥

शिराजपिडिका।

शुक्लस्थाःसितपिटिकाःशिरावृतायाः
स्ताम्ब्रूयादसितसमीपजाःशिराजाः ॥

अर्थ--नेत्रके शुक्ल भागमें शिरा (नसों) से व्याप्त ऐसी सफेद फुंसी होय, उसको शिराज पिडिका कहते हैं वह कृष्णभागके समीप होती है ॥

बलास।

कांस्याभोमृदुरथवारिबिंदुकल्पोविज्ञेयोनयनसितेबलाससंज्ञः ॥

अर्थ--नेत्रके शुक्ल भागमें कांसेके समान कठिन अथवा पानीकी बूंदके समान कुछ ऊंची जो गांठ होय, उसको बलास[१] कहते हैं ॥

१ मारुतो पीडितः श्लेष्मा शुक्लभागे व्यवस्थितः ॥ जलबिंदुरिवोच्छूनो मृदुः सकफसंभवः ॥ जलासग्रथितं नाम तं शोफं वृत्तमादिशेत् ॥

पूयालस ।

पक्वःशोथःसंधिजोयःसतोदःस्रावेत्पूयंपूतिपूयालसाख्यः ॥

अर्थ--नेत्रकी संधिमें सूजन होवै और पककर फूटजाय,उसमेंसे दुर्गंधि और राध बहे तथा तोद सुई छेदनेकीसी पीडा होय उसको पूयालस कहते हैं ॥

पूयालसकी चिकित्सा ।

पूयालसेशिरांभित्वालेपोपनाहकर्मभिः ।
नेत्रपाकविधिंकुर्यात्परंमुक्तांजनंहितम् ॥

अर्थ–पूयालस नेत्ररोग होगया होय तो शिरावेध करके फिर लेप और पिंडी बांधे तथा नेत्रपाककी विधि तथा मुक्तांजन इत्यादि उपचारकरे ॥

पूयालसपर अंजन ।

आर्द्रकस्वरसैर्घृष्टंसिंधुकासीससंमितम् ।
छायाशुष्कांवटींकुर्यात्पूयाख्येहितमंजनम् ॥

अर्थ–सैंधानिमक, हीराकसीस इनका समान भागले अदरखके रसमें खरल करकै गोली बनावे इसको छायामें सुखायके इसको पूयाख्य व्याधिपर नेत्रमें अंजन करे ॥

उपनाह ।

ग्रंथिर्नाल्पोदृष्टिसंधावपाकीकंडूप्रायोनारुजस्तूपनाहः ॥

अर्थ–नेत्रकी संधिमें बडी गांठ होवै, वह थोडी पके उसमें खुजली बहुत हो दूखे नहीं, उसको उपनाह ऐसे कहते हैं ॥

उपनाह और अलजीका यत्न ।

हितोपनाहेत्वलजौपिप्पलीमधुसैंधवैः ।
विलिखेन्मंडलाग्रेणप्रयच्छेद्वासमंततः ॥

अर्थ–उपनाह और अलजी इन व्याधियोंपर पीपल, सहत और सैंधानिमक, इनको एकत्र कर इसको मंडलाग्र शस्त्र (सलाई)पर रखकै इससे लेखन कर्म करे, किंवा पूर्वोक्त औषधोंको नेत्रोंमें डाले ॥

स्राव अथवा नेत्रनाडी ।

गत्वासंधीनश्रुमार्गेणदोषाःकुर्युःस्रावाँल्लक्षणैःस्वैरुपेतान् ।
तंहिस्रावंनेत्रनाडीतिचैकेतस्यालिंगंकीर्तयिष्येचतुर्धा ॥

अर्थ–वातादि दोष अश्रुमार्गसे संधियोंमें प्राप्त होकर स्वकीय लक्षणयुक्त

स्राव उत्पन्न करे, उस स्रावको कोई नेत्र नाडी कहते हैं यह रोग चार प्रकार का है उसके लक्षण कहते हैं * शंका-क्योंजी वातका स्राव क्यों नहीं कहा * उत्तर-वातमें स्राव नहीं होताहै इसीसे विदेहने चारही प्रकारके स्राव कहेहैं ॥

पाकःसंधौसंस्रवेद्यस्तुपूयंपूयास्रावोसौगदःसर्वजस्तु । श्वेतंसांद्रंपिच्छिलंसंस्रवेद्धिश्लेष्मास्रावोऽसौविकारोमतस्तु ॥ रक्तास्रावःशोणिताद्योविकारःस्रवेदुष्णंतत्ररक्तंप्रभूतम् । हरिद्राभंपीतमुष्णंजलंवापित्तात्स्रावःसंस्रवेत्संधिमध्यात् ॥

अर्थ-पूयास्राव नेत्रकी संधिमें सूजन होकर पके, तथा उसमेंसे राध बहे यह रोग सन्निपातात्मक है, श्लेष्मास्राव जिसमेंसे सफेद गाढी और चिकनी राधबहे । रक्तास्राव जिस विकारमें विशेष गरम रुधिर बहे, उसको रक्तास्राव कहते हैं । पित्तास्राव जिसकी संधिसे हलदीके समान पीला गरम जल बहे उसको पित्तास्राव कहते हैं ॥

स्रावचिकित्सा ।

स्रावेषुत्रिफलाक्वाथंयथादोषंप्रयोजयेत् ।
क्षौद्रेणाज्येनापिप्पल्यामिश्रंविंधेच्छिरातथा ॥

अर्थ-स्रावके दोषको विचारकै उसीके अनुसार त्रिफलेके काढेमें सहत, घी, अथवा पीपल डालकै देवे, उसी प्रकार शिरावेध करे (फस्त खोले) ॥

पथ्यादिवर्त्ती ।

पथ्याक्षधात्रीफलमध्यबीजैस्त्रिद्व्येकभागैर्विदधीतवर्तिं ।
तयांजयेदस्रमतिप्रवृद्धमक्ष्णोर्हरेत्कष्टमपिप्रकोपम् ॥

अर्थ-हरड, बहेडा और आँवला इनके फलके भीतरकी मिंगी लेवे उसको पीसकै बत्ती करे इसको नेत्रोंमें फेरे नेत्रोंसे अति पित्त रुधिरको हरण करे ॥

पर्वणी और अलजी ।

ताम्रातन्वीदाहपाकोपपन्नाज्ञेयावैद्यःपर्वणीवृत्तशोथा ।
जातासंधौशुक्लकृष्णेलजीस्यात्तस्मिन्नेवऽख्यापितापूर्वलिंगैः ॥

अर्थ-नेत्रकी सफेद काली संधियोंमें तांबेके समान छोटी गोल जो फुंसी होवे और वह फुँसी दाह होकर पके उसको पर्वणी कहते हैं ॥

और उसी ठिकाने पूर्वरूप संयुक्त बडी फुन्सी उठें, उसको अलजी कहतेहैं॥

---

१ सन्निपातात्कफाद्रक्तापित्तात्स्रावोक्षिसंधिषु इति ।

पर्वणी और अलजीमें इतनाही अंतर है कि, अलजी बडी फुन्सी होती है और पर्वणी छोटी फुंसी होती है यह विदेहका मत है ॥

शिरावेध ।

पर्वणीपिटिकांसंधिभागेछिंद्यादसंशयम् ।
हितमाश्चोतनंतत्रयोजयेन्मधुसैंधवैः ॥

अर्थ-पर्वणिका नामक पिटिका (फुंसी) का निःसंशय संधि भागमें छेदन करे और सहत, सैंधानिमक पीसके नेत्रमें बूंद डाले ॥

कृमिग्रंथी ।

कृमिग्रंथिर्वर्त्मनःपक्ष्मणश्चकंडूंकुर्युःकृमयःसंधिजाताः ।
नानारूपावर्त्मशुक्लांतसंधौचरंत्यंतर्नयनंदूषयंतः ॥

अर्थ-जिसके नेत्रके शुक्ल भागकी संधिमें और पलकोंकी संधिमें उत्पन्न हुई अनेक प्रकारकी कृमि खुजली और गांठ उत्पन्न करें और नेत्रके पलक और सफेदी भागकी संधिमें प्राप्त होकर नेत्रके भीतरके भागको दूषित करे, भीतर फिरे उसको कृमिग्रंथि कहते हैं यह सान्निपातात्मक कहते हैं सो विदेहका भी मत है ॥

जंतुग्रंथी चिकित्सा ।

त्रिफलामृतकासीससैंधवैःसारसाञ्जनैः ।
रसक्रियांकृमिग्रंथौभिन्नेस्यात्प्रतिसारणाम् ॥

अर्थ-कृमिग्रंथि पर त्रिफला दूध, हीराकसीस, सैंधानिमक और रसोत ये डाले और यदि कृमिग्रंथि फूट गई होवे तो प्रतिसारविधि करे ॥

उत्संग पिटिका ।

अभ्यंतरमुखीताम्राबाह्यतोवर्त्मतश्चया ।
सोत्संगोत्संगपिडिकासर्वदास्थूलकंडुराः ॥

अर्थ-नेत्रके ढकने वाली वाफणी अर्थात् कोएमें फुन्सी होय और उसका मुख भीतर होय, वह लाल बडी तथा खुजलीसंयुक्त होय, उसको उत्संग पिडिका कहते हैं यह सान्निपातसे होती है । गदाधर और विदेहके मतसे

१ पर्वणी पिडिका तत्र जायते त्वंकुरोपमा । शुक्लकृष्णांतसंधौच जनयेद्भोस्तनाकृतिम् ॥ पिडिकामलजीं तां तु विद्धितोदाश्रुसंकुलम् ॥ इति ॥

२ ततः पूयमसृक्कृष्णाः पतंति कृमयस्तथा । लक्षणैर्विविधैर्युक्ताः सन्निपातसमुत्थिताः ॥ कृमिग्रंथिं तु तं विद्याद्देहिनां नेत्रदूषणम् ॥ इति ॥

पलकोंके कोएके बाहर भी यह रोग होताहै। "च" इस श्लोकमें लिखा है उसका यह प्रयोजन है कि, इस जगह भी मुर्गीके अंडेकासा रस स्राव जानना ॥

कुंभिका ।

वर्त्मांतेपिडिकाध्माताभिद्यंतेचस्रवंतिच ।
कुंभीकबीजसदृशाःकुंभीकाःसन्निपातजाः ।

अर्थ–पलकोंके समीप कुंभिकाके बीजके समान फुंसी होय, वह पककर फूटजाय और फूटकर बहे, उसको कुंभिका कहते हैं। कोई आचारी कहते हैं कि, कच्छदेशमें दाडिम (आनार) के बीजके आकार कुंभिका होती है ॥

पोथकी ।

स्राविण्यःकंडुरागुर्व्योरक्तसर्षपसन्निभाः ।
रुजावंत्यश्चपिडिकाःपोथक्यइतिकीर्त्तिताः ॥

अर्थ--जिसके कोएमें लाल सरसोंके समान रुधिर स्राव हो, खुजली संयुक्त भारी तथा पीडासंयुक्त फुंसी होय, उसको पोथकी कहते हैं ॥

वर्त्मशर्करा ।

पिडिकायाखरास्थूलासूक्ष्माभिरभिसंवृता ।
वर्त्मस्थाशर्करानामसरोगोवर्त्मदूषकः ॥

अर्थ–जिसके कोएमें जो पिडिका कठिन और बडी होकर सर्वत्र छोटी २ फुन्सियोंसे व्याप्त होय, उसको वर्त्मशर्करा कहतेहैं इससे कोए बिगड जाते हैं॥

अर्शोवर्त्म ।

उर्वारुबीजप्रतिमाःपिडिकामंदवेदनाः ।
श्लक्ष्णाःखराश्चवर्त्मस्थास्तदर्शोवर्त्मकीर्त्यते ॥

र्थ–ककडीके बीजके बराबर मंदपीडा पृथक् २ कठिन ऐसी फुंसी
कोएं रें उठे उसको अर्शोवर्त्म कहते हैं, निमि (विदेह) के मतसे यह सन्नि-
पाता त्मक है ॥

शुष्कार्श ।

दीर्घांकुरःखरःस्तब्धोऽदारुणोभ्यंतरोद्भवः ।
व्याधिरेषोऽतिविख्यातःशुष्कार्शोनामनामतः ॥

अर्थ–ने त्रके कोएमें लंबे खरदरे कठिन दुःखदायक ऐसे जो मांसांकुर होंय
उस व्याधि को शुष्कार्श कहते हैं यहभी सन्निपातज हैं ॥

१ वीरुजा र्का डेनावर्त्मोपक्षान्तर्बाह्यतोऽपि वा । पिडिका सन्निपातेन तदर्शोवर्त्म कीर्त्यते ॥ इति ॥

अंजन (गुहेरी)।

दाहतोदवतीताम्रापिडिकावर्त्मसंभवा।
मृद्वीमंदरुजासूक्ष्माज्ञेयासांऽजननामिका॥

अर्थ-दोह तोद (चोंटनी) संयुक्त लाल, नरम, छोटी, मंद पीडा करनेवाली, ऐसी फुंसी नेत्रके कोएमें होय, उसको अंजना कहते हैं, यहभी सन्निपातज हैं॥

वर्त्मपक्ष्मजरोगचिकित्सा।

स्वेदयेद्‌घृष्टयांगुल्याहरेद्रक्तंजलौकया। कारंसंघृष्यदुर्वण्यमंजयेल्लोचनंमुहुः। द्वित्रिवाराञ्छमयातिकंडूदोषान्वितांजनम्॥

अर्थ-अंजना नामक व्याधिको हाथपर उँगली घिसकर उससे सेके तथा जोंख लगायकै रुधिर निकाल डाले, अथवा कार और कूठको घिसकै इसका वारंवार अंजन करे, इस प्रकार दो तीनबार करनेसे खुजली, तथा सदोष अंजना शमन होय॥

अंजननामिका पर यत्न।

रसांजनंव्योषयुतंसंपिष्यवटकीकृतम्।
कंडूपाकान्वितांहंतिनूनमंजननामिकाम्॥

अर्थ-रसोत सोंठ, मिरच, पीपल इनको एकत्र घोटकर गोली बनावे, इसका अंजन करनेसे कंडू और पाक इन करकै युक्त अंजन रोगका नाशकरे॥

बहलवर्त्म।

वर्त्मोपचीयतेयस्यांपिडिकाभिःसमंततः।
सवर्णाभिःस्थिराभिश्चविंद्याद्बहलवर्त्मतत्॥

अर्थ-जिसके नेत्रका कोया त्वचाके समान वर्ण तथा कठिन फुन्सीन्से व्याप्त होय, उसको बहलवर्त्म रोग कहतेहैं येभी सन्निपातक है॥

वर्त्मबंध।

कंडूमताऽल्पतोदेनवर्त्मशोथेनयोनरः।
नसंप्रच्छादयेदक्षियत्रासौवर्त्मबंधकः॥

अर्थ-जिसके नेत्रके कोयोंमें सूजनसे नेत्रके बराबर सूजन आय जावे, उससे उस मनुष्यको कुछ नहीं दीखे, इस रोगको वर्त्मबंधक कहते हैं इस सूजनमें खुजली चले तथा तोद (चोटनी) होय यह रोग त्रिदोषज है॥

क्लिष्टवर्त्म।

मृद्वल्पवेदनंताम्रंयद्वर्त्मसममेवच।
अकस्माच्चभवेद्रक्तंक्लिष्टवर्त्मेतितद्विदुः॥

अर्थ-नेत्रके नीचे ऊपरके दोनोंको ये नरम अल्प पीडा तांबेके वर्ण होकर अकस्मात् लाल होजाय तो इस रोगको क्लिष्टवर्त्म रोग कहते हैं यह रोग कफरक्तज है, यहीमत विदेहका है॥

वर्त्मकर्दम।

क्लिष्टंपुनःपित्तयुतंशोणितंविदहेद्यदा।
तदाक्लिन्नत्वमापन्नमुच्यतेवर्त्मकर्दमः॥

अर्थ-क्लिष्टवर्त्म फिर पित्तयुक्त रुधिरको दहन करे तब वह दही दूध माखनके समान गीला होजाय, अतएव इस व्याधिको वर्त्मकर्द्दम कहते हैं यह पित्ताधिकसन्निपातात्मक है॥

श्यामवर्त्म।

वर्त्मयद्वाह्यतोंतश्चश्यावंशूनंसवेदनम्।
तदाहुःश्याववर्त्मेतिवर्त्मरोगविशारदाः॥

अर्थ-जिसके नेत्रके कोएके बाहर अथवा भीतर काली सूजन होय, तथा पीडा होय, उसको वर्त्मरोगके जाननेवाले श्याव वर्त्म कहतेहैं यह वाताधिक त्रिदोषजन्य है विदेहने लिखाभी है॥

प्रक्लिन्नवर्त्म।

अरुजंबाह्यतःशूनंवर्त्मयस्यनरस्यहि।
प्रक्लिन्नवर्त्मतद्विद्यात्क्लिन्नमत्यर्थमंतत्॥

अर्थ-जो कोये अल्पपीडा तथा बाहरसे सूजा हुआ अत्यन्त कीचडसे व्याप्तिहो उसको प्रक्लिन्नवर्त्म कहते हैं यह कफज विकारहै॥

उसकी चिकित्सा।

तालदारुवचाःपिष्टासुरसापत्रवारिणा।
छायाशुष्काकृतावर्तिःक्लिन्नवर्त्मनिवारिणी॥

अर्थ-हरताल, देवदारु और वच, इनके चूर्णको तुलसीके रसमें घोटकर

१ श्लेष्मादुष्टेन रक्तेन क्लिष्टमांसमतः समम्॥ बधूजीवविभं वर्त्म क्लिष्टमांसं तदुच्यते॥

२ दुष्टं श्लेष्मानिलात्पित्तं वर्त्मनोश्चीयते यदा॥ अग्निदग्धनिभं श्यावं श्याववर्त्मेति तद्विदुः॥

वत्ती बनावे इसको छायामें सुखाय वर्त्मपर फेरे, तो क्लिन्नवर्त्मव्याधि-को नाशकरे ॥

रसांजनाद्यंजन।

रसांजनंसर्जरसोजातीपुष्पंमनःशिला। समुद्रफेनोलवणंगैरिकंमरिचानिच ॥ एतत्समांशंमधुनापिष्टंप्रसक्लिन्नवर्त्मनि। अंजनंक्लेदकंडूघ्नंपक्ष्मणांचप्ररोहणम् ॥

अर्थ-रसोत, राल, चमेलीके फूल, मनशिल, समुद्रफेन, निमक, गेरू और कालीमिरच, इन औषधोंको समान भागले चूर्णकरे फिर सहतसें घोटे इसका अंजन करे, तो क्लिन्नवर्त्म, स्राव और खुजली, इनको नाशकरे तथा पलकोंके झडे हुए बाल फिर आवे ॥

अक्लिन्नवर्त्म।

यस्यधौतान्यधौतानिसंबध्यंतेपुनःपुनः।
वर्त्मान्यपरिपक्कानिविद्यादक्लिन्नवर्त्मतत् ॥

अर्थ-जिसके नेत्रके पलक धोनेसे अथवा नहीं धोनेसे वारंवार चिपक जावे कोए पककर राधसे नहीं चिकटे तो इस रोगको अक्लिन्नवर्त्म कहतेहैं- इस रोग को विदेह पिल्लायाया कहताहै ॥

वातहतवर्त्म।

विमुक्तसंधिनिश्चेष्टंवर्त्मयस्यनमील्यते।
एतद्वातहतंवर्त्मजानीयादक्षिचिंतकः ॥

अर्थ-जिसके नेत्रके पलक पृथक् २ होय, तथा जिसके पलक मिचे और खुलें नहीं, ऐसे नेत्रके कोए मिले नहीं उसको वातहत वर्त्मशालाक्य सिद्धांत-वाला कहता है ॥

वर्त्मपक्ष्मजचिकित्सा।

उत्संगिनीबहलकर्दमवर्त्मनीचश्यावंचयच्चपठितंत्विहबद्धवर्त्म।
क्लिष्टंचपोथकियुतंखलुवर्त्मयच्चकुंभीकिनीचसहशर्करयाचलेख्या ॥

अर्थ--उत्संगिनी, बहलवर्त्म, कर्दमवर्त्म, श्याववर्त्म, क्लिष्ट वर्त्म, पोथकी-वर्त्म और कुंभिनी इनको खाडसे लेखन कर्मकरे ॥

श्लेष्मोपनाहलगणंचबिसंचभेद्यंग्रंथिश्चयःकृमिकृतोंजननामिकाच ॥

अर्थ–श्लेष्मोपनाह, लगण, विसवर्त्म, कृमिग्रंथि और अंजननामिका इनका भेदनकरे अर्थात् तोडे ॥

सामान्य यत्न।

स्विन्नांभित्वाविनिष्पीड्यभिन्नामंजननामिकाम्। शिलैलानतसिंधूत्थैःसक्षौद्रैःप्रतिसारयेत् ॥ रसांजनमधुभ्यांवाभित्वाशस्त्रेणवर्त्मवित्। प्रतिसार्यांजनैर्युंज्यादुष्णैर्दीपशिखोद्भवैः ॥

अर्थ–अंजननामिका फूटगई होय तो शेकके दाब देय और मनसिल,इलायची, तगर, सैंधानिमक और सहत इससे अथवा रसांजन और सहत इनको युक्तिसे घिसे अथवा शस्त्रसे फोडकर गरम अंजनसे या गरम २ काजलसे घिसे ॥

पिल्लरोग।

पित्तश्लेष्मप्रकोपेनवर्त्मांतंसंप्रकुप्यति। नाम्नातिलोमशंवापि विक्लिष्टंपिल्लमेवच ॥ वर्त्मावलेखंबहुशस्तद्वच्छोणितमोक्षणम्। पुनःपुनर्विरेकंचपिल्लरोगातुरोभजेत् ॥

अर्थ–पित्त और कफ दूषित होनेसे नेत्रके पलकोंमें शोथ उत्पन्न होता है उसको अतिलोमश अथवा पिल्लरोग कहते हैं इस रोगमें वारंवार वर्त्मका लेखन करे, उसी प्रकार वारंवार रुधिर निकाले और वारंवार रेचन लेना ये पिल्लरोगसे पीडित मनुष्यको हितकारक है ॥

पिल्लचिकित्सा।

पिल्लीस्निग्धोवमेत्पूर्वंक्रियांव्यवसृतेसृजि। शिलारसांजनंव्योषगोपित्तैर्वर्तिरंजनम् ॥ पिल्लघ्नंछागमूत्रेणभावितंदेवदारुच। हरितालवचादारुसुरसारसपेषितम् ॥ अभयारससंपिष्टंतगरं पिल्लनाशनम् ॥

अर्थ–पिल्ल रोगीको पूर्व क्रिया करके रुधिर निकाले, फिर स्नेहपान करके वमन करे और मनसिल, रसोत, सोंठ, मिरच, पीपल इनके चूर्णको गोरोचनकी भावना देकर उसकी बत्ती करे, इनको नेत्रोंमें फेरा करे अथवा देवदारके चूर्णको बकरेके मूत्रकी भावना देवे, वो अथवा हरताल, बच और देवदारु इनके चूर्णको तुलसीके रसकी भावना देवे, वो किंवा हरडके रसमें तगरकी भावना देवे इसको नेत्रोंमें डाले तो पिल्लरोगका नाश करे ॥

पिल्लकायत्न।

ताम्रपात्रेगुहामूलंसिंधूत्थमरिचान्वितम्।
आरनालेनसंघृष्टमंजनंपिल्लनाशनम्॥

अर्थ–शालिपर्णी, पृष्ठिपर्णी इनकी जड, सैंधानिमक और कालीमिरच, इनका चूर्ण करके तामेके पात्रमें डाल कांजीसे घोटे, इसके लगानेसे पिल्ल-रोगका नाश होय॥

तुत्थादि लेप।

तुत्थकस्यपलंश्वेतमरीचानिचविंशतिः। त्रिंशद्भिःकांजिकपलैः पिष्ट्वाताम्रेनिधापयेत्॥ पिल्लानपिल्लान्कुरुतेबहुवर्षोत्थितान पि। उत्सेकेनोपदेहेनकंडूशोथांश्चनाशयेत्॥

अर्थ–लीलाथोथा ४ तोले, सपेद मिरच ८० तोले और कांजी १२० तोले, इन सबको एकत्र करके, उसको ताम्र पात्रमें खरल करे इसको नेत्रोंमें डाले, तो बहुत वर्षोंकाभी पिल्लरोगको नाश करे, तथा इसको सेक और पट्टी बाँधनेसे खुजली दाह और सूजन इनको नाश करे॥

पक्ष्मरोगचिकित्सा।

रक्षन्नक्षिदहेत्पक्ष्मतप्तलोहशलाकया। पक्ष्मकोपेपुनर्नैवकदा चिद्रोगसंभवः॥ पुष्पकासीसचूर्णवासुरसारसभावितम्। ताम्रे दसाहंतद्योज्यंपक्ष्मशातनलेपनम्॥

अर्थ–पक्ष्मकोप होनेसे नेत्रोंको बचायके लोहेकी शलाईसे पलकोंको दाग देवे तो फिर परवल नहींहो, अथवा नीलाहीराकसीसको तुलसीके रससे ताँबेके पात्रमें दशदिन पर्यंत भावना देवे, फिर इसका लेप करे तो पक्ष्मको-पका अर्थात् परवालोंका नाश करे॥

अर्बुद।

वर्त्मांतरस्थंविषमंग्रंथिभूतमवेदनम्।
आचक्षतेऽर्बुदमितिसरक्तमवलंबितम्॥

अर्थ–जिसके कोएके भीतर गोल मंदवेदनायुक्त कुछ लाल जल्दी बढ-नेवाली ऐसी जो गांठ होय, उसको अर्बुद कहते हैं यह भी सन्निपातज है॥

निमेष।

निमेषिणीःशिरावायुःप्रविष्टोवर्त्मसंश्रयः।

प्रचालयतिवर्त्मानिनिमेषंनामतंविदुः ॥

अर्थ–वर्त्माश्रित (कोएमें स्थित) जो वायु सो निमेष (कहिये पलकके उघाडने मूंदनेवाली नसमें प्रवेश होकर वारंवार पलकोंको चलायमान करे, उसको निमेष (नेत्रका मिचकाना) कहते हैं, विदेहने[1] भी लिखा है कि, यह रोग सन्निपातज है ॥

वर्त्मपक्ष्मजरोग चिकित्सा।

निमेषंनाशमायातिसर्पिस्तेनचपूरणम् ॥

अर्थ–नेत्रोंमें घृत डालके भरनेसे निमेष शांति होवे ॥

शोणितार्श ।

वर्त्मस्थोयोविवर्धेत लोहितोमृदुरंकुरः ।
तद्रक्तजंशोणितार्शश्छिन्नंच्छिन्नंप्रवर्धते ॥

अर्थ--रुधिरके संबंधसे नेत्रके कोएके भीतरीभागमें लाल तथा नरम अंकुर बढे, उसको शोणितार्श कहते हैं इसको जैसे २ काटें तैसे २ बढता है इस रक्तजव्याधिको विदेह[2] आचारी असाध्य कहते हैं ॥

लगण ।

अपाकीकठिनःस्थूलोग्रंथिर्वर्त्मभवोऽरुजः ।
सकंडूःपिच्छिलःकोलसंस्थानोलगणस्तुसः ॥

अर्थ–नेत्रके कोएमें बेरके समान बडी कठिन खुजली संयुक्त चिकनी गांठ होय, उसको लगण कहते हैं । यह रोग कफजन्य है, इसमें पीडा और पकना नहीं होय ॥

लगणका यत्न ।

रोचनाक्षारतुत्थानिपिप्पल्यःक्षौद्रमेवच ।
प्रतिसारणमेकैकंभिन्नेलगणइष्यते ॥

अर्थ–गोरोचन, जवाखार, लीलाथोथा और पीपल इन प्रत्येकको सहतसे लगन फूटनेपर प्रतिसारण करे ॥

बिसवर्त्म ।

त्रयोदोषाबहिःशोथंकुर्युश्छिद्राणिवर्त्मनोः ।

---

१ निमेषिणीः शिरावायुः प्रविश्य व्यवतिष्ठते । अत्यर्थं चलते कर्म निमेषः स न सिध्यति ॥

२ वायुः शोणितमादाय शिराणां प्रमुखे स्थितः । जनयत्यंकुरं ताम्रं वर्त्मनि च्छिन्नरोहणम् ॥
तच्छोणितार्शोऽसाध्यः स्याद्रक्तास्राव्यथ रक्तजम् ॥

प्रस्रवत्यंतरुदकंबिसवद्बिसवर्त्मतत् ॥

अर्थ–तीनों दोष कुपित होकर नेत्रके कोयोंको सुजाय देवे, तथा उनमें छिद्र होजाय, उनकोयोंमें कमलतंतूके समान भीतरसे पानी झरे, इस रोगको बिसवर्त्म कहते हैं ॥

बिसवर्त्मचिकित्सा।

स्वेदयित्वाबिसग्रंथिंछिद्राण्यस्यनिराश्रयेत्।
पक्कंभित्वातुशस्त्रेणसैंधवेनप्रपूरयेत् ॥

अर्थ--बिसवर्त्मकी गाँठको स्वेदन करकै छिद्रको चोडाकरे, तथा वो पक जावे तो शस्त्रसे चीरकै उसमें सैंधानिमक भरे ॥

कुंचन।

वाताद्यावर्त्मसंकोचंजनयंतियदामलाः।
तदाद्रष्टुंनशक्नोतिकुंजनंनामतद्विदुः ॥

अर्थ–वातादि दोष जब कोएके मार्गको संकुचित करें, तब मनुष्य नेत्रको उघाडकर नहीं देखसके, इस रोगको कुंचन कृच्छ्रोन्मीलन कहते हैं यह रोग सुश्रुताचारीनें नहीं लिखा माधबाचारीनेही लिखा है ॥

पक्ष्मकोप।

प्रचालितानिवातेनपक्ष्माण्यक्षिविशंतिहि।
घृष्यंत्यक्षिमुहुस्तानिसंरंभंजनयंतिच ॥
असितेसितभागेचमूलकोशात्पतंत्यपि।
पक्ष्मकोपःसविज्ञेयोव्याधिःपरमदारुणः ॥

अर्थ--बादीसे चलायमान कोएके बाल नेत्रमें प्रवेश करें और वह वारंवार नेत्रसे रगडे जाय, इसीसे नेत्रके काले वा सफेद भागमें सूजन होय, वो केश (बाल) जडसे टूट जावें अतएव इस व्याधिको पक्ष्मकोप अथवा उपपक्ष्म कहते हैं यह बडा दुःखदायक है ॥

पक्ष्मशात।

वर्त्मपक्ष्माशयगतंपित्तंरोमाणिशातयेत्।
कंडूंदाहंचकुरुतेपक्ष्मशातंतमादिशेत् ॥

अर्थ–पलकोकी जडमें रहनेवाला पित्त कुपित होकर नेत्रोंके बाल जिनको वरूनी अथवा वाफणी कहते हैं उनका नाश करे, तथा नेत्रोंमें खुजली चले

दाह होय उसको पक्ष्मशात कहते हैं इस रोगको भी सुश्रुतने संख्या बढनेके भयसे नहीं लिखा, माधवाचारीने अन्य ग्रन्थोंके मतसे लिखा है ॥

त्रिफलाघृत।

त्रिफलाक्काथकल्काभ्यांसपयस्कंघृतंशृतम्
तिमिराण्यचिराद्धन्यात्पीतमेतन्निशामुखे ॥

अर्थ–त्रिफलेका काढा और कल्क तथा दूध इनको एकत्र करकै उसमें घृत डालके सिद्ध करे, इसको रात्रिके समय पीवे तो तिमिरका नाश करे ॥

भृंगराज तैल।

भृंगप्रस्थंतैलात्कुडवंचतथापलंचमधुकस्य।
क्षीरप्रस्थविपक्कंगतमपिचक्षुर्निवर्तयेच्च ॥

अर्थ–भाँगरेका रस ६४ तोले, तेल १६ तोले, मुलहटी १६ तोले, दूध ६४ तोले इस क्रमसे लेकर एकत्र कर तेल सिद्ध करे, यह गए हुए नेत्रोंको फिर अच्छा करे।

स्नान धावन।

स्नानंकृष्णतिलैश्चापिचक्षुष्यमनिलापहम्। मधुकामलक स्नानंपित्तघ्नंतिमिरापहम् ॥ वचाद्यैःस्नानमिच्छंतिश्लेष्मघ्नंतिमिरापहम्। आमलैःसततंस्नानंपरदृष्टिबलापहम् ॥ त्रिफलायाःकषायस्तुधावनान्नेत्ररोगजित्। कवलोन्मुखरोगघ्नःपातनः कामलापहः॥भुक्त्वापाणितलंघृष्ट्वाचक्षुषोर्यदिदीयते। अचिरेणैवतद्वारितिमिराणिव्यपोहति ॥

अर्थ–कालेतिलोंके कल्कसे स्नान करनेसे नेत्रोंको हितकारी होय, तथा वादीका नाश होय, तथा मुलहटी और आँवला इनसे स्नान करे तो पित्त और तिमिर इनको नाश करे तथा वचादि औषधोंसे स्नान करनेसे कफ और तिमिर इनका नाश करे और जो निरंतर आँवलोंसे स्नान दृष्टिको बढावे त्रिफले काढेसे नेत्रोंको धोवे तो नेत्ररोग नष्ट होवे और त्रिफलेका कवल बनायके मुखमें रक्खे तो मुखरोगको दूर करे, तथा त्रिफलाका खाना कामलाको नाश करे तथा भोजन करके हाथोंको जलसे धोय हाथोंको आपसमें घिसकर नेत्रोंके लगावे तो थोडे दिनोंमें तिमिर रोगको नाश करे। [तथा भोजनोत्तर शर्याति, सुकन्या, च्यवन और इन्द्र तथा अश्विनीकुमारका स्मरण करना सर्व नेत्र विकारोंको दूर करे] ॥

द्वितीय त्रिफलादि घृत।

शतमेकहरीतक्याद्विगुणंचबिभीतकम्। चतुर्गुणंत्वामलकंवृषमार्कवयोःसमम्॥ चतुर्गुणोदकंदत्वाशनैर्मृद्वग्निनापचेत्। भागंचतुर्थंसंरक्ष्यक्काथंतमवतारयेत्॥ शर्करामधुकद्राक्षामधुयष्टीनिदिग्धिका॥काकोलीक्षीरकाकोलीत्रिफलानागकेशरम्। पिप्पलीचंदनंमुस्तंत्रायमाणातथोत्पलम्॥ तथास्त्रावंचकंडूंचश्वयथुंचकषायताम्। कलुषत्वंचनेत्रस्यविसवर्त्मपटलान्वितम्॥ बहुनात्रकिमुक्तेनसर्वान्नेत्रामयान्हरेत्। यस्यचोपहतादृष्टिःसूर्याग्निभ्यांप्रपश्यतः॥ तस्मैतद्भेषजंप्रोक्तंमुनिभिःपरमंहितम्। मर्जितंदर्पणंयद्वत्परांनिर्मलतांव्रजेत्॥ तद्वदेतेनपोतेननेत्रंनिर्मलतामियात्। वारिद्रोणाद्वयंचात्रवृषमार्कवयोस्तुले॥

अर्थ-हरड१००तोले बहेडा२००तोले, आँवला४००तोले तथा अडूसा४०० तोले भांगरा २०० तोले इनको चौगुने जलमें डालके मंदाग्निपर रखके औंटावे जब चतुर्थांश शेष रहे तब उतारके छान लेवे, इसमें खाँड, महुआके फूल, दाख, मुलहटी, कटेरी, काकोली, क्षीरकाकोली, हरड, बहेडा, आँवला, नागकेशर, पीपल, चंदन, नागरमोथा, त्रायमाण, नीलाकमल इनका कल्क और घी ६४तोले, तथा दूध ६४ तोले डालके मंदाग्निपर पचावे और खानेको देवे, तो तिमिर, काच, स्तोद, नेत्रशुक्र, स्राव, खुजली, सूजन, रक्तता, गदलाहट, विसवर्त्म, पटल इनको नाश करे और सूर्य अग्नि इनके योगसे जिनकी दृष्टी नाश होगई हो तथा नेत्रसंबंधी सर्व रोगपर इसको देवे तो अत्यंत हितकारी होय जैसे धोवनेसे दर्पण शुद्ध होवे है उसी प्रकार इस घृतसे नेत्र निर्मल होवे॥

बिभीतकादि घृत।

बिभीतकाशिवाधात्रीपटोलारिष्टवासकैः।
पक्कमेभिर्घृतंसर्वानक्षिरोगान्व्यपोहति॥

अर्थ-बहेडा, हरड, आँवला, पटोलपत्र, नींबकी छाल और अडूसा इनके काढेमें घृतको सिद्ध करे ये संपूर्ण नेत्रके रोगोंका नाश करे॥

त्रिफलाद्यं महाघृतम्।

त्रिफलायारसप्रस्थंभृंगराजरसस्यच। वृषस्यचरसप्रस्थंशता

वर्याश्चतत्समम् ॥ अजाक्षीरंगुडूच्याश्चआमलक्यारसस्तथा । प्रस्थंप्रस्थंसमाहृत्यसर्वैरेभिर्घृतंपचेत् ॥ कल्कःकणसिताद्राक्षा त्रिफलानीलमुत्पलम् । मधुकंक्षीरकाकोलीमधुपर्णीनिदिग्धिका ॥ तत्साधुसिद्धंविज्ञायशुभेभांडेनिधापयेत् । उर्ध्वपानमधःपानंमध्येपानंचशस्यते ॥ यावंतोनेत्रजान्रोगान्पानादेवापकर्षति । सरक्तेरक्तदुष्टेषुरक्तेवाविकृतेतथा ॥ नक्तांध्येतिमिरेकाचेनीलिकापटलार्बुदे । अभिष्यंदेधिमंथेचपक्ष्मकोपेसुदारुणे ॥ नेत्ररोगेषुसर्वेषुदोषत्रयकृतेष्वपि । परंहितमिदंप्रोक्तंत्रिफलाद्यंमहाघृतम् ॥

अर्थ--त्रिफलाका रस ६४ तोले, भांगरेका रस ६४ तोले, अडूसेका रस ६४ तोले, शतावरीका रस ६४ तोले, बकरीका दूध ६४तोले, गिलोय,६४तोले, आंवलेका रस ६४ तोले और घी ६४ तोले ये सब समान भाग लेवे, सबको एकत्र कर इसमें पीपल, खांड, दाख, त्रिफला, नीले कमल, मुलहटी, सपेद काकोली, कंभारी, कटेरी इनके कल्क डालके पचावे, जब सिद्ध हो जावे तब उत्तम पात्रमें भरकै रख देवे, इसको भोजनके प्रथम भोजनके पीछे और भोजनमें देवे तो जितने नेत्रोंके रोग हैं उनको इसको खातेही नाश करे, और नेत्रोंकी लाली दुष्टरक्त, रक्तस्राव, रतोंध, तिमिर, काच, पटल, नीलका पटल, नेत्रार्बुद, अभिष्यंद, अधिमंथ, उपपक्ष्म, संनिपातात्मक संपूर्ण नेत्रके रोग इनको नाश करे यह त्रिफला घृत अत्यंत हितकारी है ॥

सप्तामृत लोह ।

मधुकत्रिफलाचूर्णलोहचूर्णसमंलिहन् । मधुसर्पिर्युतंसम्यग्गव्यक्षीरंपिबेदनु ॥ छर्दिंसतिमिराशूलमम्लपित्तंज्वरंक्लमम् । आनाहंमूत्रसंगंचशोथंचैवनिहंतिहि ॥

अर्थ–मुलहटी, हरड, बहेडा, आवला, इनके चूर्णको और लोह भस्मको मिलायकै इस चूर्णको सहत और घी इनमें मिलायकै देवे और ऊपरसे गौका दूध पीवे तो वांति, तिमिर, शूल, अम्लपित्त, ज्वर, क्लम, अफरा, आनाह, मूत्रकी रुकावट और सूजन इनको नाश करे ॥

शताह्वादि चूर्ण ।

शतावरीसूर्यसमाप्रदेयाएलास्तथावारणमूर्धतुल्या । देयावि

डंगंवसुभिःसमानमृतोःसमंचामलकास्थिबीजम्॥ विष्णोर्भूजे
स्तुल्यगुणंमरीचंतद्वत्क्रमैर्मागधिकाप्रदेया । चूर्णसमध्वंजन
मर्धकर्षमक्षामयानांविनिवारणार्थम् ॥ कंडूंसधूमंतिमिरंसुवो
रंमर्माणिकाचंपटलंत्रिदोषम् । येचापरेरक्तभवाविकारास्ते
षामयंचूर्णवरोनिहंता ॥

अर्थ–शतावर १२ तोले, इलायची २१ तोले, वायविडंग ८ तोले, आवलेके बीज ६ तोले, मिरच ४ तोले, पीपल ३ और रसोत आधा तोला इन सब पदार्थोंका चूर्ण कर एकत्र करे, फिर शहतमें मिलायके नेत्ररोगोंपर देवे, तो खुजली, धूँआसा दीखना, तिमिर, अर्मरोग, काचबिंदु, त्रिदोषात्मक नेत्रपटल और सर्व नेत्रविकार इनको नाश करै ॥

त्रिफलाचूर्ण ।

त्रिफलात्वचमायसंचचूर्णसमयष्टीमधुकंसमांशयुक्तम्। मधुना
सहसर्पिषादिनांतेपुरुषोनिष्परिहारमाददीत॥ तिमिरार्बुदरक्त
राजिकंडूक्षणदांध्यामयदाहशूलतोदान् । पटलंचसशुक्लका
चपिल्लंशमयत्येवनिषेवितः प्रयोगः॥ नचकेवलमेवलोचनानां
विहितोरोगनिबर्हणाययोगः । दशनश्रवणोर्ध्वजत्रुजानांप्रशमे
हेतुरयंतथामयानां॥ प्रमदाभिरयंजराधिरूढस्फुटचंद्राभरणा
सुयामिनीषु । सुरतानिपदेपदेनिषेव्यपुरुषोयोगमिमंनिषे
व्यमाणः ॥ स्मृतिविक्रमबुद्धिशक्तियुक्तःशरदांजीवतिवैशतं
समग्रम् । गुदजानिभगंदरप्रमेहान्सहकुष्ठानिहलीमकंकिला
सम् ॥ पलितानिविनाशयेत्तथाग्निंचिरनष्टंकुरुतेरविप्रचंडम् ।
मुखेननीलोत्पलचारुगंधिनाशिरोरुहैरंजनमेचकप्रभैः ॥ भवे
त्सगृध्रस्यसमानलोचनाश्चिरंनरोवर्षशतंचजीवाति ॥

अर्थ–त्रिफला, दालचीनी, मुलहटी, महुआके फूल ये समान भागले सब चूर्णकर इसमें शहत और घी मिलायकै सायंकालके समय खानेको देवे, तो तिमिर, अर्बुद, रक्तता, खुजली, रात्र्यंध, दाह, शूल, पीडा, पटल, शुक्लपटल, कांच और पिल्ल इनको नाशकरे, यह चर्ण केवल नेत्र रोगोंकाही नाश नहीं

करे, किंतु हसलीके ऊपरके यावन्मात्र रोगहैं सबका नाश करे है,यह वृद्धा स्त्री खावे तो तरुण होंजावे और वारंवार सुरतमें पुरुषोंको आनंद करे और पुरुष सेवन करे तो स्मृति, पराक्रम, बुद्धि और शक्ति इन करकै युक्त सौ वर्ष पर्यंत जीवे, तथा बवासीर, भगंदर, प्रमेह, कुष्ठ, हलीमक, किलासकुष्ठ और वृद्धावस्थापना इनको नाश करे, नष्टाग्निको बढावे, मुखमें कमलके समान सुगंध आवे, भौंराके समान काले बाल और गीधके समान दृष्टी होवे और सौ वर्ष जीवे ॥

महावासादि क्वाथ।

वासाघनानिंबपटोलपत्रंतिक्तामृताचंदनवत्सकत्वक् । कलिंगदार्वीदहनंसनागरंभूनिंबधात्रीह्यभयाविभीतकम् ॥ तथायवक्काथमथाष्टमांशंपिबेदिमंपूर्वदिनेकषायकम् । तेनैवकंडूपटलार्बुदंचशुक्रंतथासव्रणमव्रणंच ॥ दाहंसरागंसरुजंसपिल्लंहन्यात्समस्तानपिनेत्ररोगान् ॥

अर्थ-अडूसा, नागरमोथा, नीमकी छाल, पटोलपत्र, कुटकी, गिलोय, चंदन, कूडाकी छाल, इन्द्रजौ, दारुहलदी, चित्रक, सोंठ, चिरायता, आंवला, हरड, भिलाए ये सब चीजें जौके काढेमें डालके अष्टमांश कषाय रहजाय तो इसमेंसे सबेरे पीनेसे कंडू, पटल, अर्बुद, पीव, व्रण, दाह, लाली, पीडा आदि सब नेत्ररोगोंका नाश हो जाता है ॥

त्रिफलादि क्वाथ।

अयःस्थंत्रिफलाक्काथंसर्पिषासहयोजितम् ।
भुक्तोपरिपिबेत्सायंमासेनांधोपिपश्यति ॥

अर्थ-त्रिफलके क्वाथमें लोहकी भस्म डाल घृतके साथ सायंकालमें व्यालू करकै पीवे तो १ महीनेमें अंधा मनुष्यभी देखने लगे ॥

चित्रकादि क्वाथ।

चित्रकमूलत्रिफलापटोलयवसाधितंपिबेदंभः ।
सघृतंनिशिचक्षुष्यंतिमिरंचविशेषतोहंति ॥

अर्थ-चित्रकके जडकी छाल, हरड, बहेडा, आवला, पटोलपत्र और जौं इनका क्वाथ कर घृत मिलाय रात्रिके समय पीवे तो नेत्रोंको हितकरें, तथा विशेष करके तिमिर रोगको नाश करे ॥

पिप्पल्याद्यंजन ।

पिप्पलीत्रिफलालाक्षालोध्रकंचससैंधवम् । भृंगराजरसेघृष्टंगु टिकांजनमिष्यते ॥ अर्मसतिमिरंकाचंकंडूंशुक्रंतथार्जुनम् । अंजनंनेत्रजान्रोगान्निहंत्येवनसंशयः ॥

अर्थ-पीपल, हरड, बहेडा, आवला, लाख, लोध, सैंधानिमक इन सबको भांगरेके रसमें बारीक पीसके गोली बनावे, फिर भांगरेके रसमें घिसके नेत्रोंमें अंजन करे तो अर्मरोग, तिमिर, खुजली, शुक्र, अर्जुन और समस्त नेत्रके रोगोंको दूर करे इसमें संदेह नहीं है ॥

गुंजामूलाद्यंजन ।

गुंजामूलंबस्तमूत्रेणपिष्टंनिर्घृष्टावावारिणाभद्रमुस्ता । आंध्यंसद्यस्तैमिरंहंतिपुंसामत्युद्गाढंनेत्रयोरंजनेन ॥

अर्थ--घूंघचीकी जडको बकरेके मूत्रमें पीसके अथवा जलमें भद्र मोथेको पीसके अंजन करे तो अंधापना और तिमिर रोग इन घोर रोगोंको दूर करे॥

तुलस्यादि अंजन ।

तुलस्याबिल्वपत्रस्यरसोग्राह्यःसमांशकः । ताभ्यांतुल्यंपयो नार्यास्त्रितयंकांस्यपात्रके ॥ गजवल्ल्याद्दढंमर्द्यताम्रेणप्रहरंपु नः । कज्जलत्वंसमुत्पाद्यतेनांजितविलोचनः । सद्योनेत्ररुजंहं तिसशूलांपाकसंभवाम् ॥

अर्थ-तुलसी और बेलपत्तोंका समान भाग रस लेवे, फिर इन दोनोंकी बराबर स्त्रीका दूध डाले, तीनोंको कांसीके पात्रमें गजबेल लोहेके मूसलेसे खरल करे, फिर तामेके घुटनासे १ प्रहर खरल करे, जब कज्जलके समान बारीक हो जाय तो नेत्रोंमें अंजन करे तो शूलयुक्त पके हुए नेत्रोंके विकारको तत्काल दूर करे ॥

कतकफलादि अंजन ।

कतकस्यफलंघृष्ट्वामधुनानेत्रमंजयेत् । ईषत्कर्पूरसहितंतत्स्यान्नेत्रप्रसाधनम् ॥

अर्थ-निर्मलीके फलोंको सहतमें घिसके अंजन करे परंतु इसमें थोडासा कपूर और मिलाय लेवेतो यह नेत्रोंको आच्छाकरे ॥

कतकाद्यंजन ।

कतकस्यफलंशंखंसैंधवंत्र्यूषणंसिता । फेनोरसांजनंक्षौद्रंविडं

गानिमनःशिला ॥ सर्वमेतत्समंकृत्वानारीक्षीरेणपेषयेत् ॥ तिमिरंपटलंकाचंमर्मशुक्रंव्यपोहति। कंडूंक्लेदार्बुदंहंतिमलंवाद्यं जितेसति ॥

अर्थ–निर्मलीका फल, शंख, सैंधानिमक, सोंठ, मिरच, पीपल, मिश्री, समुद्रफेन, रसोत, सहत, वायविडंग और मनसिल ये समान भागले स्त्रीके दूधसे बहुत बारीक पीसकै अंजन करेतो तिमिर, पटल, कांच, अर्मरोग, शुक्र, खुजली क्लेद और नेत्रार्बुद इनको उत्काल दूरकरे ॥

पुनर्नवादि अंजन।

दुग्धेनकंडूंक्षौद्रणनेत्रस्रावंचसर्पिषा। पुष्पंतैलेनतिमिरंकांजिकेननिशांधताम् ॥ पुनर्नवाहरत्याशुभास्करंतिमिरंयथा ॥

अर्थ–पुनर्नवाकी जडको दूधमें घिसके नेत्रोंमें अंजन करे तो खुजली, सहतसे लगावे तो नेत्रस्राव, घीसे लगावे तो फूला, तेलसे तिमिर, कांजीसे रतौंध रोगको दूर करे, इस प्रकार पुनर्नवाके अनेक गुण है, पुनर्नवाको हिंदीमें साँठ कहते हैं ॥

गूडूच्यादि अंजन।

गुडूचीस्वरसः कर्षःक्षौद्रंस्यान्माषकोन्मितम्। सैंधवंक्षौद्रतुल्यंस्यात्सर्वमेकत्रमर्दयेत् ॥ अंजयेन्नयनंतेनपिल्लार्मतिमिरंजयेत्। काचंकंडूंलिंगनाशंशुक्लकृष्णागतान्गदान् ॥

अर्थ–गिलोयका स्वरस १ तोले, सहत १ मासे, सैंधानिमक १ मासे सबको खरलकर नेत्रोंमें अंजन करे तो पिल्ल, अर्म, तिमिर, काच, खुजली, लिंगनाश, तथा नेत्रके सपेद भाग और काले भागके संपूर्ण रोगोंको दूर करे॥

नयनशाणनामक अंजन।

कणासलवणोषणासहरसांजनासांजनासरित्पतिकफःशिफासितपुनर्नवासंभवा। रजन्यरुणचंदनंमधुचतुत्थपथ्याशिलाअरिष्टदलसांबरस्फटिकशंखनाभीदवः ॥ इमानितुविचूर्णयेन्निविडवाससाशोधयेत्ततोयसिविमर्दयेत्समधुताम्रखंडेनतत्। इदंमुनिभिरीरितंनयनशाणनामांजनंकरोति तिमिरक्षयंपटलपुष्पनाशंबलात् ॥

अर्थ-पीपल, सैंधानिमक, काली मिरच, रसोत, सुरमा, समुद्रफेन, सपेद पुनर्नवा (सांठ, या, गदहपूर्णा) की जड, हलदी, लालचंदन, सहत, लीलाथोथा, हरड, छोटी मनसिल, नींबके पत्ते, सावरसींग, स्फटिकमणि, शंखकी नाभि और कपूर, इनको समान भागले चूर्ण कर बारीक कपडेमें छानले, फिर तामेके पात्रमें तामेके मूसलेसे सहत और जल डालके बारीक कज्जलके समान पीसे इसको मुनीश्वरोंने नयनशाणांजन कहाहै यह तिमिरका क्षय पुष्प और काचको नष्ट करे ॥

मुक्तादि महांजन।

मुक्ताकर्पूरकाचागरुमरिचकणासैंधवंशैलवालंशुंठीकंकोलका स्यंत्रपुरजनिशिलाशंखनाभ्यभ्रतुत्थम्। दक्षांडत्वक्कसाक्षक्षण दजयुतशिवाक्लीतकंराजवर्तजातीपुष्पंतुलस्याः कुसुममभिन वंवाजिमत्यास्तथैव ॥ पूतीकनिंबांजनभद्रमुस्तंसताम्रसारंर सगर्भयुक्तम् । प्रत्येकमेषांखलुमाषकैकंपलेनपिष्यान्मधुना तिसूक्ष्मम् ॥ भवंतिरोगानयनाश्रितायेनितांतमत्रोपहिताश्च तेषाम् । विधीयतेशांतिरवश्यमेवमुक्तादिनानेनमहांजनेन॥

अर्थ-बूकामोती, शुद्धभीमसेनी कपूर, शीशेका भस्म, अगर, कालीमिरच, पीपल, सैंधानिमक, एलाबालुक, सोंठ, कंकोल, कांसेकी भस्म, रांगेकी भस्म, हलदी, मनसिल, शंखकीनाभि, अभ्रकभस्म, लीलाथोथा, मुरगेके अंडेकी सपेदी, बहेडा, हलदी, हरड छोटी, मुलेठी,राजावर्त्त, जायफल (वा चमेलीके फूल) तुलसीकी नवीन मंजरी, परवल, कंजा, नीमके पत्ते, सुरमा, भद्रमोथा, तामेकी भस्म, सारहींगलू प्रत्येक मासे २ ले, सबको ४ तोले सहत मिलायकै बारीक पीसे, इसके लगानेसे नेत्रके आश्रित जो रोग हैं वह सब इस मुक्तादि महांजनके लगानेसे नष्ट होय इसमें संदेह नहीं है ॥

दार्व्यादि अंजन।

दार्वीवरामधुकमंभसिनारिकेलंपक्त्वाष्टभागपरिशिष्टरसंपुन स्तत् । सांद्रंविपाच्यशशिसैंधवमाक्षिकाढ्यंयुंज्याद्व्रणार्तितिमिरार्तिषुपित्तजेषु ॥

अर्थ-दारुहलदी, हरड, बहेडा, आमला, मुलहटी, नारियलकी गिरी इनको समान भागले आठगुने जलमें डालके पचावे, जब जल जरके गाढा हो जाय तब उस जलको छानके उसमें कपूर, सैंधानिमक और शहत डालके

खरल करे बारीक होनेपर नेत्रोंमें लगावे तो नेत्रका घाव, पीडा, तिमिर और पित्तजन्य जितने नेत्रके रोग हैं सब दूर होय ॥

शंखादि वटी।

शंखस्यभागाश्चत्वारस्तदर्धेनमनःशिला। मनःशिलार्धमरिचंमरिचार्धेनपिप्पली ॥ सर्वमेकत्रसंमर्द्यगुटिकांकारयेद्बुधः ॥ वारिणातिमिरंहंतिह्यर्बुदंहंतिमस्तुना ॥ पिच्चटंमधुनाहंतिस्त्री क्षीरेणतथार्जुनम् ॥

अर्थ-शंखकी नाभी, ४ तोले, मनसिल २ तोले, काली मिरच १ तोले, पीपल ६ मासे लेवे सबको एकत्र कर खरलमें जलसे बारीक पीस गोली बनाय लेवे, इसको जलमें घिसके लगावे तो तिमिर दूर होय, छाँछमें घिसके लगावे तो नेत्रार्बुद दूर हो, सहतसे नेत्रोंका कीचडसे भरा रहना दूर हो, तथा नेत्रमें लालबूंद पडजाती है वह स्त्रीके दूधमें घिसके लगानेसे दूर करेहै ॥

शशिकलावर्त्ती।

रसकजलजनाभिः पौरतुत्थंसमांशंवमनगलितमेतन्निंबुनीरेण पिष्टम्। हरतिशशिकलैतद्वर्तिसंयोजिताक्ष्णोस्तिमिरनयनकंडूस्रावरोगार्मपिल्लान् ॥

अर्थ-खपरिया, शंखकी नाभि, गूगल, लीलाथोथा इन सबको समान भाग लेवे, सहतमें मिलाय नींबूके रससे बारीक पीसे यह शशिकलावर्त्तीको नेत्रोंमें लगानेसे तिमिर, नेत्रोंकी खुजली, पानीका बहना और अर्म तथा पिल्ल आदि सब नेत्रके रोग दूर हो ॥

चन्द्रोदयावर्त्ती।

हरीतकीवचाकुष्टंपिप्पलीमरिचानिच। बिभीतकस्यमज्जाच शंखनाभिर्मनःशिला ॥ सर्वमेतत्समंकृत्वागव्यक्षीरेणपेषयेत्। नाशयेत्तिमिरंकंडूंपटलान्यर्बुदानिच ॥ अपित्रिवार्षिकशुक्रंमासेनैकेननाशयेत्। अधिकानिचमांसानिरात्र्यंधत्वंतथवैच ॥ वर्तिश्चंद्रोदयानामनृणांदृष्टिविशोधिनी ॥

अर्थ-छोटीहरड, बच, कूठ, पीपल, कालीमिरच, बहेडाकीमिंगी, शंखकी नाभि, मनसिल ये समान भागले, सबको गौके दूधसे बारीकपीसे, यह तिमिर

खुजली, नेत्रपटल, अर्बुद तीनवर्षका मोतियाबिंदु इन सबको एकहा महानम नष्ट करे, तथा नेत्रके मांसाधिकको रतौंधको यह चंद्रोदया वर्त्ती नष्टकरे है, तथा मनुष्योंकी दृष्टिको शोधनकरे ॥

नयनामृत।

रसेंद्रभुजगौतुल्यौतयोर्द्विगुणमंजनम् । सूततुर्यांशकर्पूरमंजनं नयनामृतम् ॥ तिमिरंपटलंकाचंशुक्रममार्जुनानिच । क्रमात्पथ्याशिनोहंतितथान्यानपिदृग्गदान् ॥

अर्थ-शुद्धपारा, शुद्धशीशा दोनों समान भागले और दोनोंसे दुगना सुरमा मिलावे तथा पारेकी चतुर्थांश भीमसेनी कपूर मिलावे तो यह नयनामृतांजन तिमिर पटल, कांच, शुक्र, अर्म, अर्जुन इन रोगोंको क्रमसे नष्ट करे तथा जो पथ्य सेवन करनेवाले हैं उनको अन्य जो नेत्रके रोग हैं उन सब को नष्ट करे ॥

कुसुमिकावर्त्ती।

तिलपुष्पाण्यशीतिस्युःषष्टिःपिप्पलितंडुलाः । जात्याःकुसुमपंचाशन्मरीचानिचषोडश ॥ सूक्ष्मपिष्टाजलैर्वर्तिःकृताकुसुमिकाभिधा । तिमिरार्जुनशुक्राणांनाशिनीमांसवृद्धिनुत् ॥ एतस्याश्चांजनेमात्राप्रोक्तासार्धहरेणुका ॥

अर्थ-तिलके फूल ८० पीपलके बीज ६० चमेलीके फूल ५० और काली मिरच १६ इन सबको जलमें पीसके बत्ती बनावे, तो यह कुसुमिकावर्त्ती तिमिर, अर्जुन शुक्र और मांसवृद्धिको नष्टकरे इसके अंजन करनेकी मात्रा (१॥) डेड मटरके प्रमाण है ॥

चंद्रोदयावर्दी।

शंखनाभिर्बिभीतस्यमज्जापथ्यामनःशिला । पिप्पलीमरिचंकुष्ठंवचांचेतिसमांशकम् ॥ छागक्षीरेणसंपिष्यवर्टींकुर्याद्यथोचिताम् । हरेणुमात्रांसंघृष्यजलेनांजनमाचरेत् ॥ तिमिरंमांसवृद्धिंचकाचंपटलमर्बुदम् । रात्र्यंधंवार्षिकंपुष्पंवटीचंद्रोदयाहरेत् ॥

अर्थ-शंखकी नाभि, बहेडेकी मिंगी, हरड, मनासिल, पीपल, मिरच, कूठ, और वच ये समान भागले सबको बकरीके दूधमें पीसके यथोचित गोलीबना, इसमेंसे १ मटरके अनुमान जलमें घिसके अंजन करे तो तिमिर, मांसवृद्धि, काच, पटल, अर्बुद, रतोंध और १ वर्षके फूलेको यह चंद्रोदयावर्त्ती दूरकरे ॥

चंद्रप्रभावर्त्ती ।

रजनोनिंबपत्राणिपिप्पलीमरिचानिच । विडंगंभद्रमुस्तंचसप्तमीत्वभयास्मृता ॥ अजामूत्रेणसंपिष्यछायायांशोषयेद्वटी । वारिणातिमिरंहंतिगोमूत्रेणतुपिष्टिकाम् ॥ मधुनापटलंहंतिनारीक्षीरेणपुष्पकम् । एषाचंद्रप्रभावर्तिःस्वयंरुद्रेणनिर्मिता ॥

अर्थ-हलदी, नींबके पत्ते, पीपल, कालीमिरच, वायविडंग, नागरमोथा, और छोटी हरड इन सबको समान भागले बकरीके मूत्रसे पीस गोली बनाय छायामें सुखाय लेवे, जलसे तिमिररोग, गोमूत्रसे नेत्रका पिष्टकरोग, सहसे पटलके रोग, स्त्रीके दूधसे फूलेको दुर करे, यह चंद्रप्रभावर्त्ती स्वयं शिवने कही है ॥

नयनाभिघात निदान ।

स्रवत्यश्रुचयन्नेत्रंवृत्तंलोहितराजिभिः ।
निमेषोन्मेषणाशक्तंसशल्यंतद्विनिर्दिशेत् ॥

अर्थ-जिसके नेत्रोंसे हर समय आंसू वहाकरे और लाल लाल गोल लकीर (रेखा) नेत्रोंमें हो तथा जिसके दुःखसे यह प्राणी नेत्रोंको खोल मूंद नसके उसको सशल्य नेत्र अर्थात् नेत्रमें किसी प्रकारकी चोट है ऐसा जाने ॥

सामान्य चिकित्सा ।

नेत्रेत्वभिहतेकुर्याच्छीतमाश्चोतनंहितम् ।
पुनर्नवामूलकल्कात्पिंडीलेपेकुचंदनम् ॥

अर्थ-जिसने नेत्रोंमें किसी प्रकारकी चोट लगीहो उसके शीतल आश्चोतन करना हितहै तथा पुनर्नवाकी जडके कल्कसे आश्चोतन करे और लेपमें लाल चंदन लेना चाहिये ॥

शावरादि सेक ।

शावरंमधुकंतुल्यंघृतभ्रष्टंसुचूर्णितम् ।
छागक्षीरोक्षितंसेकःपित्तरक्ताभिघातजित् ॥

अर्थ-पठानी लोध, मुलहटी, लीलाथोथा इनके चूर्णको घीमें भूनके बकरीके दूधमें मिलायके सेककरे तो पित्त रक्तजन्य चोट अच्छी होय ॥

प्रतिनिद्राचिकित्सा ।

क्षौद्राश्वलालासघृष्टैर्मरिचैर्नेत्रमंजयेत् ।

अतिनिद्राशमंयातितमःसूर्योदयादिव ॥

अर्थ-सहत घोडेकी लार में काली मिरचको घिस अंजन करे तो अत्यंत निद्राका आना दूर होय जैसा सूर्योदयसे अंधकार नष्ट होताहै ॥

जातीपत्रादि अंजन।

जातीपुष्पंप्रवालंचमरिचंकटुकांवचाम्।
सैंधवंबस्तमूत्रेणपिष्टंतंद्राघ्नमंजनम् ॥

अर्थ-चमेलीके फूल, मूंगा, मिरच काली कुटकी, वच और सैंधानिमक इनको बकरेके मूत्रमें पीसके अंजन करे तो तंद्रारोग दूरहोय ॥

नयनाभिघातचिकित्सा।

अंतस्त्रीस्तन्यसेकश्चरक्तमोक्षश्चशस्यते। दृष्टिप्रसादजननंविधिमाशुकुर्यात्स्निग्धैर्हिमैश्चमधुरैश्चयथाप्रयोगैः॥ स्वेदाग्निधूमभयशोकरुजादितापैरभ्याहतामपितथैवभिषक्चिकित्सेत् ॥

अर्थ-नेत्रोंमें किसी प्रकारकी चोट लगी होय तो स्त्रीके दूधकी धार नेत्रके भीतर डाले बिगडे हुए रुधिरको निकाले तथा दृष्टिको प्रसन्न करनेवाली विधि, तथा स्निग्ध, शीतल और मधुर (मीठे) प्रयोग करे इसी प्रकार स्वेदन, अग्नि, धूँआ, भय और शोक आदिसे जिसके नेत्र दूखते हो उसकोभी यही उक्त चिकित्सा वैद्य करे ॥

सूर्यार्चिरादि संतर्पण।

सूर्यार्चिराशांबरविद्युतादिविलोकनेनोपहतेक्षणस्य।
संतर्पणंस्निग्धहिमादिकार्यंसायंनिषेव्यस्त्रिफलाप्रयोगः॥

अर्थ-जिस प्राणीकी सूर्यकी किरण तथा दिशाओंमें और आकाशमें बिजली आदि तेजस्वी पदार्थोंके देखनेसे जिसकी दृष्टि नष्ट होगई हो उसके चिकने और शीतल आदि पदार्थोंसे तर्पण करे तथा सायंकालमें त्रिफलेका प्रयोग वैद्य अपनी युक्तिसे सेवन करावे तो अच्छा होय ॥

निशादि पूरण।

निशाब्दत्रिफलादार्वीसितामधुसमन्वितम्।
अभिघाताभिशूलघ्नंनारीक्षीरेणपूरणम् ॥

अर्थ-हलदी, नागरमोथा, त्रिफला, दारुहलदी, मिश्री, सहत इनमें स्त्रीका दूध मिलायके नेत्रोंको भरे अर्थात् तर्पण करे तो नेत्रोंमें जो चोट लगी है, तथा नेत्रशूलका होना दूर होय ॥

नेत्ररोगपर पथ्य।

शालितंडुलगोधूममुद्गसैंधवगोघृतम्।
गोपयश्चसिताक्षौद्रंपथ्यंनेत्रगदेस्मृतम्॥

अर्थ–शालीचावल, गेंहूँ, मूंग, सैंधानिमक, गौका घी और गौका दूध एवं खाँड और सहत ये नेत्ररोगवाले प्राणीको पथ्य कहे हैं अर्थात् इनका भोजन पान करना अच्छा है॥

अपथ्य।

सर्वशाकमचक्षुष्यंचक्षुष्यंशाकपंचकम्।
जीवंतीवास्तुमत्स्याक्षीमेघनादःपुनर्नवाः॥

अर्थ–संसारमें यावन्मात्र शाक (तर्कारी) है सब नेत्रोंको अहित है परंतु किसी किसी वैद्यकी संमतिसे पांच शाक नेत्रोंको हितकारी है, जैसे जीवंती (ठोडी) वथुआ, मछछी, चौंलाई और पुनर्नवा (सांठ) का साग॥

तथा।

माषारनालकटुतैलजलावगाहक्षुद्राक्षुरैश्चसुरतौर्निशिजागरैश्च। शाकाम्लमत्स्यदधिफाणितवेसवारैश्चक्षुःक्षयंव्रजतिसूर्यविलोकनाच्च॥ तांबूलमम्लंलवणंविदाहितीक्ष्णंकटूष्णंगुरुचान्नपानम्। नरोनसेवेतहिताभिलाषीसर्वेषुरोगेषुदृगाश्रयेषु॥

अर्थ–उडद, कांजी, कडवा तेल, जलमें धसके स्नान, कटेरी, सब मस्तक क्षौर कर्म, स्त्री संग, रात्रिमें जागना, सर्व प्रकारके साग, खटाई, मछली, दही, फाणित (रावका भेद) मसाला और सूर्यके सन्मुख देखनेसे नेत्रकी दृष्टि मारी जाती है। पानका खाना, खटाई, निमक, दाहकर्त्ता (राई आदि) पदार्थ, तीखे पदार्थ, चरपरे और भारी ऐसे अन्न और जलोंको जो नेत्ररोगी अपने हितकी इच्छा करनेवाले है कदापि सेवन न करे॥

दृष्टिरोगनामसंख्या।

दृष्ट्याश्रयाःषट्चषडेवरोगाःषड्लिंगनाशाहिभवंतितत्र।
वातेनपित्तेनकफेनसर्वैरक्तात्परिम्लाय्यभिधश्चषष्टः॥

अर्थ–नेत्रकी दृष्टिके आश्रित ६६ रोग हैं, तथा ६ लिंग नाश हैं, जैसे वातसे, पित्तसे, कफसे, सन्निपातसे, रुधिरके विकारसे और अम्ल पित्तसे लिंग नाश होता है॥

इति श्रीआयुर्वेदोद्धारे बृहन्निघण्टुरत्नाकरे नासारोगे पथ्यापथ्याधिकारः समाप्तः॥

शिरोरोग ।

मस्तकरोगनिदान ।

शिरोरोगाश्चजायंतेवातपित्तकफैस्त्रिभिः । सन्निपातेनरक्तेनक्ष
येणक्रुमिभिस्तथा ॥ सूर्यावर्तानंतवातार्धावभेदकशंखकैः ।
एकादशविधस्यास्यलक्षणानिप्रचक्षते ॥

अर्थ-मस्तकरोग, वात, पित्त, कफ, सन्निपात, रुधिर, क्षय और क्रुमिके होनेसे होता है तथा सूर्यावर्त, अनंतवात, अर्धावभेदक, शंखक इस प्रकार नेत्ररोग ११ प्रकारके हैं उनके लक्षणोंको कहते हैं ॥

निदान ।

धूमातपतुषारांबुक्रीडातिस्वप्नजागरैः । उत्सेधातिपुरोवातबा
ष्पनिग्रहरोदनैः ॥ अत्यंबुमद्यपानेनक्रुमिभिर्वेगधारणैः । उप
धावमृजाभ्यांगद्वेषाच्चप्रततेक्षणैः॥ असात्म्यगंधदुष्टान्नमाषाद्यै
श्चशिरोगतः । एकादशविधस्यास्यलक्षणानिप्रचक्षते ॥

अर्थ-धूम आतप, बर्फ, उदकमें क्रीडा करना, अतिनिद्रा, अतिजागरण, उत्सेध (कारण विना देह उंचा नीचा करने) से, वात और बाष्प इनका अवरोध करनेसे, बहुत रोदन करनेसे, उदक और मद्यका अति पान करनेसे, क्रिमि रोगसे, मूत्रादिकोंका निग्रह करनेसे शिरोरोग उत्पन्न होते हैं इस प्रकार ग्यारह प्रकारके शिरोरोगके लक्षण कहे हैं ॥

वातजशिरोरोग ।

यस्यानिमित्तंशिरसोरुजश्चभवंतितीव्रानिशिचातिमात्रम् ।
बंधोपतापैःप्रशमश्चयत्राशिरोभितापःससमीरणेन ॥

अर्थ-जिसका मस्तक अकस्मात् दूखे और रात्रिमें विशेष दूखे, बांधनेसे अथवा सेकनेसे शांति हो, उसको वातज शिरोरोग जानना चाहिये ॥

वातजशिरोरोगचिकित्सा ।

वातजातशिरोरोगेस्नेहस्वेदविमर्दनम् ।
पानाहारोपनाहांश्चकुर्याद्वातामयापहान् ॥

अर्थ-वातजन्य शिरके रोगमें स्नेहन, स्वेदन, मर्दन करे तथा यावन्मात्र

पीनेके पदार्थ, भोजनके पदार्थ और उपनाह आदि सब कर्म वातनाशकर्त्ता करने चाहिये ॥

कुष्ठादिलेप ।

कुष्ठमेरंडमूलंचनागरंतक्रपेषितम् ।
कटूष्णंचशिरःपीडांमात्रालेपनतोहरेत् ॥

अर्थ-कूठ, अंडकीजड, सोंठ, इनको समान भागले छाँछमें पीसे फिर थोडा गरम करके लेप करे तो वातजन्य मस्तकपीडा दूर होय ॥

श्वासकुठारनस्य ।

रसःश्वासकुठारोयस्तस्यनस्यंविशेषतः ।
शिरःशूलंहरत्येवविधेयोनात्रसंशयः ॥

अर्थ-श्वासकुठार रसकी नस्य देना इस वातके मस्तक रोग अत्यंत गुणदायक है ॥

कुष्ठादिलेप ।

कुष्ठमेरंडमूलंचलेपःकांजिकपेषितः ।
शिरोर्तिंवातजांहन्यात्पुष्पंवामुचकुंदजम् ॥

अर्थ-कूठ, अंडकीजड, इन दोनोंको काँजीमें बारीक पीसके लेप करे तो वातजन्य पीडा दूर होय । अथवा मुचकुंदके फूलोंको पीस लेप करे तो भी मस्तक पीडा दूर होय ॥

वातजाशिरोरोगेबस्ति ।

आशिरोव्याधितच्चर्मषोडशांगुलमुच्छ्रितम् । तेनवेष्टयशिरोध स्तान्माषकल्केनलेपयेत् ॥ निश्चलस्योपविष्टस्यतैलैःकोष्णैः प्रपूरयेत् । धारयेदारुजःशांतिर्यामंयामार्धमेवच ॥ शिरोबस्ति र्हरत्येषःशिरोरोगंमरुद्भवम् ।हनुमन्याक्षिकर्णानामर्दितंमूर्धकंप नम् ॥ विनाभोजनमेवैषःशिरोबस्तिःप्रयुज्यते । पंचाहंषडहं वापिसप्ताहंचैवमाचरेत् ॥

अर्थ-एक १६ अंगुल चौडा बहुत साफ करा हुआ मृगचर्म इतना बडालेवे कि, मस्तकके चारों तरफ आय जावे, उससे मस्तकको बाँधके नीचेके छिद्रोंको उडदकी पिट्ठीसे बंदकर देवे, फिर इस प्राणीको इस तरह बैठावे कि, सीधा और सतर बैठ जावे गरदन उठी रहे तथा हले चले नहीं, तब

तिलके सुहाते २ गरम तेलको मस्तकमें भर देवे इसको जब तक मस्तक पीडा दूर न हो तब तक धारण करे या १ प्रहर या आधे प्रहर जैसा रोगका तारतम्य हो उसके अनुसार धारण करनी चाहिये यह शिरोबस्ति सब शिरके रोग जो बादीसे प्रगट हुए हैं दूर करे, तथा ठोडी गरदन, नेत्र, कान, लकवा मस्तकका कांपना, इनको दूर करे है, इस क्रियाको भोजन करनेके प्रथमही करना चाहिये तथा पांचदिन छःदिन या सातदिन पर्यंत शिरोबस्ति करनी चाहिये ॥

पित्तजशिरोरोग ।

यस्योष्णमंगारचितंतथैवभवेच्छिरोदह्यतिवाऽक्षिनासा ।
शीतेनरात्रौचभवेच्छ्रमश्चशिरोभितापःसतुपित्तकोपात् ॥

अर्थ–जिसका मस्तक अंगारसे तपायेके समान गरम होवे और नाकमें दाह होय, शीतल पदार्थसे किंवा रात्रिमें शान्ति होय, उस मस्तकशूलको पित्तकोपका जानना ॥

पित्तजन्य शिररोगकी चिकित्सा ।

पित्तात्मकेशिरोरोगेस्निग्धंसम्यक्विरेचनम् ।
मृद्वीकात्रिफलेक्षूणांरसैःक्षीरैर्घृतैरपि ॥

अर्थ–पित्तजन्य मस्तक रोगमें चिकने पदार्थोंसे उत्तम दस्त करावे तथा मुनक्का दाख, त्रिफला, ईखका रस, दूध और घृत ये पदार्थ खानेको देवे ॥

शर्करादि सेचन ।

शर्कराक्षीरसलिलैःशिरश्चपरिषेचयेत् ।
सर्पिषःशतधौतस्यलेपःसाधारणोहितः ॥

अर्थ–खांड, दूध और पानीको एक करके मस्तकपर धार डालनी चाहिये अथवा सौबारका धुला हुआ घीका लेप करे तो पित्तजन्य पीडा दूर होय ॥

कुमुदादि उपशम ।

कुमुदोत्पलपद्मानांशीतानांचंदनांबुभिः ।
स्पर्शाःसुखाश्चपवनाःसेव्यादाहार्तिशांतये ॥

अर्थ–कुमुद (कमोदनी) लाल कमल और शीतल कमल, तथा चंदन इनको शीतल जलमें मिलायके मस्तकपर डाले, तथा शीतल स्पर्श और सुखकारी पवन दाहके नष्ट करनेको सेवन करना चाहिये ॥

चंदनादि लेप।

चंदनोशीरयष्ट्याह्वबलाव्याघ्रनखोत्पलैः।
क्षीरपिष्टैःप्रदेहःस्यात्सुतैर्वापरिषेचनम्॥

अर्थ—चंदन, खस, मुलहटी, खिरेंटी, नखी, कमल, इनको दूधमें पीसके स्वेदन करै अथवा नास देवे या मस्तकपर डाले तो पित्तजन्य मस्तक पीडा दूर होय॥

यष्ट्यादि घृत।

यष्ट्याह्वंचंदनानंताक्षीरसिद्धंहितंघृतम्।
नावनंशर्कराद्राक्षामधुकैर्वापिपित्तजे॥

अर्थ—मुलहटी, चंदन, धमासा इनको दूधमें मिलायके फिर घृत डालके सिद्ध करे इस घृतकी नास देय। अथवा खांड, दाख और मुलहटी जलमें पीसके नाश देनेसे पीडा दूर होय॥

धात्र्यादि लेप।

धात्रीकशेरुह्रीबेरपद्मपत्रकचंदनैः। दूर्वोशीरनलानांचमूलैः
कुर्यात्प्रलेपनम्। शिरोर्तिंपित्तजांहन्याद्रक्तपित्तरुजंतथा॥

अर्थ—आमले, कसेरू, सुगंधवाला, कमल गट्टा, पद्माख, चंदन, दूब, खस, और नरसल इनकी जडको जलमें पीसके लेप करे तो पित्तजन्य पीडा और रक्तपित्तके विकार दूर हो॥

कफजन्य शिररोग।

शिरोभवेद्यस्यकफोपदिग्धंगुरुप्रतिस्तब्धमथोहिमंच।
शूनाक्षिकूटंवदनंचयस्यशिरोभितापःसकफप्रकोपात्॥

अर्थ—जिसका मस्तक भीतरसे कफ करके लिप्त (लिहसासा) होवे, भारी बँधासा और शीतल होवे, तथा नेत्र सुजाकर मुखको सुजाय देवे, इस मस्तकरोगको कफके कोपका जानना चाहिये। (शूनाक्षिकूटं) इस जगह कोई (शूलाक्षिकूटं) ऐसा पाठ कहते हैं इसका अर्थ यह है कि, मस्तकमें मंदशूल होय शेषं सुगमम्॥

चिकित्सा।

श्लैष्मिकेलंघनंरूक्षंलेपस्वेदादिकारयेत्॥

अर्थ—कफजन्य मस्तक रोगमें लंघन और रूखे पदार्थोंका लेप तथा स्वेदादिक कर्म करने चाहिये॥

हरेणु आदि लेप।

हरेणुनतशैलेयमुस्तैलागरुदारुभिः।
मांसीरास्नोरुबुकैश्चकोष्णोलेपःकफार्त्तिनुत् ॥

अर्थ-मटर, छड, छार, छबीलो, नागरमोथा, इलायची, देवदारु, जटामांसी, रास्ना, अंडकी जड इनको जलमें पीस थोडी गरम कर लेप करे तो कफकी पीडा दूर होय ॥

प्रपुंनाटादि लेप।

शुंठीकुष्टंप्रपुन्नाटदेवकाष्ठैःसमाहिषैः।
मूत्रपिष्टैःसुखोष्णैश्चलेपःश्लेष्मशिरोर्त्तिनुत् ॥

अर्थ-सोंठ, कूठ, पमाड, देवदारु और भैंसका मूत्र सबको पीसकै कुछ २ गरम कर मस्तकमें लेप करे तो कफजन्य मस्तक पीडा दूर होय ॥

सन्निपातिक शिरोरोग।

शिरोभितापेत्रितयप्रवृत्तेसर्वाणिलिंगानिसमुद्भवंति ॥

अर्थ-त्रिदोषसे उत्पन्न मस्तक रोगमें तीनों दोषोंके सब लक्षण होते हैं ॥

चिकित्सा।

सन्निपातसमुत्थेत्रघृततैलंचबस्तयः।
धूमनस्यंशिरोरेकोलेपस्वेदाद्यमाचरेत् ॥

अर्थ-सान्निपातजन्य मस्तकरोगमें घृत, तेल बस्तिकर्म, धूमपान, नस्य और मस्तकजुलाब, लेप और स्वेदादिक कर्म करने चाहिये ॥

स्वेदन।

स्वेदनंघृतगोधूमैर्निर्गुंडयाक्काथितेनवा।
सन्निपातोद्भवांहंतिपीडांहिहितपाचनैः ॥

अर्थ-घी और गेंहूं, इनसे अथवा निर्गुंडीके क्काथसे मस्तकको स्वेदन करे तथा जो हितकारी पदार्थ संनिपात पीडाको नष्ट करे है ॥

घृतपान।

पुराणसर्पिषःपानंविशेषेणादिशंतिहि ॥

अर्थ-इस संतिपातजन्य मस्तकपीडामें पुराने घृतको पीना बहुत गुण दिखाता है ॥

स्मरफलादिप्रधमन ।

स्मरफलतिलपर्णीबीजसंयुक्तभूतांकुशदलवटबीजत्वग्रजोर्धांशतुल्यम्। प्रधमनविधिनातद्दत्तमात्रंशिरोरुक्प्रलपनकफतंद्रासन्निपातंनिहन्यात् ॥

अर्थ-मैनफल, तिलवनके बीजमें कुशके पत्ते वटके बीज, तजका चूर्ण आधा २ भाग मिलायके प्रधमननस्य देवे तो मस्तकपीडा प्रलाप, कफ, तंद्रा और सन्निपातको नष्ट करे ॥

रक्तजशिरोरोग ।

रक्तात्मकःपित्तसमानलिंगःस्पर्शासहत्वंशिरसोभवेच्च ॥

अर्थ-रक्तजन्य मस्तक रोगमें पित्तकृत मस्तक रोगके सब लक्षण होते हैं, तथा मस्तकका स्पर्श सहा नहीं जाय, यह विशेष होता है ॥

चिकित्सा ।

रक्तजेपित्तवत्सर्वंभोजनालेपसेचनम् ।
शीतोष्णयोश्चविन्यासोविशेषाद्रक्तमोक्षणम् ॥

अर्थ-रक्तके मस्तकरोगमें सब कर्म पित्तरोगके समान करे तथा भोजन लेप और सेचन ये सबभी पित्तजन्य मस्तकपीडाके समान उष्ण और गरम मिलै कर्म तथा इस रक्तजन्यमें विशेष करके मस्तकमेंसे रुधिर निकालना चाहिये ॥

घृत तथा जलधारण ।

सर्पिषःशतधौतस्यशिरसाधारणंहितम् ।
निमज्जनंचशिरसःशीतलेशस्यतेंभसि ॥

अर्थ-रुधिरजन्य मस्तकरोगवालेको सौबारका धुला हुआ घृत मस्तकपर रखे अथवा शीतल जलमें गोता लगावे तो मस्तक पीडा दूर होय ॥

कृष्णादि लेप ।

कृष्णांबुशुंठीमधुकंशताह्वोत्पलवालकैः ।
जलपिष्टैःशिरोलेपःसद्यःशूलनिवारणः ॥

अर्थ-पीपल, सुगंधवाला, सोंठ, मुलहटी, सतावर, कमलगट्टा, खस, इनको जलमें पीसके लेप करे तो रुधिरकी पीडा तत्काल दूर होय ॥

नागरादि नस्य।

नागरकल्कविमिश्रंक्षीरंनस्येनयोजितंपुंसाम्। नानादोषोद्भूतांशिरोरुजंहंतितीव्रांच॥ शिरोर्तिनाशयत्याशुपुष्पंवामुचुकुंदजम्॥

अर्थ–सोंठके कल्कको दूधमें मिलायके नस्य देवे तो इस प्राणीके अनेक अनेक दोषजन्य तीव्रमस्तकपीडा नष्ट होय। अथवा मुचकुंदके फूलकी नास और लेप मस्तकपीडाको दूर करे॥

कमलादि लेप।

कमलंसुरसामूलंलिप्तंहंतिशिरोरुजम्॥

अर्थ–कमल और तुलसीकी जडका लेप मस्तक पीडाको दूर करे॥

मस्तकशूलमें नासिकाद्वारा रुधिर गिरे उसका यत्न।

शिरःशूलेतुसंजातेनासारक्तंस्रवेद्यदि॥ दाडिमीपुष्पदुर्वोत्थरसंकर्पूरमाक्षिकम्। क्षौद्रंदुग्धंशिरोमर्द्येनस्येपानेसितापयः॥

अर्थ–मस्तकशूल हानेपर यदि नाकसे रुधिर गिर करे तो अनारके फूल, द्रव, इन दोनोंके रसमें कपूर और सहत दूध डालके नस्य देय अथवा मस्तकमें मालिश करे तथा नस्य और पीनेमें मिश्री और दूध देवे॥

उदुंबर फलादि।

उदुंबरफलंपक्कंघृतपक्कंसितायुतम्। एलामरिचसंयुक्तंभुक्तंस्याद्रक्तशांतये। कंटकारीफलरसंलिप्त्वाहंतिशिरोरुजम्॥

अर्थ–गूलरके पके फलको घृतमें भूनके मिश्री, इलायची और काली मिरचका चूर्ण मिलायके सेवन करे तो मस्तकसे रुधिरका गिरना बंद होय अथवा कटेरीके फलके रसका मस्तकमें लेप करे तो शिरपीडा दूर होय॥

क्षयज शिरोरोग।

असृग्वसाश्लेष्मसमीरणानांशिरोगतानामिहसंक्षयेण। क्षवप्रवृत्तिःशिरसोऽभितापःकष्टोभवेदुग्ररुजोतिमात्रम्। संस्वेदनच्छर्दनधूमनस्यैरसृग्विमोक्षैश्चविवृद्धिमेति॥

अर्थ–मस्तकके रुधिर वसा कफ और वायु इनके क्षय होनेसे अत्यन्त भयंकर मस्तकशूल होता है, छींक बहुत आवें, मस्तक गरम होवे तथा उसमें

स्वेदन वमन धूमपान नस्य और रुधिर निकलना ये उपद्रव करनेसे यह मस्तकशूल होताहै इसको क्षयजमस्तकशूल कहते हैं ॥

चिकित्सा।

क्षयजेक्षयनाशायकर्तव्योबृंहणोविधिः।
पानेनस्येचसर्पिःस्याद्वातघ्नैर्मधुरैःशृतम् ॥

अर्थ--क्षयजन्य मस्तक रुधिर आदिकी क्षीणता नष्टकरनेको बृंहण विधि अर्थात् जिन औषधोंसे मस्तकमें रुधिर आदिबढे वो कर्म करे तथा पीने और नस्यमें वातनाशक मधुर क्वाथोंसे सिद्धकरा हुआ घृत देनाचाहिये ॥

सामान्य यत्न।

योजयेत्सगुडंसर्पिर्घृतपूरांश्चभक्षयेत्।
नावनंक्षीरसर्पिर्भ्यांपानंचक्षीरसर्पिषोः ॥

अर्थ--क्षयजन्य मस्तकरोगमें गुड और घृत मिलायके सेवनकरे तथा घृतपूर (घेवर) भक्षण करे, तथा दूध और घी मिलायके नस्य देवे तथा दूध और घी मिलायके पीना चाहिये ॥

स्वेद।

क्षीरपिष्टैस्तिलैःस्वेदोजीवनीयैश्चशस्यते ॥

अर्थ--जीवनीयगणकी ओषधोंमें तिल मिलायके दूधमें पीसडाले फिर इसकी पोटली बनायके अग्निसे स्वेदनकरे ॥

निंबादि गुग्गुल।

निंबत्वक्त्रिफलावासाचूर्णकटुपटोलिका। तोयैश्चतुर्गुणेक्काथे पादाशंवस्त्रगालितम् ॥ आदायगुग्गुलुंतुल्यंक्षिप्त्वातस्मिन्पुनःपचेत्। पिंडितंभक्षयेत्कर्षंस्निग्धमुष्णंचभोजयेत्। वातश्लेष्मोत्थितांपीडांदुःसहांचशिरोरुजम् ॥

अर्थ--नीमकी छाल, हरड, बहेडा, आँवला, अडुसा, कडुवे पटोल पत्र समान भाग ले ये चौगुने जलमें डालकै क्काथ करे जब चतुर्थांश रहे तब उतारकै कपडेमें छान लेय फिर सब औषधोंके समान गूगल शुद्ध डालके पचावे, जब गाढी हो जाय तब कूटकै छः छः मासेकी गोली बनाय लेवे, दो गोली नित्य भक्षण करे ऊपरसे चिकना और गरम पदार्थ भोजन करे, यह वातकफजन्य मस्तकपीडाको दूर करे ॥

शिग्रुपत्रादि लेप ।

शिग्रुपत्ररसैर्मर्द्यमरीचंमूर्धशूलजित् ॥

अर्थ-काली मिरचोंको सहिजनेके पत्तोंके रसमें खरल कर लगानेसे मस्तकपीडा दूर होय ॥

पिप्पल्यादि नस्य ।

पिप्पलीसैंधवंपाच्यंतैलेनाज्येननस्यतः ।
शिरःशूलंनिहंत्याशुतमःसूर्योदयोयथा ।

अर्थ-पीपर और सैंधानिमक, इनको घीमें अथवा तेलमें पकावे इसको घृत या तेलकी नास देनेसे मस्तक शूल इसप्रकार नष्ट होय जैसे सूर्योदयसे अंधकार नष्ट होय ॥

कुष्ठादिलेप ।

कुष्ठमेरंडमूलंवाचक्रमर्दकमूलकम् ।
आरनालेनपिष्टंतल्लेपोहंतिशिरोरुजम् ॥

अर्थ-कूठ, अंडकी जड, पमारकी जड इनको कांजीमें पीस लेप करे तो मस्तकपीडा दूर होय ॥

कुंकुमादिघृत ।

कुंकुमंचसितातुल्यंद्वाभ्यांतुल्यंघृतंभवेत् । घृताच्चतुर्गुणंतोयंपाच्यंस्याद्घृतशेषितम् । नस्यंतुशंखशिरसःश्चक्षुःशूलं चनाशयेत् ॥

अर्थ-केशर और खांड समान भागले इन दोनोंके बराबर घी लेवे तथा घृतसे चौगुना जल डालके सिद्ध करे जब घृतमात्र शेष रहे तब उतारके छान लेय, इसकी नस्य देनेसे मस्तक कनपटी और नेत्रपीडा दूर होय ॥

कृमिजन्यशिरोरोग ।

निस्तुद्यतेयस्यशिरोऽतिमात्रंसंभक्ष्यमाणंस्फुरतीवचांतः ।
घ्राणाच्चगच्छेद्रुधिरंसपूयंशिरोभितापःकृमिभिःसघोरः ॥

अर्थ-जिसके मस्तकमें टांकीके तोडने कीसी पीडा होवे, तथा कृमि भीतरसे मस्तक को खाकर पोलाकर देवे, तथा मस्तक भीतरसे फटके तथा नाकमें रुधिर राध और कीड पडे यह कृमिजरोग बडा भयंकर है ॥

कृमिजन्यशिररोगकी चिकित्सा।

कृमिजेतुशिरोरोगेव्योषनक्ताह्वशिग्रुजैः।
अजामूत्रेणसंपिष्टैर्नस्यंकृमिहरंपरम्॥

अर्थ--कृमिजन्य मस्तकरोगमें सोंठ, मिरच, पीपल, कंजा और सहँजनेके बीज इनको समान भागले बकरीके मूत्रमें पीस नस्य देय तो मस्तककी कृमि दूर हो॥

विडंगादि तैल।

विडंगंस्वर्जिकादंतीहिंगुगोमूत्रसंयुतम्।
विपक्वंसार्षपंतैलंकृमिघ्नंनस्यतःस्मृतम्॥

अर्थ--वायविडंग, सज्जीखार, दंती, हींग और गोमूत्रमें सरसोंका तेल डालके सिद्ध करे इसकी नस्य देनेसे मस्तककी कृमि नष्ट होय॥

सूर्यावर्त्तशिरोरोग।

सूर्योदयंयाप्रतिमंदमंदमक्षिभ्रुवंरुक्समुपैतिगाढा। विवर्द्धते चांशुमतासहैवसूर्योपवृत्तौविनिवर्ततेच॥ शीतेनशांतिलभते कदाचिदुष्णेनजंतुःसुखमाप्नुयाद्वा। सर्वात्मकंकष्टतरंविकारं सूर्यापवृत्तंतमुदाहरंति॥

अर्थ–सूर्यके उदय होनेसे धीरे २ मस्तक दूखनेका आरंभ होय और जैसे जैसे सूर्य बढे तैसे२ वह शूल नेत्र और भ्रुकुटी (भौंह) इनमें दो प्रहर दिन चढे तक बढता जाय और सूर्यके साथ बढकर फिर जैसे २ सूर्य अस्त होय तैसे २ पीडा मन्द होती जाय, शीतल और गरम उपचार करनेसे मनुष्य-को सुख होय इस सन्निपातक विकारोंको सूर्यावर्त्त कहते हैं॥

सूर्यावर्त्तरोगकी चिकित्सा।

सूर्यावर्तप्रशमनंपाययेत्सगुडंहविः।
तिलदुग्धप्रलेपेनसूर्यावर्तंजयेत्र्यहात्॥

अर्थ–सूर्यावर्त्त रोगमें गुड और घी मिलायके पीवे तो सूर्यावर्त्त रोग दूर होय। अथवा तिलोंको दूधमें बारीक पीस लेप करे तो ३ दिनमें सूर्यावर्त्त रोग दूर होय॥

तथा।

सूर्यावर्तेशिरावेधोनावनंक्षीरसर्पिषोः।
हितःक्षीरघृताभ्यासस्ताभ्यामेवविरेचनम्॥

अर्थ–सूर्यावर्त्त रोगमें फस्त खोलना, दूध और घी मिलायके नस्य देवे तथा दूध और घृतका पीना तथा दस्त कराना सूर्यावर्त्त रोगीको हितकारीहै॥

दशमूल्यादि नस्य।

दशमूलीकषायंतुसर्पिःसैंधवसंयुतम्।
नस्यमर्धावभेदघ्नंसूर्यावर्तशिरोर्तिनुत्॥

अर्थ–दशमूलके काथमें घी और सैंधानिमक डालके नस्य देना आधासीसी, सूर्यावर्त्त आदि मस्तकपीडा दूर होय।

सारिवादिलेप।

सारिवोत्पलकुष्टानिमधुकंचाम्लपेषितम्।
सर्पिस्तैलयुतोलेपःसूर्यावर्तार्धभेदयोः॥

अर्थ–सारिवा, कमलगट्टा, कूठ और मुलहटीको समान भागले नींबूके रसमें पीस घी और तेलमें मिलाय लेप करे तो सूर्यावर्त और आधासीसी दूर होय॥

भृंगराजादिनस्य।

भृंगराजरसश्छागक्षीरतुल्योर्कतापितः।
सूर्यावर्तंनिहंत्याशुनस्येनैवप्रयोगराट्॥

अर्थ–भांगरेका रस और बकरीका दूध दोनोंको समान भागले धूपमें गरम कर नस्य देवे तो यह प्रयोगराज सूर्यावर्त्तको नष्ट करे॥

सूंघनेकी पोटली तथा उपनाह।

शिरीषस्यफलैर्मूलैरवपीडंप्रयोजयेत्। अवपीडोहितोवास्या द्वचापिप्पलिभिःकृतः॥ जांगलानिचमांसानिकारयेदुपनाह नम्। तेनास्यशाम्यतेव्याधिःसूर्यावर्तःसुदारुणः॥

अर्थ–सिरसके फल और जडको पीस अवपीडनस्य देवे अथवा वच और पीपलकी अवपीडनस्य देय। जंगली जीवोंके मांसके रससे उपनाहन (वफारा) देवे तो इस प्राणीका दारुण सूर्यावर्त्त रोग दूर हो॥

सूर्यावर्त्तरस।

मृतसूताभ्रकंतीक्ष्णंमुंडंताम्रंमृतंसमम्। स्नुहिक्षीरेदिनंमर्द्यं पिंडितंमाषमात्रकम्। सप्ताहात्सूर्यवर्तादीञ्छिरोरोगान्निवारयेत्।

अर्थ–पारदभस्म, अभ्रकभस्म तीक्ष्णलोह, मुंडलोह और तामेकी भस्म

समान भाग लेवे, इनको थूहरके दूधमें १ दिन पीस उडदके समान गोली बनावे, सात दिन इस सूर्यावर्त्त रसका सेवन करनेसे सूर्यावर्त्तादि मस्तकके सब रोग नष्ट होय ॥

अनंतवात ।

दोषास्तुदुष्टास्त्रयएवमन्यांसंपीड्यगाढंसरुजंसुतीव्राम् । कुर्वतिसाक्षिभ्रुविशंखदेशेस्थितिंकरोत्याशुविशेषतस्तु ॥ गंडस्य पार्श्वेचकरोतिकंपंहनुग्रहंलोचनजांश्चरोगान् । अनंतवातंतमुदाहरंतिदोषत्रयोत्थंशिरसोविकारम् ॥

अर्थ–तीनों दोष (वात, पित्त, कफ) दुष्ट होकर मन्या नाडीको पीडित कर नेत्र, भौहं, कनपटी, इनमें घोर पीडा करें तथा गंडस्थल और पसवाडेमें पीडा कंप होय, ठोडी जकर जाय, नेत्र रोग होय, इस त्रिदोषजन्य मस्तक रोगको अनंतवात कहते हैं । सुश्रुतने अनंतवात रोगको छोडकर मस्तक रोग १० ही कहे हैं ॥

शिरोरोगचिकित्सा ।

अनंतवातेकर्तव्यःसूर्यावर्तहितोविधिः ।
शिराव्यधश्चकर्तव्योनंतवातप्रशांतये ॥

अर्थ–अनंतवात रोगमें सूर्यावर्त्तमें जो औषध कही है सो करे, तथा अनंतवातके दूर करनेको मस्तकमेंसे रुधिर निकलवाना चाहिये ॥

अन्न ।

मधुमस्तुकसंयावघृतपूरैर्विशेषतः ।
आहारश्चप्रदातव्योवातपित्तविनाशनः ॥

अर्थ--मुलहटी, छाछ, सेमई (याथूली), घेवर ये घृतप्लुत पदार्थ भोजन करावे तो, बढी हुई वादी और पित्तसे जो अनंतवातका रोग है सो दूर हो॥

अर्धावभेदक ।

रूक्षाशनात्यध्यशनप्राग्वातावश्यमैथुनैः । वेगसंधारणायासव्यायामैःकुपितोऽनिलः ॥ केवलःसकफोवार्द्धंगृहीत्वाशिरसोबली । मन्याभ्रुशंखकर्णाक्षिललाटेर्धेतिवेदनाम् ॥ शस्त्रारणिनिभांकुर्यात्तीव्रांसोऽर्धावभेदकः । नयनंवाथवाश्रोत्रमतिवृद्धोविनाशयेत् ॥

अर्थ-रूखे अन्नसे, अत्यन्त भोजन, अध्यशन (भोजनके ऊपर भोजन) पूर्व दिशाकी पवन सेवन करनेसे, बर्फसे, मैथुनसे, मलमूत्रादिका वेग धारण करनेसे, परिश्रम और दंड कसरत करनेसे, इन कारणोंसे कुपित भई जो केवल वायु अथवा कफयुक्त वायु सो आधे मस्तकको ग्रहण कर मन्यानाडी, भ्रुकुटी, कनपटी, कान, नेत्र, ललाट, ये सब एक ओरसे आधें दूखें, कुल्हाडीसे घाव करनेकीसी अथवा अरणी (आंच निकालनेके काष्ठके) मथनेकीसी पीडा होय उसको अर्धावभेदक ' आधासीसी ' कहते हैं यह रोग जब बहुत बढ जाता है तब एक ओरके कानसे बहरापन हो जाता है, अथवा एक ओरकी आंख मारी जाती है जिस ओरकी पीडा होय उधर ये उपद्रव होते हैं। सुश्रुतने इस रोगको त्रिदोषज कहा है॥

शुंठ्यादि नस्य।

शुंठ्यानस्यमजाक्षीरेकृतंतद्धिशिरोर्तिनुत्॥

अर्थ-बकरीके दूधमें सोंठका कल्क मिलाय नस्य देवे तो आधासीसी दूर होय॥

कुंकुमघृत।

कुंकुमंघृतसंयुक्तंनस्यार्धस्यशिरोव्यथाम्।
नाशयेत्तत्क्षणादेवहितमेतच्छिरोरुजि॥

अर्थ-केशरको घीमें औंटायके नस्य देनेसे आधासीसी तत्क्षण दूर होय, यह सर्व मस्तक रोगोंको हितकर है॥

शिरोरोगचिकित्सा।

एषएवविधिःकार्यःकृत्स्नश्चार्धावभेदके। अर्धावभेदकेपूर्वंस्ने
हस्वेदौहिभेषजम्।विरेकःकायशुद्धिश्चधूपःस्निग्धोष्णभोजनम्॥

अर्थ-यह विधि समग्र आधासीसीमें करे, परंतु प्रथम स्नेहन और स्वेदन करनाही हित है, तथा दस्तोंका कराना, देहका शोधन, धूप और चिकने तथा गरम पदार्थ भोजन करना हित है॥

गांधार्यादि नस्य।

गांधारीचजटामांसीघृतेनसहपाचयेत्।
तदाज्यंनस्यमात्रेणनिहंत्यर्धशिरोरुजम्॥

१ स्यादुत्तमांगं रुजतेर्द्धमात्रं संतोदभेदभ्रममोहशूलैः। पक्षाद्दशाहादथ वाप्यकस्मात्स्यादर्द्धभेदे त्रितया व्यवस्येत्॥

अर्थ–जवासा और जटामांसी इनको घृतमें पचायके इसकी नस्य देय तो आधासीसी अवश्य नष्ट होय ॥

तुवर्यादिनस्य।

अर्धावभेदेतुवरीदलोद्भवंरसंचदूर्वारसमिश्रितंचानस्येनयुक्त्वा
पुरुषस्तुबुद्धिमाञ्छिरोरुजंनाशयतिस्मतत्क्षणम् ॥

अर्थ–आधासीसीके रोगमें अरहरके पत्तोंके रसमें दूधका रस मिलाय नास देवे तो तत्काल आधासीसीका रोग दूर होय ॥

विडंगादिनस्य।

विडंगानितिलान्कृष्णान्समान्पिष्ट्वाविलेपयेत्।
नस्यंचाथाचरेत्तस्मादर्धभेदंव्यपोहति ॥

अर्थ–वायविडंग और काले तिल समान भाग ले पीसे इसका लेप करनेसे तथा नास लेनेसे आधाशीशी दूर होय ॥

गिरिकर्ण्यादि नस्य।

गिरिकर्णिफलंमूलंसजलंनस्यमाचरेत्।
मूलंवाबंधयेत्कर्णेनिहंत्यर्धशिरोरुजम् ॥

अर्थ–कोयलके फल और जडको जलमें पीस नस्य लेवे। अथवा कोयलकी जडको कानमें बांधे तो आधाशीशी दूर होय ॥

मरीच्यादि लेप।

मरीचंभृंगजैर्द्रावैर्मरीचंशालितंदुलैः।
अर्धशीर्षव्यथांहंतिलेपोवाशुंठिवारिणा ॥

अर्थ–कालीमिरच और भांगरेका रस अथवा काली मिरच और प्राचीन बारीक चावलको बारीक पीस लेप करे। अथवा सोंठके जलका मस्तकमें लेप करै तो आधासीसी दूर होय ॥

दुग्धादि पान।

पिबेत्सशर्करंक्षीरंनीरंवानारिकेलजम्।
सुशीतंवापिपानीयंसर्पिर्वानस्यतस्तथा ॥

अर्थ–औंटे हुए दूधमें मिश्री मिलायके पीवे। अथवा मिश्री मिला नारियलका जल पीवे, अथवा शीतल जल पीवे, अथया घीकी नास लेवे तो आधासीसी दूर होय ॥

सारिवादि लेप।

सारिवाकुष्ठमधुकवचाकृष्णोत्पलैस्तथा ।
लेपःसकांजिकःस्नेहःसूर्यावर्तार्धभेदयोः ॥

अर्थ–सारिवा, कूठ, मुलहटी, वच, काला कमल, इनको कांजीमें पीस घृतमें मिलाय लेप करे तो आधासीसी और सूर्यावर्त्त रोग दूर होय ॥

दुग्धमर्दनादि नस्य।

सितोपलायुतंघृष्टंमदनंगोपयोन्वितम् ।
नस्यतोनुदितेसूर्येनिहंत्येवार्धभेदकम् ॥

अर्थ–मिश्री और मैनफलको गौके दूधमें घिस सूर्य उदय होनेके प्रथम नास देवे, तो अवश्य आधासीसी दूर होय ॥

शशाका रस।

शशमुंडरसंपीत्वामरिचैरवचूर्णितम् । भोजनादौतुसप्ताहात्सू
र्यावर्तार्धभेदकौ। हंतिसर्वात्मकौशीघ्रंदुःखदौभृशदारुणौ ॥

अर्थ–ससाके मूंडका मांसरसमें काली मिरचका चूर्ण डालके भोजनके प्रथम ७ दिन नित्य पीवें तो अत्यंत दुःखदाई सर्वदोषजन्य सूर्यावर्त्त और आधासीसी शीघ्र दूर होय ॥

गुडादि नस्य।

गुडंकरंजबीजंचनस्यमुष्णजलेहितम् ।

अर्थ–गुड और कंजाके बीज दोनोंको जलमें पीसके नस्य देना हितकारी है, अर्थात् सूर्यावर्त्त और आधासीसी दूर होय ॥

बृहज्जीवक तैल।

जीवकर्षभकौवापिद्राक्षाचमधुकंबला।नीलोत्पलंचंदनंचविदा
रीशर्करातथा॥ तैलप्रस्थंपचेदेभिःशनैःपयसिषड्गुणे। जां
गलस्यतुमांसस्यतुलार्धस्वरसेनतु॥ सिद्धमेतद्भवेन्नस्यंतैलम
र्धावभेदकम्। बाधिर्यकर्णशूलंचतिमिरंगलगंडिकाम्॥ वाति
कंपैत्तिकंचैवशीर्षरोगंनियच्छति। दंतचालंशिरश्चालंबृहज्जी
वंनियच्छति॥

अर्थ–जीवक, ऋषभक, दाख, मुलहटी, खिरेटी, नीलकमल, चंदन, विदारीकंद, खांड ये प्रत्येक एक एक तोले लेय, मीठा तेल १ सेर, जल ६ सेर तथा

जंगली जीवोंका मांसरस २०० तोले, सबको एकत्रकर तेल सिद्धकरे इसकी नस्य आधासीसी, बहरापना, कानका दर्द, तिमिर, गलगंड, तथा वातपित्तजन्य मस्तकके रोग, दांतोंका हिलना, मस्तकका कांपना इनको यह बृहज्जीवक तैल दूर करे ॥

रास्नादि क्वाथ ।

रास्नाविश्वविडंगानिरुबूकंत्रिफलातथा । दशमूलीपृथक्छ्या माक्काथोवातामयापहः ॥ अर्धावभेदकेप्याढचेचार्दितेवातखंजके । नेत्ररोगेशिरःशूलेज्वरापस्मारनाशनः ॥

अर्थ--रास्ना, सोंठ, वायविडंग, अंडकी जड, त्रिफला, दशमूलकी दश औषध और पीपल इनका क्वाथ वादीके रोगको दूर करे. आधासीसी, लकवा, वातखंज, नेत्ररोग, शिरकी पीडा, ज्वर और मृगीरोग ये सब दूर हों ॥

शंखक शिरोरोग ।

पित्तरक्तानिलादुष्टाःशंखदेशेविमूर्च्छिताः । तीव्ररुग्दाहरागंहि शोथंकुर्वंतिदारुणम् ॥ सशिरोविषवद्वेगीनिरुध्याशुगलंतथा । त्रिरात्राज्जीवितंहंतिशंखकोनामनामतः ॥ त्र्यहाज्जीवतिभैषज्यं प्रत्याख्यायास्यकारयेत् ॥

अर्थ--दुष्ट भये जो पित्त रक्त और वायु सो (इस जगह कफकोभी दुष्ट हुआ जानना यह सुश्रुतनें कहा है) विशेष बढकर नेत्रोंमें भयंकर सूजन उत्पन्न करे और इसमें घोर पीडा होय, घोर दाह होय, तथा नेत्र लाल बहुत हों और यह विषके वेगके समान बढकर गलेमें जाकर गलेको रोक दे, इस शंखक रोगसे रोगीके तीन दिनमें प्राणोंका नाश होय, इन तीन दिनमें कुशल वैद्यकी औषधि पहुंचनेसे रोगी बचे, परंतु प्रथम निश्चय करके चिकित्सा करना ॥

दार्व्यादि लेप ।

दार्वीहरिद्रामंजिष्ठासनिंबोशीरपद्मकम् ।
एतत्प्रलेपनंकुर्याच्छंखकस्यप्रशान्तये ॥

अर्थ-दारुहलदी, हलदी, मजीठ, नींबकी छाल, खस और पद्माख, इनको जलमें पीसके लेप करे तो शंखक अर्थात् कनपटीका दूखना दूर होय ॥

सामान्य उपचार ।

शीततोयाभिषेकश्चशीतलक्षीरसेवनम् ।

कल्कैश्चक्षीरिवृक्षाणांशंखकेलेपनंहितम् ॥

अर्थ–शंखक रोगमें शीतल जलका तरडा डालना, शीतल दूध पीवे क्षीरी-वृक्ष(गूलर वड आदि)का कल्क करके लेप करना हितकारी है ॥

बलादि लेप ।

बलानीलोत्पलंदूर्वातिलाःकृष्णपुनर्नवा ।
शंखकेनंतवातेचलेपःसर्वशिरोर्त्तिनुत् ॥

अर्थ–खिरैंटी, नीलकमल, दूब, तिल, पीपल और पुनर्नवा इनको बारीक पीस शंखकरोग और अनंतवात मस्तकके रोगमें लेप करे ॥

करंजादि शीर्षरेचक ।

करंजशिग्रुबीजानिपत्रकंसर्षपत्वचः ।
सर्वेषांशीर्षरोगाणामेतच्छीर्षविरेचनम् ॥

अर्थ–कंजा, सहिंजनेके बीज, पत्रज, सरसों और दालचीनी इन सबका एकत्रकर नास देवे तो मस्तक जुल्लाब होय और सर्व रोग दूर होय ॥

गुडादिनस्य ।

नावनंसगुडंविश्वंपिप्पलीसैंधवांबुना ।
भुजस्तंभादिरोगेषुसर्वमूर्द्धगदेषुच ॥

अर्थ–सोंठ, गुड, पीपल, सैंधानिमक इनको जलमें पीसके नस्य देवे तो भुजाका स्तंभ, लकवा और सब मस्तकके रोग दूर हो ॥

शर्करादिनस्य ।

सशर्करंकुंकुममाज्यभृष्टंनस्यंविधेयंपवनासृगुत्थे ।
भ्रूशंखकर्णाक्षिशिरोर्धशूलेदिनाभिवृद्धिप्रभवेचरोगे ॥

अर्थ–कच्ची खांड, केशर दोनोंको घीमें भूनके वातरक्तके मस्तक रोगमें तथा, भौंह, कनपटी, कान, नेत्र, शिरका आधा दूखना और आधासीसी आदि रोगोंमें नस्य देवे तो उक्त सब रोग शांत हों ॥

कुष्ठादि लेप ।

कुष्ठमेरंडजंमूलंलेपःकांजिकपेषितः ।
शिरोर्त्तिनाशयत्याशुपुष्पंवामुचुकुंदजम् ॥

अर्थ–कूठ और अंडकी जडको काँजीमें पीसके लेप करे तो मस्तकपीडा दूर करे तथा मुचुकुंदके फूलकी नास मस्तकपीडाको दूर करे ॥

देवदार्व्यादिलेप ।

देवदारुनतंविश्वंनलदंविश्वभेषजम् ।
लेपःकांजिकसंपिष्टस्तैलयुक्तःशिरोर्तिनुत् ॥

अर्थ--देवदारु, छड, सोंठ, नरसलकी जड और सोंठको कांजीमें पीस तेल मिलाय लेप करे तो शिरकी पीडा दूर होय ॥

नवसादरचूर्णयोग ।

नस्येनकलिकाचूर्णनवसागरजंरजः ।
वातश्लेष्मभवांपीडांशिरसोहंतिसर्वथा ॥

अर्थ--कलीका विना बुझा चूना और नोसद्दर इनको जलसे बारीक पीस उसी समय इसको सूंघे अर्थात् नास लेवे तो वातकफकी घोर पीडा सर्वथा नष्ट होय ॥

त्रिकट्वादिकाढा ।

त्रिकटुकपुष्कररजनीरास्नासुरदारुउग्रगंधानाम् ।
क्वाथःशिरोर्तिजालंनासापीतोनिवारयति ॥

अर्थ–सोंठ, मिरच, पीपल, पुहकरमूल, हलदी, रास्ना, देवदारु, वच इनको समान भाग ले क्वाथ करे इसको नाकके रास्तेसे पीवे तो सब मस्तकके रोग दूर होय ॥

क्षीरादिनस्य ।

गुडनागरकल्कस्यनस्यंमस्तकशूलनुत् ॥ नागरकल्कविमिश्रंक्षीरंनस्येनयोजितंनृणाम् । नानादोषोद्भूतांशिरोरुजंहंति तीव्रतराम् ॥

अर्थ–सोंठ और गुडकी नस्य मस्तकपीडाको नष्ट करे तथा सोंठके कल्कमें दूध मिलाय नस्य देनेसे अनेकदोषजन्य घोर मस्तकपीडा नष्ट होय ॥

पथ्यादिक्काथ ।

पथ्याक्षधात्रीभूनिंबैर्निशानिंबामृतायुतैः । कृतःक्वाथःषडंगोयं सगुडःशीर्षशूलहा ॥ भ्रूशंखकर्णशूलानितथार्धशिरसोरुजम् । सूर्यावर्तंशंखकंचदंतपातंचतद्रुजः ॥ नक्तांध्यंपटलंशुक्रचक्षुः पीडांव्यपोहति ॥

अर्थ-हरड, बहेडा, आंवला, चिरता, हलदी, नीमकी छाल और गिलोय इनका षडंग क्काथ कर गुड मिलाय पीवे तो मस्तकपीडा दूर होय, भौंह कनपटी, कानका शूल, आधासीसी, सूर्यावर्त्त, शंखक, दांतोंका गिरना, रतौंधा, पटल, मोतियाबिंदु आदि नेत्रपीडाकोभी नष्ट करे ॥

मयूराद्यघृत ।

मयूरंपक्षपादांत्रशकृत्पित्तास्थिवर्जितम् । जलेपक्त्वाघृतप्रस्थं तस्मिन्क्षीरंसमंपचेत् ॥ दशमूलबलारास्नामधुकैस्त्रिफलैः सह । मधुरैःकार्षिकैःकल्कैःशिरोरोगार्दितापहम् ॥ कर्णनासास्यजिह्वाक्षिगलरोगविनाशनम् । मयूराद्यमितिख्यातमूर्ध्वं जत्रुगदापहम् ॥

अर्थ-मोरके सब शरीरको,आंत पैररहित तथा मल,पित्त और हड्डी रहितको जलमें परिपक्क कर क्काथ बनावे इसको १ सेर घी और १ सेर दूध डालके पचावे, तथा दशमूलकी दश औषध, बला, रास्ना, मुलहटी, हरड, बहेडा, आंवला, इत्यादि मधुर वस्तु एक एक तोले कल्क डालके पचावे, तो शिरपीडा, कान, नाक, मुख, जीभ, नेत्र गलेके रोगोंको यह मयूरादिघृत नष्ट करे तथा हसलीके ऊपर होनेवाले रोग दूर हो ॥

महामायूरघृत ।

एतेनैवकषायेणघृतप्रस्थंविपाचयेत् । चतुर्गुणेनपयसाकल्कैरेभिश्चकार्षिकैः ॥ समंगाचविकाभार्ङ्गीकाश्मरीसुरदारुभिः । शतावरीविदारीक्षुबृहतीसारिवायुतैः॥मूर्वाशार्दूलशृंगाटकसेरुंचजलोद्भवम्। रास्नास्थिराख्यामलकीसूक्ष्मैलाशिग्रुपुष्करैः॥ पुनर्नवातुगाक्षीरीकाकोलीधन्वयासकैः। मधुकाक्रोडवातामगुंजानाभिशुकैरपि ॥ द्रव्यैरेभिर्यथालाभंपूर्वकल्केनसाधितम् ॥ तत्पक्कंनावनेभ्यंगेबस्तौपानेचयोजयेत् । शिरोरोगेषुसर्वेषुश्वासेकासेचदारुणे ॥ मन्याग्रहेतथाचैवस्वरभेदेतथार्दिते । योन्यसृक्छुक्रदोषेचशस्तंवंध्यासुखप्रदम् ॥ ऋतुस्नातातुयानारीपीत्वापुत्रंप्रसूयते । महामायूरमित्येतत्स्मृतमात्रेणपूजितम् ॥ आखुभिःकुक्कुटैर्हंसैःशशकैश्चापिबुद्धिमान् । कल्केनानेनविपचेत्सर्पिरूर्ध्वगदापहम् ॥

अर्थ-इसी पूर्वोक्त मयूरादिकषायद्वारा १ सेर घृतको चौगुने दूध और आगे लिखीहुई तोले २ औषधोंके कल्कसै घृतको पचावे वह औषध यह हैं लजालू, चव्य, भारंगी, कंभारी, देवदारु, सतावर, विदारीकंद, ईख, भटकटैया, सारिवा, मूर्वा, सार्दूलकंद, सिंघाडे, कसेरु, रास्ना, सालपर्णी, आमले, छोटी इलायची, सहेंजना, पुहकरमूल, पुनर्नवा, वंशलोचन, काकोली, धमासा, मुलहटी, वाराहीकंद, बदाम, घुंघची, कस्तूर, गठिवन इन सब औषधोंको जो मिले उनको ले कल्क करके घृतके साथ पचावे, घृत सिद्ध होनेपर इसकी नस्य मालिश, बस्ती और पीनेमें देना चाहिये, यह सब मस्तकके रोग दारुण श्वास, खांसी, गरदनका जिकडना, स्वरभंग, लकवा, प्रदररोग, शुक्रके दोष, इनपर देना हितकारी है. वंध्यास्त्रीको सुखदाई है. जो ऋतुस्नानकर इसको पीवे उस स्त्रीके पुत्र प्रगट होय, यह महामायूर घृत सर्वोपरिहै. तथा इसी घृतमें चुहे, मुरगे, वतक, खरगोश आदिके मांसरस पचावे तो मस्तक आदि सर्वरोगोंको दूरकरे है ॥

षड्बिंदु तैल।

एरंडमूलंतगरंशताव्हाजीवंतिरास्नासहसैंधवंच। भृंगंविडंगंमधुयष्टिकाचविश्वौषधंकृष्णतिलस्यतैलम् ॥ अजापयस्तैलविमिश्रितंतुचतुर्गुणेभृंगरसेविपक्वम् ॥ षड्बिंदवोनासिकयोः प्रदेयाःसर्वान्निहन्युःशिरसोविकारान्॥ च्युतांश्चकेशांश्चलितांश्चदंतान्निबद्धमूलान्सुदृढान्करोति । सुपर्णदृष्टिप्रतिमंचचक्षुः कुर्वंतिबाह्वोरधिकंबलंच ॥

अर्थ-अंडकी जड, तगर, सतावर, जीवंती, रास्ना, सैंधानिमक, भांगरा, वायविडंग, मुलहटी, सोंठ, पीपल इनको चार२ तोले ले कल्क करे। बकरीका दूध १ सेर, तिलीका शुद्ध तेल १ सेर, भांगरेका रस ४ सेर लेकर घृतको पचावे इस षड्बिंदुतैलकी छःबूंद नाकमें टपकावे तो सर्व मस्तकके विकारोंको दूर करे, बालोंका झरजाना, दांतोंका हिलनेको बंद करे, तेज दृष्टि होय और भुजाओंमें अधिक बल करेहै ॥

शताह्वादि तैल।

शताह्वैरंडमूलोग्राचक्राव्याघ्रीफलैःशृतम्।
तैलंनस्यान्मरुच्छ्लेष्मतिमिरोर्ध्वगदापहम् ॥

अर्थ--सतावर,अंडकी जड, वच, नागरमोथा और कटेरीके फल इनके क्वाथ-में तेल सिद्ध करे तो वात कफके मस्तकरोग, तिमिर और हसलीके ऊपरके रोगोंको दूर करे ॥

नीलोत्पलादि तैल ।

नीलोत्पलकणायष्टिचंदनंपुंडरीककम् । प्रतिनिष्कंचतुष्कं स्यात्तैलंस्यात्षोडशंपलम् ॥ चतुःषष्टिपलंधात्रीफलानांरस माहरेत् । पचेत्तैलावशेषंतुनस्येनाभ्यंजनेनवा॥ योज्यंहंतिशि रस्तोदंपलितंचविनाशयेत् ॥

अर्थ–नीला कमल, पीपल, मुलहटी, चंदन, सपेद कमल, प्रत्येक १६ मासे तेल १६ पल ले और आँवलोंका रस ६४ पल लेय फिर अग्निपर चढायके तेल सिद्धकरे इसको नस्य और मालिश द्वारा प्रयोग करे तो मस्तकपीडा और बालोंका सपेद होनेको दूर करे ॥

सारिवादि तैल ।

सारिवाअमृतायष्टित्रिफलानीलमुत्पलम् । भृंगराजस्तृणंकुंभी महानिंबफलानिच ॥ कटुतैलंपचेदेभिःसार्धयवरसेनतु । कंडूं चदारुणंहंतिशिरोरोगंचनाशयेत् ॥

अर्थ–सारिवा, गिलोय, मुलहटी, हरड, बहेडा, आँवला, नीलकमल, भांगरा, रोहिषतृण, गूगल, बकायनके फल, इनके कल्कसे कडवे तेलको पचावे तथा इसमें जौओंका रसभी डालदेय यह दारुण मस्तककी खुजली और मस्तकरोगको नष्टकरे ॥

शिरोबस्तिपर पथ्य ।

भावप्रकाशाच्छिरोबस्तिविधौसत्पथ्यमुच्यते। आमिषंजांगलं पथ्यंतत्रशाल्योदनोपिच ॥ मुद्गान्माषान्कुलित्थांश्चखादेद्रानि शिकेवलान् । कटुकोष्णान्ससर्पिष्कानुष्णंक्षीरंपिबेत्तथा ॥

अर्थ–भावप्रकाश ग्रंथमें शिरोबस्तीपर पथ्य कहतेहैं–जंगली जीवोंका मांस, शाली चावलोंका भात, मूंग, उडद, कुलथी, ये सब अथवा इनमेंसे केवल एकेकही रात्रिमें सेवन करे तथा कडवे गरम और घृत मिले गरम दूधको पीवे. (भावप्रकाश भाषाटीका हमारे यहां बहुत उत्तम छपाहै इच्छा होय तो मंगायलीजिये) ॥

शिरोरोगपर पथ्य ।

स्वेदोनस्यंधूमपानंविरेकोलेपःसेकोलंघनंशीर्षबस्तिः । रक्तो

न्मुक्तिर्वह्निकर्मोपनाहौजीर्णसर्पिःशालयःषष्टिकाश्च ॥ यूषो दुग्धंधन्वमांसंपटोलंशिग्रुर्द्राक्षावास्तुकंकारवेल्लम् । आम्रंधात्री दाडिमंमातुलिंगतैलंतक्रंकांजिकंनालिकेरम् ॥ पथ्याकुष्टंभृंग राजःकुमारीमुस्तोशीरंचंद्रिकागंधसाराः।कर्पूरंचख्यातिमानेष वर्गःसेव्योमर्त्यैःशीर्षरोगेयथास्वम् ॥

अर्थ-स्वेदन, नास, धुआँ पीना, विरेचन, लेप, वमन, लंघन, शिरकी बस्ति रुधिर निकालना, दागना, उपनाह, पुराना घी, चावल, साठी, यूष, दूध, मरुदेशका मांस, परवर, सहिंजना; दाख, वथुआ, करेला, आम, आँवला, अनार, बिजौरा, तेल, मट्ठा, कांजी, नारियल, हड, कूठ, भांगरा, घीगुवारि, मोथा, खस, चांदनी, चन्दन और कपूर यह प्रसिद्ध वर्ग मनुष्योंको शिरके रोगमें सेवन करना चाहिये ॥

शिरोरोगपर अपथ्य।

क्षवंजृंभांमूत्रबाष्पंनिद्राविड्वेगभंजनम् । दुग्धंनीरंविरुद्धान्नं विरुद्धजलमज्जनम् ॥ दंतकाष्ठंदिवानिद्रांशिरोरोगीपरित्यजेत् ॥

अर्थ-छींक, जँभाई, मूत्र, आँसू, नींद, विष्ठा, इनके वेगका रोकना, बुरा जल, विरुद्ध अन्न, नदियोंमें न्हाना, दँतून करना, दिनमें सोना, इन सबोंको शिरके रोगवाला मनुष्य त्याग करैं ॥

इति श्रीबृहन्निघण्टुरत्नाकरे शिरोरोगे पथ्यापथ्याधिकारः समाप्तः ॥

स्त्रीरोग।

प्रदररोग।

विरुद्धमद्याध्यशनादजीर्णाद्गर्भप्रपातादतिमैथुनाच्च ॥ याना तिशोकादतिकर्षणाच्चभाराभिघाताच्छयनाद्दिवाच । तंश्लेष्म पित्तानिलसन्निपातैश्चतुःप्रकारंप्रदरंवदंति ॥

अर्थ-विरुद्ध (क्षीरमत्स्यादि) मद्य, अध्यशन (भोजनके ऊपर भोजन), अजीर्ण, गर्भपात, अतिमैथुन, अतिगमन (चलना), अतिशोक, उपवासादिक करके कर्शन, अर्थात् व्रतके करनेसे सूख जाना भारके वहनेसे (अर्थात् भारी वस्तु उठाकर चलनेसे), काष्ठ कहिये लकडीआदिके लगनेसे

दिनमें सोनेसे, इन कारणोंसे कफ पित्त वायु और सन्निपात इन भेदोंसे चार प्रकारका प्रदर रोग होता है ॥

प्रदरका सामान्यरूप ।

असृग्दरंभवेत्सर्वंसांगमर्दंसवेदनम् ॥

अर्थ-सब प्रदरोंमें अंगोंका टूटना तथा हाथ पैरोंमें पीडा होती है ॥

उपद्रव ।

तस्यातिवृद्धौदौर्बल्यंश्रमोमूर्च्छामदस्तृषा ॥
दाहःप्रलापःपांडुत्वंतंद्रारोगाश्चवातजाः ॥

अर्थ-जब यह प्रदर बहुत बढ जाता है तब दुर्बलता होय, थकजाय, मूर्च्छा आवै, मत्तपन, प्यास, दाह, प्रलाप (बकना), देह पीला होजाय, तन्द्रा और वातज रोग (आक्षेप अपतान कंपादिक) होतेहैं ॥

कफजन्यप्रदरलक्षण ।

आमंसपिच्छप्रतिमंसपांडुपुलाकतोयप्रतिमंकफात्तु ॥

अर्थ-कफसे आमरस (कच्चारस) संयुक्त चिकना, किंचित् पीला, मांसके धुले जलके समान स्राव होय, इसको श्वेत प्रदर अथवा सोमरोग कहते हैं ॥

मलयूरस ।

कफप्रदरनाशायपिबेद्रामलयूरसम् ॥

अर्थ-कफके प्रदर रोग दूर करनेको मलयू (कठूमर) का रस पीवे तो प्रदर दूर होय ॥

कफप्रदरपर ।

काकजंघामूलरसंमधुनासहभामिनी ।
सलोध्रचूर्णमापीयकफप्रदरंजयेत् ॥

अर्थ-काकजंघाकी जडके रसमें लोधका चूर्ण डालके और सहत मिलायके जो स्त्री पीवे तो कफका प्रदररोग दूर होय ॥

पित्तजप्रदरनिदान ।

सपीतनीलासितरक्तमुष्णंपित्तार्तियुक्तंभृशवेगिपित्तात् ॥

अर्थ-किंचित् पीला, नीला, काला, लाल, गरम ऐसा प्रदर पित्तसें वहे, उसमें पित्तके दाह चिमचिमादि पीडा होंय, तथा उसका वेग अत्यन्त होय॥

वासकादि स्वरस ।

पित्तासृग्दरशांत्यर्थंसक्षौद्रंललनापिबेत् ।

वासकस्यगुडूच्यावारसंकिंवावरीभवम् ॥

अर्थ–पित्तरक्तप्रदरशांतिके वास्ते स्त्री अडूसेका, या गिलोयका, अथवा वनतुलसीका रस पीवे तो पीडा शांति होय ॥

मधुकादि कल्क ।

मधुकंकर्षमेकंतुचतुःकर्षासितातथा ।
तंदुलोदकसंपिष्टंपैत्तिकेप्रदरेपिबेत् ॥

अर्थ--मुलहटी १ तोले, कच्ची खांड ४ तोले दोनोंको चावलोंके धोवनसे पीसके पीवे तो पित्तप्रदर शांति होय ॥

वातजप्रदरनिदान ।

रूक्षारुणंफेनिलमल्पमल्पंवातार्तिवातात्पिशितोदकाभम् ॥

अर्थ–वातसे रूक्ष लाल झागसे युक्त मांसके और सफेद पानीके समान थोडा थोडा प्रदर वहे, उसमें वादीके (आक्षेपकादि) पीडा होती है ॥

सौवर्चलादि कल्क ।

दध्नासौवर्चलाजाजिमधुकंनीलमुत्पलम् ।
पिबेत्क्षौद्रयुतंनारीवातासृग्दरशांतये ॥

अर्थ–काला निमक, जीरा, मुलहटी, और नील कमल, समान भाग ले, बारीक पीस दहीमें मिलायके पीवे तो वातरक्तप्रदरशांति होय ॥

नागरादि मंथ ।

नागरंमधुकंतैलंसितादधिचतत्समम् ।
खजेनोन्मथितंवातप्रदरस्यविनाशनम् ॥

अर्थ–सोंठ, मुलहटी, मीठा तेल, मिश्री और दही सबको बराबर ले रई डालके मथके पीवे तो वातप्रदर दूर होय ॥

एलादि कल्क ।

एलामंशुमतींद्राक्षामुशीरंतिक्तरोहिणीम्॥चंदनंकृष्णलवणंसा
रिवालोध्रसंयुतम् । वातासृग्दरशांत्यर्थंपिबेद्दध्नासहांगना ॥

अर्थ--बडी इलायची, शरिवन, दाख, खस, कुटकी, चंदन, कालानिमक, सारिवा और लोध इनको बारीक पीस दहीमें मिलायके यदि स्त्री पीवे तो वातरक्तप्रदर दूर होय ॥

त्रिदोषजप्रदर लक्षण।

सक्षौद्रसर्पिर्हरितालवर्णमज्जाप्रकाशंकुणपंत्रिदोषम्।
तच्चाप्यसाध्यंप्रवदंतितज्ज्ञानतत्रकुर्वीतभिषक्चिकित्साम् ॥

अर्थ-जो प्रदर शहद, घृत, हरिताल और मज्जा, इनके रंगके समान तथा मुर्दाकीसी दुर्गंधियुक्त होय, उसको त्रिदोषज प्रदर जानना यह असाध्य है अर्थात् इसकी वैद्य चिकित्सा न करैं ॥

त्रिदोषजप्रदरचिकित्सा।

कुशमूलंसमुद्धृत्यपेषयेत्तंदुलांबुना।
एतत्पीत्वात्र्यहान्नारीप्रदरात्परिमुच्यते ॥

अर्थ-कुशाकी जडको चांवलके धोवनसे पीसके ३ दिन पीवे तो स्त्रीका त्रिदोषजन्य प्रदर रोग दूर हो ॥

काकोदुंबरिकास्वरस।

क्षौद्रयुक्तंफलरसंकाकोदुंबरजंपिबेत्।
असृग्दरविनाशायसशर्करपयोन्नभुक् ॥

अर्थ-कठूमरके फलोंका रस सहत डालके पीवे तथा मिश्री मिला दूध भात भोजन करे तो रक्तप्रदर दूर होय ॥

संनिपातजप्रदरपर।

पथ्यामलकबिभीतकविश्वौषधदारुरजनीनाम्।
सक्षौद्रलोध्रचूर्णःक्वाथोहंत्येषसर्वजंप्रदरम् ॥

अर्थ-हरड, आमले, बहेडा, सोंठ, दारुहलदी इनके क्वाथमें सहत और लोधका चूर्ण मिलायके पीवे तो सन्निपातजन्य प्रदररोग दूर होय ॥

मलयूफलचूर्ण।

मलयूफलचूर्णस्यशर्करासहितस्यच।
मधुनागुटिकांकृत्वाखादेत्प्रदरशांतये ॥

अर्थ-कठूमरके फलका चूर्ण खांड मिलाय सहत डालकै गोली बनावे इसके भक्षण करनेसे प्रदररोग शांत होय ॥

दार्व्यादि क्वाथ।

दार्वीरसांजनवृषाब्दकिराताबिल्वभल्लातकैरवकृतोमधुनाकषायः।
पीतोजयत्यतिबलप्रदरंसशूलंपीतासितारुणविलोहितनीलयुक्तम् ॥

अर्थ–दारुहलदी,रसोत,अडूसा, नागरमोथा, चिरायता, बेलगिरी, भिलाये और कमोदनी इनका क्वाथ कर सहत डालके पीवे तो घोर शूलयुक्त पीला, काला, लाल और नीले रंगका प्रदर रोग दूरहो ॥

भूम्यामलक्यादिपान।

भूम्यामलकमूलंतुपीतंतन्दुलवारिणा।
द्वित्रिरेवदिनैर्नार्याःप्रदरंदुस्तरंजयेत् ॥

अर्थ–भूयआवलेकी जडको चावलके धोवनके साथ पीवे तो २।३ दिनमें स्त्रीका घोर प्रदर रोग दूर होय ॥

धातक्यादि क्वाथ।

धातकीचतथापूगीकुसुमानांपिबेच्छृतम्।
नाशयेत्प्रदरंसद्यस्त्रिदिनाद्योषितांध्रुवम् ॥

अर्थ–धायके फूल अथवा सुपारीके फूलोंका क्वाथ पीवे तो तीन दिनमें स्त्रीका प्रदर रोग दूरहोय ॥

आखुपुरीषयोग।

आखोःपुरीषंपयसानिपीयवन्हेर्बलादेकमहोद्व्यहंवा।
स्त्रियस्त्र्यहंवाप्रदरास्त्रनद्याःप्रसह्यपारंपरमाप्नुवंति ॥

अर्थ–मूसेकी मेंगलीको दूधमें घोटके पीवे इसमें बलाबल विचारके एक दिन दो दिन या तीन दिन पीना चाहिये तो प्रदरकी वहतीहुई नदीके पार पहुंचे अर्थात् प्रदर दूर होय ॥

बृहच्छतावरी घृत।

शतावरीरसंप्रस्थंक्षोदयित्वावपीडयेत्। घृतप्रस्थसमायुक्तंक्षीरंद्विगुणितंभिषक् ॥ अंतःकल्कानिमान्दद्यात्स्थूलोदुंबरसन्निभान्। जीवनीयगणानष्टौयष्टीचंदनपद्मकैः ॥ श्वदंष्ट्राचात्मगुप्ताचबलानागबलातथा। शालिपर्णीपृश्निपर्णीविदारीसारिवाद्वयम् ॥ शर्कराचसमादेयाकाश्मर्याश्चफलानिच। सम्यक्सिद्धंतुविज्ञायतद्घृतंचावतारयेत् ॥ रक्तपित्तविकारेषुवातपित्तकृतेषुच। वातरक्तंक्षयंश्वासंहिक्कांकासंचदुस्तरम् ॥ अंतर्दाहंशिरोदाहंरक्तपित्तसमुद्भवम्। असृग्दरंसर्वभवंमूत्रकृच्छ्रंचदारुणम् ॥

अर्थ–सतावरका रस १ सेर, गौका घी १ सेर, गौका दूध २ सेर ले, फिर कल्कके वास्ते जीवनीय गणकी औषध, मुलहटी, चंदन, पद्माख, गोखरू, कौचके बीज, खिरेटी, नागबला, शालिपर्णी, पृष्ठिपर्णी, विदारीकंद, सारिवा, कालीसारिवा, और कंभारीके फल, इन सबको एकत्रकर घृत सिद्धकरे यह संपूर्ण रुधिरके विकार, वातपित्तके विकार, वातरक्त, क्षय, श्वास, हिचकी, खांसी, अंतर्दाह, शिरोदाह, रक्तपित्त, संनिपातजन्य रक्तप्रदर और दारुण मूत्रकृच्छ्र दूर करे ॥

कुमुदादि घृत।

कुमुदंपद्मकोशीरंगोधूमारक्तशालयः । माषपर्णीयशस्याच शालिपर्णीसजीरकैः ॥ पलंत्रपुषबीजानिप्रत्येकंकदलीपलम् । एकंतद्धीनभागोहिगव्यंक्षीरंचतुर्गुणम् । पानीयंद्विगुणंदत्वा घृतप्रस्थंविपाचयेत् ॥ प्रदरंरक्तदोषंच पांडुरोगंहलीमकम् । बहुरूपंचयत्पित्तंकामलांवातशोणितम् ॥ अरोचकंज्वरंजीर्णं स्त्रीणांरोगंमदंभ्रमम् । तरुणीचाल्पपुण्याचयाचगर्भंनविंदति॥ साचापिविंदतेक्षेमंविंदतेनात्रसंशयः ॥

अर्थ–कमल, पद्माख, खस, गेंहूं, लाल चावल, माषपर्णी, क्षीरकाकोली, शालिपर्णी, जीरा और खीरेके बीज और केलीकी फली प्रत्येक एक एक पल लेवे, गौका दूध सब औषधोंसे चौगुना और दूना जल डाले, फिर १ सेर घी डालके पचावे, यह प्रदर, रुधिरके दोष, पांडुरोग, हलीमक, अनेक प्रकारका पित्त, कामला, वातरक्त, अरुचि, ज्वर, अजीर्ण, स्त्रीनके रोग, मस्तपना, भ्रम, इनको दूरकरे, जिस स्त्रीके गर्भ नहीं रहता होय वह इस घृतके प्रभावसे पुत्रको निःसंदेह प्राप्त होय ॥

श्वेतप्रदरपर स्वरस।

वासकःस्वरसापेयोगुडूचीरसमेवच ।
रोहितानांमूलकल्कंपांडुरेसृग्दरेपिबेत् ॥

अर्थ–अडूसेके स्वरसको अथवा गिलोयके स्वरसको अथवा रोहिडाके जडके कल्कको पीवे तो पीले रंगका प्रदर दूर होय ॥

सर्वप्रदरोंपर।

फलत्रिकंदारुवचासवासालाजासदूर्वाकलशीसमंगा।

क्षौद्रान्वितंक्काथमुशंतिशांत्यैसर्वात्मकस्त्रीप्रदरेषुवैद्याः ॥

अर्थ–त्रिफला, दारुहलदी, वच, अडूसा, खील, दूब, पृष्ठिपर्णी, मजीठ इनके क्काथमें सहत डालके पीवे तो सन्निपातका प्रदर दूर होय ॥

दार्व्यादि रक्तप्रदरपर ।

मूलानितंडुलजलेनसमन्वितानिपिष्ट्वांकुशस्यचसमानिपिवन्प्रयत्नात् । योषिद्रजस्यातितरांसमभिप्रवृत्तौसर्पिर्युतानियदिवा कदलीफलानि ॥

अर्थ–कुशाकी जडको चांवलके धोवनमें पीसके पीवे तो रक्तप्रदर दूर होय अथवा केलेकी पकी गहरोंको घृतमें मिलायके खाय तो रक्त प्रदर दूर होय॥

काकजंघादि सपेदप्रदरपर ।

काकजानुकमूलंवामूलंकार्पासमेवच ।
पांडुप्रदरशांत्यर्थंपिबेत्तंदुलवारिणा ॥

अर्थ–काकजंघाकी जड, अथवा कपासकी जडको चावलके धौवनसे पीसके पीवे तो पीले रंगका प्रदर दूर होय ॥

अशोकक्काथ रक्तप्रदरपर ।

अशोकवल्कलक्काथंशृतंदुग्धंसुशीतलम् ।
यथाबलंपिबेत्प्रातस्तीव्रासृग्दरनाशनम् ॥

अर्थ–अशोकवृक्षकी छालका क्काथ औटेहुए दूधमें मिलाय शीतल करके बलाबल विचारके तो प्रातःकाल पीवे तौ तीव्र रक्तप्रदर दूर होय ॥

रसांजनादि वातपित्त प्रदरपर ।

रसांजनंचलाक्षाचछागेनपयसापिबेत् ॥ कल्कपत्रैर्घृतभ्रष्टैराजादनकपित्थयोः । पित्तानिलहरावेतौसर्वेचैवास्रपित्तजित् ॥

अर्थ–रसोत और लाख, दोनोंको पीस दूधमें मिलायके पीवे अथवा कथ और खिरनीके पत्तोंके कल्कको घीमें भूनके पीवे वात पित्तजन्य रक्तप्रदर दूरहो ॥

कुरंटमूलादिपान ।

कुरंटकस्यमूलानिमधुकंश्वेतचंदनम् । यष्ट्यापिष्टान्यक्षयावा पाययेत्तंदुलांबुना ॥ सकृत्पीत्वात्विदंयोगंप्रदरात्प्रतिमुच्यते ॥

अर्थ-नीले रंगके पियावासेकी जडमें महुआ, सफेद चंदन, ये सबको चावलके धोवनके जलसे पीवे तो प्रदररोग नष्ट होय ॥

बलादि कल्क।

बलाचांशुमतीद्राक्षाउशीरंतिक्तरोहिणी। लवणंचंदनंकृष्णासारिवालोध्रसंयुता ॥ एतत्कल्कंसमधुकंपाययेत्तंदुलांबुना । त्र्यहात्प्रशमयत्येषयोषितांपैत्तिकारुजः ॥

अर्थ-खिरेटी, शरिवन, दाख, उसीर (खस), कुटकी, निमक, चंदन, काली सारिवा और लोध इनके कल्कमें महुआ मिलायके चावलधोवनके जलसे तीन दिन पीवे तो पित्तजन्य प्रदरका रोग दूर होय ॥

कपित्थादि कल्क।

कपित्थवेणुपत्रंचसममेकत्रपेषयेत् ।
मधुनासहपातव्यंतीव्रप्रदरनाशनम् ॥

अर्थ-कैथ, वासके पत्ते, दोनों समान भाग ले जलसे बारीक पीस सहत मिलायके पीवे तो घोर पित्तका प्रदर रोग दूर होय ॥

आमलक चूर्ण।

मधुनामलकीचूर्णंरसंवालेहयेच्छ्रिते ॥

अर्थ-आमलेके चूर्णमें सहत मिलायके चाटे अथवा आँवलेका रस सहत डालके पीवे ॥

सर्वप्रदरपर।

अशोकवल्कलंपिष्ट्वासतार्क्ष्यंतंदुलांभसा ।
सक्षौद्रंतद्रसंपीत्वाप्रदरान्मुच्यतेंगना ॥

अर्थ-अशोक वृक्षकी छालके कल्कको रसोतका चूर्ण डाल चावलधोवनके जलमें पीवे अथवा अशोककी छालके रसमें सहत मिलायके पीवे तो प्रदर रोग दूर होय ॥

व्याघ्रनखीमूलयोग।

शुचिस्थानेव्याघ्रनख्यामूलमुत्तरदिग्भवम् ।
नीतमुत्तरफल्गुन्यांकटिबद्धंहरेदसृक् ॥

अर्थ-व्याघ्रनखी रूखडी जो उत्तम स्थानमें प्रगट हुई हो उसमें जो उत्तर दिशासे उखाडके उत्तराफल्गुनीमें लाकर स्त्रीकी कमरमें बांधे तो रक्तप्रदरको दूरकरे ॥

तंदुलीय मूलयोग।

मधुनाताक्ष्र्यसंयुक्तंमूलंस्यात्तंदुलीयकम्।
तंदुलांबुयुतंपानात्सर्वप्रदरनाशनम्॥

अर्थ-रसोत, चौलाईकी जड इन दोको समान भाग ले बारीक पीस पीवे तो सर्व प्रकारके प्रदर दूर होंय॥

आखुपुरीषादि चूर्ण।

आखोःपुरीषंधातक्याःपुष्पंबोलंतथैवच। समभागानिसंचूर्ण्य टंकमेकंचभक्षयेत्। दिनसप्तप्रयोगेणसर्वप्रदरनाशनम्॥

अर्थ-मूंसेकी मैंगनी, धायके फूल और बीजाबोल समान भाग ले चूर्णकर इसमेंसे ४ मासे नित्य सातदिन पर्यंत पीवे तो सर्व प्रकारके प्रदर नष्ट होय॥

प्रदर चिकित्सा सर्वप्रकारके प्रदरपर पुष्पानुगचूर्ण।

पाठारसांजनंमुस्तंमज्जाजंब्वाम्रयोस्तथा। अंबष्ठिकाशिलोद्भेदंसमंगापद्मकेशरम्॥ बिल्वंमोचरसंलोध्रंकेशरंगैरिकंतथा। विश्वौषधंकट्फलंचमरिचंरक्तचंदनम्॥ कट्वंगंधातकीद्राक्षानंतामधुकमर्जुनम्। वत्सकातिविषेचेतिपुष्येणोद्धृत्यबुद्धिमान्॥ तुल्यभागानिसर्वाणिसूक्ष्माणिचविचूर्णयेत्। तच्चूर्णमाक्षिकोपेतंपीतंतंदुलवारिणा॥ जयेदर्शांस्यतीसारंतथारक्तप्रवाहिकाम्। बालानांक्रमिरोगांश्चयोनिदाहंचयोषिताम्॥ रजोदोषांस्तथासर्वान्प्रदरान्दुस्तरानपि। पीतनीलारुणश्वेतान्सर्वानेवविनाशयेत्॥ चूर्णपुष्पानुगंनामपूर्वमात्रेयभाषितम्॥

अर्थ-पाठ, रसोत, नागरमोथा, जामन और आमकी छाल, पाढ, पाखानभेद, मजीठ, कमलकी केशर, बेलगिरी, मोचरस, लोध, नागकेशर, गेरू, सोंठ, कायफल, काली मिरच, लाल चंदन, अरलु धायके फूल, दाख, धमासो, महुआ, कोहकी छाल, कुडाकी छाल, अतीस इन सब औषधोंको वैद्य पुष्य नक्षत्रमें लावे सबका समान भाग चूर्णकर सहत मिलायके चावलके धोवनसे पीवे तो रक्तार्श (खुनी बवासीर) अतिसार, रक्तप्रवाहिका, बालकोंके कृमिरोग, योनिदाह, रजके दोष, सर्व प्रकारके दुस्तर प्रदररोग, पीले, नीले, सपेद सर्व प्रकारके प्रदररोग दूर हो, यह आत्रेयभगवान्का कहा पुष्पानुग चूर्ण है॥

जीरकावलेह।

जीरकंप्रस्थमेकंतुक्षीरंद्याढकमेवच। प्रस्थार्धंलोहघृतयोःपचे न्मंदेनवह्निना ॥ लेहीभूतेथशीतेत्रसिताप्रस्थंविनिक्षिपेत्। चातुर्जातंकृष्णविश्वमजाजीमुस्तबालकम् ॥ दाडिमंरसजं धान्यंरजनीपटवासकम्। वंशजंचतवक्षीरीप्रत्येकंशुक्तिसंमि तम् ॥ जीरकस्यावलेहोयंप्रमेहप्रदरापहः। ज्वरावल्यरुचि श्वासतृष्णादाहक्षयापहः ॥

अर्थ–सपेद जीरा १ सेर, गौका दूध ४ सेर, लोहभस्म आधसेर और घी आधसेर इन सबको एकत्रकर अवलेह बनावें शीतल होनेपर १ सेर सपेद खाँड डाले और दालचीनी, नागकेशर, बडी इलायची, तेजपात, पीपल, जीरा, नागरमोथा, अनारदाना, सुगंधवाला, अनार, रसोत, धनिया, हलदी अनार, रसोत, वंशलोचन और तवाखीर प्रत्येक चार२तोले लेवे सबका चूर्णकर अवलेहमें मिलाय देवे, यह जीरकादि अवलेह संपूर्ण प्रदरोंको नष्ट करे, तथा प्रमेह, ज्वर, अरुचि, निर्बलता, श्वास, तृषा, दाह और क्षयको नष्ट करेहै ॥

मुद्गादि घृत।

मुद्गमाषस्यनिर्यूहेरास्नाचित्रकमुस्तकैः।
सिद्धंसपिप्पलीविल्वैःसर्पिःश्रेष्ठमसृग्दरे ॥

अर्थ–मूंग और उडदके यूषमें रास्ना, चित्रक, नागरमोथा, पीपल और बेलगिरी इनका कल्क डालके घृत सिद्ध करे यह रक्तप्रदर दूर करनेमें उत्तम कहा है ॥

शालमल्यादि घृत।

शाल्मलीपुष्पनिर्यासःपृश्निपर्णीतथैवच। काश्मरीचंदनंचैषां कल्केनस्वरसेनवा ॥ गव्यंपचेद्घृतंप्रस्थंतत्सिद्धंतरुणीपिबे त्। सर्वप्रदरनाशायबलवर्णाग्निवर्धनम् ॥

अर्थ–सेमरके फूलका रस और पृष्ठिपर्णी, कंभारी, चंदन, इनके कल्क अथवा स्वरससे गौके १ सेर घी सिद्धकर स्त्री पीवे तो सर्व प्रदर दूर होय और बलवर्णकी वृद्धि हो ॥

प्रदरारि रस।

रसंगंधंमृतंनागंसमंतैस्तुरसांजनम्। सर्वैःस्यात्तुलितंलोध्रंदिनं

पिष्टंवृषद्रवैः ॥ द्विवल्लोमधुयुक्तोयंप्रदराररिसः शुभः।दुःसाध्यं प्रदरंहंतिरक्तातीसारनाशनः ॥

अर्थ-पारा, गंधक, शीशेका भस्म, ये समान भाग ले सबकी बराबर रसोत मिलावे, तथा इन सब औषधोंके समान पठानी लोधका चूर्ण मिलाय अडूसेके रससे खरलकर ६ छः छः रत्तीकी गोली बनावे एक गोलीको पीस सहतमें मिलायके चाटे तो यह प्रदरारि रस असाध्य प्रदर रोगको तथा अतिसारको दूर करे ॥

सोमरोग निदान।

स्त्रीणामतिप्रसंगाद्वाशोकाच्चापिश्रमादपि । अन्नस्यापक्वयोगाद्वागरदोषात्तथैवच ॥ आपःसर्वशरीरस्थाःक्षुभ्यंतिप्रस्रवंति च । तस्मात्ताःप्रच्युताःस्थानान्मूत्रमार्गंव्रजंतिहि ॥

अर्थ-अतिमैथुन करनेसे, शोक करनेसे, श्रम होनेसे, अजीर्णके योगसे, विषके दोषसे सर्व शरीरगत जल क्षुब्ध होकर अपना स्थान छोडके मूत्र मार्गमें जाता है ॥

वेगंधारयितुंतासांनविंदतिसुखंक्वचित्। शिरःशिथिलतातस्या मुखंतालुश्चशुष्यति॥मूर्छाजृंभाप्रलापश्चत्वग्रूक्षाचातिमात्रतः। भक्ष्यैर्भोज्यैश्चनतृप्तिंलभतेरुग्युतासदा ॥ संधारणाच्छरीरस्य ताआपःसोमसंज्ञिताः।ततःसोमक्षयात्स्त्रीणांसोमरोगइतिस्मृतः ॥

अर्थ-मूत्रका वेग रोकनेसे मनुष्यको कभी सुख नहीं होता, शिर हलका होता है, मुख और तालु शुष्क होती है, मूर्च्छा, जृंभा, अति बोलना, त्वचा रूक्ष होना, भक्षण किये अन्नसे तृप्ति न होना, सुस्वरूपकी हानि होना ये सोमरोगके लक्षण हैं ॥

मूत्रातिसार।

तस्मात्सोमक्षयाद्देहोनिश्चेष्टश्चभवेत्सदा । सएवहिसरुक्सोमोमूत्रेणस्रवतेमुहुः ॥ सोमलक्षणसंस्पृष्टाकालातिक्रांतयोगतः । सोमकांतिक्रमेणैवस्रवेन्मूत्रमभीक्ष्णशः । मूत्रातिसारइत्येवंतमाहुर्बलनाशनम् ॥

अर्थ-ये सोमरोग होनेसे देह सदा निश्चेष्ट रहता है, यह सोमरोग मूत्रके मार्ग से स्रवता है यह सोमरोगकी चिकित्सा करनेको कालका अतिक्रम

होनेसे सोमके कांतिके समान मूत्र स्रवता है, ये बलके नाश करनेवाले रोगको मूत्रातिसार ऐसा कहते हैं ॥

बहुलाविमलाःशीतानिर्गंधानीरुजःसिताः ।
स्रवंतिचातिमात्रंस्यात्साशक्त्याचातिदुर्बला ॥

अर्थ–जिसके बहुत, स्वच्छ, शीतल गंधरहित और पीडारहित सपेद अत्यंत मूत्र उतरे और रोगी दुर्बल होय तो यह सोमरोग अथवा मूत्रातिसार असाध्य जानना ॥

सोमरोगका यत्न।

सएवसरुजःसोमःस्रवेन्मूत्रेणचेन्मुहुः ।
तत्रैलापत्रचूर्णेनपाययेत्तरुणींसुराम् ॥

अर्थ–जिस प्राणीके पीडाके साथ मूत्रमें वारंवार सोम जाता होय उसको इलायची, पत्रज, इनका चूर्ण डालके दारू पिलानी चाहिये ॥

तालकादि योग ।

तालकंदंचखर्जूरींमधुकंचविदारिकाम् ।
सितामधुयुतांखादेन्मूत्रातीसारनाशनीम् ॥

अर्थ–तालमूली, खिजूर, महुआ, विदारीकंद, इनमें मिश्री सहत मिलायके खाय तो मूत्रातिसार दूर होय ॥

चक्रमर्दकमूलंतुसंपिष्टंतंदुलांबुना ।
प्रभातसमयेपीतंजलप्रदरनाशनम् ॥

अर्थ–पमारकी जडको चावलके धोवनमें पीसके प्रातःकाल पीवे तो प्रदर रोग दूर होय ॥

कूष्माण्डस्वरस ।

कूष्मांडपत्रस्वरसैःपक्वपारदनिष्कलम् । द्विनिष्कंगंधकंक्षिप्त्वा
खल्वकेकज्जलीकृतः । असौचमरिचःसोमरोगातिसृतिनाशनः ॥

अर्थ–पके पेठेके पत्तोंके स्वरसमें पारा ४ मासे और गंधक ८ मासे डाले फिर घोटके कजली करे इसमें काली मिरच डालके पीवे तो सोमरोग दूर होय॥

कदलीयोग ।

कदलीनांफलंपक्वंधात्रीफलरसंमधु ।
शर्करासहितंखादेत्सोमधारणमुत्तमम् ॥

अर्थ-केलेकी पकीहुई फली आवलोंका रस सहत और मिश्री मिलायके पीवे तो सोम गिरताहुआ बंद होय ॥

आमलकयोग।

जलेनामलकीबीजकल्कंसमधुशर्करम्।
पिबेद्दिनत्रयेणैवश्वेतप्रदरनाशनम् ॥

अर्थ-आवलेकी गुठलीको जलसे पीस कल्क करे इसमें सहत मिश्री मिलायके खाय तो ३ दिनमें सपेद प्रदररोग दूर होय ॥

नागकेशरयोग।

तक्रौदनाहाररतासंपिबेन्नागकेशरम्।
त्र्यहंतक्रेणसंपिष्टंश्वेतप्रदरनाशनम् ॥

अर्थ-जो स्त्री छाछ भातकी पथ्यपर नागकेशरको पीस छाछके साथ पीवे तो सपेद प्रदर रोग दूर होय ॥

कदलीकंदघृत।

कदलीकंदनिर्यासद्रोणेशतपलान्वितम्। कदलीकुसुमंपक्त्वाक्वाथंपादावशेषितम् ॥ घृतप्रस्थंपयस्तुल्यंपिप्पल्येलालवंगकम्। कपित्थस्यफलंमांसीकदलीकंदचंदनम् ॥ न्यग्रोधादिगणैःसार्धंसर्वान्वारिसमुद्भवान्। सर्वसमंकर्षमात्रंकल्कीकृत्वापचेच्छनैः॥घृतंक्वाथंचकल्कंचपक्त्वाचैवावतारयेत्। प्रातःकालेपिबेन्नित्यंसेवयेत्कर्षमात्रकम् ॥ सोमरोगहरंदाहंमूत्रकृच्छ्राश्मरींतथा। प्रमेहान्विंशतिंहन्यात्प्रमेहगजकेसरी ॥ मूत्रातिसारमप्यन्यव्याधीन्विध्वंसयेद्ध्रुवम्। कदलीकंदनामेदंघृतंसर्वरुजापहम् ॥

अर्थ--केलेका कंदका रस निकालके १ द्रोण लेवे, इसको १०० पल केलेके फूलमें डाल चतुर्थांशावशेष क्वाथ करे, फिर इसके क्वाथको छानके इसमें १ सेर घी और दूध १ सेर मिलावे, कल्कके वास्ते पीपल, इलायची, लौंग, कैथका गूदा, जटामांसी, केलेका कंद, चंदन सपेद, और न्यग्रोधादि गणकी सब औषध इन सबको एक एक तोले लेकर कल्क कर घृतमें मिलायके सिद्ध करे, जब तयार हो जाय तब छानके उत्तम पात्रमें भरके रख देवे, इसमेंसे

१ तोले नित्य प्रातःकालमें पीवे तो सोमरोग, दाह, मूत्रकृच्छ, पथरी, वीस प्रकारके प्रमेह, और मूत्रातिसार आदि अनेक व्याधियोंको निश्चय दूर करे, यह कदलीकंदनामक घृत सर्वरोगनाशक है॥

शुद्ध आर्त्तवके लक्षण।

मासान्निःपिच्छदाहार्तिपंचरात्रानुबंधिच । नैवातिबहुलंनाल्प मार्तवंशुद्धमादिशेत् ॥ शशासृक्प्रतिमंयच्चयद्वालाक्षारसो पमम् ॥ तदार्तवंप्रशंसंतियच्चाप्सुनविरज्यते ॥

अर्थ–जो आर्त्तव रजोदर्शनका रुधिर चिकना नहीं होवे, तथा जिसमें दाह शूलादिक न हों तथा जिसका अनुबंध महीनामें पांच दिवस पर्यंत होय तथा बहुत न निकले और थोडा भी न होय, (मध्यम प्रमाणका होय) उसको शुद्ध आर्त्तव जानना चाहिये और जो आर्तव शशेके रुधिरके समान होवे अथवा लाखके रंगकासा लाल होवे और जिसका रँगा कपडा जलमें डालनेसे वर्ण नहीं पलटे, उसको शुद्ध आर्त्तव कहते हैं॥

योनिरोग।

उदावर्तात्तथावंध्याविप्लुताचपरिप्लुता। वातलायोनिरुग्ज्ञेया वातरोगेणपंचधा ॥ पंचधापित्तदोषेणतत्राद्यौलोहितक्षया। प्रस्रंसिनीवामिनीचपुत्रघ्नीपित्तलातथा॥ अल्पानंदाकर्णिनीच चरणानंदपूर्विका॥अतिपूर्वाचताज्ञेयाःश्लेष्मलाश्चकफादिमा॥ खंडिनीचैवमहतीसूचीमुखात्रिदोषजा । पंचैतायोनयःप्रोक्ताः सर्वदोषप्रकोपतः॥

अर्थ–उदावर्तमें वात कुपित होकरके स्त्रियोंके वंध्या, विप्लुता, परिप्लुता वातला, योनिरुक् ये पांच रोग होते हैं, पित्त दोषसे लोहितक्षया, प्रस्रंसिनी, वामिनी, पुत्रघ्नी, पित्तला ये पांच रोग होते हैं,कफ दोषसे अत्यानंदा,कर्णिनी, चरणानंदपूर्विका, अतिपूर्वा, श्लेष्मला ये पांच रोग होते हैं, त्रिदोषके कोपसे खंडिनी, महती, सूचीमुखा और त्रिदोषजा ये सर्व रोग योनिमें उत्पन्न होनेवाले हैं॥

व्यापत्तिनिदान।

विंशतिर्व्यापदोयोनेर्निर्दिष्टारोगसंग्रहे ॥ मिथ्याचारेणताः स्त्रीणांप्रदुष्टेनार्तवेनच। जायंतेबीजदोषाच्चदैवाच्चशृणुताःपृथक् ॥

अर्थ-रोगसंग्रहमें योनिके वीस रोग हैं वह मिथ्या आहार और मिथ्या विहार करके तथा दुष्ट आर्तव (रुधिर) से, बीज दोषसे और दैवकी इच्छासे स्त्रियोंके होतेहैं उनके लक्षण पृथक् २ कहताहूं सुनो ॥

वातजयोनिरोग ।

साफेनिलमुदावृत्तारजःकृच्छ्रेणमुंचति । वंध्यांनष्टार्तवांविद्याद्विप्लुतांनित्यवेदनाम् ॥ परिप्लुतायांभवतिग्राम्यधर्मेणरुग्भृशम् । वातलाकर्कशास्तब्धाशूलनिस्तोदपीडिता ॥ चतसृष्वपिचाद्यासुभवंत्यनिलवेदनाः ॥

अर्थ-जिस योनिसे झाग मिला रुधिर बडे कष्टसे वहे उसको उदावृत्ता योनि कहते हैं और जिसका आर्त्तव नष्ट हो उसको वंध्या कहते हैं जिसके निरन्तर पीडा हो उसको विप्लुता कहते हैं जिसके मैथुन करनेमें अत्यन्त पीडा होय उसको परिप्लुता कहते हैं, जो योनि कठोर स्तब्ध होकर शूल तोदयुक्त होवे उसको वातला कहते हैं स्वस्वलक्षणसंयुक्त पित्तला श्लेष्मला योनि भी जाननी चाहिये और पहले जो चार योनि (उदावृत्ता, वंध्या, विप्लुता, परिप्लुता) कही हैं इनमें वातकी पीडा होती है और वातलामें वातकी पीडा विशेष होती है ॥

पित्तज योनिरोग ।

सदाहंक्षीयतेरक्तंयस्याःसालोहितक्षया । सवातमुद्गमेद्बीजंवामिनीरजसान्वितम् ॥ प्रस्रंसिनीभ्रंशतेगर्भक्षोभितादुष्प्रजायिनी । स्थितंस्थितंहंतिगर्भपुत्रघ्नीरक्तसंक्षयात् ॥ अत्यर्थंपित्तलायोनिर्दाहपाकज्वरान्विता । चतसृष्वपिचाद्यासुपित्तलिंगोच्छ्रयोभवेत् ॥

अर्थ-जिस योनिसे दाहयुक्त रुधिर वहे उसको लोहितक्षया कहते हैं, जिसमेंसे रजोयुक्त शुक्र वायु बराबर बहैं उसको वामनी कहते हैं जो योनि स्थान भ्रष्ट होय उसको प्रस्रंसिनी कहते हैं जिसमें अंग बाहर निकल आवे और यह विमर्दित करनेसे प्रसव योग नहीं होय है जिस योनिमें रुधिरक्षय होनेसे गर्भ न रहे उसको पुत्रघ्नी कहते हैं, जो योनि अत्यन्त दाह पाक (पकना) और ज्वर इन लक्षणों करके संयुक्त होय, उसको पित्तला कहतेहैं इनमें पहली चार (रक्तक्षया वामनी प्रस्रंसिनी और पुत्रघ्नी) इनमें पित्तके

लक्षण अधिक होते हैं, और पित्तलामें पित्तके विशेष लक्षण होते हैं और पित्तलामें जो ज्वर, दाह, पाक, कहे हैं सो उपलक्षण मात्र हैं अर्थात् इसमें नीला, पीला सफेद आर्त्तव बहता है ये जानना सो तंत्रान्तरोंमें लिखा है ॥

कफज और त्रिदोषज योनि।

अनार्तवास्तनीषंढीखरस्पर्शातुमैथुने । अतिकायगृहीताया स्तरुण्याःखंडिनीभवेत् । विवृतातिमहायोनिःसूचीवक्रातिसंवृता । सर्वलिंगसमुत्थानासर्वदोषप्रकोपजा ॥ चतसृष्वपिचाद्यासुसर्वलिंगनिदर्शनम् । पंचासाध्याभवंतीहयोनयःसर्वदोषजाः॥

अर्थ–जो स्त्री अनार्तवा, बडे स्तनवाली जिसको आर्तव कम है ऐसी, मैथुनके समय खर स्पर्शवाली ऐसी स्त्रीको खंडिनी कहते हैं, जिसकी योनि बडी है और विवृत मुखवाली है उसको महती[1] कहते हैं, जिसकी योनि संकुचित है उसको सूचिमुखी कहते हैं, उपर कहे सर्व लक्षण जिसमें होते हैं उसको त्रिदोषजा कहते हैं ऊपर कहे सर्व रोगोंमें त्रिदोषसे होनेवाले सर्व रोग असाध्य होते हैं ॥

---

१ व्यापल्लवणकट्वम्लक्षाराद्यैःपित्तजाभवेत्।दाहपाकज्वरोष्णार्तिनीलपीतासिताभवेत् ॥ यवनशास्त्रानुसारेणस्त्रीरोगाः।

रिहम्गर्भाऽऽशयस्तस्यहारं सुयुल्मिजाजतः । वारिदस्तवयामिस्वाहेतवःप्रतिबंधकाः ॥ १ ॥ तत्रापिद्विविधःसादेमाद्दीतिपरिकीर्तितः । तत्र योगंप्रतीकारंतत्रवैद्यः समाचरेत् ॥ २ ॥ गर्भेरिहमकोष्ठस्थासौदीसंगमवर्तिनी । गिल्जत् सौदत्तदर्हेज हिर्कत् चापिभृशंभवेत् ॥ ३ ॥ संभवैरिवकत्देरआमदन्हैज एव च । दाहामावैश्च शैत्यत्वं लिंगनिर्देश इत्यसौ ॥ ४ ॥ यकसत्संभवेमुष्मिन्वरांगेशोषणं रजः । सूक्ष्मं प्रवर्ततेशीतंपरंसौदाप्रकोपजम् ॥ ५ ॥ रत्तुवत् प्रभवेत्त्वस्मिन्मैलानारिहमुद्भवेत् । हेंइद्वारहेजनागेयंगर्भस्थितिघातका ॥ ६ ॥ कदाचिद्दैवयोगेनसम्भवेद्गर्भलक्षणम् । मासत्रयोत्तरं पातोरत्तूवत्संगतोध्रुवम् ॥ ७ ॥ मनीते नाशयेनैवविशोत्तिष्येन संयुता । सुरतावसरेतत्रवेदनाविघ्नकृद्भवेत् ॥ ८ ॥ संभोगानन्तरं नारीवेगादुत्तिष्ठतेद्द्रुतम् । रिहम्मुखान्मनीयातोबहिरेवम्भवेत्पुनः ॥ ९ ॥ अकरत् वंध्यत्वमाख्यातं मिपुनः स्याद्भिषग्वरैः । परीक्षणीयंसद्रीत्याप्रतिकार्ययथायथम् ॥ १० ॥ मनीहैजक्षिपेदप्सुभिन्नभिन्नंच संतरेत् । दूषितंतद्विजानीयात् तहन् शनिन दोषल ॥ ११ ॥ रिहम् हुष्ममयोदोषः प्रदराख्यां दद्यांरुजम् । औषधीकीचवदनीद्विविधांविदधात्ययम् ॥ १२ ॥ कस्याश्चिदंगनायास्तुप्रसवे संकटंभवेत् । अष्टमान्मासतस्तस्यैक्षीरंपातुंदिशेद्भिषक् ॥ १३ ॥ परिपाकाऽनुरूपंतद्रजसोद्रेककृन्न च । तद्विकृत्यारिहंदर्दभवेदुष्णेन वारिणा ॥ १४ ॥ जरायुसुखेंबंधेनमृतिर्भ्रूणस्ययोदरे । जनीनमोततत्प्रोक्तंशूल्यंशूल्यंविघातकृत् ॥ १५ ॥ अचलंजडवत्तिष्ठेन्नार्यसाक्षयकारकम् । इब्रजिस्तस्यकर्तव्योवनिताशर्मणेशनैः ॥ १६॥ हिमहस्तपदंतस्याः शीतबाधाभवेद्भृशम् । मन्दाग्निर्बलहानिश्चानुत्साहःश्वाससंभवः ॥ १७ ॥ व्यथागर्भाशयस्थातुमैथुनातिशयात्तथा । भवेद्रजोविकाराच्चप्रसूतेः प्रागनारतम् ॥ १८ ॥ दुष्टोपारोदुखारोस्याऽऽमभ्रूणंपातयत्यधः । समग्रविग्रहाभावमकालेपिचकल्पयेत् ॥ १९ ॥ द्वहतबासूतममुख्यं इस्तिस्काभ्रान्तिरेवच । अवलौ द्वौहृदाऽऽभावो भवेद्गर्भसमाकृतिः ॥ २० ॥ प्रदरोन्यःसमाख्यातोऽसमयेर्वाक्स्वमासतः । हैजजारीशवद्रक्तपीतवर्णाविमिश्रितम् ॥ २१ ॥ अनामुखोव्रणोघोरः सतांनिरिहमःस्मृतः । कर्कीकारःकठोरःस्याच्छोथतःसचिरंतनात् ॥ २२ ॥ अन्येऽप्यत्रविकारायेतन्केयाखिन्नकोपजत् । तत्क्रियत् चापितवईविधेयाविविधाऽगदैः ॥ २३ ॥ इति

---

१ एते श्लोकाः शुद्धा वा अशुद्धावेति न शक्ता विवेक्तुं वयम् ।

योनिव्यापच्चिकित्सा।

योनिव्यापत्तुभूयिष्ठंशस्यतेकर्मवातजित्।
स्नेहस्वेदनबस्त्यादिविशेषाद्वातजासुच ॥

अर्थ--योनिव्यापत्ति अर्थात् योनिरोगमें विशेष करके संपूर्ण वातनाशक कर्म करे, जैसे स्नेहन, स्वेदन और बस्तिकर्म आदि ये कर्म सर्व योनिके रोगोंमें करे तथापि वातजन्यमें तो अवश्यही करे ॥

प्रकारांतरसे यत्न।

स्निग्धस्विन्नांतथायोनिंदुःस्थितांस्थापयेत्समाम्। मधुरौषध संसिद्धान्वेसवारांश्चयोनिषु ॥ निक्षिप्यधारयेच्चापिपिचुतैलंय थाबलम्। योनिशूलरुजादौस्थ्यशोफस्रावप्रशांतये ॥

अर्थ--प्रथम योनिको स्नेहन करे, फिर स्वेदन कर बाहर निकल आने आदिसे बिगड रहीहै उसको भीतर अपने स्थानपर ठीक करे तथा तेलमें रुई-का फोहा भिगोकर योनिमें धारण करे तो योनिका शूल, पीडा, योनिकी दुष्टता, सूजन और योनिका बहना बंद होय ॥

प्रयोगांतर।

वचावाकुंचिकाजाजीकृष्णावृषभसैंधवम्। अजमोदायवक्षार चित्रकंशर्करान्वितम् ॥ पिष्ट्वाप्रसन्नयालोड्यखादेत्तद्घृतभर्जि तम्। योनिपार्श्वार्तिहृद्रोगगुल्माशोंविनिवृत्तये ॥

अर्थ--वच, कलौंजी, जीरा, पीपल, अडूसा, सैंधानिमक, अजमोद, जवाखार, चित्रक और खांड इनको समान भाग पीस प्रसन्ना (दारुकी किश्म) में मिलायके घीमें भूनके खाय तो योनिकी पसवाडेकी पीडा हृदयरोग, गोला और बवासीरको दूरकरे ॥

रास्नादि योग।

रास्नाश्वगंधावृषकैर्योनिशूलहरंपयः।
गुडूचीत्रिफलादंतीक्काथैश्चपरिषेचनम् ॥

अर्थ--रास्ना, असगंध और अडूसा इनके चूर्णको दूधमें डालके पीवे तो योनिशूल नष्ट होय तथा गिलोय, हरड, बहेडा, आँवला और दंती इनके काथसे योनिको सेके तो पीडा जाय ॥

विप्लुताकी चिकित्सा।

नतवार्ताकिनीकुष्ठसैंधवामरदारुभिः। तैलात्प्रसाधितोधार्यः पिचुर्योनौरुजापहः। विप्लुतायांसदायोनौव्यथातेनप्रशाम्याति॥

अर्थ-छड, भटकटाई, कूठ, सैंधानिमक, देवदारु, इनके कल्कसे तेल सिद्धकर इसमें रूईका फोहा भिगोकर योनिमें रखे तो विप्लुता योनिकी पीडा तत्काल शांति होय॥

वातजयोनि।

तासुयोनिषुचाद्यासुस्नेहादिक्रमइष्यते।
बस्त्यभ्यंगपरीषेकप्रलेपाःपिचुधारणम्॥

अर्थ-वातजन्य योनियोंमें स्नेहन, स्वेदन, आदि क्रम करे तथा बस्ती, मालिश, परिषेक, लेप और फोहेका रखना आदि कर्मोंको करे॥

योनिशूलपर।

बिल्वमार्गवजंबीजंकल्कंमद्येनपाययेत्।
तेनयोनिगतंशूलमाशुशाम्यतियोषिताम्॥

अर्थ-बेल और ओंगेके बीजोंका कल्क मद्यके साथ पिलानेसे योनिक, शूल बहुत जल्दी दूर हो॥

कफात्मकयोनिपर।

सुरामंडोभितोधार्यःपिचुर्योनौकफात्मिके।
कंडूपैच्छिल्यसंस्रावशैथिल्यविनिवृत्तये॥

अर्थ-कफकी योनिव्यापत्तीमें मद्य, मंडमें भीगे फोहाको योनिमें रखे, तो खुजली, लिबलिबाट (क्लिसासा) रहना,वहना और शिथिलता आदि नष्ट होय॥

योनिदुर्गंधपर।

सुगंधानांपदार्थानांकल्कचूर्णकृतैःकृतः।
योनौदौर्गंध्यशमनःपूयपैच्छिल्यभांजिच॥

अर्थ-सुगंधित पदार्थोंके कल्क अथवा चूर्ण योनिमें रखे तो योनिकी दुर्गंधता दूर होय॥

सन्निपातजयोनिरोगचिकित्सा।

सन्निपातसमुत्थायांकार्यायोन्यापदिक्रिया॥

अर्थ--सन्निपातकी योनिरोगमें वातपित्तकफजन्य तीनोंकी मिली चिकित्सा करे तो शांति होय ॥

साधारणोदशांघ्रिश्रीमदक्काथपिचुर्हितः ॥

अर्थ-इसमें साधारण यत्न यह है कि दशमूल, भद्रमोथा, इनके काथमें भिगोया पिचु फोहा हितकारक कहा है ॥

पित्तलायोनिकी चिकित्सा ।

पित्तलानांतुयोनीनांसेकाभ्यंगपिचुक्रिया ।
शीताःपित्तहराःकार्याःस्नेहनार्थंघृतानिच ॥

अर्थ--पित्तजन्य योनिके रोगमें यावन्मात्र जल डालना, तेलकी मालिश, फोहेका रखना इत्यादि सब कर्म शीतलही करे तथा पित्तहरण कर्त्ता कर्म करे, तथा स्नेहन कर्ममें घृत लेने चाहिये तेल नहीं ॥

दाह और पाकका यत्न ।

पिचवश्चघृताभ्यक्ताश्चंदनांभःसमुक्षिताः ।
योनौस्थाप्याःस्त्रियादाहकृच्छ्रपाकप्रशांतये ॥

अर्थ-घृतसे सने रुईके फोहे और उनपर चंदनका जल छिडकर स्त्रीयोनिमें रखे तो दाह और घोर योनिपाक दूरहो ॥

कफदुष्ट योनीपर सामान्य चिकित्सा ।

योन्यांबलासजुष्टायांसर्वंरूक्षोष्णमौषधम् ।
तैलंसाधुयवान्नंचपथ्यारिष्टंचयोजयेत् ॥

अर्थ-कफदूषित योनिपर सर्व रूक्ष और उष्ण चिकित्सा करनी चाहिये तेल, यव, हरड, और अरिष्ट आदि देने चाहिये ॥

पिप्पल्यामरिचैर्माषैःशताह्वाकुष्ठसैंधवैः ।
वर्तिस्तुल्याप्रदेशिन्याधार्यायोनिविशोधिनी ॥

अर्थ-पीपल, मरिच, उडद, सतावर, कूठ, और सैंधानिमक इनको पीस छोटी ऊंगलीके समान बत्ती बनायके योनिमें रखे तो योनि शुद्ध होय ॥

प्रस्रंसिनी योनिकी चिकित्सा ।

प्रस्रंसिनींघृताभ्यक्तांक्षीरस्विन्नांप्रवेशयेत् ।
विधायवेसवारेणततोबंधंसमाचरेत् ॥

अर्थ-जो योनि बाहरको निकल आई हो उसपर घी लगाय और दूधका वाफारा देकर भीतरको प्रवेश करे, फिर वेसवार (गरम मसाला) भरके उसको लंगोटसे कस देवे ॥

पूयस्राविणी योनिकी चिकित्सा।

योन्यांतुपूयस्राविण्यांशोधनद्रव्यनिर्मितैः।
सगोमूत्रैःसलवणैःपिंडैःसंपूरणंहितम् ॥

अर्थ-जिस योनिमेंसे राध वहती होय उसमें शोधन द्रव्योंसे और गोमूत्र तथा निमक आदिकी पिंडीसे योनिको पूरण करे अर्थात् भरे ॥

खुजलीका यत्न।

गुडूचीत्रिफलादंतीक्वथितोदकधारया।
योनिंप्रक्षालयेत्तेनतत्रकंडूप्रशाम्यति ॥

अर्थ-जिसके योनिमें खुजली चलची होय उसको गिलोय, त्रिफला और दंती इनके गरम गरम काथकी धार डालके धोवे तो खुजली शांति होय।

योनिसंकोचन।

मुद्गपुष्पंसखदिरंपथ्याजातीफलंतथा। वृकीपूगंचसंचूर्ण्यवस्त्र पूतंक्षिपेद्भगे ॥ योनिर्भवतिसंकीर्णानस्रवेच्चजलंततः ॥

अर्थ-मूंगका फूल, खैरसार, हरड, जायफल, पाठा, और सुपारी इनका कपडछन बारीक चूर्ण करके भगमें रखे तो योनि अत्यंत संकुचित (छोटी) होय कि जिसमेंसे जलभी न निकले ॥

कपिकच्छूभवंमूलंक्वाथयेद्विधिनाभिषक्।
योनिःसंकीर्णतांयातिक्वाथेनानेनधावनात् ॥

अर्थ-कौंछकी जडका काथ करके वैद्य योनिको धुलावे तो योनि अत्यंत संकुचित होय ॥

वातलाआदिकी चिकित्सा।

वातलांकर्कशांस्तब्धामल्पस्पर्शांतथैवच। कुंभीस्वेदैरुपचरे दंतर्वेश्मनिसंवृते ॥ धारयेद्वापिचुंयोनौतिलतैलस्यसर्वदा ॥

अर्थ-वातलायोनि, कर्कशायोनि, स्तब्धायोनि और अल्पस्पर्शायोनिमें कुंभीस्वेद(जो स्वेदनाध्यायमें कह आयेहैं) करे परंतु यह मकानके भीतर करे जो चारों तरफसे ढकाहुआहो अथवा तिलीके तेलका फोहा भिगोकर भगमें रखे॥

योनिशूलपर ।

उपकुंचिकांपिप्पलींचमदिरांलाभतःपिबेत् ।
सौवर्चलेनसंयुक्तंयोनिशूलनिवारणम् ॥

अर्थ--कलौंजी, पीपल और कालानिमक इनका चूर्ण डालके मद्य (दारु) पीवे तो योनिशूल नष्ट होय ॥

योनिदाहपर ।

धात्रीरसंसितायुक्तंयोनिदाहेपिबेत्सदा ।
सूर्यक्रांताभवंमूलंपिबेद्वातंडुलांबुना ॥

अर्थ--योनिदाहमें यह स्त्री खांडको आमलेके रसमें मिलायके पीवे अथवा ∵ र्यक्रांताकी जडको चाँवलके धोवनके साथ पीवे तो योनिदाहशांति होय ॥

नष्टार्तवचिकित्सा ।

आर्तवादर्शनेनारीमत्स्यान्सेवेतनित्यशः ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके रजोदर्शन न होता होय वह नित्य छोटी मछलियोंका सेवन कराकरे ॥

प्रकारांतर ।

कांजिकंचतिलान्माषानुदश्विच्चतथादधि । पीतंज्योतिष्मती
पत्रंराजिकोग्रासनंत्र्यहम् । शीतेनपयसापिष्टंकुसुमंजनयेद्ध्रुवम्॥

अर्थ–कांजी, तिल, उडद, उदश्वित् (छाछका भेद) दही, मालकांगनीके पत्ते, राई,वच और विजेसार इनको शीतल दूधके साथ पीसके पीवे तो रजोदर्शन निश्चय होय ॥

तिलगुडयोग ।

सगुडःश्यामतिलानांक्काथःपीतःसुशीतलोनार्याः ।
जनयतिकुसुमंसहसागतमपिसुचिरंनिरातंकम् ॥

अर्थ–काले तिल और गुडका क्काथकर जब शीतल होजाय तब पीवे तो बहुत दिनका गयाहुआ भी नष्टार्तव फिर निकलने लगे ॥

दूसरा प्रयोग ।

तिलशेलुकारवीनांक्काथंपीत्वानष्टरजामहिला ।
शिशिरंसगुडंत्रिदिनाज्जनयतिकुसुमंनसंदेहः ॥

अर्थ–तिल, लिसोडा और कलौंजी इनका क्काथकरे जब शीतल होजाय तब गुड डालके तीन दिन पीवेतो अवश्य रजोदर्शन होय ॥

वर्त्ती।

इक्ष्वाकुबीजदंतीचपलागुडमदनकिण्वयावशुकैः।
सस्नुक्क्षीरैर्वर्तिर्योनिगताकुसुमसंजननी॥

अर्थ-तोरईके बीज, दंती, पीपल, गुड, मैनफल, किण्व (सरावकाभेद) और जवाखार इनको बारीक पीस थूहरके दूधमें पीसके वत्ती बनाय योनिमें रखेतो रजोदर्शन होय॥

योनिकंद।

दिवास्वप्नादतिक्रोधाद्व्यामादतिमैथुनात्। क्षताच्चनखदंताद्यैर्वाताद्याःकुपितायदा॥ पूयशोणितसंकाशंलकुचाकृतिसन्निभम्। उत्पद्यतेतदायोनौनाम्नाकंदःसयोनिजः॥

अर्थ-दिनमें सोनेसे, अतिक्रोध करनेसे, बहुत फिरनेसे, अति मैथुनसे, नख दंतों करके क्षत होनेसे, वातादि दोष कुपित हो करके योनिमें पूय और शोणितका लकुचफलके आकारका कंद उत्पन्न होता है उसको योनिकंद कहते हैं॥

वातयोनिकंद।

रूक्षंविवर्णंस्फुटितंवातिकंतंविनिर्दिशेत्॥

अर्थ-उसमें वातका दोष अधिक होय तो रूक्ष, निस्तेज और स्फुटित ऐसा कंद होता है॥

योनिकंदचिकित्सा।

गैरिकाम्रास्थिजठररजन्यंजनकट्फलाः। पूरयेद्योनिमेतेषां चूर्णैःक्षौद्रसमन्वितैः॥त्रिफलायाःकषायेणसक्षौद्रेणचयेसचेत्। प्रमदायोनिकंदेनव्याधिनापरिमुच्यते॥

अर्थ-गेरू, आमकी गुठलीका मगज, हलदी, सुरमा और कायफल इनका बारीक चूर्णकर सहतमें सानके इसको योनिमें भरे। अथवा त्रिफलेके काथमें सहत डालके योनिमें तरडा देवे तो स्त्री योनिकंदरोगसे छूट जाय॥

दूसरा यत्न।

आखोर्मांसंसपदिबहुधासूक्ष्मखंडीकृतंतत्तैलेपाच्यंद्रवतिनियतंयावदेतेनसम्यक्। तत्तैलाक्तंवसनमनिशंयोनिभागेदधाना सत्यंव्रीडाजनकमबलायोनिकंदंनिहंति॥

अर्थ–मूसेके मांसके बारीक टुकडे करके तेलमें पचावे, जब परिपक्व हो जाय तब उतार लेवे, इसमें कपडेको भिगोकर जो स्त्री नित्य योनिमें रक्खे तो लज्जाकारी योनिकंद निश्चय दूर हो॥

कफयोनिकंद।

नीलपुष्पप्रतीकाशंकंडूमंतंकफात्मकम्॥

अर्थ–कफदोष अधिक होनेसे नीलवर्णका और खाजवाला ऐसा कंद होता है॥

पित्तयोनिकंद।

दाहरागज्वरयुतंविद्यात्पित्तात्मकंतुतम्॥

अर्थ–पित्तदोषसे दाह करनेवाला, लाल वर्णका, ज्वरयुक्त ऐसा कंद होता है॥

सन्निपातात्मक योनिकंद।

सर्वलिंगसमायुक्तंसन्निपातात्मकंवदेत्॥

अर्थ–वातपित्तकफोंके लक्षण एकत्र मिलें तो सन्निपातात्मक है ऐसा जानना॥

गुडूचीत्रिफलादंतीक्काथेनपरिपेषितैः। पिप्पलीमरिचैर्दोषैः श ताह्वाकुष्टसैंधवैः।वर्तिस्तुल्याप्रदेशिन्याधार्यायोनिविशोधनी॥

अर्थ–गिलोय, त्रिफला, दंती, पीपल, काली मिरच, हलदी, सतावर, कूठ और सैंधानिमक ये समान भाग ले बारीक पीस जलके साथ छोटी उंगलीके समान बत्ती बनावे इसको योनिमें रखनेसे योनि शुद्ध होय॥

योनिकंदपरलेप।

मिष्टजंबूकसंपिष्टंपक्कंतित्तिडिसंयुतम्।
लेपमात्रेणनारीणांयोनिकंदहरंपरम्॥

अर्थ–मीठे जामुन और पकी इमली दोनोंको समान भाग पीस लेप करे तो योनिकंद रोग दूर होय॥

गर्भिणीके रोगोंकी चिकित्सा मधूकादिकाढा गर्भिणीके ज्वरपर।

मधूकचंदनोशीरसारिवायष्टिपद्मकैः।
शर्करामधुसंयुक्तःकषायोगर्भिणीज्वरे॥

अर्थ–मुहआ, चंदन, खस, सारिवा, मुलहटी, पद्माख, इनके क्काथमें मिश्री और सहत डालके पीवे तो गर्भवती स्त्रीका ज्वर दूर होय॥

ज्वरपर दूसरा क्काथ।

चंदनंसारिवालोध्रमृद्वीकाशर्करान्वितम्।

क्काथंकृत्वाप्रदद्याच्चगर्भिणीज्वरशांतये ॥

अर्थ–चंदन, सारिवा, लोध, मुनक्कादाख और मिश्री इनका काथ करके पीवे तो गर्भिणीका ज्वर शांत होय ॥

तीसरा क्काथ ।

पयस्यासारिवापाठातोयतोयदनागरैः ।
शृतंशीतंपिबेद्वारिगर्भिणीज्वरवारणम् ॥

अर्थ–क्षीरकाकोली, सारिवा, पाढ, नेत्रवाला, नागरमोथा, और सोंठ, इनका काथकर शीतल होनेपर पीवे तो गर्भवतीका ज्वर शांत होय ॥

पित्तज्वरपर ।

मृद्वीकापद्मकोशीरश्रीपर्णीचंदनंतथा । मधुकंचपयस्याचसा रिवामलकंतथा ॥ पित्तज्वरहरःक्काथोगर्भिणीनांप्रशस्यते ॥

अर्थ–दाख, पद्माख, खस, कायफल, चंदन, महुआ, क्षीरकाकोली, सारिवा और आमले इनका क्काथ गर्भवतीके पित्तज्वरको शांत करे है ॥

विषमज्वरपर ।

पीतंविश्वमजाक्षीरैर्नाशयेद्विषमज्वरम् ॥

अर्थ–सोंठका चूर्ण, गरम बकरीके दूधसे पीवे तो विषमज्वर दूर होय ॥

ज्वरातिसार आदिपर ।

ज्वरातिसारेगर्भिण्याःशस्तंसामेसशोणिते । समंगामधुकंलो ध्रफाणितंशर्करान्वितम् । प्रवाहिकायांगर्भिण्यांशस्तंसामेस शोणिते ॥

अर्थ–लजालू, मुलहटी, लोध इनके फांटमें मिश्री मिलायके पीवे तो गर्भवतीकी प्रवाहिका कि जो आम और रुधिरयुक्त है नष्ट होय ॥

ग्रहणीपर ।

आम्रजंबूत्वचःक्काथैर्लेहयेल्लाजसक्तुकम् ।
अनेनलीढमात्रेणगर्भिणीग्रहणींजयेत् ॥

अर्थ--आम जामुनकी छालके क्काथमें, खीलोंका सत्तु मिलायके चाटे तो गर्भवतीकी संग्रहणी दूर होय ॥

गर्भवतीके छर्दि और अतिसारपर ।

शुंठीबिल्वकषायंतुयवसक्तुसमन्वितम् ।

गर्भिणींपाययेद्वैद्यश्छर्द्यतीसारनाशनम् ॥

अर्थ–सोंठ, बेलगिरी दोनोंका क्वाथ कर उसमें जौंका सत्तू मिलायके पीवे तो गर्भवतीको वमन होना और अतिसार नष्ट होय ॥

कामला सूजनआदिपर।

पृश्निपर्णीबलावासानिर्यूहोरक्तपित्तजित्।
गर्भिण्याःकामलाशोथकासश्वासज्वरापहः ॥

अर्थ--पिठवन, खिरेटी और अडूसा इनका यूष बनायके पीवे तो गर्भवतीके रक्तपित्त, कामला, सूजन, खांसी, श्वास और ज्वर ये दूर हो ॥

वांतीपर।

कुस्तुंबरीणांकल्कंतुतंदुलोदकसंयुतम्।
पिबेत्सशर्करंहृद्यंगर्भिणीछर्दिवारणम् ॥

अर्थ–धनियेके कल्कको चांवलके धोवनमें मिलाय, मिश्री डालके पीवे तो हृदयको हितकरे तथा गर्भवतीकी वमनको दूर करे ॥

खांसी श्वासपर।

बिल्वमज्जाबलाजांबुपिबेच्छर्दिषुगर्भिणी।
भार्ङ्गीशुंठीकणाचूर्णगुडेनश्वासकासजित् ॥

अर्थ–बेलगिरी, खिरेटी, जामुनकी छाल, इनके क्वाथको पीवे तो गर्भवतीकी वमन होना दूर हो। अथवा, भारंगी, सोंठ, पीपल इनके चूर्णमें गुड डालके खाय तो गर्भवतीका श्वास खाँसी दूर हो ॥

वायूपर।

बिल्वाग्निमंथपक्कंवापाटल्यानागरेणवा।
सिद्धमंबुपिबेच्छीतंगर्भिणीवातरोगनुत् ॥

अर्थ–बेलगिरी, अरनी इनसे परिपक्क करा अथवा पाड़र और सोंठ डालके सिद्ध करा हुआ शीतल जल पीवे तो गर्भवतीके वादीके सर्व रोग दूर हो ॥

सूजनपर लेप।

चंदनंमधुकोशीरनागपुष्पंतिलास्तथा ॥ अजशृंगीचमंजिष्ठा
रविमूलंपुनर्नवा। श्रेष्ठःशोफहरोलेपोगर्भिणीनांविशेषतः ॥

अर्थ–चंदन, मुलहटी, खस, नागकेशर, तिल, मेढासिंगी, मजीठ, आककी जड और सांठ इनको पीस लेप करे तो गर्भवतीकी सूजन दूर होय ॥

गर्भविलासरस।

रसश्चगंधकस्तुत्थंत्र्यहंजंबीरमर्दितम् ॥ त्रिभावितंत्रिकटुना देयंगुंजाचतुष्टयम्। गर्भिण्याःशूलविष्टंभज्वराजीर्णेषुकेवलम् ॥

अर्थ-पारा, गंधक, लीलाथोथा इन तीनोंको समान भागले बारीक पीस जंभीरी नींबूके रसकी ३ भावना देवे, फिर सोंठ, मिरच और पीपलके साथ ४ रत्ती खानेको देय तो गर्भवतीका शूल, विष्टंभ, ज्वर और अजीर्ण ये दूर हो॥

मंदाग्नि पर।

अजमोदंनागरंचपिप्पलीजीरकंसमम्।
तच्चूर्णंसगुडंक्षौद्रंगर्भिण्यावन्हिदापनम् ॥

अर्थ--अजमोद, सोंठ, पीपल, जीरा, समान भाग ले चूर्ण करे, गुड और सहतमें मिलायके खाय तो गर्भवतीकी जठराग्नि दीपन होय॥

गर्भपातोपद्रवचिकित्सा गर्भशूलपर।

स्निग्धशीताःक्रियास्तेषुदाहादिषुसमाचरेत्। कुशकाशोरुबूकानांमूलैर्गोक्षुरकस्यच। शृतंदुग्धंसितायुक्तंगर्भिण्याःशूलहृत्परम् ॥

अर्थ-गर्भवतीके दाहादि रोगोंमें सचिक्कण और शीतल क्रिया करनी चाहिये। जैसे, कुसा, कांस, अडंकी जड और गोखरू इनको दूधमें डालके औटावे फिर उसमें मिश्री मिलायके पीवे तो गर्भवतीका शूल नष्ट होय॥

पीडापर।

श्वदंष्ट्रामधुकद्राक्षाम्लानैःसिद्धंपयःपिबेत्।
शर्करामधुसंयुक्तंगार्भिणीवेदनाहरम् ॥

अर्थ--गोखरू, मुलहटी, दाख, बाणपुष्प इनसे सिद्ध करे दूधमें मिश्री सहत डालके पीवे तो गर्भवतीकी पीडा नष्ट होय॥

प्रदरपर।

मृत्कोष्टगारिकागेहसंभवानवमल्लिका। समंगाधातकीपुष्पं गैरिकंचरसांजनम् ॥ तथासर्जरसश्चैतान्यथालाभंविचूर्णयेत्। तच्चूर्णंमधुनालिह्यान्नारीप्रदरशांतये ॥

अर्थ-भृंगीके घरकी मिट्टी, लजालू, धायके फूल, गेरू, रसोंत और राल, ये समान भाग ले चूर्ण करे, इस चूर्णको सहतमें मिलायके चाटे तो स्त्रीका प्रदर रोग शांत होय॥

आनाह वायुपर।

पक्वंवचारसोनाभ्यांहिंगुसौवर्चलान्वितम्।
आनाहेषुपिबेद्दुग्धंगार्भिणीसुखिनीभवेत्॥

अर्थ–वच, लहसन, हींग और काला निमक इनको डालके दूध औंटावे, वह पीनेसे गर्भवतीका अफरा नष्ट होकर सुखी होय॥

मूत्ररोधपर।

तृणपंचकमूलानांकल्केनविपचेत्पयः।
तत्पयोगुर्विणीपीत्वामूत्रसंगाद्विमुच्यते॥

अर्थ–तृणपंचककी जडके कल्कसे दूधको पचायके पीवे तो गर्भवतीका मूत्ररोध दूर होय॥

दूसरा यत्न।

शालीक्षुकुशकाशैःस्याच्छरेणतृणपंचकम्।
एषांमूलंतृषादाहपित्तासृङ्मूत्रसंगहृत्॥

अर्थ–शालीचावल, कुशा, कांस, सरपला और ईख इन पांचोंकी जडको तृणपंचक कहते हैं यह तृषा, दाह, रक्तपित्त और मूत्ररोध दूर हो॥

अतिसारपर।

कशेरुशृंगाटकपद्मकोत्पलंसमुद्गपर्णीमधुकंसशर्करम्।
सशूलगर्भासृतिपीडिताबलापयोविमिश्रंपयसान्नभुक्पिबेत्॥

अर्थ–कसेरू, सिंघाडे, पद्माख, कमल, मुद्गपर्णी, मुलहटी, इनमें खांड मिलायके पीवेतो पीडासहित गर्भगिरनेकी बाधाको दूरकर इस दूधमिलायले और दूधभातकी ही पथ्य करे॥

प्रथम महिनेकी चिकित्सा।

चलनंप्रथमेमासिगर्भस्ययदिजायते। औषधंचतदादेयंविचक्षणभिषग्वरैः॥ मृद्वीकाज्येष्ठिकाचैवचंदनंरक्तचंदनम्। गवांचपयसापेयंस्थिरताजायतेध्रुवम्॥

अर्थ–यदि गर्भवतीका पहले महीनेमें गर्भस्राव होता होयतो यह औषध देवे, मुलहटी, दाख, चंदन, लालचंदन इनको गौके दूधमें मिलायके पीवेतो गर्भ स्थिर होय॥

उपायांतर।

नीलोत्पलंसवालंचशृंगाटंचकशेरुकम्। शीततोयेनपिष्ट्वातुक्षीरेणालोड्यतत्पिबेत्। एवंनपततेगर्भःसचशूलःप्रशाम्यति ॥

अर्थ–नीलाकमल सुगंधवाला, सिंघाडे, कसेरू, इनको शीतल जलमें पीस दूधमें मिलायके पीवेतो गर्भपात नहीं होय और पेटका दर्द दूर होय ॥

दूसरे महिनेकी चिकित्सा।

द्वितीयेमासिगर्भस्यचलनंचभवेद्यदि। पयसाचतदापेयंमृणालंनागकेशरम् ॥ वेदनायाम् ॥ तगरंकमलंबिल्वंकर्पूरेणसमन्वितम्। अजाक्षीरेणतत्पिष्ट्वाक्षीरेणालोड्यपूर्ववत् ॥

अर्थ–यदि गर्भवतीका दूसरे महिने गर्भचालन होयतो नागकेशरके चूर्णको दूधके साथ पीवे पेटमें दर्द होता होयतो, तगर, कमल, बेलगिरी और कपूर इनको बकरीके दूधमें पीस दूधमें मिलायके पीवे ॥

तीसरे महीनेकी चिकित्सा।

तृतीयेमासिचलनंजायतेगर्भजंयदि। पयसालोडितंपेयंशर्करानागकेसरं॥वेदनायाम्॥ पद्मकंचंदनंचैववालकंपद्मनालकम्॥ पिष्ट्वाशीतेनतोयेनक्षीरेणालोड्यतत्पिबेत् ॥ एवं नपततेगर्भः सचशूलःप्रशाम्यति ॥

अर्थ–यदि तीसरे महीने गर्भ गिरनेको होयतो नागकेशर और मिश्रीके चूर्णको दूधमें मिलायके पीवे, यदि पीडा होती होयतो, पद्माख, चंदन, सुगंधिवाला, कमलकी नाल, इनको शीतल जलके साथ पीस दूधमें मिलायके पीवेतो गर्भका गिरना और दर्द होना दूरहो ॥

चतुर्थ महिनेका यत्न।

यदिगर्भस्यचलनंचतुर्थेमासिजायते। तृष्णाशूलविदाहैश्चज्वरेणचनिपीडनम् ॥ क्षीरंचकदलीमूलमुत्पलंवालकंतथा। आलोडयसमभागेनपिबेद्रोगोपशांतये ॥

अर्थ–यदि चतुर्थ महिनेमें गर्भ गिरता होय तो उसके यह लक्षण हैं तृषा लगे, शूलहो, दाह ज्वरसे पीडित होवे उसको केलेकीजड, कमलगट्टा, सुगंधवाला जलसे बारीक पीस दूधके साथ पीवेतो गर्भगिरता रुके ॥

पंचममहिनेकी चिकित्सा।

पंचमेमासिगर्भस्यचलनंकुत्रचिद्भवेत्। दध्नाचमधुनापेयंदाडि
मीपत्रचंदनम् ॥ नीलोत्पलंमृणालंचकोलाक्षीरंतथैवच। के
सरंपद्मकंचैवतोयेनालोड्यतत्पिबेत् ॥ एवंनपततेगर्भःसच
शूलःप्रशाम्यति ॥

अर्थ--यदि गर्भपात पांचवे महिनेमें होय तो अनारके पत्ते और चंदनको पीस दही और सहतमें मिलायके पीवे, तथा नीलकमल, कमलकी डंडी, वेर, दूध, नागकेशर और पद्माख इनको जलसे पीसके पीवे तो गर्भ नहीं गिरे और गर्भका शूल नष्ट होय॥

छटे महिनेकी चिकित्सा।

षष्ठेमासेतुगर्भस्यचलताजायतेयदा। गैरिकंगोमयंभस्मकृ
ष्णामृत्स्नातथैवच॥ एतत्प्रसाधितंप्राज्ञभिषजाचशृतंतदा॥
पेयंशीतंचपयसासितयाचंदनेनच॥

अर्थ--यदि छटे महिने गर्भका पात होता होय तो गेरू, आरने उपलोंकी भस्म, काली मिट्टी, इनका क्वाथकर शीतल होनेपर दूधसे पीवे। अथवा शीतल दूधमें मिश्री और चंदन मिलायके पीवे॥

सप्तम महिनेकी चिकित्सा।

सप्तमेमासिगर्भस्यचलनंजायतेयदा। उशीरगोक्षुरघनःसमं
गानागकेशरम्। सपद्मकंसमधुरंपाययेच्चविचक्षणः॥

अर्थ--यदि सातवे महिनेमें गर्भपातका भय होय तो, खस, गोखरू, नागरमोथा, लजालू नागकेशर और पद्माख इनके चूर्णमें मिश्री मिलायके पीवे तो गर्भका गिरना दूर होय॥

अष्टम महिनेकी चिकित्सा।

अष्टमेमासिगर्भस्यचलनंजायतेयदा।
लोध्रमागधिकाचूर्णमधुनापयसापिबेत्॥

अर्थ--यदि आठवे महिनेमें गर्भ गिरनेका भय होय तो लोध, पीपल छोटी इनके चूर्णको सहत और दूधके साथ पीवे॥

नवम महिनेकी चिकित्सा।

नवमेसुप्रसूतिःस्यादेवंगर्भस्यपोषणम्॥

अर्थ-नवम महीनेमें प्रसूति अर्थात् स्त्रीके बालक उत्पन्न होता है इस प्रकार गर्भका पोषण होता है ॥

गूढगर्भनिदान ।

भयाभिघाततीक्ष्णोष्णपानाशननिषेवणात् ।
गर्भेपततिरक्तस्यसशूलंदर्शनंभवेत् ॥

अर्थ-भय होनेसे, अभिघात (चोट) लगनेसे, तीक्ष्ण और उष्ण भोजनका सेवन करनेसे रक्त कुपित होकर गर्भको टेढा करता है और योनिमें शूल उत्पन्न करता है ॥

स्राव और पातके लक्षण ।

आचतुर्थात्ततोमासात्प्रस्रवेद्गर्भविद्रवः ।
ततःस्थिरशरीरस्यपातःपंचमषष्ठयोः ॥

अर्थ-चवथे मास पर्यंत गर्भ पतली अवस्थामें होनेसे जो स्रवे उसे स्राव कहते हैं और चौथे महीनासे लेकर पाँचवे छठे महीनेपर स्राव और शरीर बननेपर निकले उसे पात कहते हैं ॥

गर्भोभिघातविषमासनपीडनाद्यैःपक्कंद्रुमादिवफलंपततिक्षणेन ॥

अर्थ-अभिघात (चोट) विषमाशन (विषम भोजन) पीडनादिक इन कारणोंसे जेसे पका हुआ फल वृक्षसे चोट लगनेसे क्षणभरमें गिरजाताहै, इसी प्रकार गर्भ अभिघातादि करणोंसे गिरताहै ॥

गर्भपातके उपद्रव ।

प्रस्रंसमानेगर्भेस्याद्दाहःशूलश्चपार्श्वयोः ।
पृष्ठंगुरुप्रदरानाहौमूत्रसंघश्चजायते ॥

अर्थ-गर्भके पतन होनेसे सर्वांगका दाह, पार्श्वमें शूल, पृष्ठभागमें गुरुता, प्रदररोग, आनाह (मल मूत्रका अवरोध) और बहुमूत्रता ये रोग होते हैं ॥

मधुकंशाकबीजंचपयस्यासुरदारुच । अश्मंतकःकृष्णतिला स्ताम्रवल्लीशतावरी ॥ वृक्षादनीपयस्याचलताचोत्पलसारि वा । अनंतासारिवारास्नापद्मामधुकमेवच ॥ बृहतीद्वयका श्मर्यःक्षीरीशृंगास्त्वचोघृतम् । पृश्निपर्णीबलाशिग्रुश्वदंष्ट्राम धुपर्णिका ॥ शृंगाटकंबिसंद्राक्षाकशेरुर्मधुकंसिता । सप्तैतान्प यसायोगानर्धश्लोकसमापनान् ॥ क्रमात्सप्तसुमासेषुगर्भस्रव

तियोजयेत्। एताऔषधयःकर्षमिताःशीततोयेनसंपिष्यपल
मितेनदुग्धेनालोडिताःपातव्याः॥

अर्थ–मुलहटी, सागोनके बीज, क्षीरकाकोली, देवदारु। अश्मंतक वृक्षकी छाल, काले तिल, मजीठ, सतावर।वंदा, क्षीरकाकोली, नीलकमल, सारिवा। धमासो, रास्ना,सारिवा पद्माख और मुलहटी।छोटी कटेरी,बडी कटेरी,कंभारी, क्षीरयुक्त वृक्षोंकी छाल और घृत। पृष्टपर्णी, खिरेंटी, सहँजनेकी छाल, गोखरू और मधुपर्णी। सिंघाडे, मसीडा, दाख, कसेरू, मुलहटी और मिश्री ये सात योग पृथक् २ कहे हैं इनमेंसे किसी एक योगकी औषधोंको बारीक पीसके क्रमसे, पहले दूसरे तीसरे महिने आदि सात महिनेवाली स्त्रीके गर्भस्रावपर देवे तो गर्भ गिरता रुक जावे। यह औषध सब एक तोले लेवे, शीतल जलसे पीस १ छटाक दूधमें मिलायके पीना चाहिये॥

अष्टममहिनेपर।

कपित्थबिल्वबृहतीपटोलेक्षुनिदिग्धिजैः।
मूलैःशृतंप्रयुंजीतक्षीरंमासेतथाष्टमे॥

अर्थ–कैथ, बेलगिरी, बडी कटेरी, परवल, ईख और छोटी कटेरी इनकी जडके क्वाथको दूधमें मिलायके अष्टम महिनेमें गर्भवतीको देय तो गर्भस्रावका भय दूर हो॥

नवम महिना।

नवमेमधुकानंतापयस्यासारिवापिबेत्॥

अर्थ–नवम महिनेमें मुलहटी, धमासो, क्षीरकाकोली और सारिवाके कल्कको पीवे॥

दशम महिनेपर।

क्षीरंशुंठीपयस्याभ्यांसिद्धंस्याद्दशमेहितम्।
सक्षीरविहिताशुंठीमधुकंसुरदारुच॥

अर्थ–दूध गौका, सोंठ और क्षीरकाकोली डालके सिद्ध करे, इसे दशमे महिनेमें पीवे। अथवा सोंठ, मुलहटी और देवदारु इनके कल्कको दूधमें डालके पीवे तो दशम महिने बालककी रक्षा होय॥

ग्यारवे महिनेकी चिकित्सा।

क्षीरिकामुत्पलंदुग्धंसमंगामूलकंशिवाम्।
पिबेदेकादशेमासिगर्भिणीशूलशांतये॥

अर्थ-खिरनीकी छाल, कमलगट्टा, दूध, लजालू, मूली, और आमले इनके कल्कको ग्यारवे महिनेमें गर्भिणीके शूलशांति होनेके वास्ते देवे ॥

बारवे महिनेकी चिकित्सा ।

सिताविदारिकाकोलीक्षीरीचैवमृणालिका । गर्भिणीद्वादशेमासि पिबेच्छूलघ्नमौषधम् । एवमाप्यायतेगर्भस्तीव्ररुग्चोपशाम्यति ॥

अर्थ-मिश्री, विदारीकंद, काकोली, क्षीरकाकोली, मसीडा, इनके कल्कको गर्भवती १२ वे महीनेमें पीवे तो शूल नष्ट होय और गर्भ पुष्ट होय तथा तीव्र पीडा शांत होय ॥

रक्तस्रावपर ।

गुर्विण्यागर्भतोरक्तंस्रवेद्यदिमुहुर्मुहुः ।
तन्निरोधायसादुग्धमुत्पलादिशृतंपिबेत् ॥

अर्थ-यदि गर्भवतीके गर्भसे वारंवार रुधिर गिरे तो उसके रोकनेको उत्पलादि गण (जो सुश्रुतमें लिखा है) उसका क्काथ करके पीवे ॥

उत्पलादि गण ।

उत्पलंनीलमारक्तंकल्हारंकुमुदंतथा । श्वेतांभोजंचमधुकमुत्पलादिरयंगणः ॥ सशीलितोहरत्येवदाहंतृष्णांहृदामयम् । रक्तपित्तंचमूर्छांचतथाछर्दिमरोचकम् ॥

अर्थ-कमल, नील कमल, कुछ लाल कमल, लाल कमल, सपेद कमल, कमोदनी, और मुलहटी, यह उत्पलादि गण हैं, इसका सेवन दाह, तृषा, हृदयके रोग, रक्तपित्त, मूर्च्छा, वमन और अरुचिको नष्ट करे ॥

गर्भपातपर ।

लज्जालुधातकीपुष्पमुत्पलंमधुलोध्रकम् ।
जलस्थयास्त्रियापीतंगर्भपातंनिवारयेत् ॥

अर्थ-लजालू, धायके फूल, कमलगट्टा, मुलहटी और लोध इनको जलमें घोटके स्त्री शीतल जलमें खडी होकर पीवे तो गर्भपात दूर होय ॥

उपायांतर ।

पतंतंस्तंभयेद्गर्भंकुलालकरमृत्तिका ।
मधुछागीपयःपीताकिंवाश्वेतापराजिता ॥

अर्थ-कुम्हारके हाथोंकी मिट्टी (जिस समय बरतन बनाता है) को जलमें

घोटके पीवे तो गिरते गर्भको रोक लेवे, अथवा सहत, बकरीका दूध, इनमें सपेद अपराजिताको पीसके पीवे ॥

उपायांतर।

पारावतमलःपीतस्त्र्यहंतांबूलवारिणा।
गर्भिणीगर्भतोरक्तंस्तंभयेन्निरुपद्रवम् ॥

अर्थ–कबूतरकी बीठको पानके जलमें घोलके तीन दिन पीवे तो उपद्रव सहित गर्भवतीके गर्भके रुधिरको रोक लेवे ॥

अन्य उपाय।

शर्कराबिसतिलंसमांशकंमाक्षिकेनसहभक्ष्यतेयदा। नास्तिगर्भपतनोद्भवंभयंपापभीतिरिवतीर्थसेवया ॥

अर्थ–कच्चीखांड, भसीडा (कमलकी जड) और तिल ये समान भागले चूर्णकर सहतके साथ सेवन करनेसे इस प्रकार भय नहीं रहे जैसे तीर्थ सेवन कर्त्ताको पापका भय नहीं रहे ॥

यत्नांतर।

कंकतीमूलमाबद्धंकुमारीसूत्रकैःसमैः।
कटिदेशेनितंबिन्यागर्भपातंनिवारयेत् ॥

अर्थ–कगहीकी जडको क्वारीकन्याके कते सूतसे लपेट कमरमें बांधे तो गर्भपातको नष्ट करे ॥

ह्रीबेरादि क्वाथ।

ह्रीबेरातिविषामुस्तामोचशक्रैःशृतंजलम्।
दद्याद्गर्भेप्रचलितेप्रदरेकुक्षिरुज्यपि ॥

अर्थ–नेत्रवाला, अतीस, मोथा, मोचरस, और इन्द्रजौ इनके क्वाथको गर्भवतीके गर्भस्रावपर, प्रदरमें और कूखके शूलपर देना चाहिये ॥

मूढगर्भका निदान।

मूढःकरोतिपवनःखलुमूढगर्भंशूलंचयोनिजठरादिषुमूत्रसंगम् ॥

अर्थ–मूढ (अर्थात् प्रवाहरहित) वायु मूढगर्भको पैदा करता है, उससे योनि और पेट आदिमें शूल होता है और मूत्र जकडताहै ॥

मूढगर्भोंके भेद।

भुग्नोनिलेनविगुणेनततःसगर्भःसंख्यामतीत्यबहुधासमुपैति

योनिम् । द्वारंनिरुध्यशिरसाजठरेणकश्चित्कश्चिच्छरीरपरिवर्तितकुब्जदेहः ॥ एकेनकश्चिदपरस्तुभुजद्वयेनतिर्यग्गतोभवतिकश्चिदवाङ्मुखोन्यः ॥ पार्श्वप्रवृत्तगतिरेतितथैवकश्चिदित्यष्टधागतिरियंहिपराचतुर्धा । संकीलकःप्रतिखुरःपरिघोथबीजस्तेषूर्ध्वबाहुचरणैः शिरसाचयोनिम् ॥ संगीचयोभवतिकीलकवत्सकीलोदृश्यैःखुरैःप्रतिखुरःसहिकायसंगी । गच्छेद्भुजद्वयशिराःसचबीजकाख्योयोनौस्थितःसपरिघःपरिघेणतुल्यः

अर्थ–विगुण वायुसे गर्भ विपरीत (टेढा) होकर अनेक प्रकार करके योनिके द्वारमें आयकर अडजाय है उसकी आठ प्रकारकी संज्ञा है सो इस प्रकार है, १–कोई गर्भ मस्तकसे योनिके द्वारको बन्द कर देय है, २–कोई पेटसे योनिके मार्गको रोक देय, ३–कोई शरीरके विपरीतपनेसे योनिके मार्गको रोक देय, ४–कोई एक हाथसे योनिके मार्गको रोक दे, ५–कोई मूढगर्भ दोनों हाथोंको बाहर निकालकर योनिके द्वारको रोकदे, ६–कोई गर्भ तिरछा होकर योनिके मार्गको रोक दे, ७ और कोई गर्भ मन्यानाडीके मुडनेसे नीचेको मुख होय, वह योनिके द्वारको रोकदे. ८ उसी प्रकार कोई पार्श्वभंग (पसवाडे भंग) होनेसे योनिके द्वारको रोक देय, इस प्रकार मूढ गर्भके आठ लक्षण हैं * दूसरी चार प्रकारकी गति और होती है उनको कहते हैं १ संकील, २ प्रतिखुर, ३ परिघ, ४ बीज, इनमें जो गर्भ हाथ पैर ऊपरको कर मस्तकसे योनिको कीलके समान रोकदे, उसको संकीलक कहते हैं जिस गर्भके हाथ पैर खुरके सदृश बाहर निकल आवैं और शरीर योनिके भीतर अटका रहे उसको प्रतिखुर कहते हैं। जो गर्भ दोनों हाथ और मस्तक आगे करके अटक जाय उसको बीजक कहते हैं और परिघ (आगड) के समान योनिमें गर्भ अटक जाय उसको परिघ कहते हैं ॥

असाध्य मूढ गर्भवतीके लक्षण ।

अपविद्धाशिरायातुशीतांगीनिरपत्रपा ।
नीलोद्धतशिराहंतिसागर्भसचतांतथा ॥

अर्थ–जिस गर्भिणीका मस्तक नीचेको होजाय, देह शीतल होय तथा लज्जा जातीरहे और जिसकी कोखमें हरीनीली शिरा (नस) उठ खडी होय तो वह गर्भिणी उस गर्भको और गर्भ गर्भिणीको अन्योन्य नाशकरते हैं ॥

मृतक गर्भके लक्षण।

गर्भास्यंदनमावीनांप्रणाशःश्यावपाण्डुता।
भवेदुच्छ्वासपूतित्वंशूनतांतर्मृतेशिशौ॥

अर्थ-गर्भ हले चले नहीं, प्रसव वेदना (पीडा) बंद होजाय, देह हरीनीलीहोय और जिसकी श्वासमें दुर्गन्ध आवे और पेटके भीतर सूजन होय अर्थात् पेटमें आंतोंके फूलनेसे पेट सूज जाय ये गर्भमें बालक मरजाय उसके लक्षणहैं॥

गर्भमरण हेतु।

मानसागंतुभिर्मातुरुपतापैःप्रपीडितः।
गर्भोव्यापद्यतेकुक्षौव्याधिभिश्चप्रपीडितः॥

अर्थ-माताके मानसिक तथा आगंतुक दुःखसे अथवा रोगोंसे गर्भकी पीडा होय वो बालक गर्भाशयमें मरजाय॥

गर्भिणीके दूसरे असाध्य लक्षण।

योनिसंवरणंसंगःकुक्षौमक्कल्लमेवच।
हन्युःस्त्रियंमूढगर्भायथोक्ताश्चाप्युपद्रवाः॥

अर्थ-वायुके योगसे [1]योनिका संकोच, गर्भका अटकना और मक्कल्ल शूल (वात रक्तकी पीडा) तथा आक्षेपक खाँसी, श्वासादिक उपद्रव होनेसे वो गर्भिणी बचेनहीं अथवा योनिसंवरण नाम रोग ग्रन्थान्तरोंमें लिखाहै सो होय॥

परिघगर्भलक्षण।

योनिमावृत्ययस्तिष्ठेत्परिघोगोपुरंयथा।
तथांतर्गर्भमायांतंविद्यात्परिघसंज्ञितम्॥

अर्थ-परिघ रोग योनिके मुखमें बैठके बाहिर आनेवाले गर्भको रोक देता है उसको परिघगर्भ कहते हैं॥

विकृताकृतिगर्भलक्षण।

ऋतुस्नातातुयानारीस्वप्नेमैथुनमावहेत्। आर्तवंवायुरादाय
कुक्षौगर्भंकरोतिहि॥ मासिमासिविवर्धेतगर्भिण्यागर्भलक्षण

---

१ वातलान्यन्नपनानिग्राम्यधर्मप्रजागरम्॥ अत्यर्थसेवमानायांगर्भिण्यांयोनिमार्गजः॥ मातरिश्वाप्रकुपितोयोनिद्वारस्यसंवृतिम्॥ कुरुतेरुद्धमार्गत्वात्पुनरंतर्गतोनिलः॥ निरुणद्ध्याशयद्वारंपीडयन्गर्भसंस्थितिम्॥ निरुद्धवदनोच्छ्वासोगर्भश्चाशुविपद्यते॥ विपन्नशूनसर्वाङ्गः सर्वाण्येवायवानिच॥ उच्छ्वासरुद्धहृदयांनाशयत्याशुगर्भिणीम्॥ योनिसवरणंनामव्याधिमेनंप्रचक्षते॥ अंतकप्रतिमंघोरंनारभेत्तुचिकित्सितुम्॥

म् । कललंजायतेतस्यवर्जितंपैतृकैर्गुणैः ॥ सर्पवृश्चिककूष्मांड विकृताकृतयश्चये । गर्भास्त्वेवंविधास्त्वेतेज्ञेयाःपापकृतोभृशम् ॥

अर्थ–ऋतुस्नाता स्त्री चतुर्थ दिवससे लेकर बारह रात्रिपर्यंत कदाचित् स्वप्नमें मैथुन करे,उससमय उसस्त्रीके शुद्ध आर्तवकोही पवन लेकर गर्भाशयमें गर्भ स्थापन करे है । उस गर्भ करके गर्भिणीके लक्षण प्राति महीनेके महीने वढते हैं और उस गर्भसे कलल उत्पन्न होता है तथा पिताके लक्षण (केश, श्मश्रु, लोम, नख, दन्त, शिरा, स्नायु और धमनी) इन लक्षण करके रहित मनुष्याकृति (मांसका लोथ जैसा होय है उसको कलल कहते हैं) ये श्लोक जेज्जट सुश्रुतकी टीकाकारने नहीं लिखे ॥

गर्भसंकोचका यत्न ।

वातेनगर्भसंकोचात्प्रसूतिसमयेपिवा। गर्भनजनयेन्नारीतस्याः शृणुचिकित्सितम् ॥ कुट्टयेन्मुशलैनैषाकृत्वाधान्यमुलूखले । विषमंचाशनंयानंसेवेतप्रसवार्थिनी ॥

अर्थ–जिस गर्भवतीका गर्भ वादीसे सूख जाय और गर्भ बाहर नही निकले उसकी चिकित्साको सुनो, वह गर्भवती मूसल हाथमें ले ओखलीमें धानोंको कूटे, तथा विपरीततासे बैठे खराब सवारीमें बैठे और टेढी तिरछी होकर चले तो गर्भ बाहर निकले ॥

शुष्कगर्भका यत्न ।

गर्भोवातेनशुष्कोयोनोदरंपूरयेद्यदि ।
साबृंहणीयैःसंसिद्धंदुग्धंमांसरसंपिबेत् ॥

अर्थ–जो वादीके कारण गर्भ सूख गया हो वह पेटको नहीं रोके उसकी यही चिकित्सा है कि बृंहण (पुष्टकर्त्ता) पदार्थोंसे सिद्ध करे दूध और मांसरस (सोरुका) को पीवे ॥

प्रसवमास ।

नवमेदशमेमासिनारीगर्भंप्रसूयते ।
एकादशेद्वादशेवाततोन्यत्रविकारतः ॥

अर्थ–नारी गर्भके आरंभके दिनसे नववे वा दशवे मासमें प्रसूत होती है तथा वातादि दोषका कुछ विकार होय तो एकादश वा द्वादशवे मासमें भी प्रसूत होती है और इस अवधीके उपरांत यदि प्रसूत होवे तौ विकारवाली स्त्री प्रसूत होती है ॥

प्रसवविलंब होनेमें यत्न।

प्रसवस्यविलंबेतुधूपयेदभितोभगम् । कृष्णसर्पस्यनिर्मोकै स्तथापिण्डीतकेनवा ॥ तंतुनालांगलीमूलंबध्नीयाद्धस्तपाद योः। सुवर्चलंविशल्यांवाधारयेदाशुसूतये ॥

अर्थ–यदि प्रसव (प्रसूत) होनेमें देरी होय और गर्भवतीको कष्ट होरहा होयतो काले सांपकी कांचलीकी अथवा मैनफलकी धूनी देवे अथवा कलयारीकी जडको हाथ पैरोंमें बांधे। अथवा हुलहुल और विशाल्यारूखडीको बांधे तो तत्काल प्रसूत होय॥

सुखप्रसवकारकयोग।

कृष्णावचाचापिजलेनपिष्टासैरंडतैलाखलुनाभिलेपात्।
सुखप्रसूतिंकुरुतेंगनानांनिपीडितानांबहुभिःप्रमादैः॥

अर्थ–पीपल, वच इनको जलमें पीस अंडीका तेल मिलायके नाभिपर लेप करनेसे स्त्री सुखपूर्वक बालक जने यह अनुभव करा प्रयोग है॥

मातुलुंगादि प्रयोग।

मातुलिंगस्यमूलंतुमधूकंसंयुतंतथा।
घृतेनसहितंपीत्वासुखंनारीप्रसूयते॥

अर्थ–विजोरेकी जडको महुएके साथ पीस घृतके साथ पीवे तो स्त्री सुखपूर्वक प्रसूत होय॥

इक्षुमूलबंधन।

इक्षोरुत्तरमूलंनिजतनुमानेनतंतुनाबध्वा।
कटिविषयेगर्भवतीसुखेनसूतेविलंबितेनापि॥

अर्थ–ईखके नीचेकी जडको अपने देहके बराबरके नापे हुए डोरेसे बांधके कमरमें बांधे तो बहुत शीघ्र प्रसूत होय॥

सुखप्रसव।

तालस्यचोत्तरंमूलंस्वप्रमाणेनतंतुना।
बध्वाकट्यांतुनियतंसुखंनारीप्रसूयते॥

अर्थ–ताडवृक्षकी जडको अपने बराबरके डोरेमें कसके कमरमें बांधे तो स्त्री सूखपूर्वक प्रसूत होय॥

प्रयोगांतर।

प्रत्यक्पुष्प्याःपारिभद्रस्ययद्वामूलंयद्वाकाकजंघासमुत्थम् ।
कट्यांबद्धंयोषितांसत्प्रसूतिंयोगेयुक्त्यासंहृतंसाधुकुर्यात् ॥

अर्थ-चिरचिराकी नीमकी जडको अथवा काकजंघाकी जडको जो स्त्री प्रसूतके समय अपनी कमरमें बांधे तो स्त्री सुखपूर्वक प्रसव करे ॥

मृतगर्भ चिकित्सा।

याभिःसंकटकालेवैद्यैर्नार्यःप्रसाविताःसम्यक् ।
लब्धंयशःसमग्रास्ताएवात्रक्रियाःकुर्युः ॥

अर्थ-जिन वैद्योंने संकटके समय अनेक कष्टवती स्त्रियोंको भले प्रकारसे प्रसव कराया हो और जो लब्ध यशवाला हो वह संपूर्ण क्रिया इस मूढगर्भकी करे॥

गर्भोद्धरण।

हस्तेनसर्पिषाक्तेनयोनेरंतर्गतेनसः। मृतेतुगर्भेगर्भिण्यायोनौ
शस्त्रंप्रवेशयेत्। शस्त्रशास्त्रार्थविद्वान्योलघुहस्तोभयोझ्झितः॥

अर्थ-घीसे हाथ चिकना करके जननेन्द्रियमेंसे गर्भ निकाल लेना, गर्भगत बालक मृत हुआ होय तो शस्त्र चलानेके काममें कुशल वैद्यने निर्भय होयके जननेंद्रियमें शस्त्र डालके काटा हुवा गर्भ निकाल लेना ॥

सचेतनंतुशस्त्रेणनकथंचनदारयेत्। सदार्यमाणोजननीमात्मा
नंचापिमारयेत् ॥ नोपेक्षेतमृतंगर्भंमुहूर्तमपिपंडितः। सचा
शुजननींहंतिप्रभूतान्नंयथापशुम् ॥

अर्थ-वैद्य जीते हुए गर्भको शस्त्रसे कदापि न मारे, यदि जीते गर्भको काट डाले तो वह गर्भ अपनी माताकोभी मार डालता है। इसी प्रकार विद्वान् वैद्य मरे हुए बालकको दो घडीभी पेटमें न रहने दे वह दो घडीमेंही अपनी माको मार डालता है जैसे अधिक परिमाणका अन्न खाया हुआ पशुको मार डाले है ॥

मृतगर्भछेदनप्रकार।

यद्यदंगंहिगर्भस्ययोनौसज्जातितद्भिषक् ।
सम्यग्विनिर्हरेच्छित्वारक्षेन्नारींप्रयत्नतः ॥

अर्थ-मूढगर्भका जौन जौनसा अंग योनिके मार्गमें अटकता होय उसी२का काट २ के निकाले उत्तम वैद्यका मुख्य यही कर्म है कि मूढगर्भको सावधानीके साथ निकालके गर्भवतीका यत्नपूर्वक रक्षण करे ॥

छेदनानंतरचिकित्सा ।

सर्वंनिर्हृतशल्यांतांसिंचेदुष्णेनवारिणा । ततोभ्यक्तशरीराद्या योनौस्नेहंनिधापयेत् । एवंमृद्वीभवेद्योनिस्तच्छूलंचोपशाम्यति ॥

अर्थ–जब सब मूढगर्भ बाहर निकल आवे तब उस गर्भवाली स्त्रीकी योनिको गरम जलसे सेके फिर तेलका फोहा उसकी योनिमें रख देवे कि जिस्से योनि नरम हो जाय और शूल दूर होय ॥

मृतगर्भपातन ।

आसुरीहिंगुसंसिद्धंकांजिकेनावलोडितम् ।
गर्भाशयेमृतंगर्भंपातयेत्पानयोगतः ॥

अर्थ–राई, हींग दोनोंको छदाम २ भर पीस काँजीमें मिलायके स्त्री पीवे तो उस स्त्रीका मृतबालक बाहर निकल आवे ॥

परूषकशिफालेपः स्थिरामूलकृतोथवा ।
नाभिबस्तिभगाद्येषुमूढगर्भापकर्षणः ॥

अर्थ–फालसेकी जडको अथवा पृष्टपर्णीकी जडको पीसके नाभि, बस्ती और भगादि स्थानोंमें लेप करे तो मूढगर्भ गिरजावे ॥

गर्भपातकारक औषध ।

गृंजनबीजंटंकत्रितयंतावच्चदाडिमीमूलम् । तुवरीटंकद्वितयं सिंदूरंटंकद्वितयंच ॥ संमर्द्यखल्वमध्येतोयेनैतन्निपीयगर्भवती। रंडायोषिद्गर्भंवेश्यावापातयत्याशु ॥

अर्थ–गाजरके बीज १ तोले, अनारकी जडकी छाल १ तोले, फिटकरी ८ मासे सिंदूर ८ मासे ले खरलमें डाल बारीक चूर्ण करे फिर इसको जलमें छानके गर्भवती रंडा स्त्री पीवे अथवा वेश्या स्त्री पीवे तो उसका गर्भ गिर-जायगा इसमें संदेह नहीं ॥

गर्भस्राव ।

निर्गुंडीद्रवसंपिष्टंचित्रमूलंमधुप्लुतम् ।
कर्षंपीत्वास्रवत्याशुगर्भोरंडाकुलोद्भवः ॥

अर्थ–निर्गुंडीके रसमें चित्रककी जडको पीस उसमें सहत डालके १ तोले, पीवे तो रंडा स्त्रीका गर्भ तत्काल गिर जावे ॥

गर्भपातन ।

कांडमेरंडपत्रस्ययोनावष्टांगुलंक्षिपेत् ।
चतुर्मासोद्भवंगर्भंस्रावयत्येवतत्क्षणात् ॥

अर्थ--अंडके पत्तेका डाढरा जो नरममें उसको आठ अंगुल भगके भीतर प्रवेश करे तो चार महीनेका रहा हुआभी गर्भ तत्काल गिर जावे ॥

गर्भपातन ।

देवदालेस्तुयच्चूर्णकर्षंकंतोयपेषितम् ।
पिबेद्गर्भवतीनारीगर्भःस्रवतितत्क्षणात् ॥

अर्थ-वंदाल (घंघर वेल) के १ तोले चूर्णको जलमें पीसकै पीवे तो उस स्त्रीका गर्भ तत्काल गिर जावे ॥

गर्भपातन ।

आलोड्यकांजिकैर्घोटीपुरीषंवस्त्रगालितम् ।
ससिंधूग्रासुरीतैलविषमागतगर्भनुत् ॥

अर्थ–घोडीकी लीदको बारीक पीस कांजीमें मिलाय देवे, फिर कपडेमें छान और उसमें सैंधानिमक, वच, राई, कडवा तेल और विष ये छदाम भर पीसके मिलावे, पीनेसे तत्काल गर्भ पातन करे ॥

जरायुपातनप्रकार ।

प्रसूतायानपतिताजठरात्तुजरायदि ।
तदासाकुरुतेशूलमाध्मानंवन्हिमंदताम् ॥

अर्थ–यदि गर्भवतीके बालक होनेके वादभी जरा (आबर वेवर) यदि सबन गिरे तो वह पेटमें दर्द और अफरा करे तथा उस स्त्रीकी जठराग्नि मंद पड जाती है ॥

उसकी चिकित्सा ।

केशवेष्टितयांगुल्यातस्याःकंठंप्रघर्षयेत् । निर्मोककटुकाला बुकृतंवेधनसर्षपैः । चूर्णितैःकटुतैलाक्तैर्धूपयेदभितोभगम् ॥

अर्थ–उंगलीमें वालोंको लपेटके उस स्त्रीके कंठको रगडे (तथा योनिके ओर पास रगडे) तथा सांपकी कांचली, कडवी घीयाके बीज, सरसों इनको बारीक पीस कडवा तेल मिलायके उस स्त्रीकी भगमें धूनी देवे तो जरा गिर जावे ॥

अपरापातन ।

लांगलीमूलकल्केनपाणिपादतलानिह ।
प्रलिपेत्सूतिकायोषिदपरापातनायवै ॥

अर्थ-कलियारीके जडके कल्कसे प्रसूता स्त्रीके हाथ, पैरोंके तलवेमें लेप करना अपराको पातन कर देता है ॥

अपरा निष्कासन।

हस्तंछिन्ननखंस्निग्धंसूतायायोनौशनैःक्षिपेत् ।
अपरांतेनहस्तेनजनयित्र्याविनिर्हरेत् ॥

अर्थ-दाई, हाथके नाखून कटायके फिर हाथोंमें घी चुपडके प्रसूतास्त्रीकी योनिमेंसे उस अपरा (आमरवेवर) को निकाल लेवे इसमें उसको बडी होसयारीके साथ काम करना चाहिये ॥

योनिक्षतपर ।

तुंबीपत्रंतथालोध्रंसमभागंतुपेषयेत् ।
तेनलेपोभगेकार्यःशीघ्रंस्याद्योनिरक्षता ॥

अर्थ-तूंबेके पत्ते और लोध दोनोंको समान भाग बारीक पीस भगमें लेप करे तो गर्भ होनेसे जो भग चिर जातीहै उसका घाव तत्काल दूरहोय ॥

योनिदृढीकरण ।

पलाशोदुंबरफलंतिलतैलसमन्वितम् ।
योनौप्रलिप्तंमधुनागाढीकरणमुत्तमम् ॥

अर्थ-पलास, गूलर, इनको तिलके तेलमें बारीक पीस योनिमें लेप करेतो योनिदृढ होय अर्थात् कठोर होवे ॥

मक्कल्लकनिदान ।

पृथिव्यांपतितेवत्सेयोनौपीडनामिष्यते । अप्रवेशोयथावायो स्तथासंरक्षणक्रिया ॥ वायुःप्रकुपितःकुर्यात्संरुध्यरुधिरंच्यु तम् । प्रसूताहृच्छिरोबस्तिशूलंमक्कल्लसंज्ञितम् ॥

अर्थ-बालकके पृथ्वीमें गिरतेही योनिको दबाय देवे जिस प्रकार उस प्रसूता स्त्रीके वादीका प्रवेश न होय इस प्रकार उसकी रक्षा करे, यदि उस प्रसूतके होनेपर पवन लगजावेतो बहु कुपित पवन गिरते हुए रुधिरको रोक लेवे फिर वह हृदय, शिर और बस्तिस्थान इनमें मक्कल्ल संज्ञक दर्दको प्रगट करे है ॥

मल्लकचिकित्सा।

संचूर्णितंयवक्षारंपिबेत्कोष्णेनवारिणा।
सर्पिषावापिबेन्नारीमल्लकस्यनिवृत्तये॥

अर्थ--जवाखारका बारीक चूर्ण कर गरम जलसे पीवे, अथवा गौके घीके साथ पीवेतो उस स्त्रीका मल्लक शूल दूर होय॥

पिप्पल्यादि क्वाथ।

पिप्पलीपिप्पलीमूलंमरिचंगजपिप्पली। नागरंचित्रकंचव्यंरेणुकैलाजमोदिका॥ सर्षपोहिंगुभार्ङ्गीचपाठेंद्रयवजीरकाः। महानिंबश्चमूर्वाचविषतिक्ताविडंगकम्॥ पिप्पल्यादिगणोह्येषकफमारुतनाशनः। गुल्मशूलज्वरहरोदीपनश्चामपाचनः॥ क्वाथमेषांपिबेन्नारीलवणेनसमन्वितम्। मक्कल्लशूलगुल्मघ्नंकफानिलहरंपरम्॥

अर्थ--पीपल, पीपरामूल, मीरच, गजपीपल, सोंठ चित्रक, चव्य, रेणुक, इलायची, अजमोद, सरसों, हींग, भारंगी, पाढ, इन्द्रजौ, जीरासफेद, बकायन, मूर्वा, विष, कुटकी और वायविडंग यह पिप्पल्यादिगण है, यह कफ, वादी, गोला, शूल, ज्वर इनको नष्ट करे आमको पचाता है। इन सबका क्वाथ करके उसमें सैंधानिमक डालके पीवेतो मक्कल्ल शूल, गोला, कफ और वादीको नष्ट करे॥

योगांतर।

त्रिकटुकचातुर्जातककुस्तुंबरिचूर्णसंयुक्तम्।
खादेद्गुडंपुराणंनित्यंनारीमक्कल्लदलनाय॥

अर्थ--सोंठ, मिरच, पीपल, तज, पत्रज, इलायची नागकेशर और धनिया इनके चूर्णमें पुराना गुड मिलायके खायतो मक्कल्लक शूल नष्ट होय॥

हिंगुघृतयोग।

हिंगुशुद्धंससर्पिष्कंभुक्तंमक्कल्लशूलनुत्॥

अर्थ--भुनीहुई हींगको घीमें मिलायकै सेवन करनेसे मकल्ल शूल तत्काल दूर होय॥

प्रसूतास्त्रीको हितावह।

प्रसूतायुक्तमाहारंविहारंचसमाचरेत्।

व्यायामंमैथुनंक्रोधंशीतसेवांचवर्जयेत् ॥

अर्थ–प्रसूतास्त्री हितकारी अर्थात् वातनाशक आहार और विहारोंका सेवन करे परंतु परिश्रम मैथुन क्रोध करना तथा शीतल पदार्थोंका सेवन इनको त्याग देवे ॥

प्रसूताकी व्याधिको कष्टसाध्यत्व।

मिथ्याचारात्सूतिकायायोव्याधिरुपजायते।
सकृच्छ्रसाध्योवासाध्योभवेत्तत्पथ्यमाचरेत् ॥

अर्थ–इस प्रसूतास्त्रीके मिथ्या आहार विहारके करनेसे जो व्याधि प्रगट होती है वह कृच्छ्रसाध्य अथवा असाध्य होजातीहै इसवास्ते इसको पथ्य पदार्थोंका सेवन करना चाहिये ॥

कन्या पुत्र और नपुंसक होनेका कारण।

वामनाड्याभवेत्कन्यादक्षिणेपुत्रनिश्चयः। रक्ताधिकेभवेत्कन्या
पुत्रःशुक्राधिकेभवेत्। शुक्रशोणितसाम्येनभवेद्योसौनपुंसकः ॥

अर्थ–यदि पुरुषके वामस्वरमें गर्भ रहेतो कन्या होय और दहने स्वरमें गर्भ रहेतो पुत्र होय एवं स्त्रीके रजकी अधिकतामें कन्या होय और पुरुषके वीर्याधिक होनेसे पुत्र होय तथा शुक्र और रज समान होनेपर इसके नपुंसक बालक होता है ॥

गर्भकारक औषध।

एरंडस्यतुबीजानिमातुलिंगस्यचैवहि।
सर्पिषापरिपिष्टानिपिबेद्गर्भप्रदानिच ॥

अर्थ–अंडीके बीजोंको और बिजोरेके बीजोंको समान भागले घी मिलायके पीसे फिर इसको रजोदर्शवती स्त्री चतुर्थ दिनमें पीवेतो गर्भरहे ॥

लक्ष्मणायोग।

लंकाकारंलक्ष्मणायाश्चमूलंकंठेबद्धंसर्पिषानस्ययोगात्।
पीत्वासूतेपुत्रमत्यंतवीर्यंपश्चादन्यानप्यमंदांगपुष्टिः ॥

अर्थ–पीली लक्ष्मणा रूखडीकी जडको कंठमें बांधे तथा इसीको घीमें पीसके नास लेय तथा पीवेतो बलवान् पुत्रको प्रगट करे तथा इस औषधके खाने बिना पीछे भी पुत्र होवे और उस स्त्रीको पुत्रहोकर भी उसका शरीर पुष्टका पुष्टही रहताहै ॥

तैलादि योग।

तिलतैलदुग्धफाणितदधिघृतमेकत्रपाणिनामथितम्।
पीतंसपिप्पलीकंजनयातिपुत्रंपरंमहिला॥

अर्थ–तिलका तेल दूध फाणित (राव) दही, घी इन सबको एकत्रकर हाथसे मथडाले, फिर पीपलका चूर्ण डाल पीवेतो वहस्त्री पुत्रको प्रगटकरे॥

मातुलुंग योग।

एकस्यमातुलिंगस्यबीजानिसकलान्यपि।
ऋत्वंतेदुग्धपिष्टानिपीत्वाप्नोत्यबलासुतम्॥

अर्थ–जो स्त्री ऋतुकालमें विजोरेके बीजोंको दूधमें पीसकै पीवेतो उसके अवश्य पुत्र होय॥

अश्वगंधायोग।

अश्वगंधाकषायेणसिद्धंदुग्धंघृतान्वितम्।
ऋतुस्नातांगनाप्रातःपीत्वागर्भंदधातिहि॥

अर्थ–असगंधके काथको डाल दूध सिद्ध करे फिर उसमें घृत मिलायके ऋतुस्नानके चौथेदिन प्रातःकाल पीवे तो उस स्त्रीके गर्भ रहे॥

लक्ष्मणायोग।

पुष्योद्धृतंलक्ष्मणायामूलंदुग्धेनकन्यया।
पिष्टंपीत्वाऋतुस्नातागर्भंधत्तेनसंशयः॥

अर्थ–पुष्य नक्षत्रमें लक्ष्मणा रूखडीकी जडको ले, उसको कन्याके हाथसे दूधमें पिसायके ऋतुस्नानके पश्चात् पीवे तो निश्चय पुत्र होय॥

कुरंटमूलादि योग।

कुरंटमूलंधातक्याःकुसुमानिवटांकुराः।
नीलोत्पलंपयोयुक्तमेतद्गर्भप्रदंध्रुवम्॥

अर्थ–कुरंटकी जड, धायके फूल, वडके अंकुर और नीलकमल इनको दूधमें पीसके पीवे तो अवश्य स्त्री गर्भवती होय॥

पार्श्वपिप्पलयोग।

यावलापिबातिपार्श्वपिप्पलंजीरकेणसहितंहिताशना॥
संयुतंविशिखपुंखयात्र्यहंसासुतंजनयतीहनान्यथा॥

अर्थ–पारस पीपलके फलोंको जीरेके साथ और सरफोंकेके जडके साथ पीसके दूधमें डालके पीवे और पथ्य आहार विहार करे तो पुत्र होय ॥

सपेदकंटकारी रोग।

क्षीरेणश्वेतबृहतीमूलंनासापुटेपिबेत्।
पुत्रार्थंदक्षिणानासावामास्यात्कन्यकाप्रदा ॥

अर्थ--सपेद कटेरी (कि जिसका फूल सपेद होता है) उसकी जडको दूधमें पीसके नास लेवे अर्थात् पुत्रकी इच्छा होय तो इसको दहनी नाकके मार्गसे पीवे और कन्याकी इच्छावाली वामनाकके छिद्रसे पीवे ॥

गर्भनाशकयोग।

पिप्पलिविडंगटंकणसमचूर्णयापिबेत्पयसा।
ऋतुसमयेनहितस्यागर्भःसंजायतेक्वापि ॥

अर्थ–पीपल, वायविडंग, सुहागा, इनका समान भाग चूर्णकर ऋतुके समय दूधसे पीवे तो इसके कदापि गर्भ नहीं रहे ॥

आरनालपरिपेषितंत्र्यहंयाजपाकुसुममत्तिपुष्पिणी।
सत्पुराणगुडमुष्टिसेविनीसादधातिनहिगर्भमंगना ॥

अर्थ–जो स्त्री गुडहरके फूलको कांजीमें पीसके गुड पुराना मिलायके तीन दिन सेवन करे उसको कदापि भर्ग नहीं रहे ॥

गर्भनिवारण।

तैलाविलंसैंधवखंडमादौनिधायरंडानिजयोनिमध्ये।
नरेणसार्धंरतिमातनोतिमासानगर्भंलभतेकदाचित् ॥

अर्थ–सैंधेनिमककी डलीको तेलमें भिगोयके रंडा स्त्री प्रथम भगमें रख लेवे फिर थोडी देरके वाद निकालके पुरुषका संग करे तोभी गर्भ नहीं रहे।

वंध्यायोग।

तंदुलीयकमूलानिपिष्ट्वातंदुलवारिणा ॥
ऋत्वंतेतुत्र्यहंपीत्वावंध्याःकुर्वंतियोषितः ॥

अर्थ--चौलाईकी जडको चावलके धोवनमें पीसके ऋतुके समय तीन दिन पीवे तो वह स्त्री अवश्य वंध्या होय।

सूतिकारोगनिदान।

अंगमर्दोज्वरःकंपःपिपासागुरुगात्रता। शोथःशूलातिसारौच

सूतिकारोगलक्षणम् ॥ मिथ्योपचारात्संक्लेशाद्विषमाजीर्णभोजनात्। सूतिकायाश्चयेरोगाजायंतेदारुणास्तुते ॥ ज्वरातिसारशोथाश्वशूलानाहबलक्षयाः । तंद्रारुचिप्रसेकाद्याःकफवातामयोद्भवाः ॥ कृच्छ्रसाध्याहितेरोगाःक्षीणमांसबलाग्नितः । तेसर्वेसूतिकानाम्नारोगास्तेचाप्युपद्रवाः ॥

अर्थ--अंगोंका टूटना, ज्वरहो, कंप, प्यास, अंगोंका भारी होना, सूजन, तथा शूल और अतिसार, ये सूतिका रोगके लक्षण होतेहैं ॥ जिस स्त्रीके बालक प्रगट होचुका हो ऐसी स्त्रीके मिथ्या उपचार करनेसे अथवा संक्लेश कहिये दोषजनक अन्न पानके सेवन करनेसे, अथवा संक्लेश कहिये अत्यंत कोपके करनेसे अथवा विषमाशन अजीर्ण भोजनादिक करनेसे प्रसूत रोग होताहै वह घोर दुःखदायक है ॥ ज्वर, अतिसार, सूजन, शूल, अफरा, और बलक्षय, तथा कफ वातजन्य रोगसे उत्पन्न होनेवाले तन्द्रा अन्नद्वेष और मुखसे पानीका गिरना इत्यादि विकार, अशक्तता, तथा अग्नि मंद होनेसे कृच्छ्रसाध्य होताहै । इन सब ज्वरादिकोंको प्रसूति रोग कहते हैं। इन सबमें एक रोग प्रधान होताहै बाकीके उपद्रवरूप कहलातेहैं ॥ ४ ॥

इति सूतिकारोगनिदानं समाप्तम् ।

प्रसूताकी चिकित्सा ।

सूतिकारोगशांत्यर्थंकुर्याद्वातहरींक्रियाम् ॥

अर्थ–वैद्य प्रसूत रोगके शांति करनेको सब वातहरण क्रिया करे शीतल उपचार न करे ।

दशमूल ।

दशमूलकृतंक्वाथंकोष्णंदद्याद्घृतान्वितम् ।

अर्थ–दशमूलके क्वाथमें घृत मिलायके सुहाता २ गरम पीवे तो प्रसूताके रोग दूर हो ॥

अमृतानागरसहचरभद्रोत्कटपंचमूलकंजलदः ।
शृतशीतंमधुयुक्तंशमयत्यचिरेणसूतिकातंकम् ॥

अर्थ–गुडूची, सोंठ, कटसरैया, भद्रमुस्ता, दालचीनी और लघु पंचमूलकी पांच औषध और नागरमोथा इनके क्वाथमें सहत डालके पीवे तो प्रसूतके सब रोग दूर होय ॥

देवदार्वादि ।

देवदारुवचाकुष्ठंपिप्पलीविश्वभेषजम् । कट्फलंमुस्तभूनिंबतिक्ताधान्यंहरीतकी ॥ गजकृष्णाचदुःस्पर्शागोक्षुरंधन्वयासकम् । बृहत्यतिविषाछिन्नाकर्कटंकृष्णजीरकम् ॥ समभागान्वितैरेतैःसिंधुरामठसंयुतैः । क्वाथमष्टावशेषंतुप्रसूतांपाययेत्स्त्रियम् ॥ शूलकासज्वरश्वासमूर्छाकंपशिरोर्तिभिः । युक्तंप्रलापतृट्दाहतंद्रातीसारवांतिभिः ॥ निहंतिसूतिकारोगंवातपित्तकफान्वितम् ॥

अर्थ–देवदारु, वच, कूठ, पीपल, सोंठ, कायफल, नागरमोथा, चिरायता, कुटकी, धनिया, हरड, गजपीपल, कटेरी, गोखरू, धमासो, भटकटैया, अतीस, गिलोय, काकडासिंगी और काला जीरा ये समान भाग लेवे, इनमें सैंधानिमक और हींग मिलायके अष्टावशेष क्वाथ कर प्रसूता स्त्री पीवे तो शूल, खांसी, ज्वर, श्वास, मूर्च्छा, कंप, मस्तकपीडा, प्रलाप, तृषा, दाह, तंद्रा, अतिसार और वमन तथा वातपित्त और कफात्मक प्रसूत रोगको नष्ट करे॥

सहचरादि क्वाथ ।

सहचरकुलित्थपुष्करदार्वीद्वयदारुवेतसःक्वाथः ।
पीतःसहिंगुलवणःशमयतिशूलज्वरौसूत्याः ॥

अर्थ–कट सरैया, कुलथी, पुहकरमूल दोनों हलदी, देवदारु और वेत इनके क्वाथमें हींग और सैंधानिमक डालके पीवे तो प्रसूता स्त्रीके शूल और ज्वर दूर हों ॥

वज्रकांजिक ।

पिप्पलीपिप्पलीमूलंचव्यंशुंठीयवानिका।जीरकेद्वेहरिद्रेचविडसौवर्चलंतथा ॥ एतैरेवौषधैःपिष्टैरारनालंविपाचयेत् । आमवातहरंवृष्यंकफघ्नंवह्निदीपनम् ॥ वज्रकंकांजिकंनामस्त्रीणामग्निविवर्धनम् । सूतिकारोगशमनंशूलघ्नंक्षीरवर्धनम् ॥

अर्थ–पीपल, पीपरामूल, चव्य, सोंठ, अजमायन, जीरा, काला जीरा, हलदी, दारुहलदी, विडनिमक, संचरनिमक इन सब औषधोंसे कांजी मिलायके पचावे, यह आमवातको हरण करे, वृष्य है, कफनाशक, अग्निदीपनकर्त्ता है, यह वज्रकांजिक स्त्रियोंकी अग्निको बढावे और प्रसूतके रोग नष्ट करे, शूल दूर हो तथा दूधको बढावे है ॥

सामान्य यत्न ।

वातव्याधिविधानेनसूतिकांसमुपाचरेत् ।
जलौकाभिर्हरेद्रक्तंबस्तिनाचोपनाहयेत् ॥

अर्थ–प्रसूतिके रोगको वातव्याधिकी विधिसे यत्न करे, यदि इसके देहमें रुधिरका उपद्रव होय तो जोख लगायके रुधिर निकाल डाले, फिर बस्तीद्वारा उपनाहन कर्म करे ॥

पंचजीरक पाक ।

जीरकंस्थलजीरश्वशतपुष्पाद्वयंतथा । यवानीचाजमोदाच धान्यकंमेथिकापिच ॥ शुंठीकृष्णाकणामूलंचित्रकंहपुषापिच । विदारीफलचूर्णंचकुष्टंकंपिल्लकंतथा ॥ एतानिपलमात्राणिगुडंपलशतंमतम् । क्षीरंप्रस्थद्वयंदद्यात्सर्पिषःकुडवोमतः॥पंचजीरकपाकोयंप्रसूतायांप्रशस्यते। युज्यतेसूतिकारोगेमंदेग्नौचज्वरेक्षये । कासेश्वासेपांडुरोगेकार्श्येवातामयेषुच॥

अर्थ--जीरा, कलौंजी, छोटी सोंफ, बडी सोंफ, अजमायन, अजमोद, धनिया, मेथी, सोंठ, पीपल, पीपरामूल, चित्रक, हाऊबेर, विदारीकंद, कूठ और कबीला, ये सब चार२ तोले लेवे, और गुड ४०० तोले, दूध २ सेर, घी पावभर, सबको एकत्र कर पाक बनावे, यह पंचजीरक पाक प्रसूति रोग पर कहा है, यह मंदाग्नि, ज्वर, क्षय, खांसी, श्वास, पांडुरोग, कृशता और आमवात रोग इनको दूर करे ॥

सौभाग्यशुंठी ।

आज्यस्यांजलियुग्ममत्रपयसःप्रस्थद्वयंखंडतःपंचाशत्पलमत्रचूर्णितमथप्राक्षेप्यतेनागरम् । प्रस्थार्धंगुडवद्विपाच्यविधिनामुष्टित्रयंधान्यकंमिश्याःपंचपलंपलंकृमिरिपोःसाजाजिजीरदपि॥व्योषांभोददलोरगेंद्रसुमनःसद्राविडानांपलंपक्वंनागरखंडसंज्ञकमिदंसौभाग्यदंयोषिताम् । तृट्छर्दिज्वरदाहशोषशमनंदुःश्वासकासापहंप्लीहव्याधिविनाशनंकृमिहरंमंदाग्निसंदीपनम्॥

अर्थ–घृत गौका ६४ तोले, दूध २ सेर, खांड सपेद २०० तोले, सोंठ आध सेर, इनको एकत्र कर गुडपाककी विधिसे पचावे, तथा धनिया १२

तोले, कलौंजी २० तोले, वायविडंग २० तोले, जीरा, कालाजीरा, सोंठ, मिरच, पीपल, नागरमोथा, पत्रज, नागकेशर, और इलायची प्रत्येक चार २ तोले, ले चूर्ण करके उसी पाकमें मिलाय देवे, यह नागरखंड खानेसे स्त्रियोंकी देहको सुंदर करे, तृषा, वमन, ज्वर, दाह, शोष, श्वास, खांसी, पिलही और कृमि रोग इनको नष्ट करे, तथा मंदाग्निको दीपन करनेवाली है॥

सौभाग्यशुंठीका द्वितीय पाठ।

नागरस्यपलान्यष्टौघृतस्यपलविंशतिः। क्षीराढकेनसंयुक्तंखंडस्यार्धतुलांपचेत्॥शताह्वाजीरकव्योषत्रिसुगंधियवानिकाः। कारवीमिशिचव्याग्निमुस्तानांचपलंपलम्॥ लेहीभूतमिदंसिद्धंघृतभांडेनिधापयेत्। तद्यथाग्निबलंखादेत्सूतिकातुविशेषतः॥ बल्यंवर्ण्यंतथापुष्ट्यंवलीपलितनाशनम्। वयसःस्थापनंहृद्यंमंदाग्नेर्दीपनंपरम्॥ आमवातप्रशमनंसौभाग्यकरमुत्तमम्। मक्कल्लशूलशमनंसूतिकारोगनाशनम्॥

अर्थ--सतवा सोंठ ३२ तोले, घृत १ सेर, गौका दूध ४ सेर, सपेद चीनी खांड २०० तोले, सतावर, जीरा, सोंठ, मिरच, पीपल, तज, पत्रज, इलायची, अजमायन, कलौंजी, सोंफ, चव्य, चित्रक, नागरमोथा ये चार २ तोले लेवे सबका अवलेह सिद्ध करके घृतके चिकने बासनमें भरके धर रखे, इसमेंसे बलाबल विचारके खाय और प्रसूता स्त्रीको तो अवश्य खानी चाहिये, बल करे, वर्णको उज्वल करे, पुष्टाई करे, वली (गुजलट) और पलित (सपेद बालोंके होने) को दूर करे, अवस्थाको स्थापन करे, हृदयको हितकारी, मंदाग्निको दीपन करे, आमवातनाशक, देहको सुंदर करे, मकल्लकशूल और प्रसूत रोग इनको नष्ट करे है॥

सामान्य यत्न।

सर्वतःपरिशुद्धास्यात्स्निग्धपथ्याल्पभोजना।
स्वेदाभ्यंगपरानित्यंभवेन्मासमतंद्रिता॥

अर्थ–प्रसूता स्त्री (जिसके बालक हुआ हो) वह शुद्ध करे, सचिक्कण गरम, पथ्य और थोडा ऐसा भोजन करे, स्वेदन तेलकी मालिश नित्यकरा करे इस प्रकार १ महिने पर्यंत यह विधि करे॥

हीनप्रसूति।

प्रसूतासार्धमासांतेदृष्टेवापुनरार्तवे।
सूतिकानामहीनास्यादितिधन्वंतरेर्मतम्॥

अर्थ–जिस दिन बालक होय उस दिनसे लेकर १॥ महिना व्यतीत होने-पर अथवा फिर रजोदर्शवती होंनेसे यह स्त्री प्रसूता इस नाम करके रहित होती है यह धन्वंतरिका मत है॥

उपचार देनेकी अवधि।

उपद्रवैर्विशुद्धांचविज्ञायवरवर्णिनीम्।
ऊर्ध्वंचतुर्भ्योमासेभ्यःपरिहारंविसर्ज्जयेत्॥

अर्थ–यदि इस प्रसूता स्त्रीके चार महिने पर्यंत कोई ज्वरादि उपद्रव न होय और शुद्ध रजोदर्शन हुआ करे तो चार महिनेके वाद इसके पथ्यको त्याग कराय देवे॥

स्तनरोगनिदान।

सक्षीरौवाप्यदुग्धौवादोषःप्राप्यस्तनौस्त्रियः। प्रदूष्यमांसरुधिरेस्तनरोगायकल्पते॥ पंचानामपितेषांहिरक्तजंविद्रधिंविना। लक्षणानिसमानानिबाह्यविद्रधिलक्षणैः॥

अर्थ–वातादि दोष गर्भिणी अथवा प्रसूता स्त्रीके सदुग्ध अथवा अदुग्ध स्तनोंमें प्राप्ति हो मांस रक्तको दुष्ट करके स्तबरोग उत्पन्न करैं स्तनरोग वात, पित्त, कफ, सन्निपात, आगंतुजके भेदसे पांच प्रकारके हैं इन पांचोंके लक्षण रक्त विद्रधिको त्याग कर बाह्य विद्रधिके समान होतेहैं सो विद्रधिनिदान जो पीछे कह आयेहैं उससे जान लेना चाहिये॥

स्तनरोगचिकित्सा।

लेपोविशालमूलेनहंतिपीडांस्तनोत्थिताम्।
वनकार्पासिकेक्ष्वाकुमूलंसौवीरकेनवा॥

अर्थ--यदि स्तनोंमें दर्द होता होय तो इन्द्रायनकी जडको जलमें पीसके लेप करें अथवा वनकपास (नादन वन) कडवी तोरईकी जड इनको कांजी-में पीसके लेप करे तो स्तनकी पीडा दूर होय॥

क्षीरवर्द्धनम्।

विदारिकंदंसुरयापिवेत्स्तन्यविवर्धनम्। पाठामूर्वाब्दभूनिंबदारुशुंठीकालिंगकैः॥सारिवामृततिक्ताख्यैःक्वाथःस्तन्यविवर्धनः॥

अर्थ-मद्यके साथ विदारीकंदके चूर्णको पीवे (या दूधके साथ पीवे) तो स्त्रीके स्तनोंमें दूध बढे अथवा पाढ, मूर्वा, नागरमोथा, चिरायता, देवदारु, सोंठ, इन्द्रजों, सारिवा, गिलोय और कुटकी इनका क्वाथ दूधको बढाताहै॥

स्तन्यरोग।

गुरुभिर्विविधैरन्नैर्दुष्टैर्दोषैःप्रदूषितम्।
क्षीरंधात्र्याःकुमारस्यनानारोगायकल्पते॥

अर्थ-गुर्वादिक अनेक प्रकारके अन्नसे दोष (वात पित्त कफ) दुष्ट होकर माताके दूधका नाश करैं उस दुष्ट दूधसे बालकको नाना प्रकारके रोग होतेहैं॥

वातादिकसे दूषित दुग्धके लक्षण।

कषायंसलिलप्लाविस्तन्यंमारुतदूषितम्। कट्वम्ललवणंपीतराजिमत्पित्तसंज्ञितम्॥ कफदुष्टंघनंतोयेनिमज्जतिसुपिच्छिलम्। द्विलिंगंद्वंद्वजंविद्यात्सर्वलिंगंत्रिदोषजम्॥

अर्थ-जो दुग्ध कषैला अथवा पानीके ऊपर तैरनेवाला होय, उसको वात दूषित जानना, तथा जो कडुआ, खट्टा और खारी होकर जिसमें पीली रेखासी प्रतीत होवें, उसको पित्तदूषित जानना, और जो दूध सघन चिकनासा होवे और पानीमें डालनेसे नीचेको बैठ जाय, उसको कफसे दुष्ट जानना चाहिये। दो दोषोंके लक्षण जिसमें मिले उसे द्वंद्वज जाने और जिसको तीनों दोषोंके लक्षण मिलें उसे त्रिदोषदूषित जाने॥

वातदूषित स्तन्यके रोग।

वातदुष्टंशिशुःस्तन्यंपिबन्वातगदातुरः।
क्षामस्वरःकृशांगःस्याद्बद्धविण्मूत्रमारुतः॥

अर्थ-जो बालक वातदूषित दूधको पीताहै उसको वातके रोग होते हैं उसका शब्द क्षीण होजाय, शरीर कृश होय, मलमूत्र और अधोवायु नहीं उतरे॥

पित्त दूषितस्तन्यके रोग।

स्विन्नोभिन्नमलोबालःकामलापित्तरोगवान्।
तृष्णालुरुष्णसर्वांगःपित्तदुष्टंपयःपिबन्॥

अर्थ-जो बालक पित्तदूषित दूधको पीवे उसको पसीना आवै, मलपतला होजाय, कामला रोग होय तथा पित्तके और भी प्यासका लगना, सर्वांगमें दाह आदि अनेक रोग होय॥

कफदूषितस्तन्यके लक्षण।

कफदुष्टंपिबन्क्षीरंलालालुःश्लेष्मरोगवान्।
निद्रार्दितोजडःशूनःशुक्लाक्षश्छर्दनःशिशुः॥

अर्थ–जो बालक कफदूषित दूधको पीवे उसके मुखसे लार बहुत गिरे तथा कफके रोग होय, निद्रा आवे अंग भारी होय, सूजन होय, वमन होय खुजली चले॥

स्तन्यवातरोगचिकित्सा।

जातेवातात्मकेस्तन्येदशमूलंत्र्यहंपिबेत्।
वातव्याधिहरंसर्पिःपीत्वामृदुविरेचयेत्॥

अर्थ–वादीसे दूषित दूधमें यह स्त्री दशमूलका क्वाथ तीन दिन पीवे, तथा वातव्याधिहर कर्त्ता घृतोंको पीकर नरम जुलाब करावे तो दूध शुद्ध होय॥

शुद्ध दुग्धके लक्षण।

अदुष्टंचांबुनिक्षिप्तमेकीभवतिपाण्डुरम्।
मधुरंचविवर्णचतत्प्रसन्नंविनिर्दिशेत्॥

अर्थ–जो दूध पानीमें डालनेसे मिल जाय, उसको कफसे दुष्ट जानना, दो दोषोंके लक्षण जिसमें मिले उसे द्वंद्वज जाने और जिसमें तीनों दोषोंके लक्षण मिलें उसे त्रिदोषदूषित जाने॥

कफदुष्टस्तन्य पर।

कफेदुष्टेघृतंपेयंयष्टीसैंधवसंयुतम्।रामपुष्पैःस्तनौलिंपेच्छिशोश्चदशनच्छदौ।सुखमेवंवमेद्बालःकफफोपश्चशाम्यति॥

अर्थ–कफदुष्ट दूधपर मुलहटी, और सैंधानिमक मिला घृत पीवे, तथा रामपुष्पोंसे स्तनोंको और बालकके होठोंको लीपै, इस प्रकारसे बालक सुखसे वमन करे और कफका दोष नष्ट होय॥

पित्तदुष्टस्तन्यपर।

पित्तेदुष्टेमृताभीरुपटोलंनिंबचंदनम्।
धात्रीकुमारश्चपिबेत्क्वाथयित्वासशर्करम्॥

अर्थ–पित्तदुष्ट स्तन्य (दूध) पर गिलोय, सतावर, पटोलपत्र, नीमकी छाल, लालचंदन इनके काथमें सहत डालकै धाय और बालक पीवे॥

द्वंद्वज दुष्टस्तन्य।

द्वंद्वदुष्टंहियोगाभ्यांपूर्वोक्ताभ्यांविशोधयेत् ॥

अर्थ–जिस स्त्रीका दूध दोषोंके मिलनेसे बिगडा होय उसको पूर्वोक्त उन दोनों दोषोंके शोधन कर्त्ता औषध देवे ॥

त्रिदोषजन्य दुष्टस्तन्य लक्षण।

स्तन्येत्रिदोषसंदुष्टेशकृदामंजलोपमम्।
नानावर्णरुजंचार्धविबद्धमुपवेश्यते ॥

अर्थ–जिस स्त्रीको दूध तीनों दोषोंके दूषित होनेसे बिगडा होय उसका रंग मल मिला आम और जलके समान अनेक वर्णका और पीडा कर्त्ता होताहै वह जलमें डालनेसे मिलकर आधा नीचे और आधा ऊपर रहताहै ॥

दुग्धशोधकक्काथ।

पाठापूर्वाचभूनिंबदारुशुंठीकलिंगकाः।
सारिवानंततिक्ताख्याख्याताःस्तन्यविशोधनाः ॥

अर्थ–पाठा, मूर्वा, चिरायता, देवदारु, सोंठ, इन्द्रजौ, सारिवा, धमासों और कुटकी इनका क्वाथ स्त्रीके दूधको शोधन करनेवालाहै ॥

स्तन्यजननविधि।

भूमिकूष्मांडमूलस्यक्षीरपिष्टस्ययारसम्।
पिबेत्सशर्करंतस्याःक्षीरंबहुविवर्धते ॥

अर्थ--विदारीकंदकी जडको दूधमें पीस मिश्री मिलायके पीवे तो उस स्त्रीके दूधकी अधिक वृद्धि होय ॥

शतावरीपान।

शतावरीक्षीरपिष्टापीतास्तन्यविवर्धिनी।
कवोष्णंकणयापीतंक्षीरंक्षीरविवर्धनम् ॥

अर्थ–सतावरको दूधमें पीसके पीवे तो दूध बढे। अथवा पीपलका चूर्ण डालके दूधपाककी विधिसे सिद्ध करा हुआ दूध स्त्रीके दूधका बढानेवाला जाननां ॥

अन्य योग।

वनकार्पासिकेक्षूणांमूलंसौवीरकेणवा।
विदारिकंदंसुरयापिबेद्वास्तन्यवर्धनम् ॥

अर्थ-वनकपास (नरमाकपास) ईख, इनकी जडको कांजीमें पीसके पीवे, अथवा विदारीकंदको दारुके साथ पीवे तो दुग्ध बढे ॥

स्तनशोथका यत्न।

शोथंस्तनोत्थितमवेक्ष्यभिषग्विदध्याद्यद्विद्रधावभिहितंबहुधा विधानम् ॥ आमेविदह्यतितथैवगतेचपाकेयस्याःस्तनौसतत मेवचनिर्गृहीतौ ॥

अर्थ-स्तनके ऊपर सूजन आई हुई देखकर वैद्यने जो विधान विद्रधी रोगपर कहा है वह सब विधान करना और स्तनकी सूजनमें आमता होवे अथवा दाह होता होवे या पकगई होवे तौभी निरंतर उनके ऊपर विद्रधि-रोगोक्त विधान करना ॥

स्तनशोथचिकित्सा।

पित्तघ्नानिसुशीतानिद्रव्याण्यत्रप्रयोजयेत् ।
जलौकाभिर्हरेद्रक्तंततस्तनावुपनाहयेत् ॥

अर्थ-स्तनशोथमें पित्तनाशक और शीतल सब औषध देवे । तथा दुष्ट रुधिरको जोख लगायके निकाल डाले तथा उन स्तनोंमें उपनाहन स्वेदन-विधि करनी चाहिये ॥

विशालादि लेप।

लेपोविशालामूलस्यहंतिपीडांस्तनोत्थिताम् ।
निशावल्कलकल्काभ्यांलेपःप्रोक्तःस्तनार्तिहा ॥

अर्थ-इन्द्रायनकी जडका लेप स्तनकी पीडाको दूर करे । अथवा हलदीके वक्कलका कल्क करके लेप करनेसे स्तनकी पीडा दूर होय ॥

श्रीपर्ण्यादि स्तनवर्द्धन ।

श्रीपर्णीरसकल्काभ्यांतैलंसिद्धंतिलोद्भवम् । तत्तैलंतूलकेन्य स्यस्तनस्योपरिधारयेत् ॥ पतितावुत्थितौस्त्रीणांभवेतांतुप योधरौ । गजकुंभसमाकारावुत्तुंगौस्तनमंडलौ ॥

अर्थ-श्रीपर्णीके रस और कल्कको डालके तिलीका तेल सिद्ध करे फिर तेलको रूईके फाहेमें लगाय स्तनोंके ऊपर रखे तो गिरे हुए स्तन हाथीके मस्तकके समान खडे हो जावे ॥

वनकार्पासिकादिपान ।

वनकार्पासिकेक्षूणांमूलंवापर्पटोद्भवम् ।

विदारिकंदसुरयापिबेद्वास्तन्यवर्धनम् ॥

अर्थ–वनकपास और ईख, इनकी जडको अथवा पित्तको या विदारीकंदको मद्यके साथ पीवे तो स्तनोंमें दूध वढे ॥

नागबलादिमर्दन।

जलेनागबलामूलंपिष्ट्वामर्दनमाचरेत्।
कठिनंपीनतुंगाढ्यंभवतिस्तनमंडलम् ॥

अर्थ–नागबला (कगही) की जडको जलमें पीसके स्तनोंपर मालिश करनेसे स्तन कठोर पुष्ट और खडे हो जावे ॥

स्तनदृढीकारणपद्मबीजादि।

सपद्मबीजंसितयाभक्षितंदुग्धवारिणा।
दृढंस्त्रीणांस्तनद्वंद्वंमासेनकुरुतेकिल ॥

अर्थ–कमलगट्टेका चूर्ण मिश्री मिलाय दूध और जलके साथ भक्षण करे तो १ महीनेमेंही स्त्रीके दोनों स्तन कठोर हो जावे ॥

गोधूमादियूष।

गोधूमचूर्णतुल्यःशाखोटकदलनिर्मितोयूषः।
भक्तोगोघृतसहितासप्ताहात्स्त्रीषुदुग्धकरः ॥

अर्थ–गैंहूका भुना चूनके बराबर सहोडेके पत्तोंका यूष लेवे और इसके साथ भात और गौका घी मिलायके खाय तो सात दिनमें स्त्रीको अत्यंत दूध होय ॥

स्त्रीरोगे पथ्यापथ्य।

यत्पथ्यंयदपथ्यंचरक्तपित्तेषुकीर्तितम्। प्रदरेपियथादोषंतत्तु
नारीरुजित्यजेत् ॥ वातव्याधिवतांपथ्यमपथ्यंचयदीरितम्।
शालयःषष्टिकामुद्गागोधूमालाजसक्तवः॥ नवनीतंघृतंक्षीरंरसा
न्समधुशर्करान्। पनसंकादलंधात्रीद्राक्षाम्लंस्वादुशीतलम्॥
कस्तूरीचंदनंमालाकर्पूरंमधुलेपनम्। चंद्रिकास्नानमभ्यंगो
मृदुशय्याहिमानिलाः॥ संतर्पणंप्रियाश्लेषोविहाराश्चमनोरमाः।
प्रियंकरंचान्नपानंगर्भिणीनांहितंसदा ॥

अर्थ--रक्तपित्त रोगमें जो पथ्यापथ्य कहाहै वही स्त्रीके प्रदर रोगमें पथ्यापथ्य करावे तथा वातव्याधिवालेनको जो पथ्यापथ्य कहाहै एवं साली चावल, सांठीचावल, मूंग, गेंहूं, खील, सत्तू, मक्खन, घृत, दूध, सहत और मिश्री मिले रस, फनस, केलाकी गहर, आमले, दाखखट्टी, मिट्ठी, शीतल, कस्तूरी, चंदन, कपूरकी माला, सहतका लेप, चांदनीमें बैठना, स्नान, मालिस, नरम सेज, शीतल पवन, तर्पण करना, प्यारेसे मिलाप, मनको रमानेवाले विहार और जो जो अन्नपान हितकारी होवे सब गर्भवती स्त्रियोंको सदैव हित हैं॥

स्त्रीरोगमें अपथ्य।

स्वेदनंवमनंक्षारंकदन्नंविषमाशनम्। अपथ्यमिदमुद्दिष्टंगुर्विणीनांमहर्षिभिः॥ सूतिकाख्येषुरोगेषुवातश्लेष्मोद्भवेषुच। तत्र रोगानुकल्पेनपथ्यापथ्यानिनिर्दिशेत्॥

अर्थ-स्वेदन, वमन, खारका पदार्थ, दुष्ट अन्न, विषम भोजन ये सब गर्भवतीके वास्ते अपथ्य कहेहैं प्रसूतके रोगमें तथा वात कफके रोगमें जहां जैसा पथ्यापथ्य उचित है उस रोगानुसार वैद्यको करना चाहिये॥

इति श्रीमाथुरदत्तरामपाठकनिर्मिते बृहन्निघण्टुरत्नाकरे स्त्रीरोगाधिकारः समाप्तः॥

बालरोग।

बालरोगनिदान।

धात्र्यास्तुगुरुभिर्भोज्यैर्विषमैर्दोषलैस्तथा।
दोषादेहप्रकुप्यंतिततःस्तन्यंप्रदुष्यति॥

अर्थ-जड, विषम और दोषयुक्त अन्न खानेसे धात्रीके शरीरमें दोष, (वात, पित्त, कफ) कुपित होकर स्तनके दूध नष्ट करदेते हैं॥

मिथ्याहारविहारिण्यादुष्टावातादयःस्त्रियः।
दूषयंतिपयस्तेनजायंतेव्याधयःशिशोः॥

अर्थ-स्वेच्छाचारसे आहार और विहार करनेवाली स्त्रीके शरीरमें वातादि दोष दूषित होकर दूधको दुष्ट करदेतेहैं इससे बालकके शरीरमें व्याधि उत्पन्न होतेहैं॥

त्रिविधफालक ।

त्रिविधःकथितोबालःक्षीरान्नोभयवर्तनः ।
स्वास्थ्यंताभ्यामदुष्टाभ्यांदुष्टाभ्यांरोगसंभवः ॥

अर्थ-बालक तीन प्रकारका है जैसे-दूध पीनेवाला, अन्न खानेवाला, और अन्न तथा दूध दोनोंका सेवन करनेवाला, तहां दूध और अन्न ये यदि शुद्ध होय तो रोग नहीं होय, और अन्न तथा माताके दूध ये दूषित होवे तो वह बालक अवश्य रोगी होय ॥

दंतोद्भिदको मुख्यत्व ।

दंतोद्भवश्चरोगाणांसर्वेषामेवकारणम् । विशेषज्वरविड्भेदकाश्र्यच्छर्दिशिरोरुजाम् । अभिष्यंदश्चशोथश्चविसर्पश्चप्रजायते ॥

अर्थ--बालकोंके दांतोंका निकलनाही सब रोगोंका मुख्य कारण है ॥

बालककी अन्तर्गत पीडा जाननेका उपाय ।

शिशोस्तीव्रामतीव्रांचरोदनाल्लक्षयेद्रुजम् । सयंस्पृशेद्दृशंदेशं यत्रचस्पर्शनाक्षमः ॥ तत्रविद्याद्रुजंमूर्ध्निरुजंचाक्षनिमीलनात्। कोष्ठेविबंधवमथुस्तनदंशांत्रकूजनैः ॥ आध्मानपृष्ठनमनजठरोन्नमनैरपि । बस्तौगुह्येचविण्मूत्रसंगोत्रासदिगीक्षणैः । स्रोतांस्यंगानिसंधींश्चपश्येद्यत्नान्मुहुर्मुहुः ॥

अर्थ-बालककी घोर पीडा और साधारण पीडा उसके रुदन करनेसे अनुमान करना [यदि बालक थोडा रोवे तो अल्परोग और अधिक रुदन करे तौ घोर रोग जानना चाहिये] बालक जिस २ जगहका स्पर्श करे और जिस २ स्थानको छूने न देवे उसी स्थानमें रोग जानना । तहां नेत्रोंके बंद करनेसे मस्तकमें रोग जानना । मलका शुद्ध न उतरना, सरेकर्मा, माताके स्तनोंको काटना, होंठ आदिको डसना, आतोंका बोलना, तथा अफरा हो, पीठका नव जाना, तथा पेटका ऊँचा होना इन लक्षणोंसे बालकके पेटमें रोग है ऐसा जानना । मल मूत्रके न उतरनेपर और बालकको वारंवार डर लगे तो उसके मूत्राशय और गुदामें रोग जानना । यह वैद्य बालकके कान, मुख आदि छिद्र और अंगकी संधियोंको वारंवार देखकर बालकके रोगकी परीक्षा करे ॥

बालककी लंघनमें विधिनिषेध ।

सर्वंनिवार्यतेबालेस्तन्यंनैवनिवार्यते ।

मात्रयालंघयेद्धात्रीशिशोरेतद्धिलंघनम् ॥

अर्थ–बालककी सब वस्तु देना वर्जित हो सक्ता हैं परंतु माताका दूध देनेका निषेध कहीं नही है यदि बालक लंघन करानेसेही अच्छा होता दीखे तो उसकी माताको लंघन करनाही बालकका लंघन जानना ॥

सामान्यचिकित्सा।

भैषज्यंपूर्वमुद्दिष्टंमहतांयज्ज्वरादिषु। तदेवकार्यंबालानांकिंतु दाहादिकंविना ॥ अग्निदाहक्षारवमनविरेचनशिराव्यधादिकं विनामहाकष्टेचोत्पन्नेवमनविरेकाद्यपिदद्यात् ॥

अर्थ–जो औषध बडे मनुष्योंके ज्वर आदि रोगोंपर लिखी है वही औषध बालकोंको देनी चाहिये परंतु बालककी मात्रा छोटी करके देवे। और दागना, जलाना, खार लगाना, वमन और विरेचन आदि कर्म करना मना है। परंतु यदि बालकके घोर रोग दाह और वमन विरेचन आदिसेही अच्छे होते दीखे तो येहभी करे ॥

प्रमाणांतर।

विरेकवस्तिवमनाहतेकुर्य्याच्चनात्ययात्। तएवदोषदूष्याश्च ज्वराद्याव्याधयश्चये। अतस्तदेवभैषज्यंमात्रात्वस्यकनीयसी ॥

अर्थ–यदि बहुत भारी रोग न होय तो बालकके विरेचन और वमनादि कदापि न करे जो बडोंके दोष दूष्यादिके बिगडने ज्वरादि रोग होते हैं वोही सब दोष दूष्य बालकोंके रोग प्रगट करनेवाले जानने इसी वास्ते जो औषध बडोंके लिये लिखी है वही छोटे २ बालकोंकी जाननी परंतु मात्रा छोटी कल्पनाकर लेनी चाहिये ॥

बालकोंकी मात्राका प्रमाण।

रसलोहादिभैषज्यंमहतांयज्ज्वरादिषु।
युंज्यात्तदेवबालानांतत्रमात्राकनीयसी ॥

अर्थ–रस (मालिनी वसंतादि) लोह आदिकी भस्म यह जो बडोंके वास्ते कही है वही छोटोंको जाननी परंतु बालककी मात्रामें फरख है, अर्थात् जो मात्रा बडोंको मासेनकी कही है वही बलकोंको रत्तीनकी जाननी ॥

तथा प्रमाणांतर।

विडंगफलमात्रंतुजातमात्रस्यभेषजम्।
अनेनैवप्रमाणेनमासिमासिप्रवर्धयेत् ॥

अर्थ–उत्पन्न हुए बालकको वायविडंगके बराबर मात्रा देवे इसी प्रमाणसे महिनेकी महिने एक विडंग बढावे। यह विश्वामित्रका मत है॥

बालकी मात्रास्थिरत्व और ऱ्हासत्व।

प्रथमेमासिबालायदेयाभेषजरक्तिका।अवलेह्यातुकर्तव्यामधुक्षीरसिताघृतैः॥एकैकांवर्धयेत्तावद्यावत्संवत्सरोभवेत्। तदूर्ध्वं माषवृद्धिः स्याद्यावत्षोडशवत्सराः॥ गुंजाः पंचाद्यमाषकाः॥

अर्थ–पहले ही महीनेमें वैद्य बालकको एक रत्तीके प्रमाण औषधकी मात्रा देय। यदि चूर्ण होयतो सहत, दूध, मिश्री और घृत डालके चाटने योग्य अवलेहसी होजावे इस प्रकार १ वर्ष करे फिर २ माषा मात्रा दूसरे वर्षमें, तीन मासे तीसरे वर्ष इस प्रकार सोलह वर्षपर्यंत सोलह मासे देवे (परंतु यहां पर पांच रत्तीका माषा लेना चाहिये)॥

कषायादि मात्राका प्रमाण।

ततःस्थिराभवेत्तावद्यावद्वर्षाणिसप्ततिः।
ततोबालकवन्मात्राऱ्हासनीयाशनैःशनैः॥

अर्थ–इस प्रकार १६ वर्षकी अवस्थामें मात्रा स्थिर होजाती है (घटबढे नहीं है) जब इस प्राणीकी ७० वर्ष व्यतीत होय सोई क्रमसे बालके समान मात्राकोभी घटाय देनी चाहिये॥

क्षीरकेसाथ देनेके नियम।

चूर्णकल्कावलेहानामियंमात्राप्रकीर्तिता।
कषायस्यपुनःसैवविज्ञातव्याचतुर्गुणा॥

अर्थ–यह ऊपर लिखी मात्रा चूर्ण, कल्क, और अवलेहकी जाननी। यदि कषाय क्काथ आदि देनी होयतो उसकी चौगुनी मात्रा अर्थात् चार रत्तीसे बढानी चाहिये॥

कुकूणक।

कुकूणकःक्षीरदोषाच्छिशूनामेववर्त्मनि। जायतेतेननेत्रंचकंडूरंचस्रवेन्मुहुः॥ शिशुःकुर्याल्ललाटाक्षिकूटनासाविघर्षणम्। शक्तोनार्कप्रभांद्रष्टुंननेत्रोन्मीलनक्षमः॥

अर्थ–कुकूणक यह रोग बालकोंके दूधके दोषसे होताहै, इस रोगके होनेसे बालकके नेत्र खजावे और पानी वहे नेत्रोंमें कीचड आनेसे वो ललाट, नेत्र

और नाकको रगडे, धूपके सामने देखा न जाय, उसके नेत्र खुले नहीं इसको लौकिकमें कोथस्राव कहते हैं। यह रोग बालकोंकेही होताहै । सो वाग्भट्टमें लिखा है ॥

चिकित्सा।

फलत्रिकंलोध्रपुनर्नवेचसशृंगवेदंरंबृहतीद्वयंच ।
आलेपनंश्लेष्महरंसुखोष्णंकुकूणकेकार्यमुदाहरंति ॥

अर्थ–त्रिफला, लोध, पुनर्नवा, अदरख छोटी और बडीकटेरी, इनको बारीक पीस थोडी गरम करके लेप करेतो कफ दूर हो यह कुकूणक रोगपर अनुभव करी हुई होती है ॥

पारिगर्भिक।

मातुःकुमारोगर्भिण्याःस्तन्यंप्रायःपिबन्नपि । कासाग्निसादव मथुतंद्राकार्श्यारुचिभ्रमैः॥युज्यतेकोष्ठवृद्ध्याचतमाहुःपारिग र्भिकम्। रोगंपरिभवाख्यंचदद्यात्तत्राग्निदीपनम् ॥

अर्थ--बालकके गर्भिणी माताका दूध पीनेसे उसके खांसी, मंदाग्नि, वमन, तन्द्रा, अरुचि, कृशता और भ्रम ये होय और उसके पेटकी वृद्धि होय इस रोगको वैद्यगण पारिगर्भिक अथवा परिभव कहतेहैं, इस रोगमें अग्निदीपन कर्ता औषधि बालकको देनी चाहिये ॥

पारिगर्भिकरोगका यत्न ।

पारिगर्भिकरोगेतुयुज्यतेवन्हिदीपनम् ॥

अर्थ–पारिगर्भिक रोगमें इस बालकको जठराग्निके दीपन कर्ता औषध देनी चाहिये ॥

तालुकंटक ।

तालुमांसेकफःक्रुद्धःकुरुतेतालुकंटकम् । तेनतालुप्रदेशस्य निम्नतामूर्ध्निजायते ॥ तालुपातःस्तनद्वेषःकृच्छ्रात्पानंशकृद्द्र वम्। तृडक्षिकंठास्यरुजाग्रीवादुर्धरतावमिः ॥

अर्थ–तालुके मांसमें कफ कुपित होकर तालु कंठके रोगको करे उसके होनेसे तालुके ऊपरका भाग नीचा हो जाय तथा भीतरसे बालकका तालु अविध जाय, इसीसे बालक स्तन छातीको नहीं दाबै और पीवेभी तो बडे

१ कुकूणकः शिशोरेव दीनोत्पत्तिनिमित्तकः ॥

कष्टसे पीवे, पतला मल होजाय, प्यास लगे, नेत्र कंठ मुख इनमें पीडा होय, नार गिरि पडे और जो दूध पीवे उसे डालदे ॥

हरीतक्यादिकल्क।

हरीतकीवचाकुष्टकल्कंमाक्षिकसंयुतम्।
पीत्वाकुमारःस्तन्येनमुच्यतेतालुकंटकात् ॥

अर्थ-हरड, वच, कूठ, इनका कल्क कर सहत और माताके दूधमें मिलाय पीवे तो यह बालकका तालुकंटक रोग दूर होय ॥

बालककी विसर्प और पद्मरोग।

विसर्पस्तुशिशोःप्राणनाशनोबस्तिशीर्षजः ॥ पद्मवर्णोमहाप
द्मोरोगोदोषत्रयोद्भवः।शंखाभ्यांहृदयंयातिहृदयाद्वागुदंव्रजेत् ॥

अर्थ-बालकोंके जो मस्तक और बस्ति (मूत्रस्थान) में विसर्प होय तो बालककी प्राणनाशक जाननी, जो विसर्प लाल कमलके पत्रके समान लाल होय यह महापद्म रोग त्रिदोषज है यह कनपटीमें उत्पन्न होकर हृदय पर्यंत जाय है, अथवा हृदयमें होकर गुदा पर्यंत जाता है ॥

क्षुद्ररोग।

क्षुद्ररोगेचकथितेअजगल्लयहिपूतने ॥ ज्वराद्याव्याधयःसर्वेमह
तांयेपुरेरिताः। बालदेहेपितेतद्वद्विज्ञेयाःकुशलैःसदा ॥

अर्थ-क्षुद्ररोगनिदानमें जो अजगल्ली और अहिपूतन कहे हैं सो और ज्वरादिक सर्व रोग जो बडे मनुष्योंके होते हैं अर्थात् जिन रोगोंको पूर्व कह आये हैं वो सब रोग बालकोंके देहमेंभी होते हैं ऐसे कुशल वैद्योंको जानना चाहिये ॥

ग्रहजुष्ट बालकके लक्षण।

बालग्रहाअनाचारात्पीडयंतिशिशुंयतः।
तस्मात्तदुपसर्गेभ्योरक्षेद्बालंप्रयत्नतः ॥

अर्थ-बालकोंके ग्रह (स्कंदादिक) बालको आचार विचार रहित अर्थात् भ्रष्ट रखने दुख देते हैं अतएव इसकी माताको उचित है उन ग्रहोंके छूतसे यत्नपूर्वक बालकी रक्षा करे ॥

सामान्यग्रहजुष्टबालकके लक्षण।

क्षणादुद्विजतेबालःक्षणात्त्रस्यतिरोदिति।नखैर्दंतैर्दारयतिधात्री
मात्मानमेवच॥ऊर्ध्वंनिरीक्षतेदंतान्खादेत्कूजतिजृंभते । भ्रुवौ

क्षिपतिदंतोष्ठंफेनंवमतिचासकृत् ॥ क्षामोतिनिशिजागर्तिशू नांगोभिन्नविट्स्वरः । मांसशोणितगंधश्चनचाश्नातियथापुरा। सामान्यग्रहजुष्टानांलक्षणंसमुदाहृतम् ॥

अर्थ-कभी क्षणभरमें बालक विह्वल हो जाय, कभी क्षणभर डरे, रोवे, नख और दांतोंसे अपने शरीर और माताको खसोटे, ऊपरको देखे, दांतोंको चवावे, किलकारी मारे, जँभाई लेय,भ्रुव भौंहको तिरछी करे,दांतोंसे होंठोंको खाय, वारंवार मुखसे झाग डाले, वो अत्यंत क्षीण होय, रात्रिमें सोवे नहीं, देहमें सूजन होय, मल पतला होय, स्वर बैठ जाय, उसके देहमें रुधिर- मांसकीसी वास आवे, जितना पहले खाता होय उतना नहीं खाता, ये सामान्य ग्रहव्याप्त बालकके लक्षण हैं अब कहते हैं कि स्कंदादिक ग्रह पूजाके अर्थ बालकोंको मारे है सो चरकमें[1] लिखा है ॥

स्कंदग्रहयुक्त बालके लक्षण ।

एकनेत्रस्यगात्रस्यस्रावःस्यंदनकंपनम् । अर्धदृष्टचानिरीक्षेत वक्रास्योरक्तगंधिकः ॥ दंतान्खादतिविस्रस्तःस्तन्यंनैवाभिनं दति । स्कंदग्रहगृहीतानांरोदनंचाल्पमेवच ॥

अर्थ--बालकके एक नेत्रसे पानी गिरे और अंगमें स्राव कहिये पसीना वहे, एक ओरका अंग फडके, तथा थर थर कांपे वो बालक आधी दृष्टिसे देखे, मुख टेढा हो जाय, रुधिरकीसी दुर्गंधि आवे वो बालक दांतोंको चवावै, अंग सिथिल हो जाय, स्तनको नहीं पीवै, और थोडा रोवे यह स्कंद ग्रह लगे बालकके लक्षण हैं। इस जगह स्कंद ग्रह करके शिवजीके प्रगट करें जो ग्रह हैं उनमेंसे श्रीशिवपुत्र स्वामि कार्तिकका ग्रहण न करना चाहिये ॥

सोमवल्ली आदिकी माला ।

सोमवल्लीमिंद्रवृक्षंबृहतींबिल्वजेशमी ।
मृगादन्याश्चमूलानिग्रथितानिविधारयेत् ॥

अर्थ-सोमलता, कोह वृक्ष, कटेरी, बेल, छोकरा और इन्द्रायनकी जड, इनकी माला बनायके उस बालको पहनावे ॥

देवदारु आदिका घृत ।

देवदारुणिरास्नायांमधुरेषुगणेषुच ।

---

१ धात्रीमात्रोःप्राक्प्रदिष्टोपचाराच्छौचभ्रशान्मंगलाचारहीनात् । क्लिष्टांस्त्रस्तांस्तर्जितांस्ताडितांश्चपूजाहेतोर्हिंस्युरेतेकुमारान् ॥ इति ॥

सिद्धंसर्पिश्चसक्षीरंपातुमस्मैप्रदापयेत् ॥

अर्थ-देवदारु, रास्ना और मधुर गणकी (काकोली क्षीरकाकोली आदि) औषधोंके कल्कसे घृत सिद्ध करे फिर इसको माताके दूधमें मिलायके बालको पिलाय देवे, तो स्कंदग्रहकी बाधा दूर हो ॥

स्कंदग्रहको धूनी ।

सर्षपाःसर्पनिर्मोकोवचाकाकादनीघृतम् ।
उष्ट्राजादिगवांचापिरोमाण्युद्धूपनंभवेत् ॥

अर्थ-सपेद सरसों, सांपकी कांचली, वच, कौआठोडी, घृत, तथा ऊंट अथवा गौ आदिके बाल इन सबकी धूनी बनायके धूप देवे ॥

मृगादनीमाला ।

मृगादन्याश्चमूलानिग्रथितानिविधारयेत् ॥

अर्थ-इन्द्रायनकी जडके छोटे २ टुकडे करके माला बनायके पहने ॥

धूनी ।

यस्ताम्रचूडविहगोभयपार्श्वपक्षपुच्छैर्गवाज्यसहितैःकृतधूपनोऽगे । आरभ्यजन्मदिवसाद्दिनसप्तकंहिबालस्यतस्यनकुतश्चन भीतिरस्ति ॥

अर्थ--जो प्राणी मुरगेके दोनों तरफके पंख और पूछके पंखोंको गौके घृतमें मिलाय जन्म दिनसे लेकर ७ दिनतक धूनी देवे तो उस बालक फिर कभी डरे नहीं ॥

स्कंदापस्मारलक्षण ।

नष्टसंज्ञोवमेत्फेनंसंज्ञावानतिरोदिति ।
पूयशोणितगंधित्वंस्कंदापस्मारलक्षणम् ॥

अर्थ-बालक बेसुध होय, मुखसे छाटा डाले,जब होस हो तब रोवे,उसकी देहमें रुधिरकीसी दुर्गंधि आवे,इन लक्षणों करके स्कंदापस्मारके लक्षण जानने॥

स्कंदापस्मार ।

बिल्वःशिरीषगोलोमीसुरसादिश्चयोगणः ।
परिषेकःप्रयोक्तव्यःस्कंदापस्मारशांतये ॥

अर्थ-वेल, सिरख, सपेदवच, और सुरसादि गणकी समग्र औषध लेकर औटायके इससे स्नान करावे तो स्कंदापस्मार दूर होय ॥

सुरसादिगण।

सुरसाश्वेतसुरसापाठाफंजीफणिज्जकः। सौगंधिकंभूस्तृणकंराजिकाश्वेतवर्वरी ॥ कट्फलंखरपुष्पाचकासमर्दश्चशल्लकी। विडंगमथनिर्गुंडीकर्णिकारउदुंबरः॥ बलाचकाकमाचीचतथाचविषमुष्टिका। कफक्रिमिहरःख्यातःसुरसादिरयंगणः॥ अष्टमूत्रेविपक्वंचतैलमभ्यंजनेहितम् ॥

अर्थ–तुलसी सपेद, तुलसी स्याह, पाढ, भारंगी, जंभोरी, मरुवा, सुगंधितृण, भूतृण, राई, सपेद वर्वरी, कायफल, ओंगा, कसोंदी, सल्लईकी छाल, वायविडंग, निर्गुंडी, कनेर, गूलर, खिरेटी, मकोय, और बकायन, यह सुरसादि गण कफ और कृमि रोगको हरण करे इसको अष्ट मूत्रमें परिपक्व करके तेल बनाना चाहिये उस तेलकी बालकके देहमें मालिश करे॥

काकोल्यादि गण।

काकोलीक्षीरकाकोलीजीवकश्चर्षभस्तथा। ऋद्धिर्वृद्धिस्तथामेदामहामेदागुडूचिका॥ मुद्गपर्णीमाषपर्णीपद्मकंवंशलोचना। शृंगीप्रपौंडरीकंचजीवंतीमधुयष्टिका ॥ द्राक्षाचेतिगणोनाम्नाकाकोल्यादिरुदीरितः। स्तन्यकृद्बृंहणोवृष्यःपित्तरक्तानिलापहः॥

अर्थ–काकोली, क्षीकाकोली, जीवक, ऋषभक, ऋद्धि, वृद्धि, मेदा, महामेदा, गिलोय, मूँगपर्णी, माषपर्णी, पद्माख, वंशलोचन, काकडासिंगी, प्रपौंडरीक (कमलका भेद) जीवंती, मुलहटी और दाख यह काकोल्यादि गण है दूधको बढावे और स्तनकी पीडाको दूर करे बृंहण, वृष्य, रक्तपित्त और वातरक्त ये रोग दूर होय॥

वचादि धूप।

उत्सादनंवचाहिंगुमुक्तमत्रप्रकीर्तितम्। गृध्रोलूकपुरीषाणिकेशाअस्थिनखंघृतम् ॥ वृषभस्यचरोमाणियोज्यान्युद्धूपनेसदा ॥

अर्थ–वच, हींग इनको पीस उद्धूपन करे। गीध उल्लूके बीठकी तथा मनुष्यके बाल बकरी और गीध आदिकी हड्डी घी और बैलके रोम इनकी सदैव धूनी दये॥

अनंतादि धारण।

अनंतांकुक्कुटींबिंबींमर्कटींचापिधारयेत् ॥

अर्थ–अनंता (जवासा) कुक्कुटी रूखडी, कंदूरी और किवाछ इनकी जडको बालक धारण करे ॥

शकुनिग्रहलक्षण।

स्रस्तांगोभयचकितोविहंगगंधिःसंस्रावव्रणपरिपीडितः समंता त् । स्फोटैश्चप्रचिततनुःसदाहपाकैर्विज्ञेयोभवतिशिशुःक्षतः शकुन्या ॥

अर्थ–शकुनिग्रहसे पीडित बालकके अंग शिथिल होय, भयसे चकित होय, उसके अंगमें पक्षीके अंगके समान वास आवे, घाव होकर उसमेंसे लस वहै। सर्व अंगोंमें फोडा उत्पन्न होय और वो पके तथा दाह होय ॥

चिकित्सा।

स्कंदग्रहोक्तधूपाश्चहिताह्यत्रभवंतिच।
स्कंदापस्मारशमनंघृतमत्रापिपूजितम् ॥

अर्थ–इस शकुनिग्रहमें स्कंद ग्रहके वास्ते जो धूनी कही है सो धूनी देय। तथा स्कंदापस्मार ग्रहके नष्ट कर्त्ता घृत है वो सब देने चाहिये ॥

शतावरी आदिका धारण।

शतावरीमृगेर्वारुनागदंतीनिदिग्धिकाः।
लक्ष्मणांसहदेवींचबृहतींचापिधारयेत् ॥

अर्थ–सतावर, इन्द्रायन, नागदंती, कटेरी, लक्षणा, सहदेई और बडी कटेरी इत्यादि रूखडीनको धारण करे ॥

शकुनिग्रहमें स्नान।

शकुनिग्रहदुष्टस्यकार्यंवैद्येनजानता।
वेतसाम्रकपित्थानांक्वाथेनपरिषेचनम् ॥

अर्थ–वैद्य शकुनिग्रहग्रस्त बालकको बेत, आम और कैथ इनकी क्वाथसे उस बालकको स्नान करावे ॥

लेप।

ह्रीबेरमधुकोशीरसारिवोत्पलपद्मकैः।
लोध्रप्रियंगुमंजिष्ठागैरिकैःसंलिपेच्छिशुम् ॥

---

१ तदुक्तंहिरण्याक्षेण–संस्रावोदाहपाकाद्यैश्चित्तस्फोटैर्भयान्वितः । संस्रावोविस्रगंधःस्याच्छकुन्यापीडितः शिशुः ॥ इति ॥

अर्थ-नेत्रवाला, मुलहटी, खस, सारिवा, कमलगट्टा, लोध, मजीठ, प्रियंगू और गेरू इनको बारीक पीस शकुनिग्रह पीडित बालकके देहमें लेप करे ॥

रेवतीग्रहलक्षण।

व्रणैःस्फोटैश्चितंगात्रंपंकगंधमसृक्स्रवेत्।
भिन्नवर्चाज्वरीदाहीरेवतीग्रहलक्षणम् ॥

अर्थ-रेवती ग्रहसे पीडित बालकके अंगमें घाव और फोडा होय, उनमेंसे रुधिर वहे उसमें कीचकीसी बास आवै,दस्त होय,ज्वर होय,अंगमें दाह होय ॥

रेवतीग्रहस्नान।

अश्वगंधाजशृंगीचसारिवाथपुनर्नवा।
सहाविदारीश्वेतासांक्काथेनपरिषेचनम् ॥

अर्थ-असगंध, कांकडासिंगी, सरिवन, पुनर्नवा, घीकुवार और विदारीकंद इनका क्काथ करके बालक स्नान करावे ॥

कुष्टादितैल।

तैलमभ्यंजनेकार्यंकुष्टसर्जरसेतथा।
पलंकषायंनलदेतथागौरकदंबके ॥

अर्थ-कूट, राल, लाख, नरसल या गौरकदंबकी छालका कल्क डाल तैल सिद्धकरे इस तेलको रेवतीग्रहग्रस्त बालकको लगावे ॥

धवादिघृत।

धवाश्वकर्णककुभशल्लकींतिंदुकेषुच।
काकोल्यादिगणैर्वापिसिद्धंसर्पिःपिबेच्छिशुः ॥

अर्थ-धौं, अश्वकर्ण (सालकाभेद), कोह, सलई, तेंदू और काकोल्यादि गणकी औषध मिलायके घी सिद्धकरे यह उस बालकके पीनेको देय ॥

कुलित्थादि धूप।

कुलित्थाःशंखचूर्णंचप्रदेयःपूर्वगंधिकः। गृध्रालूकपुरीषाणिय
वानीमिश्रितंघृते ॥ संध्ययोरुभयोःकार्यमेतदुद्धूपनंशिशोः ॥

अर्थ-कुलथी, शंखचूरा, गंधक, गीध और उल्लूकी विष्ठा, अजमायन इसमें घृत मिलायके दोनों संध्यामें बालकको धूनी देवे ॥

पूतनाग्रहलक्षण।

अतिसारोज्वरस्तृष्णातिर्यक्प्रेक्षणरोदनम्।

नष्टनिद्रस्तथोद्विग्नस्त्रस्तःपूतनयाशिशुः ॥

अर्थ-पूतना ग्रहकी पीडासे बालको दस्त, ज्वर, प्यास होय, ढेढी दृष्टिसे दखे, रोवे, सोवे नहीं, व्याकुल होय, शिथिल होजाय ये लक्षण होतेहैं ॥

पूतनाग्रहजुष्टमें स्नान।

कपोतवंकारस्योनाकोवरुणःपारिभद्रकः।
आस्फोटनाचयोज्याःस्युर्बालानांपरिषेचने ॥

अर्थ-कबूतर, वक, टैंटू, वरना, नीमकी छाल और सारिवा इनका क्काथ करकै बालकको स्नान करावे ॥

पयस्यादि तैल।

नवापयस्यागोलोमीहरितालंमनःशिला । कुष्टंसर्जरसश्चैवतैलार्थैकल्कइष्यते। हितंघृतंतुगाक्षीर्यासंसिद्धंमधुनापिच ॥

अर्थ-नवीन क्षीरकाकोली, सपेद वच, हरिताल, मनसिल, कूठ, राल, इन सबका कल्क कर तेल सिद्ध करे । वंशलोचन और सहतके साथ सिद्ध कर घृत बालकको हितकारी जानने ॥

कुष्ठादि धूप।

कुष्टंतालीसखादिरंचंदनंस्यंदनंतथा। देवदारुवचाहिंगुकुष्टंगिरिकदंबकम्। एलाहरेणवश्चापियोज्याउद्धूपनेसदा ॥

अर्थ--कूठ, तालीसपत्र, खैरसार, चंदन, तिरिच्छ वृक्ष, देवदारु, वच, हींग, कुष्ट, गिरकदंब (पर्वतका कदंब) इलायची रेणुका इनकी धूनी देना सदैव हितहै ॥

अंधपूतनाग्रहलक्षण।

छर्दिःकासोज्वरस्तृष्णावसागंधोतिरोदनम्।
स्तन्यद्वेषोतिसारश्चअंधपूतनयाभवेत् ॥

अर्थ-अंधपूतनाग्रहकी पीडासे बालकके वमन होय, खांसी, ज्वर, प्यास, चर्बीकीसी दुर्गंधि, बहुत रोना, स्तन्य (छाती) को मुखसे दाबे नहीं और अतिसार ये लक्षण होते हैं ॥

गंधपूतनाग्रह।

तिक्तद्रुमाणांपत्रैस्तुक्काथःकार्योभिषेचने।

अर्थ-तिक्त (कडवे) वृक्षोंके पत्तोंकी क्काथसे बालकको स्नान करावे ॥

पंचतिक्तगण।

बिल्वःपटोलंक्षुद्राचगुडूचीवासकस्तथा।
विसर्पकुष्ठनुत्ख्यातोगणोयंपंचतिक्तकः॥

अर्थ-बेलगिरी, पटोलपत्र, कटेरी, गिलोय और अडूसा इनका क्वाथ पंचतिक्तक कहाता है यह विसर्प और कुष्ठ रोगको दूर करे॥

पुरीषादिधूप।

पुरीषंकौक्कुटंकेशाश्चर्मसर्पभवंतथा।
जीर्णेनसर्पिषाचैतद्धूपनायोपकल्पयेत्॥

अर्थ-मुरगेकी बीठ, बकरीके बाल, साँपकी कांचली, इनमें पुराना घृत मिलायके धूप देवे॥

सर्वगंध।

कुंकुमागरुकर्पूरकस्तूरीचंदनैःसमैः।
सर्वगंधइतिख्यातोगणोह्युत्तमगंधदः॥

अर्थ-केशर, अगर, कपूर, कस्तूरी और चंदन यह समान भाग लेवे इसे सर्वगंधगण उत्तम गंधका देनेवाला है॥

शीतपूतनाग्रहलक्षण।

वेपतेकासतेक्षीणोनेत्ररोगोविगंधिता।
छर्द्यतीसारयुक्तश्चशीतपूतनयाशिशुः॥

अर्थ-शीतपूतना ग्रहकी पीडासे बालकके मुखकी कांति क्षीण होजाय, उसको नत्ररोग होय देहमें दुर्गंधि आवै, वमन होय और दस्त होय॥

रोहिण्यादिघृत।

रोहिणीनिंबखदिरपलाशककुभत्वचः।
निःक्वाथ्यतस्मान्निःक्वाथेसक्षीरंविपचेद्घृतम्॥

अर्थ-कुटकी, नीमकी छाल, खैर, पलासपापडा, कोहकी छाल इनका क्वाथ करके फिर इसको छानके दूध और घृत मिलाय घृत सिद्ध करे यह बालकको पिलावे॥

गृध्रादिधूपन।

गृध्रोलूकपुरीषाणिबस्तगंधामहित्वचम्।
निंबपत्राणिचतथाधूपनार्थंसमाहरेत्॥

अर्थ–गीध उल्लूकी बीठ बर्वरी सांपकी कांचली और नीमके पत्ते इनकी धूनी देवे तो शीतपूतनाशांति हो ॥

मुखमंडिकाग्रहलक्षण।

प्रसन्नवर्णवदनःशिराभिरिवसंवृतः।
मूत्रगंधिश्चबह्वाशीमुखमंडिकयाभवेत् ॥

अर्थ–मुखमंडिका ग्रहकी पीडासे बालके मुखकी कांति सुंदर होय और देहकी कांति श्रेष्ठ होय, शिरान्में शरीर बँधा होजाय, उसके देहमें मूत्रकीसी दुर्गंधि आवै, यह बालक बहुत भक्षण करे ॥

मुखमंडिकाग्रहस्नान।

कपित्थबिल्वतर्कारीवासागंधर्वहस्तकः।
कुबेराक्षीचयोज्याःस्युर्बालानांपरिषेचने ॥

अर्थ–कैथ, बेल, अरनी, अडूसा, अंडकी जड और सागरगोटा, इनके गरम जलसे बालकको स्नान करावे ॥

भृंगादि तैल।

स्वरसेभृंगवृक्षाणांतथैवहयगंधिका।
तैलंवचांचसंयोज्यपचेदभ्यंजनेशिशोः ॥

अर्थ–भांगरेके स्वरसमें अथवा असगंध और वच इनका कल्क डालके तेल पचावे इसको बालकके देहमें लगावे ॥

वचादिधूप।

वचासर्जरसंकुष्टंसर्पिश्चोद्धूपनेहितम् ॥

अर्थ–वच, राल, कूठ और गौका घृत इनकी धूनी देना हितकारी है ॥

नैगमेयग्रहलक्षण।

छर्दिस्यंदनकंठास्यशोषमूर्छाविगंधिता।
उर्ध्वपश्येद्दशेद्दंतान्नैगमेयग्रहंवदेत् ॥

अर्थ–वमन, कंठ, मुखका सूखना मूर्च्छा, दुर्गंधि, ऊपरको देखे, दंतोंको चबावे, इन लक्षणोंसे नैगमेय ग्रहकी पीडा जाननी ॥

नैगमेयग्रह चिकित्सा।

बिल्वाग्निमंथपूतीकैःकार्यंस्यात्परिषेचनम् ॥

अर्थ–बेल, अरनी, कंजा, इनके क्वाथसे न्हिलावे॥

प्रियंग्वादितैल।

प्रियंगुसरलानंताशतपुष्पाकुटंनटैः
पचेत्तैलंसगोमूत्रंदधिमस्त्वम्लकांजिकैः ॥

अर्थ—फूलप्रियंगू, सरल, धमासौ, सौंफ, कैवर्तीमोथा, इन सबका कल्क डाले फिर गोमूत्र दही छाछका पानी और खट्टी कांजी इनके साथ तिलीका तेल पचावे इस तेलको बालककी देहमें लगावे ॥

वचादि उत्सादन।

वचांवयस्थांजटिलांगोलोमींचापिधारयेत्।
उत्सादनंहितंचात्रस्कंदापस्मारनाशनम् ॥

अर्थ—वच, वयस्था, भूतकेशी, सपेद रंगकी वच इनका उत्सादन स्कंदापस्मारनाशक है ॥

मर्कटादि धूप।

मर्कटोलूकगृध्राणांपुरीषाणिपितृग्रहे।
धूमःसुज्ञजनैःकार्योबालस्यहितमिच्छुभिः ॥

अर्थ—वानर, उल्लू और गीधके वीठकी धूनी देना बालकको पितृग्रहमें अत्यंत गुणकारी है ॥

उत्फुल्लिकालक्षण।

आध्मानवातसंफुल्लोदक्षकुक्षौशिशोर्भवेत्।
उत्फुल्लिकासाविख्याताश्वासश्वयथुसंकुला ॥

अर्थ—आध्मान रोग (पेटका फूलना) होय, बालकके दाहिने कूखमें शोथ होय, श्वास और सूजन आवै ये लक्षणसे उत्फुल्लिका रोग जानना ॥

चिकित्सा।

निस्सारयेज्जलौकाभीरक्तंचजठरेतदा। कर्कोटनागरामेघकं
कोलातिविषाभवम् ॥चूर्णदुग्धेनसंमिश्रंपाययेन्मातरंभिषक्॥
धात्रीवापाययेत्सद्यःक्षीरदोषनिवारणम् ॥

अर्थ—प्रथम वैद्य जोख लगायके उसके उदरका रुधिर निकाले। फिर ककोडा, सोंठ, नागरमोथा, कंकोल, अतीस इनका चूर्ण दूधमें मिलायके वैद्य उस बालककी माताको पिलावे, या उसकी धायको पिलावे तो उनके क्षीरदोषको दूर करेहै ॥

शेक दंभ बिल्वादि काढा।

अग्निनास्वेदयेद्वापिदाहयेच्चशलाकया । जठरेबिंदुकाकारं पृष्ठभागेयथाध्रुवम् ॥ बिल्वमूलकंनीरदोवृकीत्रैफलंतथा सिंहिकाद्वयम् । गौडमिश्रितंक्वाथितंसमंपाययेच्छिशुंफुल्लि कापहम् ॥

अर्थ-उत्फुल्लिकावाले बालकको अग्निसे स्वेदन करे। तथा शलाई करके जलावे। परंतु उस बालकके पेटपर बिंदुके आकार गोल दाग देय इसी प्रकार पृष्ठभागमें देवे। बेलकी जड, नागरमोथा, पाढ, त्रिफला, दोनों कटेरी इनका क्वाथकर इसमें गुड मिलायके बालकको पिलावे तो उत्फुल्लका रोग दूर होय॥

पिप्पल्यादिपान।

पिप्पलीग्रंथिकंविश्वात्रायमाणाचदार्विका। पथ्येभपिप्पलीभां र्गीलवंगंटंकणस्तथा ॥ कुमारीबालपथ्याचसैंधवस्त्वजवारि णा। घर्षितंपाययेत्प्रातर्द्विटंकंफुल्लिकापहम् ॥

अर्थ-पीपल, पीपरामूल, सोंठ, त्रायमाण, दारुहलदी, हरड, गजपीपल, भारंगी, लौंग, सुहागा, घीगुवार, छोटीहरड और सैंधानिमक इनको बकरीके मूत्रके साथ घोटके दोटंकके अनुमान पीवे तो उत्फुल्लका दोष दूर होय॥

सर्पत्वचादिधूप।

सर्पत्वग्लशुनंमूर्वासर्षपारिष्टपल्लवाः॥ बिडालविडजालोममेष शृंगीवचामधु। धूपःशिशोर्ज्वरघ्नोयमशेषग्रहनाशनः॥

अर्थ-सांपकी कांचली, लहसन, मूर्वा, सरसों, नीमके पत्ते, बिलावकी वीठ बकरीके बाल, मेढासिंगी, वच और सहत इन सबको एकत्र पीसके धूनी देय तो बालकका ज्वर और सब ग्रह दूर होय॥

बालकके ज्वरकी चिकित्सा।

वचाकुष्टंतथाब्राह्मीसिद्धार्थकमतोपिच । सारिवासैंधवंचैवपि प्पलीघृतमष्टमम् ॥ सिद्धंघृतमिदंमेध्यंपिबेत्प्रातर्दिनेदिने । दृढास्मृतिःक्षिप्रमेधाकुमारोबुद्धिमान्भवेत् ॥ नपिशाचानरक्षां सिनभूतानचमातरः। प्रभवंतिकुमाराणांपिबतामष्टमंगलम् ॥ बालिशांतीष्टकर्माणिकार्याणिग्रहशांतये ॥

अर्थ-वच, कूठ, ब्रह्मी, सपेदसरसों, सारिवा, सैंधानिमक, पीपल, और आठवा घी ले सबको घृतकी विधिसे पचायके इस पवित्र घीको बालक नित्य पीवे तो उसकी स्मरणशक्ति दृढ हो तत्काल बुद्धिको बढावे तथा वह बालक अत्यंत बुद्धिवान् हो इसके सेवनसे न राक्षसोंका न पिशाचोंका न भूत प्रेतादिकोंका भय होय इस घृतको अष्टमंगल कहते हैं। तथा उस बालकके ग्रहशांति करनेको बलिदान शांतिकर्म करने चाहिये ॥

सहादिलेप।

सहागुंडीतिकोदार्वीक्काथस्नानंग्रहापहम्।
सप्तच्छदाभयनिशाचंदनैश्चानुलेपनम् ॥

अर्थ-सहा, निर्गुंडी, दारुहलदी, इनका क्काथ कर बालकको स्नान करावे सतवन, हरड, हलदी, और चंदन इनको पीस देहमें लेप करे ॥

बालज्वरांकुश।

मृतसूताभ्रवंगंचरौप्यंयोज्यंचतत्समम्। मृतताम्रस्यतीक्ष्णस्य प्रत्येकंचद्विभागिकम् ॥ व्योषंबिभीतकंचैवकासीसंमृतमेवच। नागवल्लीदलरसैर्भावयेच्चपुनः पुनः॥ वल्लप्रमाणोदातव्यःसर्वरोगहरःपरः। गर्भिणीबालकानांचसर्वज्वरविनाशनः ॥

अर्थ-पारदकी भस्म अभ्रकभस्म, वंगभस्म, रूपरस ये सब समान भाग लेवे,तामेकी और खेडी लोहकी भस्म ये प्रत्येक दो दो भाग लेवे,सोंठ, मिरच, पीपल, बहेडा, कासीसकी भस्म, इन सबका बारीक चूर्णकर पानके रसकी अनेक भावना देकर ३ रत्तीकी गोली बनावे यह सर्व रोगमात्रोंको दूर करे। तथा गर्भवतीके तथा बालकके सब ज्वरोंको नष्ट करे ॥

पद्मकादिचिकित्सा।

क्काथःकृतःपद्मकनिंबधान्यच्छिन्नोद्भवालोहितचंदनोत्थः।
ज्वरेभवेत्सर्वभवेकृशानुर्धात्रीशिशुभ्यांप्रकरोतिपीतः ॥

अर्थ-पद्माख, नीमकी छाल, धनिया गिलोय, लालचंदन इनका क्काथ सर्व ज्वरों तथा पित्तज्वर, दाह, प्यास दूर करे यह धाय पीवे, या उस रोगी बालककोही स्वयं पिलावे ॥

यष्ट्यादिलेह।

यष्टीमधुतुगाक्षोरीलाजांजनसिताकृतः।

लेहःप्रदत्तोबालानामशेषज्वरनाशनः॥

अर्थ-मुलहटी, सहत, वंशलोचन, खील, सुरमा और मिश्री मिलायके अवलेह बनावे यह अवलेह बालकोंके संपूर्ण ज्वरोंका नाश कर्त्ता है॥

स्थिरादिचिकित्सा।

क्वाथःस्थिरागोक्षुरविश्ववालक्षुद्रादयश्छिन्नरुहाकिरातैः।
वातज्वरंवाशमयेत्प्रपीतोबालेनधात्र्याचकृशानुकारी॥

अर्थ-शालपर्णी, गोखरू, सोंठ, नेत्रवाला, कटेरी, गिलोय और चिरायता, इनका क्वाथ करके बालक पीवे या धाय पीवे तो वातज्वरको नष्ट करे और जठराग्निको बढानेवाला कहा है॥

पंचमूलादिचिकित्सा।

पंचमूलीकृतःक्वाथःपीतोवातज्वरापहः।
तद्वच्छिन्नरुहाद्राक्षागोपकन्याबलाभवः॥

अर्थ-लघुपंचमूलका क्वाथ करके पीवे तो वातज्वर दूर होय। अथवा गिलोय, दाख, सारिवा और खिरेटीका क्वाथ वातज्वरको नष्ट करे॥

सारिवादिचिकित्सा।

सारिवोत्पलकाश्मर्यच्छिन्नापद्मकपर्पटैः।
क्वाथःपीतोनिहंत्याशुशिशूनांपैत्तिकंज्वरम्॥

अर्थ-सारिवा, कमलगट्टा, कंभारी, गिलोय, पद्माख, पित्तपापडा इनका क्वाथ पिलावे तौ बालकका पैत्तिक ज्वर दूर होय॥

मुस्तादि हिम।

मुस्तापर्पटकोशीरवारिपद्मकसाधितम्।
शीतंवारिनिहंत्याशुत्रिधादाहवमिज्वरान्॥

अर्थ-नागरमोथा, पित्तपापडा, खस, नेत्रवाला, पद्माख इनका हिम तीन प्रकारके दाह, वमन, और ज्वरको दूर करे॥

विषमज्वरचिकित्सा।

निंबपत्रामृतानंतापटोलेंद्रयवैःकृतः।
क्वाथःसविनिहंत्याशुप्रभवव्यसनंतथा॥

अर्थ-नीमके पत्ते, गिलोय, धमासो, पटोलपत्र, इन्द्रजौ इनका क्वाथ घोर विषम ज्वरके दाहको नष्ट करे॥

त्र्याहिकपर गुडूच्यादिक्काथ।

गुडूचीचंदनोशीरधान्यनागरतोयदि ।
क्वाथस्तृतीयकंहन्याच्छर्करामधुमिश्रितः ॥

अर्थ-गिलोय, चंदन, खस, धनिया, सोंठ, इनके क्वाथमें मिश्री और सहत मिलाय पिलावे तो तिजारी ज्वरको दूर करे ॥

पलंकषादि धूप ।

पलंकषावचाकुष्ठंगजचर्माविचर्मच । निंबस्यपत्रंमाक्षोकंसर्पि र्युक्तंतुधूपकम् । ज्वरवेगंनिहंत्याशुबालानांतुविशेषतः ॥

अर्थ-लाख, वच, कूठ, हाथीका चाम, मेंढेका चमडा, नीमके पत्ते, सहत, और घृत इनको एकत्र पीस धूनी देवे, यह ज्वरके वेगको दूर करे और बालकोंको ज्वरवेग तो विशेष कर हरण करे है ॥

मूर्वादि उद्वर्तन ।

मूर्वानिशासर्षपरामसेनश्वेतासमंगांबुदकारवीनाम् ।
छागीपयोभिःसहपेषितानामुद्वर्तनंस्याज्ज्वरजिच्छिशूनाम् ॥

अर्थ-मूर्वा, हलदी, सरसों, चिरायता, सपेद खिरैंटी, नागरमोथा, अजमायन, इनको बकरीके दूधमें पीस देहमें मालिश करे तो बालकोंके ज्वरको दूर करे ॥

भद्रमुस्तादि ।

भद्रमुस्ताभयानिंबपटोलमधुकैःकृतः ।
क्वाथःकोष्णःशिशोरेषनिःशेषज्वरनाशनः ।

अर्थ-भद्रमोथा, हरड, नीमकी छाल, पटोलपत्र, और मुलहटी इनका क्वाथ थोडा गरम बालकको पिलावे तो सब ज्वर दूर हो ॥

सैंधवादि जिह्वालेप ।

बालोयश्चिरजातःस्तन्यंगृह्णातिनोदितस्तस्य ।
सैंधवधात्रीमधुघृतपथ्याकल्केनघर्षयेज्जिह्वाम् ॥

अर्थ-जो बालक बहुत देरीका जन्म लेकर भी माताके स्तनको यदि न पकडे (अर्थात् पीवे नहीं) उसकी जीभपर सैंधानिमक, आमले, सहत, घृत और हरड इनका कल्क करके घिसे ॥

एकाहिकज्वरपर अपामार्गमूलिकाबंध ।

कन्यावर्तितसूत्रेणबध्वापामार्गमूलिकाम् ।

एकाहिकंज्वरंहंतिशिखायामपिवेगतः।

अर्थ–कन्याके काते हुए सूतसे आंगा (चिरचिरे)की जड बांधके जिसकी चुटियामें बांधे उसका एकाहिक (इकतरा) ज्वरको शीघ्र दूरकरे॥

द्वंद्वजवात पित्तज्वर।

मुस्तापर्पटकंछिन्नाकिरातोविश्वभेषजम्।
एषांकषायोदातव्योवातपित्तज्वरापहः॥

अर्थ–नागरमोथा, पित्तपापडा, गिलोय, चिरायता और सोंठ इनका क्काथ देनेसे वातपित्तज्वर दूरहो॥

उशीरादिवातपित्तचिकित्सा।

उशीरंमधुकंद्राक्षाकाश्मरीनीलमुत्पलम्। परूषकंपद्मकंचम
धुकंमधुकंबला॥ एभिःशृतःकषायोयंवातपित्तज्वरंजयेत्।
प्रलापमूर्छासंमोहतृष्णापित्तज्वरापहः॥

अर्थ–खस, मुलहटी, दाख, कंभारी, नीलाकमल, फालसे, पद्माख, महुआ, सहत,खिरेटी इनका क्काथकर रोगीको पिलावे तो वातपित्तज्वर, प्रलाप,मूर्च्छा बेहोसी, तृषा और पित्तज्वरको दूर करे॥

त्रिफलादि श्लेष्मपित्तचिकित्सा।

त्रिफलापिचुमंदश्चपटोलंमधुकंबला।
एभिःक्काथःकृतःपीतःपित्तश्लेष्मज्वरापहः॥

अर्थ–त्रिफला, नीमकी छाल, पटोलपत्र, मुलहटी, खिरेटी, इनका क्काथ पीवेतो पित्त कफ ज्वरको दूरकरे॥

अमृतादिचूर्ण पित्तश्लेष्मज्वरपर।

अमृतेंद्रयवारिष्टपटोलंकटुरोहिणी। नागरंचंदनंमुस्तंपिप्पली
चूर्णसंयुतम्॥ अमृताष्टकमित्येतत्पित्तश्लेष्मज्वरापहम्।
हृल्लासारोचकच्छर्दितृष्णादाहनिवारणम्॥

अर्थ–गिलोय, इन्द्रजों, नीमकीछाल, पटोलपत्र, कुटकी, सोंठ, लालचंदन नागरमोथा इनके क्काथमें पीपलका चूर्ण डाले यह अमृताष्टक पित्त कफके ज्वरको हृल्लास, अरुचि, वमन, तृषा और दाहको नष्टकरे॥

धान्याकादिहिम पित्तज्वरपर।

धान्यकचंदनपद्मकमुस्ताशक्रयवामलकैःसपटोलैः।

शीतकषायंमुखेखलुदद्याद्बालकपित्तकफज्वरहत्यै ॥

अर्थ-धनिया, लालचंदन, पखाख, मोथा, इन्द्रजौ, आमला और पटोलपत्र इनका हिम बनायके बालकको देवे तो उसका पित्तकफज्वर दूरहो ॥

आरग्वधादिवातपित्तज्वपर।

आरग्वधःसातिविषःसमुस्तास्तिक्ताकषायोज्वरमाशुहन्यात्।
सामंसशूलंसवमिंसदाहंसकामलंहंतिसरक्तपित्तम् ॥

अर्थ-अमलतासका गूदा, अतीस, नागरमोथा, और कुटकी इनका काढा करके पीवे तो यह साम और शूल तथा वमन, दाह और कामलायुक्त ज्वरको नष्टकरे और रक्तपित्त दूरहो ॥

विषमज्वरचिकित्सा।

वासाव्याधिकणालेहःशीतज्वरविनाशनः।
तद्वत्क्षुद्रामृतानंतातिक्ताभूनिंबसाधितः ॥

अर्थ-अडूसा, कूठ, पीपल, इनका क्वाथ शीतज्वरको नष्टकरे अथवा कटेरीकी जड, गिलोय, धमासा, कुटकी और चिरायता इनका क्वाथ शीतज्वरको नष्टकरे है ॥

कटुक्यादि एकाहिक ज्वरपर।

कटुकीविहितःक्वाथःकणाचूर्णसमन्वितः।
एकाहिकंज्वरंहंतिकासश्वासादिदूषितम् ॥

अर्थ-कुटकीके क्वाथमें पीपलका चूर्ण डालके पीवे तो खांसी श्वासयुक्त एकाहिक (इकतरा) ज्वरको नष्टकरे ॥

द्राक्षादि एकाहिक ज्वरपर।

द्राक्षापटोलत्रिफलापिचुमंदवृषैःकृतः।
क्वाथएकाहिकंहंतिपरार्थमिवदुर्जनः ॥

अर्थ-दाख, पटोलपत्र, त्रिफला, नीमकी छाल और अडूसा इनका क्वाथ एकाहिक ज्वरको इसप्रकार नष्टकरता है जैसे दुर्जन प्राणी औरोंके हितको ॥

किराततिक्तादि क्वाथ वातश्लेष्म ज्वरपर।

किराततिक्तकंमुस्तंगुडूचीविश्वभेषजम्।
चातुर्भद्रकमित्याहुर्वातश्लेष्मज्वरापहम् ॥

अर्थ-चिरायता, कुटकी, नागरमोथा, और सोंठ यह चातुर्भद्रक क्वाथ कहाता है, यह वात कफ ज्वरको नष्ट करताहै ॥

वातकफ ज्वरमें पथ्य।

मुद्गतंदुलसंसिद्धंकेवलैर्वामकुष्टकैः।
पथ्यमात्रमिदंदद्यादग्धुंवातकफज्वरम्॥

अर्थ-मूंग, और चावलसे बनी अथवा केवल मोटकी दाल पथ्यहै, इसको वातकफ ज्वरवालेको देना चाहिये॥

दशमूलिका क्काथ सन्निपातपर।

दशमूलीयुतःक्काथःपिप्पलीचूर्णसंयुतः।
संमोहतंद्रासमयेसन्निपातज्वरंहरेत्॥

अर्थ--दशमूलके क्काथमें पीपलका चूर्ण डालके रोगीको पिलावे यह बेहोसी तंद्रायुक्त संनिपात ज्वरको नष्टकरे॥

मुस्तादिचिकित्सा।

मुस्तकंचंदनंवासाह्रीबेरंयष्टिकामृता।
एषांक्काथस्तुपित्तघ्नस्तृषादाहज्वरापहः॥

अर्थ-नागरमोथा, चंदन, अडूसा, नेत्रवाला, मुलहटी, गिलोय, इनका क्काथ पित्तनाशक तथा तृषा, दाह और ज्वरको हरण करे॥

वासादिचिकित्सा।

वासापर्पटकोशीरनिंबभूनिंबसाधितः।
क्काथोहंतिवमिश्वासकासपित्तज्वराञ्छिशोः॥

अर्थ-अडूसा, पित्तपापडा, खस, नीम और चिरायता इनका क्काथ वमन, श्वास, खाँसी और बालकके पित्तज्वरको नष्ट करे॥

अभयादिक्काथ।

अभयामलकीकृष्णाचित्रकोयंगणोमतः।
दीपनःपाचनोभेदीसर्वश्लेष्मज्वरापहः॥

अर्थ-हरड, आमले, पीपल, और चित्रक यह चार वस्तूका क्काथ दीपन, पाचन, दस्तावर और स[र्व] कफज्वरोंको नष्ट करता है॥

कट्फलादिक्काथ।

कट्फलंपुष्करंशृंगीपिप्पलीमधुनासह।
एषांलेहोज्वरंश्वासंकासंमंदानलंजयेत्॥

अर्थ-कायफल, पुहकरमूल, कांकडासिंगी, पीपल, इनको पीस सहत मिलाय अवलेह बनायले यह ज्वर, श्वास, खांसी और मंदाग्निको जीते ॥

मधुकादिक्काथ।

मधुकंसारिवाद्राक्षामधुकंचंदनोत्पलम्। काश्मीरीपद्मकंलोध्रं त्रिफलापद्मकेसरम् ॥ परूषकंमृणालंचसेव्यंतुतप्तवारिणा। मधुजातसितायुक्तंतत्पीतंपुष्टिदंनिशि ॥ वातंपित्तंज्वरंदाहंतृष्णामूर्च्छारुचिभ्रमान्। शमयेद्रक्तपित्तंचजीमूतमिवमारुतः॥

अर्थ-महुआ, सारिवा, दाख, मुलहटी, लालचंदन, कमलगट्टा, कंभारी, पद्माख, लोध, त्रिफला, कमलकी केसर, फालसे, कमलकी डंडी, खस, इनको गरम जलके साथ पीवे अथवा सहतसे बनी खांड डालके रात्रिके समय पीवे तो पुष्टाई करे वातपित्तके ज्वर, दाह, तृषा, मूर्छा अरुचि, भ्रम, और रक्त पित्त इनको इस प्रकार नष्ट करे कि जैसे बद्दलोंको पवन नष्ट करताहै ॥

बिल्वादिकाढा।

बिल्वंचपुष्पाणिचधातकीनांजलंसलोध्रंगजपिप्पलीच।
क्काथोवलेहोमधुनाविमिश्रोबालेषुयोज्यःकटिधारितेषु॥

अर्थ-बेलफल, धायके फूल, नेत्रवाला, लोध, गजपीपल, इनका क्काथ अथवा अवलेह बनायके उसमें सहत मिलाय बालकोंको कमरपर चढाय देवे॥

काकोलीक्काथ।

काकोलीगजकृष्णाचलोध्रमेषांसमांशतः।
क्काथोमध्वान्वितःपीतोबालातीसारहृन्मतः ॥

अर्थ-काकोली, गजपीपल, लोध ये समान भागले क्काथकर सहतके साथ पीवे तो बालकोंका अतिसार नष्ट होय ॥

वमन अतिसारपर।

लाजाःसैंधवमाम्रास्थिचूर्णमेषांसमांशतः।
हंतिच्छर्दिमतीसारंमधुनासहभक्षितः ॥

अर्थ-खील, सैंधानिमक, आमकी गुठली, इनके चूर्णको सहतके साथ चाटनेसे बालकी वमन और अतिसार दूर होय ॥

अतिसारपर।

आम्रबीजंतथालोध्रंधात्रीफलरसंतथा।

पीत्वामहिषतक्रेणबालातीसारनाशनम् ॥

अर्थ–आमकी गुठली, पठानी लोध, आमलेके फलका रस इनको भैंसकी छाछके साथ पीनेसे बालकका अतिसार दूर होय ॥

फलमुस्तादिचूर्ण।

फलिन्यंजनमुस्तानांचूर्णंपीतंसमाक्षिकम्।
तृष्णांछर्दिमतीसारंबालानांतत्त्वतोहरेत् ॥

अर्थ–प्रियंगुफूल, रसोत और नागरमोथाके चूर्णको सहतमें मिलायके चटानेसे बालकोंकी तृषा, वमन और अतिसारको हरण करे ॥

श्यामादिचूर्ण।

श्यामारसांजनंचूतफलास्थिसमचूर्णितम्।
हंतिच्छर्दिमतीसारंबालानांमधुनाशितम् ॥

अर्थ–पीपल, रसोत, आमकी गुठलीके चूर्णको सहतके साथ चाटनेसे बालककी छर्दि अतिसार दूर हो ॥

धातक्यादिलेह।

धातकीबिल्वधान्याकलोध्रेंद्रयववालुकैः।
लेहःक्षौद्रेणबालानांज्वरातीसारवाञ्जयेत् ॥

अर्थ–धायके फूल, बेलगिरी, धनिया, लोध, इन्द्रजौ और एलुआ इनकी सहतके साथ अवलेह बनायकर चटानेसे ज्वरातिसार दूर होय ॥

लोध्रादियोग।

लोध्रेणपिप्पलीवालाबालकातिसृतौहितः।
श्रीरसोमाक्षिकयुतोधातकीकुसुमैः समम् ॥

अर्थ–लोधके साथ पीपल और नेत्रवाला, बालकके अतिसारको नष्ट करे, तथा बेलका रस धायके फूलके चूर्णको सहतके साथ पीवे तो अतिसार नष्ट होय ॥

विडंगादिलेह।

विडंगान्यजमोदाचपिपप्पलीतंदुलानिच। एषामालिह्यचूर्णा
निसुखंतप्तेनवारिणा ॥ आमेप्रवृत्तेतीसारेकुमारंपाययेद्भिषक् ॥

अर्थ–वायविडंग, अजमोद, पीपल, चावल इनके चूर्णको सुखोष्ण जल पीवे तो जिस बालकके दस्तमें आम गिरता हो वह दूर होय ॥

ग्रहण्यांयवान्यादि चूर्ण।

यवानीजीरकंव्योषंकुटजंविश्वभेषजम्।
एतन्मधुयुतंपीतंबालानांग्रहणींजयेत् ॥

अर्थ–अजमायन, जीरा, सोंठ, मिरच, पीपल, कुडाकी छाल, सोंठ इनके चूर्णको सहतमें मिलायके देवेतो बालककी संग्रहणी दूर होय ॥

पिप्पल्यादिचूर्ण।

पिप्पलीविजयाशुंठीचूर्णमधुयुतंभिषक्।
दत्वानिहत्यग्रहणीरुजंकीर्तिमवाप्नुयात् ॥

अर्थ–पीपल, भांग, सोंठ इनके चूर्णको सहतके साथ चाटेतो निश्चय बालककी संग्रहणी दूरहोय ॥

कृष्णादिचूर्ण।

कृष्णामहौषधंबिल्वंनागरःसयवानिकः।
मधुसर्पिर्युतंलीढंबालानांग्रहणींहरेत् ॥

अर्थ–पीपल, सोंठ, बेलगिरी, सोंठ और अजवायन इनके चूर्णको घी सहतके साथ चाटनेसे बालककी संग्रहणी दूरहोय ॥

नागरादिचूर्ण।

नागरंमुस्तकंबिल्वंचित्रकंग्रंथिकंशिवाम्।
चूर्णमेतन्मधुयुतंकफजांग्रहणींजयेत् ॥

अर्थ–सोंठ, मौथा, बेलगिरी, चित्रक, पीपरामूल, हरड इनके चूर्णको सहतके साथ सेवन करनेसे कफकी संग्रहणी दूरहोय ॥

गुडादिचूर्ण।

सगुडंनागरंबिल्वंयःखादतिहिताशनः।
त्रिदोषग्रहणीरोगान्मुच्यतेनात्रसंशयः ॥

अर्थ–जो प्राणी गुड और सोंठ तथा बेलगिरी मिलायके खाय और पथ्यसे रहेतो त्रिदोषजन्य संग्रहणी अवश्य नष्टहोय ॥

मुस्तकादिचूर्ण।

मुस्तकातिविषाबिल्वंचूर्णितंकौटजंतथा।
क्षौद्रेणलीढंग्रहणींसर्वदोषोद्भवांजयेत् ॥

अर्थ–नागरमोथा, अतीस, बेलगिरी और कूडेकी छाल इनके चूर्णको सहतके संग सेवन करनेसे सर्व दोषकी संग्रहणी दूरहोय ॥

रक्तातिसारपर।

मोचरसंसमंगाचधातकीपद्मकेसरम्।
पिष्टैरेतैर्यवागूःस्याद्रक्तातीसारनाशिनी॥

अर्थ-मोचरस, मजीठ, धायके फूल, कमलकी केशर, इनको पीसके यवागू सिद्धकरे यह बालकके रक्तातिसारको नष्टकरे॥

नागरादिचूर्ण।

नागरातिविषामुस्ताबालकेंद्रयवैःकृतम्।
कुमारंपाययेत्प्रातःसर्वातीसारनाशनम्॥

अर्थ-सोंठ, अतीस, मोथा, नेत्रवाला और इन्द्रजौ इनके चूर्णको प्रातःकाल बालकको पिलावे तो सर्व प्रकारके अतिसार नष्ट होय॥

प्रवाहिकाकी चिकित्सा।

लोध्रेंद्रयवधान्याकधात्रीह्रीवेरमुस्तकम्।
मधुनालेहयेद्बालंज्वरातिसारनाशनम्॥

अर्थ-लोध, इन्द्रजौ, धनिया, आमले, हाऊबेर, नागरमोथा, इनके चूर्णको सहतके साथ चाटे तो बालकका ज्वरातिसार नष्ट होय॥

ग्रहणी अतिसारपर।

रजनीसरलोदारुबृहतीगजपिप्पली। पृश्निपर्णीशताह्वाचलीढामाक्षिकसर्पिषा॥ दीपनंग्रहणींहंतिमारुतार्तिसकामलाम्।
ज्वरातिसारंपाडुत्वंबालानांसर्वरोगनुत्॥

अर्थ-हलदी, सरल, देवदारु, भटकटैया, गजपीपल, पृष्टपर्णी, सतावर, इनके चूर्णको सहत और घीके साथ चाटनेसे अग्निदीपन हो संग्रहणी, वादीकी पीडा, कामला, ज्वर, अतिसार, पीलिया और बालकके सर्व रोग नष्ट होय॥

ह्रीबेरादिचूर्ण।

ह्रीबेरंशर्कराक्षौद्रंपीतंतण्डुलवारिणा।
शिशोरक्तातिसारघ्नंकासश्वासवमिंहरेत्॥

अर्थ-सुगंधवाला, मिश्री और सहत इनको चावलके धोवनसे पीवे तो बालकके रक्तातिसार, खांसी, श्वास और वमनको नष्ट करे॥

अर्शचिकित्सा।

यवानीनागरंपाठादाडिमंकुटजंतथा।

चूर्णोऽयंगुडतक्राभ्यांपीतोर्शःस्तंभनःपरः ॥

अर्थ-अजवायन, सोंठ, पाढ, अनारदाना, और इन्द्रजौ इनके चूर्णको गुड मिली छाछके साथ पीवे तो बवासीरका खून जाना बंद होय ॥

अजाज्यादिगुटी।

अजाजीपौष्करंपाठात्र्यूषणंदहनंशिवा।
गुडेनगुटिकाग्राह्यासर्वार्शःशोधनक्षमा ॥

अर्थ-जीरा, पुहकरमूल, पाठ, त्रिकुटा, चित्रक, और हरड इनको दुने गुडमें मिलायके गोली बनावे यह सर्व प्रकारकी बवासीरोंको शोधन करे ॥

नवनीतादियोग।

नवनीततिलाभ्यासात्केसरनवनीतशर्कराभ्यासात्।
दधिसारमथिताभ्यासाद्गुदजाःशाम्यंतिरक्तवहाः ॥

अर्थ-मक्खन और कालेतिल मिलायके खानेसे अथवा नागकेशर, मक्खन और मिश्री मिलायके खानेसे, या मक्खन और मथितके नित्य खानेसे रुधिर बहनेवाले मस्से दूरहो ॥

एवंवाकौटजंबीजंरक्तार्शोमधुनाहरेत्।
तद्वन्मुस्तामोचरसकपिकच्छूभवंरजः ॥

अर्थ-इन्द्रजोंके चूर्णको सहतके साथ चाटनेसे खुनी बवासीर दूरहो। उसीप्रकार नागरमोथा, मोचरस और कौंछका चूर्ण खुनीबवासीरको नष्टकरे ॥

अजीर्णविषूचिकाकी चिकित्सा।

धान्यनागरजःक्वाथःशूलामाजीर्णनाशनम्।
चूर्णस्तक्रशुभःपीतस्तद्वद्व्योषाग्निजीरकैः ॥

अर्थ-धनिया, सोंठकी क्वाथ, शूल, आम, अजीर्ण, एवं सोंठ, मिरच, पीपल, चित्रक और जीरेका चूर्ण छाछके साथ पीवे तो अजीर्ण और विषूचिका दूरहो ॥

पिप्पल्यादिचूर्ण।

पिप्पलीरुचकंपथ्याचूर्णमस्तुजलंपिबेत्।
सर्वाजीर्णहरंशूलगुल्मानाहाग्निमांद्यजित् ॥

अर्थ-पीपल, कालानिमक, और हरडका चूर्ण छाछके जलके साथ पीवे तो सर्व प्रकारके अजीर्ण, शूल, गोला, अफरा, और मंदाग्निको नष्टकरे ॥

त्वगादितैल।

त्वक्पत्ररास्नागुरुशिग्रुकुष्ठैरम्लप्रपिष्टैःसबलासिताह्वैः।
अजीर्णकघ्नंचविषूचिकाघ्नंतैलंविपक्वंचतदर्थकारि॥

अर्थ--तज, पात्रज, रायसन, अगर, सहिंजना, कूठ, खिरेंटी और मिश्री इनको खटाईमें पीसके तेल सिद्ध करे तौ अजीर्ण, विषूचिकाको दूर करे॥

भस्मककी सामान्यचिकित्सा।

अन्नपानैर्गुरुस्निग्धैर्मंद्रसांद्रहिमस्थिरैः।
पित्तघ्नैरेचनैर्धीमान्भस्मकंप्रशमंनयेत्॥

अर्थ—भारी भोजनके पदार्थ, पनिके पदार्थ और चिकने, गाढे, शीतल, स्थिर, पित्तनाशक, और रेचनकर्त्ता पदार्थोंसे यह प्राणी भस्मरोगको नष्ट करे॥

औदुंबरकल्क।

औदुंबरत्वचंपिष्ट्वानारीक्षीरयुतंपिबेत्।
ताभ्यांचपयसासिद्धंभुक्तंजयतिभस्मकम्॥

अर्थ—गूलरकी छालको स्त्रीके दूधमें पीसके पीवे अथवा स्त्रीके दूधमें उसको परिपक्व करके सेवन करे तो भस्मक रोग दूर होय॥

मयूरतंदुलादिक्षीरम्।

मयूरतंदुलैःसिद्धंपायसंभस्मकंजयेत्।
विदारीस्वरसंक्षीरसिद्धंवामहिषीघृतम्॥

अर्थ—चिरचिराके चांवलोंको दूधमें डाल खीर बनावे यह भस्मकको दूर करे। अथवा विदारीकंदके स्वरसको दूधमें डालके खीर करे और घी मिलायके खाय तो भस्मक रोग दूर हो॥

कासरोगमें धान्यादिहिम।

धान्याकंशर्करायुक्तंतंदुलोदकसंयुतम्।
पानमेतत्प्रदातव्यंकासश्वासापहंशिशोः॥

अर्थ—धनियेमें बराबरकी मिश्री मिलाय चावलके धोवनके साथ पीवे तो बालककी खांसी और श्वास दूर होय॥

दुरालभादि लेह।

दुरालभाकणाद्राक्षापथ्याः क्षौद्रेणलेहयेत्।
त्रिरात्रंपंचरात्रंवाकासश्वासहराःशिशोः॥

अर्थ-धमासा, पीपल, दाख, हरड इनके चूर्णको सहतके साथ ३ या ५ रात्रि चाटे तो खांसी और श्वास ये दोनों दूर हो ॥

हिंग्वादिचूर्ण।

हिंगुकर्कटशृंगीचगैरिकंमधुजेष्टिका।
त्रुटिःक्षौद्रंनागरंचहिक्काश्वासनिवारणम् ॥

अर्थ-हींग, काकडासिंगी, गेरू, मुलहटी, छोटी इलायची, सोंठ इनका समान भाग चूर्णकर १ मासेको सहतके साथ चटावे तो बालककी हिचकी और श्वास दूर हो ॥

कृष्णादिचूर्ण।

कृष्णादुरालभाद्राक्षाकर्कटाख्यागजाह्वया। चूर्णितामधुसर्पिर्भ्यां लीढ्वाहंतिशिशोर्गदान्। कासंश्वासंचतमकंज्वरंवापिविनंक्ष्यति ॥

अर्थ-पीपल, धमासा, दाख, काकडासिंगी, गजपीपल इनके चूर्णमें सहत और घी मिलायके चाटे तो बालकके श्वास, खांसी, तमकश्वास, ज्वर आदि अनेक रोग दूरहो ॥

हिक्काश्वासचिकित्सा।

शृंगींसमुस्तातिविषांविचूर्ण्यलेहंविदध्यान्मधुनाशिशूनाम्।
कासज्वरच्छर्दिसमन्वितानांसमाक्षिकंवातिविषासमेतम् ॥

अर्थ-काकडासींगी, नागरमोथा, अतीस इनको सहतमें लेहके समान बनायके चटावेतो खांसी ज्वर, वमन, दूरहो, अथवा अतीसके चूर्णमात्रकोही सहतमें मिलायके चाटे तो पूर्वोक्त रोग दूर होय ॥

गुडोदकयोग।

गुडोदकंवाक्कथितंव्योषसैंधवसंयुतम्।
सुखोष्णंपाययेद्बालंकासरोगोपशांतये ॥

अर्थ-गुडके जलमें सोंठ, मिरच, पीपल और सैंधानिमक डालके सुहाता २ गरमको बालकके वास्ते पिलावे तो बालककी खांसी दूरहोय ॥

व्याघ्र्यादिलेह।

विहितोमधुनालेहोव्याघ्रीकुसुमकेशरः।
लीढोहिनाशयत्याशुकासंपंचविधंशिशोः ॥

अर्थ-कटेरीके फूलकी केशरको सहतमें सानके सेवन करे तो बालकी पांच प्रकारकी खांसी दूर हो ॥

शृंग्यादि लेह ।

एकाशृंगीनिहंत्याशुमूलकस्यफलान्विता ।
घृतेनमधुनालीढाकासंबालस्यदुस्तरम् ॥

अर्थ-काकडासिंगी और मूलीके फलका चूर्ण इनको घृत अथवा सहतके साथ चाटे तो बालककी दुस्तर खांसी दूर होय ॥

तुगालेह ।

तुगांक्षौद्रैश्वसंलिह्याच्छ्वासकासौशिशोर्जयेत् ॥

अर्थ-वंशलोचनके चूर्णको सहतमें सानके चाटे तो बालककी श्वास और खांसी दूर होय ॥

विडंगादिचूर्ण ।

विडंगंमधुनालीढंपुष्करंबालशिग्रुकम् ।
आखुपर्णींतथैकावाकृमिभ्योमुच्यतेशिशुः ॥

अर्थ-वायविडंग, पुहकरमूल, सहंजना, मूसाकानी इनमेंसे किसी एकके चूर्णको सहतमें मिलायके चाटे तो बालक कृमिरोगसे छूट जाय ॥

पौष्करादि चूर्ण ।

पौष्करातिविषाशृंगीमागधीधन्वयासकैः ।
कृतंचूर्णंतुसक्षौद्रंशिशूनांपंचकासजित् ॥

अर्थ-पुहकरमूल, अतीस, काकडासींगी, पीपर, और धमासा इनके चूर्णको सहतमें मिलायके चाटे तो बालककी पांच प्रकारकी खांसी दूर हो ॥

मुस्तादिचूर्ण ।

मुस्तकातिविषावासाकणाशृंगीरसंलिहन् ।
मधुनामुच्यतेबालःकासैःपंचभिरुच्छ्रितैः ॥

अर्थ-नागरमोथा, अतीस, वासा, पीपर, काकडासींगी, इनके स्वरसको सहत मिलायके पीवे तो घोर पांच प्रकारकी खांसी दूर होय ॥

व्याघ्र्यादिलेह ।

व्याघ्रीकुसुमसंजातकेसरैरवलेहिका ।
मधुनाचिरसंजाताञ्छिशोःकासान्व्यपोहति ॥

अर्थ-कटेरीके फूलकी केसरकी अवलेहको सहत डालके चाटे तो बालककी सर्व प्रकारकी खांसी दूर हो ॥

हिक्काचिकित्सा।

सुवर्णगैरिकंपिष्ट्वामधुनासहलेहयेत्।
शीघ्रंसुखमवाप्नोतितेनहिक्कार्दितःशिशुः॥

अर्थ–सुवर्ण गेरूको पीसके सहतके साथ चाटे तो हिचकीसे पीडित बालक शीघ्र अच्छा होय॥

पिप्पल्यादि क्वाथ।

पिप्पलीरेणुकाक्काथःसहिंगुःसमधुःकृतः।
हिक्कांबहुविधांहन्यादिदंधन्वंतरेर्वचः॥

अर्थ–पीपल और रेणुककी क्वाथमें हींग और सहत डालके सेवन करै तो अनेक प्रकारकी हिचकियोंको नष्टकरे यह धन्वंतरिकी आज्ञाहै॥

कटुकीचूर्ण।

चूर्णंकटुकरोहिण्यामधुनासहयोजयेत्।
हिक्कांप्रशमयेत्क्षिप्रंछर्दिंचापिचिरोत्थिताम्॥

अर्थ–कुटकीके चूर्णको सहतसे चाटे तो हिचकीको और वमन जो बहुत दिनोंकी वमनको दूर करे॥

यवान्यादिलेह।

यवानीकुटजारिष्टसप्तपर्णपटोलकैः।
लेहश्छर्दिमतीसारंज्वरंबालस्यनाशयेत्॥

अर्थ–अजमायन, इंद्रजौ, नीमकी छाल, सतोना और पटोलपत्र इनकी अवलेह वमन, अतिसार, ज्वरको नष्टकरे॥

हरीतक्यादिचूर्ण।

हरीतक्याःकृतंचूर्णमधुनासहलेहयेत्।
अधस्ताद्विहितेदोषेशीघ्रंछर्दिःप्रशाम्यति॥

अर्थ–हरडके चूर्णको सहतमें मिलायके चाटे तो जहां एक या दो दस्त हुए और शीघ्रही बालककी छर्दि दूर होय॥

अश्वत्थक्षार।

अश्वत्थवल्कलंशुष्कंदग्धंनिर्वापितंजले।
तज्जलंपानमात्रेणछर्दिंजयतिदुर्जयाम्॥

अर्थ-पीपलकी सूखी छालको आगमें जलाय उसकी राखको जलमें डालके घोट देवे फिर उसके नितरे हुए जलको पीवे तो दुर्जय छर्दि दूर होय ॥

एलादि चूर्ण ।

एलानांजलमुस्तानांचूर्णपीतंसमाक्षिकम् ।
तृष्णांछर्दिमतीसारंशिशूनांसत्वरंहरेत् ॥

अर्थ-छोटी इलायची, नेत्रवाला, और नागरमोथा इनके चूर्णको सहतमें मिलायके चाटे तो, बालकके तृषा, वमन, अतिसारको शीघ्र दूरकरे ॥

आम्रादि चूर्ण ।

अम्रादिलाजसिंधूत्थंसक्षौद्रंछर्दिनुद्भवेत् ॥

अर्थ--आम्रादिचूर्ण, खील, सैंधानिमक इनके चूर्णको सहते मिलायके चाटे तो बालककी वमन होना दूर होय ॥

घनादिचूर्ण ।

घनशृंगीविषाणांचचूर्णहंतिसमाक्षिकम् ।
वांतिंज्वरंतथायोगोमधुनातिविषारजः ॥

अर्थ--नागरमोथा, काकडासिंगी, अतीस इनके चूर्णको सहतके साथ चाटे तो वमन और ज्वर नष्ट होय अथवा अतिविष (अतीस) के चूर्णको सहतसे चाटे तो वमन और ज्वर दूर होय ॥

क्षीरछर्दिचिकित्सा ।

पीतंपीतंवमेद्यस्तुस्तन्यंतंमधुसर्पिषा ।
द्विवार्ताकीफलरसंपंचकोलंचलेहयेत् ॥

अर्थ-जो बालक दूध पीर कर वमन कर देता होय, वह सहत और घीमें कटेरीके फलका रस और पंचकोलका चूर्ण डालके चाटे तो दूध डालना बंद होय ॥

पिप्पल्यादि चूर्ण ।

पिप्पलीमधुकानांचचूर्णसमधुशर्करम् ।
मातुलुंगरसेनैवहिक्काछर्दिनिवारणम् ॥

अर्थ-पीपल, मुलहटीके चूर्णको सहत मिश्री और बिजोरेका रस मिलायके पीवे तो बालककी हिचकी और वमन करना दूर होय ॥

पिप्पल्यादि चूर्ण ।

पिप्पलीमधुकंजंबूरसालतरुपल्लवाः ।

चूर्णोयंमधुनाचेतितृष्णाप्रशमनःशिशोः ॥

अर्थ-पीपल, मुलहटी, जामनके और आमके कोमल पत्ते इनके चूर्णको सहतमें मिलायके चाटे तो बालककी तृषा दूर होय ॥

हिंग्वादि चूर्ण ।

हिंगुसैंधवपालाशंचूर्णमाक्षिकसंयुतम् ।
लीढंनिवारयत्याशुशिशूनामुद्धतांतृषाम् ॥

अर्थ-हींग, सैंधानिमक, पलासकी छाल, इनके चूर्णको सहत डालके पीवे तो घोर तृषाको निवारण करे ॥

आनाहवायु ।

घृतेनसिंधुविश्वैलाहिंगुभार्ङ्गीरजोलिहन् ।
आनाहवातिकंशूलंहन्यात्तोयेनवाशिशोः ॥

अर्थ-सैंधानिमक, सोंठ, छोटी इलायची, हींग, भारंगी, इनके चूर्णको घृतमें मिलायके चाटे ऊपरसे गरम जल पीवे तो बालकका अफरा, वमन और शूल ये नष्ट होय ॥

रोदनपर ।

पिप्पलीत्रिफलाचूर्णघृतंक्षौद्रपरिप्लुतम् ।
बालोरोदितियस्तस्मैलेढुंदद्यात्सुखावहम् ॥

अर्थ-जो बालक बहुत रोता होय उसको पीपल, त्रिफलाके चूर्णको सहत घीमें सानके चटावे तो रोना बंद होय ॥

मलबद्धहोनेपर ।

पिष्ट्वागंधर्वबीजानित्वाखुविण्निंबुवारिणा ।
नाभौगुदेवालेपेनाशिशूनांरेचनंपरम् ॥

अर्थ-अंडीके बीजोंको और चूहेकी मेंगनीऔर नींबूका रस डालके पीसे फिर इसका नाभिपर और गुदापर लेपकरे तो बालकको दस्त होय ॥

मृत्तिकारेचन ।

इंदुलोचननेत्राणिशिखिभागंहियोजयेत् ॥ त्रुटिगंधकमुर्दाडश
तपुष्पाविचूर्णिताः ॥ माषद्वयंगवांदुग्धैःसेवयेद्दिनपंचकम् ॥
रेचयेन्मृत्तिकांशुद्धांशिशूनांहितमौषधम् ॥

अर्थ-लीलाथोथा, छोटीइलायची, गंधक, मुरदासींग और सौंफ ये क्रमसे १-३-और तीन तीन भागलेवे, चूर्ण करके २ मासे चूर्णको गौके दूधसे ५ दिन सेवनकरे तो, बालकने जो मिट्टीखाई हो उसे दस्तके द्वारा निकाल दे, यह बालकको हितकारी औषध है ॥

काश्यपर।

यथातुदुर्बलोबालःखादन्नपिचवन्हिमान्। विदारीकंदगोधूमयव चूर्णघृतप्लुतम् ॥ खादयेत्तदनुक्षीरंश्रृतंसमधुशर्करम्। सौवर्णं सुकृतंचूर्णंकुष्टंमधुघृतंवचा ॥ मत्स्याक्षकःशंखपुष्पीमधुसर्पिः सकांचनम्। अर्कपुष्पीवृतंक्षौद्रंचूर्णितंकनकंवचा ॥ सहेमचू र्णंकैडर्यश्वेतदूर्वाघृतंमधु । चत्वारोभिहिताःप्राश्याअर्धश्लो कसमापनाः ॥ कुमाराणांवपुर्मेधाबलपुष्टिकराःस्मृताः ॥

अर्थ-जो बालक भोजन ठीक २ करनेपरभी लटता जाय वह विदारीकंद, गेंहूं, और जौ इनके चूर्णको घीमें सानके खाय ऊपरसे अघोटा सहत और मिश्री मिला चूर्णको पीवे तो हित होय। अथवा सुवर्णके चूर्णको कूठ, सहत, घी, वच। एवं मछेछी, संखाहूलीको सुवर्णचूर्ण और सहत घी।अथवा आका-हूली सोनेका चूर्ण और वच इनको सहत घृतके साथ अथवा सुवर्णका चूर्ण कायफल सपेददूब, घृत और सहत। ये चार योग आधे२श्लोकमें कहेहैं।इनमेंसे प्रत्येक प्रयोग बालकोंके देहका, बुद्धिका और बलका पुष्टकरनेवाला है ॥

लाक्षादितैल।

लाक्षारसेसमेतैलंमस्तुन्यथचतुर्गुणे । रास्नाचंदनकुष्ठाब्दवा जिगंधानिशायुतैः॥शताह्वदारुयष्टयाह्वमूर्वातिक्ताहरेणुभिः । संसिद्धंज्वररक्षोघ्नंबलवर्णकरंशिशोः ॥

अर्थ-लाखके रसमें बराबरका मीठा तेल और चौगुना दहीका जल मिलावे। फिर रासना, चंदन, कूठ, नागरमोथा, असगंध, हलदी, सतावर, देवदारु, मुलहटी, मूर्वा, कुटकी, और रेणुक द्रव्य इन सब औषधोंका कल्क डालके तेल सिद्ध करे यह ज्वर, राक्षसोंको नष्ट करे तथा बालकके बल वर्णको बढावे है ॥

अश्वगंधाघृत।

पादकल्केश्वगंधायाःक्षीरेदशगुणितेपचेत्।
घृतंदेयंकुमाराणांपुष्टिकृद्बलवर्धनम् ॥

अर्थ–एक हिस्से असगंधके कल्कमें आठगुना दूध डालके घी पकावे, यह बालकोंको पुष्ट करे और बलको बढावे ॥

लेप।

मुस्ताकूष्मांडबीजानिभद्रदारुकलिंगकान्। पिष्ट्वातोयेनसंलिंपेल्लेपोयंशोथहृच्छिशोः ॥

अर्थ–नागरमोथा, पेठेके बीज, देवदारु और इन्द्रजो इनको जलसे पीसके लेप करे तो बालककी सूजन दूर होय ॥

नाभिशोथ।

मृत्पिंडेनाग्नितप्तेनक्षीरसिक्तेनसोष्मणा। स्वेदयेदुत्थितांनाभिंशोथस्तेनोपशाम्यति ॥

अर्थ–मिट्टीके गोलेको आगमें तपायके दूधमें बुझावे फिर इसका नाभिमें अफारा देवे तो उठी हुई नाभिकी सूजन शांत होय ॥

नाभिपाक।

नाभिपाकेनिशालोध्रप्रियंगुमधुकैःशृतम्। तैलमभ्यंजनेशस्तमेभिश्चात्रावधूलनम् ॥ दुग्धेनच्छागशकृतानाभिपाकेवचूर्णनम्। त्वक्चूर्णैःक्षीरिणांवापिकुर्याच्चंदनरेणुना ॥

अर्थ–नाभिके पकनेपर हलदी, लोध, फूलप्रियंगू, मुलहटी, इनके काढेसे तेलकी मालिश करे और ये पूर्वोक्त औषधोंसे उद्धूलन करे। तथा बकरीकी मैंगनीको दूधमें पीसके नाभिपाक करे अथवा दालचीनीके चूर्णको क्षीरीवृक्षके और चंदन और रेणुकके साथ लेप करे तो नाभिपाक दूर होय ॥

गुदपाक।

गुदपाकेतुबालानांपित्तघ्नींकारयेत्क्रियाम्। रसांजनंविशेषेणपानलेपनयोर्हितम्। शंखयष्ट्यंजनैश्चूर्णंशिशूनांगुदपाकनुत् ॥

अर्थ–बालककी गुदापक आवे तो पित्तनाशक क्रिया करे तथा विशेष करके रसोतका सेवन और लेप करना हित है तथा शंख मुलहटी और सुरमेका चूर्ण बालकगुदाके पाकको दूर करे ॥

पारिगर्भक।

पारिगर्भकरोगेतुयुज्यतेवह्निदीपनम् ॥

अर्थ–बालककी पारिगर्भिक रोगपर वह्निदीपक पदार्थ देने चाहिये ॥

क्षतविस्फोटविसर्प।

पटोलत्रिफलारिष्टहरिद्राक्कथितंपिबेत्।
क्षतविस्फोटज्वराणांशांतयेबालकस्यच॥

अर्थ-पटोल, त्रिफला, नीम, हलदी, इनके काथको पीवे तो घाव, विस्फोट और बालकका ज्वर दूर होय॥

सिध्मपामाविचर्चिका।

गृहधूमनिशाकुष्ठराजिकेंद्रयवैःशिशोः।
लेपस्तक्रेणहंत्याशुसिध्मपामविचर्चिकाः॥

अर्थ-घरका धूमसा, हलदी, कूठ, राई, और इन्द्रजो इनको छाछसे पीस लेप करे तो बालककी छीप खुजली और विचर्चिका दूर हो॥

तालुपाक।

तालुपाकेयवक्षारमधुभ्यांप्रतिसारणम्॥

अर्थ--बालकके तालुपाक पर जवाखारको सहतमें मिलायके मंजन करे॥

दंतोद्भेदजरोग।

दंतपालिंतुबालानांचूर्णेनप्रतिसारयेत्। धातकीपुष्पपिप्पल्या धात्रीफलरसेनवा। दंतोत्थानभवारोगाःपीडयंतिनबालकम्॥

अर्थ-बालकोंकी दंतपालीको बुझे हुए चूनेसे मले तथा धायके फूल, पीपल, आँवला, इनके रससे घिसे तो बालकोंके दांत निकलनेके जो रोग होते हैं वह कदापि पीडा नहीं करे॥

अन्य यत्न।

जातेदंतेहिशाम्यंतियतस्तद्धेतुकागदाः। प्राचीगतंपांडुरसिंधुवारमूलंशिशूनांगलकेनिबद्धम्॥ हितंतुदंतोद्भववेदनायांनिःशेषयत्नाधिकमेतदेव॥

अर्थ-जो दांतोंके ऊगनेके समय बालकोंके रोग होते हैं वह जब दांत ऊग आते हैं तब स्वयं शांति हो जाते हैं पूर्वकी तरफ पीले रंगका सहजालूकी जडको बालकके गलेमें बांध दीनी जावे तो वह बालकके दांत निकलते समय पीडाके वास्ते अत्यंत हित है सब प्रयत्नोंमें यह उत्तम उपाय है॥

मुखरोग।

जातीपत्रामृतंद्राक्षापाठाद्रव्यैःफलत्रिकैः।

क्राथःक्षौद्रयुतःशीतोगंडूषाभिर्मुखार्तिजित् ॥

अर्थ–जावित्री, गिलोय, दाख, पाठ और त्रिफला और चित्रक इनके काथमें सहत डालके शीतल कर कुल्ले करे तो मुखपाक दूर होय ॥

मुखस्राव।

सारिवातिक्तलोध्राणांकषायोमधुकस्यच।
संस्राविनिमुखेशस्तोधावनार्थंशिशोःसदा ॥

अर्थ–सारिवा, कुटकी, लोध, और मुलहटी इनके क्राथसे मुखको धोवे तो बालकके मुखसे लारका वहना दूर होय ॥

मुखपाक।

मुखपाकेतुबालानामाम्रसारमयंरजः।
गैरिकंक्षौद्रसंयुक्तंभेषजंसरसांजनम् ॥

अर्थ–बालकके मुखपाक पर आमकी गुठली, लोहचूर्ण, गेरू, सहत और रसोत यह परमोत्तम औषध है ॥

मुखपाकपर लेप।

दार्वीयष्टयभयाजातीपत्रक्षौद्रैस्तुधावनम्।
अश्वत्थत्वग्दलक्षौद्रैर्मुखपाकेप्रलेपनम् ॥

अर्थ–दारुहदली, मुलहटी, हरड, चमेलीके पत्ते और सहत अथवा पीपलकी छाल और पत्ते इनमें सहत डालके लेप करेतो बालकके मुखके छाले दूरहोय।

तालुकंटकपर।

हरीतकीवचाकुष्टकल्कंमाक्षिकसंयुतम्।
पीत्वाकुमारःस्तन्येनमुच्यतेतालुकंटकात् ॥

अर्थ–हरड, वच, कूठ, इनके कल्कमें सहत डालके माताके दूधसे पीवे तो बालक तालुकंटकसे छूटजावे ॥

मूत्रकृच्छ्रपर।

मेघामृतानागरवाजिगंधाधात्रीत्रिकंटैर्विहितःकषायः।
क्षौद्रेणपीतःशमयत्यवश्यंमूत्रस्यकृच्छ्रंपवनप्रभूतम् ॥

अर्थ–नागरमोथा, गिलोय, सोंठ असगंध, आवले और गोखरू इनका काथ शीतलकर सहत डालके पीवेतो बालकके वादीका मूत्रकृच्छ्र अवश्य दूर होय ॥

यवक्षारक्काथ ।

यवक्षारयुतःक्काथःस्वादुकंटकसंभवः ।
पीतःप्रणाशयत्याशुमूत्रकृच्छ्रंकफोद्भवम् ॥

अर्थ–जवाखार डालके गोखरूका क्काथ पीवेतो कफजन्य मूत्रकृच्छ्र बालकका दूरहोय ॥

वातरोगपर ।

एरंडतैलंसपयःपिबेद्गोगव्येनमूत्रेणतदेवपीत्वा ।
सगुग्गुलुःप्रौढरुजंप्रवृद्धांसवातवृद्धिंसहसानिहंति ॥

अर्थ–अंडीका तेल दूधमें डालके पीवे अथवा गोमूत्रके साथ गूगल डालके अंडीका तेल पीवे तो बालकोंकी घोर वातव्याधिजन्य पीडा दूरहोय ॥

मूत्रकृच्छ्रपर ।

कर्पूरवर्तिंमृदुनालिंगच्छिद्रेनिधारयेत् ।
शीघ्रंतयामहाघोरान्मूत्रबंधात्प्रमुच्यते ॥

अर्थ–कपूरकी बत्ती नरम बनायके लिंगके छिद्रमें रखेतो उससे घोर मूत्रबंधकी बाधा शीघ्र दूरहोय ॥

मूत्रग्रहपर ।

कणोषणासिताक्षौद्रसूक्ष्मैलासैंधवैःकृतः ।
मूत्रग्रहेप्रयोक्तव्यःशिशूनांलेहउत्तमः ॥

अर्थ--पीपल, कालीमिरच, मिश्री, सहत, छोटी इलायची और सैंधानिमक इनका अवलेह बनायके बालकोंके मूत्ररोधपर देना उत्तमहै ॥

अपचीरोग पर ।

वनकार्पासिकामूलंतंदुलैःसहयोजितम् ।
पक्त्वातुपोलिकांखादेदपचीनाशकारिणीम् ॥

अर्थ–वनकपास (नादनवन) की जडको चावलोंके साथ पकायके पोली (पूडी) बनायके खाय तो बालककी अपची रोगको नष्ट करे ॥

उन्मादपर ।

शिरीषनक्तमालानांबीजैरंजितलोचनः ।
चित्तोन्मादंनिहंत्याशुसापस्मारापतंत्रिकम् ॥

अर्थ-सिरस, कंजा, इनके बीजको विसके अंजन करे तो चित्तका उन्मत्तपना अपस्मार और अपतंत्रिक रोग दूर हो ॥

रक्तपित्तपर।

वासायाःस्वरसःसिद्धःसितामधुसमन्वितः।
पर्णैश्चवटरोहाणांरक्तपित्तंविनाशयेत् ॥

अर्थ-वासेका स्वरस मिश्री और सहत तथा वडके कोमलपत्ते यह रक्तपित्त रोगको नष्ट करे ॥

रक्तपित्तपर।

पालाशपुष्पक्काथेनवासायाःस्वरसेनवा।
चतुर्गुणेनसंसिद्धंरक्तपित्तहरंघृतम् ॥

अर्थ-पलासके फूलकी क्वाथसे अथवा वासेके स्वरस चौगुनेसे घृत सिद्ध करके पीवे तो रक्तपित्त दूर होय ॥

नलसीरफूटे उसका यत्न।

रसोदाडिमपुष्पाणांदूर्वायाःस्वरसेनवा।
नस्येननाशयेत्तूर्णनासिकारक्तमुद्धतम् ॥

अर्थ-अनारके फूलोंका रस, अथवा दूबके स्वरसकी नस्यसे नाकसे गिरते हुए रुधिरको बंद करे ॥

वातगुल्म।

त्रिकटुकमजमोदासैन्धवंजीरकेद्वेसमचरणघृतानामष्टमोहिंगुभागः। प्रथमकवलभोजीसर्पिषाचूर्णमेतज्जनयतिजठराग्निं वातगुल्मंनिहंति ॥

अर्थ-सोंठ, मिरच, पीपल, अजमायन, सैंधानिमक, जीरा और काला जीरा ये सात वस्तु प्रत्येक एक २ भाग लेवे और भुनी हींग १ भागले इनका चूर्ण प्रथम भोजनके ग्रासमें डाल घृतमें सानके खाय तो जठराग्निको तेज करे और वायगोलेको नष्ट करे है ॥

वातरोगोंपर।

पुनर्नवैरंडनवातसीभिःकर्पासजैरस्थिभिरारनालैः।
स्विन्नैरमीभिस्त्ववातिसद्भिरेवस्वेदःसमीरार्तिहरोनराणाम् ॥

अर्थ-पुनर्नवा, अंडकी जड, नई अलसी, कपासकी लकडी और कांजी इन सब वस्तुओंके भपारेसे स्वेदित करे तो यह मनुष्योंके वादीके रोगोंको नष्ट करे॥

अपस्मारपर।

कूष्मांडकरसंकृत्वामधुकंपरिपेषयेत्।
अपस्मारविनाशायतत्पिबेत्सप्तवासरान् ॥

अर्थ-कुह्मडेका रस करके उसमें मुलहटीको पीस ले, इस जलको ७ दिन पीवे तो मृगी रोग दूर हो ॥

अपस्मारपर।

गोसर्पिःसाधितंपूतंदधिक्षीरशकृद्रसैः।
चातुर्थिकंज्वरोन्मादंसर्वापस्मारनाशनम् ॥

अर्थ--दही, दूध और गोवरके रसमें गौका घृत सिद्ध करके सेवन करे और पीवे तो चातुर्थिकज्वर, उन्माद और अपस्मार नष्ट होय ॥

उदावर्तपर।

हिंगुमाक्षिकसिंधूत्थैःकृत्वावर्तिसुवर्तिताम्।
घृताभ्यक्तांगुदेदद्यादुदावर्तविनाशिनीम् ॥

अर्थ-हींग, सहत और सैंधानिमककी बत्ती बनाय घीमें चुपडके गुदामें बत्ती रखे तो उदावर्त्त रोग दूर हो ॥

हृद्रोगपर।

शुंठीकणापुष्करकेतकीनांविधायचूर्णककुभत्वचोवा।
रास्नान्वितंवामधुनावलीढंहृद्रोगमेतच्छमयत्युदग्रम् ॥

अर्थ-सोंठ, पीपर, पुहकर, केतकी, इनके चूर्णको या कोहके चूर्णको रास्ना मिलायके सहत चाटे तो घोर हृदयरोग दूर होय ॥

मूर्छाचिकित्सा।

कोलास्थिपद्मकोशीरचंदनंनागकेसरम्।
लीढंक्षौद्रेणबालानांमूर्छानाशनमुत्तमम् ॥

अर्थ-बेरकी गुठली, पद्माख, खस, चंदन, नागकेशर इनके चूर्णको सहतके साथ चाटे तो बालकोंकी मूर्च्छा नष्ट होय ॥

दूसरा यत्न।

द्राक्षामामलकेस्विन्नंपिष्ट्वाक्षौद्रेणभक्षयेत्।
सर्वदोषभवामूर्छांसज्वरानश्यतिध्रुवम् ॥

अर्थ-दाख, आमले, दोनोंको सेककर पीस डाले, फिर सहतसे चाटे तो सर्व दोषजन्य मूर्च्छा और ज्वरयुक्त मूर्च्छा नष्ट होय ॥

तीसरा यत्न ।

शीताःप्रदेहामणयःसहाराःसेकावगाहाव्यजनस्यवाताः ।
लेह्यान्नपानादिसुगंधशीतंमूर्छासुसर्वासुपरंप्रशस्तम् ॥

अर्थ–शीतल लेप, मणियोंको और हारोंको धारण करना, जलका तरडा, जलमें प्रवेशकर स्नान करना, पंखेकी पवन तथा अवलेह और अन्नपानादि सब सुगंधित और शीतल ये सब मूर्च्छाओंमें उत्तम कहेहैं ॥

तिमिररोगपर ।

जीरकद्वयमम्लीकावृक्षाम्लंदाडिमान्वितम् ।
एलार्द्रकरसंशीघ्रंतिमिरंहंतिदुस्तरम् ॥

अर्थ–दोनों जीरे, इमलीकी खटाई, डासरा अनारदाना, इलायची और अदरखका रस मिलायके पीवेतो शीघ्र तिमिर रोग दूरहोय ॥

दाहरोगपर ।

पद्मकंचंदनंतोयमुशीरंश्लक्ष्णचूर्णितम् ।
क्षीरेणपीतंबालानांदाहंशमयतिध्रुवम् ॥

अर्थ–पद्माख, चंदन, नेत्रवाला, खस, इनका बारीक चूर्णकर दूधके साथ पीवेतो बालकोंका दाह निश्चय दूरहोय ॥

दूसरा यत्न ।

कर्पूरचंदनोशीरलिप्तांगंकट्फलैरपि ।
पल्लवप्रस्तरेधीमान्स्थापयेद्दाहपीडितम् ॥

अर्थ–कपूर, चंदन, खस और कायफल इनके चूर्णको केलेके पत्तोंपर छिडकके दाहवाले रोगीको सुलावे ॥

परिषेकावगाहेषुव्यजनानांचसेवनैः ।
शस्यतेशिशिरंतोयंतृष्णादाहोपशांतये ॥

अर्थ–जलका तरडा देना जलमें घसके स्नान, पंखेका हांकना,इत्यादि सब शीतल जलसे करेतो तृषा दाह ये शांत होवे ॥

कृमिरोग पर ।

मुस्ताविडंगमगधाखुपर्णीकंपिल्लकादाडिमबैल्वकेन ।
कृमीन्हरेत्सत्वरमुग्रवेगाद्रोगेषुलीढंशमयत्यसंशयम्॥

अर्थ–नागरमोथा, वायविडंग, पीपल, मूसाकरनी, कवीला, अनारदाना, और वेलगिरी इनके सेवनसे क्रुमिरोग तत्काल नष्ट होय और कीडे पेटसे गिरजावे ॥

पांडुरोग और परिणामशूलपर ।

यवचूर्णक्रिमिरिपुमगधामधुनासह ।
भक्षयेत्पांडुरोगघ्नंपक्तिशूलहरंपरम् ॥

अर्थ--इन्द्रजौका चूर्ण, वायविडंग, पीपल इनके चूर्णको सहतमें मिलायके चाटेतो पांडुरोग और परिणामशूल ये दूरहो ॥

स्वरभेदपर ।

मागधीमागधामूलंनागरंमरिचान्वितम् ।
क्षौद्रेणलीढंकफजंस्वरभेदंव्यपोहति ॥

अर्थ--पीपल, पीपरामूल, सोंठ, काली मिरच इनके चूर्णको सहतमें मिलायके चाटेतो कफजन्य स्वरभेद दूरहोय ॥

दूसरा उपाय ।

यष्ट्याह्वजीवनीमूर्वाकाकोलीवटसाधितम् ।
पेयंपित्तोद्भवंहंतिस्वरभेदंसुदारुणम् ॥

अर्थ–मुलहटी, जीवनी, मूर्वा, वेर, और वडकी छालसे बनाया गया वटक पित्तजन्य स्वरभेदको दूरकरे ॥

पांडुरोगपर घृत ।

अयोरजैस्त्रैफलचूर्णयुक्तैर्गोमूत्रसिद्धैर्मधुनावलीढैः ।
पांडुंचकासंचसतक्रपथ्यंशूलंसमूलंशमयेदवश्यम् ॥

अर्थ--लोहका चूरा, त्रिफलेका चूर्ण इनको गोमूत्रमें डालकर घृतको सिद्धकरे यह पीलिया, खासी, शूल इनको समूल नष्टकरे ॥

क्षयपर ।

शिलाजितव्योमविडंगलोहताप्याभयाभिर्विहितोवलेहः ।
सर्पिर्मधुभ्यांविधिनाप्रयुक्तःक्षयंविधत्तेसहसाक्षयस्य ॥

अर्थ–शिलाजीत, अभ्रक, वायविडंग, लोहेका बुरादा सुवर्णमाक्षिक इनको सहत और घृतमें मिलायके खाय तो वालोंका क्षय नष्टहो ॥

नवनीतसिताक्षौद्रंलीढ्वाक्षीरभुजःपरम् ।
करोतिपुष्टिंकायस्यक्षतक्षयमपोहति ॥

अर्थ-मक्खन, मिश्री, और सहत इनको गौके दूधमें मिलायके पीवे तो देहकी पुष्टताकरे और हृदय रोगको और क्षयको नष्टकरे ॥

वासामहौषधाव्याघ्रीगुडूचीभिःशृतंजलम् ।
प्रपीतंशमयत्याशुश्वासंकासमपोहति ॥

अर्थ-बासा, सोंठ, कटेरी, और गिलोय इनको जलमें डालके काथकर पीवे तो घोर बढी हुई श्वासको नष्टकरे ॥

विस्फोटक ।

गर्दभीदुग्धपानेनतुलसीपत्रभक्षणात् ।
शीतलातोयपानेनाभिषेकोत्रप्रशस्यते ॥

अर्थ-गधीके दूध पीनेसे और तुलसीके पत्र भक्षण करके शीतल जलसे शीतलाको अभिषेक करे ॥

भस्मनाकेचिदिच्छंतिकेचिद्गोमयरेणुना ।
कृमिपातभयाच्चापिधूपयेत्सुरसादिभिः ॥

अर्थ-कोई राख और गौके गोवर और रेणुक इनकी धूनी कृमीके रोग नष्ट करे तथा कृमि निकालको राई, सुरसारसादि काथ पीवे तो कृमिरोग नष्ट हो ॥

चंदनंवासकोमुस्तागुडूचीद्राक्षयासह ।
एतच्छीतःकषायस्तुशीतलाज्वरनाशनः ॥

अर्थ-चंदन, अडूसा, नागरमोथा, गिलोय, दाखके साथ खाय उसका काथ शीतल करके पीया हुआ शीतलाके ज्वरको नष्टकरे ॥

नेत्ररोगोंपर ।

ससैंधवंलोध्रमध्वाज्यघृष्टंसौवीरपिष्टंसितवस्त्रबद्धम् ।
आश्चोतनंतन्नयनस्यकुर्यात्कंडूंचदाहंचरुजंचहन्यात् ॥

अर्थ-सैंधानिमक, लोध, सहत, घीको घिसकै और कांजीमें पीस सपेद कपडेमें बांधके नेत्रोंके ऊपर आश्चोतन कर्म करे तो नेत्रमें खुजली होना, दाह और नेत्रका दर्द दूर होय ॥

चंदनादि लेप।

चंदनंमधुकंलोध्रंजातिपुष्पाणिगैरिकम्।
प्रलेपोदाहरोगघ्नस्तोयाभिष्यंदनाशनः॥

अर्थ–चंदन, मुलहटी, लोध, चमेलीके फूल और गेरूको पीसके नेत्रोंपर लेप करे तो नेत्रोंकी जलन, ढलका और सब अभिष्यंद रोगोंको दूर करे॥

अंजन।

शंखस्यभागाश्चत्वारस्तदर्धेनचपिप्पली। वारिणातिमिरंहंति अर्बुदंहंतिमस्तुना। चिपिटंमधुनाहंतिस्त्रीक्षीरेणतदुन्नतम्॥

अर्थ–चार भाग शंखके और आधे भाग पीपल मिलायके घोट गोली बनाय लेय, जलके साथ तिमिर रोगको, दहीके जलसे नेत्रार्बुद, सहतमें घिसके नेत्रोंका चिपकना और स्त्रीके दूधमें घिसकै लगावे तो अधिक दूखनेको दूरकरे॥

व्योषंचशृंगंचमनःशिलांचकरंजबीजंचसुपिष्टमेतत्।
कंड्वार्दितानामथवर्त्मनांतुश्रेष्ठंशिशूनांनयनेविदध्यात्॥

अर्थ–त्रिकुटा, काकडासींगी, मनसिल, कंजेके बीज, इनको जलमें पीसकै गोली बनावे इसे घिसके जिसके नेत्रोंमें खुजली पलकके रोग हो उन बालकोंके नेत्रोंमें अंजन करे॥

कर्णरोगपर।

कपिलामातुलिंगाम्लशृंगवेररसंशुभम्।
सुखोष्णंपूरयेत्कोष्णंकर्णशूलोपशांतये॥

अर्थ–कवीला, बिजोरेका रस, और अदरखका रस इनको सुहाते २ गरम २ को कानोंमें डाले तो कानका शूल दूर होय॥

कानकी पीडापर।

अर्कस्यपत्रंपरिणामपीतंतैलेनलिप्तंसाशिखाग्नितप्तम्।
आपीडयचतोयंश्रवणेनिषिक्तंविनिर्हरेद्वैबहुवेदनांच॥

अर्थ–आकके पीले पके पत्तोंको तेलमें लेप कर आगमें तपायके फिर रस निचोड लेवे इसको कानमें डाले तो कानकी पीडा दूर होय॥

मस्तकरोगपर।

घृष्टंरसांजनंनार्याःक्षीरेणक्षौद्रसंयुतम्।
प्रशस्यतेशिरोरोगेस्रावेवापूतिकर्णिके॥

अर्थ–रसोतको स्त्रीके दूधमें घिस और सहत मिलायके कानकी नाडी रोग स्राव तथा कानके दर्दको दूर करे।

प्रथमदिवसनिदान।

प्रथमेदिवसेनाम्नानंदिनीक्रमतेशिशुम्। दद्रूर्हितस्यबालस्य ज्वरःस्यात्प्रथमंततः॥ गात्रेशोफस्तदास्वेदोनाहारेच्छाभृशं भवेत्। छर्दिर्मूर्च्छाचकंपश्चशोषोदीनस्वरस्तथा॥

अर्थ--प्रथम दिनमें नंदनीनामक बालग्रह इस बालकको ग्रसे हैं, उसके ग्रसनेसे बालकको प्रथम ज्वर होय, देह सूज जाय, पसीने आवे, अफरा, अरुचि, वमन करे, मूर्च्छा, कंप, शोष होय और स्वर बहुत मेद पड जावे॥

द्वितीयदिवसनिदान।

द्वितीयेदिवशेबालंगृण्हातिचसुनंदनः। ततोभवेज्ज्वरःपूर्वसं कोचोहस्तपादयोः॥ दंतान्खादतिश्वसितिनिमीलयतिचक्षु षी। आहारंचनगृण्हातिदिवारात्रौचरोदिति॥ अक्षिरोगंछर्द नंचभवेदितिपुनःपुनः।कृशत्वंजायतेत्यंतंचिन्हमेतत्प्रकीर्तितम्॥

अर्थ--दूसरे दिनमें सुनंदनग्रह बालकको ग्रसे कि उस बालकको प्रथम ज्वर आवे हाथ पैरोंको सिकोडे दांतोंको खाय, श्वास ले, नेत्र मीचे, दूध न पीवे, दिनरात रोया करे, नेत्ररोग, वमन ये वारंवार होवे और वह दिनपर दिन सूखता हुआ चला जाय ये चिह्न होते हैं॥

तृतीयदिवसनिदान।

तृतीयेन्हिचगृण्हातिघंटालीबालकंग्रही।
तच्चेष्टाऽरोचकोद्वेगःकासःश्वासश्चशोषणम्॥

अर्थ–तीसरे दिन घंटालीनाम बालग्रह इस बालकको दबाताहै उसके दबानेसे बालकको अरुचि, उद्वेग, खांसी, श्वास और सूखना ये रोग होते हैं॥

गजदंतादिलेप।

गजदंताश्चगोदंतास्तथाकेशैस्तुचांजनी।
अजाक्षीरेणसंपिष्यततोबालंप्रलेपयेत्॥

अर्थ--हाथीदांत, गौका दांत और अंजनके केश इनको बकरीके दूधमें पीसके बालकको लेप करे॥

निंबादि धूप।

धूपयेन्निंबपत्राणिनखसर्षपराजिकाः।
लेपितोधूपितोबालःसुखमाप्नोतिनिश्चितम्॥

अर्थ--नींबके पत्तोंकी धूनी देय, तथा नख, सरसों और राई इनका लेप कर उद्धूलन करे तो बालकको सुख होय॥

चतुर्थदिवसनिदान।

चतुर्थेन्हिचगृण्हातिकंठकालीग्रहीशिशुम्।
तच्चेष्टारोचकोद्वेगःफेनोद्गारोदिगीक्षणम्॥

अर्थ--चौथे दिन बालकको कंठकाली ग्रह आक्रमण करे है, उसके ग्रसनेसे अरुचि, उद्वेग, मुखसे झाग डालना और दशों दिशामें देखे है॥

चौथे दिवसकी चिकित्सा।

गजदंताहिनिर्मोकंराजीमूलंचलेपयेत्।
धूपयेत्सर्षपारिष्टकेशैर्मुंचतिसाग्रही॥

अर्थ–हाथीदांत, साँपकी काँडली, राई और मूली इनका लेप करे तथा सरसों, नीमके पत्ते और बालोंकी धूनी देवे तो वह ग्रह बालकको छोड दे॥

पंचमदिवसनिदान।

पञ्चमेह्नित्वहंकारीग्रहीगृणहातिबालकम्।
तच्चेष्टाजृंभणंश्वासोमुष्टिबंधोऽर्धवीक्षणम्॥

अर्थ–पांचवेदिन अहंकारी बालग्रह बालकको दबाता है तब बालक वारंवार जँभाई ले, श्वास चले, हाथकी मुट्ठी बांधे और आधी आंखसे देखे॥

यत्न।

सिततालवचालोध्रमेषशृंगीःप्रलेपयेत्। लशुनंनिंबपत्राणिसिद्धार्थैर्धूपयेत्ततः। एवंमुंचतिसाबालंनात्रकार्याविचारणा॥

अर्थ–इसके सपेद हरताल, वच, लोध और मेढासिंगीका लेप करे। और लहसन नीमके पत्ते, सपेद सरसोंकी धूनी देय, इस प्रकार करनेसे बालक उस अहंकारी ग्रहकी बाधासे छूट जावे॥

छठेदिवसमें लक्षण।

षष्ठेहनिचबालंतुग्रहीगृह्णातिषष्ठिका।
तच्चेष्टागात्रविक्षेपोहास्यंरोदनमोहने॥

अर्थ--छटे दिन षष्ठिका नामक बालग्रह बालकको दबाता है, उसके दबानेसे देहको इधर उधर पटके, हँसे, रोवे और कभी मूर्च्छित हो जावे ॥

यत्न।

कुष्ठगुग्गुलुसिद्धार्थगजदंतैर्घृतान्वितैः।
धूपयेल्लेपयेच्चापिततोमुंचतिसाग्रही ॥

अर्थ--कूठ, गूगल, सपेद सरसों हाथीका दांत इनको घीमें सानके धूनी देवे और इन्ही दवाओंका लेप करे तो वह बालक षष्ठिका ग्रहके दोषसे छूट जाय ॥

सातवेंदिवसका निदान।

सप्तमेदिवसेनाम्नीसिंहिकाक्रमतेशिशुम्।
तच्चेष्टाजृंभणंश्वासोमुष्टिबंधस्तथैवच ॥

अर्थ--सातवेंदिन इस बालकको सिंहिका नामका बालग्रह दबाताहै कि जिससे जंभाई, श्वास और मुट्ठीबांधेहै ॥

यत्न।

मेषशृंगवचालोध्रहरितालमनःशिलाः।
एकत्रपिष्ट्वातत्सर्वंततोबालंप्रलेपयेत् ॥

अर्थ--मेढासिंगी, वच लोध, हरताल और मनसिल,इनको एकत्र पीसकर बालकके देहमें लेप करेतो सिंहिकाके दोष दूर होय ॥

अष्टमदिवसका निदान।

अष्टमेदिवसेबालंरेवतीग्रसतेत्वरम्।
कासतेश्वासतेचैवगात्रंसंकोचतेभृशम् ॥

अर्थ--आठवे दिन इस बालकको रेवती ग्रह ग्रसेहै कि जिस्से बालक खांसे श्वासचले और निरंतर देहको सकोडै ॥

यत्न।

आपामार्गमुशीरंचपिप्पलीचित्रकंतथा।
अजामूत्रेणसंपिष्यततोबालंप्रलेपयेत् ॥

अर्थ--चिरचिरा, खस, पीपल, चित्रक, इनको बकरेके मूत्रमें पीसके देहको लेप करे तो रेवती ग्रहका दोष दूर होय ॥

नवमदिवसनिदान।

नवमेदिवसेबालंमेषीगृह्णातिनिश्चितम्।

तच्चेष्टात्रासनोद्वेगःसमुष्टिद्वयखादनम् ॥

अर्थ–नौवेंदिन बालकको मेषी ग्रह दबाताहै, उसकी यह चेष्टाहै कि डरपे उद्वेगयुक्त हो और दोनों मुट्ठियोंको खाय है ॥

यत्न।

वचाचंदनकुष्टोग्रासर्षपास्तत्रलेपयेत्।
कपिरोमनखाभ्यांचधूपनान्मुच्यतेग्रही ॥

अर्थ–वच, चंदन, कूठ, घुडवच, सरसों, इनका लेप बालककी देहमें करे, तथा वानरके नख और रोमकी धूनी देवे तो बालक मेषी ग्रहके दोषसे छूट जाय ॥

दशमदिवसनिदान।

दशमेदिवसेनाम्नारोदनीत्रासतेशिशुम्।
तच्चेष्टाकासनंचैवरोदनंमुष्टिबंधनम् ॥

अर्थ–दसवे दिनमें रोदनीनामक बालक ग्रह बालकको देबावे, उससे बालक खाँसे रोवे और दोनों हाथोंकी मुट्ठी बांधे ॥

दशमदिवसकी चिकित्सा।

कुष्टोग्रासर्जसिद्धार्थैर्लिपेन्निंबेनधूपयेत्।
मत्स्यमांससुरायुक्तोबलिर्निशिसमाहरेत् ॥

अर्थ–कूठ, वच, राल, सपेद सरसों और नीमके पत्तोंको पीसकर बालककी देहमें लेप करे। तथा मछलीका मांस और दारूकी अर्द्ध रात्रिके समय सहरके बाहर चौराहेमें बलिदान देवे ॥

यत्नांतर।

अपामार्गकुशोशीरचंदनक्काथवारिणा।
सतांचमंत्रयेन्मंत्रीसंध्यायांपरिषेचयेत् ॥

अर्थ–ओंगा, कुश, खस, चंदन, इनका क्काथ करके इसको मंत्रपूर्वक अभिमंत्रित कर सायंकालके समय बालक स्नान करावे ॥

प्रथममासनिदान।

प्रथमेमासिगृह्णातिकुमारीनामयोगिनी।
उद्वेगज्वरशोषादिचेष्टितंतत्रजायते ॥

अर्थ–पहले महिनेमें कुमारीनामक योगिनी बालकको ग्रहण करे कि जिस्से उद्वेग, ज्वर और शोषादिक चेष्टा होती हैं ॥

द्वितीयमासनिदान।

द्वितीयेमासिगृह्णातिबालकंकुक्कुटाग्रही। ग्रीवानिपातोनिष्यंदो वपुषःपीतशीतता ॥ वृक्कांसशोषणंचैवारोचकंचतदाश्रयम् ॥

अर्थ–दूसरे महिनेमें बालकको कुक्कुटा ग्रही ग्रहण करे कि जिस्से बालक गरदनको गेरदेय, चेष्टारहित देहका रंग पीला और शीतल होय वृक्क और कंधे सूखजाय और उसको अरुचि होय ॥

तृतीयमासनिदान।

तृतीयेमासिगृह्णातिबालकंगोमुखीग्रही। तच्चेष्टारोदनंनिद्राबंधोमूत्रपुरीषयोः ॥ उन्मीलयतिनेत्राणिगोगंधोमधुगंधिवा ॥

अर्थ–तीसरे महिनेमें गोमुखी ग्रह बालकको दबाता है कि जिस्से बालक रोवे सोवे और मल मूत्र उतरे नहीं नेत्रोंको उघाडे उस्के देहमें गौकीसी गंध आवे अथवा सहतकीसी गंध आवे ॥

चौथेमासका निदान।

चतुर्थेमासिगृह्णातिबालकंपिंगलाग्रही। पयःपानोनिःश्वसिति भुजस्पंदास्यशोषणम्॥पूतिगंधस्तुतच्चेष्टातत्रनास्तिप्रतिक्रिया ॥

अर्थ–चौथे महिनेमें पिंगला ग्रह बालकको ग्रहण करेहै कि जिस्से बालक दूध नहीं पीवे, श्वासलेवे, भुजाहिले नहीं, मुखसूखे, दुर्गंध आवे इसका कोई इलाज नहीं है ॥

पांचवेमहीनेका निदान।

पंचमेमासिगृह्णातिबालकंबलवाहिनी। तच्चेष्टारोचकंकासोमुखशोषोस्यरोदनम् ॥ सीदंतिसर्वगात्राणिविश्रांतंपिवतेपयः ॥

अर्थ–पांचवे महिनेमें बालकको बलवाहिनी ग्रह दबाताहै कि जिस्से बालकको अरुचि, खांसी, मुखका शोष, रोवे सब अंग पीडितहो और ठहर ठहरके दूध पीवे ॥

छठवेमासका निदान।

षष्ठेमासिचगृह्णातिपद्मनाभाग्रहोशिशुम्।
तच्चेष्टारोदनंशूलंस्वरभ्रंशस्तथैवच ॥

अर्थ–छठे महिनेमें पद्मनाभा नामक ग्रहीबालकको ग्रहण करेहै उसकी चेष्टा यह है कि रोवे, पेटमें दर्दहो गला बैठ जाय ॥

सातवे महीनेका निदान।

सप्तमेमासिबालंतुकुमारीनामिकाग्रही।
क्षीरंपिबतिविश्रान्तंरोदितिक्षणछर्दिवान् ॥

अर्थ–सातवे महिनेमें बालकको कुमारी नामक ग्रह ग्रसे है तब बालक रह रहके दूध पीवे, रोवे और उलटी करेहै ॥

आठवे महिनेका निदान।

अष्टमेमासिगृह्णातिबालकंचांगिकाग्रही।
गात्रभंगोज्वराक्षीरुक्प्रलापच्छर्दिरेवच ॥

अर्थ–आठवे महिनेमें बालकको आंगिका ग्रह दबाताहै कि जिस्से देहविक्षेप ज्वर नेत्ररोग प्रलाप और रद्दकरे है ॥

नवमे महिनेका निदान।

नवमेमासिगृह्णातिबालकंकुंभकर्णिका।
तच्चेष्टारोचकच्छर्दिज्वरोवातालगंधता ॥

अर्थ–नवम महिनेमें बालकको कुंभकर्णिका नामक बालग्रह पकडे हैं उसके यह लक्षण हैं कि अरुचि, वमन, ज्वर तथा हरतालकोसी दुर्गंध मारेहैं॥

दशवे मासका निदान।

दशमेमासिगृह्णातिबालकंतापसीग्रही।
तच्चेष्टागात्रविक्षेपःक्षीरद्वेषोक्षिमीलनम् ॥

अर्थ–दशवे महिनेमें इस बालकको तापसी नामक ग्रह बाधा करता है, उसके यह चेष्टा हैं कि देहको इधर उधर पटके, दूध पीवे नहीं और नेत्रोंको मूंदे रहे ॥

बालरोगमें पथ्यापथ्य।

यत्पथ्यंयदपथ्यंचनृणामुक्तंज्वरादिषु । तत्तद्विधेयमौचित्या द्वालानांतेषुजानता ॥ पूर्वंपथ्यमपथ्यंचमंदाग्नौयत्प्रकीर्तित म्। औचित्यात्तेनरेजाताबालानांपरिकीर्तिताः ॥ आगाम्यु न्मादवातानांपथ्यापथ्यंयदीरितम् । औचित्याद्योजयेत्तत्रबा लेषुग्रहरोगिषु ॥

अर्थ-जो पथ्यापथ्य प्राणियोंको ज्वरादिक रोगोंमें करा है, उन्हीं २ पथ्यापथ्यको यह प्राणी जहां २ उचित समझे तहां करावे। जो प्रथम मंदाग्नि रोगपर पथ्यापथ्य कहा है, वही बालकके पेट और जठराग्निकी बिमारी पर करे। तथा जो प्रथम उन्मादरोग और वातरोगपर पथ्यापथ्य कहा है वही पथ्यापथ्य बालकको बालग्रहोंमें यथायोग्य करावे ॥

इतिश्री० बालरोग निदान समाप्तम् ॥

विषरोग।

विषनिदान।

स्थावरंजंगमंचैवद्विविधंविषमुच्यते।
मूलात्मकंतदाद्यंस्यात्परंसर्पादिसंभवम् ॥

अर्थ-स्थावर और जंगम ऐसे दो प्रकारका विष होता है तिनमें जडी आदिक स्थावर विष होता है और सांप विच्छू आदिक जंगम विष होता है॥

जंगम विषके लक्षण।

निद्रातंद्राक्लमंदाहमपाकंरोमहर्षणम्।
शोथंचैवातिसारंचकुरुतेजंगमंविषम् ॥

अर्थ-जंगम विष निद्रा, आलस्य, थकावट, दाह, अजीर्ण, रोमहर्ष, सूजन और अतिसार ये उपद्रव करता है ॥

विषपीतके लक्षण।

सवातंगृहधूमाभपुरीषंयोतिसार्यते।
फेनमुद्वमतेचापिविषपीतंतमादिशेत् ॥

अर्थ-जिसका अधोवायुके साथ घरके धूंयेके प्रमाण मल उतरे और मुखमें झाग होय उस प्राणीको जानना कि इसने विष पीया है ॥

स्थावरविषका सामन्यलक्षण।

स्थावरंतुज्वरंहिक्कादंतहर्षगलग्रहम्।
फेनछर्द्यरुचिश्वासंमूर्च्छांचकुरुतेभृशम् ॥

अर्थ-स्थावर विष ज्वर, हिक्का, दंतहर्ष, गलेका जकडना, झाग, वमन, अरुचि, श्वास और मूर्च्छा इन उपद्रवोंको करता है ॥

कंदविषकार्य सामान्यलक्षण ।

कंदजान्युग्रवीर्याणियान्युक्तानित्रयोदश । सर्वाण्येतानिकुशलैर्ज्ञेयानिदशभिर्युतम् ॥ स्थावरंजंगमंचापिकृत्रिमंचापियद्विषम् । सद्योनिहंतितत्सर्वंगुणैश्चदशभिर्युतम् ॥

अर्थ—कंदजन्य विष तेरा हैं, उनका वीर्य उग्र है, कुशल मनुष्योंने इनको अच्छी रीतिसे पहिचानना, स्थावर और जंगम तथा कृत्रिम जितने विष हैं वे तत्काल मारते हैं और इन सब विषोंमें दस १० लक्षण होते हैं, सो जानना चाहिये ॥

सामान्य उपचार ।

सैंधवंमरिचंतुल्यंनिंबबीजंसमीकृतम् ।
मधुसर्पिर्युतंहंतिविषंस्थावरजंगमम् ॥

अर्थ—सैंधानिमक, काली मिरच बराबर लेय और दोनोंकी बराबर नींमकी निवौरी लेय, इसको घोट और सहत और घृत मिलायके पीवे तो स्थावर और जंगम दोनों प्रकारका विष दूर होय ॥

विषके दश लक्षण ।

रूक्षमुष्णंतथाशीतंसूक्ष्ममाशुव्यवायिच ।
विकासिविशदंचापिलघ्वपाकिचतेदश ॥

अर्थ—रूक्षता, उष्णता, शीतता, सूक्ष्मता, व्यवायीपना, विकासीपना, विशदता, हलकेपना, और अपक्वता—ये दस विषके लक्षण हैं ॥

विषोंके दशगुणोंके कार्य ।

तद्रौक्ष्यात्कोपयेद्वायुमौष्ण्यात्पित्तंसशोणितम् । तैक्ष्ण्यामतिंमोहयतिमर्मसंधिंछिन्नत्तिहि ॥ शरीरावयवात्सौक्ष्म्यात्प्रविशेद्विकरोतिच । आशुत्वादाशुतद्धंतिव्यवायात्प्रकृतिंहरेत् ॥ विकासित्वात्क्षपयतिदोषान्धातून्मलानपि । अतिरिच्यति वैशद्याद्दुश्चिकित्स्यंचलाघवात् ॥ दुर्जरंचाप्यपाकित्वातस्मात्क्लेशयतेचिरम् ॥

अर्थ—विष रूक्ष होनेसे वायुको कुपित करता है, उष्ण होनेसे रक्त और पित्तको कुपित करता है, तीक्ष्ण होनेसे बुद्धिको मोह उत्पन्न करता है और मर्मके सन्धिनको छिन्न भिन्न करता है, सूक्ष्म होनेसे शरीरके अवयवोंमें प्रवेश करता है और उनमें विकार पैदा करता है, आशुकारी होनेसे जल्दी मार देता

है, व्यवायी होनेसे प्रकृतीको बिगाड़ देता है, विकासी होनेसे वात पित्त कफ इनको तथा शारीरिक धातुओंको और मलोंको नष्ट करता है, विशद होनेसे अतिरिक्त करता है, लघु होनेसे उसकी चिकित्सा दुर्धर होती है, अपक्व होनेसे उसका जीर्ण होना कठिन होता है, इसीवास्ते बहुत समयतक यह विष क्लेश देता है ॥

विषदेनेवाले मनुष्यके लक्षण।

इंगितज्ञोमनुष्याणांवाक्चेष्टामुखवैकृतैः । जानीयाद्विषदातारमेतैर्लिंगैश्चबुद्धिमान् ॥ नददात्युत्तरंपृष्टोविवक्षुर्मोहमेतिच॥ अपार्थंबहुसंकीर्णंभाषतेचापिमूढवत् । हसत्यकस्मात्स्फोटयत्यंगुलीर्भिर्लिखेद्भुवम् ॥ वेपथुश्चास्यभवतित्रस्तश्चान्योन्यमीक्षते । विवर्णवक्रःक्षामश्चनखैःकिंचिच्छिनत्त्यपि ॥ आलभेतासनंदीनःकरेणचशिरोरुहम् । वर्त्ततेविपरीतंचविषदाताविचेतनः ॥

अर्थ–मनुष्यके अभिप्राय जानने वाले वैद्यको बोलने चालने तथा मुखकी चेष्टा इनसे तथा आगे जो कहते हैं, इन लक्षणोंसे विष देनेवाले मनुष्यको बुद्धिमान् जानले। सो इसप्रकार जो मनुष्य विषदे उससे कोई बात पूंछे तो उत्तर नदे और जब बोले तब मोहको प्राप्त हो, अर्थात् घबडा जावे, तथा कदाचित् बोलेभी तो निरर्थक और बहुत अस्पष्ट बोले तथा अकस्मात् हंसे, हाथकी उंगली चटकावे, पृथ्वीमें रेखाकाढे, भयसे कांपे और डरकर चारों ओर बारबार सबकी तरफ देखे, मुखकी चेष्टा जाती रहै और मुख काला होजाय, चेहरा उतरजाय, नखोंसे कुछ तिनका आदि तोडे, गरीबके समान एकही स्थानपर बैठारहे, माथेपर हाथ फेरे, बारंबार इधर उधर डोलकर बैठजाय, उसका चित्त ठिकाने न रहे, तथा उसका चित्त भागनेको चाहे, ये लक्षण विष देनेवालेके जानने। और येही लक्षण चोर अपराध करनेवालेके राजा जानलेवे ॥

मूलादिविषोंके लक्षण।

उद्वेष्टनंमूलविषैःप्रलापोमोहएवच । जृंभणंवेपणंश्वासोमोहःपत्रविषेणतु ॥ मुखशोथःफलविषैर्दाहोऽन्नद्वेषएवच। भवत्युपविषैश्छर्दिराध्मानंश्वासएवच ॥ त्वक्सारनिर्यासविषैरुपयुक्तैर्भवन्तिहि । आस्यदौर्गंध्यपारुष्यशिरोरुक्कफसंस्रवाः ॥ फेना

गमःक्षीरविषैर्विड्भेदोगुरुजिह्वता । हृत्पीडनंधातुविषैर्मूर्च्छा दाहश्चतालुनि ॥ प्रायेणकालघातीनिविषाण्येतानिनिर्दिशेत् ॥

अर्थ-मूलविषसे रोगीके हाथ पैरोंमें पीडा और मोह होवै ।

पत्रविषसे-जंभाई, कंप, श्वास और मोह होवे ।

फलविषसे-मुखपर सूजन, दाह, अन्नमें अरुचि होवे ।

पुष्पविषसे-वमन, अफरा और श्वास होवे ।

छाल रस गोंद-इनसे मुखमें दुर्गंधि, अंगमें खरदरपन, मस्तकशूल और मुखके मार्ग कफ गिरे ।

दुग्धविषसे-मुखमें झाग आवे, दस्त होंय और जीफ जकड जावे ।

धातुविषसे-हृदयमें पीडा होय, मूर्च्छा आवै, तालुएमें दाह होय ये सब विष बहुधाकरके कालान्तर मारनेवाले होते हैं ।

विषलिप्तशस्त्रहतके लक्षण ।

सद्यःक्षतंपच्यतेतस्यजन्तोःस्रवेद्रक्तंपच्यतेचाप्यभीक्ष्णम् । कृष्णीभूतंक्लिन्नमत्यर्थपूतिक्षतान्मांसंशीर्यतेयस्यचापि ॥ तृष्णामूर्छाज्वरदाहौचयस्यदिग्धाहतंमनुजंतंव्यवस्येत् । लिंगान्येतान्येवकुर्यादमित्रैर्व्रणेविषंयस्यदत्तंप्रमादात् ॥

अर्थ-जिस पुरुषका जखम तत्काल पकजावै तथा उसमें रुधिर बहे और वारंवार पके, तथा उस जखममेंसे काला सडा दुर्गंधियुक्त ऐसा मांस निकले तथा जिसमें प्यास, मूर्च्छा, ज्वर, दाह ये होवें उसके विषमें बुझे वा लिप्त शस्त्रकी जखम लगी जानना चाहिये ॥

शत्रुओंनें कपटकरके जिसके व्रणमें विष डाल दिया हो, उसके भी यही लक्षण हैं ॥

स्थावरविषको कहकर जंगममें सर्पविष ये अतितीक्ष्ण
हैं इसीसे प्रथम सर्पोंकी जाति कहते हैं ।

वातपित्तकफात्मानोभोगिमण्डलिराजिलाः । यथाक्रमंसमाख्याताव्यन्तराद्वंद्वरूपिणः ॥

अर्थ-भोगी मंडली और राजिल, ये सर्प अनुक्रमसे वात, पित्त, कफप्रकृति हैं । और जे व्यंतर अर्थात् जो दो जातिके सर्प और सर्पणीसे प्रगट हैं वे व्यंतर कहाते हैं । उनकी प्रकृति द्वंद्वज है अर्थात् जिस जिस प्रकारके सर्प सर्पिणीसे प्रगट उसी प्रकारकी प्रकृति उनकी होती है।जिनके मस्तकपर चक्र, हल, छत्र, स्वस्तिक (सतिया), अंकुश इनका चिह्न हो और जिनका फण कर-

छोके समान चौडा हो और जल्दी चलनेवाले हों उनको भोगी अथवा राजिल सर्प कहते हैं । और जो अनेक प्रकारके चकत्तोंसे चित्रविचित्रहों तथा मोटे और मंद चलनेवाले तथा अग्नि और सूर्यकासा प्रकाश जिनका उनको मंडली सर्प कहते हैं ॥

और जो चिकने और अनेकप्रकारकी रेखा उनके ऊपर नीचे विद्यमान हों उनको राजिल सर्प कहते हैं । इन सर्पोंकी चार जाती हैं । तिन्में मोती, चांदी, सुवर्णकीसी प्रभा होवे और जो नम्र तथा जिनकी देहमें सुगंध आवै, वो ब्राह्मण जातिके सर्प हैं । और जिनका स्वच्छवर्ण, क्रोधी और जिनके मस्तकपर सूर्यचन्द्रके समान तथा छत्र तथा कमलका चिह्न होवै, वो क्षत्री जातिके सर्पहैं । काले और हीराके समान तथा लोहेके वर्ण हों और जिनकी धुआं और कबूतरके समान प्रभा हो, वो वैश्यजातिके सर्प हैं । जिनकी देह भैंसा, चीतेके समान हो और जिनकी त्वचा कठोर हो, तथा अनेक प्रकारका जिनका वर्ण हो, वो शूद्रजातिके सर्प हैं । रात्रिके पिछिले प्रहरमें राजिलजातिके सर्प विचरते हैं और रात्रिके पहले तीन पहरोंमें मंडली जातिके सर्प विचरते हैं । और दिनमें दर्वीकर जातिके सर्प बहुधा विचरते हैं । इनमें दर्वीकर जातिके सर्प तरुण हैं और मंडली जातिके वृद्ध और राजिल जातिके मध्य अवस्थाके हैं ॥

इतनी जातिके सर्प निर्विष जानने । जो नौलासे हत हैं और बालक, तथा जलसे ताडित हैं और कृश, वृद्ध, तथा जिनकी कांचली छूट रही हो और डर रहे हों, ऐसे सर्प विषरहित होते हैं ॥

अब सर्पोंके भेद कहते हैं ।

तहां प्रथम दर्वीकर सर्पोंके भेद कहते हैं । कृष्णसर्प, महाकृष्ण, कृष्णोदर, श्वेत, कपोल, बलाहक, महासर्प, शंखपाल, लोहिताक्ष, गवेधुक, परिसर्प, खंडफण, ककुदपद्म, महापद्म, दर्भपुष्प, दधिमुख, पुंडरीक, भ्रुकुटीमुख, विष्किर, पुष्पाभिकीर्ण, गिरिसर्प, ऋतुसर्प, श्वेतोदर, महाशिरा, अलगर्द, आशीविष ये दर्वीकर जातिके सर्प हैं ॥

आदर्शमंडल, श्वेतमंडल, रक्तमंडल, चित्रमंडल, प्रषत, रोध्रपुष्प, मिलिंदक, गोनस, वृद्धगोनस, पनस, महापनस, वेणुपत्रक, शिशुक, बभ्रु, कषाय, कलुप, पारावत, हस्ताभरण, चित्रक, एणीपद ये मंडलीजातिके सर्प हैं ॥

पुंडरीक, राजिचित्र, अंगुलराजि, बिंदुराजि, कर्दमक, तृणशोषक, संसर्पक, श्वेतहनु, दर्भपुष्प, चक्रक, गोधूमक, किक्कसाद, ये राजिलजातिके सर्प हैं ॥

गुलगोली, शूकपत्र, अजगर, दिव्यक, वर्षाहिक, पुष्पशकली, ज्योतीरथ

क्षीरिक, पुष्पक, अहिपतानक, अंधाहिक, गौराहिक, वृक्षेशय, इतने सर्प हीन विष जानने।

अब कहते हैं कि द्व्यंतर (वर्णसंकर) सर्पभी तीन प्रकारके हैं। माकुली, पोटगल, स्निग्धराजि॥

तहां कृष्णसर्पजातिकी सर्पिणी और गोनसजातिके सर्पसे जो सर्प प्रगट हो वो माकुली कहाता है॥

इसी प्रकार राजिल और गोनसीजातिकी सर्पिणी सर्पसे जो प्रगट सो पोटगलकसर्प कहाता है॥

इसी प्रकार कृष्णसर्प और राजमती जातिकी सर्पिणीसे जो प्रगट हुए सर्पको स्निग्धराजी कहते हैं॥

तहां अकुली सर्पमें पिताकासा विष (जहर) होय है और पोटगल स्निग्धराजी इन दोनोंमें माताकासा विष होता है। इन तीनोंके विपरीततासे दिव्येलक, लोध्रपुष्पक, राजिचित्रक, पोटगल, पुष्पाभिकीर्ण, दर्भपुष्प, वेल्लितक, इन सात जातिके सर्प प्रगट होते हैं॥

इनमेंभी प्रथमके तीन सर्पोंमें राजिल सर्पोंकासा विष होता है और शेषोंमें मंडली सर्पोंकासा जानना ऐसे सब मिलकर अस्सी प्रकारके सर्प हैं। इनमें भी जिनके नेत्र, जीभ, मुख, शिर बडे हो वो पुरुष जानने। और छोटे होंय वो स्त्री जाननी और जिनमें दोनों स्त्री पुरुषके लक्षण मिलते होय, तथा मंद विषवाले क्रोधरहित हों उनको नपुंसक जानना॥

भोगिप्रभृतिसर्पके काटनेपर वातादिकोंके लक्षण।

दंशोभोगिकृतःकृष्णःसर्ववातविकारकृत्।
पीतोमण्डलिजःशोथोमृदुःपित्तविकारवान्॥
राजिलोत्थोभवेद्दंशःस्थिरशोथश्चपिच्छिलः।
पाण्डुःस्निग्धोऽतिसान्द्रासृक्सर्वश्लेष्मविकारवान्॥

अर्थ--भोगी अथवा राजिल (दर्वीकर) सर्पके काटनेसे काटनेकी ठौर काली हो और सर्व वातके विकार करे इसके सुश्रुतमें (१) बहुत अवगुण लिखें हैं (मंडली) सर्पके काटनेकी ठौर पीली सूजन युक्त और नरम और पित्तके विकार करे और (राजिल) का दंश चिकना पीले रंगका वा गाढा तथा उसकी सूजन कठोर होय, उसमें गाढा रुधिर निकले तथा सब प्रकारके कफविकार हों ये लक्षण राजिल सर्प काटनेके हैं॥

वंध्याकर्कोटकीयोग।

वंध्याकर्कोटकीकंदंजलैःपिष्ट्वापिबेल्लिपेत्।

सर्पमूषकमार्जारवृश्चिकादिविषापहम् ॥

अर्थ–बाँझककोडेके कंदको जलमें पीसके पीवे और काटनेकी ठौर लगावे तो साँप, चूहा, बिल्ली और बिच्छू आदिके विषको नष्ट करे ॥

विशिष्टदेशमें तथा विशिष्टनक्षत्रमें काटनेके असाध्य लक्षण ।

अश्वत्थदेवायतनश्मशानवल्मीकसंध्यासुचतुष्पथेषु ।
याम्येचदष्टाःपरिवर्जनीयाऋक्षेशिरामर्मसुयेचदष्टाः ॥

अर्थ--पीपलके वृक्षके नीचे, देवताओंके मंदिरमें,श्मशानमें, बँबईमें, संध्याकाल (प्रातः और सायंकालकी संधि) चौराहेमें, भरणीनक्षत्रमें, (चकारसे आर्द्रा, आश्लेषा, मूल, मघा, कृत्तिका, इन नक्षत्रोंमें) और शिरानाडीके मर्ममें सर्पके काटनेसे मनुष्य बचे नहीं ॥

काटनेवालेको कष्टसाध्य नक्षत्र ।

आर्द्रासुचमघामूलकृत्तिकाभरणीषुच । पंचम्यांसंध्ययोर्मध्ये
मर्मसुस्वांगकेषुच ॥ दष्टाकष्टेनजीवंतियदिदूतादिसंपदः ॥

अर्थ–आर्द्रा, मघा, मूल, कृत्तिका, भरणी इन नक्षत्रोंमें और पंचमी तिथी प्रातःकाल और सायंकालकी संध्याओंमें मर्म स्थलमें काटा होय तो यदि उसके पास दूतादिक चतुःसंपात्ति होवे तो भी बडे कष्टसे जीवे ॥

उष्णताके योगसे विषका वेग होता है यह कहते हैं ।

दर्वीकराणांविषमाशुहंतिसर्वाणिचोष्णेद्विगुणीभवंति ।

अर्थ–दर्वीकर सर्पोंका बिष तत्काल इस प्राणीको मार डाले है और सर्व प्रकारके विष गरमीके समय दूना जोर करे है ॥

अजीर्णपित्तातपपीडितेषुबालेषुवृद्धेषुबुभुक्षितेषु ।
क्षीणक्षतेमेहिनिकुष्ठदुष्टरूक्षेबलेगर्भवतीषुचापि ॥

अर्थ--अजीर्ण, पित्तरोगी, गरमीसे पीडित, बालक, वृद्ध, भूँखा, क्षीण, घाववाला, प्रमेहरोगी, दुष्टकोढका रोगी, रूखा, निर्बल और गर्भवतीकोभी विष प्राणहरण करे यहभी कष्टसाध्य है ॥

सर्पके काटेके असाध्य लक्षण ।

शस्त्रक्षतेयस्यनरक्तमस्तिराज्योलताभिश्चनसम्भवन्ति ।
शीताभिरद्भिश्चनरोमहर्षोविषाभिभूतंपरिवर्जयेत्तम् ॥

अर्थ–जिसको विषका अंमल चढगया हो, उसके शस्त्रके घाव करनेसे

रुधिर निकले नहीं, अथवा चाबुक मारनेसे अंगमें उपडे नहीं, अथवा शीतल पानी अंगपर डालनेसे रोमांच नहीं, ऐसे मनुष्यका जहर उतारनेका उद्योग न करे ॥

दूसरे असाध्य लक्षण।

जिह्मंमुखंयस्यचकेशशातोनासावसादश्वसकंठभंगः।
रक्तःसकृष्णश्वयथुश्वदंशेहन्वोःस्थिरत्वंचविवर्जनीयः॥

अर्थ–जिसका मुख टेढा और स्तब्ध होजाय, केस (बाल) स्पर्श करनेसे टूट टूटकर गिर पडें, नाककी हड्डी टेढी होजाय, नार नीचेको झुकी पडे, ऊंची न होय और काटनेकी जगह सूजन होय, तथा वो दंशलाल अथवा काला होय तथा स्थिर होय, उस रोगीको त्याग देय ॥

तथा असाध्य लक्षण।

वर्तिर्घनायस्यनिरेतिवक्राद्रक्तंस्रवेदूर्ध्वमधश्चयस्य। दंष्ट्राभि घाताश्चतुरस्ययस्यतंचापिवैद्यःपरिवर्जयेत्तु॥ उन्मत्तमत्यर्थ मुपद्रुतंवाहीनस्वरंचाप्यथवाविवर्णम्। सारिष्टमत्यर्थमवेगिनं चजह्यान्नरंतत्रनकर्मकुर्यात्॥

अर्थ–जिसके मुखसे गाढी लारकी बत्ती गिरे और नाक मुखके मार्ग तथा गुदाके मार्गसे रुधिर निकले और जिसके चार दांत लगे होय उसको त्याग देय अत्यंत उन्मत्त होगया हो, अथवा ज्वर अतिसार आदि उपद्रवों करके पीडित हो, बोलनेमें असमर्थ हो, जिसके देहका वर्ण काला हो गया हो, नासाभंगादि अरिष्टयुक्त, जिसका वेग (लहर) आवे नहीं, ऐसा अथवा विष्ठा मूत्रादि वेगरहित ऐसे विषवाले पुरुषको त्याग देय अर्थात् उसका उपचार चिकित्सा न करै ॥

सर्पविष चिकित्सा।

कार्यासद्यःसर्पदष्टेमणिमंत्रौषधक्रिया।
अचिंत्योहिप्रभावस्तुमणिमंत्रौषधस्ययत्॥

अर्थ–सर्प काटनेपर तत्काल मणिधारण, मंत्रसे झारना औषध देना इत्यादिक करनी चाहिये क्योंकि मणि मंत्र और औषधोंका अचिन्त्य प्रभावहै ॥

तंदुलीयकमूलंतुपीतंतंदुलवारिणा।
तक्षकेणापिदष्टंहिनिर्विषंकुरुतेनरम्॥

अर्थ–चौंलाईकी जडको चाँवलोंके पानीमें पीसके पीवेतो तक्षकका काटा-भी प्राणी निर्विष होय ॥

घृतमधुनवनीतंपिप्पलीशृंगवेरंमरिचमपिचदद्यात्सप्तमंसैंधवेन ।
यदिभवतिसरोषंतक्षकेणापिदष्टोगदमिहखलुपीत्वानिर्विषंतत्क्षणेन।

अर्थ–घृत, सहत, मक्खन, पीपर, अदरख, कालीमिरच और सैंधानिमक इन सबको एकत्र पीस और घोलके पीवे तो क्रोधित तक्षक सांपका काटाभी निर्विष होय ॥

मूलंतंदुलवारिणापिबतियःप्रत्यंगिरासंभवंनिष्पिष्टंशुचिभद्रयोगदिवसेतस्याहिभीतिःकुतः। दर्पादेवफणिर्यदादशतितंमोहान्वितोन्मूलनस्थानेतत्रतदेवयातिनिधनंवक्त्रंयमस्याचिरात् ॥

अर्थ–जो प्राणी प्रत्यंगिरा की जडको चावल धोवनके पानीसे शुभदिनमें घोटकर पीवे तो उस प्राणीको सांपोंका भय कहांहै। यदि क्रोधयुक्त सर्प मूल-स्थान (गुदा) में डसे तो वह प्राणी उसी समय यमराजके घरजाय ॥

शिरीषाद्यंजन।

शिरीषपुष्पस्वरसेसप्ताहंमरिचंसितम्।
भावितंसर्पदष्टानांपाननस्यांजनेहितम् ॥

अर्थ–सिरसके फूलके स्वरसमें सपेद मिरचोंकी भावना देवे तथा इसको पीवे और अंजन करनेसे सांपका काटा अच्छा होय ॥

सामान्य उपचार।

दंशोपरिनिबध्नीयात्तत्क्षणाच्चतुरंगुलम्। क्षौमादिभिर्वाणिकया सिद्धैर्मंत्रैश्चमंत्रयेत्। अंबुवत्सेतुबंधेनस्तभ्यतेविषमंविषम् ॥

अर्थ–चतुर वैद्य जहांपर सांपने काटा होय उसके ४ अंगुल हटकर रेशमी कपडेसे बांधदेवे फिर सिद्ध मंत्रोंसे उसको झाड देवे तो जैसे बंद बांध-नेसे जलका वेग रुक जाता है इस प्रकार सर्पका विष आगे नहीं बढे ॥

नक्तमालाद्यंजन।

नक्तमालफलंव्योषंबिल्वमूलंनिशाद्वयम्।
सौरसंपुष्पमाजंवामूत्रंबोधनमंजनम् ॥

अर्थ–कंजाके फल, सोंठ, मिरच, पीपल, बेलफलकी जड, हलदी और दारुहलदी तथा तुलसीकी मंजरी बकरीका मूत्र इनका अंजन करनेसे विष-वेग नष्ट होयके बोध हो जाता है ॥

कर्कोटक्यादि नस्य।

वंध्याकर्कोटकीमूलंछागमूत्रेणभावितम्।
नस्यंकांजिकसंपिष्टंविषोपहतचेतसः॥

अर्थ–बांझककोडेकी जडको बकरेके मूत्रकी भावना देकर कांजीमें पीसके नास देवे तो विषयुक्त प्राणीका विष जाता रहे॥

लांगल्यादि योग।

जलेनलांगलीकंदनस्यंसर्पविषापहम्।
वारिणाटंकणंपीतमथवार्कस्यमूलकम्॥

अर्थ–जलमें कलियारीकी जडको पीसके नस्य देवे तो सर्प विष दूर हो अथवा जलमें सुहागा पीसके पीवे या आककी जडको जलमें घोटके पीवे तो सांपका विष दूर होय॥

सर्प विषपर धूप।

कपोतविण्मर्त्यशिरोरुहाश्वसगोविषाणांशिखिपिच्छकाग्रम्।
यवश्वधान्यंचतुषाश्वबीजंकार्पासजंवाप्युषिताश्वमालाः॥ इ
त्यौषधीभिःपरिकल्पितोऽयंधूमोगदस्याद्भुजगैरयुक्तः। गृहेवि
धेयःकुशलैरनेननश्यंतिसर्पाश्चतथाखवश्च॥

अर्थ–कपोत (कबूतर) की बीठ मनुष्यके मस्तकके बाल, गौकासींग, मोरकी चंद्रिका, जौं, धनिया, तुप, कपासके बीज (विनोले) और बासी माला इन सबको पीस धूनी बनावे इसकी कुशल वैद्य सांप काटनेवालेको धूनी दे और घरमें धूनी देय तो सांप और मूसे दूर हो॥

सातलाफलेननेत्रांजनंकृत्वासर्पविषंनश्यति॥

अर्थ–थूहरके फलके रसको नेत्रोंमें अंजन करनेसे सर्पविष नष्ट होय॥

कालवज्राशनीरस।

पारदंगंधकंतुत्थंटंकणंरजनीसमम्। देवदाल्याद्रवैर्मर्द्यंदिनशु
ष्कंतुभक्षयेत्॥ कालवज्राशनिर्नामरसःसर्वविषापहः। नरमू
त्रंपिबेच्चानुकालदष्टोऽपिजीवति॥

अर्थ–पारा, गंधक, लीलाथोथा, हलदी ये समान भाग लेय फिर १ दिन वंदालके रसकी भावना देकर गोली बनाय लेवे यह कालवज्राशनि रस सर्व प्रकारके विषोंको दूर करे इसके ऊपर वैद्यका मूत्र पीवे परंतु कोई कहता है कि मनुष्यका मूत्रही पीवे॥

रजनीसैंधवयुतंसक्षौद्रंघृतमुत्तमम्।
पानंमूलविषार्त्तस्यविषविद्धस्यचक्षते ॥

अर्थ–हलदी, सैंधानिमक, सहत और घी इनको मिलायके पीवे तो मूल (जडके विष, जैसे सिंगिया आदि है) के विष सब दूर हो ॥

दूषीविषके लक्षण।

जीर्णविषघ्नौषधिभिर्हतंवादावाग्निवातातपशोषितंवा।
स्वभावतोवागुणविप्रहीनंविषंहिदूषीविषतामुपैति ॥

अर्थ–जो विष पुराना होगया हो अथवा विषकी नाशक औषधीसे हतवीर्य होनेसे, अथवा सरदी, गरमी, अग्नि इनसे सूखी हुई अथवा जे स्वभावसे गुणरहित हैं, ऐसे स्थावर जंगमात्मक विष दूषीविषताको प्राप्त होते हैं ॥

दूषीविषके लक्षण।

वीर्याल्पभावान्ननिपातयेत्तत्कफान्वितंवर्षगणानुबंधि। तेना
र्दितोभिन्नपुरीषवर्णोविगंधवैरस्ययुतःपिपासी ॥ मूर्छाभ्रमंगद्ग
दवाग्वमित्वंविचेष्टमानोरतिमाप्नुयाद्वा ॥

अर्थ–वे दूषीविष अल्पवीर्य होनेसे मारक नहीं होते, किंतु कफसंबंध होनेसे उष्णादि गुण मंद होकर बहुत वर्षपर्यंत गर (विष) रूप होकर रहते हैं उस विषसे पीडित हुए पुरुषके दस्त होते हैं, उस्का वर्ण पलट जाय, उसके मुखसे बूरी दुर्गंधि निकले, उसके मुखका स्वाद जाता रहै, प्यास लगे, मूर्छा आवै, भ्रम होय, वो बोलते समय अक्षर चबावे, वमन करे, विरुद्ध चेष्टा करे और उसको चैन नहीं पडे ॥

स्थानभेदकरके उसके विशिष्ट लक्षण।

आमाशयस्थेकफवातरोगीपक्वाशयस्थेनिलपित्तरोगी।
भवेत्समुद्धस्तशिरोरुहांगोविलूनपक्षस्तुयथाविहंगमः ॥

अर्थ–पूर्वोक्त विष आमाशयमें स्थित होनेसे कफवातजन्य रोग होय और पक्वाशयमें आनेसे वातपित्तजन्यविकार होय, तथा उस रोगीके मस्तकके और सब देहके बाल उडकर पंखरहित पक्षी (पखेरु) के समान हो जाय ॥

निद्रागुरुत्वंचविजृंभणंचविश्लेषहर्षावथवांगमर्दः। ततःकरो
त्यन्नमदाविपाकावरोचकंमंडलकोष्ठजन्म ॥ मांसक्षयंपादकर
प्रशोथंमूर्छांतथाछर्दिमथातिसारम्। दूषीविषंश्वासतृषौचकुर्या

ज्ज्वरप्रवृद्धिंजठरस्यचापि ॥ उन्मादमन्यज्जनयेत्तथान्यद्दाहं तथान्यत्क्षपयेच्चशुक्रम् । गाद्गद्यमन्यंजनयेच्चकुष्ठंतांस्तान्विकारांश्चबहुप्रकारान् ॥

अर्थ–दूषीविषके प्रभावसे निद्रा, भारीपन, जंभाई, अंग शिथिल, रोमांच, अंगोंका टूटना ये प्रथम होकर तदनंतर भोजनके उपरांत हर्ष होना, अन्न पचे नहीं, अरुचि, देहमें चकत्ते तथा गांठ उठे, मांसक्षय, हाथ पैरोंमें सूजन, मूर्छा, वमन, दस्त, श्वास, प्यास, ज्वर, उदररोग ये विकार होंय तथा अनेक प्रकारके रोग होय, सो इस प्रकार किसीसे उन्माद रोग होय, और किसीसे दाह होय कोई नपुसकत्व करे, और कोई गद्गदवाणी करे, कोई कुष्ठरोग करे, और विसर्प विस्फोट आदि अनेक प्रकारके रोग होंय ॥

दूषीविषकी निरुक्तिके लक्षण ।

दूषितंदेशकालान्नदिवास्वप्नैरभीक्ष्णशः ।
यस्मात्संदूषयेद्धातूंस्तस्माद्दूषीविषंस्मृतम् ॥

अर्थ–देश, काल और अन्न और दिवा निद्रा, इनसे वारंवार दूषित हुए विष धातुओंको दुष्ट करे इसीसे उसको दूषीविष कहते हैं । दूषीविष दोप्रकारका है एक कृत्रिम और दूसरा गरसंज्ञक, जो विष पदार्थोंसे बनाया जाय वो कृत्रिम । और निर्विष द्रव्योंके संयोगसे होय उसको गर कहते हैं । सो वृद्धकाश्यपने[1] चरकमें लिखा भी है ॥

इन दोनोंविषोंका लक्षण ।

सौभाग्यार्थंस्त्रियःस्वेदरजोनानांगजान्मलान् ॥ शत्रुप्रयुक्तांश्चगरान्प्रयच्छंत्यन्नमिश्रितान् ॥ तैःस्यात्पाण्डुःकृशोऽल्पाग्निर्ज्वरश्चास्योपजायते । मर्मप्रधमनाध्मानंहस्तयोःशोथलक्षणम् ॥ जाठरंग्रहणोदोषोयक्ष्मगुल्मक्षयज्वराः । एवंविधस्य चान्यस्यव्याधेर्लिंगानिनिर्दिशेत् ॥

अर्थ–गरका अधिकार स्वाधीन करनेको, दुष्ट जनोंके कहनेसे, पतिको वशीकरण करनेके निमित्त, स्त्री अपने पतिको पसीना, आर्तव (रजोदर्शन रुधिर) तथा अपनी देहके अनेक अंगोंका मैल, अन्नमें मिलाकर खिलाती हैं । अथवा शत्रुकृत गर विषका प्रयोग, अर्थात् वैरी विष अथवा गरको अन्न

१ वृद्धकाश्यपः-संयोगजं तु द्विविधं तृतीयं विषमुच्यते । गरः स्यादविषस्तत्र सविषं कृत्रिमं यतः ॥१॥ चरकः–दंष्ट्राविषे मूलविषे सगरे कृत्रिमे विषे ॥ इति ॥

तथा जलमें मिलाकर खवाय देय, इससे मनुष्य पीला और कृश होय, उसकी अग्नि मंद होय, सब मर्मोंमें पीडा, पेट फूलजाय, हाथोंमें सूजन, उदररोग, ग्रहणीरोग, राजयक्ष्मा, गुल्म, क्षय, ज्वर इन रोगोंके तथा इसीप्रकारके रोगोंके लक्षण होते हैं ॥

दूषीविषके असाध्यादि लक्षण।

साध्यमात्मवतःसद्योयाप्यंसंवत्सरोषितम् ।
दूषीविषमसाध्यंतुक्षीणस्याहितसेविनः ॥

अर्थ–दूषीविष पेटमें जानेसे तत्काल उपाय करनेसे और रोगी पथ्यमें रहनेसे साध्य है और वर्ष दिन व्यतीत हो जाय तो याप्य जानना और क्षीण तथा अपथ्य सेवन करनेवालेके असाध्य होय ॥

शर्करादि लेह।

शर्कराचूर्णसंयुक्तंचूर्णताप्यसुवर्णयोः ।
लेहःप्रशमयत्युग्रंनानायोगकृतंविषम् ॥

अर्थ–मिश्रीका चूरा और सुवर्णमाक्षिक और सुवर्ण इनके अवलेहका सेवन अनेक प्रकारके बने हुए विषोंको नष्ट करे है ॥

पुत्रजीवमज्जायोग।

पुत्रजीवस्यमज्जांचनिष्कमात्रांगवांपयः ।
पिष्ट्वाचोग्रतरंहन्यान्नानायोगकृतंविषम् ॥

अर्थ–जीयापोताकी मिंगी ४ मासेको पीस गौके दूधमें मिलायके पीवे तो घोर अनेप्रकारके बनेहुए विषविकारोंको नष्ट करे ॥

कृत्रिमविषगृहधूमतैल।

गृहधूमेनसंपिष्ट्वातंदुलीमूलतुल्यकम् । कल्काच्चतुर्गुणंचाज्यं
तस्मात्क्षीरंचतुर्गुणम् । घृतशेषंपचेत्सर्वंपिबेत्सर्वगरापहम् ॥

अर्थ–घरका धूआँ और चौंलाईकी जडको समान भागले कल्क करे कल्कसे चौगुना घी और घीसे चौगुना दूध लेय, फिर घृत शेष रहे तब, उतारके शीतल कर लेय यह सर्व विष और बने हुए विषोंको नष्ट करे है ॥

पारावतादि हिम।

पारावतामिषसठीपुष्कराह्वश्रृतंहिमम् ।
गरतृष्णारुजाकासश्वासहिध्माज्वरापहम् ॥

अर्थ-कबूतरका मांस, कचूर, पुहकर मूल, इनका हिम बनायके पीवे तो विष, तृषा, पीडा, खांसी, श्वास, हिचकी और ज्वर इनको दूर करे॥

टंकणयोग।

तुल्येनटंकणेनैवम्रियतेभक्षणाद्विषम्।
अतिमात्रंयदाभुक्तंतदाज्यंटंकणंपिबेत्॥

अर्थ-जितना विष भक्षण करा हो उतनाही भुना सुहागा खानेसे विष मर जाता है यदि अधिक विष खाय लिया होय तो भुना सुहागा और घी पीवे॥

दूर्वादिपान।

दूषीविषार्तंसुस्निग्धमूर्ध्वंचाधश्चशोधनम्।
पाययेदगदंमुख्यमिदंदूषिविषापहम्॥

अर्थ-दूषीविषवाले प्राणीको प्रथम घृत तैलादिसे चिकना कर फिर ऊपर और नीचेसे अर्थात् वमन विरेचन द्वारा शोधन करे फिर दूबको घोटकर पीवे तो दूषी विष नष्ट होय॥

पिप्पल्यादि।

पिप्पलीधान्यकंमांसीलोध्रमेलासुवर्चिका।
मरिचंवालकंचैलातथाकनकगैरिकम्॥

अर्थ-पीपल, धनिया, जटामांसी, लोध, छोटी इलायची और सोरा, काली मिरच, सुगंधवाला बडी इलायची और सोनगेरू इनका सेवन दूषी विषको नष्ट करे॥

लूताविषकी उत्पत्तिके लक्षण।

यस्माल्लूनंतृणंप्रातामुनेःप्रस्वेदबिंदवः।
तस्माल्लूताःप्रभाष्यन्तेसंख्ययातास्तुषोडश॥

अर्थ-विश्वामित्रराजा वसिष्ठकी कामधेनु जबर्दस्ती लेकर चला, उस समय वसिष्ठजीको क्रोध आया, उससे ललाटमें पसीनाका बिंदु निकला, सो समीप जो कटे तृण गौके चरनेके अर्थ पडे थे उनपर वो बिंदु पडे, इसीसे लूता (मकडी) प्रगट हुई इन मकडियोंकी सोलह जाति हैं इन सोलहोंके भी दो भेद हैं एक कृच्छ्रसाध्य, दूसरी असाध्य॥

उनके काटनेके सामान्य लक्षण।

ताभिर्दष्टेदंशकोथप्रवृत्तिःक्षतजस्यच। ज्वरोदाहोऽतिसारश्च

गदाःस्युश्चत्रिदोषजाः ॥ पिडिकाविविधाकारामण्डलानिमहान्तिच । शोथामहान्तोमृदवोरक्तश्यावाश्चलास्तथा ॥ सामान्यंसर्वलूतानामेतद्दंशस्यलक्षणम् ॥

अर्थ–उन मकडियोंके काटनेसे वो स्थान सडे और उसमेंसे रुधिर बहे, ज्वर, दाह, अतिसार और त्रिदोषज, तथा अनेक प्रकारके फोडा, बडे बडे चकत्ते, नरम, लाल,काली, नीली और चंचल ऐसी सूजन होय इत्यादि लक्षण होते हैं, इस प्रकार सर्व लूताओंके सामान्य लक्षण जानने ॥

दूषीविषलूताके काटनेके लक्षण ।

दंशमध्येतुयत्कृष्णंश्यावंवाजालकावृतम् ॥ ऊर्ध्वाकृतिभृशंपाकंक्लेदकोथज्वरान्वितम् । दूषीविषाभिर्लूताभिस्तंदष्टमितिनिर्दिशेत् ॥

अर्थ–जिस दंशका मध्यभाग काला, अथवा पीला, अथवा हरा, तथा जालके सदृश ऊंचा होकर शीघ्र पके, तथा उसमेंसे दुर्गंधियुक्त लस बहे, उसमें ज्वर होय, उसको दूषीविष अथवा लूताका काटा हुआ जानना ॥

प्राणहरलूताके लक्षण ।

सर्पाणामेवविण्मूत्रशवकोथसमुद्भवाः । दूषीविषाःप्राणहरा इतिसंक्षेपतोमताः ॥ शोथाःश्वेताऽसितारक्ताःपीताःसपिटिकाज्वराः । प्राणान्तिकाभिर्जायन्तेदाहहिक्काशिरोग्रहाः ॥

अर्थ–सर्पोंके मलमूत्रसे अथवा मरे हुए सर्पके सडजानेसे जो दूषी विषके कीडा उत्पन्न होंय, वे प्राण हरनेवाले होते हैं उनका काटा हुआ स्थान सूज आवे, तथा वो सफेद काला लाल पीला होय और फुंसी होजाय और रोगीको ज्वर आवै, दाह होय, हिचकी आवे, मस्तकमें शूल होय ॥

लूताविष चिकित्सा । रजन्यादिलेप ।

रजनीद्वयमंजिष्ठापतंगगजकेसरैः ।
शीतांबुपिष्टैरालेपःसद्योलूताविषापहः ॥

अर्थ–हलदी, दारुहलदी, मजीठ, पतंग, गजकेशर, इन सबकी शीतल जलमें पीसके लेपकरे तो तत्काल लूताविष दूर होय ॥

गिरिकर्ण्यादि लेप ।

गिरिकर्णिद्वयंशेलुःपाटलाद्वेपुनर्नवे ।

कपित्थश्चशिरीषश्चलेपोलूताविषापहः ॥

अथ-नीलीकोयल और सपेदकोयल, वेलगिरी, पाटला, लालपुनर्नवा और सपेद पुनर्नवा, कैथ और सिरस इनका लेप लूताविषको नष्ट करेहै ॥

कीटजलौकाचिकित्सा।

कटभ्यर्जुनशैरीषशैलुक्षीरिद्रुमत्वचः।
कषायकल्कचूर्णोयंकीटलूताव्रणापहः॥

अर्थ-कटभी कोह, सिरस, वेलगिरी और क्षीरीवृक्ष (वड पीपल आदि) इनकी छालका क्वाथ कल्क या चूर्ण बनायके सेवन करे तो लूताका घाव अच्छा होय ॥

वचादि काढा।

वचाहिंगुविडंगानिसैंधवंगजपिप्पली। पाठाप्रतिविषाव्योषंक इयपेनविनिर्मितम् ॥ दशांगमगदंपीत्वासर्वकीटविषंजयेत् ॥

अर्थ-वच, हींग, वायविडंग, सैंधानिमक, गजपीपल, पाढ, अतीस, सोंठ, मिरच, पीपल, यह कश्यपका बनाया दशांग अगद है, पीनेसे सर्व कीट (कीडों) का विष दूर होय ॥

वरटीविषचिकित्सा मरिचादिलेप।

मरिचंनागरोपेतंसिंधुसौवर्चलान्वितम्।
फणिवल्लीरसैर्लेपाद्धंतितद्वरटीविषम् ॥

अर्थ-काली मिरच, सोंठ, सैंधानिमक, संचर निमक, इन सबको नागरवेलके रससे घिसके लेप करे तो वरटी (वर्रया ततैया) का विष नष्ट होय ॥

दूषीविषाखु लक्षण।

आदंशाच्छोणितंपाण्डुमण्डलानिज्वरोऽरुचिः।
लोमहर्षश्चदाहश्चाप्याखुदूषीविषार्दिते ॥

अर्थ-विषैलआखु (मूसा) के काटनेसे पीला रुधिर निकले, देहमें गोल चकत्ते उठें, ज्वर होय, अरुचि होय, रोमांच और दाह होय ये मूसेके काटनेके विषपीडित मनुष्यके लक्षण हैं ॥

प्राणहरमूषकविष लक्षण।

मूर्च्छांगशोथवैवर्ण्यक्लेदोमन्दश्रुतिज्वरः।
शिरोगुरुत्वंलालासृक्छर्दिश्चासाध्यमूषकैः ॥

अर्थ–जिस मूसेके काटनेसे मूर्च्छा, मूसेके आकार सूजन, देहमें विवर्णता, क्लेद, मंद सुनाई दे, ज्वर, मस्तक, भारी, लार और रुधिर इनकी रद्द होय, ये लक्षण प्राणहर्ता मूसेके असाध्य हैं ॥

आखुविषचिकित्सा।

आगारधूममंजिष्ठारजनीलवणोत्तमैः।
लेपोजयत्याखुविषंकोशातक्यथवासिता ॥

अर्थ–घरका धूमसा, मजीठ, हलदी, सैंधानिमक, इनका लेप विषैल मूँसेके विषको दूर करे अथवा बासी तोरईके लेपसे विषैल मूँसेके विष दूर होय ॥

उरगकंचुकी धूम।

उरगेणविनिर्मुक्तनिर्मोकधूमसेवनात्।
पथ्याशीत्रिदिनंधूमोभवेदाखुविषापहः ॥

अर्थ–साँपकी काँचलीकी धूनी तीन दिन लेवे और पथ्यसे रहे तो विषैल मूसेके विषको नष्ट करे ॥

चित्रकमूलचूर्ण।

अथवाचित्रकमूलचूर्णंतैलेविपाच्यमस्तकेक्षुरेणप्रच्छित्य।
शिरसिब्रह्मरंध्रेमर्दनंकृत्वाआखुविषंनश्यति ॥

अर्थ–चित्रककी जडको चूर्णके तेलमें पचावे, फिर छुरासे मस्तकमें पछना लगायके मर्दन करे अर्थात् ब्रह्मरंध्रमें मले तो विषैल मूसेका विष दूर होय ॥

चिंचादिचूर्ण।

चिंचापलसमायुक्तंगृहधूमंपलार्धकम्।
पुराणाज्येनसप्ताहंलीढ्वाचाखुविषंहरेत् ॥

अर्थ–इमली ४ तोले, घरका धूमसा २ तोले इन दोनोंको पुराने घृतमें सानके चाटे तो विषैल मूसेका विष दूर होय ॥

रसादिलेप।

रसंगंधंनिशाबंधुंगृहधूमंशिरीषजम्। बीजंदिनकरक्षीरैर्मर्दयि
त्वाविलेपनम्। विशेषान्मूषकविषंहन्यादन्यान्विषोद्भवान् ॥

अर्थ–पारा, गंधक, कपूर, घरका धूमसा और सिरसके बीज, इनको आकके दूधमें मर्दन करके लेप करे तो मूषक विष दूर होय तथा अन्य विष-जन्य रोग दूर हो ॥

शिलादिपान।

शिलातालककुष्ठानिपिष्ठानिर्गुंडिजद्रवैः।

पानंमूषकदष्टानांदत्वातीव्रविषंहरेत् ॥

अर्थ-मनसिल, हरताल, कूठ, इनको निर्गुंडीके रसमें पीसके पीवे तो तीव्र मूसेका विष हरण करे ॥

नखदंतविष।

पिचुमंदशमीकंटकल्कयुतंक्वथितंजलमाशुविलोडनतः। नख दंतविषाणिनिहंतिनृणांविषमान्यखिलान्यपिसत्यमिदम् ॥

अर्थ-नीम, छोकरा, कायफल, इनके कल्कका क्वाथ करा जल विषके ऊपर डालनेसे नाखून दांतके विषोंको नष्ट करे और भी विषम विषोंको नष्ट करे, यह सत्य है ॥

कृकलासदष्टलक्षण।

कार्ष्ण्यंशावत्वमथवानानावर्णत्वमेवच।
व्यामोहोवर्चसोभेदोदष्टेस्यात्कृकलासकैः ॥

अर्थ-नोलाके काटनेसे देहका वर्ण काला, अथवा लाहरा, तथा अनेक प्रकारका होय, तथा उस रोगीके भ्रांति और अतिसार होय ॥

वृश्चिक (विच्छू) की उत्पत्तिं।

सर्पाणामेवविण्मूत्राद्वृश्चिकाःकीटजामताः ॥

अर्थ-सांपोंकी विष्ठा मूत्रमेंसे जो विच्छू पैदा हो, वो कीटज कहलाते हैं ॥

वृश्चिकविषलक्षण।

दहत्यग्निरिवादौतुभिनत्तीवोर्ध्वमाशुवै।
वृश्चिकस्यविषंयातिदंशेपश्चात्तुतिष्ठति ॥

अर्थ-विच्छूके काटनेसे उस स्थानमें प्रथम आगसी जले, पीछे ऊपरको चढे पीछे उस काटनेकी जगह फटनेकीसी पीडा होय ॥

अब कहते हैं कि वीछू मन्दविष, मध्यविष, महाविषके भेदसे तीन प्रकारका है। तिनमें जो गौके गोबरसे प्रगट होय वो मन्दविष है, और काठ ईंट इनसे प्रगट होय वो मध्यविष है और जो सर्पकी सडी देहसे प्रगट होय वो अथवा अन्य विषवाली वस्तुओंसे प्रगट होय वो विच्छू महाविषवाला होताहै मंद विषवाले विच्छू बारह प्रकारके हैं। और मध्याविषवाले तीन प्रकारके हैं। और महाविषवाले पंद्रह प्रकारके हैं ऐसे सब मिलकर तीस प्रकारके विच्छू हैं कोई आचार्य २७ प्रकारके कहते है, कृष्ण, श्याव, कर्बुर, (विचित्रवर्ण) पीत, गोमूत्राभ, कर्कश, मेचक, श्वेत, लाल, रोमश, शाद्वलाभ, रक्त ये बारह मन्दवीर्य हैं, इनके काटनेसे पीडा, कंप, देहका स्तंभ, काले रुधिरका निकलना, इत्यादि रोग होते हैं ॥

रक्तोदर, पीतोदर, कपिलोदर, ये तीन मध्यविषवाले विच्छू हैं, इनके काटनेसे जीभमें सूजन, भोजनका न होना, घोर मूर्च्छा ये लक्षण होते हैं ॥

श्वेत, चित्र, श्यामल, लोहिताभ, रक्तश्वेत, रक्तोदर, नीलोदर, पीत, रक्त, नीलपीत, रक्तनील, नीलशुक, रक्तबभ्रु, एकपर्व्वा, उपर्व्वा, ये घोर विषवाले १५ बिच्छू हैं। इनके काटनेसे सर्पके समान वेग होय, फोडोंकी उत्पत्ति होय, भ्रांति, दाह, ज्वर, नाक, कान, आदि छिद्रोंसे काला रुधिर निकले, इसीसे शीघ्र प्राणत्याग होवे ॥

वृश्चिकविषके असाध्यलक्षण ।

दष्टोसाध्यस्तुहृद्घ्राणरसनोपहतोनरः ।
मांसैःपतद्भिरत्यर्थवेदनार्तोजहात्यसून् ॥

अर्थ-हृदय, नाक, जीभ, इनमें विच्छूके काटनेसे मांस गलकर अत्यन्त वेदना होकर मनुष्य मरे ॥

विच्छूविषचिकित्सा कार्पासादिलेप ।

कार्पासपत्रैःसंपिष्टोराजीलेपोविषापहः ॥
वृश्चिकस्याथवावत्सनाभलेपःप्रशस्यते ॥

अर्थ-कपासके पत्तोंके रसमें राई मिलायके पीसे तो विच्छूका विष दूर होय। अथवा वत्सनाभ विषका लेप विच्छूके विषको शांति करे ॥

मनःशिलादिलेप ।

मनःशिलाकुष्टकरंजबीजशिरीषकाश्मीरभवैःसमांशैः ।
विनिर्मितास्येविधृताचालिप्तासंधारणोवृश्चिकवैकृतस्य ॥

अर्थ-मनसिल, कूठ, कंजेके बीज, सिरसकेबीज, केशर ये सब समान भाग लेवे, इनको बारीक पीस गोली बनाय लेवे १ गोली मुखमें रक्खे और जहां काटा होय उस जगह लेपकरे तो विच्छूका विष नष्ट होय ॥

बिजोरामूलयोग ।

मातुलिंगस्यमूलंतुरविवारेसमुद्धरेत् । उत्तराभिमुखेनैवन्हींमंत्रोच्चारणात्स्पृशेत् ॥ वामांगेदक्षिणेदष्टेवामेदष्टेचदक्षिणे ।
सप्तधामार्जनेनैवविषंवृश्चिकजंहरेत् ॥

अर्थ-बिजोरेकीजड रविवारको उत्तराभिमुख होकर खोदे फिर "ह्रीं" इस मंत्रका जपकरता हुआ उसको उखाडलेवे, यदि दाहिनीतरफ काटा होय तो इस जडको बांई तरफ और बांई तरफ काटा होय तो दहनी तरफ ७ वार झाडा देनेसे विच्छूका विष दूर होय ॥

अन्ययोग।

श्वेतपुनर्नवामूलंरविवारेसमुद्धरेत्।
कार्पासमूलंचर्वित्वाविषंवृश्चिकजंहरेत्॥

अर्थ-सपेद पुनर्नवाकी जडको रविवारके दिन उखाड लावे इसके लगानेसे तथा कपासकी जड चबानेसे विच्छूका विष दूर होय॥

हंसपादीमूल।

ग्राह्यंहंसपदीमूलंप्रातरादित्यवासरे।
मुखस्थंफूत्कृतंकर्णेविषंवृश्चिकजंहरेत्॥

अर्थ-हंसपदी (छुईमुई) की जडको रविवारके प्रातःकालको उखाड लावे फिर इसको चबायके जिसे बीछूने काटा होय उसके कानमें थूकदेवे तो विच्छूका विष दूर होय॥

जेपालकल्क।

पानीयपिष्टजेपालकल्कलेपेनसर्वथा।
विषंवृश्चिकविद्धस्यभस्मीभवतितत्क्षणात्॥

अर्थ-जमालगोटेको पानीमें पीसके जहांपर विच्छूने काटा होय उसपर लेप करे तो तत्क्षण विच्छूका विष भस्म होय॥

नवसादरादिलेप।

नवसादरहरितालेपिष्टेतोयेनलेपनाद्दंशे।
तत्क्षणमेवजयतिवृश्चिकविद्धस्यदुर्धरंक्ष्वेडम्॥

अर्थ-नौसद्दर, हरिताल, इन दोनोंको जलमें पीसके जहां विच्छूने काटा होय लेप करे तो घोर विच्छूके विषको नष्ट करे॥

कणभदष्टके लक्षण।

विसर्पःश्वयथुःशूलंज्वरश्छर्दिरथापिवा।
लक्षणंकणभैर्दष्टेदंशश्चैवविशीर्यते॥

अर्थ--कणभ एक जातिका कीडा होता है[1]! उसके काटनेसे विसर्प सूजन, शूल, ज्वर, वमन, ये लक्षण होते हैं और वो काटनेका स्थान गल जाय, अब कहते हैं कि त्रिकंटक, कुणी, हस्तिकक्ष, उपराजित ये कणभ कीडाके चार भेद हैं। इनके काटनेसे पूर्वोक्त रोग होंय और अंगोंका टूटना, देहमें भारीपन और काटनेकी ठौर काली हो जाय, ये लक्षण विशेष होंय॥

१ इसको महाराष्ट्रलोग कुंभारिण कहते हैं॥

उच्चिटिंगर (झींगर) विषके लक्षण।

हृष्टरोमोच्चिटिंगेनस्तब्धलिंगोभृशार्तिमान्।
दष्टःशीतोदकेनेवसिक्तान्यंगानिमन्यते॥

अर्थ-उच्चिटिंगनामक विच्छूके काटनेसे देहमें रोमांच होंय, लिंग जकड जाय, घोर पीडा होय और सब देहपर शीतल जल मानो डाल दिया है, उच्चिटिंगको सुश्रुतवाला झींगर कहता है और कोई उष्ट्रधूम कहते हैं परन्तु आतंकदर्पण टीकाकारने विच्छूका भेद माना है॥

मंडूक (मेंडक) विषके लक्षण।

एकदंष्ट्रार्दितःशूनःसरुजःपीतकःसतृट्।
छर्दिर्निद्राचसविषैर्मण्डूकैर्दष्टलक्षणम्॥

अर्थ-विषैले मेंडकके काटनेसे उसका एक दांत लगे, उस ठिकाने पीली सूजन होय, दूखे, प्यास, वमन और निद्रा ये लक्षण होंय अब कहते हैं कि कृष्णसार, कुहक, हरित, रक्त, यववर्णाभ, भ्रुकुटी १ कोटिक, इन भेदोंसे मेंडक आठ प्रकारका हैं इनके काटनेसे पूर्वोक्त लक्षण होंय और खुजली, मुखमें पीले झाग आना, इन आठमेंभी भ्रुकुटी और कोटिक इन दोनों मेंडकोंके काटनेसे पूर्वोक्त लक्षण होंय और दाह, मूर्च्छा, अत्यन्त होंय ये विशेष लक्षण होते हैं॥

मंडूकविष चिकित्सा।

शिरीषबीजैःकुलिशद्रुमस्यक्षीरेणपिष्टैःकृतलेपनानाम्।
विषंविनाशंव्रजतिक्षणनमंडूकदंशप्रभवंनराणाम्॥

अर्थ-सिरसके बीज, थूहरके दूधमें पीसके लेप करे तो विषैल मंडकका विष तत्काल दूर होय इसमें किंचिन्मात्र संदेह नहीं है॥

विषैल मछली।

मत्स्यास्तुसविषाःकुर्युर्दाहंशोथंरुजंतथा॥

अर्थ-विषैल मछलीके काटनेसे दाह सूजन और शूल, ये होंय, विषैल मछलीके सत्ताईस भेद हैं॥

मत्स्यविष चिकित्सा।

कृष्णवेत्रस्यनिःक्काथेकल्केघृतंविमिश्रितम्।
शृंगिमत्स्यविषंहंतिधूमोवाबर्हिपक्षजः॥

अर्थ-काली वेंतके क्काथमें या कल्कमें घृत मिलायके पीवै तो शृंगी मछलीका विष दूर होय॥

विषैलजोंकके लक्षण।

कंडूशोथंज्वरंमूर्च्छांसविषास्तुजलौकसः।

अर्थ-विषैले जोंकके काटनेसे खुजली, सूजन, ज्वर और मूर्च्छा ये लक्षण होतेहैं।

छिपकलीके विषके लक्षण।

विदाहंश्वयथुंतोदंस्वेदंचगृहगोधिका॥

अर्थ-छिपकलीके विषसे दाह होय, सूजन, नोचनें कीसी पीडा और पसीना आवै॥

कांतर (कानखजूरका) विष।

दंशेस्वेदंरुजंदाहंकुर्याच्छतपदीविषम्॥

अर्थ-कानखजूराके काटनसे काटनेके स्थान पर पसीना आवै, शूल होय और दाह होय॥

कातर कानखिजूरेके विषका यत्न।

लेपःप्रदीपतैलस्यखर्जूरविषनाशनः।
हरिद्राद्वयलेपोवासगैरिकमनःशिला॥

अर्थ-दीपकके तेलका लेप करनेसे कानखिजूरेका विष नष्ट होय। अथवा हलदी दारुहलदी, गेरू और मनसिल इनका लेप शतपदी (कांतर) के विषको नष्ट करे॥

मच्छरके विषके लक्षण।

कंडूमान्मशकैरीषच्छोथःस्यान्मंदवेदनः॥

अर्थ-मच्छर अथवा डांसके कांटनेसे किंचित् सूजन होय, उसमें खुजली चले, तथा थोडी पीडा होय॥

असाध्य मशकक्षतके लक्षण।

असाध्यकीटसदृशमसाध्यमशकक्षतम्॥

अर्थ-पर्वतके ऊपर रहनेवाले मच्छर, अथवा डांसके काटनेसे क्षत असाध्य कीटके समान असाध्य है। असाध्य कीटके विषके लक्षण सुश्रुतमें लिखे हैं सो जान लेने॥

सविषमक्षिका (मक्खी) दंशके लक्षण।

सद्यःप्रस्राविणीस्याद्वादाहमूर्च्छाज्वरान्विता॥
पिडिकामक्षिकादंशेतासांतुस्थविकाऽसुहृत्॥

अर्थ-विषैलमक्खीके काटनेके ठिकाने काली फुंसी प्रगट होय, वो तत्क्षण बहने लगे, उस ठिकाने दाह होय और मूर्च्छा, ज्वर होय, इनमें स्थविका नाम मक्खी प्राणहर्त्ता जानना॥

मक्खीके छः भेद हैं जैसे कान्तारिका, कृष्णा, पिंगलिका, मधूलिका, काषायी, और स्थविका, इनमें काषायी और स्थविका दो असाध्य हैं ॥

चतुष्पादादिकोंके विषके साधारण लक्षण।

चतुष्पद्भिर्द्विपद्भिर्वानखदन्तविषंचयत्।
शूयतेपच्यतेचापिस्रवतिज्वरयत्यपि ॥

अर्थ-व्याघ्र आदि चतुष्पाद और वनमनुष्यादि वानरादि द्विपाद इनके नख दांतोंका विष सूज आवे, पकजावे, वहे तथा इसके योगसे ज्वर आवै अब कहतेहैं कि श्रीमाधवाचार्यने विश्वंभरा, अहिंडूका, कंडूमका, शुकवृन्तादि पिपीलिका, गोधेरका और सर्षपिका, इनके विषका निदान नहीं लिखा परंतु इनका निदान सुश्रुतमें कहा है सो ग्रंथकी समाप्तिमें लिखेंगे ॥

विष उतरगयाहो उसके लक्षण।

प्रसन्नदोषंप्रकृतिस्थधातुमन्नाभिकांक्षंसममूत्रविट्कम्।
प्रसन्नवर्णेन्द्रियचित्तचेष्टंवैद्योऽवगच्छेदविषंमनुष्यम् ॥

अर्थ-जिस पुरुषके वातादि दोष निर्मल होंय, रस रक्तादि धातु निरोग अवस्थामें जैसे होते हैं वैसेही होंय, अन्न खानेकी इच्छा होय मलमूत्र जैसे होते हैं वैसे होंय शरीरका वर्ण, इन्द्री, मन और व्यापार (देहकी चेष्टा) ये जिसके शुद्ध होंय, उसका विष उतरगया ऐसे वैद्य जाने ॥

शृंगीविषका यत्न।

नागरंगृहकपोतपुरीषंबीजपूरकरसोहरितालम्।
सैंधवंचविनिहंतिविलेपादाशुशृंगजनितंविषमेतत् ॥

अर्थ-सोंठ, घरके खबूतरकी बीठ, बिजौरेका रस, हरिताल, सैंधानिमक इनको जलमें पीस, लेपकरे तो शृंगजविष दूर होय ॥

मक्खीकी पिटका।

सोमवल्कोऽश्वकर्णश्चगोजिह्वाहंसपाद्यपि।
रजन्यौगैरिकंलेपोमक्षिकापिटिकापहः ॥

अर्थ-सोमवल्कल, अश्वकर्ण (सालका भेद) गोभी, छुईमुई, हलदी, दारुहलदी और सोनगेरू इनको पीस लेपकरे तो मक्खियोंके काटेकी पिडिका नष्ट होय ॥

चैंटी, मक्खी और मच्छर।

पिपीलिकाभिर्दष्टानांमक्षिकामशकैस्तथा।
गोमूत्रेणवरालेपःकृष्णवल्मीकमृत्कृतः ॥

अर्थ--गोमूत्रसे त्रिफलेको पीसके लेप करे अथवा काली मिट्टी और वँब-ईकी मिट्टीका लेप चेंटियोंका काटना, मक्खियोंका काटना, मच्छरके काटेका विष दूर होय ॥

विषनाशकयोग ।

तिक्तकोशातकीक्काथंमध्वाज्यसंयुतंपिबेत् । कटुकानिंबुमूलं वातत्पत्रंवा!पिबेज्जलैः॥तत्क्षणाद्वमनाद्धंतिविषयोगाद्विमुच्यते॥

अर्थ--कडवीतोरई के काथमें सहत और घी मिलायके पीवे, अथवा कुटकी नींबूकी जड, अथवा नींबूके पत्ते जलमें घोटके पीवे,उसी वख्त रद्द होकर इस प्राणीका विष दूर होय ॥

शीतलपरिषेक ।

विषमत्यर्थमुष्णंचतीक्ष्णंचकथितंयतः ।
अतःसर्वविषेयुक्तःपरिषेकस्तुशीतलः ॥

अर्थ--विष अत्यंत गरम और तीक्ष्ण है, इसीसे सर्व विषोंमें शीतल जल-का तर देना हितहै ॥

प्रमाणांतर ।

औष्ण्यात्तैक्ष्ण्याद्विशेषेणविषंपित्तंप्रकोपयेत् ।
वामितंसेचयेत्तस्माच्छीतलेनजलेनच ॥

अर्थ--विष अपने गरम और तीखे गुणसे पित्तको कुपित करताहै अतएव विषखाए रोगीको प्रथम वमन करावे फिर शीतल जलका तरडा देना चाहिये॥

यत्नान्तर ।

पाययेन्मधुसर्पिर्भ्यांविषघ्नंभेषजंद्रुतम् ।
भोक्तुमम्लरसंदद्याच्चर्वयेन्मरिचानिच ॥

अर्थ--विषबाधावालेको सहत और घीमें विषनाशक औषध पिलावे और भोजनके वास्ते खट्टे रस देवे तथा उसको कालीमिरच चबलाना चाहिये ॥

सामान्यचिकित्सा ।

यस्ययस्यचदोषस्यपश्येल्लिंगानिभूरिशः ।
तस्यतस्यौषधैःकुर्याद्विपरीतगुणांक्रियाम् ॥

अर्थ--जिस २ विषमें जिस २ दोषके लक्षण बहुतसे प्रतीत होते हो उसी २ दोषकी शांति कर्ता चिकित्सा करे । क्योंकि रोगसे विपरीत क्रियाही फ-लोपयोगिनी होतीहै ॥

गरनाशकरस।

शुद्धंसूतंमृतंस्वर्णसंशुद्धंहेममाक्षिकम्। त्रयाणांगंधकंतुल्यंमृ
द्यात्कन्याद्रवैर्दिनम्॥तच्छुष्कंससितंक्षौद्रैर्माषैकंभक्षयेत्सदा॥
वन्हिमूलंशृतंक्षीरैरनुस्याद्गरनाशनम्॥

अर्थ–शुद्धपारा, सुवर्णकी भस्म, शुद्ध सुवर्ण माक्षिक इन तीनोंकी बराबर गंधक लेवे सबको घी गुवारके रसमें १ दिन खरल करे। जब सूख जाय तब इसमें मिश्री और सहतके साथ १ मासे नित्य सेवन करे और चित्रककी छालका क्राथ इसके ऊपर पीवेतो यह गरनाशक रस सर्व प्रकारके विषों-को नष्ट करे॥

विषहरशिरीषादिलेप।

मूलत्वक्पत्रपुष्पाणिबीजंचेतिशिरीषतः।
गवांमूत्रेणसंपिष्टंलेपाद्विषहरंपरम्॥

अर्थ–जड, त्वचा, पत्ते, फूल और बीज ये सिरसके लेकर गोमूत्रमें बारीक पीस लेप करे तो यह विषहरणकारी योग सर्वोपर है॥

स्थावरविषका यत्न।

स्थावरेणविषेणार्तंनरंयत्नेनवामयेत्।
वमनेनसमंनास्तियुतस्तस्यचिकित्सितम्॥

अर्थ--स्थावरविषव्याप्त मनुष्यको यत्नपूर्वक वमन करावे, क्योंकि इस विषके खानेवालेको वमन करानेके समान और औषधि नही है॥

पथ्य।

शालयःषष्टिकाश्चैवकोरदूषाःप्रियंगवः। मुद्गाहरेणवस्तैलंसर्पि
श्चापिनवंक्वचित्॥ वार्ताकंकुलकंधात्रीजीवंतीतंदुलीयकम्।
कालशाकंचलशुनंदाडिमंचविकंकतम्। भोजनार्थेविषार्तानां
हितंपटुषुसैंधवम्॥

अर्थ--शालीचावल, सांठीचावल, कूटू, प्रियंगु धान्य (कांगनी) मूंग, मटर, नया तेल और घी बैंगन, पडवल, आँवले, जीवंती (डोडी) चौलाई, कालशाक, लहसन, अनारदाना, विकंत ये सब पदार्थ विषवालेको सब हित और सैंधेनिमक सब निमकोंसे हिताकारी है॥

अपथ्य ।

विरुद्धाध्यशनंक्रोधंक्षुद्भयायासमैथुनम् ।
वर्जयेद्विषयुक्तोपिदिवास्वापंविशेषतः ॥

अर्थ–विरुद्ध भोजन तथा अध्यशन (भोजनके ऊपर भोजन) क्रोध, भूंख, भय, परिश्रम, मैथुन करना इनको विषयुक्त प्राणी त्याग देय तथा दिनमें सोनाभी विशेष करके त्याग देवे ॥

अलर्क (बावला कुत्ता) विषनिदान वाग्भट्टसे ।

शुनःश्लेष्मोल्बणादोषाःसंज्ञांसंज्ञावहाश्रिताः । मुष्णन्तःकुर्वते क्षोभंधातूनामतिदारुणम् ॥ लालावानंधबधिरःसर्वतःसोऽभि धावति । स्रस्तपुच्छहनुस्कंधःशिरोदुःखीनताननः ॥

अर्थ–कुत्ताके कफाधिक दोष संज्ञाके वहानेवाले स्रोतों (छिद्रों) में प्रवेश करके संज्ञानाशके सदृश करे और उसको धातूका क्षोभ करे । इस योगसे उस कुत्ताके मुखसे लार वहे, तथा वो अंधा बहरा होकर इधर उधर दौडने लगे, उसकी पूंछ सीधी होजाय और ठोडी कंधा ढीले होजाय, इसको बावला कुत्ता कहते हैं ॥

उसके काटनेके लक्षण ।

दंशस्तेनविदष्टस्यसुप्तःकृष्णंक्षरत्यसृक् ।
हृच्छिरोरुग्ज्वरःस्तम्भस्तृष्णामूर्च्छोद्भवोनच ॥

अर्थ–उस बावले कुत्ताके काटनेसे काटनेकी जगह शून्य होजाय, उसमेंसे काला रुधिर वहे, तथा उस मनुष्यका हृदय और मस्तक दूखे, ज्वर होय, देह जकडजाय, प्यस लगे, तथा मूर्च्छा आवै ॥

अनेनान्येपिबोद्धव्याव्यालदंष्ट्राप्रहारिणः ।
सृगालाश्वतराश्वर्क्षद्वीपिव्याघ्रवृकादयः ॥

अर्थ -इसप्रकार डाढाप्रहार करनेवाले सर्प, स्यार, खिच्चर, घोडा, रीछ, चीता, बाघ, भेडिआ, आदिशब्दसे सिंह, वानर, आदि इनके लक्षण भी कुत्तेके समान जानने ॥

सविष निर्विषदंशके लक्षण ।

कण्डूनिस्तोदवैवर्ण्यसुप्तिक्लेदज्वरभ्रमाः । विदाहरागरुक्पाक शोफग्रंथिविकुंचनम् ॥ दंशावदरणंस्फोटाःकर्णिकामण्डला निच । सर्वत्रसविषेलिंगंविपरीतंतुनिर्विषे ॥

अर्थ–खुजली, नोचनेकीसी पीडा, वर्णका बदलना, शून्यता, क्लेद, ज्वर, भ्रम, दाह, लाली, दर्द, पकना, सूजन, गांठ, चोटनी, काटनेकी जगह चीरा पडें, फोडा, कर्णिका मंडल, ये लक्षण सविष दांतके होते हैं। इससे विपरीत लक्षण निर्विषके जानने॥

असाध्य लक्षण।

दष्टोयेनतुतच्चेष्टारुतंकुर्वन्विनश्यति।
पश्यंस्तमेवचाकस्मादादर्शसलिलादिषु॥

अर्थ–जिस प्राणीका काटा हुआ मनुष्य उसी प्राणिका सर्व चेष्टा करे और रुदन करे, तथा आदर्श (शीसा) पानी आदि पदार्थोंमें उसी प्राणीका प्रतिबिंब देखे वो रोगी मरजाय॥

जलसंत्रासनामाके लक्षण।

योऽद्भ्यस्त्रस्येददष्टोपिशब्दसंस्पर्शदर्शनैः।
जलसंत्रासनामानंदष्टंतमपिवर्जयेत्॥

अर्थ–पुरुष पानीके शब्द, स्पर्श और अवलोकन (देखने) से डरपे उसको जलसंत्रासनामा कहते हैं। उसको भी वैद्य त्याग देवे, कोई शंका करे कि जलविना कैसे मनुष्य डरता है इसवास्ते कहते हैं॥

श्वानविषकी चिकित्सा।

काकोदुंबरिकामूलंधत्तूरफलसंयुतम्।
पीतंतंदुलतोयेनसारमेयविषापहम्॥

अर्थ–कठूमरकी जड, धतुरेके फल दोनोंको समान भागले चावलके धोवनसे घोटके पीवे तो बावले कुत्तेका विष दूर होय॥

दूसरा यत्न।

कारस्करफलंसेव्यंक्रमवृद्धंदिनेदिने।
सारमेयविषंहंतिमासेननहिसंशयः॥

अर्थ–कुचलेके फलको दिन प्रतिदिन क्रमसे बढायकर खावे तो १ महिनेमें निस्संदेह बावले कुत्तेका विष दूर होय॥

तीसरा यत्न।

पिष्ट्वापामार्गमूलंतुकर्षैकंमधुनापिबेत्। श्वानदंष्ट्राविषंहन्यात्कुमारीदलसैंधवम्॥ दंशस्थानेबंधयेत्तुत्रिदिनांतेसुखावहम्॥

अर्थ–ओंगा (चिरचिरा) की जडको १ तोले लेकर जलमें घोट सहतसे

पीवे, अथवा घीगुवारके गूदेमें सैंधानिमक मिलायके जहां कुत्तेने काटा होय वहां बांधे तो ३ दिनमें बावले कुत्तेका विष दूर होय ॥

चतुर्थ यत्न ।

कस्तुरीवब्बूलपत्ररसोगोघृतेनपानेदेयःशुनोविषंनश्यति ॥

अर्थ–कस्तूरी और बबूलके रसको गौके घीके साथ पीनेको देय तो बावले कुत्तेका विष नष्ट होय ॥

पंचमयत्न ।

शतावरीमूलरसोगोदुग्धेनसहपानेदेयःविषंनश्यति ॥

अर्थ–सतावरकी जडका रस गौके दूधमें पीवे तोबावले कुत्तेका विष दूर होय ॥

छठायत्न ।

गुडतैलार्कदुग्धंवालेपाच्छुनोविषंहरेत् ॥

अर्थ–गुड, तेल, आकका दूध, इनको पीसके लेप करे तो कुत्तेका विष नष्ट होय ॥

सप्तमयत्न ।

श्वानदंष्ट्राविषंहंतिलेपात्कुक्कुटविष्ठया ॥

अर्थ–मुरगेकी वीठको पीसके लेप करेतो बावले कुत्तेका विष दूरहोय ॥

अष्टमयत्न ।

तैलंतिलानांपललंगुडंचक्षीरंतथार्कस्यसमंहिपीतम् ।
आलर्कमुग्रंविषमाशुहंतिसद्योद्धवंवायुरिवाभ्रवृंदम् ॥

अर्थ–तिलका तैल, खली, गुड, आकका दूध ये समान भागले, सबको एकत्र कर अनुमानकी मात्रासे पीवे तो बावले कुत्तेके विषको इस प्रकार नष्ट करे जैसे वायु अपने वेगसे बादलोंको ॥

स्नायुके निदान ।

शाखासुकुपितोदोषःशोथंकृत्वाविसर्पवत् । भिनत्तितक्षतेतत्र सोष्मामांसंविशोष्यच ॥ कुर्यात्तन्तुनिभंजीवंवृतंसितद्युतिंबहिः । शनैःशनैःक्षताद्यातिछेदात्कोपमुपैतिच ॥ तत्पाताच्छोफशान्तिःस्यात्पुनःस्थानांतरेभवेत् । सस्नायुकेतिविख्यातः क्रियोक्तातुविसर्पवत् ॥ बाह्वोर्यदिप्रमादेनजंघयोस्तुद्यतेक्वचित् । संकोचंखंजतांचैवछिन्नोजन्तुःकरोत्यसौ ॥

अर्थ-हाथपैरोंमें दोष कुपित होकर विसर्पके सदृश सूजन होय वो सूजन फूटकर घाव पडजावै और उसमें आगसी बले, तथा मांस शुष्क होकर मूतके समान गोल सफेद जीव डोरेके सदृश बाहर निकल आवे, वो धीरे धीरे घावसे बाहर निकलते समय टूट जावे तो बहुत दुःख देता है, यदि वो समग्र बाहर निकल आवै तो सूजन जाती रहै और उसमेंसे कुछ टुकडा बाकी रह जावै तो वह फिर दूसरे स्थानपर निकले उस रोगको स्नायुक (नहरुआ) कहते हैं. इसपर चिकित्सा विसर्परोग कीसी कही है कदाचित् हाथ वा पैरोंमें नहरुआ होकर टूट जावे तो हाथ पैरसे टोंटा अथवा लूला होजाय ॥

स्नायुककी चिकित्सा।

स्नेहस्वेदप्रलेपादिकर्मकुर्याद्यथाबलम्।

अर्थ-रोगीका बलाबल विचारके स्नेहन, स्वेदन और लेप आदि कर्म वैद्य अपनी बुद्धिसे करे ॥

वातज स्नायुकपर।

अहिंस्रामूलगोमूत्रकल्कालेपस्तुवातजे ॥

अर्थ--काकादनीकी जड गौके मूत्रमें कल्ककर लेप करे तो वादीका स्नायुक अर्थात् वादी नहरुआ दूर होय ॥

पित्तजस्नायुक पर।

पंचवल्कलकल्केनहितोलेपोत्रपित्तजे ॥

अर्थ-पंच वल्कलके कल्कका लेप पित्तजन्य स्नायुकको दूरकरे ॥

कफज स्नायुक।

श्लेष्मजेस्नायुकेलेपःप्रशस्तःकांचनारजैः ॥

अर्थ-कचनारके कल्कका लेप कफके नहरुआपर करना हितकारी है ॥

द्वंद्वज और संनिपातज।

द्वंद्वाभ्यांद्वंद्वजेलेपःसर्वैस्तैःसर्वजोहितः ॥

अर्थ-द्वंद्वज स्नायुक पर दो दोषोंके और संनिपात जन्य स्नायुक पर तीनों दोषोंपर जो लेप लिखे हैं वो मिलायके करने चाहिये ॥

रक्तजन्य स्नायुकपर।

रक्तजेस्नायुकेलेपोवटप्लक्षत्वचोहितः।
विसर्पोक्ताःक्रियाःसर्वाःस्नायुकेतुहितामताः ॥

अर्थ--रुधिरके स्नायुक रोगपर वड पाकरकी छालका लेप करे तथा विसर्प

रोग पर जो औषधि कहीं गई हैं वह सब इस स्नायुक रोगमें हितकर्ता कही हैं॥

स्नायुक पर लेप।

कुष्ठरामठशुंठीभिःकल्कःशिग्रुसमन्वितः।
पानालेपनयोगेनजंतुपीडाविनाशनः॥

अर्थ–कूठ, हींग और सोंठ इनमें सहँजना डालके कल्ककरे इस कल्कके पीने अथवा लेप करनेसे नारुयेकी पीडा नष्ट होय॥

उपायान्तरम्।

शिग्रुमूलफलैःपिष्टैःकांजिकेनससैन्धवैः।
लेपनंलशुनंचाग्निराजिकापिंडिकादिके॥

अर्थ–सहिंजनेकी जड, फल, सैंधानिमक, लहसन, चीतेकी छाल और राई इनको कांजीमें पीस गोली बनायके नहरुयेपर धरे तो नहरुआ नष्ट होय॥

बब्बूलबीजयोग।

बब्बूलबीजंगोमूत्रपिष्टंहंतिप्रलेपनात्।
स्नायुकानिसमस्तानिसशोथानिसरूंजिच॥

अर्थ–बबूरके बीजोंको गोमूत्रमें पीसके लेप करे तो सोथ युक्त और पीडा-युक्त संपूर्ण स्नायुकरोग दूरहोय॥

सुधायोग।

सुधयासहलोणारंजलेनालोड्यलेपयेत्।
अनेनतुप्रयोगेणात्रिदिनादेवनश्यति॥

अर्थ–थूहरके साथ लोनातृणको जलमें पीसके लेप करे इस प्रयोगसे नहरुआ तीन दिनमें अवश्य नष्ट होय॥

पातालगरुडीयोग।

पातालगरुडीमूलंपिबेत्स्नायुकनाशनम्।
तिलपिण्याकलेपोवाह्यारनालेनपेषितः॥

अर्थ–छिलहिंटाकी जडको जलमें पीसके पीवे तो स्नायुक दूर होय अथवा तिलकी खलको कांजीमें पीस लेप करे तो नरुहआ जाता रहै॥

अश्वगंधा वा विष्णुक्रांताका लेप।

तक्रेणवाथतैलेनह्यश्वगंधांप्रलेपयेत्।
श्वेतविष्णुक्रांतयावाशिग्रुमूलेनवापुनः॥

अर्थ-छाँछसे अथवा तेलसे असगंधको पीसके लेपकरे अथवा सपेद कोयल और सहिंजनेकी जडको पीसके लेप करे तो स्नायुकरोग नष्टहोय ॥

कांचनी लेप ।

पुंमूत्रैःकांचनींपिष्ट्वालेपःस्नायुकजिद्भवेत् ॥

अर्थ-पुरुषके मूत्रमें सोनजुहीको पीसके लेप करे तो स्नायुक रोग नष्टहोय॥

अन्य योग ।

वार्ताकमूलंमूत्रैर्वापत्रैर्वाश्वत्थजैश्ववा ।
सुतप्तंबंधयेच्चापिनिहन्यात्स्नायुकंगदम् ॥

अर्थ-बैंगनकी जड अथवा बैंगनके पत्तोंको गोमूत्रमें पीस अथवा पीपलके पत्तोंको गोमूत्रमें पीस लेप करे तो निश्चय नहरुआ रोग नष्ट होय ॥

अन्ययोगांतर ।

गुडूचीरसेनटंकणक्षारःपेयः । अथवाशणबीजंभागमेकंगोधूमपिष्टंभागमेकंद्वयमेकीकृत्यघृतेनपक्वव्यं गुडेनत्रिदिनंभक्षयित्वास्नायुकोनश्यति ॥

अर्थ-गिलोयके रसके साथ सुहागेको पीवे । अथवा सनके बीज १ भाग गेहूंका चून १ भाग दोनोंको एकत्र कर घीमें पकावे, फिर इसको गुडके साथ ३ दिन खाय तो स्नायुक रोग नष्ट होय ॥

गव्य और निर्गुंडी स्वरस ।

गव्यंसर्पिस्त्र्यहंपीत्वानिर्गुंडीस्वरसंत्र्यहम् ।
पीत्वास्नायुकमत्युग्रंहंत्यवश्यंनसंशयः ॥

अर्थ-गौका घी तीन दिन पीवे अथवा निर्गुंडीका स्वरस तीन दिन पीवे तो अतिउग्र नहरुएका रोग निश्चय दूर होय ॥

योगराज ।

रामठंटंकणक्षारंप्रत्येकंशाणसंमितम् । चूर्णयित्वासप्तदिनंखादेत्संध्याद्वयंनरः । अनेनयोगराजेनस्नायुकोनश्यतिध्रुवम् ॥

अर्थ-हींग, सुहागा, हरएक चार चार मासे, इनका चूर्ण कर दोनों वक्त सात दिन खाय इस योगराजके सेवनसे स्नायुक अवश्य नष्ट होय ॥

सुषवीयोग ।

मूलंसुषव्याहिमवारिपिष्टंपानादिनातंतुगदंप्रचंडम् ।
शांतिनयेत्सव्रणमाशुपुंसांगंधर्वगंधश्चघृतेनपीतः ॥

अर्थ-सुषवी (कलौंजी) की जडको शीतल जलसे पीसके पीवे तो प्रचंड नारुएका रोग शांत होय। अथवा गंधर्व गंधरूखड़ीको पीस घृतके साथ पीवे तो घावयुक्त नारुएका रोग नष्ट होय॥

अतिविषादि चूर्ण।

अतिविषमुस्तकभार्ङ्गीविश्वौषधपिप्पलीविभीतकानांच।
चूर्णंतंतुकृमिघ्नंपुंसामुष्णेनवारिणापीतम्॥

अर्थ--अतीस, मोथा, भारंगी, सोंठ, पीपल और बहेडा इनका चूर्ण गरम जलके साथ पीवे तो स्नायुक रोग दूर होय॥

प्रयोगांतर।

पारावतपुरीषस्यमधुनाकल्कितस्यच।
गिलितागुटिकाहंतिस्नायुकामयमुद्धतम्॥

अर्थ-कबूतरकी वींठको सहतमें सानके गोली बनायले १ गोली नित्य निगल जाय तो घोरस्नायुक रोग दूर होय॥

निंबादियोग।

निंबशम्याकजात्यर्कसप्तपर्णाश्वमारकाः।
कृमिघ्नामूत्रसंयुक्ताःसेकलेपनधावनैः॥

अर्थ-नीम, अमलतास, चमेली, आक, सतोना और कनेर इनके पत्ते गोमूत्रमें पीस लेप करनेसे या इनके क्वाथकी धारा देनेसे या धोनेसे स्नायुक रोग नष्ट होय॥

वृंताकयोग।

वृन्ताकंभर्जितंभांडेकृत्वादध्नासहोपरि।
बंधयेत्स्नायुकोयातिबहिःसप्तदिनात्खलु॥

अर्थ-बैंगनको मिट्टीके वासनमें भून उसपर दही डालके जहां नहरुआ होय उस जगह बांध देय तो सात दिनमें स्नायुक निश्चय बाहर निकलकर गिर पडे॥

गोधूम और सनके बीज।

गोधूमशणबीजस्यचूर्णंग्राह्यंसमांशकम्।
घृतपक्वंगुडेनात्तंत्रिदिनात्स्नायुकापहम्॥

अर्थ-गेंहू, सनके बीज दोनोंको समान भाग चूर्णकर घृतमें पकाय गुडमें मिलाय तीन दिन सेवन करे तो नहरुएका दोष दूर होय॥

इति श्रीमाथुरकृष्णलालतनयदत्तरामपाठकनिर्मिते बृहन्निघंटुरत्नाकरे निदानसहिताचिकित्सा समाप्ता।

छठवाँ भाग समाप्त।

खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना-मुंबई.